Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यह पञ्चांग भारत सरकार से रजिस्टर्ड हो चुका है।अतः कोई महाशय इसके किसी भी अंश की नकल का साहस न करें।रजिस्टर्ड नं० ७६ २४ ४३

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ज्योतिष ज्ञान प्रचारार्थ आर्य संस्कृति पोषके

श्री आर्यभट्ट पंचांगम् विद्वद् वृन्द समर्पिते

ॐ ह्रीं महासरस्वत्यै नमः

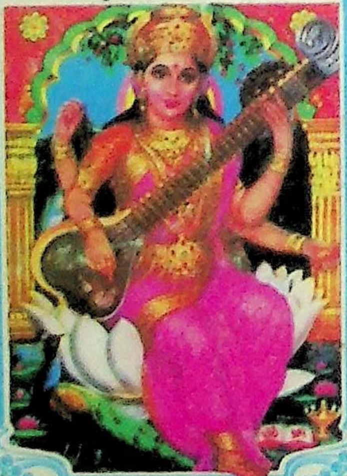

ॐ श्री सरस्वत्यैमया दृष्ट्वा वीणापुस्तक धारिणी।
हंसयुक्त विमानूढा विद्या दान ददातु मे।।

राजा बुध

मन्त्री गुरु

ज्योतिः शास्त्र समुद्रप्रमथ्य मति मन्दराद्रिणाथ मया।
लोकस्या लोक करः शास्त्र शशांकः समुल्लसत्।

पूर्वाचार्या ग्रन्था मोत्सृष्टाः केवलाभया शास्त्रम्।
तान वलोक्यें च प्रयत्न कामतः सुजनाः।।

59

श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा ज्योतिष वाचस्पति

भारतीय ज्योतिष विद्या केन्द्र के प्रधानाचार्य

श्री आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र दिल्ली
द्वारा प्रणीत तथा सम्मानित

श्री आर्यभट्ट-पञ्चांगम्

श्री विक्रम सम्वत्-२०५७ शकः- १९२२ सन्-२०००-२००१ भारतीय गणराज्य संवत् ५१-५२

प्रधान सम्पादक : पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा ज्योतिष वाचस्पति बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न प्रधानाचार्य

सम्पादकः धर्मपाल अग्रवाल, २/४५-ए, वैस्ट ऐवन्यू मार्ग, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

मूल्यः २७.९५ रु.

वितरक **धर्मसन प्रकाशन** नई सड़क दिल्ली-११०००६

वर्ष ९५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दुर्लभ लाल किताब

उर्दू भाषा में छपी असली १९४२ तथा १९५२ के प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थों का हुबहू

(उर्दू शब्दों में और हिन्दी लिपि में फोटो कापी)

यह ग्रन्थ जिसका अधिकांश भाग हस्त लिखित

बीमारी का बग़ैर दवाई भी इलाज है,
मगर मौत का कोई इलाज नहीं-
दुनियावी हिसाब-किताब है
कोई दावा-ए-खुदाई नहीं।
Astrology based on Palmistry
ज्योतिष की
मदद से हाथरेखा के जरिये दुरुस्त
की हुई जन्म कुंडली से जिंदगी
के हालात देखने के लिए

लाल किताब

१९४२ तथा १९५२

शर्मा गिरधारी लाल
साकिन फरवाला, डाकखाना नूरमहल
जिला जालन्धर

यह ग्रन्थ २ (दो) और ३ (तीन) भागों में केवल हमारे पास ही उपलब्ध है

उत्तरी और पश्चिमी भारत के साथ ही पाकिस्तान-अफगानिस्तान आदि मुस्लिम देशों में भी बेहद मशहूर, प्रामाणिक और लोकप्रिय ग्रंथ जो अब दुर्लभ हो चुका है—अपने असली रूप में हमारे पास उपलब्ध है।

इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि प्राचीन भारतीय ऋषियों के मूलभूत ज्योतिष सिद्धान्तों और अरबी ज्योतिष के नवीन अनुसन्धानों का समीकरण करके इसमें ज्योतिष की ऐसी सहज-सरल विधि बताई गई है, जिसके आधार पर ज्योतिष का साधारण जानकार भी चमत्कारी फलादेश कर सकता है। साथ ही जन्म-कुण्डली की ग्रह स्थिति का हस्त रेखाओं के साथ मिलान करने की विधि इसकी निजी विशेषता है, जो संसार के किसी दूसरे ग्रन्थ में नहीं पाई जाती। जिनकी जन्म-कुण्डली नहीं है या गलत है, उनके मकान की कुण्डली बनाकर ग्रह-स्थिति और उसके फलित का मिलान करने की विधि इसकी दूसरी अनोखी विशेषता है। इसमें वर्ष कुण्डली बनाने और वर्षफल निकालने की एक ऐसी सरल अनोखी विधि बताई गई है, जिससे १० मिनट में किसी भी वर्ष की कुण्डली और फलित निकाला जा सकता है—अर्थात् लम्बे-चौड़े गणित की कोई आवश्यकता नहीं रही।

इस बेजोड़ ग्रन्थ की विशेषताएं अनेक हैं, जो आप स्वयं पढ़कर और आजमाकर ही जान सकते हैं। इसीलिए इसके सम्पादन और मुद्रण के बजाए मूल रूप में फोटो स्टेट करवा कर आपको उपलब्ध कराने की व्यवस्था हमने की है। लगभग ३ खण्डों में १७०० पृष्ठों के लिए लागत मात्र मूल्य १८००/- रु. और लगभग २ खण्डों में १२०० पृष्ठों के लिए लागत मात्र मूल्य १५००/- रु., में यह प्राचीन दुर्लभ सम्पूर्ण ग्रन्थ रत्न २ या ३ खण्डों में प्राप्त करने का सुनहरा अवसर आप छोड़ना नहीं चाहेंगे, अत: आज ही अपना अग्रिम आदेश भेजें।

इसका हिन्दी अनुवाद और तुलनात्मक अनुसंधान विद्वान् ज्योतिषियों द्वारा नए रूप-रंग में तैयार किया है। तीन खण्डों में लगभग १७०० पृष्ठों के लिए लागत मूल्य मात्र १८००/- रु. और २ खण्डों में लगभग १२०० पृष्ठों के लिए लागत मूल्य मात्र १५००/- रु. है। १९४२ तथा १९५२ दो भाग हैं। पुस्तक की फोटो प्रति भेजी जायेगी। अतएव आज ही ५०० रु भेजकर अपनी प्रति सुरक्षित करायें। डाक व्यय अलग से है।

प्राप्ति स्थान: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ दूरभाष : ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

प्राप्ति स्थान: धर्मसन [illegible] : ३२६४९८६, ३२८५२३४

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

राजा
बुध

मंत्री
गुरु

श्री आर्यभट्ट-पंचांगम्

श्री विक्रम सम्वत्-२०५७ शकः- १९२२ सन्-२०००-२००१ भारतीय गणराज्य संवत् ५१-५२

प्रधान सम्पादक :
पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा ज्योतिष वाचस्पति
बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न प्रधानाचार्य
भारतीय ज्योतिष विद्या केन्द्र, नई दिल्ली-२८

सम्पादकः
धर्मपाल अग्रवाल
आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र, २/४५-ए, वैस्ट
ऐवन्यू मार्ग, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

प्रकाशक : **धर्मसन प्रकाशन**
नई सड़क, दिल्ली-110006 दूरभाष : 3285234, 3264986

साज सज्जा—शायोका टाइप सेटिंग, बी537, सेक्टर-1, अवन्तिका, रोहिणी, दिल्ली-85

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
पंचांग देखने की विधि	३
वक्तव्य	४
जनमत प्रशंसा पत्र	५-७
महर्षि आर्यभट्ट	८
एक और प्रयास ज्योतिष सेवा के निमित्त	९
व्रतोत्सव, त्यौहार, छुट्टियां, मेले, जयन्तियां, अमावस्या, संक्रांति आदि	१०-१२
ग्रहण विवरण संवत् २०५७	१३
दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र	१४-१६
विवाह मुहूर्त, द्विरागमन, उपनयन, गृहारम्भ मुहूर्तादि (शेष २१५-१६)	१७-१९
त्रिबलशुद्धि कोष्ठक	२०-२१
ग्रहों का नक्षत्र व राशि संचार	२२-२३
सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, रविपुष्य, गुरुपुष्य योग	२४
५.३० बजे से अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने की तालिका	२५
दैनिक ग्रह स्पष्ट	२६-३७
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को संवत्सर फल श्रवण	३८
अथ सम्वत्सर मध्ये वर्ष राजादि फलम्	३९
शनि की साढ़ेसाती ढैय्या विचार	४०
चैत्रादि १२ मास २४ पक्ष	४१-६४
दैनिक लग्न सारिणी देखने की विधि, नवांश शोधन, स्मार्त वैष्णव विचार	६५
अंग्रेजी मास के अनुसार भा.स्टै.टा. में दैनिक लग्न सारिणी	६७-७१
जन्म समय, प्रसूति लग्न विचार, गण्डमूल विचार	७२-७६
बाल कष्टावली विवेचन, नक्षत्र-कष्टावली विवेचन, अन्य शुभाशुभ योग	७७-८१
अवकहड़ा चक्र विस्तृत	८२-८३
सूर्यादि दान, जप, औषधि यंत्र, छिक्का फल, अंग स्फुरण फल, घात चक्र, अथ ग्रहाणां विंशोत्तरीय चक्रम्	८४-८६
ग्रहों का वर्ष कुण्डली लग्न व गोचर फल	८७
ग्रह दशा फल	८८
यात्रा में त्याज्य तिथियां	८९
आवश्यक मुहूर्त	९०-९१
यात्रा मुहूर्त, संस्कार मुहूर्त	९२-९४
अथयोगिनी दशाऽन्तर्दशा चक्रमिदम्, प्रश्न विचार	९५-९६
अनुभूत औषधियां	९७
हस्त रेखा विचार, लग्न शुद्धि	९८-९९
ग्रह दृष्टि आदि विवरण चक्र	१००
ग्रहशील चक्र	१०१
प्रमुख नगरों की अक्षांशादि सारिणी	१०२-४
अक्षांशादि सारिणी विदेश	१०५
सूर्य विम्ब, द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त अक्षांश के अनुसार सारिणी	१०६-९
पंचांग परिवर्तन पद्धति, चरान्तर सारिणी	११०
अशौच व्यवस्था	१११
वर्षफल निर्माण, प्राचीन मान, नवीन मान	११२-१३
रवि क्रांति सारिणी, बेलान्तर कोष्ठक	११४
इन्द्रप्रस्थ लग्न सारिणी, दशम लग्न सारिणी	११५
कालहोरा चक्र, केरल प्रश्न चक्र	११६
चन्द्र स्पष्ट सारिणी चक्र	११७
षट् वर्ग सारिणी चक्र	११८
चालन कोष्ठक	११९
वर वधू गुण मेलापक सारिणी	१२०-२१
कुंडली मिलान, मंगली दोष	१२२-२३
विवाह संबंधी ज्ञातव्य	१२४-२५
बगला मुखी तंत्र साधना	१२६-२८
अनुभव सिद्ध मंत्र-तंत्र औषिधी प्रयोग, ग्रह शांति	१२९-३०
नव ग्रह शान्ति अनुष्ठान, रोग औषधि	१३०-३३
गयत्री मंत्र, शाबर मंत्र	१३३
सिद्ध अनुभूत वशीकरण मंत्र	१३४
चमत्कारी सिद्धि यंत्र	१३५
रोग निवारक मंत्र	१३६
दरिद्रता नाशक अगूंठी, वशीकरण तन्त्र आदि	१३७
स्वप्न विचार	१३८
अंक विद्या और आपका भाग्य	१३९
रमल प्रश्नोत्तरी, चौघड़िया मुहूर्त	१४०
मानव जीवन पर रत्नों का प्रभाव	१४१
षट्वर्ग फलादेश	१४२
बारह लग्नों व राशियों का फल	१४३-४४
लाल किताब के कुछ अनुभुत योग	१४५
जन्मपत्री निर्माण एंव दैनिक लग्न सारिणी उदाहरण, इष्ट कालसूर्यादि परिवर्तन पद्धति, रवि क्रांति, अक्षांश-रेखांश लग्न	१४६-५२
विंशोत्तरीय दशा गणित	१५३-५६
विंशोत्तरीय दशा पद्धति	१५७-१५८
नक्षत्र चार	१५९
नक्षत्रों के भेद, अवकहड़ा चक्र	१६०
सूर्यादि गणित, चर सारिणी	१६१-६४
लग्न सारिणी अक्षांश १९, २१, २३, २५, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२	१६५-६९
बालक के जन्म समय अरिष्ट योग	१७०
स्त्रियों के तिलादि एवं हस्त रेखा विचार	१७१
ग्रहों के शान्ति हेतु सप्तवार व्रत विधि	१७२
रहस्यमय सर्वाष्ट ग्रह भूमि विचार	१७३
मृत्यु सूचक चिन्ह	१७४-७६
मंगली दोष	१७७
आईये जन्मपत्रिका बनावें	१७८
शाबर मंत्र	१७९
मुखाकृति से भविष्य ज्ञान	१८०
प्रश्न विचार	१८०-८१
लग्न विचार	१८२
हथेली से भविष्य ज्ञान	१८३
नव रत्नों का चमत्कार	१८३-८४
दैनिक शुभाशुभ देखने का चन्द्रकालानल चक्र	१८५-८७
अंग्रेजी जन्म दिनांक के अनुसार महत्वपूर्ण वर्ष	१८७-८९
शनि का पाया विचार	१९०
संक्रांति नक्षत्र से जन्म नक्षत्र	१९०
ग्रहों के स्वगृह, परमोच्च, परमनीच	१९०
मूलत्रिकोणादि विचार	१९०
वैदिक हवन मंत्र व मुहूर्त	१९०
अथ-घात चक्रम्	१९१
विवाह में विशेष विषय	१९१
ग्रहों के कारकत्व	१९२
मनुष्य के शरीर में नक्षत्रों की स्थिति	१९२
श्री भैरव भविष्य ज्ञान प्रश्नावली	१९३-१९५
सूक्ष्म दशा सारिणी	१९६-९९
वास्तु शास्त्र और गृहसज्जा	२००
वास्तु शास्त्र	२०१-२०६
लक्ष्मी प्रवेश कैसे करें?	२०७
जब हमारी घड़ियां १२ बजाती हैं	२०८
कलैण्डर २०० वर्ष का	२०८
पक्षों का सूक्ष्म रूप	२०९-१४
विवाह मुहूर्त का शेष	२१५-१६
द्वादश राशि फल सं. २०५७	२१७-२२१
मंत्रों द्वारा इष्ट सिद्धि	२२२
ग्रहों की राशियों की तेजी मन्दी विचार	२२२
व्यापार भविष्य वैज्ञानिक अनुसंधान	२२३-२२५
सं. २०५७ का सामूहिक व्यापार भविष्य	२२६-३०
व्यापार भविष्य सन् २०००	२३१-३२
चंद्र श्रृंगोन्नत: विचार	२३३-२३६
सन् २००० ई. में ग्रहों का शेयर पर प्रभाव	२३७
चन्द्रोदय का व्यापार दर्शन पर प्रभाव	२३७
लाभकारी नवग्रह मंत्र	२३९
हाथ द्वारा शुद्ध जन्मपत्रिका बनवाकर लाभ उठायें	२४०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ आर्यभट्ट पंचांग देखने की विधि ॥

१. हमारे "आर्यभट्ट पंचांग" का निर्माण ग्रीनविच (ब्रिटेन) से उत्तर अक्षांश २८°।३८' एवं पूर्व रेखांश ७७°। १२' के आधार पर किया गया है। अतएव इस पंचांग में निर्णीत सूर्योदयास्त भी पूर्वोक्त अक्षांशादि वाले स्थान अर्थात् दिल्ली शहर के हैं।

२. 'आर्यभट्ट पंचांग' के गणित में प्राचीन ज्योतिर्विदों द्वारा प्रमाणित तथा भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त 'सूक्ष्म दृक्गणित' एवं चित्रा पक्षीय 'निरयणपद्धति' को ही अपनाया गया है।

३. पक्षवाले सभी पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय और सूर्यास्त भारतीय समयानुसार दिल्ली शहर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण-वक्री-भवन संस्कार के कारण वास्तविक क्षितिज वृत्त के उदयास्त में अन्तर आना स्वाभाविक है। अत: प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में दो मिनट ऋण (-) तथा सूर्यास्त में दो मिनट योग (+) करने की आवश्यकता है।

४. इस पंचाङ्ग में करण सूर्योदय कालीन दिए गए हैं। अग्रिम करण उससे आगे वर्तमान तिथि के अर्धभाग तक जानें।

५. सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों का राश्यादि संचार एवं भद्रा-पंचक, ग्रहों के उदय-अस्त, वक्र मार्ग आदि भा. स्टे. टा. में है। जो भारत में सर्वत्र उसी टाइम में होंगे। यह इस पंचांग की विशेषता है।

६. महीनों में अष्टमी-पूर्णिमा एवं अमावस्या के ग्रह स्पष्टों के राश्यादि स्टे.टा. प्रात: ५ घं. ३० मि. के हैं। नीचे उस दिन की गति और वक्री-मार्गी उदय-अस्त व ग्रहों के नक्षत्र चरण दिये हैं। यह स्पष्टों के साथ कुंडली भी उपरोक्त समय की है।

७. लस्टर में A.B.C.D. * आदि चिन्ह दिए गए हैं, उनका मतलब यह है कि मेटर उस लाईन में नहीं आ सका जो चिन्ह यहां लगाया वैसा ही चिन्ह कहीं दूसरी लाइन में लगाकर शेष मैटर लिखा है। नीचे लिखी संकेतावली को पंचाङ्ग देखने में काम लेने से सम्पूर्ण विषय समझ में आजावेंगे।

८. वार, तिथि, नक्षत्र, योग तथा करणों के साथ सामने दिये गये घटी पल, उनका समाप्तिकाल दर्शाते हैं जोकि स्थानीय सूर्योदय के उपरान्त से माना जाये। उन घटी पलों के घण्टा मिनट बनाकर उसमें पंचांग के स्थानीय सूर्योदय के घण्टा मिनट जोड़ देने से तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में ज्ञात हो जायेगा।

९. पाठकों की सुविधा के लिए तिथि नक्षत्रादि के घटी पलों के समाप्ति काल (सूर्योदय संस्कार करके) घण्टा मिनट में भी दे दिये गये हैं जिससे तिथि नक्षत्रादि के समाप्तिकाल को घण्टा मिनट में जानने के लिए कोई परेशानी नहीं हो रही है। सीधे ही तिथ्यादि का समाप्ति काल घंटे मिनट में पढ़ा जा सकता है। जहां २४ लिखा हो वह रात्रि के ठीक १२ बजे समझे जायें। जहां २७।१८ लिखा हो वहां २७ में से २४ घटाकर रात्रि के ३ बजकर १८ मिनट समझे जायें। यह समय भारतीय ज्योतिष परम्परानुसार सूर्योदय से पहले तक पूर्व तिथि में ही माना जायेगा।

१०. पक्षवाले पृष्ठों पर शुक्ल पक्ष में तिथि के कालम में १५ को पूर्णमासी तथा कृष्णपक्ष में ३० को अमावस समझा जाये। शुक्ल पक्ष को सुदी, कृष्ण पक्ष को वदी भी कहते हैं।

११. रा.मि. पहले कॉलम में दी गई हैं। दिनमान घटी-पलों में दिया गया है। करणों के कालम के पश्चात् दि.मा.घ.प. में दिए गए हैं। उसके पश्चात् सूर्योदयास्त, प्रतिष्ठा, मु. तारीखें फिर अंग्रेजी तारीखें अंग्रेजी अंकों में लिखी हैं।

१२. दैनिक ग्रह स्पष्ट भा.स्टे.टा. प्रात: ५-३० बजे (दिल्ली) के दिए गए हैं। और लग्न का समाप्तिकाल लिखा गया है। अपने अभीष्ट समय पर उनको ग्रह की दैनिक गति का संस्कार त्रैराशिक विधि से करके मार्गी ग्रह में युक्त करने, वक्रीग्रह में से घटाने से इष्ट समय के ग्रह स्पष्ट हो जाते हैं।

१३. तिथि के क्षय के आगे (पक्ष वाले पृष्ठों में) शून्य ० चिन्ह लगाया गया है। तिथि, नक्षत्रादि के आगे ६०-०० घटी लिखा है उस तिथि नक्षत्रादि की वृद्धि समझें।

पंचाग में लिखे शब्दों की संकेतावली (अकारादि क्रम से)

अ. = अश्विनी (नक्षत्र), अतिगंड (योग), अग्नि (पंचक), अगस्त, अप्रैल (मास), अक्टूबर
अनु. = अनुराधा (नक्षत्र)
आ. = आर्द्रा न., आयुष्मान् यो., आषा., आश्विन
अं. = अंश, अंग्रेजी (मास तारीख)
उ. = उदय, उपरान्त
उ.फा. = उत्तरा फाल्गुनी (नक्षत्र)
उ.षा. = उत्तराषाढ़ा (नक्षत्र)
उ.भा. = उत्तरा भाद्रपदा (नक्षत्र)
ऐं. = ऐन्द्र (योग)
क. = कर्क, कन्या (राशि), कला
का. = कार्तिक (मास)
क्रांति सा. = साम्य (महापात)
कृ. = कृत्तिका (नक्षत्र), कृष्ण पक्ष
कुं. = कुंभ (राशि),
गु. = गुरु (वार), गुरु ग्रह
गु.दा. = गुरु दान से
गो. = गोधूलि (लग्न)
गं. = गंड (योग)
घ. = घटी
घं. = घन्टा
चि. = चित्रा (नक्षत्र)
चै. = चैत्र (मास)
चौ. = चौर (पंचक)
चं. = चन्द्र (सोमवार), चन्द्र ग्रह
ज. = जयन्ती, जनवरी (मास)
ज. = जून (मास)
जु. = जुलाई (मास)
ज्ये. = ज्येष्ठ (मास), ज्येष्ठा (नक्षत्र)
ता. = तारीख
तु. = तुला (राशि)
दि. ल. = दिन में लग्न
ध. = धनु (राशि) धनिष्ठा (नक्षत्र)
धूलिमु. = धूमिमुख (अन्यगोधूलि) लग्न
ध्रु. = ध्रुव (योग)
धृ. = धृति (योग)
नि. = निम्बार्क (संप्रदाय)
नृ. = नृप (पंचक)
प. = परिघ (योग), पल
प्र. = प्रवेश
प्रा. = प्रारम्भ
प्री. = प्रीति (योग)
पु. = पुष्य (नक्षत्र)
पुन. = पुनर्वसु (नक्षत्र)
पू.फा. = पूर्वा फाल्गुनी (नक्षत्र)
पू.षा. = पूर्वाषाढ़ा (नक्षत्र)
पू.भा. = पूर्वाभाद्रपदा (नक्षत्र)
फाल्गु. = फाल्गुन (मास)
ब्र. = ब्रह्म (योग)
वृ. = वृद्धि (योग)
बु. = बुध (वार), बुध ग्रह
भ. = भरणी (नक्षत्र), भद्रा
भाद्र. = भाद्रपद (मास)
म. = मघा (नक्षत्र), मकर (राशि), मई (मास),
मा. = मार्गशीर्ष, माघ, मार्च (मास)
मि. = मिनट, मिथुन राशि (लग्न), मिति
मी. = मीन (राशि)
मु. = मुहूर्त
मू. = मूल (नक्षत्र)
मे. = मेष (राशि) लग्न
मृ. = मृगशिर (नक्षत्र), मृत्यु (पंचक)
र. = रवि (वार), रवि (ग्रह)
रा. = राहु (ग्रह), राष्ट्रीय, राशि
रे. = रेवती (नक्षत्र)
रो. = रोहणी (नक्षत्र), रोग (पंचक)
ल = लग्न
व. = वज्र, वरियान् यो., वाणिज क., वक्र गति
व्र. = व्रत
व्य. = व्यतिपात (योग)
वृ. = वृद्धि (योग), वृष, वृश्चिक (राशि)
व्या. = व्याघात (योग)
वि. = विशा. (नक्षत्र), विष्कुंभ (योग), विकला
वि. मु. = विवाह मुहूर्त
वै. = वैष्णव संप्र., वैधृति यो., वैशाख मास
श. = शनिवार, शनिग्रह, शतभिषा (नक्षत्र)
शि = शिव (योग)
शु. = शुक्रवार, शुक्र ग्रह, शुभ, शुक्ल (योग), शुक्ल (पक्ष)
श्रा. = श्रावण (मास)
सा. = साध्य (योग)
स्वा. = स्वाती (नक्षत्र)
स्मा. = स्मार्त (संप्रदाय)
सि. = सिद्धि (योग), सितम्बर (मास)
सिं. = सिंह (राशि)
सु. = सुकर्मा (योग)
सौ. = सौभाग्य (योग)
ह. = हस्त (नक्षत्र), हर्षण (योग)
हि. = हिन्दी (मास तारीख)

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

वक्तव्य

श्री आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना सन् १९८३ में हुई और भारत सरकार से इसका पंजीकरण भी यथाविधि हो चुका है। इसका उद्देश्य भारत की प्राचीन विद्याओं, ज्योतिष गणित, सामुद्रिक शास्त्र, हस्तरेखा विज्ञान, अंक ज्योतिष, रमल ज्योतिष, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र शास्त्र, स्वरोदय, राजयोग आदि का प्रचार-प्रसार करना है। पहले इन विद्याओं को राज्याश्रय प्राप्त था और हिन्दू राजाओं के राज्य काल में इनकी बहुत उन्नति हुई। परन्तु इस्लामी तथा ईसाई धर्मावलम्बी शासन में हमारी प्राचीन संस्कृति का उत्थान तो क्या उत्तरी भारत में प्राचीन ग्रन्थों तथा इनके आश्रय स्थलों का बलात् संहार किया गया। इसके ज्ञाता विद्वानों की संख्या में दिनोदिन कमी होती गई और विदेशी प्रभाव के फलस्वरूप देशी लोगों का इन विद्याओं पर विश्वास कम होता गया। इसमें स्वार्थी ठग व अज्ञानी ज्योतिषियों के व्यवहार ने भी जनता के मानस में इन विद्याओं के प्रति अविश्वास तथा अरुचि की ही वृद्धि की।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद धर्म निरपेक्ष संविधान के अन्तर्गत अन्य धर्मों तथा संस्कृतियों के समान हमको अपने प्राचीन लुप्त गौरव संस्कृति तथा महान् विद्याओं को फिर से उजागर करने की स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। विशेष रूप से जब विदेशी विद्वानों ने हमारे वेद, पुराण, शास्त्रों, उपनिषदों आदि के अध्ययन के पश्चात् हमारी विद्याओं, कलाओं और दर्शन आदि को प्रकाशित तथा प्रशंसित किया तब हमारे देश वासियों को भी अपने यथार्थ का ज्ञान हुआ और हम भी इनकी खोज, अनुसन्धान, प्रचार-प्रसार की ओर अधिक आकर्षित हुये। इस युग के महापुरुष श्री राम कृष्ण परमहंस देव के जीवन दर्शन को मैक्समूलर तथा रोमारोलां जैसे प्रख्यात विदेशी विद्वानों ने विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। परमहंस देव के योग्य शिष्य स्वनाम धन्य स्वामी विवेकानन्द जी ने संयुक्त राज्य अमरीका के शिकागो नगर में विश्व धर्म सम्मेलन में हिन्दू धर्म की विजय पताका फहराई। स्वामी विवेकानन्द जी ने अमरीका, ब्रिटेन, योरोप आदि देशों में घूम-घूम कर हिन्दू धर्म का यथाशक्ति प्रचार किया। तदुपरान्त स्वामी रामतीर्थ जी ने भी विदेशों में यथाशक्ति प्रचार-प्रसार किया। इन महापुरुषों द्वारा स्थापित प्रचार केन्द्र देश-विदेश में आज तक अपना कार्य कर रहे हैं और इनके बताये मार्ग पर चलते हुए प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। उसके बाद तो अनेकों सन्त महापुरुषों तथा योगियों ने इसी मार्ग का अवलम्बन किया। इन सब प्रयासों के फलस्वरूप देश-विदेश में जन मानस में अपनी प्राचीन विद्याओं के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

इस समय अपने देश में बहुत सी संस्थायें हैं जो देश के प्राचीन गौरव, संस्कृति, कला कौशल तथा लुप्त विद्याओं के पुनरुत्थान तथा प्रचार-प्रसार में लगी हुई हैं। ज्योतिष विद्या हमारी प्राचीन विद्याओं में एक मुख्य विद्या है। वैदिक काल से यह चली आ रही है। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि न तो इसे राज्य से कोई संरक्षण या प्रोत्साहन प्राप्त है और न देश के सम्पन्न वर्ग का सहयोग ही। फिर भी कुछ उत्साही जन अपने सीमित साधनों से इसको अपना उचित स्थान दिलाने के प्रयास में लगे हुए हैं। उत्तर भारत पर विदेशी बर्बर जातियों के लगातार आक्रमणों के फलस्वरूप हमारे बहुत से मठ, मन्दिरों, पूजा स्थानों के साथ-साथ बहुत से अमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थ नष्ट हो गये। विदेशी प्रभाव से धर्म परिवर्तन से बचे लोगों के मानस पर अपने धर्म ग्रन्थों तथा प्राचीन विद्याओं की ओर रुचि नहीं रही। इस कारणण उत्तर भारत में इस विद्या का सब से अधिक ह्रास हुआ। जबकि दक्षिण भारत में धर्म साहित्य तथा प्राचीन विद्याओं का ज्ञान भण्डार अभी भी बहुत अंशों में सुरक्षित है। उस भू-भाग के कतिपय विद्वान् प्राचीन ग्रंथों को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से प्रचारित व प्रसारित करने के प्रयत्नों में लगे हुए हैं। उत्तर भारत में विशेष रूप से हिन्दी भाषी जनता को इन विद्याओं का ज्ञान कराने की बहुत आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए देश के केन्द्र राजधानी दिल्ली में कुछ उत्साही जिज्ञासुओं ने आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र को पंजीकृत कराया है। इस केन्द्र ने ज्योतिष प्रेमी सज्ज्नों के लिये अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ **''शतक मार्त्तण्ड''** का सम्पादन व प्रकाशन करवाया है।

ज्योतिष शास्त्र आज जिस स्थान पर है, उसको इस स्तर तक पहुंचने में सैकड़ों वर्ष लगे हैं। समय-समय पर जिन विद्वानों ने नई खोजों, आविष्कारों तथा गणित के नियमों द्वारा इसकी प्रगति में सहयोग किया है उनका नाम ज्योतिष इतिहास में सदा अमर रहेगा। ऐसे ही एक महापुरुष ज्योतिष शास्त्र के परम ज्ञाता श्री आर्यभट्ट थे, जिनका जन्म ४७६ ई. में हुआ था। उन्होंने ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रन्थ ''आर्य भटीय'' कुसुमपुर (पटना) में लिखा। इसमें सूर्य और तारागणों के स्थिर होने और पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन है। सूर्य और चन्द्र ग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या है। स्वर और व्यञ्जनों की सहायता से बड़ी-बड़ी संख्याओं की गणना करने की रीति बनाई है। वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल आदि गणित विद्याओं का वर्णन सर्व प्रथम इसी ग्रन्थ में मिलता है। इन्हीं महापुरुष के नाम पर **''आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र''** का नाम रखा गया है। आशा है इनके नाम से प्रोत्साहन पाकर अर्वाचीन विद्वान नये-नये प्रयोग व आविष्कार करने में सफल होंगे।

''शतक मार्त्तण्ड'' जैसे उपयोगी ग्रन्थ का प्रकाशन करने के बाद एक ऐसे पंचांग के प्रकाशन का निर्णय लिया गया जिसमें ज्योतिषियों के लिए उपयोगी अधिक से अधिक विषय सरल सुलभ भाषा में समाविष्ट किये जा सकें। अतः हमने ''श्री आर्यभट्ट पंचांग'' ज्योतिषियों के लाभार्थ सम्पादन तथा प्रकाशन आरम्भ किया। ज्योतिष प्रेमी सज्ज्नों तथा विद्वानों से हमारा विनम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों के लिये क्षमा प्रदान करते हुए अपने सुझाव तथा परामर्शों द्वारा प्रोत्साहन प्रदान करेंगे ताकि अगले अंक में अधिक से अधिक परम उपयोगी विषयों का समावेश किया जा सके।

–सम्पादक

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

जनमत

"श्री आर्यभट् पंचांग" के सम्बन्ध में ज्योतिषाचार्यों, विद्वानों तथा ज्योषि प्रेमी सज्जनों के अनेकों पत्र पंचांग के सम्पादक, व्यवस्थापक, प्रकाशक तथा अनुसंधान केन्द्रों को प्राप्त हुए। हम उन सभी महानुभावों को उनके आशीर्वचनों, शुभकामनाओं, प्रशस्ति वाकयें तथा उपयोगी परामर्शों के लिए हार्दिक धन्यवाद समर्पित करते हैं। आपके अधिकांश सुझावों को हमने इस वर्ष के पंचांग में सम्मिलित कर दिया है और हमारा यह प्रयास रहेगा कि पाठकों के उपयोगी सुझावों को यथाशक्ति कार्यरूप में परिणित किया जाये। हमारे पास आए पत्रों के अंश आपकी सूचना के लिए हम यहां उद्धृत कर रहे हैं:—

❖ **डॉ. बी. एन. जोशी, जोशी औषधालय, सदर बाजार, रोपड़ (पं.) से-** श्री आर्यभट्ट पंचांग में देखा, उसकी सूक्ष्म गणित व सारगर्भित करते देख मन अति प्रसन्न हुआ। वास्तव में आप प्रशंसा व सम्मान के पात्र है।

❖ **के.सी. शर्मा, अनाज मंडी, शाहदरा, दिल्ली से-** यह पंचांग भी अति सूक्ष्म अति सुन्दर एवं अति आवश्यक है। मेरे विचार से यह लघु पंचांग भी जनता के लिए अति उपयोगी है।

❖ **श्री आनन्द प्रकाश, ग्राम कालेवाला, मुरादाबाद (उ.प्र.) से-**पंचांग की जो सामग्री है वह अत्यन्त प्रिय है। पंचांग दिवाकर का मुकाबला आपके इस आर्यभट्ट पंचांग ने ही किया है। हम तो यही कहेंगे कि भगवान् आपके इस कार्यक्षेत्र को और आगे बढ़ाए।

❖ **पं. लेखराज द्विवेदी, जोधपुर (राज.) से-** वास्तव में आर्यभट्ट पंचांग तारीफ के योग्य है। इसमें आपने सभी पूर्णताएं भर दी हैं। सभी तरह के वर्गों के लिए पंचाग संग्रहणीय है।

❖ **आचार्य हर्षवर्धन मधुर (प्रवक्ता), हिन्दी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय जांगला-शिमला से-** आप द्वारा रचित आर्यभट्ट पंचांग अध्ययन किया जो कि ज्योतिष कार्य के लिए विशेष लाभप्रद है।

❖ **शुभ कर्ण ज्योतिषी अरुण ज्योतिष कार्यालय, तिलक नगर, नई दिल्ली से-** ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आपका श्री आर्यभट्ट पंचांग सदैव उन्नति करता रहे व इसी प्रकार सफलता अर्जित करे।

❖ **पं. पी. के. शर्मा व्याकरणाचार्य, संस्कृत-हिन्दी एम. ए. ज्योतिष, शास्त्री साहित्याचार्य, अलीगढ़ से-**आपका प्रयास सराहनीय है। आपने यह पंचांग गागर में सागर भरकर एक ऐसा दीपक प्रज्वलित किया है जैसे एक भानु की किरणें सर्वत्र प्रसारित कर सम्पूर्ण अंधकार मिटा दिया हो। अतः हमारी कामना यह है कि यह दीपक सदैव इस देश में प्रज्वलित रहे और अंधकार मिटता रहे।

❖ **कलानाथ शास्त्री, अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर, (राज.) से-** इस अत्यन्त्युपयोगी पंचांग के प्रकाशन के लिए आप बधाई के पात्र हैं।

❖ **राजेश कुमार कन्दोई, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली से-**सामान्य व विशिष्ट सभी प्रकार की सूचनाओं को समेटते हुए यह अनमोल पंचांग अनुपम ही है। सचमुच यह गागर में सागर कहा जा सकता है।

❖ **कमलचन्द भूरा, क्रिशन नगर, गुवाहाटी (आसाम) से-**श्री आर्यभट्ट पंचांगम् की अतुलनीय सामग्री ज्ञानवर्धक व नई-नई उपलब्धियों के लिए विशेष अनुकरणीय है। ज्योतिषीय जानकारी देने वाला विश्व में प्रथम शायद यही पंचांग है।

❖ **पं. बी. एस. शर्मा (ज्योतिष), मुराद अली लेन, लखनऊ से-**आर्यभट्ट पंचांग में अनेक महत्वपूर्ण बिन्दुओं का समावेश है। जिससे इस पंचांग की महत्ता स्वत: ही बढ़ जाती है।

❖ **भगवती प्रसाद मयगाई, रुद्र प्रयाग-गढ़वाल (उ.प्र.) से-**आपके पंचांग सामग्री के लिए सभी पाठक आभारी अवश्य होंगे। सम्पूर्ण सामग्री उपयोगी एवं ग्राह्य है। मनन करने योग्य है तथा जीवन में प्रत्येक स्तर पर सार्थक है।

❖ **श्री आनन्द प्रकाश प्रजापति-(मुरादाबाद) उत्तर प्रदेश से-**आर्यभट्ट पंचांग एक ज्योतिष की किताब है। साधारण पढ़ा-लिखा आदमी भी एक प्रकार का ज्योतिषी बन सकता है। "आर्यभट्ट पंचांग" जहाँ भी होता है वहाँ उजाला ही उजाला है। आर्यभट्ट पंचांग को छोड़कर बाकी मकड़ियों का जाला है।

❖ **अशोक कौशिक, सम्पादक आर्य जगत्, शाश्वत वाणी, विकासपुरी, नई दिल्ली से-**'आर्यभट्ट पंचांग' वर्तमान में प्रचलित पंचांगों में अग्रणी है। आप द्वारा प्रकाशित होने पर 'स्वर्ण में सुहागा' का संयोग बन गया है।

❖ **डा. डी. एन. सक्सेना (आर.ए.एस., से नि.) जयपुर से-** आपका 'श्री आर्यभट्ट पंचांगम्' अति सुन्दर है। इसमें काफी सामग्री है।

❖ **पं. द्वारका प्रसाद पाटोदिया (एम.ए., एल.एल.बी., डिप मॉन्ट) किशनगढ़, अजमेर से-** अपने देश की अधिकांश जनता गरीब होने के कारण कम मूल्य का यह प्रामाणिक पंचांग अति शीघ्र ही लोकप्रिय हो जावेगा। व्रतोत्सव, त्यौहार, पर्व आदि का प्रारम्भ में ही संकलित प्रकाशन का इस पंचांग में वैशिष्ट्य है।

❖ **डॉ. शिव कुमार मिश्र, 'मधुप', प्रो. एम.ए. संस्कृत-हिन्दी, गोल्ड मेडिल प्राप्त, साहित्याचार्य पी.एच.डी., इलाहाबाद से-**इस पंचांग में ज्ञातव्य प्राय: समसत विषयों का सरल, सुगम भाषा में सर्वदोष मुक्त आंकलन किया गया है। यह शीघ्र ही लोकप्रिय होगा, ऐसी हमारी शुभाशंसा है।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६ ३२८५२३४
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

❖ **बालकृष्ण इन्दोरिया, चुरु, राजस्थान से-** 'श्री आर्यभट्ट पंचांग' परिपूर्ण व विस्तृत पंचांग है। अतः सर्वोत्कृष्ट है। आप निरन्तर प्रगति कर सफल हों ऐसी कामना है।

❖ **प्रो. आचार्य चन्द्रहास शर्मा, शिक्षा शास्त्र विभागाध्य एवं आधुनिक ज्ञान-विज्ञान संकाय प्रमुख, जीवन पार्क, पंखा रोड, नई दिल्ली से-** यह पंचांग साधारण व्यक्ति से लेकर विद्वत्समुदाय तक सभी के लिए उपादेय है। औषधि प्रयोग, तंत्र-मंत्र तथा फलादेश आदि व्यवहारिक जनजीवनोपयोगी प्रकरणों का सन्निवेश सोने में सुहागे का काम करता है।

❖ **ब्रह्म ऋषि कश्मीरी लाल शास्त्री, संकीर्तनाचार्य, ज्योतिष रत्न, बस्ती गुंजा, जालन्धर से-** माँ वीणा पाणी की कृपा से श्री आर्यभट्ट पंचांग की ज्योतिष जगत में ज्योतिविदों ने प्रशंसा की है। भारत के हर प्रान्त में यह प्राप्त है।

❖ **डॉ. कुंज बिहारी तिवारी , ज्योतिष शिरोमणि, ज्योतिष भूषण, मानस रत्न, ज्यो. तीर्थ पर्यावरण मनीषि, महाराजपुर (म.प्र.) से-** यह पंचांग अपने आप में परिपूर्ण है, साथ ही सुगंधित पुष्पों की एक माला है, जिसमें भांति-भांति की गुंथे हुए सुगंधित पुष्प अनूठे हैं, जो अपनी सुगंध से इस देश को ही नहीं विश्व को सुगंधित करेंगे।

❖ **बी.पी. उपाध्याय, टीचर्स कॉलोनी, उदयपुर, राजस्थान से-** आपके द्वारा प्रकाशित 'श्री आर्यभट्ट पंचांग' अत्यन्त ही उपयोगी पंचांग है। इसकी जितनी भी प्रशंसा करेंगे कम ही होगी। इतनी मूल्यवान सामग्री देकर तथा कम मूल्य लेकर आप ज्योतिषी की महान सेवा कर रहे हैं।

❖ **डॉ. सत्येन्द्र सर्राफ, लक्ष्मीपुरा, सागर (म.प्र.) से-** श्री आर्यभट्ट पंचांग में संकलित सामग्री। तालिकाएं ज्योतिष कर्मियों के लिए निरन्तर उपयोगी है। सर्वजनोपयोगी सामग्री जैसे व्रत-पर्व-त्यौहारादि का संकलन इसे सामान्य पाठक, गृहस्थ को भी उपयोगी बना देता है, जहाँ मासिक राशि-फलादेश उनके आकर्षण का विषय बनता है।

❖ **प्रो. जवाहर मुथा, सम्पादक एवं अध्यक्ष ज्योतिष पत्रिका, नवीं पेठ, अहमद नगर से-** यह कहने में भी सानंद हर्ष होता है कि आर्यभट्ट पंचांग सर्वांग सुन्दर और पूर्णरूपेण है। भारत की सभी भाषाओं में इसका अनुवाद होना चाहिए, ऐसा हम समझते हैं। यह पंचांग गणित में अत्यंत शुद्ध होने के कारण विश्वसनीय एवं लोकोपयोगी है।

❖ **सुरशे चन्द्र तिवारी, भीमगोडा-हरिद्वार (उ.प्र.) से-** पंचांग में अत्यधिक सामग्री एवं जानकारी होने से लगभग सब प्रकार की शंकाओं का समाधान आपके प्रकाश व मंडल एवं विद्वानों द्वारा किया गया जिससे मन प्रसन्न हो उठा।

❖ **श्री जितेन्द्र जोशी, ज्योतिष, दहिसर (पश्चिम.) मुंबई से-** पंचांग बहुत उपयोगी रहेगा, सर्व चीजें इसमें उपलब्ध हैं।

❖ **S.Mathu Ratnam From BEML Layout, Bangalore-** We are very much impressed by your Panchang which also includ monthly forecasts for different Rashi.

❖ **पं. श्यामनन्दन मिश्र, ज्योतिष सा. आचार्य), अजमेर विश्वविद्यालय से-** आपने आधुनिक प्रकार में पंचांग विषयों का समावेश करते हुए जनता जनार्दन को शास्त्रोचित दिशा निर्देश देने का प्रयास किया है। एतदर्थ मेरी हार्दिक शुभ कामना है।

❖ **अचलेश्वर त्रिपाठी, साहित्य शास्त्री, व्यावर (राज.) से-** पंचांग में आपने अनेक ज्योतिष के लिए ज्ञानवर्द्धन तथा सरलीकरण का प्रयास किया है। ज्योतिष अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त करते हुए सफल व कारगर जीवन में हो सकते हैं।

❖ **प्रो. आर. सी. दिवाकर (एम.ए.बी. एस. सी) गणित, ज्योतिष, हस्त रेखा विशेषज्ञ तथा तान्त्रिक, व्यावर राज. से-** आपका पंचांग पढ़ने के बाद मुझे अब अन्य पंचांगों की आवश्यकता मालूम नहीं पड़ती है।

❖ **चिन्तामणि रा. केलकर, बासगांव, गोवा से-** श्री आर्यभट्ट पंचांग बहुत ही उपयुक्त है, इसमें कोई शंका नहीं।

❖ **रोशन लाल दुकानदार, शिमला से-** पंचांग बहुत ही उपयोगी है। क्योंकि इसकी भाषा शैली आधुनिक तथा सरल है।

❖ **पं. नन्दकुमार जमुनाधर त्रिपाठी, ज्योतिष साहित्य आयुर्वेद विशारद, संस्कृत प्रथमा, संगीत, सत्यनारायण कथा वाचक, जलगाँव, महाराष्ट्र से-** श्री आर्यभट्ट पंचांग आदि से अंत तक देखा तो पाया कि पंचांग परिपूर्ण है। सू.उ. सारणी, अंक विचार, लग्न विचार, सू.उ. परिवर्तन पद्धति, यंत्र-मंत्र-तंत्र साधना, रत्नों का प्रभाव, उपयोगी विषयों का समालोचन कर समावेश किया है।

❖ **पं. शान्ता प्रसाद पाराशर, एम.ए. साहित्यरत्न, ज्योतिष वाचस्पति, ग्वालियर, म.प्र. से-** पंचांग का गणित एवं विस्तृत कलेवर निश्चय ही श्रेष्ठ एवं सराहनीय है।

❖ **परमानन्द शास्त्री, राजस्थान संस्कृत विद्यालय, तारानगर चुरू से-** आप लोगों ने आर्यभट्ट की विस्मृति को फिर स्मरण करा कर अनुकरणीय कार्य किया है तथा कुछ अहंकारू पंचांगकारों की मूर्खता को भी उजागर किया है।

❖ **पं. प्रेमसुख ओझा, शास्त्री, एम.ए. संस्कृत, बी.एड., तारानगर, चुरु, राजस्थान से-** पंचांग की सामग्री बहुत ही उपयुक्त एवं लाभदायक है। आपका प्रयास सराहनीय है। गागर में सागर भरने का प्रयास है।

❖ **सुजानमल जैन ज्योतिष, अर्थ टू स्टार ज्योतिष एवं शिक्षा केन्द्र, बियाबानी, इन्दौर (म.प्र.) से-** पंचांग अवलोकन के बाद हमें कोई त्रुटी नहीं लगी तथा साथ ही-टू-इन-वन तथा कीमत भी दूसरे पंचांगों के मुकाबले कम है।

❖ **मधुकर गोविंद हुपरीकर-ज्योतिर्विद्या भूषण, कोल्हापुर से-** पंचांग का अभ्यास किया, इसमें जो जानकारी है बहुत ही उपयुक्त है। इसका गणित विभाग अत्यंत शुद्ध है। जानकारी उपयोगी तथा सरल है।

❖ **मधुकर मुकुंदराव हिरे-इंजीनियर, ज्यों. विशारद, बांदे पूर्व मुंबई से-** आर्यभट्ट पंचांग बहुत ही शास्त्र शुद्ध जानकारी देता है। कृपया मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

- **अरुण सदाशिव जोशी-ज्यो.भास्कर, नासिक, महाराष्ट्र से**-ज्योतिष शास्त्र और पंचांग के साहित्य में आपके प्रयास सराहनीय हैं। अक्षांशादि सारणी का उपयोग तथा ज्योतिर्विदों को बृहत होगा। सर्वदृष्टि से आपका पंचांग बहुत अच्छा है। इस काम में आपको सफलता मिले, यही भगवान से प्रार्थना करता हूँ।
- **एम.एम.श्रीवास्तव, भवेश ज्यों अनुसंधान केन्द्र, भोपाल (म.प्र.) से**-पंचांग की छपाई और इसमें दी गई जानकारी बहुत महत्वपूर्ण है।
- **डॉ. बी. शामसखा-डायरेक्टर, मोतीबाग, नई दिल्ली से**-अपने दैनिक कार्यों में उपयोग के लिए मुझे ऐसे ही संक्षिप्त पंचांग की खोज थी। इस उपयोगी सुन्दर, संक्षिप्त और जानकारी पूर्ण पंचांग के प्रकाशन के लिए बधाई।
- **वैद्य पं. नारायण शर्मा कौशिक, प्रधान सम्पादक (अवैतनिक) वेदांग ज्योति एवं श्री सालासर पंचांग मेड़ता सिटी नागौर से**-श्री आर्यभट्ट पंचांग गागर में सागर युक्त अतुलित ज्योतिषी सामग्री की जानकारी देने वाला विश्व में प्रथम पंचांग दृष्टिगोचर हुआ। इसकी प्रशंसा एवं उपादेयता स्वत: उजागर होती है।
- **संतोष राम (हस्त रेखा विशेषज्ञ) मॉडल टाउन, दिल्ली से**-आपका पंचांग भारतीय ज्योतिष विद्या की प्राचीन परंपरा को बनाए रखने का सराहनीय प्रयास है। पंचांग के प्रकाशन हेतु कोटि-कोटि सधन्यवाद।
- **रामजीलाल शर्मा, रतलाम (म.प्र.) से**-आपके द्वारा निर्मित पंचांग देखा व काम में लिया आपका प्रयास व साहित्य सराहनीय है।
- **पं. गिरि मोहन गुरु-गोस्वामी सेवाश्रम-होशंगाबाद (म.प्र.) से**-पंडितों के हितार्थ अनेक अन्य सामग्री देकर गागर में सागर वाली उक्ति चरितार्थ कर दी है।
- **निशिकान्त जोशी (ज्यो. शास्त्री), ठाणा (महाराष्ट्र) से**-आपका पंचांग आम जनता तथा ज्योतिष के लिए कुंडली बनाने के लिए भी उपयुक्त है। पंचांग चन्द्र-सूर्य की तरह पृथ्वी पर चमकता रहे यही हमारी शुभ कामना है।
- **डॉ. राजकुमार रत्नप्रिय, सम्पा.-कॉस्मो इण्डिया-कानपुर से**-अधिकाधिक विषयों का श्रेष्ठ समायोजन निश्चय ही पंचांग को सर्वोपयोगी और लोकप्रिय बनाता व इसका मुझे पूर्ण विश्वास है। मेरी शुभ कमनाएं।
- **किशन लाल उपाध्याय शास्त्री, मन्थन ज्यो. कार्यालय, चुरू (राज.) से**-यह पंचांग वर्ष की अत्यन्त महत्वपूर्ण कृति होती है। विस्तृत क्रमबद्ध होड़ाचक्र इसी पंचांग की अतुलनीय विशिष्ट विशेषताएं है।
- **डॉ.भालचन्द्र शंकर शास्त्री (ज्योतिषाचार्य, ज्यो. अलंकार, ज्यो. तीर्थ, राज ज्यो. म.प्र. शासन, लश्कर ग्वालियर से**-पंचांग ज्योतिष के लिए परमोपयोगी है। छपाई अति सुन्दर, स्वच्छ एवं स्पष्ट होने से बाल-वृद्ध मानवों को पठनीय है। मुख्य-मुख्य सभी विषय इस पंचांग में आपने भर दिए हैं। जैसे गागर में सागर।
- **पं. चन्द्रिका प्रसाद बाजपेयी-भोपाल, मध्य प्रदेश से**-आर्यभट्ट पंचाग के अतिरिक्त ग्रहों की स्थिति, मुहूर्त्त की शुद्धता, ज्यो. संबंधी विविध जानकारी का संग्रह यहाँ उपलब्ध अन्य पंचांगों में नहीं मिलता है।
- **प्रकाश नाथ चौहान (तंत्र ज्योतिषाचार्य साहित्य कला सरस्वती प्राच्य विद्या महामहोपाध्याय तांत्रिक मार्तण्ड आदि उपाधि से विभूषित तथा रजत एवं स्वर्ण पदक से सम्मानित, ब्यावर (अजमेर) राज. से**-'श्री आर्यभट्ट पंचांग' में ज्योतिष विषयक भव्य सामग्री देखकर ऐसा प्रतीत हुआ मानो गागर में सागर भरने का प्रयास किया गया है। पंचांग का आलोक विश्व के कोने-कोने में प्रसारित हो यह मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।
- **पं. शिवचरण लाल शर्मा, ज्यो. कुम्भराजज-गुना (म.प्र.) से**-यह पंचांग निर्माणात्मक प्रवृत्तियों का प्रतिपादन करते हुए भारत की समस्याओं का समाधान व उत्थान का काम करेगा। आपके इस प्रयास के लिए शुभकामनाएँ।
- **लक्ष्मीचन्द्र गुप्ता (तांत्रिक एवं पत्रकार, बी.ए. विद्यारत्न, ज्यो. तन्त्र मार्तण्ड, बी.ए. एम.एस. (कल). आयुर्वेद रत्न (प्रयाग), फार्मासिस्ट एवं परामर्शदाता चिकित्सक), पीलीभीत (उ. प्र.) से**-पंचांग कुछ नवीनताएं लिए हुए हैं जो अन्यों में नहीं मिलती जैसे ग्रहों का भावानुसार, गोचर फल, वर्ष फल, जन्म कुण्डली फल (पु. स्त्री का इसके अतिरिक्त इसकी पाठ्य सामग्री व सारणियां भी कम उपयोगी नहीं है।
- **भालचन्द म. लेम्भ, एम.ए. (साहित्य विशारद (मराठी), रा.भा. रत्न, शनिवार पेढ, पुणे से**-दैनंदिनी घरेलू जीवन में जितनी बातों की आवश्यकता होती है उन सभी का इस पंचांग में अंतर्भाव किया है। ज्योतिष के लिए तो यह अत्यंत उपयुक्त है।
- **इन्दरमल चौधरी (ज्यो. भूषण, ज्यो. मनीषी, ज्यो. मार्तण्ड, ज्यो. दिवाकर, जो. श्री, दैवज्ञ श्री उपाधियां एवं रजत पदक प्राप्त), सम्पा. एवं प्रकाशक, 'ज्यो.रत्न' पत्रिका, सादड़ी-राजसमन्द (राज.) से**-आर्यभट्ट पंचांग की गणित शुद्ध है, सारगर्भित विषय वस्तु ज्योतिष प्रेमियों के लिए सुबोध है। पंचांग का प्रारूप तैयार करने में आपका श्रम सराहनीय है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका पंचांग देश में प्रथम स्तर का पंचांग साबित होकर ज्योतिष जगत में अक्षम ख्याति प्राप्त करेगा।
- **कपिल देव मिश्र (साहित्य रत्न, भा. रत्न, फेस रीडर, ज्योतिर्विद, मंत्र-तंत्र-यज्ञ विशेषज्ञ), फुलावा, मुंबई से**-भारत के कर्मकाण्ड एवं ज्योतिषियों के लिए यह पंचांग सहायक ही नहीं पूर्णरूप से मार्गदर्शन करने वाला है। इसका एक-एक पृष्ठ ज्यो. जगत के लिए वरदान साबित होगा।
- **महर्षि पं. मदन मोहन एस. जोशी (स्वर्ण पदक से विभूषित, ज्योतिषाचार्य, रमलाचार्य)** -श्री आर्यभट्ट पंचांग में सूक्ष्म गणित वास्तव में ज्योतिषियों के गणित भाव हेतु पूर्ण लाभप्रद साबित हो रहा है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

महर्षि आर्यभट्ट

वराहमिहिर और आर्यभट्ट हमारे प्राचीनतम आचार्यों में से हैं। वराहमिहिर ने प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रन्थ 'वृहत् जातक' की रचना की और आर्यभट्ट प्रथम ने 'आर्यभटीय' ग्रन्थ लिखा। ज्योतिष का क्रमबद्ध इतिहास आर्यभट्ट के समय सेही मिलता है; यद्यपि वेदों के समय से ज्योतिष का ज्ञान आरम्भ हो गया था और ज्योतिष वेद के प्रमुख अंगों में से एक है। तब से आर्यभट्ट के समय तक सूर्यादि ग्रह, काल बोध, ग्रह-नक्षत्र, धूमकेतु, ग्रहण, ग्रहनक्षत्रों की गति स्थिति का ज्ञान, सिद्धान्त, होरा, प्रश्न, शकुन, ज्योतिष आदि का आविष्कार हो गया था। नक्षत्रों की आकृति, स्वरूप, गुण, प्रभाव आदि की परिभाषा, ऋतु, अयन, दिनमान लग्नादि के शुभाशुभ फलों का ज्ञान, राशियों और ग्रहों के स्वरूप, रंग, दिशा, तत्व, धातु आदि का विवेचन, ब्राह्मण और आरण्यक ग्रन्थों की रचना काल तक पूर्णरुप से ज्ञात हो गये थे। ग्रहों की गति, स्थिति, अयनांश, मुहूर्त, शुभाशुभ समय का निर्णय, यथा ज्योतिष के पांचों अंगों-होरा, सिद्धान्त, गणित, संहिता, मुहूर्त, फलित, प्रश्न तथा शकुन शास्त्र की निरन्तर उन्नति होती गई थी।

अन्य शास्त्रों के समान ज्योतिष के आविष्कर्त्ता भी भारतीय ही हैं। योगाभ्यास द्वारा प्राचीन ऋषियों ने अपनी सूक्ष्म प्रज्ञा से शरीर के अन्दर ही समस्त सौर मण्डल के दर्शन किये और आत्म-निरीक्षण से आकाशीय सौर मण्डल की व्याख्या की। अंक विद्या ही इस शास्त्र का आधार है और इसका श्री गणेश भारत में ही हुआ था। प्रचीन भारत में तक्षशिला, नालन्दा आदि स्थानों पर विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षण संस्थायें थीं, जहां पर दूर-दूर देशों के विद्यार्थी विद्याध्ययन करने के लिए आते थे और अपने देशों में जाकर इसका प्रचार करते थे। ऋग्वेद तथा शतपथ ब्राह्मण के अध्ययन से पता चलता है कि कम-से-कम २८००० वर्ष पहले भी भारतीयों ने खगोल तथा ज्योतिष-शास्त्र का पूर्ण रुप से मन्थन कर लिया था।

आर्यभट्ट नाम के दो विद्वान् ज्योतिषी हुए हैं। आर्यभट्ट प्रथम का जन्म ईस्वी सन् ४७६ में हुआ था। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'आर्यभटीय' में इन्होंने सूर्य एवं तारागण के स्थिर होने तथा पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन किया है। इन्होंने पृथ्वी की परिधि ४९६७ योजन बताई है, सूर्य और चन्द्रग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या की है। काल-क्रिया पाद में युग के दो समान भाग करके पूर्व भाग को उत्सर्पिणी तथा उत्तर भाग को अवसर्पिणी संज्ञा दी है तथा प्रत्येक के छः छः भेद बताये हैं। ग्रहों को स्पष्ट करने की विधि बतलाई है। बुध और शुक्र को विलक्षण संस्कार से स्पष्ट करना बताया है। सबसे महत्वपूर्ण कार्य इन्होंने यह किया कि अंक (संख्या) के द्योतक क, ख, ग आदि वर्णों की कल्पना की और अ, आ, इ, ई आदि स्वर वर्ण तथा क, ख, ग आदि व्यंजन वर्णो को एक-एक संख्या-वाचक अर्थ देकर बड़ी-बड़ी संख्याओं को लिखने की विधि का आविष्कार किया। इसी विधि को बाद में रोमनों ने अंग्रेजी अक्षरों में भी लिया; जैसे-पांच के लिए V, दस के लिए X आदि-आदि।

महर्षि आर्यभट्ट ने क = १, ख = २, ग = ३, घ = ४, ङ = ५, च = ६, छ = ७, ज = ८ इसी प्रकार क्रम से म = २५, य = ३०, र = ४०, ल = ५०, व = ६०, श = ७०, ष = ८०, स = ९०, ह = १००; क = एक, कि = सौ, कु = दस हजार, कृ = दस लाख, क्लृ = दस करोड़, के = दस अरब, कै = दस खरब, को = दस नील, कौ = दस शंख; इसी प्रकार ख = दो, खि = दो सौ, खु = बीस हजार आदि-आदि। इसी प्रकार वर्णों द्वारा संख्यायें लिखने की विधि विस्तार से समझायी है। आर्यभट्ट ने अपने विख्यात ग्रन्थ 'आर्यभटीय' की रचना प्राचीन कुसुमपुर में (जो आज का पटना नगर है) रहकर की थी। इस ग्रन्थ के गणित पाद (प्रकरण) में वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल एवं अन्य व्यवहार श्रेणियों का विशद विवेचन किया है।

आर्यभट्ट द्वितीय ब्रह्मगुप्त के बाद, यानि ५९८ ई. के बाद और भास्कराचार्य, जिनका काल १११४ ई. के पहले का है। इन दोनों के मध्य कभी हुए थे। इनका रचित ग्रन्थ 'महा आर्यभटीय' है। इसमें १८ अध्याय हैं, जिनमें पाटी गणित, क्षेत्र व्यवहार तथा बीज गणित भी सम्मिलित है। प्रथम आर्यभट्ट के सिद्धान्तों में इन्होंने कई संशोधन किये। इस ग्रन्थ की परम्परा को बाद के अनेक ज्योतिषियों ने अपनाया। इसी कारण इनका ग्रन्थ 'महा आर्यभटीय' भी बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इनके जीवन के विषय में विशेष कुछ ज्ञात नहीं है, परन्तु इनकी अपूर्व विद्वता तथा महान पाण्डित्य इनके अनुपम ग्रन्थ से ही ज्ञात हो जाता है। दोनों ही आर्यभट्ट ज्योतिष के महान् विद्वान थे और इसी कारण भारत ने अपने उपग्रह का नाम इनके नाम पर रखा। ये दोनों विद्वान् महान गणितज्ञ थे और आधुनिक वैज्ञानिक उपग्रह प्रणाली आदि उन्हीं के द्वारा बताये गणित को और आगे बढ़ाते हुए आज की उच्च अवस्था तक पहुंची है।

हमने अपनी अनुसंधान संस्था का नामकरण इन्हीं विभूतियों के नाम पर किया है और आशा करते हैं कि इनके आशीर्वाद से हम ज्योतिष विद्या में नई-नई बातों का शोध व आविष्कार करने में सफलता प्राप्त करेंगे और इनके नाम के अनुसार प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। हम ज्योतिष-प्रेमियों से पूर्ण सहयोग की आशा करते हैं और अनुरोध करते हैं कि आप अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

-लक्ष्मी नारायण शर्मा
बी.ए. प्रभाकर, साहित्यरत्न
ज्योतिष वाचस्पति

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

एक और प्रयास ज्योतिष सेवा के निमित्त

आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना श्री धर्मपाल जी अग्रवाल के विशेष परिश्रम तथा सहयोग से ही सम्भव हो सकी है। श्री धर्मपाल जी मै. धर्मसन प्रकाशन के वरिष्ठ भागीदार हैं। धर्मसन प्रकाशन गत २०-२२ वर्षों से कतिपय श्रेष्ठ पंचांगों का उच्चस्तर का प्रकाशन करता आ रहा है। विभाजन से पूर्व लाहौर में इनके पूज्य पिताजी की प्रकाशन संस्था मै. मेहरचन्द एण्ड सन्स भी तत्कालीन उच्च-कोटि के हिन्दी, श्री विश्व मार्तण्ड पंचांग तथा उर्दू मेहर आलम आदि जन्त्रियों के प्रकाशक थे। पैतृक व्यवसाय होने के कारण पंचांग प्रकाशन कार्य इनको रक्त में ही उत्तराधिकार स्वरूप मिला। आप अब तक ५० वर्ष का व्यक्तिगत अनुभव भी अर्जित कर चुके हैं।

श्री मार्तण्ड परिवार के उर्दू, पंजाबी, हिन्दी भाषा में प्रकाशित श्री मार्तण्ड आलम जन्त्री (मेहर आलम जन्त्री), शिरोमणि तिथि प्रत्रिका और श्री बटुक पंचांग आदि विभाजन पूर्व श्री मेहरचन्द एण्ड सन्स लाहौर के द्वारा प्रकाशित होते रहे हैं। और आजकल सं. २०४२ से धर्मसन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किये जाते हैं। उपरोक्त पंचांग व जन्त्रियों के प्रकाशन स्तर में गत ४ वर्षों में ही अभूतपूर्व प्रगति हुई है। सं. २०३३ से श्री विश्वविजय पंचाग का प्रकाशन भी धर्मसन प्रकाशन द्वारा आरम्भ किया गया और सं. २०४१ तक यह पंचांग इसी प्रकाशन संस्था द्वारा प्रकाशित किया जाता रहा। इन वर्षों में इस पंचांग की लोक प्रियता में जो गुणात्मक वृद्धि हुई उसका श्रेय अधिकांश में इसकी सुचारू प्रकाशन व्यवस्था को ही है। धर्मसन प्रकाशन इस वर्ष से (श्री प्रेमपाल कौशिक जी का) राजधानी पंचांग भी प्रकाशित कर रहा है, गत ४-५ वर्षों से पं. जीयालाल जी के असली पंचांग तथा मशहूर आम जन्त्री हिन्दी, उर्दू और सं. २०३६ (सन् १९७९) से लाहौर के प्रसद्धि पं. देवीदयाल जी के पंचांग दिवाकर, मुफीद आलम जन्त्री हिन्दी, उर्दू प्रकाशित होते हैं। इसके अलावा उत्तरी भारत के अधिकांश प्रमुख पंचांग भी धर्मसन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित होते हैं।

आजकल पंचांग तो काफी संख्या में प्रकाशित हो रहे हैं परन्तु अच्छे स्तर के पंचांगों की संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती है। इनमें भी दिल्ली के अक्षांश पर आधारित पंचांग तो एकाध ही हैं। कुछ समय पहिले तक ज्योतिष के शास्त्रोक्त ग्रंथ संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध थे और भाषा टीका सहित पुस्तकों की भाषा भी संस्कृत निष्ठ कठिन भाषा ही रहती थी। अभी गत कुछ वर्षों से ज्योतिष शास्त्र पर हिन्दी में पुस्तकों का प्रकाशन आरम्भ हुआ है। जिनके द्वारा सर्वसाधारण में भी ज्योतिष के गूढ़ तत्वों के ज्ञान का प्रचार हुआ है। परन्तु अधिकांश पंचांगों में अभी तक बहुत से विषयों की जानकारी केवल संस्कृत भाषा में अथवा संस्कृत निष्ठ क्लिष्ठ हिन्दी में दी जाती है। इस कारण हिन्दी जानने वाले ज्योतिष प्रेमीजन तो उसे समझ ही नहीं पाते, बहुत से पंडित और ज्योतिषी भी कठिनाई का अनुभव करते हैं। संस्कृत देवभाषा है और हमारा बहुत सा ज्ञान भण्डार इस भाषा में संचित है इसमें कोई भी संदेह नहीं। परन्तु खेद है कि इस भाषा को पढ़ने व जानने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि प्राचीन संचित ज्ञान भण्डार को सरल सुबोध भाषा में वर्तमान परिपेक्ष्य में हिन्दी भाषी जनता को उपलब्ध कराया जाय। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर आर्यभट्ट पंचांग का प्रकाशन आरम्भ किया गया है।

इस पंचांग के सम्पादक पं. लक्ष्मीनारायण शर्मा बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न ज्योतिष वाचस्पति की ज्योतिष प्रथमा, गणित ज्योतिष प्रथमा गणित, फलित, अंक ज्योतिष, हाथ की रेखाएं, स्वरोदय शिक्षा, राजयोग शिक्षा, मंत्र-तन्त्र साधना और तंत्र विद्या नाम से पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। सौ साल के पंचांग **'शतक मार्तण्ड'** का सम्पादन भी किया है। ज्योतिष प्रेमी सज्ञनों ने उनकी सरल सुबोध भाषा तथा विषय प्रतिपादन शैली की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। इस पंचांग के पाठकों को उनके अध्ययन अनुभव भाषा व शैली का दिग्दर्शन स्थान-२ पर प्राप्त होगा।

श्री आर्यभट्ट पंचांग का प्रकाशन कार्य श्री आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र के अन्तर्गत प्रकाशन कार्य के अनुभवी श्री धर्मपाल जी के निर्देशन में ही किया गया है। आशा है ज्योतिष प्रेमी सज्ञन इसके मुद्रण औ साज सज्ञा को सन्तोष जनक पायेंगे। हमारा प्रयास रहेगा कि आगामी वर्षों में और भी अधिक उपयोगी सामग्री सम्मिलित करें और पंचांग का स्तर उत्तरोत्तर उत्तम बनाया जाये। इस विषय में आपके सुझाव आमन्त्रित हैं। पंचांग का अभी शैशव काल है। त्रुटियों का रहना स्वाभाविक है। आशा है विद्वज्ञन त्रुटियों को क्षमा करते हुए इन्हें प्रोत्साहित करेंगे ताकि ज्योतिष प्रेमी जनता की वृहत्तर सेवा कर सकें।

आर.एन. पाण्डे
दिल्ली

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्रतोत्सव, अवकाश दिन तथा वर्गीकृत त्यौहारादि सं. २०५७ विक्रमी, शाके १९२२, सन् २००० - २००१ ई.

नववर्षारंभ, गुड़ी पड़वा	५ अप्रै.
नवरात्र प्रारम्भ, गौतम जयंती	५ "
श्री झुलेलाल जयंती, चेटीचंड	६ "
मत्स्य जयंती, गणगौर पूजन	७ "
सौभाग्य तृतीया व्रत	७ "
विश्व स्वास्थ्य दिवस	७ "
हय व्रत पंचमी	९ "
मेला माईसरखाना	१० "
दुर्गा ८, मेला मनसा देवी	११ "
भौमाष्टमी, अन्नपूर्णा पूजा	११ "
नवरात्र समाप्त, श्री राम ९ व्रत	१२ "
पेशादि, वैसाखी (पं.)	१३ "
कामदा एकादशी व्रत	१४ "
डॉ. अम्बेडकर जयंती	१४ "
विशुविषु, विशु, वैसाखादि	१४ "
हरिदमनोत्सव	१५ "
प्रदोष व्रत, महावीर जयंती	१६ "
मुहर्रम ताजिया	१६ "
दमनक १४, मे. देवबन्द	१७ "
चैत्री पूर्णिमा, हनुमान जयंती	१८ "
सत्यव्रत, वैशाख स्नान प्रा.	१८ "
गुड फ्राईडे	२१ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत	२२ "
शीतलाष्टमी	२७ "
वरूथिनी ११ व्रत	३० "
श्री वल्लभाचार्य जयंती	३० "
सोम प्रदोष व्रत, मजदूर दिवस	१ मई
श्री शुकदेव जयंती, मेला पंजोर	४ "
देव दामोदर तिथि	४ "
छत्रपति शिवाजी जयंती	५ "
श्री परशुराम ज., अक्षया तृतीया	६ "
मातंगी ज., केदार नाथ यात्रा	६ "
वैनायक ४ व्रत, टैगोर जयंती	७ "
सोमवती ५, आद्य शंकराचार्य ज.	८ "
श्री रामानुजाचार्य जयंती	९ "
गंगा सप्तमी पूजन	१० "
श्री दुर्गा ८, बगलामुखी जयंती	११ "
श्री जानकी जयंती	१२ "
मोहिनी एकादशी व्रत	१४
सोम प्रदोष, राधा द्वादशी	१५ "
परशुराम द्वादशी	१५ "
श्री नृसिंह जयंती	१६ "
छिन्नमस्ता जयंती	१७ "
कूर्म जयंती, सत्यव्रत	१७ "

वैशाखी पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा	१८ मई
वैशाख स्नान पूर्ति	१८ "
श्री नारद जयंती	१९ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत	२१ "
श्री मां आनन्दमयी जयंती	२१ "
कालाष्टमी	२६ "
मेला चनानी माताजी	२६ "
पं. जवाहरलाल पुण्य तिथि	२७ "
अपरा एकादशी व्रत (स्मार्त)	२९ "
अपरा एकादशी व्रत (वैष्ण.)	३० "
भद्रकाली एकादशी	३० "
प्रदोष व्रत, वट् सावित्री व्रतारंभ	३१ "
शनि जयंती, भावुका अमा.	२ जून
वट् सावित्री व्रत समाप्त	२ "
देव पितृकार्याऽमावस्या	२ "
करवीर व्रत	३ "
विश्व पर्यावरण दिवस	५ "
श्री प्रताप जयंती, मेला हल्दीघाटी	५ "
श्रुति पंचमी (जैन)	६ "
अरण्य षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा	६ "
धूमावती जयंती, दुर्गाष्टमी	९ "
श्री माहेश्वरी नवमी	१० "
रवि दशमी, बटुक भैरव जयं.	११ "
गंगा दशहरा मेला हरिद्वार	११ "
निर्जला एकादशी व्रत	१२ "
चम्पक द्वादशी	१३ "
प्रदोष व्रत, राज्स संक्रांति	१४ "
वट् सावित्री व्रत प्रारम्भ (गुज.)	१४ "
ईद-ए-मिलाद (बारावफात)	१५ "
ज्येष्ठी पूर्णिमा, सत्यव्रत	१६ "
कबीर जयंती, वट सावित्री	
व्रत समा. (गुजरात)	१६ "
गुरु हर गोबिन्द सिंह जयंती	१८ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत	२० "
कालाष्टमी	२४ "
योगिनी एकादशी व्रत	२८ "
प्रदोष व्रत	२९ "
देवपितृकार्याऽमावस्या	१ जुला.
मनोरथ द्वितीया व्रत (बंगाल)	२ "
श्री जगदीश रथ यात्रा (उड़ीसा)	५ "
स्कन्द पंचमी	६ "
कुमार षष्ठी व्रत	७ "
विवस्त सप्तमी	७ "
जैन अट्ठाई प्रारम्भ	८ "

खरची पूजा (त्रिपुरा), दुर्गा ८	९ जुला.
भड्डली ९, मे. शरीफ भवानी	१० "
गिरिजा पूजा, बहुधा यात्रा	११ "
देवशयनी ११ व्रत	१२ "
प्रदोष व्रत	१३ "
मरत्यर दिवस (कश्मीर)	१३ "
ग्यारहवीं शरीफ	१४ "
जया पार्वती व्रत प्रारंभ	१४ "
चौमासी चौदश (जैन)	१५ "
आषाढ़ी पूर्णिमा, सत्यव्रत	१६ "
व्यासपूजा, गुरु पूर्णिमा	१६ "
मनसा पूजा प्रा. (बंगाल में)	१६ "
खग्रास चन्द्रग्रहण	१६ "
श्री लोकमान्य तिलक जयंती	२३ "
केर पूजा (त्रिपुरा)	२५ "
कामदा एकादशी व्रत	२७ "
प्रदोष व्रत	२८ "
हरियाली अमा., सरस माधु. ज.	३१ "
नक्त व्रत प्रा., देवकार्याऽमा.	३१ "
हरियाली तीज, मधुश्रवा तीज	२ अग.
विनायक ४ व्रत	३ "
नागपंचमी देशाचारे	४ "
कल्की जयंती	५ "
गो. तुलसीदास जयंती	६ "
दुर्गा ८, मे. चिन्तपूर्णी व नयना देवी	७ "
पुत्रदा ११ व्रत, झूलन यात्रारंभ	१० "
शनि प्रदोष व्रत	१२ "
सत्यव्रत, झूलन यात्रा समापन	१४ "
रक्षाबन्धन, अमरनाथ दर्शन	१५ "
संस्कृत दिवस, श्रावणी पूर्णिमा	१५ "
भारतीय स्वतंत्रता दिवस	१५ "
मनसा पूजा समाप्त (बंगाल)	१६ "
कज्जली तृतीया व्रत	१७ "
सातूड़ी तीज, बहुला ४ व्रत	१८ "
रक्षा पंचमी (उड़ीसा)	१९ "
चन्द्र षष्ठी व्रत	२० "
श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त)	२२ "
श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णव	२३ "
नन्दोत्सव, गोगा नवमी	२४ "
अजा ११ व्रत स्मार्त	२५ "
अजा ११ व्रत वै., वत्स द्वादशी	२६ "
जैन पर्युषण प्रा., बीछ बारस	२६ "
प्रदोष व्रत	२७ "
अघोरा १४ व्रत	२८ "

पिठौरी ३०, देवपितृकार्याऽमा.	२९ अग.
मेला सुथरेशाह दिल्ली	२९ "
नक्त व्रत समा., वीर जन्मोत्सव	३० "
मेला रूणीचा (जैसलमेर)	३१ "
वराह जयंती, हरितालिका ३ व्रत	१ सितं.
पत्थर ४ व्रत, गणेश जन्मोत्सव	१ "
ऋषि पंचमी, जैन सम्वत्सरी	२ "
सूर्य षष्ठी, बलदेव छठ	४ "
शिक्षक दिवस, सन्तान सप्तमी	५ "
मुक्ताभरण, महालक्ष्मी व्रत प्रारंभ	५ "
श्री राधाष्टमी, श्री दधीचि ज.	६ "
श्री चन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्र.)	७ "
विश्व साक्षरता दिवस	८ "
पद्मा ११ व्रत, डोल ११ (म.प्र.)	९ "
जलझूलनी मेला चार भुजानाथ	९ "
वामन जयंती, भुवनेश्वरी ज.	१० "
ओणम दिवस (केरल)	१० "
सोम प्रदोष व्रत	११ "
गोत्रि-रात्रि व्रत प्रा., भूदान ज.	११ "
अनन्त १४ व्रत	१२ "
सत्यव्रत, गोत्रि रात्रि व्रत समा.	१३ "
पौष्ठपदी पूर्णिमा	१३ "
इन्जीनियर्स दिवस	१५ "
विश्वकर्मा पूजा	१७ "
श्री महालक्ष्मी व्रत समा.	२० "
मातृ नवमी	२२ "
इन्दरा ११ व्रत	२४ "
सोम प्रदोष व्रत	२५ "
सर्वपितृ अमावस्या व श्राद्ध	२७ "
शरद् नवरात्र प्रा., अग्रसेन ज.	२८ "
बैंकों में अर्द्धवार्षिक लेखाबन्दी	३० "
उपांग ललिता पंचमी व्रत	२ अक्टू.
महात्मा गाँधी, शास्त्री जयंती	२ "
दुर्गा पूजा प्रा., सरस्वती आवाहन	४ "
श्री महाष्टमी व्रत पूजन	५ "
महानवमी, नवरात्र समाप्त	६ "
विजया दशमी, मेला दशहरा	७ "
सरस्वती वि., माधवाचार्य ज.	८ "
भरतमिलाप, वायु सेना दिवस	८ "
पापांकुशा ११ व्रत	९ "
भीम प्रदोष व्रत	१० "
शरद पूर्णिमा, कोजागरी व्रत	१२ "
बाल्मीकि ज., कार्तिक स्ना. प्रा.	१३ "
जन्मदिन हजरत अली	१३ "

करक चतुर्थी व्रत	१६ अक्टू.
अहोई अष्टमी	२० "
रमा ११ व्रत, गोवत्स पूजा	२३ "
भौम प्रदोष व्रत, धन तेरस	२४ "
नरक चतुर्दशी, रूप १४	२५ "
दीपावली, लक्ष्मी पूजन	२६ "
अन्नकूट, गोवर्धन पूजन	२७ "
भैया दूज, विश्वकर्मा जयंती	२९ "
स.पटेल ज., इन्दिरा गांधी पु.दि.	३१ "
पांडव ५, सौभाग्य ५	१ नवं.
सूर्य षष्ठी व्रत, डाला छठ	२ "
दुर्गा ८, गोपाष्टमी	४ "
आंवला ९, कुष्माण्ड नवमी	५ "
देव प्रबोधिनी ११ व्रत	७ "
कालीदास जयंती	८ "
प्रदोष व्रत	९ "
वैकुण्ठ १४ व्रत, चौमासी १४	१० "
कार्तिकी १५, सत्यव्रत, देव दिवाली	११ "
शबे-ए-बरात, कार्तिक स्ना. समा.	११ "
गुरु नानक जयंती, मेला पुष्करराज	११ "
सौभाग्य सुन्दरी व्रत, बालमेला	१४ "
पं. जवाहर लाल नेहरू जयंती	१४ "
सुविधानाथ जयंती, दीक्षा दिवस	१६ "
लाला लाजपतराय पुण्य दिवस	१७ "
श्री महाकाल भैरवाष्टमी	१८ "
उत्पत्ति एकादशी व्रत	२१ "
प्रदोष व्रत, संत ज्ञानेश्वर पु.दि.	२३ "
देव पितृकार्याऽमावस्या	२५ "
गुरुतेगबहादुर बलिदान दिवस	१ दिसं.
स्कन्द षष्ठी व्रत, चम्पाषष्ठी	२ "
मित्र सप्तमी, नरसी मेहता ज.	३ "
महानन्दा नवमी	५ "
मोक्षदा ११ व्रत, मौनी ११	७ "
शनि प्रदोष	९ "
सत्यव्रत, अन्नपूर्णा जयंती	११ "
श्री दत्तात्रेय जयंती	११ "
कालाष्टमी, शहादते हजरत	१८ "
श्री पार्श्वनाथ जयंती	२० "
शिशिर ऋतु प्रा., सफला ११ व्रत	२१ "
जुमातुलविदा	२२ "
शनि प्रदोष व्रत, चंद्र प्रभु ज.	२३ "
शबे-ए-कदर	२४ "
पितृकार्याऽमावस्या, क्रिसमस डे	२५ "
वकुला अमावस्या (उड़ीसा)	२५ "

ईदुल फितर (ईद)	२८ दिसं.
ईसाई नववर्ष सन् २००१ प्रा.	१ जन.
श्री गुरुगोबिन्द सिंह ज.	२ "
शाम्ब दशमी	५ "
एकादशी व्रत (पवित्रा)	६ जन.
प्रदोष व्रत	७ "
पौषी पूर्णिमा, सत्यव्रत	९ "
शाकम्भरी ज., माघ स्नान प्रा.	९ "
खग्रास चन्द्रग्रहण	९ "
संकष्ट कृष्ण ४ व्रत	१२ "
लोहड़ी उत्सव	१३ "
मकर संक्रांति, पोंगल पर्व	१४ "
विवेकानन्द व रामानन्द ज.	१५ "
षट्तिला एकादशी व्रत	२० "
प्रदोष व्रत, शीतलनाथ ज.	२१ "
मेरू त्रयोदशी	२२ "
मौनी अमावस्या	२४ "
ला. लाजपतराय ज., वरद ४	२८ "
वसन्त ५, सरस्वती पूजन	२९ "
महात्मा गांधी पुण्य दिवस	३० "
रथ ७, आरोग्य ७	३१ "
महानन्दा ९, दस्तकार दिवस	२ फर.
जया ११ व्रत (स्मार्त)	४ "
जया ११ व्रत (वै.), भीष्म १२	५ "
भौम प्रदोष, हरराय जयंती	६ "
सत्यव्रत, जितेन्द्र रथयात्रा	७ "
रविदास ज., माघ स्नान समा	८ "
कालाष्टमी, जानकी जयंती	१५ "
गुरु रामदास जयंती	१६ "
स्वामी दयानन्द सरस्वती ज.	१७ "
विजया ११ व्रत	१८ "
भौम प्रदोष व्रत	२० "
महाशिवरात्रि व्रत	२१-२२ "
देवकार्याऽमावस्या	२३ "
फुलरिया २, रामकृष्ण जयंती	२५ "
दुर्गा ८, अन्नपूर्णा ८	३ मार्च
आमला ११ व्रत, ईद-उल-जुहा	६ "
प्रदोष व्रत, गोविन्द १२	७ "
महिला दिवस	८ "
सत्यव्रत, होली, चैतन्य महाप्रभु ज.	९ "
धुलेण्डी	१० "
भाई २, संत तुकाराम ज.	११ "
शीतला ७, शीतला पूजन	१६ "
पापमोचनी ११ व्रत	२० "
चान्द्र संवत्सर समाप्त	२५ "

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इस्लामी त्यौ., महापुरुष जयं., मेले, गुरु पर्व, क्रिश्चियन त्यौहार सं. २०५७ विक्रमी, शाके १९२२, सन् २०००-२००१ ई.

इस्लामी त्यौहार

मुहर्रम हिजरी सन् १४२१ प्रा.	७ अप्रै.
ताजिया (मुहर्रम)	१६ "
चेहल्लुम	२५ मई
शहादते इमाम हसन	३ जून
ईद-ए-मिलाद (बारावफात)	१५ "
ईद-ए-मौलाद	२० "
फतेहायजदहूम (११वीं शरीफ)	१४ जुला.
अजमेर का उर्स मेला शुरू	३० सितं.
जन्मदिन हजरत अली	१० अक्टू.
शबे-ए-मिराज	२७ "
शबे-ए-बारात (यवनोत्सव)	११ नवं.
रमजान, रोजा प्रारम्भ	२८ "
शहादते हजरत अली	१८ दिसं.
जुमातुल विदा	२२ "
शबे-ए-कदर	२४ "
ईदुल-फितर	२८ "
हज्ज (२००१ ई.)	५ मार्च
ईद-उल-जुहा (बकरीद)	६ "

महापुरुष जयन्तियाँ (जैन)

मुनि सुमतिनाथ	जयंती	१४ अप्रै.
" महावीर स्वामी	"	१६ "
" सुव्रतनाथ	"	२९ "
" कुन्थनाथ	"	५ मई
" अनन्तनाथ	"	३० "
" शान्तिनाथ	"	१ जून
" सुपार्श्वनाथ	"	१३ "
" नमिनाथ	"	२७ "
" नेमिनाथ	"	५ अग.
" पद्मप्रभुनाथ	"	२५ अक्टू.
" सम्भवनाथ	"	११ नवं.
" पुष्पदन्तनाथ	"	२६ "
" मल्लिनाथ	"	७ दिसं.
" अहरनाथ	"	१० "
" चन्द्र प्रभु, पार्श्वनाथ	"	२१ "
" यतेन्द्र सुरिश्वरनाथ जयंती		२८ "
सन् २००१ ई.		
" राजेन्द्र सुरिश्वरनाथ जयंती		२ जन.
" शीतलनाथ	"	२१ "
" विमलनाथ	"	२८ "
मुनि अजितनाथ	जयंती	३ फर.
" अभिनन्दन नाथ	"	५ "
" धर्मनाथ	"	६ "
" श्रेयांशनाथ	"	१८ "
" वासुपूज्यनाथ	"	२२ "
" ऋषभनाथ	"	१८ मार्च

प्राचीन मेला दशहरा तथा अन्य उत्सव

मेला आर्यसमाज स्थापना दि.	५ अप्रै.
" चीमा नानक सर (पंजाब)	५ "
" गणगौर जयपुर (राज.)	७ "
" माई सरखाना (पंजाब)	१० "
" बाहुफोर्ट (जम्मू-कश्मीर)	११ "
" मनसा देवी (हरियाणा)	११ "
" ज्वालामुखी (हरचोवाल)	११ "
" ज्वालामुखी (गुरदासपुर)	११ "
" रामजन्मोत्सव (अयोध्या)	१२ "
" कशाधा नहयाणी सह-कुल्लू	१५ "
" कांसा देवी (रोपड़ कांसल)	१६ "
" देवी मेला, थौहरा (कैथल)	१७ "
" बाला सुन्दरी देवबन्द (उ.प्र.)	१७ "
" मानकपुर शरीफ (रोपड़)	१८ "
" पीपल जातर (कुल्लू)	२८ "
" पिंजोर (हरियाणा)	४ मई
" आनी आउटर सिराज (कुल्लू)	७ "
" ढूंगरीजातर (मनाली)	१४ "
" बंजार (कुल्लू) प्रा.	१४ "
" शाढ़ी जातर नगर (हि.प्र.)	१८ "
" चनानी माताजी	२५ "
" हल्दीघाटी (राज.)	५ जून
" क्षीरभवानी कश्मीर	९ "
" गंगादशहरा (हरिद्वार)	११ "
सपोर यात्रा धारलदा (बुधमपुर)	११ "
मेला बहिरे भटिण्डा (पंजाब)	१२ "
" पिपलू (ऊना, हि.प्र.)	१२ "
" भून्तर (हि.प्र.)	१४ "
" शुद्ध महादेव यात्रा (ऊधमपुर)	१६ "
" नानकसर (चीमा)	९ जुला
" शरीफ भवानी (कश्मीर)	१० "
मेला ज्वालामुखी (कश्मीर)	१५ जुला.
" नैमिषारण्य (उ.प्र.)	१६ "
" गुरु पूर्णिमा (कुराली)	१६ "
" हरियाली अमा. (उदयपुर)	३१ "
" चिन्तपूर्णी व नयना देवी (हि.प्र.)	७ अग.
" अमरनाथ दर्शन (कश्मीर)	१५ "
" द्रोण दनकौर (उ.प्र.)	२२ "
" जन्माष्टमी (मथुरा)	२३ "
" कैलाश यात्रा (कश्मीर) प्रा.	२७ "
" सुथरेशाह (दिल्ली)	२९ "
" गुसांई आणा (कुराली)	३१ "
" रुणीचा रामदेव (जैसलमेर)	३१ "
" गणेशोत्सव, मण्डी (हि.प्र.)	१ सितं.
" गणेशोत्सव (महाराष्ट्र)	१ "
" पात (कश्मीर) प्रा.	३ "
" ब्रजमण्डल (उ.प्र.)	४ "
" रामदेव (जैसलमेर)	८ "
" चारभुजा नाथ (मेवाड़)	९ "
" वामन द्वादशी (अम्बाला)	१० "
" सोडल (जालन्धर)	१२ "
" छपार (पंजाब)	१२ "
" गोयन्दवाल (पंजाब)	१३ "
" श्री आशापति यात्रा (का.)	२६ "
" ज्वाला मुखी (हि.प्र.)	५ अक्टू.
" तारा देवी (हि.प्र.)	५ "
" हरचोवाल (गुरदासपुर)	५ "
" दशहरा कुल्लू (हि.प्र.)	७ "
" शाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	१२ "
" देवी थौहरा (कैथल)	१२ "
" दीपावली (अमृतसर)	२६ "
" अन्नकूट (गोवर्धन)	२७ "
" बाबा रुद्रानंद नारी ऊना, हि.प्र.	७ नवं.
" रेणुका नाहन (हि.प्र.)	७ "
" वीरवैरागी नकोदर (पं.)	९ "
" पुष्करराज (राज.)	११ "
" कपालमोचन (हरियाणा)	११ "
" गढ़गंगा (उ.प्र.)	११ "
" रामतीर्थ (अमृतसर)	११ "
" बाल मेला (दिल्ली)	१४ "
" पुरमण्डल देविका स्ना. (ज.)	२४ "
" जोड़ फतेहगढ़ साहिब (पं.)	२६ दिस.
मेला संगीत हरवल्लभ प्रा.	२७ दिसं.
सन् २००१ ई.	
" लोहड़ी (पंजाब)	१२ जन.
" मुक्तसर (पंजाब)	१४ "
" मौनी अमावस्या (हरिद्वार)	२४ "
" बसंत पंचमी (हि.प्र.)	२९ "
" मस्तुआणां (पंजाब)	१ फर.
" पंचखण्ड पीठ विराटनगर	६ "
" डेजर्ट उत्सव जैसलमेर (रा.)	६ "
" वेणेश्वर बांसवाड़ा (राज.)	८ "
" नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी)	२१ "
" महाशिवरात्रि मण्डी (हि.प्र.)	२१ "
" श्यामजी खाटू (राज.)	६-७ मार्च
" होलामेला आनन्दपुर सा. पं.	१० "
" मानकपुर शरीफ (रोपड़)	१० "
" पंखा (झझर)	१० "
" बीरमदास बछौली (पटि.)	१३ "
" गुरुरामराय (देहरादून)	१४ "
" शीतला माता (कुराली)	१५ "
" पिहोवा (हरियाणा)	२३ "

महापुरुषों के जन्म दिन

श्री गौतम जयंती	५ अप्रै.
श्री झूलेलाल जयंती	६ "
डॉ. अम्बेडकर जयंती	१४ "
बाबू कुँअर सिंह जयंती	२३ "
श्री बल्लभाचार्य जयंती	३० "
श्री शुकदेव जयंती	४ मई
देव दामोदर जयंती	४ "
श्री शिवाजी जयंती	५ "
श्री परशुराम जयंती	६ "
श्री मातंगी जयंती	६ "
श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती	७ "
श्री आद्यशंकराचार्य जयंती	८ "
श्री रामानुजाचार्य जयंती	९ "
श्री नृसिंह जयंती	१६ "
छिन्नमस्ता जयंती	१७ "
श्री बुद्ध पूर्णिमा जयंती	१८ "
देव ऋषि नारद जयंती	१९ "
श्री मां आनन्दमयी जयंती	२१ "
श्री महाराणा प्रताप जयंती	५ जून
सन्त कबीर जयंती	१६ "
श्री लोकमान्य तिलक जयंती	२३ जुला.
सरसा माधुरी जयंती	३१ "
श्री कल्की जयंती	५ अग.
गो. तुलसीदास जयंती	६ "
संत ज्ञानेश्वर जयंती	२२ "
सन्त सुथरेशाह जयंती	२९ "
श्री वराह जयंती	१ सितं.
डॉ. राधाकृष्ण जयंती	५ "
श्री वामन जयंती	१० "
श्री विनोबाभावे जयंती	११ "
श्री अग्रसेन जयंती	२८ "
श्री महात्मा गांधी व शास्त्री जयंती	२ अक्टू.
श्री माधवाचार्य जयंती	८ "
महर्षि बाल्मीकि जयंती	१३ "
श्री धनवन्तरि जयंती	२४ "
श्री विश्वकर्मा जयंती	२९ "
श्री कवि कालीदास जयंती	८ नवं.
गुरु नानक जयंती	११ "
श्री नेहरू जयंती	१४ "
श्रीमती इन्दिरा गांधी जयंती	१९ "
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयंती	३ दिसं.
श्री दत्तात्रेय जयंती	११ "
महामना मदनमोहन मालवीय ज.	२५ "
सन् २००१ ई.	
गु. गोबिन्द सिंह जयंती	२ जन.
श्री विवेकानन्द जयंती	१५ "
श्री रामानन्दाचार्य जयंती	१५ "
श्री नेताजी सुभाष जयंती	२३ "
श्री लाला लाजपतराय जयंती	२८ "
श्री माधवाचार्य जयंती	३१ "
गुरु रविदास जयंती	८ फर.
दीनबन्धु एण्ड्रयूज जयंती	१२ "
स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती	१७ "
श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती	२५ "
श्री दादूदयाल जयंती	३ मार्च
श्री चैतन्य महाप्रभु जयंती	९ "

क्रिश्चियन त्यौहार

पाम सन्डे	१६ अप्रै.
गुड फ्राइडे	२१ अप्रै.
इस्टर सटरडे	२२ अप्रै.
इस्टर सन्डे	२३ अप्रै.
क्रिसमस डे	२५ दिसं.
न्यू इयर इव	३१ दिसं.
न्यू ईयर डे सन् २००१ प्रा.	१ जन.

सिक्खों के गुरु पर्व (प्रा. मत)

गुरु तेगबहादुर जी	जन्म	२४ अप्रै.
" अर्जुनदेव जी	"	२६ "
" अंगद देव जी	"	५ मई
" अमरदास जी	"	१७ "
" हरगोविन्द जी	"	१८ जून
" हरकिशन जी	"	२५ जुला
" रामदास जी	"	१५ अक्टू.
" नानकदेव जी	"	११ नवं.
" गोविन्द सिंह जी	"	२ जन.
" हरराय जी	"	६ फर.

गुरुयाई मिली (प्राचीन मत से)

गुरु अमरदास जी	५ अप्रै.
" तेगबहादुर जी	१७ "
" हरगोविन्द जी	२७ मई
" अर्जुनदेव जी	३१ अग.
" रामदास जी	११ सितं.
" अंगद देव जी	१८ "
" हरकिशन जी	२१ अक्टू.
" गोविन्द सिंह जी	२९ नवं.
" हरराय जी २००१ ई.	२२ मार्च

ज्योति जोत समाऐ (प्रीन मत से)

गुरु अंगद देव जी	८ अप्रै.
" हरगोविन्द जी	९ "
" हरकिशन जी	१७ "
" अर्जुनदेव जी	५ जून
" रामदास जी	१ सितं.
" अमरदास जी	१३ "
" नानकदेव जी	२३ "
" हरराय जी	२१ अक्टू.
" गोविन्द सिंह जी	१ नवं.
" तेग बहादुर जी	१ दिसं.

नोट:—अमृतसर (पंजाब) की गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने गुरु पर्व, गुरुयाई मिली तथा ज्योति जोत समाऐ की तारीखें (अंग्रेजी) प्रत्येक वर्ष एक ही रखने का निर्णय लिया है। जिनके अनुसार गुरु पर्वादि की तारीखें इस प्रकार रहेंगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संक्रान्ति, पूर्णिमा, एकादशी, प्रदोष व्रत, गणेश चतुर्थी, अमावस्या, आश्विन कृष्ण पक्ष श्राद्ध, गंडमूल तथा पंचकादि विवरण सं. २०५७ वि., शाके १९२२, सन् २०००-२००१ ई.

सिक्खों के गुरु पर्व (नवीन मतानुसार)

नाम गुरु	जन्म दिन	गुरुयाई मिली	ज्योति जोत समाऐ
गुरु नानकदेव जी	कार्तिकी पूर्णिमा	—	२२ सितम्बर
" अंगद देव जी	१८ अप्रैल	१८ सितम्बर	१६ अप्रैल
" अमरदास जी	२३ मई	१६ अप्रैल	१६ सितबर
" रामदास जी	९ अक्टूबर	१६ सितंबर	१६ सितंबर
" अर्जुनदेव जी	२ मई	१६ सितंबर	१६ जून
" हरगोविन्द जी	५ जुलाई	११ जून	१९ मार्च
" हरराय जी	३१ जनवरी	१४ मार्च	२० अक्टूबर
" हरकिशन जी	२३ जुलाई	२० अक्टूबर	१६ अप्रैल
" तेगबहादुर जी	१८ अप्रैल	१६ अप्रैल	२४ नवम्बर
" गोविन्द सिंह जी	५ जनवरी	२४ नवम्बर	२१ अक्टूबर
" ग्रन्थ साहिब जी	१ सितंबर	२० अक्टू.	—

दशावतार जयन्तियाँ

श्री मत्स्य जयंती	७ अप्रै.
श्री राम जयंती	१२ "
श्री परशुराम ज.	६ मई
श्री नृसिंह जयंती	१६ "
श्री कूर्म जयंती	१७ "
श्री बुद्ध जयंती	१८ "
श्री कल्कि जयंती	५ अग.
श्री कृष्ण जयंती	२३ "
श्री वराह जयंती	१ सितं.
श्री वामन जयंती	१० "

संक्रान्तियाँ

मेष	गुरुवार	१३ अप्रैल
वृष	रविवार	१४ मई
मिथुन	बुधवार	१४ जून
कर्क	रविवार	१६ जुला.
सिंह	बुधवार	१६ अग.
कन्या	शनिवार	१६ सितं.
तुला	सोमवार	१६ अक्टू.
वृश्चि.	बुधवार	१५ नवं.
धनु	शुक्रवार	१५ दिसं.
मकर	शनिवार	१३ जन.
कुम्भ	सोमवार	१२ फर.
मीन	बुधवार	१४ मार्च

एकादशी व प्रदोष व्रत

मास व पक्ष	एकादशी व्रत	प्रदोष व्रत
चैत्र शुक्ल	१४ अप्रैल	१६ अप्रैल
बैशाख कृष्ण	३० "	१ मई
" शुक्ल	१४ मई	१५ "
ज्येष्ठ कृष्ण	२९-३० "	३१ "
" शुक्ल	१२ जून	१४ जून
आषाढ़ कृष्ण	२८ "	२९ "
" शुक्ल	१२ जुलाई	१३ जुलाई
श्रावण कृष्ण	२७ "	२८ "
" शुक्ल	१० अगस्त	१२ अगस्त
भाद्रपद कृष्ण	२५-२६ "	२७ "
" शुक्ल	९ सितंबर	११ सितंबर
आश्विन कृष्ण	२४ "	२५ "
" शुक्ल	९ अक्टूबर	१० अक्टूबर
कार्तिक कृष्ण	२३ "	२४ "
" शुक्ल	७-८ नवंबर	९ नवंबर
मार्गशीर्ष कृष्ण	२१-२२ "	२३ "
" शुक्ल	७ दिसंबर	९ दिसंबर
पौष कृष्ण	२१ "	२३ "
" शुक्ल	६ जनवरी	७ जनवरी
माघ कृष्ण	२० "	२१ "
" शुक्ल	४-५ फरवरी	६ फरवरी
फाल्गुन कृष्ण	१८ "	२० "
" शुक्ल	६ मार्च	७ मार्च
चैत्र कृष्ण	२१ "	२२ "

व्रत पूर्णिमा

चैत्र	मंगलवार	१८ अप्रैल
वैशाख	बुधवार	१७ मई
ज्येष्ठ	सोमवार	१६ जून
आषाढ़	रविवार	१६ जुला.
श्रावण	सोमवार	१४ अगस्त
भाद्रपद	बुधवार	१३ सितं.
आश्विन	गुरुवार	१२ अक्टू.
कार्तिक	शनिवार	११ नवं.
मार्गशीर्ष	सोमवार	११ दिसं.
पौष	मंगलवार	९ जन.
माघ	बुधवार	७ फर.
फाल्गुन	शुक्रवार	९ मार्च

गणेश चतुर्थी व्रत

वैशाख	शनिवार	२२ अप्रैल
ज्येष्ठ	रविवार	२१ मई
आषाढ़	मंगलवार	२० जून
श्रावण	गुरुवार	२० जुला.
भाद्रपद	शुक्रवार	१८ अग.
आश्विन	रविवार	१७ सितं.
कार्तिक	सोमवार	१६ अक्टू.
मार्गशीर्ष	मंगलवार	१४ नवं.
पौष	गुरुवार	१४ दिसं.
माघ	शुक्रवार	१२ जन.
फाल्गुन	रविवार	११ फर.
चैत्र	सोमवार	१२ मार्च

अमावस्याएं

वैशाख		४ मई
ज्येष्ठ		२ जून
आषाढ़	शनैश्चरी	१ जुलाई
श्रावण	सोमवती	३१ जुला.
भाद्रपद	भौमवती	२९ अग.
आश्विन		२७ सितं.
कार्तिक		२७ अक्टू.
मार्गशीर्ष	शनैश्चरी	२५ नवं.
पौष	सोमवती	२५ दिसं.
माघ		२४ जन.
फाल्गुन		२३ फर.
चैत्र	शनैश्चरी	२४ मार्च

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध

पूर्णिमा का श्राद्ध	१३ सितं.
प्रतिपदा का श्राद्ध	१४ "
द्वितीया का श्राद्ध	१५ "
तृतीया का श्राद्ध	१६ "
चतुर्थी का श्राद्ध	१७ "
पंचमी का श्राद्ध	१८ "
षष्ठी का श्राद्ध	१९ "
सप्तमी का श्राद्ध	२० "
अष्टमी का श्राद्ध	२१ "
नवमी का श्राद्ध	२२ "
दसमी का श्राद्ध	२३ "
एकादशी का श्राद्ध	२३ "
द्वादशी का श्राद्ध	२४ "
त्रयोदशी का श्राद्ध	२५ "
चतुर्दशी का श्राद्ध	२६ "
अमा. व सर्वपितृ श्राद्ध	२७ "
मातामह का श्राद्ध	२८ "

पंचक आरम्भ व समाप्ति काल

ता. मास		घं.मि.	से	ता. मास		घं.मि.	तक
३१ मार्च	२००० ई.	२५।५८	"	५ अप्रैल	२००० ई.	१४।२८	"
२८ अप्रैल	"	१०।४०	"	२ मई	"	२४।००	"
२५ मई	"	१८।२९	"	३० "	"	१०।०२	"
२१ जून	"	२५।०५	"	२६ जून	"	१९।००	"
१९ जुलाई	"	७।००	"	२३ जुलाई	"	२६।०७	"
१५ अगस्त	"	१३।०१	"	२० अगस्त	"	७।४६	"
११ सितंबर	"	२०।००	"	१६ सितंबर	"	१३।२८	"
८ अक्टूबर	"	२७।५८	"	१३ अक्टूबर	"	२०।४२	"
५ नवम्बर	"	१२।२७	"	९ नवम्बर	"	२९।५५	"
२ दिसम्बर	"	२०।३०	"	७ दिसम्बर	"	१६।००	"
२९ "	"	२७।३०	"	३ जनवरी	२००१ ई.	२५।१०	"
२६ जनवरी	२००१ ई.	९।४२	"	३१ "	"	८।१५	"
२२ फरवरी	"	१५।५४	"	२७ फरवरी	"	१३।५६	"
२१ मार्च	"	२२।३७	"	२६ मार्च	"	१९।५२	"

गंडमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्ति काल

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
४ अप्रैल	१५।२६	"	६ अप्रैल	१३।१०	"
१२ "	२६।५४	"	१४ "	२५।२७	"
२२ "	७।१२	"	२४ "	१२।५२	"
१ मई	२५।०१	"	३ मई	२२।२६	"
१० "	८।२५	"	१२ "	६।५२	"
१९ "	१४।२७	"	२१ "	२०।०६	"
२९ "	१०।३८	"	३१ "	८।३९	"
६ जून	१५।३६	"	८ जून	१२।५४	"
१५ "	२०।४२	"	१७ "	२६।३१	"
२५ "	१८।५७	"	२७ "	१८।१५	"
३ जुलाई	२५।००	"	५ जुलाई	२०।५१	"
१२ "	२६।३५	"	१५ "	८।३५	"
२२ "	२५।३०	"	२४ "	२६।०४	"
३१ "	११।४०	"	२ अगस्त	६।४१	"
९ अगस्त	८।५३	"	११ "	१४।५०	"
१९ "	७।०४	"	२१ "	८।०२	"
२७ "	२१।५२	"	२९ "	१७।१०	"
५ सितंबर	१६।१५	"	७ सितंबर	२१।५२	"
१५ "	१३।०४	"	१७ "	१३।३०	"
२४ "	६।०५	"	२५ "	२६।३०	"
२ अक्टूबर	२४।३७	"	४ अक्टूबर	२९।४२	"
१२ "	२०।४०	"	१४ "	२०।१५	"
२१ "	१२।०८	"	२३ "	९।४२	"
३० "	९।१८	"	१ नवम्बर	१३।५५	"
८ नवंबर	२९।५६	"	१० "	२९।१२	"
१७ "	१७।३३	"	१९ "	१५।१०	"
२६ "	१७।१५	"	२८ "	२१।४९	"
६ दिसंबर	१५।३७	"	८ दिसंबर	१५।३५	"
१४ "	२४।४७	"	१६ "	२१।०७	"
२३ "	२३।५५	"	२५ "	२८।४८	"
२ जनवरी	२४।०४	"	४ जनवरी	२५।२७	"
११ "	१०।५०	"	१२ "	२९।३६	"
१९ "	२९।३९	"	२२ "	१०।५६	"
२९ "	३०।४०	"	१ फरवरी	९।१५	"
७ फरवरी	२२।२७	"	९ "	१६।२९	"
१६ "	११।५२	"	१८ "	१६।५९	"
२६ "	१२।१९	"	२८ "	१५।०८	"
७ मार्च	९।०५	"	८ मार्च	२७।४३	"
१५ "	१९।३६	"	१७ "	२३।५४	"
२५ "	१८।३१	"	२७ "	२०।४५	"

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहण विवरण संवत् २०५७ वि.

इस वर्ष संवत् २०५७ विक्रमी में (दिनांक ५ अप्रैल २००० से २५ मार्च २००१ ई. तक) सम्पूर्ण भूमण्डल पर पांच ग्रहण दिखाई देंगे। जिनमें तीन ग्रहण सूर्य तथा दो ग्रहण चन्द्रमा के होंगे। जिनका विवरण इस प्रकार है:—

(१) खण्डग्रास सूर्यग्रहण—१ जुलाई २००० ई. **(२) खग्रास चन्द्रग्रहण**—१६ जुलाई २००० ई. **(३) खण्डग्रास सूर्यग्रहण**—३१ जुलाई २००० ई. **(४) खण्डग्रास सूर्यग्रहण**—२५ दिसम्बर २००० ई. **(५) खग्रास चन्द्रग्रहण**—९-१० जनवरी २००१ ई.। इन ग्रहणों में से तीनों सूर्यग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देंगे। भारत में दोनों खग्रास चन्द्रग्रहण ही दिखाई देंगे।

भारत में दिखाई देने वाले चन्द्र ग्रहणों का विस्तृत विवरण

(१) ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण—यह ग्रहण आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा रविवार दिनांक १६ जुलाई २००० ई. को सम्पूर्ण भारत के अलावा नेपाल, बर्मा, श्रीलंका, अरब देश, ईरान, ईराक, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड में भी दिखाई देगा। भारत में यह ग्रहण सर्वत्र चन्द्रोदय से पहिले शुरू हो चुका होगा अर्थात् भारत के प्रत्येक नगर में यह ग्रहण ग्रस्तोदय होगा। कलकत्ता व उसके पूर्वी प्रदेशों में चन्द्रोदय के समय चन्द्रमा की एक कोर चमकती दिखाई देगी और १५-२० मिनटों के पश्चात् खग्रास चन्द्रग्रहण दिखाई देने लग जायेगा। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात आदि राज्यों में चन्द्रमा खग्रास रूप में (काली थाली जैसा) उदय होता दिखाई देगा। इस ग्रहण के स्पर्श-मोक्ष आदि का काल भारतीय स्टैं.टा. में इस प्रकार है:—

ग्रहण प्रारम्भ	सायं ५ घं. २७ मि.
खग्रास ग्रहण प्रारम्भ	सायं ६ घं. ३२ मि.
ग्रहण मध्य	सायं ७ घं. २५ मि.
खग्रास ग्रहण समाप्त	रात्रि ८ घं. १९ मि.
ग्रहण मोक्ष	रात्रि ९ घं. २५ मि.

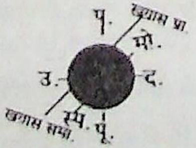

नोट:—शास्त्र निर्देशानुसार जो चन्द्रग्रहण या सूर्यग्रहण ग्रस्तोदय होता है उसका पर्वकाल क्रमश: चन्द्रोदय या सूर्योदय होने पर ही शुरू माना जाता है। इसके अनुसार इस चन्द्रग्रहण का पर्वकाल प्रत्येक नगर में चन्द्रोदय के समय ही शुरू होगा। अत: देश के प्रमुख नगरों में चन्द्रोदय काल व पर्वकाल इस प्रकार है—

नगर	चन्द्रोदय घं.मि. सांय	पर्वकाल घं.मि.	नगर	चन्द्रोदय घं.मि.	पर्वकाल घं.मि.
अजमेर	७।२१	२।०४	काशी	६।२६	२।५९
अमृतसर	७।२८	१।५७	चण्डीगढ़	७।२०	२।०५
अलवर	७।१३	२।१२	चेन्नई	६।३३	२।५२
अहमदाबाद	७।२२	२।०३	जयपुर	७।१६	२।०९
आगरा	७।०७	२।१८	जालन्धर	७।२५	२।००
जोधपुर	७।२६	१।५९	राजकोट	७।२७	१।५८
दिल्ली	७।१४	२।११	शिमला	७।१९	२।०६
पटना	६।३६	२।४९	सूरत	७।१७	२।०८
प्रयाग	६।५०	२।३५	हरिद्वार	७।१२	२।१३
बम्बई	७।१३	२।०२	मद्रास	६।३४	२।५१
कलकत्ता	६।१६	३।०९			

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक १६ जुलाई को प्रात: सूर्योदय होते ही प्रारम्भ हो जाएगा। बच्चे, वृद्ध व रोगी के अलावा धार्मिक जनों को सूतक काल में भोजनादि नहीं करना चाहिए।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण उ.षा. नक्षत्र व धनु, मकर राशि दोनों में हो रहा है। अत: यह ग्रहण उ.षा. जन्म या नाम नक्षत्र व धनु, मकर राशिवालों को विशेष अनिष्टप्रद रहेगा। इसके अतिरिक्त वृष, कन्या राशिवालों को भी नेष्ट फलप्रद रहेगा। कर्क, तुला, कुंभ एवं मीन राशि वालों को श्रेष्ठ तथा मेष, मिथुन, सिंह व वृश्चिक राशिवालों को मिश्रित फलप्रद रहेगा। अशुभ नक्षत्र व राशिवालों के अलावा गर्भिणी महिलाओं को भी ग्रहण नहीं देखना चाहिए।

ग्रहण के अन्य फल—यह चन्द्रग्रहण भारत के सभी स्थानों पर ग्रस्तोदय दिखाई देगा। धर्म ग्रन्थों में ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण का फल अच्छा नहीं बताया है। प्रजा में भय व आतंक की वृद्धि होगी। कहीं प्रकृति प्रकोप, भूकम्प, रेलयान-दुर्घटना से जन धन की हानि। शासन पार्टी में उलटफेर की संभावना बढ़ेगी। आषाढ़ मास में चन्द्रग्रहण होने से वर्षा में कमी तथा धान्यों के साथ-साथ घृत व तेलों में तेजी होगी। धनु व मकर राशिगत चन्द्रग्रहण होने से मध्यप्रदेश, उ.प्र. में अशांति अलावा नाविकों को हानि का सामना करना पड़ेगा। धातु पदार्थों व किराना में तेजी होगी।

(२) खग्रास चन्द्रग्रहण—यह ग्रहण पौष सुदी पूर्णिमा मंगलवार दिनांक ९-१० जनवरी २००१ ई. के अर्द्धरात्रि में समस्त भारत के साथ-साथ नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका, बंगला देश में भी दिखाई देगा। इस ग्रहण के स्पर्श मोक्ष आदि का काल भारतीय स्टैं.टा. में इस प्रकार है—

ग्रहण प्रारम्भ	मध्य रात्रि १२ घं. १२ मि.
खग्रास ग्रहण प्रारम्भ	मध्य रात्रि बाद १ घं. २० मि.
ग्रहण मध्य	मध्य रात्रि बाद १ घं. ५१ मि.
खग्रास ग्रहण समाप्त	मध्य रात्रि बाद २ घं. २२ मि.
ग्रहण मोक्ष	मध्य रात्रि बाद ३ घं. ३० मि.

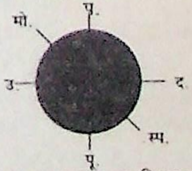

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक ९ जनवरी २००१ को दोपहर बाद ३ बजकर १२ मिनट पर प्रारम्भ हो जायेगा। सूतक से पूर्व ही धार्मिक जनों को भोजनादि से निवृत्त हो जाना चाहिए। बच्चे, वृद्ध व रोगी सायं ६।१५ बजे तक पथ्य ग्रहण कर सकते हैं।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण पुनर्वसु नक्षत्र तथा मिथुन राशि में हो रहा है अत: इस नक्षत्र एवं राशिवालों को विशेष अनिष्टप्रद है। शेष मेष, सिंह, कन्या, मकर राशिवालों को उत्तम, कर्क, वृश्चिक व मीन राशि वालों को अशुभ फलप्रद तथा वृष, तुला, धनु व कुंभ राशि वालों को मिश्रित फलप्रद रहेगा।

ग्रहण के अन्य फल—चन्द्रग्रहण पौष मास में होने से वर्षा की न्यूनता व जौ, गेहूं, चना में तेजी होगी। यमुना तटवासी नगरों में उपद्रव व रोग पीड़ा बढ़ें। मंगलवार का चन्द्रग्रहण कपास, गुड़, तेल में तेजीकारक रहेगा और रुई, कपास, पाट, बारदाना, चावल, जौ, गेहूं, मटर, अरहर का संग्रह करने वाले व्यापारियों को आगामी तीन मास में लाभ की संभावना बढ़ेगी।

भारत से बाहर दिखाई देने वाले ग्रहणों का विस्तृत विवरण

(१) खण्डग्रास सूर्यग्रहण—आषाढ़ कृष्ण अमावस्या शनिवार दिनांक १ जुलाई २००० ई. दक्षिणी अमेरिका तथा प्रशान्त महासागर के दक्षिण भाग में खण्डग्रास सूर्य ग्रहण दिखाई देगा। यह ग्रहण भा.स्टैं.टा. अनुसार अर्द्धरात्रि में ११।४० से २।३० बजे के मध्य दिखाई देगा। भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। अत: इसको मानने की कोई आवश्यकता नहीं है।

(२) खण्डग्रास सूर्यग्रहण—श्रावण कृष्ण अमावस्या सोमवार दिनांक ३१ जुलाई २००० ई. को उत्तरी रूस, ग्रीनलैण्ड, अलास्का, स्वीडन,. डेनमार्क में खण्डग्रास सूर्यग्रहण दिखाई देगा। भारतीय समयानुसार यह ग्रहण प्रात ६।१० से ९।२० बजे तक दिखाई देगा। भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। अत: इसके निमित्त दान पूजा करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

(३) खण्डग्रास सूर्यग्रहण—पौष कृष्ण अमावस्या सोमवार दिनांक २५ दिसम्बर २००० ई. को उत्तरी अमेरिका, अटलांटिक महासागर, आयर लैण्ड, कनाडा के पूर्वी दक्षिणी भाग में खण्डग्रास सूर्यग्रहण दिखाई देगा। यह ग्रहण भा.स्टैं.टा. अनुसार रात्रि ९।४५ से १२।१५ बजे के मध्य दिखाई देगा। भारत में यह ग्रहण भी दिखाई नहीं देगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

※ दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र ※

विक्रम संवत् २०५७ (दिनांक ५ अप्रैल २००० से २५ मार्च २००१ ई. तक)

- राजा बुध, मंत्री गुरु तथा धनेश शनि के अलावा मंगल, शनि, हर्शल, नेपच्यून के सम्यक् विचार से इनके योग-प्रतियोग तथा वकुत्वकाल में अनार्य भौतिकवादी राष्ट्रों में प्रकृति प्रक्रोप, गृह युद्ध, भूकम्प, रक्तपात, अग्निकांड से जन धन की हानि होगी।
- भारत के प्रधानमंत्री के लिए वर्षारम्भ के चार मास विशेष कठिनाई युक्त रहेंगे। देश की आर्थिक स्थिति कमजोर तथा भ्रष्टाचार का बोलबाल बढ़ेगा।
- विश्व के दो महान नेताओं के देहावसान से अनेक देश स्तब्ध।
- अफगानिस्तान, अरबराष्ट्र, इरान, ईराक, चीन, जापान, पाकिस्तान में राजनैतिक गतिरोध। कहीं सत्ता अपदस्थ या स्थानान्तरण हो।
- वर्ष के पूर्वार्ध में मंगल-शनि का समसप्तम तथा षडाष्टक योग एवं मेष राशि में छः ग्रहों का योग में भारत सहित अनेक राष्ट्रों के शासनाध्यक्षों के सामने विशेष संकटप्रद परिस्थिति उत्पन्न करेगा।
- वर्षान्त के तीन मास राजनैतिक दृष्टि से विशेष उलझनपूर्ण। अकल्पित राजनैतिक उलटफेर संभावित।
- भारत के लिए भ्रष्टाचार, बेरोजगारी व मंहगाई की समस्या सुरसा के मुंह के समान साबित होगी।
- राजनैतिक दलों में अन्तर्विद्रोह की छाया झलकेगी तथा केन्द्र सरकार के लिए प्रान्तों की समस्या सिरदर्द का कारण बनेगी।

विगत डेढ़ दशक से "**श्री आर्यभट्ट पंचांग**" द्वारा ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन अनुशीलन करके विश्व व भारत के सम्बन्ध में जो भविष्यवाणियां की गई उससे सभी पाठक परिचित हैं। निराश्रित ज्योतिष विज्ञान ने आज गणित के विभाग में शत-प्रतिशत सत्यता सिद्ध कर दी है एवं गणित द्वारा वर्षों पूर्व सूर्य-चन्द्रग्रहणों का प्रारम्भ व समाप्ति काल का समय निर्धारित किया है उसमें एक मिनट का भी अन्तर नहीं होता है। परन्तु फलित के विभाग में अभी पूर्ण शोध चल रहा है। वैसे फलित ज्योतिष के इष्ट साधन व दैवविद्या कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। अतः संसार, राष्ट्र व राज्य के अलावा व्यक्ति के सम्बन्ध में भविष्य बताने वाले को दैवज्ञ माना गया है। साधना, तपस्या व अनुभव से प्राप्त दैवविद्या पर शोध करने वाला व्यक्ति आज के युग में साधनाहीन है। ग्रहों की गति व इष्ट संकेतों को समझने में भूल हो सकती है अतः समस्त की गयी भविष्यवाणियां सदा सत्य ही हों की कसौटी पर उतारना उचित नहीं होगा।

ज्योतिष ज्ञान द्वारा अनन्त आकाश में जो ग्रह, नक्षत्र, तारागण अपनी-अपनी वक्र-मार्गी गति से विचरण करते हुए आकर्षण-विकर्षण के द्वारा भूमण्डल पर होने वाले परिवर्तन एवं प्रभाव को जाना जाता है। अनन्त आकाश में कोई भी ग्रह कितनी ही दूरी पर क्यों न हो जब वह अपनी स्थिति बदलता है तो विश्व की परिस्थिति को अवश्य प्रभावित करता है। प्रतिवर्ष आकाशी परिषद् को गति प्रदान करने के लिए ग्रह परिषद् की नव नियुक्ति होती है। इस ग्रह परिषद् के बलाबल और वर्षलग्न, जगत् लग्न में उनका स्थान से प्राचीन ग्रन्थ वराह मिहिराचार्य कृत "**वाराही संहिता**" के आधार पर "**दैवज्ञ**" वर्ष के शुभाशुभ फल जानने में सक्षम होते हैं। ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्गी, परस्पर अंशयोग, सम-सप्तम योग (प्रतियोग) से संसार में कहां-कहां अशांति या शांति उत्पन्न होगी। इसके लिए संघट्ट चक्र, सर्वतोभद्र चक्र, कूर्मचक्र आदि को आधार मानकर हम अपनी स्वल्प बुद्धि से जो कुछ लिखते आ रहे हैं। वे सभी अभी तक ७०-८० प्रतिशत सत्य साबित हुए हैं।

नवीन विक्रम संवत् २०५७ का फल जानने के लिए ग्रहों की सूक्ष्म स्थिति का विवेचन एवं पर्यवेक्षण होना आवश्यक होता है। अतः हम यहां प्रमुख ग्रहों की वर्षारंभ तथा वर्ष की अन्त की स्थिति का उल्लेख कर रहे हैं। जो चित्रापक्षीय निरयन मान से इस प्रकार रहेगी।

वर्ष प्रारंभ ५ अप्रैल २००० ई. प्रातः ५.३० बजे वर्षान्त दिनांक २५ मार्च २००१ ई. प्रातः ५.३० बजे

राशि	अंश	कला	विकला	वक्री/मार्गी	प्रमुख ग्रह	राशि	अंश	कला	विकला	वक्री/मार्गी
मेष	१५	३५	२८	मार्गी	← मंगल →	वृश्चिक	२४	७	२४	मार्गी
मेष	१६	१३	३२	मार्गी	← गुरु →	वृष	१२	३३	४५	मार्गी
मेष	२२	६	२४	मार्गी	← शनि →	वृष	३	१३	१८	मार्गी
कर्क	६	१०	५५	वक्री	← राहु →	मिथुन	१७	२५	२४	वक्री
मकर	६	१०	५५	वक्री	← केतु →	धनु	१७	२५	२४	वक्री
मकर	२५	५७	३३	मार्गी	← हर्शल →	मकर	२९	१८	२१	मार्गी
मकर	१२	२४	४९	मार्गी	← नेपच्यून →	मकर	१४	१९	००	मार्गी
वृश्चिक	१८	५५	४२	वक्री	← प्लूटो →	वृश्चिक	२१	२३	४३	वक्री

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मंगल—वर्षारम्भ से मेष राशि में, २५ अप्रैल से वृष राशि में, ७ जून से मिथुन राशि में, २२ जुलाई से कर्क राशि में, ७ सितम्बर से सिंह राशि में, २५ अक्टूबर से कन्या राशि में, १३ दिसम्बर से तुला राशि में, ३ फरवरी २००१ से वृश्चिक राशि में प्रवेश कर वर्षान्त तक इसी राशि में विचरण करेंगे। १ मई से २५ अगस्त तक पश्चिम में अस्त।

गुरु—वर्ष प्रारम्भ से २ जून तक मेष राशि में तथा २ जून सायंकाल से वर्ष अन्त तक वृष राशि में विचरण करेंगे जिसमें २९ सितं. से २४ जनवरी तक वक्री तथा वर्षारम्भ में २८ अप्रैल से २४ मई तक अस्त रहेंगे।

शनि—वर्षारम्भ से ६ जून तक मेष राशि में तथा ७ जून से वृष राशि में प्रवेश कर वर्ष अन्त तक इसी राशि में रहेंगे। शनि २३ अप्रैल से २७ मई तक अस्त रहेगा तथा १२ सितम्बर से २४ जनवरी २००१ के मध्य वक्री रहेगा।

हर्षल—वर्ष शुरू से अन्त तक मकर राशि में रहेगा तथा २५ मई से २६ अक्टूबर के मध्य वक्री रहेगा।

नेपच्यून—वर्षारम्भ से अन्त तक मकर राशि में नेपच्यून विचरण करेगा। जिसमें ८ मई से १५ अक्टूबर तक वक्री रहेगा।

प्लूटो—वर्ष पर्यन्त वृश्चिक राशि में रहेगा। प्लूटो वर्ष शुरू से २० अगस्त तक वक्री तथा २१ अगस्त से मार्गी होगा। वर्ष अन्त में प्लूटो पुन: १८ मार्च २००१ से वक्री होकर पुन: विचरण करेगा।

राहु-केतु—वर्षारम्भ से ३० जुलाई तक कर्क राशि में पश्चात् वर्षान्त तक मिथुन राशि में राहु विचरण करेगा। केतु वर्ष प्रारम्भ से ३० जुलाई तक मकर में तथा इसी ३० जुलाई को रात्रि में धनु राशि में प्रवेश कर वर्षान्त तक इसी राशि में विचरण करेगा।

वर्ष के अनिष्ट योग

वर्षारम्भ में २४ अप्रैल तक मंगल शनि की राशियुति, ३ व ४ मई को मेष राशि में छ: ग्रहों का योग, २५ जून से २ जुलाई तक गुरु-शनि का अंश साम्य योग; कार्तिक-पौष मास में पांच शनिवार, पांच मंगलवार का योग तथा आषाढ़ी पूर्णिमा को ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण, माघ शुक्ल में ३ फरवरी से मंगल-शनि का समसप्तम योग है।

नवीन वर्ष के शुभाशुभ फल

संवत् २०५७ विक्रमी में ग्रहों की आकाशी कौंसिल में सात अधिकार सौम्य ग्रहों को तथा तीन अधिकार क्रूर ग्रहों को मिले हैं। सूर्यदेव को इस वर्ष सस्येश का अधिकार प्राप्त हुआ है जबकि चन्द्रमा को रसेश का अधिकार मिला है। मंगल को इस वर्ष कोई पद नहीं मिला है जबकि बुध को सर्वाधिक चार पद मिले हैं जिसमें राजा के पद के साथ मेघेश, फलेश एवं दुर्गेश के पद सम्मिलित हैं। गुरु को मंत्री पद तथा शुक्र को धान्येश का पद मिला है। मजदूर नेता शनि को नीरसेश व धनेश को दो अधिकार प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार सौम्य ग्रहों को आधे से अधिक अधिकार अवश्य प्राप्त हुए हैं किन्तु नपुंसक बुधग्रह को चार अधिकार मिलना शुभ फलों में बाधा कारक रहेगा। संसार में चल रहे शांति प्रयासों में रुकावटें या कमी आने से कहीं युद्धादि भय, अराजकता से प्रजा को कष्ट होगा। साथ ही वर्ष के अनिष्ट योगों में कहीं प्रकृति-प्रकोप, भूकम्प, रेलयान दुर्घटना तथा मंहगाई, बेरोजगारी की समस्या विकराल रूप धारण करेगी।

वर्ष प्रवेश कुण्डली

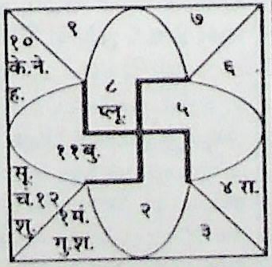

विक्रम संवत् २०५७ का शुभारंभ संवत् २०५६ वि. के अन्तिम दिन चैत्र कृष्ण अमावस्या मंगलवार दिनांक ४ अप्रैल २००० ई. को अर्द्धरात्रि में ११ बजकर ४१ मिनट इष्ट घट्यादि ४३।४० पर गत वर्ष की भांति वृश्चिक लग्न में हो रहा है। जिसकी तत्कालीन कुण्डली साथ में दी हुई है। नवीन वर्ष के लग्न का स्वामी मंगल छठे भाव में गुरु-शनि के साथ स्थित होकर अंशात्मक युति की ओर अग्रसर हो रहा है। अत: विश्व के अनेक भागों में युद्धादि भय, रोग पीड़ा, भूकम्प, भूस्खलन, प्रकृति-प्रकोप की घटनाएं अधिक होंगी। उत्तरी-पश्चिमी देश—ईरान, ईरका, अरब राष्ट्र, पाकिस्तान, चीन में यत्र-तत्र अराजकता, साम्प्रदायिक उपद्रव तथा युद्धादि भय से विषम परिस्थितियां होती दिखाई देंगी। पूर्व के देशों में राजविग्रह असमान्य स्थिति पैदा करेगा। भाग्येश चन्द्रमा राज्येश सूर्य के साथ पंचम भाव में श्रेष्ठ हैं किन्तु सूर्य के साथ अंशों की निकटता के कारण अस्त हो गया है अत: शासन में भ्रष्टाचार और पदलोलुपता की अधिकता रहेगी। जनता के लिए विकास कार्य कम होते दिखाई देंगे। फिर भी भारत विश्व में अपनी साख बनाये रखने में सक्षम होगा। वैज्ञानिकों को विज्ञान के क्षेत्र में नवीन उपलब्धि प्राप्त होगी।

नवीन वर्षारम्भ में राजा बुध व मंत्री गुरु बने हैं जिससे प्रजा में सुख वैभव की बढ़ोत्तरी होगी। किन्तु विजय नामक संवत्सर होने से विश्व के अनेक भागों में युद्धादि भय, प्रकृति-प्रकोप, अराजकता का बोलबाला रहेगा। आर्थिक मंदी के कारण जनजीवन प्रभावित होगा। लूटपाट, डाके, अपहरण की घटनाएं अधिक होंगी। वर्षारम्भ के चार मास तथा अन्तिम तीन मास राजनैतिक उथल पुथल कारक सिद्ध होंगे। दिनांक १५ व १६ अप्रैल को शनि-मंगल का (अंश साम्य योग) युद्ध मेष राशि में होगा जिससे चीन, रूस, अमेरिका, जापान, पाकिस्तान, अरब राष्ट्र, तुर्की, ईरान, ईराक आदि देशों में युद्धादि भय बढ़ेगा। कहीं रोगोत्पात, प्रकृति-प्रकोप व साम्प्रदायिक उपद्रवों से जनता पीड़ित रहेगी। भारत में भी यत्र-तत्र अनिष्ट फलों का बोलबाला रहेगा। मंहगाई सुरसा के मुख के समान बढ़ती दिखाई देगी। बेरजोगारी देश की प्रमुख समस्या बनेगी।

मंगल शनि के योग का फल—

"सम सप्तम शनि भौम हो अथवा एक ही संग।
प्रजा कष्ट औ अन्न से जन विग्रह का रंग॥"

वैशाख मास में पांच छ: ग्रहों का योग तथा पूर्णिमासी को गुरु-शुक्र का अंश साम्य योग आणुविक प्रतिस्पर्धा के अलावा युद्धादि भय को बढ़ावा देगा। विश्व के अनेक देशों में खाद्यान्न की समस्या बढ़ेगी। कहीं भूकम्प, महामारी से प्रजा पीड़ित रहेगी। भारत सरकार को भी यहां विशेष सावधानी से अपनी सीमाओं की ओर ध्यान व सतर्कता रखना चाहिए। पश्चिमी एशिया में अरब का तेल क्षेत्र एवं अनार्य राष्ट्र गृह युद्ध, प्रकृति प्रकोप से पीड़ित रहेंगे। पाकिस्तान के लिए यह वर्ष अग्नि परीक्षा का है। सत्ता परिवर्तन संभव है। वहां मुद्रा स्फीति एवं आर्थिक संकट उग्र रूप लेगा। बंगला देश को प्रकृति प्रकोप, आंधी तूफान एवं महामारी से आघात पहुंचेगा। विश्व के दो प्रमुख महामानव का देहावसान से जनता शोक स्तब्ध रहेगी। चीन, जापान, अमेरिका, अफ्रीका, पाकिस्तान, बंगला देश, नेपाल और भारत में कहीं भयंकर भूकम्प के झटके लगेंगे। कहीं जल प्रलय, समुद्री तूफान, अग्निकांड से हानि होगी।

आषाढ़ मास में पांच शनिवार एवं पांच रविवार नेष्ट किन्तु श्रावण में सोमवती अमावस्या भारत के लिए नेष्ट फलों में कमी कारक रहेगी। औद्योगिक विकास के लिए नये कार्यक्रमों की घोषणा संजीवनी बूटी का काम करेगी। कृषि अनुसंधान में भी नई सफलता मिलेगी। दिनांक १२ सितम्बर को शनि वक्री होने से अकल्पित घटनाओं की बढ़ोत्तरी होगी। कहीं प्रकृति प्रकोप, यान दुर्घटना, दुर्भिक्ष भय व राजनैतिक उथल-पुथल से जनजीवन अस्तव्यस्त होगा। कार्तिक मास में पांच शनिवार का योग बनने से पूर्वोत्तर देश व राज्यों

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

में राजनैतिक उथल-पुथल संभव है। आसाम, बंगाल, बिहार, बर्मा, चीन, जापान आदि देशों में प्राकृतिक आपदाओं से प्रजा पीड़ित रहेगी। पांच शनिवारों का फल —

शनिवारा यदा पंच पाताले कंपते फणी। ईशान देश भंगश्च वह्निदाहो महर्घता ॥

दिसम्बर मध्य में मंगल तुला राशि में प्रवेश कर शनि से षडाष्टक तथा संघट्ट चक्र में गुरु से भी वेध बनायेगा जो भारत सहित चीन, जापान, आस्ट्रिया, ईरान, ईराक, आयरलैण्ड आदि देशों में भय विग्रह को बढ़ावा देगा। वर्षान्त में पुनः मंगल-शनि का प्रतियोग चालू होगा। जिससे प्रधान शासकों के मध्य विरोध की भावना प्रबल बनेगी। विकासशील देशों में अराजकता व आतंकवाद बढ़ेगा। कहीं भूकम्प, हिंसा काण्ड, अराजकता से जनजीवन अस्त व्यस्त होगा। भारत में राजनैतिक सामाजिक, आर्थिक, व्यावसायिक स्थिति कमजोर बनेगी। रसपदार्थ, चीनी, गुड़, पेट्रोल, गैस, मिट्टी का तेल, कोयला आदि के भाव बढ़ जायेंगे। भारतीय सीमाओं पर भी सेना को सतर्क रहना चाहिए।

जगत् लग्न कुण्डली

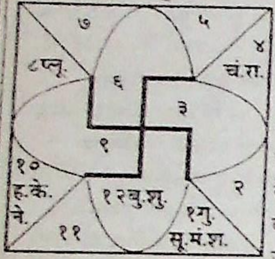

संवत् २०५७ विक्रमी में सूर्य भगवान् सप्ताश्वजुत रथ पर चैत्र शुक्ल १० गुरुवार दिनांक १३ अप्रैल २००० ई. को सायंकाल ५ बजकर २३ मिनट पर मेष राशि में प्रवेश करेंगे। मेष राशि में प्रवेश के समय जगत् कुण्डली कन्या लग्न की बनी है। जो साथ में दी जा रही है।

जगत् लग्न का स्वामी बुध नीच राशिस्थ होकर भाग्येश व धनेश शुक्र के साथ सप्तम भाव में स्थित है। अष्टम भाव में चार ग्रहों का योग नेष्ट फलदायक है। कुछ देशों में आणुविक तथा अस्त्र शस्त्र निर्माण की आपसी होड़ बढ़ेगी। कहीं युद्धादि भय से तो कहीं राजनैतिक उथल-पुथल से प्रजा को कष्ट होगा। वर्ष का राजा बुध व मंत्री गुरु में द्विर्द्वादश योग कई देशों के सामने आर्थिक संकट की स्थिति उत्पन्न करेगा। भारत भी इससे अछूता नहीं रहेगा। प्रकृति-प्रकोप, रेलयान दुर्घटना, भूकम्प, महामारी व बलात्कार की घटनाएं अधिक होंगी। शासन कर्त्ताओं के समक्ष विपक्ष कड़ी चुनौती पेश करेगा। चन्द्रमा लाभ घर में स्वराशिस्थ तथा भाग्येश शुक्र उच्च राशि में होने से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक संधियां अधिक होंगी। भारत की गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों में छवि व सम्मान बढ़ाने में सफल होगा तथा विज्ञान व अन्तरिक्ष अनुसंधान में भी विशेष सफलता प्राप्ति के योग हैं।

भारतीय गणतन्त्र का ५१वां वर्ष

भारतीय गणतंत्र का ५१वाँ वर्ष संवत् २०५६ वि. माघ कृष्ण ६ बुधवार दिनांक २६ जनवरी २००० ई. को भारतीय स्टैं.टा. २९।५८ पर धनु लग्न के २१वें अंश में प्रवेश होगा। ५१वें वर्ष प्रवेश की तात्कालीन ग्रह स्थिति की कुण्डली सामने दी गयी है।

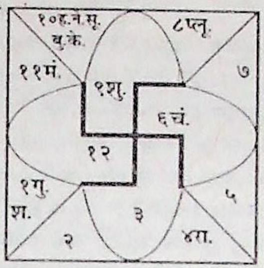

गणतंत्र वर्ष का लग्नेश गुरु पंचम भाव में मित्र राशि का होकर लग्न को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। मुंथा छठे भाव में तथा मुंथेश शुक्र लग्न में स्थित है। भाग्येश राजेश द्वितीय भाव में हर्शल, नेपच्यून, केतु के साथ स्थित है जिसमें राज्येश अस्तगत भी है। अतः वर्ष के प्रारंभिक चार मास तथा अंतिम तीन मास प्रधानमंत्री के लिए अग्नि परीक्षा कारक है। भारत सरकार की अर्थव्यवस्था संकटापन्न होगी। मंहगाई, भ्रष्टाचार और बेरोजगारी की समस्या बढ़ती दिखाई देगी। ऋणभार बढ़ेगा। प्रकृति प्रकोप से पीड़ित राज्यों को यथेष्ट धन राशि समय पर नहीं भेजी जा सकेगी। केन्द्रीय तथा प्रान्तीय मंत्रिमंडलों में परिवर्तन तथा काफी उठापटक का सामना करना पड़ेगा। कोई उल्लेखनीय व्यक्ति भ्रष्टाचार के मामले में शिकार होगा। मंगल द्वादशपति होकर तृतीय भाव में स्थित होने से भारत को तकनीकी दृष्टि से विशेष सफलता प्राप्त करायेगा। भारत की वैज्ञानिक उन्नति अन्तर्राष्ट्रीय ईर्ष्या का कारण बनेगी। किन्तु मंगल की राज्य पक्ष पर पूर्ण दृष्टि प्रधान शासक को प्रशासन चलाने में विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न करेगा। विरोधी पक्ष लोकसभा व विधानसभा में अभद्र प्रदर्शन करने में नहीं चूकेंगे। पूर्वोत्तर राज्यों में प्रकृति-प्रकोप, भूकम्प, बाढ़, तूफान से जन धन की हानि होगी। भारत को पड़ौसी देशों में लगी सीमाओं पर सुरक्षा प्रबन्ध ओर कड़े करने होंगे। वरना पाकिस्तान अपने नापाक इरादों से जनता का जीना दुर्भर कर देगा।

भारतीय वायुमंडल एवं वर्षादि योग

इस वर्ष भारत के वायुमंडल एवं वर्षादि योग जानने के लिए भारतीय वायुशास्त्र अनुसार प्रत्येक नगर व राज्य में प्रतिदिन की वायु, मेघ गर्जना, बादल वर्षा की परीक्षा द्वारा वृष्टि गर्भ लक्षण का उल्लेख मिलता है। जैसे आषाढ़ी पूर्णिमा की वायु परीक्षा, अन्तरिक्ष लक्षण जहां शुभ-शकुन का आभास करायेंगे वहां सुभिक्ष व सुवृष्टि का संचार होगा। अर्थात् आषाढ़ी पूर्णिमा (१५ जुलाई शनिवार) को पूर्व, उत्तर, पश्चिम व ईशान कोण से हवा चले तो सुभिक्ष माना गया है जबकि अन्य शेष कोण की हवा दुर्भिक्ष, उत्पात व रोग भयकारक मानी गयी है। विद्वान् विज्ञों को वर्षभर के गर्भ लक्षण नोट करने चाहिए। वर्ष पर्यन्त नहीं कर सके तो आषाढ़ी पूर्णिमा को सायंकाल सूर्यास्त के समय खुले स्थान में जाकर ध्वजा की विधिवत् पूजा करके वायु परीक्षा कर अपने नगर, देश व राज्य के लिए शुभाशुभ फल का निर्णय करना चाहिए।

आर्द्रा प्रवेश कुण्डली

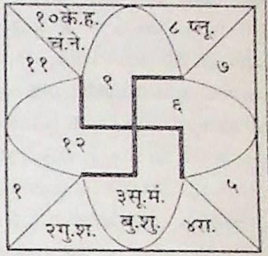

वर्षादि योग के लिए सूर्य के आर्द्रा प्रवेश से आगामी दश नक्षत्र वर्षा के द्योतक माने जाते हैं। नवीन वर्ष में आर्द्रा प्रवेश आषाढ़ कृष्ण ४ बुधवार तदनुसार २१ जून २००० ई. को रात्रि ८।२८ बजे हुआ है। आर्द्रा प्रवेश कुण्डली साथ में दी जा रही है। आर्द्रा प्रवेश कुण्डली का लग्न धनु बना है। जिसका स्वामी गुरु छठे भाव में शनि के साथ स्थित होने से तथा सप्तम भाव में चतुर्गृही योग की लग्न पर पूर्ण दृष्टि आने से वर्षा कहीं अधिक तो कहीं कम होगी। चन्द्रमा द्वितीय भाव में जल राशि में होने से २२ जून से १५ जुलाई तक वर्षा अच्छी होगी। समुद्री तटवर्ती क्षेत्रों में वर्षा व तूफान से जनजीवन अस्तव्यस्त होगा। यहां दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उ.प्र., बिहार, राज., बंगाल के अलावा सम्पूर्ण दक्षिण भारत में सर्वत्र वर्षा होगी। इसके आगे ३१ जुलाई तक सामाम्य व उससे अच्छी वर्षा के योग हैं। १ अगस्त से १५ अगस्त तक वर्षा में अवरोधक स्थिति व्यापेगी। वायु प्रकोप बढ़ेगा। १६ अगस्त से वर्षा का मध्यम दौर चालू होगा किन्तु कुछ स्थानों पर वर्षा की कमी अकाल की स्थिति पैदा करेगी। शीतकाल में मंगल का गुरु-शनि से षडाष्टक योग तथा समसप्तम योग कहीं प्रकृति-प्रकोप, हिमपात, भूकम्प व ओलावृष्टि से जनधन की हानि करेगा। आगे सर्वज्ञ ईश्वर है। यतोधर्मस्ततो जयः॥ इति शुभम् भूयात्॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

❊ विक्रम संवत् २०५७ शाके १९२२ मध्ये विवाहादि मुहूर्त्ताः ❊

समय शुद्धिः

गुरु अस्त—इस वर्ष सम्वत् २०५७ वि. में वैशाख कृष्ण ९ शुक्रवार दिनांक २८ अप्रैल २००० ई. से ज्येष्ठ कृष्ण ६ बुधवार दिनांक २४ मई २००० ई. तक गुरु अस्त रहेगा।

शुक्र अस्त—इस वर्ष वैशाख शुक्ल ५ सोमवार दिनांक ८ मई २००० ई. से आषाढ़ शुक्ल १५ रविवार दिनांक १६ जुलाई २००० ई. तक शुक्र अस्त रहेगा।

इस पंचांग में गुरु-शुक्र का उदयास्त ज्योतिर्गणित की सूक्ष्म उन्नतांश पद्धति से लगाया गया है। गुरु-शुक्र के अस्तकाल से ३ दिन पूर्व के वृद्धत्वकाल से तथा उदय के बाद ३ दिन तक बाल्यत्व दोष में विवाहादि शुभ कर्म नहीं करने चाहिए तदनुसार ही मुहूर्त्तादि लिखे गये हैं।

नोट:-नीचे लिखे विवाह मुहूर्त्तों में जहाँ कहीं युति, वेध और दग्धा तिथि दोषों में परिहार वाक्य मिले हैं वे विवाह मुहूर्त्त भी लिखे गये हैं। यहां क्रांति साम्य दोष स्थूल न लेकर सूक्ष्म गणितागत लिया गया है।

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त

ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
			चैत्र शुक्ल पक्ष
१० गुरौ	१३ अप्रैल	मघा	रे. ७ ।ऽ ॥॥।ऽऽ। लग्न कुंभ २७।०६ से २८।३४ तक, चन्द्र ७ पूज्यः, गणितेन क्रांतिसाम्याऽभावः संक्रांति दिन दोष अति आवश्यके
११ शुक्रे	१४ "	मघा	रे. ७ ।ऽ ॥॥।ऽऽ। दिवा लग्न ७।३५ से वृष, शनि १२ पूज्यः, ९।३० से मिथुन, गणितेन क्रांतिसाम्याऽभावः
१२ शनौ	१५ "	उ.फा.	रे. ६ ऽसू ॥ऽशु।ऽअ.॥ऽ। लग्न २५।०५ से धनु, २६।५९ से कुंभ, चन्द्र ७ पूज्यः, पादवेधात्शुक्र वेधाऽभावः, गणितेन क्रांतिसाम्याऽभावः
१३ रवौ	१६ "	उ.फा.	रे. ७ ऽसू. ॥ऽशु।ऽअ.॥॥ दिवा लग्न ७।२८ से ११।३६ तक, वृष, मिथुन, पादवेधात्शुक्रवेधाऽभावः
१३ रवौ	१६ "	हस्त	रे. ७ ॥।ऽबु.ऽबु.।ऽ॥। लग्न २५।०३ से २५।१२ तक धनु, २८।२३ से मीन, चन्द्र ७ पूज्य: पादवेधात् बुधवेधाऽभावः
१४ चन्द्रे	१७ "	हस्त	रे. ७ ॥।ऽबु.ऽबु.।ऽ॥। लग्न अन्यगो. मंगल पूज्यः, रात्रौ, २३।०४ से २३।११ तक धनु, अग्रे भद्रा दोषः, पादवेधात् बुधवेधाऽभाव
१५ भौमे	१८ "	चित्रा	रे. ७ ।ऽ॥ऽ॥ऽ॥ दिवा लग्न ११।०८ से ११।२८ तक मिथुन, नृपपंचक दोषः रे. ६, रात्रौ २३।०० से २४।५२ तक धनु
१५ भौमे	१८ "	स्वाती	रे. ७ ॥॥ऽसू.।ऽऽ॥ लग्न कुंभ २६।४७ से २८।१५ तक
			वैशाख कृष्ण पक्ष
१ बुधे	१९ "	स्वाति	रे. ६ ॥॥ऽसू.ऽचो.ऽऽ॥ दिवा लग्न मिथुन ९।११ से ११।२४ तक रात्रौ धनु लग्ने २२।५६ से २५।०१ तक, दिवा लग्ने चोरपंचकाऽभावः
५ रवौ	२३ "	मूल	रे. ८ ॥॥॥ऽऽ॥ दिवा लग्न ९।५४ से मिथुन, चन्द्र ७ पूज्यः, सायं गोधूलि, मंगल ७ पूज्यः
			श्रावण कृष्ण पक्ष
२ भौमे	१८ जुलाई	श्रवण	रे. ७॥॥ऽशु.ऽअ.ऽ॥। दिवा लग्न १०।०६ से १२।२४ कन्या, मंगल १० पूज्यः, शुक्र बाल्यत्व दोषः आवश्यके

ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
२ भौमे	१८ जुला.	धनि.	रे. ९ ॥॥।ऽअ.॥॥ लग्न २२।१७ से १।१७ तक मीन, मेष लग्ने राहु ४ पूज्यः, शुक्र वाल्यत्व दोष आवश्यके
३ बुधे	१९ "	धनि.	रे. ९ ॥॥।ऽअ.॥॥ दिवा लग्न सिंह ७।४५ से चन्द्र ७ पूज्यः शुक्र बाल्यत्व दोष-आवश्यके
५ शुक्रे	२१ "	उ.भा.	रे. ९ ॥॥॥।ऽ॥ लग्न मेष २४।१७ से, राहु ४ पूज्यः, २७।०१ से २९।१७ तक मिथुन, शनि १२ पूज्यः
६ शनौ	२२ "	उ.भा.	रे. ७ ॥॥।ऽचो.।ऽ।ऽ दिवा लग्न कन्या ९।५० से १२।०८ तक चन्द्र, मंगल पूज्यः, सायं गोधूलि सोग्रां. रात्रौ २३।२६ से २४।१८ तक, मेष राहु ४ पूज्य दग्धा तिथि दोष परिहार
६ शनौ	२२ "	रेवती	रे. ६ ऽचं.बु.॥॥ऽचो.ऽ॥ऽ लग्न मिथुन २६।५४ से २८।१६ तक, शनि १२ पूज्यः, दग्धा तिथि दोषः परिहारः
७ रवौ	२३ "	रेवती	रे. ८ ऽचं.बु.॥॥।ऽ।॥ लग्न गोधूलि सोग्रां. मंगल ७ पूज्यः रात्रौ मेष लग्ने २३।२३ से २४।५२ तक, राहु ४ पूज्यः
७ रवौ	२३ "	अश्वि.	रे. ९ ॥॥॥।ऽ॥ लग्न २६।५१ से मिथुन, शनि १२ पूज्यः
८ चन्द्र	२४ "	अश्वि.	रे. ८ ॥॥।ऽरो.।ऽ॥ दिवा लग्न ७।२६ से ९।४४ सिंह, सायं अन्यगो, सोग्रांगः, मंगल ७ पूज्य, रात्रौ मीन २१।५४ से २३।१९ तक
			श्रावण शुक्ल पक्ष
२ भौमे	१ अगस्त	मघा	रे. ६ ऽमं.श.ऽ॥।ऽचो.ऽ॥। दिवा लग्न कन्या ११।०१ से ११।३१ तक, रात्रौ मेष लग्ने २२।४८ से २४।२४ तक
५ शुक्रे	४ "	हस्त	रे. ७ ॥॥॥ऽऽ।ऽ दिवा लग्न ६।४३ से ९।०१ क सिंह, सायं अन्यगो. मंगल-शुक्र पूज्यः, रात्रौ २१।११ से २२।३६ तक मीन लग्ने, चन्द्र ७ पूज्यः, शुक्र षष्ठ दोष परिहारः
७ रवौ	६ "	स्वाती	रे. ६ ऽरा.॥॥ऽअ.ऽऽ॥ दिवा लग्न ६।३५ से ११।११ तक सिंह, कन्या,
९ भौमे	८ "	अनु.	रे. ६ ॥॥ऽश.ऽनृ.ऽ।ऽ। दिवा लग्न सिंह, ६।२८ से, सायं गोधूलि, मंगल-शुक्र पूज्यः, रात्रौ २०।५६ से २३।५७ तक, मीन, मेष, मीने शु. ६ दोष व मेषे चन्द्र ८ दोष परिहारः, गणितेन क्रांतिसाम्याऽभावः
१० बुधे	९ "	अनु.	रे. ६ ॥॥ऽश.ऽनृ.ऽ।ऽ। दिवालग्न सिंह ६।२४ से ७।४१ तक, गणितेन क्रांतिसाम्याऽभावः
१३ रवौ	१३ "	श्रवण	रे. ७ ॥॥ऽमं.।ऽऽ॥ लग्न २१।०१ से २३।३७ तक, मीन-मेष, मीन लग्ने राहु ४ पूज्यः, शुक्र षष्ठ दोष परिहारः
१४ चन्द्रे	१४ "	श्रवण	रे. ७ ॥॥ऽमं.।ऽऽ॥ लग्न ८।२२ से ८।४१ तक कन्या
			भाद्रपद कृष्ण पक्ष
३ शुक्रे	१८ "	उ.भा.	रे. ९ ॥॥।ऽअ.॥॥ लग्न गोधूलि, रात्रौ २१।४० से २३।१६ तक मेष
५ रवौ	२० "	अश्वि.	रे. ६ ।ऽ।ऽशु.॥।ऽऽ। लग्न गोधूलि, रात्रौ मीन २०।०७ से २१।३२ तक मीन लग्ने राहु ४ पूज्यः, शुक्र षष्ठ दोष परिहारः

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ति. वार ता. मास नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

१ बुधे ३० अग. उ.फा. रे. ७ ।ऽऽशु.॥ऽनृ.॥॥ लग्न गोधूलि शुक्र ८ दोष:
४ शनौ २ सितं. चित्रा रे. १० ॥॥॥॥॥ दिवा लग्न ७।०८ से ९।२६ तक कन्या
४ शनौ २ '' स्वाती रे. ७ ऽरा.॥॥।ऽऽ॥ लग्न मेष २०।४४ से २२।१९ तक, चन्द्र ७ पूज्य: शुक्र षष्ठ दोष परिहार:
५ रवौ ३ '' स्वाती रे. ६ ऽरा॥॥ऽरो.ऽऽ॥ दिवा लग्न कन्या ७।०४ से,
१३ चन्द्रे ११ '' धनि. रे. १० ॥॥॥॥॥ दिवा लग्न ६।४७ से ८।५० तक कन्या, सायं अन्यगोधूलि शुक्र ८ दोष:, रात्रौ मेष लग्न २०।०८ से २१।४३ तक शुक्र षष्ठ दोष परिहार:

आश्विन शुक्ल पक्ष

४ रवौ १ अक्टू. अनु. रे. ६ ॥॥ऽश.ऽचो.ऽऽ॥ लग्न २४।३० से २६।५० तक कर्क
५ चन्द्रे २ '' अनु. रे. ६ ॥॥ऽ श.ऽचो.ऽऽ॥ लग्न अन्य गो. शुक्र ८ दोष:
९ शनौ ७ '' श्रवण रे. ७ ॥॥।ऽअ.ऽऽ॥ लग्न गोधूलि, शुक्र ८ दोष:, रात्रौ कर्क २४।०६ से २६।२६ तक, चन्द्र ७ पूज्य:
१० रवौ ८ '' धनि. रे. १० ॥॥॥॥॥ लग्न गोधूलि शुक्र ८ दोष:
१३ बुधे ११ '' उ.भा. रे. ८ ॥॥।ऽचो.॥ऽ। लग्न कर्क २३।४९ से. ग.क्रां.सा. अभाव:

कार्तिक कृष्ण पक्ष

४ भौमे १७ '' मृग. रे. ९ ॥॥॥।ऽ॥ लग्न गोधूलि शुक्र ८ दोष:, रात्रौ २३।२५ से कर्क
१० रवौ २२ '' मघा रे. ७ ऽबु.श.॥॥।ऽऽ॥ लग्न २३।०५ से २५।२५ तक कर्क, २७।४३ से कन्या, शुक्र ३ पूज्य:

कार्तिक शुक्ल पक्ष

२ रवौ २९ '' अनु. रे. ८ ॥॥ऽश.।ऽ॥। दिवा लग्न १२।१९ से १५।२९ तक मकर, कुंभ लग्ने मंगल ८ दोष परिहार:, रात्रौ २२।३८ से २७।१६ तक कर्क सिंह
८ शनौ ४ नवं. धनि. रे. ९ ।ऽ॥॥॥ लग्न २३।०६ से २४।३४ तक कर्क, चन्द्र ७ पूज्य:
१२ बुधे ८ '' उ.भा. रे. ६ ।ऽ॥ऽमं.ऽनृ.॥।ऽ दिवा लग्न मकर कुंभ ११।४० से १४।५२ तक, कुंभ लग्ने मंगल ८ दोष परिहार:, सायं अन्यगो., दग्धातिथि दोष:
१४ शुक्रे १० '' अश्वि. रे. ८ ॥॥ऽबु.ऽचो.॥॥ दिवा लग्न मकर कुंभ ११।३२ से, कुंभे मंगल ८ दोष परिहार:

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

२ चन्द्रे १३ '' रोहि. रे. ८॥ऽगु.॥।ऽ॥। दिवा लग्न ११।२० से १४।३२ तक मकर कुंभ, कुंभ लग्ने मंगल ८ दोष परिहार:, सायं गोधूलि, गुरुयुति दोष:
२ चन्द्रे १३ '' मृग. रे. १० ॥॥॥॥॥ लग्न २४।३५ से २६।१६ तक सिंह
७ शनौ १८ '' मघा रे. ६ ऽश.॥॥ऽअ.ऽऽ॥ लग्न अन्यगोधूलि, शुक्र ८ दोष:
८ रवौ १९ '' मघा रे. ८ ऽश.॥॥।ऽ॥ दिवा लग्न १२।४० से कुंभ, चन्द्र ७ पूज्य: मंगल ८ दोष परिहार:
१० चन्द्रे २० '' उ.फा. रे. ८ ॥॥।ऽनृ.।ऽ॥ लग्न अन्यगोधूलि १७।५० तक
११ भौमे २१ '' उ.फा. रे. ९ ॥॥।ऽ॥ दिवा लग्न मकर १०।४९ से १३।३२ तक
११ भौमे २१ '' हस्त रे. ७ ॥ऽमं.॥।ऽऽ॥ लग्न अन्यगोधूलि, शुक्र ८ दोष:, रात्रौ सिंह लग्न २३।२९ से, मंगलयुति दोष परिहार:

ति. वार ता. मास नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण

१२ बुधे २२ नवं. हस्त रे. ६ ॥ऽमं.॥ऽचो.ऽऽ॥ दिवा लग्न १०।४५ से मकर, मंगलयुति दोष परिहार:
१२ बुधे २२ '' चित्रा रे. ८ ॥॥।ऽचो.।ऽ॥ लग्न अन्यगो. शुक्र ८ दोष: रात्रौ २३।२५ से २६।४१ तक सिंह

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

५ शुक्रे १ दिसं. श्रवण रे. ८ ॥॥।ऽचो.ऽ॥। दिवा लग्न ११।५३ से १३।२१ तक कुं., मंगल ८ दोष परिहार:, सायं अन्यगोधूलि शुक्र ८ दोष:
६ शनौ २ '' धनि. रे. ९ ॥॥॥ऽ॥। दिवा लग्न कुंभ ११।४९ से, मंगल ८ दोष परिहार:, सायं अन्यगो. शुक्र ८ दोष:, रात्रौ सिंह चन्द्र ७ पूज्य:
११ गुरौ ७ '' रेवती रे. ७ ।ऽ॥॥ऽऽ॥ दिवा लग्न ९।४६ से ११।३० तक मकर

माघ कृष्ण पक्ष

५ रवौ १४ जन. उ.फा. रे. ९ ॥॥॥।ऽ॥ लग्न गोधूलि शुक्र ८ दोष:
८ भौमे १६ '' चित्रा रे. ८ ॥॥।ऽअ.।ऽ॥ लग्न अन्यगो. शुक्र ८ दोष:
९ बुधे १७ '' स्वाती रे. ७ ऽरा.॥॥।ऽऽ॥ दिवा लग्न ८।५३ से १०।२१ तक कुंभ सायं अन्यगोधूलि, शुक्र ८ दोष:
१० शुक्रे १९ '' अनु. रे. ६ ।ऽ॥ऽगु. श. ।ऽऽ॥ दिवा लग्न कुंभ ८।४४ से, सायं अन्यगोधूलि, शक्र ८ दोष

माघ शुक्ल पक्ष

५ चन्द्रे २९ '' उ.भा. रे. ७ ॥॥।ऽचो.ऽऽ॥ दिवा लग्न ८।०३ से ९।३१ तक कुंभ, सायं अन्यगोधूलि
६ भौमे ३० '' रेवती रे. १० ॥॥॥॥॥ दिवा लग्न कुंभ ७।५९ से, सायं अन्यगोधूलि
७ बुधे ३१ '' अश्वि. रे. ६ ।ऽ॥।ऽरो.ऽऽ॥ दिवा लग्न कुंभ, सायं अन्यगोधूलि
१० शनौ ३ फर. रोहि. रे. ७ ॥॥।ऽअ.।ऽऽ। लग्न गोधूलि, गणितेन क्रांतिसाम्याऽभाव:
११ रवौ ४ '' मृग. रे. ८ ॥॥॥ऽ।ऽ। दिवा लग्न ८।०७ से १०।३२ तक कुंभ, मीन, गणितेन क्रांतिसाम्याऽभाव:

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

१ शुक्रे ९ '' मघा रे. ५ ऽश.॥ऽसू.ऽरो.ऽऽ॥ दिवा लग्न ९।२२ से १०।५० तक, कुंभ, चन्द्र ७ पूज्य:, रेखा ५ अल्प दोष व क्षयतिथि दोष: अति आवश्यके
१० शनौ १७ '' मूल रे. ७ ऽमं.ऽ॥॥।ऽ॥ लग्न २८।५९ से ३०।४३ तक, मकर, शुक्र ३ पूज्य:
११ रवौ १८ '' मूल रे. ७ ऽमं.ऽ॥॥।ऽ॥ दिवा लग्न ८।१२ से ९।३६ तक मीन

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

२ रवौ २५ '' उ.भा. रे. ७ ।ऽ॥।ऽनृ.ऽ॥। लग्न मकर शुक्र ३ पूज्य:, २८।२६ से ३०।११ तक
३ चन्द्रे २६ '' रेवती रे. ८ ॥ऽशु.॥॥॥ऽ लग्न २८।२३ से मकर, शुक्र ३ पूज्य:

चैत्र कृष्ण पक्ष

१ शनौ १० मार्च हस्त रे. ८ ।ऽ॥।ऽरो. ॥॥ लग्न २७।३५ से २९।१९ तक मकर, शुक्र ३ पूज्य:
२ रवौ ११ '' हस्ते रे. ८ ।ऽ॥।ऽरो॥॥ दिवा लग्न ६।४८ से ८।१३ तक, मीन सायं, गोधूलि शुक्र ८ दोष:, गोधूल्यां रोगपंचकाऽभाव: रेखा ९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्ताः सं. २०५७ विक्रमी, शाकः १९२२ मध्ये

वर्षारंभ से १३ अप्रैल गुरुवार सायं तक मीन मल मास

२० अप्रैल	गुरु	अनुराधा	शनिवेधः
२१ "	शुक्र	"	"
२२ "	शनि	"	"
२४ "	सोम	मूल	मृत्युबाण दोष

अग्रे २५ अप्रै. मंगल से १९ जुला. बुध तक गुरुवृद्धत्व, गुरु-शुक्रास्तः बाल्यत्व दोषः

२६ जुलाई	बुध	रोहिणी	मृत्युबाण दोषः
२७ "	गुरु	"	लग्नाऽभावः पूर्व मृत्युबाण
२७ "	गुरु	मृगशिर	केतुवेधः
२८ "	शुक्र	"	"
२ अग.	बुध	मघा	नक्षत्रांत दोषः
२ "	बुध	उ.फा.	लग्नाऽभावः
३ "	गुरु	"	भद्रा दोषः
३ "	गुरु	हस्त	लग्नाऽभावः
४ "	शुक्र	चित्रा	लग्नाऽभाव, मृत्युबाण दोषः
५ "	शनि	"	मृत्युबाण दोषः
५ "	शनि	स्वाति	मृत्युबाण पश्चात् लग्नाऽभावः
१० "	गुरु	मूल	राहुवेध दोषः
११ "	शुक्र	मूल	" "
१२ "	शनि	उ.षा.	ग्रहणभम्, केतुयुतिः
१३ "	रवि	उ.षा.	" "
१४ "	सोम	धनिष्ठा	सूर्यवेध, मृत्युबाण दोषः
१५ "	मंगल	"	"
१७ "	गुरु	उ.भा.	मृत्युबाण, भद्रा दोषः
१९ "	शनि	"	नक्षत्रांत दोषः लग्नाऽभावः
१९ "	"	रेवती	भुजंगपात दोषः
२० "	रवि	"	" "
२१ "	सोम	अश्विनी	लग्नाऽभावः
२३ "	बुध	रोहिणी	ऽबृ.।ऽगु.॥ऽचो.ऽऽ॥ रेखा ५ अल्पत्व दोषः
२३ "	बुध	मृगशिर	केतुवेधः
२४ "	गुरु	"	"
२८ "	सोम	मघा	क्षीणचन्द्र दोषः
३१ "	गुरु	उ.फा.	लग्नाऽभाव नक्षत्रांत दोषः
३१ अग.	गुरु	हस्त	लग्नाऽभाव
१ सितं.	शुक्र	हस्त	लग्नाऽभाव नक्षत्रांत दोषः
१ "	शुक्र	चित्रा	लग्नाऽभाव भद्रा दोषः
४ "	सोम	अनु.	वैधृति विष्कुंभ ३ घटी दोषः
५ "	मंगल	अनु.	मृत्युबाण भद्रा दोषः
६ "	बुध	मूल	राहुवेधः
७ "	गुरु	मूल	" "
८ "	शुक्र	उ.षा.	केतुयुति ग्रहणभम्
९ "	शनि	उ.षा.	" "
९ "	शनि	श्रवण	भौमवेध दोषः
१० "	रवि	श्रवण	" "
११ "	सोम	श्रवण	" "
१२ "	मंगल	धनिष्ठा	लग्नाऽभावः

अग्रे १४ सितं. गुरु से २७ सितं. बुध तक श्राद्ध पक्ष दोषः

२८ "	गुरु	हस्त	क्षीणचन्द्र दोषः
२८ "	गुरु	चित्रा	" "
२९ "	शुक्र	चित्रा	लग्नाऽभाव, वैधृति दोषः
२९ "	शुक्र	स्वाती	वैधृति दोषः
३० "	शनि	स्वाति	वैधृति विष्कुंभ ३ घटी दोष पश्चात् लग्नाऽभावः
३ अक्टू.	मंगल	मूल	राहुवेध दोषः
४ "	बुध	मूल	" "
६ "	शुक्र	उ.षा.	ग्रहणभम्
७ "	शनि	उ.षा.	" "
८ "	रवि	श्रवण	लग्नाऽभावः
९ "	सोम	धनिष्ठा	भद्रा पश्चात् लग्नाऽभावो
१२ "	गुरु	उ.भा.	लग्नाऽभावः भद्रा दोषः
१२ "	गुरु	रेवती	भद्रा पश्चात् लग्नाऽभावो
१३ "	शुक्र	रेवती	लग्नाऽभावः
१३ "	शुक्र	अश्विनी	भौमवेध दोषः
१४ "	शनि	अश्विनी	" "
१६ "	सोम	रोहिणी	व्यतिपात, संक्रांति दिन दोष
१७ "	मंगल	रोहिणी	लग्नाऽभावः
१८ "	बुध	मृगशिर	मृत्युबाण दोषः
२३ "	सोम	मघा	लग्नाऽभावः
२४ "	मंगल	उ.फा.	लग्नाऽभाव, क्षीणचन्द्र दोषः
२८ "	शनि	स्वाति	नक्षत्रांत लग्नाऽभावः
३० अक्टू.	सोम	अनु	लग्नाऽभावः
३१ "	मंगल	मूल	राहुवेध दोषः
१ नवं.	बुध	मूल	" "
२ "	गुरु	उ.षा.	ग्रहणभम्
३ "	शुक्र	उ.षा.	" "
३ "	शुक्र	श्रवण	भुजंगपात दोषः
४ "	शनि	श्रवण	" "
५ "	रवि	धनिष्ठा	मृत्युवाण दोषः
७ "	मंगल	उ.भा.	भद्रा लग्नाऽभावो च
८ "	बुध	रेवती	भौमवेध दोषः
९ "	गुरु	रेवती	" "
९ "	गुरु	अश्विनी	लग्नाऽभावः
१२ "	रवि	रोहिणी	" "
१४ "	मंगल	मृगशिर	मृत्युबाण भद्रा दोषः
२३ "	गुरु	चित्रा	क्षीणचन्द्र दोषः
२६ "	रवि	अनुराधा	सूर्ययुति दोषः
२७ "	सोम	मूल	राहुवेध दोषः
२८ "	मंगल	मूल	" "
२९ "	बुध	उ.षा.	भद्रा-ग्रहणभम् दोषः
३० "	गुरु	उ.षा.	" "
३० "	गुरु	श्रवण	लग्नाऽभावः
१ दिसं.	शुक्र	धनिष्ठा	" "
३ "	रवि	धनिष्ठा	लग्नाऽभावो नक्षत्रांत दोषः
५ "	मंगल	उ.भा.	मृत्युबाण पश्चात् लग्नाऽभाव
६ "	बुध	उ.भा.	लग्नाऽभाव व्यतिपात दोषः
६ "	बुध	रेवती	व्यतिपात दोषः
७ "	गुरु	अश्विनी	भद्रा पश्चात् लग्नाऽभावः
८ "	शुक्र	अश्विनी	परिघार्द्धम् दोषः
१० "	रवि	रोहिणी	लग्नाऽभावः भद्राश्च
११ "	सोम	रोहिणी	लग्नाऽभावः
११ "	सोम	मृगशिर	शुक्र पादवेध दोषः
१२ "	मंगल	मृगशिर	नक्षत्रांत दोष

अग्रे १५ दिसं. से १३ जन. तक धनु संक्रांति (मल) मास दोषः

१४ जन.	रवि	हस्त	लग्नाऽभावः
१५ "	सोम	हस्त	मृत्युबाण भद्रा दोषः
१५ "	सोम	चित्रा	मृत्युबाण लग्नाऽभावः
१६ "	मंगल	स्वाती	लग्नाऽभावः

शेष पृष्ठ २१५ पर.......

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

त्रिबल शुद्धि कोष्ठक सम्वत् २०५७ विक्रमी (दिनांक ५ अप्रैल २००० से २५ मार्च २००१ ई. तक)

विवाह के लिए श्रेष्ठ समय का ज्ञानार्थ कोष्ठक (बन्द कोष्ठकों में घंटा मिनट लिखे गये हैं)

इस पंचांग में विवाह के लिए तत्काल तारीख ज्ञानार्थ त्रिबल शुद्धि कोष्ठक पाठकों की सुविधा हेतु विगत वर्षों से देते आ रहे हैं। किस-किस महीने की किस-किस तारीख को किन-किन राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं। इन सबकी जानकारी इस त्रिबल शुद्धि कोष्ठक से मिलेगी। जिससे साधारण व्यक्ति भी एक नजर में जान सकता है कि अमुक राशि वाले लड़के व लड़की की शादी इस वर्ष किन-किन तारीखों में हो सकती है। वर के लिए ''सूर्य की पूजा'' तथा कन्या के लिए ''गुरु की पूजा'' वाला समय भी लिख दिया गया है। वर व कन्या की राशियों वाले कालम में जो तारीखें एक समान मिलें उन तारीखों में उस राशिवाले लड़के-लड़की का विवाह सम्पन्न हो सकता है। मेषादि राशि वाले लड़कों के लिए चौथे, आठवें तथा बारहवें सूर्य व ४, ८ चन्द्र परित्याग कर शेष सभी महीनों में मुहूर्त्तों की तारीखें लिखी गयी हैं। वर्तमान समय में लड़कियों का विवाह बड़ी आयु में किया जाता है, अत: चतुर्थ, अष्टम और बारहवें गुरु की शास्त्रानुसार विशेष पूजा करके नेष्टता को दूर किया जा सकता है तथा चतुर्थ, अष्टम और बारहवें चन्द्रमा को छोड़कर विवाह मुहूर्त्तों की तारीखें लिखी गयी हैं।

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	लड़की के लिए पूज्य गुरु
मेष—अप्रैल-१३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २३ (९।५३ बाद), अग.-१८, २०, ३०, सितं.-२, ३, ११, अक्टू.-७, ८, ११, १७, २२ (१०।५३ उप.), नवं.-४, ८, १०, १३, जन.-१४, १६, १७, २९, ३०, ३१, फर.-३, ४, ९, १७ (१४।१२ उप.), १८, २५, २६, मार्च-१०, ११।	१३ अप्रैल से १४ जून तक १६ अग. से १५ सितं. तक १६ अक्टू. से १५ नवं. तक	**मेष**—अप्रैल-१३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २३ (९।५३ बाद), जुला.-१८, १९, २३ (२६।०७ उप.), २४, अग.-१, ४, ६, १३, १४, २० (७।४६ उप.), ३०, सितं.-२, ३, ११, अक्टू.-७, ८, १७, २२ (१०।५३ उप.), नवं.-४, १०, १३, १८ (१६।१३ उप.), १९, २०, २१, २२, दिसं.-१, २, जन.-१४, १६, १७, ३१ (८।१५ उप.), फर.-३, ४, ९, १७ (१४।१२ उप.), १८, मार्च-१०, ११।	वर्षारम्भ से १ जून तक सामान्य पूज्य
वृष—जुला.-१८, १९, २१, २२, २३, २४, अग.-४, ६, ८, ९, १३, १४, अक्टू.-१, २, ७, ८, ११, १७, २९, नवं.-४, ८, १०, १३, २१, २२, दिसं.-१, २, ७, जन.-१४ (९।११ बाद), १६, १७, १९, २९, ३०, ३१, फर.-३, ४, २५, २६, मार्च-१०, ११।	१४ मई से १५ जुला. तक १६ सितं. से १६ अक्टू. तक १५ नवं. से १४ दिसं. तक १४ जन. से १२ फर. तक	**वृष**—अप्रैल-१६ (७।०४ बाद), १७, १८, १९, जुला.-१८, १९, २१, २२, २३ (२६।०७ तक), अग.-४, ६, ८, ९, १३, १४, १८, सितं.-२, ३, ११, अक्टू.-१, २, ७, ८, ११, १७, २९, नवं.-४, ८, १३, २१, २२, दिसं.-१, २, ७, जन.-१४ (९।११ बाद), १६, १७, १९, २९, ३०, ३१ (८।१५ तक), फर.-३, ४, २५, २६, मार्च-१०, ११।	वर्षारम्भ से १ जून तक विशेष पूज्य २ जून से वर्षान्त तक सामान्य पूज्य
मिथुन—अप्रैल-१३, १४, १५, १८ (१३।४० बाद), १९, २३, जुला.-१९(७।०० बाद), २१, २२, २३, २४, अग.-१, ६, ८, ९, १८, २०, ३० (२०।४४ तक), सितं.-२, ३, ११ (२०।०० बाद), अक्टू.-१७, २२, २९, नवं.-८, १०, १३, १८, १९, २० (२०।१५ तक), २२ (२५।५१ बाद), दिसं.-२ (२०।३० बाद), ७, फर.-१७, १८, २५, २६।	१४ जून से १५ अग. तक १६ अक्टू. से १५ नवं. तक १२ फर. से १४ मार्च तक	**मिथुन**—अप्रैल-१३, १४, १५, १८ (१३।४० बाद), १९, २३, जुला.-१९ (७।०० बाद), २१, २२, २३, २४, अग.-१, ६, ८, ९, १८, २०, ३० (२०।४४ तक), सितं.-२, ३, ११ (२०।०० बाद), अक्टू.-१, २, ११, २२, २९, नवं.-८, १०, १८, १९, २० (२०।१५ तक), २२ (२५।५१ बाद), दिसं.-२ (२०।३० बाद), ७, जन.-१६ (१३।२५ बाद), १७, १९, २९, ३०, ३१, फर.-९, १७, १८, २५, २६।	२ जून से वर्षान्त तक विशेष पूज्य
कर्क—अप्रैल-१३, १४, १५, १६, १७, १८ (१३।४० तक), २३, जुला.-१८, १९ (७।०० तक), २१ (१७।५५ बाद), २२, २३, २४, अग.-१, ४, ८, ९, १३, १४, १८, २०, ३०, सितं.-११ (२०।०० तक), अक्टू.-१ (१६।४० बाद), २, ७, ८ (२७।५८ तक), ११ (१३।५४ बाद), नवं.-१८, १९, २०, २१, २२ (२५।५१ तक), दिसं.-१, २ (२०।३० तक), ७, जन.-१४, १९, २९, ३०, ३१, फर.-३, ४, ९।	१६ जुला. से १५ सितं. तक १५ नवं. से १४ दिसं. तक १४ जन. से १२ फर. तक	**कर्क**—अप्रैल-१३, १४, १५, १६, १७, १८ (१३।४० तक), २३, जुला.-१८, १९ (७।०० तक), २१ (१७।५५ बाद), २२, २३, २४, अग.-१, ४, ८, ९, १३, १४, १८, २०, ३०, सितं.-११ (२०।०० तक), अक्टू.-१ (१६।४० बाद), २, ७, ८ (२७।५८ तक), ११ (१३।५४ बाद), १७ (२८।३९ तक), २२, २९, नवं.-४, ८, १०, १३, १८, १९, २०, २१, २२ (२५।५१ तक), दिसं.-१, २ (२०।३० तक), ७, जन.-१४, १९, २९, ३०, ३१, फर.-३, ४ (१९।१७ तक), ९, १७, १८, २५, २६, मार्च-१०, ११।	वर्षारम्भ से १ जून तक सामान्य पूज्य
सिंह—अप्रैल-१३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २३ (९।५३ बाद), अग.-२० (७।४६ बाद), ३०, सितं.-२, ३, ११, अक्टू.-७, ८, १७, २२, नवं.४, १०, १३, जन.-१४, १६, १७, ३१ (८।१५ बाद), फर.-३, ४, ९, १७ (१४।१२ बाद), १८, मार्च-१०, ११।	१३ अप्रैल से १३ मई तक १६ अग. से १६ अक्टू. तक १२ फर. से १४ मार्च तक	**सिंह**—अप्रैल-१३ (२६।०४ बाद), १४, १५, १६, १७, १८, १९, २३ (९।५३ बाद), जुला.-१८, १९, २३ (२६।०७ बाद), २४, अग.-१, ४, ६, १३, १४, २० (७।४६ बाद), ३०, सितं.-२, ३, ११, अक्टू.-७, ८, १७, २२ (१०।५३ बाद), नवं.-४, १०, १३, १८ (१६।१३ बाद), १९, २०, २१, २२, दिसं.-१, २, जन.-१४, १६, १७, ३१ (८।१५ बाद), फर.-३, ४, ९, १७ (१४।१२ बाद), १८, मार्च-१०, ११।	२ जून से वर्षान्त तक सामान्य पूज्य
कन्या—जुलाई-१८, १९, २१, २२, २३ (२६।०७ तक), अग.-१, ४, ६, ८, ९, १३, १४, अक्टू.-१, २, ७, ८, ११, १७, २२, २९, नवं.-४, ८, १३, १८, १९, २०, २१, २२, दिसं.-१, २, ७ (१६।०० तक), जन.-१४, १६, १७, १९, २९, ३०, फर.-३, ४, ९, २५, २६, मार्च-१०, ११।	१४ मई से १४ जून तक १६ सितं. से १४ नवं. तक १४ जन. से १२ फर. तक	**कन्या**—अप्रैल-१६ (७।०४ बाद), १७, १८, १९, जुलाई-१८, १९, २१, २२, २३ (२६।०७ तक), अग.-४, ६, ८, ९, १३, १४, १८, सितं.-२, ३, ११, अक्टू.-१, २, ७, ८, ११, १७, २९, नवं.-४, ८, १३, २१, २२, दिसं.-१, २, ७ (१६।०० तक), जन.-१४ (९।११ बाद), १६, १७, १९, २९, ३०, फर.-३, ४, २५, २६, मार्च-१०, ११।	वर्षारम्भ से १ जून तक विशेष पूज्य

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	लड़की के लिए पूज्य गुरु
तुला—अप्रैल-१३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २३, जुला.-१९ (७।०० बाद), २१, २२, २३, २४, अग.-१, ४, ६, ८, ९, १८, २०, ३०, सितं.-२, ३, ११ (२०।०० बाद), अक्टू.-२२, २९, नवं.-८, १०, १८, १९, २०, २१, २२, दिसं.-२ (२०।३० बाद), ७, फर.-१७, १८, २५, २६।	१४ अप्रैल से १३ मई तक १४ जून से १५ जुला. तक १६ अक्टू. से १४ दिसं. तक १२ फर. से १४ मार्च तक	**तुला**—अप्रैल-१३, १४, १५, १८ (१३।४० बाद), १९, २३, जुला.-१९ (७।०० बाद), २१, २२, २३, २४, अग.-१, ६, ८, ९, १८, २०, ३० (२०।४४ तक), सितं.-२, ३, ११ (२०।०० बाद), अक्टू.-१, २, ११, २२, २९, नवं.-८, १०, १८, १९, २० (२०।१५ तक), २२ (२५।५१ बाद), दिसं.-२ (२०।३० बाद), ७, जन.-१६ (१३।२५ बाद), १७, १९, २९, ३०, ३१, फर.-९, १७, १८, २५, २६।	२ जून से वर्षान्त तक विशेष पूज्य
वृश्चिक—अप्रैल-१३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २३, जुला.-१८, १९ (७।०० तक), २१ (१७।५५ बाद), २२, २३, २४, अग.-१, ४, ६, ८, ९, १३, १४, १८, २०, ३०, सितं.-२, ३, ११ (२०।०० तक), अक्टू.-१ (१६।४० बाद), २, ७, ८ (२७।५८ तक), ११ (१३।५४ बाद), नवं.-१८, १९, २०, २१, २२, दिसं.-१, २ (२०।३० तक), ७, जन.-१४, १६, १७, १९, २९, ३०, ३१, फर.-३, ४ (१९।१७ तक), ९।	१६ जुला. से १५ अग. तक १५ नवं. से १५ दिसं. तक	**वृश्चिक**—अप्रैल-१३, १४, १५, १६, १७, १८ (१३।४० तक), २३, जुला.-१८, १९ (७।०० तक), २१ (१७।५५ बाद), २२, २३, २४, अग.-१, ४, ८, ९, १३, १४, १८, २०, ३०, सितं.-११ (२०।०० तक), अक्टू.-१ (१६।४० बाद), २, ७, ८ (२७।५८ तक), ११ (१३।५४ बाद), १७ (२८।३९ तक), २२, २९, नवं.-४, ८, १०, १३, १८, १९, २०, २१, २२ (२५।५१ तक), दिसं.-१, २ (२०।३० तक), ७, जन.-१४, १९, २९, ३०, ३१, फर.-३, ४ (१९।१७ तक), ९, १७, १८, २५, २६, मार्च-१०, ११।	वर्षारम्भ से १ जून तक सामान्य पूज्य
धनु—अप्रैल-१३ (२६।०४ बाद), १४, १५, १६, १७, १८, १९, २३ (९।५३ बाद), अग.-२० (७।४६ बाद), ३०, सितं.-२, ३, ११, अक्टू.-१, २, ७, ८, १७, २२ (१०।५३ बाद), नवं.-४, १०, १३, जन.-१४, १६, १७, १९, ३१ (८।१५ बाद), फर.-३, ४, ९, १७ (१४।१२ बाद), १८, मार्च-१०, ११।	१३ अप्रैल से १३ मई तक १४ जून से १५ जुलाई तक १६ अग. से १५ सितं. तक १४ जन. से १२ फर. तक	**धनु**—अप्रैल-१३ (२६।०४ बाद), १४, १५, १६, १७, १८, १९, २३ (९।५३ बाद), जुला.-१८, १९, २३ (२६।०७ बाद), २४, अग.-१, ४, ६, १३, १४, २० (७।४६ बाद), ३०, सितं.-२, ३, ११, अक्टू.-७, ८, १७, २२ (१०।५३ बाद), नवं.-४, १०, १३, १८ (१६।१३ बाद), १९, २०, २१, २२, दिसं.-१, २, जन.-१४, १६, १७, ३१ (८।१५ बाद), फर.-३, ४, ९, १७ (१४।१२ बाद), १८, मार्च-१०, ११।	२ जून से वर्षान्त तक सामान्य पूज्य
मकर—जुलाई-१८, १९, २१, २२, २३ (२६।०७ तक), अग.-४, ६, ८, ९, १३, १४, अक्टू.-१, २, ७, ८, ११, १७, २९, नवं.-४, ८, १३, २१, २२, दिसं.-१, २, ७ (१६।०० तक), जन.-१४ (९।११ बाद), १६, १७, १९, २९, ३०, फर.-३, ४, १७, १८, २५, २६, मार्च-१०, ११।	१६ जुला. से १५ अग. तक १६ सितं. से १५ अक्टू. तक १४ जन. से १३ मार्च तक	**मकर**—अप्रैल-१६ (७।०४ बाद), १७, १८, १९, जुलाई-१८, १९, २१, २२, २३ (२६।०७ तक), अग.-४, ६, ८, ९, १३, १४, १८, सितं.-२, ३, ११, अक्टू.-१, २, ७, ८, ११, १७, २९, नवं.-४, ८, १३, २१, २२, दिसं.-१, २, ७ (१६।०० तक), जन.-१४ (९।११ बाद), १६, १७, १९, २९, ३०, फर.-३, ४, २५, २६, मार्च-१०, ११।	वर्षारम्भ से १ जून तक विशेष पूज्य
कुंभ—अप्रैल-१३, १४, १५, १८ (१३।४० बाद), १९, २३, जुला.-१८, १९, २१, २२, २३, २४, अग.-१, ६, ८, ९, १३, १४, १८, २०, ३० (२०।४४ तक), सितं.-२, ३, ११, अक्टू.-२२, २९, नवं.-८, १०, १८, १९, २० (२०।१५ तक), २२ (२५।५१ बाद), दिसं.-२ (२०।३० बाद), ७, फर.-१७, १८, २५, २६।	१६ अग. से १५ सितं. तक १६ अक्टू. से १४ नवं. तक १२ फर. से १४ मार्च तक	**कुंभ**—अप्रैल-१३, १४, १५, १८ (१३।४० बाद), १९, २३, जुला.-१९ (७।०० बाद), २१, २२, २३, २४, अग.-१, ६, ८, ९, १८, २०, ३० (२०।४४ तक), सितं.-२, ३, ११ (२०।०० बाद), अक्टू.-१, २, ११, २२, २९, नवं.-८, १०, १८, १९, २० (२०।१५ तक), २२ (२५।५१ बाद), दिसं.-२ (२०।३० बाद), ७, जन.-१६ (१३।२५ बाद), १७, १९, २९, ३०, ३१, फर.-९, १७, १८, २५, २६।	वर्षारम्भ से १ जून तक सामान्य पूज्य २ जून से वर्षान्त तक विशेष पूज्य
मीन—अप्रैल-१३, १४, १५ १६, १७, १८ (१३।४० तक), २३, जुलाई-१८, १९, २१, २२, २३, २४, अग.-१, ४, ८, ९, १३, १४, १८, २०, ३०, सितं.-११, अक्टू.-१ (१६।४० बाद), २, ७, ८, ११, नवं.-१८, १९, २०, २१, २२ (२५।५१ तक), दिसं.-१, २, ७, जन.-१४, १९, २९, ३०, ३१, फर.-३, ४ (१९।१७ तक), ९।	१४ अप्रैल से १३ मई तक १६ जुला. से १५ अग. तक १६ सितं. से १६ अक्टू. तक १५ नवं. से १४ दिसं. तक	**मीन**—अप्रैल-१३, १४, १५, १६, १७, १८ (१३।४० तक), २३, जुलाई-१८, १९ (७।०० तक), २१ (१७।५५ बाद), २२, २३, २४, अग.-१, ४, ८, ९, १३, १४, १८, २०, ३०, सितं.-११ (२०।०० तक), अक्टू.-१ (१६।४० बाद), २, ७, ८ (२७।५८ तक), ११ (१३।५४ बाद), १७ (२८।३९ तक), २२, २९, नवं.-४, ८, १०, १३, १८, १९, २०, २१, २२ (२५।५१ तक), दिसं.-१, २ (२०।३० तक), ७, जन.-१४, १९, २९, ३०, ३१, फर.-३, ४ (१९।१७ तक), ९, १७, १८, २५, २६, मार्च-१०, ११।	२ जून से वर्षान्त तक सामान्य पूज्य

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सूर्यादि ग्रहों का नक्षत्र व राशि संचार संवत् २०५७ विक्रमी

सूर्य नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
६ अप्रैल	रेवती	३
१० "	"	४
१३ "	अश्वि.	१ मेष
१६ "	"	२
२० "	"	३
२३ "	"	४
२७ "	भर.	१
३० "	"	२
४ मई	"	३
७ "	"	४
१० "	कृति.	१
१४ "	"	२ वृष
१७ "	"	३
२१ "	"	४
२४ "	रोहि.	१
२८ "	"	२
३१ "	"	३
४ जून	"	४
७ "	मृग.	१
११ "	"	२
१४ "	"	३मिथु.
१८ "	"	४
२१ "	आर्द्रा	१
२५ "	"	२
२८ "	"	३
२ जुलाई	"	४
५ "	पुन.	१
९ "	"	२
१२ "	"	३
१६ "	"	४ कर्क
१९ "	पुष्य	१
२३ "	"	२
२६ "	"	३
३० "	"	४
२ अगस्त	अश्ले.	१
६ "	"	२

सूर्य नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
९ अगस्त	अश्ले	३
१२ "	"	४
१६ "	मघा	१ सिंह
१९ "	"	२
२३ "	"	३
२६ "	"	४
३० "	पू.फा.	१
२ सितंबर	"	२
६ "	"	३
९ "	"	४
१३ "	उ.फा.	१
१६ "	"	२कन्या
१९ "	"	३
२३ "	"	४
२६ "	हस्त	१
३० "	"	२
३ अक्टू.	"	३
६ "	"	४
१० "	चित्रा	१
१३ "	"	२
१६ "	"	३तुला
२० "	"	४
२३ "	स्वाति	१
२७ "	"	२
३० "	"	३
२ नवम्बर	"	४
५ "	विशा.	१
९ "	"	२
१२ "	"	३
१५ "	"	४वृश्चि.
१९ "	अनु.	१
२२ "	"	२
२५ "	"	३
२९ "	"	४
२ दिसंबर	ज्येष्ठा	१
५ "	"	२

सूर्य नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
८ दिसंबर	ज्ये.	३
१२ "	"	४
१५ "	मूल	१ धनु
१८ "	"	२
२२ "	"	३
२५ "	"	४
२८ "	पू.षा.	१
३१ "	"	२
सन् २००१ ई.		
४ जन.	पू.षा.	३
७ "	"	४
१० "	उ.षा.	१
१४ "	"	२मकर
१७ "	"	३
२० "	"	४
२३ "	श्रवण	१
२७ "	"	२
३० "	"	३
२ फर.	"	४
५ "	धनि.	१
९ "	"	२
१२ "	"	३कुंभ
१५ "	"	४
१९ "	शत.	१
२२ "	"	२
२५ "	"	३
१ मार्च	"	४
४ "	पू.भा.	१
७ "	"	२
११ "	"	३
१४ "	"	४मीन
१७ "	उ.भा.	१
२१ "	"	२
२४ "	"	३
२७ "	"	४

मंगल नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
६ अप्रैल	भरणी	२
११ "	"	३
१५ "	"	४
२० "	कृति.	१
२५ "	"	२ वृष
२९ "	"	३
४ मई	"	४
९ "	रोहि.	१
१४ "	"	२
१८ "	"	३
२३ "	"	४
२८ "	मृग.	१
२ जून	"	२
७ "	"	३मिथु.
१२ "	"	४
१७ "	आर्द्रा	१
२२ "	"	२
२७ "	"	३
२ जुलाई	"	४
७ "	पुन.	१
१२ "	"	२
१७ "	"	३
२२ "	"	४कर्क
२७ "	पुष्य	१
१ अग.	"	२
७ "	"	३
१२ "	"	४
१७ "	अश्ले.	१
२२ "	"	२
२७ "	"	३
२ सितं.	"	४
७ "	मघा	१सिंह
१२ "	"	२
१७ "	"	३

मंगल नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२३ सितं.	मघा	४
२८ "	पू.फा.	१
३ अक्टू.	"	२
९ "	"	३
१४ "	"	४
१९ "	उ.फा.	१
२५ "	"	२कन्या
३० "	"	३
४ नवं.	"	४
१० "	हस्त	१
१५ "	"	२
२१ "	"	३
२६ "	"	४
२ दिसं.	चित्रा	१
७ "	"	२
१३ "	"	३
१८ "	"	४
२४ "	स्वाति	१
३० "	"	२
सन् २००१ ई.		
४ जनवरी	स्वाति	३
१० "	"	४
१६ "	विशा.	१
२२ "	"	२
२८ "	"	३
३ फर.	"	४वृश्चि.
९ "	अनु.	१
१५ "	"	२
२२ "	"	३
१ मार्च	"	४
७ "	ज्येष्ठा	१
१५ "	"	२
२३ "	"	३
३० "	"	४

बुध नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
६ अप्रैल	पू.भा.	३
८ "	"	४मीन
११ "	उ.भा.	१
१३ "	"	२
१५ "	"	३
१७ "	"	४
१९ "	रेवती	१
२१ "	"	२
२३ "	"	३
२५ "	"	४
२७ "	अश्वि.	१मेष
२८ "	"	२
३० "	"	३
२ मई	"	४
३ "	भरणी	१
५ "	"	२
६ "	"	३
८ "	"	४
९ "	कृतिका	१
११ "	"	२वृष
१३ "	"	३
१४ "	"	४
१६ "	रोहिणी	१
१७ "	"	२
१९ "	"	३
२० "	"	४
२२ "	मृग.	१
२४ "	"	२
२६ "	"	३मिथु.
२८ "	"	४
३० "	आर्द्रा	१
१ जून	"	२
४ "	"	३

बुध नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
७ जून	आर्द्रा	४
१० "	पुन.	१
१४ "	"	२
२३ "	वक्री	
२ जुलाई	पुन.	१
७ "	आर्द्रा	४
१५ "	"	३
१७ "	मार्गी	
१९ "	आर्द्रा	४
२६ "	पुन.	१
२९ "	"	२
१ अगस्त	"	३
३ "	"	४कर्क
५ "	पुष्य	१
७ "	"	२
९ "	"	३
११ "	"	४
१२ "	अश्ले.	१
१४ "	"	२
१६ "	"	३
१७ "	"	४
१९ "	मघा	१सिंह
२१ "	"	२
२२ "	"	३
२४ "	"	४
२६ "	पू.फा.	१
२७ "	"	२
२९ "	"	३
३१ "	"	४
२ सितं.	उ.फा.	१
४ "	"	२कन्या
६ "	"	३
८ "	"	४
१० "	हस्त	१
१२ "	"	२
१४ "	"	३

बुध नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१६ सितं.	हस्त	४
१९ "	चित्रा	१
२१ "	"	२
२३ "	"	३तुला
२६ "	"	४
२८ "	स्वाति	१
१ अक्टू.	"	२
४ "	"	३
८ "	"	४
१२ "	विशा.	१
१८ "	वक्री	
२३ "	स्वाति	४
२७ "	"	३
२९ "	"	२
१ नवं.	"	१
५ "	चित्रा	४
८ "	मार्गी	
१० "	स्वाति	१
१५ "	"	२
१८ "	"	३
२० "	"	४
२३ "	विशा.	१
२५ "	"	२
२७ "	"	३
२९ "	"	४वृश्चि.
२ दिसं.	अनु.	१
४ "	"	२
६ "	"	३
८ "	"	४
१० "	ज्येष्ठा	१
१२ "	"	२
१४ "	"	३
१७ "	"	४
१९ "	मूल	१धनु
२१ "	"	२
२३ "	"	३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यादि ग्रहों का नक्षत्र व राशि संचार संवत् २०५७ विक्रमी

बुध नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२५ दिसं.	मूल	४
२७ "	पू.षा.	१
२९ "	"	२
३१ "	"	३
सन् २००१ ई.		
२ जन.	पू.षा.	४
४ "	उ.षा.	१
६ "	"	२मकर
८ "	"	३
१० "	"	४
१२ "	श्रवण	१
१४ "	"	२
१६ "	"	३
१८ "	"	४
२१ "	धनि.	१
२३ "	"	२
२५ "	"	३ कुंभ
२८ "	"	४
२ फर.	शत.	१
४ "	वक्री	
५ "	धनि.	४
१० "	"	३
१३ "	"	२मकर
१६ "	"	१
२० "	श्रवण	४
२५ "	मार्गी	
३ मार्च	धनि.	१
८ "	"	२
११ "	"	३कुंभ
१४ "	"	४
१७ "	शत.	१
२० "	"	२
२२ "	"	३
२५ "	"	४
२७ "	पू.भा.	१
२९ "	"	२

गुरु नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
६ अप्रैल	भरणी	२
२१ "	"	३
५ मई	"	४
१९ "	कृतिका	१
२ जून	"	२वृष
१७ "	"	३
२ जुलाई	"	४
१९ "	रोहिणी	१
९ अगस्त	"	२
८ सितं.	"	३
२९ "	वक्री	
२० अक्टू.	रोहिणी	२
२० नवं.	"	१
१५ दिसं.	"	कृति४
सन् २००१ ई.		
२५ जन.	मार्गी	
७ मार्च	रोहिणी	१

शुक्र नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
७ अप्रैल	उ.भा.	२
९ "	"	३
१२ "	"	४
१५ "	रेवती	१
१८ "	"	२
२० "	"	३
२३ "	"	४
२६ "	अश्वि.	१मेष
२८ "	"	२
१ मई	"	३
४ "	"	४
६ "	भरणी	१
९ "	"	२
१२ "	"	३
१५ "	"	४

शुक्र नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१७ मई	कृति.	१
२० "	"	२वृष
२३ "	"	३
२५ "	"	४
२८ "	रोहि.	१
३१ "	"	२
३ जून	"	३
५ "	"	४
८ "	मृग.	१
११ "	"	२
१३ "	"	३मिथु.
१६ "	"	४
१९ "	आर्द्रा	१
२२ "	"	२
२४ "	"	३
२७ "	"	४
३० "	पुन.	१
२ जुलाई	"	२
५ "	"	३
८ "	"	४कर्क
११ "	पुष्य	१
१३ "	"	२
१६ "	"	३
१९ "	"	४
२१ "	अश्ले.	१
२४ "	"	२
२७ "	"	३
३० "	"	४
१ अगस्त	मघा	१सिंह
४ "	"	२
७ "	"	३
९ "	"	४
१२ "	पू.फा.	१
१५ "	"	२
१८ "	"	३

शुक्र नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२० अग.	पू.फा.	४
२३ "	उ.फा.	१
२६ "	"	२कन्या
२८ "	"	३
३१ "	"	४
३ सितं.	हस्त	१
६ "	"	२
८ "	"	३
११ "	"	४
१४ "	चित्रा	१
१६ "	"	२
१९ "	"	३तुला
२२ "	स्वाति	१
२७ "	"	२
३० "	"	३
३ अक्टू.	"	४
६ "	विशा.	१
८ "	"	२
११ "	"	३
१४ "	"	४वृश्चि.
१६ "	अनु.	१
१९ "	"	२
२२ "	"	३
२५ "	"	४
२७ "	ज्येष्ठा	१
३० "	"	२
२ नवं.	"	३
५ "	"	४
७ "	मूल	१धनु
१० "	"	२
१३ "	"	३
१६ "	"	४
१९ "	पू.षा.	१
२१ "	"	२
२४ "	"	३
२७ "	"	४

शुक्र नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
३० नवं.	उ.षा.	१
३ दिसं.	"	२मकर
५ "	"	३
८ "	"	४
११ "	श्रवण	१
१४ "	"	२
१७ "	"	३
२० "	"	४
२३ "	"	धनि.१
२६ "	"	२
२९ "	"	३कुंभ
सन् २००१ ई.		
१ जनवरी	धनिष्ठा	४
४ "	शत.	१
७ "	"	२
१० "	"	३
१३ "	"	४
१६ "	पू.भा.	१
२० "	"	२
२३ "	"	३
२७ "	"	४मीन
३० "	उ.भा.	१
३ फरवरी	"	२
७ "	"	३
११ "	"	४
१६ "	रेवती	१
२२ "	"	२
३ मार्च	"	३
८ "	वक्री	
१४ "	"	रेवती२
२२ "	"	१

शनि नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१५ अप्रैल	भरणी	४
११ मई	कृत्ति.	१
६ जून	"	२वृष
६ जुलाई	"	३
२० अगस्त	"	४

शनि नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१२ सितं.	वक्री	
५ अक्टू.	कृत्ति.	३
२३ नवं.	"	२
सन् २००१ ई.		
२४ जनवरी	मार्गी	
२६ मार्च	कृति.	३

राहु नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२८ मई	पुन.	४
३० जुलाई	"	३मिथु.
१ अक्टू.	"	२
३ दिसंबर	"	१
सन् २००१ ई.		
४ फरवरी	आर्द्रा	४

केतु नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२८ मई	उ.षा.	२
३० जुलाई	"	१धनु
१ अक्टू.	पू.षा.	४
३ दिसं.	"	३
सन् २००१ ई.		
४ फर.	पू.षा.	२

हर्षल नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२८ अप्रैल	धनिष्ठा	२
२५ मई	वक्री	
२१ जून	धनिष्ठा	१
२९ सितं.	श्रवण	४
२६ अक्टू.	मार्गी	
२२ नवं.	धनि	१
सन् २००१ ई.		
४ फरवरी	धनि.	२

नेपच्यून नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
८ मई	वक्री	
२९ सितं.	उ.षा.	४
१५ अक्टू.	मार्गी	
३१ "	श्रवण	१
२० फरवरी	श्रवण	२

प्लूटो नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१३ जुलाई	अनु.	४
२१ अगस्त	मार्गी	
२६ सितं.	ज्येष्ठा	१
सन् २००१ ई.		
३ जनवरी	ज्येष्ठा	२
१८ मार्च	वक्री	

भौम उदायास्त

१ मई	अस्त	पश्चिम
२५ अगस्त	उदय	पूर्व

बुधोदयास्त

२७ अप्रैल	अस्त	पूर्व
२० मई	उदय	पश्चिम
२७ जून	अस्त	पश्चिम
१५ जुलाई	उदय	पूर्व
९ अगस्त	अस्त	पूर्व
५ सितं.	उदय	पश्चिम
२३ अक्टू.	अस्त.	पश्चिम
५ नवं.	उदय	पूर्व
१ दिसं.	अस्त	पूर्व
सन् २००१ ई.		
१५ जन.	उदय	पश्चिम
६ फर.	अस्त	पश्चिम
१९ फर.	उदय	पूर्व

गुरु उदयास्त

२८ अप्रैल	अस्त	पश्चिम
२४ मई	उदय	पूर्व

शुक्र उदयास्त

८ मई	अस्त	पूर्व
१६ जुलाई	उदय	पश्चिम

शनि उदयास्त

२३ अप्रैल	अस्त	पश्चिम
२८ मई	उदय	पूर्व

मंगल वक्री-मार्गी

ता. मास	नक्षत्र	पाद
वर्ष पर्यन्त मार्गी		

बुध वक्री-मार्गी

वर्षारंभ में बुध मार्गी

२३ जून	वक्री
१७ जुलाई	मार्गी
१८ अक्टू.	वक्री
८ नवं.	मार्गी
४ फरवरी २००१	वक्री
२५ फरवरी	मार्गी

गुरु वक्री-मार्गी

२९ सितं.	वक्री
२५ जनवरी २००१	मार्गी

शुक्र वक्री-मार्गी

वर्षारंभ में शुक्र मार्गी

९ मार्च २००१	वक्री

वर्षान्त में वक्री

शनि वक्री-मार्गी

वर्षा में शनि मार्गी

१२ सितं.	वक्री
२४ जन. २००१	मार्गी

हर्षल वक्री-मार्गी

वर्षारंभ में हर्षल मार्गी

२५ मई	वक्री
२६ अक्टू.	मार्गी

नेपच्यून वक्री-मार्गी

वर्षारंभ में नेपच्यून मार्गी

८ मई	वक्री
१५ अक्टू.	मार्गी

प्लूटो वक्री-मार्गी

वर्षारंभ में प्लूटो वक्री

२१ अगस्त	मार्गी
१८ मार्च २००१ ई.	वक्री

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विक्रम संवत् २०५७ में बनने वाले सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि पुष्य, गुरु पुष्य व द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर आदि योगों का विवरण

प्रत्येक मास की अंग्रेजी तारीखों में बनने वाले भा.स्टैं. टाइम से शुभ योगों में किए गये सभी कार्य सफल होने की संभावना होती है।

सर्वार्थ सिद्धि योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
६ अप्रैल	६।११	से	६ अप्रै.	१३।१०	तक
८ "	९।५५	"	९ "	६।०८	"
१० "	६।०७	"	१० "	६।३८	"
१४ "	२५।२७	"	१५ "	६।०१	"
१६ "	६।००	"	१७ "	५।५९	"
२० "	२८।५८	"	२१ "	५।५५	"
२३ "	९।५३	"	२४ "	५।५२	"
३० "	२५।२२	"	१ मई	५।४६	"
२ मई	२४।००	"	३ "	५।४४	"
५ "	५।४२	"	५ "	१५।५०	"
१२ "	६।५२	"	१३ "	५।३७	"
१४ "	५।३६	"	१५ "	५।३६	"
१८ "	१२।०९	"	१९ "	५।३४	"
२१ "	५।३३	"	२१ "	२०।०६	"
२८ "	१०।२६	"	२९ "	५।३०	"
३० "	१०।०२	"	३१ "	५।२९	"
५ जून	१७।४१	"	६ जून	५।२८	"
६ "	१५।३६	"	७ "	५।२८	"
९ "	५।२८	"	९ "	१२।२५	"
११ "	५।२८	"	११ "	१३।१२	"
१४ "	१८।१४	"	१५ "	२०।४२	"
२५ "	५।३०	"	२५ "	१८।५७	"
२७ "	५।३१	"	२७ "	१८।१५	"
२८ "	१६।५१	"	२९ "	५।३१	"
२ जुला.	२७।४०	"	३ जुला.	२५।००	"
४ "	५।३३	"	४ "	२२।४०	"
१२ "	५।३७	"	१२ "	२६।३५	"
१६ "	११।४२	"	१७ "	५।३९	"
१७ जुला.	१४।४७	से	१८ जुला.	५।४०	तक
२३ "	२६।०७	"	२४ "	५।४३	"
२५ "	२५।२०	"	२७ "	५।४५	"
३० "	१४।२६	"	३१ "	११।४०	"
१ अग.	५।४८	"	१ अग.	९।०२	"
५ "	२७।३३	"	६ "	५।५०	"
९ "	५।५२	"	९ "	८।५३	"
१३ "	५।५४	"	१३ "	२१।०१	"
१४ "	५।५५	"	१४ "	२३।४७	"
२० "	७।४६	"	२१ "	५।५९	"
२२ "	७।४८	"	२४ "	६।००	"
२५ "	२६।२६	"	२६ "	६।०१	"
२७ "	६।०२	"	२७ "	२१।५२	"
२ सितं.	१२।२३	"	३ सितं.	६।०५	"
४ "	१४।१४	"	५ "	६।०६	"
९ "	२८।०२	"	१० "	६।०९	"
११ "	६।०९	"	११ "	६।४७	"
११ "	१३।०४	"	१६ "	६।१२	"
१७ "	६।१२	"	१७ "	१३।३०	"
१९ "	६।१३	"	१९ "	१२।३७	"
२० "	६।१४	"	२१ "	६।१४	"
२२ "	९।१९	"	२३ "	६।१५	"
२७ "	२३।२५	"	२८ "	६।१८	"
३० "	६।१९	"	३० "	२२।०६	"
२ अक्टू.	६।२०	"	२ अक्टू.	२४।३७	"
७ "	११।५३	"	८ "	६।२३	"
१२ "	२०।४०	"	१४ "	६।२७	"
१६ "	१८।२७	"	१७ "	६।२६	"
१८ "	६।२९	"	१८ "	१६।०१	"
१९ "	१४।४२	"	२० "	१३।२४	"
२५ "	७।४२	"	२६ "	६।३४	"
२८ "	६।३६	"	२८ "	७।०५	"
३० "	६।३७	"	३० "	९।१८	"
३ नवं.	२०।००	"	४ नवं.	२३।०६	"
७ "	२९।१७	"	८ "	६।४४	"
९ "	६।४४	"	१० "	२९।१२	"
१३ नवं.	६।४७	से	१४ नवं.	६।४८	तक
१६ "	६।५०	"	१७ "	६।५१	"
२२ "	६।५४	"	२२ "	१३।४८	"
१ दिसं.	७।०२	"	१ दिसं.	३०।५७	"
५ "	१४।२७	"	६ "	७।०५	"
७ "	७।०६	"	८ "	१५।३५	"
११ "	७।०९	"	१२ "	७।१०	"
१४ "	७।११	"	१४ "	२४।४७	"
१७ "	१९।५८	"	१८ "	७।१३	"
२४ "	२६।१०	"	२५ "	७।१७	"
२९ "	७।१८	"	२९ "	१३।३५	"
२ जन.	७।१९	"	२ जन.	२४।०४	"
४ "	७।२०	"	४ "	२५।२७	"
६ "	२३।४६	"	७ "	७।२०	"
८ "	७।२०	"	८ "	१९।३०	"
११ "	७।२०	"	११ "	१०।५०	"
१२ "	२९।३६	"	१३ "	७।२०	"
१४ "	७।२०	"	१५ "	७।२०	"
१८ "	२७।४१	"	१९ "	७।२०	"
२१ "	८।०८	"	२२ "	७।१९	"
२८ "	२८।३३	"	२९ "	७।१६	"
१ फर.	७।१५	"	१ फर.	९।१५	"
३ "	९।११	"	४ "	७।१३	"
९ "	१६।२९	"	१० "	७।०९	"
११ "	७।०८	"	१२ "	७।०७	"
१५ "	१०।१२	"	१६ "	७।०४	"
१८ "	७।०३	"	१८ "	१६।५९	"
२५ "	१०।२०	"	२६ "	६।५५	"
२७ "	१३।५६	"	२८ "	६।५३	"
३ मार्च	६।५०	"	३ मार्च	१५।४४	"
९ "	६।४३	"	९ "	२५।०१	"
११ "	६।४१	"	११ "	२०।३३	"
१४ "	१८।३७	"	१५ "	१९।३६	"
१८ "	२६।४८	"	१९ "	६।३२	"
१९ "	२९।५८	"	२० "	६।३१	"
२५ "	६।२५	"	२५ "	१८।३१	"

अमृत सिद्धि योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
८ अप्रैल	९।५५	से	९ अप्रैल	६।०८	तक
१० "	६।०७	"	१० "	६।३८	"
१६ "	२५।०३	"	१७ "	५।५९	"
२ मई	२४।००	"	३ मई	५।४४	"
६ "	५।४२	"	६ "	१५।५०	"
१४ "	७।००	"	१५ "	५।३६	"
३० "	१०।०२	"	३१ "	५।२९	"
११ जून	५।२८	"	११ जून	१३।१२	"
१४ "	१८।१४	"	१५ "	५।२८	"
२७ "	५।३१	"	२७ "	१८।१५	"
१२ जुला.	५।३७	"	१२ जुला.	२६।३५	"
९ अग.	५।५२	"	९ अग.	८।५३	"
१५ सितं.	१३।०४	"	१६ सितं.	६।१२	"
१३ अक्टू.	६।२६	"	१३ अक्टू.	२०।४२	"
१३ नवं.	२४।३५	"	१४ नवं.	६।४८	"
१६ "	१९।०७	"	१७ "	६।५१	"
११ दिसं.	१०।३५	"	१२ दिसं.	७।१०	"
१४ "	७।११	"	१४ "	२४।४७	"
६ जन.	२३।४६	"	७ जन.	७।२०	"
८ "	७।२०	"	८ "	१९।३०	"
११ "	७।२०	"	११ "	१०।५०	"
१४ "	२६।१२	"	१५ "	७।२०	"
३ फर.	९।११	"	४ फर.	७।१३	"
११ "	११।३९	"	१२ "	७।०७	"
२७ "	१३।५६	"	२८ "	६।५३	"
३ मार्च	६।५०	"	३ मार्च	१५।४४	"
११ "	६।४१	"	११ "	२०।३३	"
१४ "	१८।३७	"	१५ "	६।३७	"

रवि पुष्य-गुरु पुष्य योग

ये योग केवल विवाह को छोड़कर अन्य सभी कार्यों में सिद्धिदायक होते हैं। रविपुष्य योग यंत्र, तंत्र, मंत्रों में सिद्धिदायक तथा रत्न धारण व जड़ी-बूटी ग्रहण करने में श्रेयष्कर होते हैं। गुरुपुष्य योग व्यापारिक कार्यों में अधिक फलीभूत होते हैं।

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
२ जुला.	२७।४०	से	३ जुला.	५।३३	तक
३० "	१४।२६	"	३१ "	५।४७	"
२७ अग.	६।०२	"	२७ अग.	२१।५२	"
१६ नवं.	१९।०७	"	१७ नवं.	६।५१	"
१४ दिसं.	७।११	"	१४ दिसं.	२४।४७	"
११ जन.	७।२०	"	११ जन.	१०।५०	"

द्विपुष्कर-त्रिपुष्कर योग

तिथि, वार एवं नक्षत्र आदि के संयोग से बनने वाले द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योग अपने नामानुसार द्विगुणित तथा त्रिगुणित फल प्रत्येक काम में दिया करते हैं। व्यापार में लगाया या बैंक आदि में जमा किया धन उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होता है।

त्रिपुष्कर योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
११ अप्रै.	६।०६	से	११ अप्रै.	८।००	तक
२५ "	१५।५८	"	२६ "	५।५०	"
३० "	१६।४०	"	३० "	२५।२२	"
१३ जून	१६।०५	"	१३ जून	२२।०९	"
२४ "	५।३०	"	२४ "	१८।०८	"
२ जुला.	२१।०५	"	२ जुला.	२७।४०	"
२२ अग.	७।४८	"	२२ अग.	१३।०४	"
२६ "	६।०१	"	२६ "	२४।१४	"
९ सितं.	१८।३१	"	९ सितं.	२८।०२	"
२४ अक्टू.	८।३७	"	२४ अक्टू.	१६।५७	"
२८ "	१३।१२	"	२९ "	७।५२	"
१२ नवं.	२४।२९	"	१२ नवं.	२६।२४	"
१२ दिसं.	२९।३७	"	१३ दिसं.	७।१०	"
६ जन.	१३।५८	"	६ जन.	२३।४६	"
२४ फर.	१५।५६	"	२५ फर.	१०।२०	"
१० मार्च	१९।४०	"	१० मार्च	२२।३४	"

द्विपुष्कर योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
३ जून	१४।०८	से	३ जून	२२।५०	तक
१८ जुला.	१७।४०	"	१८ जुला.	२४।०५	"
५ अग.	१८।०४	"	५ अग.	२७।३३	"
२ दिसं.	१८।०१	"	३ दिसं.	९।५६	"
४ फर.	२६।२५	"	४ फर.	३०।२३	"

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

साढ़े पांच बजे (प्रात: ५ बजकर ३० मिनट) के अतिरिक्त अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

नीचे दी गई सारणी द्वारा यदि आपको भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम साढ़े पांच बजे के ग्रह स्पष्टों के अलावा किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों तो आप नीचे लिखी सारणी द्वारा समुचित संस्कार करके अभिष्ट समय के ग्रह स्पष्ट कर सकते हैं। आपने **१५ अगस्त १९९६ शाम ८ बजकर ४५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करना है।** इसके लिए १६ अगस्त प्रात: ५-३० बजे के सूर्य स्पष्ट में से ८-४५ घंटे की गति घटायेंगे। १६ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२९-३५-४५) में से १५ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२८-३८-०४) घटा देने से २४ घंटे की गति पता चलेगी जोकि ५७।४१ कलादि प्राप्त हुई। सारणी में देखने से हमें ५७ कला के सामने ८ घंटे के नीचे हमें १९.०० मिले। इसमें ४५ मिनट की गति १।४७ कलादि जमा कर देने से हमें २०।४७ कलादि योग प्राप्त हुआ। अब ४१ विकला (५४।४१) के संस्कार समीपस्थ ४१ कला के (८।४५ घंटे) संस्कार १५ विकला जमा कर देने से हमें २१।०२ कलादि ८ घण्टे ४५ मिनट की गति प्राप्त हुई इसको १६ अगस्त साढ़े पांच के सूर्य स्पष्ट (३।२९।३५।४५) में से घटा देने से शाम ८ बजकर ४५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ३/२९/१४/४३ राशि अंश आदि प्राप्त हुआ। इस प्रकार किसी भी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट निकाले जा सकते हैं। **मार्गी ग्रहों के किसी अन्य समय के स्पष्ट करने के लिए अगले दिन के ग्रह स्पष्ट में घटाने से प्राप्त होता है। वक्री ग्रह के लिए घटाने के स्थान पर जोड़ने से स्पष्ट होता है।**

५.३० बजे के ग्रह स्पष्ट में किसी दो दिनों के बीच के किसी भी समय का गृह स्पष्ट करना बहुत सरल है। इसके लिए आप बिना सारणी को उपयोग में लाए, नीचे दिए गए उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। मार्गी और वक्री ग्रहों के स्पष्ट करने की क्रिया प्रथक-प्रथक नीचे के उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगी। मान लीजिये **१५ अगस्त सन् १९९६ को शाम के ८ बजकर ४५ मिनट** के ग्रह स्पष्ट करने हैं।

मार्गी ग्रहों के लिए: सूर्य: १५ अग. के प्रात: ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२८।३८।४ है और अगले दिन १६ अगस्त के प्रात: ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२९।३५।४५ है। मार्गी ग्रहों के लिए अगले दिन के ग्रहस्पष्ट में से पहले दिन के ग्रह स्पष्ट घटाये जाते हैं - यहां १६ तारीख के सूर्य स्पष्ट में से १५ तारीख का सूर्य स्पष्ट घटायें:-

	रा.	अं.	क.	वि.
१६ ता. को सूर्य स्पष्ट	३	२९	३५	४५
१५ ता. के सूर्य स्पष्ट घटाएं (-)	३	२८	३८	०४
	०	०	५७	४१

अत: ५७' कला ४१'' विकला सूर्य की दैनिक गति हुई। ५७'-४१'' के विकला बनाये: ५७x६०+४१= ३४६१ विकला। सूर्य की यह गति १५ ता. के ५-३० बजे से १६ ता. के ५-३० बजे तक २४ घंटे (१४४० मि.) की है। अब अपने इष्ट समय ८ बजकर ४५ मिनट में से ५-३० बजे को घटाया तो समयान्त राल १५ घंटे १५ मिनट (९१५ मिनट) आया। अब त्रैराशिक से गणना की - १४४० मि. में सूर्य की गति ३४६१ विकला है। ९१५ मि. में सूर्य की गति= ३४६१×९१५ ÷ १४४० = २१९९ विकला = २१९९÷६० कला = ३६ कला ३९ विकला ३६'३९'' इसको १५ अग. के सूर्योदय में जोड़ दें। (३-२८-३८-४)+(३६-३९)=३-२९-१४-४३ अत: १५ अगस्त की **शाम ८ बजकर १५ मिनट का सूर्य स्पष्ट** ३-२९-१४-४३ बना। इसी प्रकार अन्य सभी मार्गी ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।

वक्री ग्रहों के लिए:- शनि वक्री अत: उलटी क्रिया करनी होगी अर्थात् १५ अगस्त के शनिस्पष्ट में १६ अगस्त के शनि स्पष्ट घटाने होंगे:- **१५ अगस्त** के शनि स्पष्ट ११-१२-५८-२२ में से **१६ अगस्त** के शनि स्पष्ट ११-१२-५५-३४ को घटायें = २-४८ यह शनि की दैनिक वक्र गति हुई। २ क. ४८ वि. = १६८ विकला अत: क्रिया पूर्ववत १६८×९१५÷१४४० = १०७ वि.=१ क. ४७ वि.। १'४७'' को १५ अगस्त के शनि-स्पष्ट में से घटाया (११-१२-५८-२२) - (१-४७)=११-१२-५६-३५ अत: **१५ अगस्त को ८ बजकर ४५ मि. पर वक्री शनि स्पष्ट ११-१२-५६-३५** आया।

यदि ग्रह स्पष्ट सूर्योदय कालीन दिये हों तो ५-३० बजे के बजाय सूर्योदय काल लेकर ग्रह स्पष्ट इसी प्रकार किये जा सकते हैं। **इस प्रकार अन्य सभी ग्रहों के किसी भी समय के ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।**

कृपया पाठक इन (❖ को १/४) (★ को १/२) (● को ३/४) पढ़ें।

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९ घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
१	०।०१ ❖	०।०२ ★	०।०५	०।०७ ★	०।१०	०।१२ ★	०।१५	०।१७ ★	०।२०	०।२२ ★	०।२५	०।२७ ★	०।३०
२	०।०२ ★	०।०५	०।१०	०।१५	०।२०	०।२५	०।३०	०।३५	०।४०	०।४५	०।५०	०।५५	१।००
३	०।०३ ●	०।०७ ★	०।१५	०।२२ ★	०।३०	०।३७ ★	०।४५	०।५२ ★	१।००	१।०७ ★	१।१५	१।२२ ★	१।३०
४	०।०५	०।१०	०।२०	०।३०	०।४०	०।५०	१।००	१।१०	१।२०	१।३०	१।४०	१।५०	२।००
५	०।०६ ❖	०।१२ ★	०।२५	०।३७ ★	०।५०	१।०२ ★	१।१५	१।२७ ★	१।४०	१।५२ ★	२।०५	२।१७ ★	२।३०
६	०।०७ ★	०।१५	०।३०	०।४५	१।००	१।१५	१।३०	१।४५	२।००	२।१५	२।३०	२।४५	३।००
७	०।०८ ●	०।१७ ★	०।३५	०।५२ ★	१।१०	१।२७ ★	१।४५	२।०२ ★	२।२०	२।३७ ★	२।५५	३।१२ ★	३।३०
८	०।१०	०।२०	०।४०	१।००	१।२०	१।४०	२।००	२।२०	२।४०	३।००	३।२०	३।४०	४।००
९	०।११ ❖	०।२२ ★	०।४५	१।०७ ★	१।३०	१।५२ ★	२।१५	२।३७ ★	३।००	३।२२ ★	३।४५	४।०७ ★	४।३०
१०	०।१२ ★	०।२५	०।५०	१।१५	१।४०	२।०५	२।३०	२।५५	३।२०	३।४५	४।१०	४।३५	५।००
११	०।१३ ●	०।२७ ★	०।५५	१।२२ ★	१।५०	२।१७ ★	२।४५	३।१२ ★	३।४०	४।०७ ★	४।३५	५।०२ ★	५।३०
१२	०।१५	०।३०	१।००	१।३०	२।००	२।३०	३।००	३।३०	४।००	४।३०	५।००	५।३०	६।००
१३	०।१६ ❖	०।३२ ★	१।०५	१।३७ ★	२।१०	२।४२ ★	३।१५	३।४७ ★	४।२०	४।५२ ★	५।२५	५।५७ ★	६।३०
१४	०।१७ ★	०।३५	१।१०	१।४५	२।२०	२।५५	३।३०	४।०५	४।४०	५।१५	५।५०	६।२५	७।००
१५	०।१८ ●	०।३७ ★	१।१५	१।५२ ★	२।३०	३।०७ ★	३।४५	४।२२ ★	५।००	५।३७ ★	६।१५	६।५२ ★	७।३०
१६	०।२०	०।४०	१।२०	२।००	२।४०	३।२०	४।००	४।४०	५।२०	६।००	६।४०	७।२०	८।००
१७	०।२१ ❖	०।४२ ★	१।२५	२।०७ ★	२।५०	३।३२ ★	४।१५	४।५७ ★	५।४०	६।२२ ★	७।०५	७।४७ ★	८।३०
१८	०।२२ ★	०।४५	१।३०	२।१५	३।००	३।४५	४।३०	५।१५	६।००	६।४५	७।३०	८।१५	९।००
१९	०।२३ ●	०।४७ ★	१।३५	२।२२ ★	३।१०	३।५७ ★	४।४५	५।३२ ★	६।२०	७।०७ ★	७।५५	८।४२ ★	९।३०
२०	०।२५	०।५०	१।४०	२।३०	३।२०	४।१०	५।००	५।५०	६।४०	७।३०	८।२०	९।१०	१०।००
२१	०।२६ ❖	०।५२ ★	१।४५	२।३७ ★	३।३०	४।२२ ★	५।१५	६।०७ ★	७।००	७।५२ ★	८।४५	९।३७ ★	१०।३०
२२	०।२७ ★	०।५५	१।५०	२।४५	३।४०	४।३५	५।३०	६।२५	७।२०	८।१५	९।१०	१०।०५	११।००
२३	०।२८ ●	०।५७ ★	१।५५	२।५२ ★	३।५०	४।४७ ★	५।४५	६।४२ ★	७।४०	८।३७ ★	९।३५	१०।३२ ★	११।३०
२४	०।३०	१।००	२।००	३।००	४।००	५।००	६।००	७।००	८।००	९।००	१०।००	११।००	१२।००
२५	०।३१ ❖	१।०२ ★	२।०५	३।०७ ★	४।१०	५।१२ ★	६।१५	७।१७ ★	८।२०	९।२२ ★	१०।२५	११।२७ ★	१२।३०
२६	०।३२ ★	१।०५	२।१०	३।१५	४।२०	५।२५	६।३०	७।३५	८।४०	९।४५	१०।५०	११।५५	१३।००
२७	०।३३ ●	१।०७ ★	२।१५	३।२२ ★	४।३०	५।३७ ★	६।४५	७।५२ ★	९।००	१०।०७ ★	११।१५	१२।२२ ★	१३।३०
२८	०।३५	१।१०	२।२०	३।३०	४।४०	५।५०	७।००	८।१०	९।२०	१०।३०	११।४०	१२।५०	१४।००
२९	०।३६ ❖	१।१२ ★	२।२५	३।३७ ★	४।५०	६।०२ ★	७।१५	८।२७ ★	९।४०	१०।५२ ★	१२।०५	१३।१७ ★	१४।३०
३०	०।३७ ★	१।१५	२।३०	३।४५	५।००	६।१५	७।३०	८।४५	१०।००	११।१५	१२।३०	१३।४५	१५।००

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
३१	०।३८ ●	१।१७ ★	२।३५	३।५२ ★	५।१०	६।२७ ★	७।४५	९।०२ ★	१०।२०	११।३७ ★	१२।५५	१४।१२ ★	१५।३०
३२	०।४०	१।२०	२।४०	४।००	५।२०	६।४०	८।००	९।२०	१०।४०	१२।००	१३।२०	१४।४०	१६।००
३३	०।४१ ❖	१।२२ ★	२।४५	४।०७ ★	५।३०	६।५२ ★	८।१५	९।३७ ★	११।००	१२।२२ ★	१३।४५	१५।०७ ★	१६।३०
३४	०।४२ ★	१।२५	२।५०	४।१५	५।४०	७।०५	८।३०	९।५५	११।२०	१२।४५	१४।१०	१५।३५	१७।००
३५	०।४३ ●	१।२७ ★	२।५५	४।२२ ★	५।५०	७।१७ ★	८।४५	१०।१२ ★	११।४०	१३।०७ ★	१४।३५	१६।०२ ★	१७।३०
३६	०।४५	१।३०	३।००	४।३०	६।००	७।३०	९।००	१०।३०	१२।००	१३।३०	१५।००	१६।३०	१८।००
३७	०।४६ ❖	१।३२ ★	३।०५	४।३७ ★	६।१०	७।४२ ★	९।१५	१०।४७ ★	१२।२०	१३।५२ ★	१५।२५	१६।५७ ★	१८।३०
३८	०।४७ ★	१।३५	३।१०	४।४५	६।२०	७।५५	९।३०	११।०५	१२।४०	१४।१५	१५।५०	१७।२५	१९।००
३९	०।४८ ●	१।३७ ★	३।१५	४।५२ ★	६।३०	८।०७ ★	९।४५	११।२२ ★	१३।००	१४।३७ ★	१६।१५	१७।५२ ★	१९।३०
४०	०।५०	१।४०	३।२०	५।००	६।४०	८।२०	१०।००	११।४०	१३।२०	१५।००	१६।४०	१८।२०	२०।००
४१	०।५१ ❖	१।४२ ★	३।२५	५।०७ ★	६।५०	८।३२ ★	१०।१५	११।५७ ★	१३।४०	१५।२२ ★	१७।०५	१८।४७ ★	२०।३०
४२	०।५२ ★	१।४५	३।३०	५।१५	७।००	८।४५	१०।३०	१२।१५	१४।००	१५।४५	१७।३०	१९।१५	२१।००
४३	०।५३ ●	१।४७ ★	३।३५	५।२२ ★	७।१०	८।५७ ★	१०।४५	१२।३२ ★	१४।२०	१६।०७ ★	१७।५५	१९।४२ ★	२१।३०
४४	०।५५	१।५०	३।४०	५।३०	७।२०	९।१०	११।००	१२।५०	१४।४०	१६।३०	१८।२०	२०।१०	२२।००
४५	०।५६ ❖	१।५२ ★	३।४५	५।३७ ★	७।३०	९।२२ ★	११।१५	१३।०७ ★	१५।००	१६।५२ ★	१८।४५	२०।३७ ★	२२।३०
४६	०।५७ ★	१।५५	३।५०	५।४५	७।४०	९।३५	११।३०	१३।२५	१५।२०	१७।१५	१९।१०	२१।०५	२३।००
४७	०।५८ ●	१।५७ ★	३।५५	५।५२ ★	७।५०	९।४७ ★	११।४५	१३।४२ ★	१५।४०	१७।३७ ★	१९।३५	२१।३२ ★	२३।३०
४८	१।००	२।००	४।००	६।००	८।००	१०।००	१२।००	१४।००	१६।००	१८।००	२०।००	२२।००	२४।००
४९	१।०१ ❖	२।०२ ★	४।०५	६।०७ ★	८।१०	१०।१२ ★	१२।१५	१४।१७ ★	१६।२०	१८।२२ ★	२०।२५	२२।२७ ★	२४।३०
५०	१।०२ ★	२।०५	४।१०	६।१५	८।२०	१०।२५	१२।३०	१४।३५	१६।४०	१८।४५	२०।५०	२२।५५	२५।००
५१	१।०३ ●	२।०७ ★	४।१५	६।२२ ★	८।३०	१०।३७ ★	१२।४५	१४।५२ ★	१७।००	१९।०७ ★	२१।१५	२३।२२ ★	२५।३०
५२	१।०५	२।१०	४।२०	६।३०	८।४०	१०।५०	१३।००	१५।१०	१७।२०	१९।३०	२१।४०	२३।५०	२६।००
५३	१।०६ ❖	२।१२ ★	४।२५	६।३७ ★	८।५०	११।०२ ★	१३।१५	१५।२७ ★	१७।४०	१९।५२ ★	२२।०५	२४।१७ ★	२६।३०
५४	१।०७ ★	२।१५	४।३०	६।४५	९।००	११।१५	१३।३०	१५।४५	१८।००	२०।१५	२२।३०	२४।४५	२७।००
५५	१।०८ ●	२।१७ ★	४।३५	६।५२ ★	९।१०	११।२७ ★	१३।४५	१६।०२ ★	१८।२०	२०।३७ ★	२२।५५	२५।१२ ★	२७।३०
५६	१।१०	२।२०	४।४०	७।००	९।२०	११।४०	१४।००	१६।२०	१८।४०	२१।००	२३।२०	२५।४०	२८।००
५७	१।११ ❖	२।२२ ★	४।४५	७।०७ ★	९।३०	११।५२ ★	१४।१५	१६।३७ ★	१९।००	२१।२२ ★	२३।४५	२६।०७ ★	२८।३०
५८	१।१२ ★	२।२५	४।५०	७।१५	९।४०	१२।०५	१४।३०	१६।५५	१९।२०	२१।४५	२४।१०	२६।३५	२९।००
५९	१।१३ ●	२।२७ ★	४।५५	७।२२ ★	९।५०	१२।१७ ★	१४।४५	१७।१२ ★	१९।४०	२२।०७ ★	२४।३५	२७।०२ ★	२९।३०
६०	१।१५	२।३०	५।००	७।३०	१०।००	१२।३०	१५।००	१७।३०	२०।००	२२।३०	२५।००	२७।३०	३०।००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक ग्रह-स्पष्ट

इस पंचांग में नीचे यहाँ सभी ग्रहों के राशि, अंश, कला, विकला सूक्ष्म गणितागत दिये गये हैं। प्रत्येक तारीख के सामने उस दिन के प्रातः ५।३० बजे के भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम की ग्रह स्थिति विकला पर्यन्त अंकित है। यह ग्रह स्थिति समस्त भूमण्डल पर सभी स्थानों के लिए स्वीकार्य है। केवल अन्य देशों के लिए उचित समय का संस्कार कर लें। जैसे-इटली के स्टैं. टा. का भारतीय स्टैं. टा. से अन्तर - ४ घं. ३० मि. है। अतः ये ग्रह स्पष्ट इटली के स्टैं. टा. के अनुसार रात्रि १ घं. ०० मि. के हैं। किसी भी समय के तात्कालिक ग्रह स्पष्ट जानने के लिए समय के अन्तर के घटी पल बनाकर उस दिन की ग्रह गति के साथ त्रैराशिक विधि से गुणा करने पर प्राप्त लब्धि को मार्गी ग्रह में जोड़ने से एवं वक्री ग्रह में घटाने से उस दिन के अभीष्ट समय की ग्रह स्थिति प्राप्त होगी। ग्रहों की गति जानने के लिए अभीष्ट दिन के ग्रहों को अगले दिन के स्पष्ट ग्रहों में से घटाने से जो शेष रहे वह गति होगी।

अप्रैल सन् २०० ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५१' ।२३"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
अप्रैल	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अप्रैल
५	११ २१ ३९ १७	११ २४ ४५ ३५	० १५ ३५ २८	१० २४ ५७ ४२	० १६ १३ ३२	११ ०३ ५७ ०३	० २२ ०६ २४	३ ०६ १० ५५	९ २५ ५७ ३३	९ १२ २४ ४९	७ १८ ५५ ४२	५
६	११ २२ ३८ २१	०० ०८ ४७ ३३	० १६ १८ ५६	१० २६ १४ ४७	० १६ २७ १४	११ ०५ ११ ०७	० २२ १३ २६	३ ०६ ०७ ४४	९ २५ ५९ ५०	९ १२ २५ ५३	७ १८ ५५ ०१	६
७	११ २३ ३७ २४	०० २३ ०१ ०८	० १७ ०२ २३	१० २७ ३३ ४८	० १६ ४० ५८	११ ०६ २५ ०९	० २२ २० ३०	३ ०६ ०४ ३३	९ २६ ०२ ०५	९ १२ २६ ५६	७ १८ ५४ १८	७
८	११ २४ ३६ २४	०१ ०७ २० ४८	० १७ ४५ ४५	१० २८ ५४ ४६	० १६ ५४ ३५	११ ०७ ३९ १२	० २२ २७ ३६	३ ०६ ०१ २२	९ २६ ०४ १८	९ १२ २७ ५६	७ १८ ५३ ३४	८
९	११ २५ ३५ २१	०१ २१ ४१ २०	० १८ २९ ०५	११ ०० १७ ४०	० १७ ०८ ३३	११ ०८ ५३ १४	० २२ ३४ ४५	३ ०५ ५८ १२	९ २६ ०६ २७	९ १२ २८ ५४	७ १८ ५२ ४७	९
१०	११ २६ ३४ १८	०२ ०५ ५८ ३७	० १९ १२ २३	११ ०१ ४२ २५	० १७ २२ २३	११ १० ०७ १६	० २२ ४१ ५७	३ ०५ ५५ ०१	९ २६ ०८ ३६	९ १२ २९ ५१	७ १८ ५१ ५९	१०
११	११ २७ ३३ ११	०२ २० ०९ ५५	० १९ ५५ ३७	११ ०३.०८ ५९	० १७ ३६ १७	११ ११ २१ १७	० २२ ४९ १२	३ ०५ ५१ ५०	९ २६ १० ४१	९ १२ ३० ४६	७ १८ ५१ १०	११
१२	११ २८ ३२ ०२	०३ ०४ १३ ४८	० २० ३८ ४८	११ ०४ ३७ १९	० १७ ५० ११	११ १२ ३५ १७	० २२ ५६ २९	३ ०५ ४८ ३९	९ २६ १२ ४४	९ १२ ३१ ३८	७ १८ ५० १८	१२
१३	११ २९ ३० ५१	०३ १८ ०९ ४३	० २१ २१ ५७	११ ०६ ०७ २०	० १८ ०४ ०८	११ १३ ४९ १८	० २३ ०३ ४९	३ ०५ ४५ २९	९ २६ १४ ४४	९ १२ ३२ २८	७ १८ ४९ २५	१३
१४	०० ०० २९ ३९	०४ ०१ ५७ २९	० २२ ०५ ०२	११ ०७ ३९ ०२	० १८ १८ ०५	११ १५ ०३ १७	० २३ ११ १०	३ ०५ ४२ १८	९ २६ १६ ४३	९ १२ ३३ १७	७ १८ ४८ ३१	१४
१५	०० ०१ २८ २५	०४ १५ ३६ ४८	० २२ ४८ ०५	११ ०९ १३ २०	० १८ ३२ ०५	११ १६ १७ १६	० २३ १८ ३१	३ ०५ ३९ ०७	९ २६ १८ ३८	९ १२ ३४ ०४	७ १८ ४७ ३४	१५
१६	०० ०२ २७ ०८	०४ २९ ०६ ५७	० २३ ३१ ०५	११ १० ४७ १६	० १८ ४६ ०६	११ १७ ३१ १५	० २३ २५ ५३	३ ०५ ३५ ५६	९ २६ २० ३१	९ १२ ३४ ४८	७ १८ ४६ ३७	१६
१७	०० ०३ २५ ४९	०५ १२ २६ ४५	० २४ १४ ०३	११ १२ २३ ५३	० १९ ०० १०	११ १८ ४५ १४	० २३ ३३ १७	३ ०५ ३२ ४६	९ २६ २२ २२	९ १२ ३५ ३१	७ १८ ४५ ३७	१७
१८	०० ०४ २४ २८	०५ २५ ०४ ४१	० २४ ५६ ५७	११ १४ ०२ १०	० १९ १४ १३	११ १९ ५९ १२	० २३ ४० ४१	३ ०५ २९ ३५	९ २६ २४ ११	९ १२ ३६ १२	७ १८ ४४ ३६	१८
१९	०० ०५ २३ ०६	०६ ०८ २९ २०	० २५ ३९ ३८	११ १५ ४२ ०२	० १९ २८ १९	११ २१ १३ ०९	० २३ ४८ ०८	३ ०५ २६ २४	९ २६ २५ ५६	९ १२ ३६ ५१	७ १८ ४३ ३३	१९
२०	०० ०६ २१ ४२	०६ २१ ०९ ४२	० २६ २२ ३६	११ १७ २३ २६	० १९ ४२ २५	११ २२ २७ ०६	० २३ ५५ ३७	३ ०५ २३ १३	९ २६ २७ ३८	९ १२ ३७ २८	७ १८ ४२ २९	२०
२१	०० ०७ २० १६	०७ ०३ ३५ ३९	० २७ ०५ २२	११ १९ ०६ २६	० १९ ५६ ३४	११ २३ ४१ ०२	० २४ ०३ ०९	३ ०५ २० ०३	९ २६ २९ १९	९ १२ ३८ ०३	७ १८ ४१ २४	२१
२२	०० ०८ १८ ४७	०७ १५ ४८ ०४	० २७ ४८ ०५	११ २०.२१ ०१	० २० १० ४२	११ २४ ५४ ५८	० २४ १० ४२	३ ०५ १६.५२	९ २६ ३० ५६	९ १२ ३८ ३६	७ १८ ४० १७	२२
२३	०० ०९ १७ १७	०७ २७ ४९ ००	० २८ ३० ४५	११ २२ ३७ १२	० २० २४ ५३	११ २६ ०८ ५३	० २४ १८ १६	३ ०५ १३ ४१	९ २६ ३२ ३१	९ १२ ३९ ०७	७ १८ ३९ ०९	२३
२४	०० १० १५ ४५	०८ ०९ ४१ ३८	० २९ १३ २२	११ २४ २५ ०४	० २० ३९ ०४	११ २७ २२ ४९	० २४ २५ ५२	३ ०५ १० ३०	९ २६ ३४ ०३	९ १२ ३९ ३६	७ १८ ३७ ५९	२४
२५	०० ११ १४ ११	०८ २१ ३० ०२	० २९ ५५ ५७	११ २६ १४ ३३	० २० ५३ १७	११ २८ ३६ ४३	० २४ ३३ २९	३ ०५ ०७ २०	९ २६ ३५ ३३	९ १२ ४० ०४	७ १८ ३६ ४८	२५
२६	०० १२ १२ ३५	०९ ०३ १५ ०५	१ ०० ३८ २७	११ २८ ०५ ४९	० २१ ०७ ३०	११ २९ ५० ३८	० २४ ४१ ०७	३ ०५ ०४ ०९	९ २६ ३६ ५९	९ १२ ४० २९	७ १८ ३५ ३६	२६
२७	०० १३ १० ५८	०९ १५ १४ ०४	१ ०१ २० ५६	११ २९ ५८ ५३	० २१ २१ ४४	० ०१ ०४ ३१	० २४ ४८ ४७	३ ०५ ०० ५८	९ २६ ३८ २३	९ १२ ४० ५२	७ १८ ३४ २३	२७
२८	०० १४ ०९ १८	०९ २७ २० ३१	१ ०२ ०३ २२	० ०१ ५३ ४६	० २१ ३५ ५८	० ०२ १८ २५	० २४ ५६ २७	३ ०४ ५७ ४७	९ २६ ३९ ४५	९ १२ ४१ १३	७ १८ ३३ ०८	२८
२९	०० १५ ०७ ३६	१० ०९ ४३ ४३	१ ०२ ४५ ४४	० ०३ ५० ३०	० २१ ५० १४	० ०३ ३२ १८	० २५ ०४ ०७	३ ०४ ५४ ३७	९ २६ ४१ ०३	९ १२_४१ ३२	७ १८ ३१ ५२	२९
३०	०० १६ ०५ ५३	१० २२ २८ १८	१ ०३ २८ ०५	० ०५ ४८ ०४	० २२ ०४ २९	० ०४ ४६ १०	० २५ ११ ४७	३ ०४ ५१ २६	९ २६ ४२ १८	९ १२ ४१ ५०	७ १८ ३० ३५	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मई सन् २००० ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भ स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५१' ।२६"

ता.	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु				हर्शल				नेपच्यून				प्लूटो (वक्री)				ता.
मई	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	मई
१	०	१७	०४	०९	११	०५	३७	३६	१	०४	१०	२१	०	०७	४९	१०	०	२२	१८	४५	०	०६	००	०२	०	२५	१९	२८	३	०४	४८	१५	९	२६	४३	३१	९	१२	४२	०६	७	१८	२९	१७	१
२	०	१८	०२	२३	११	१९	१३	०३	१	०४	५२	३६	०	०९	५०	३९	०	२२	३३	०१	०	०७	१३	५४	०	२५	२७	०९	३	०४	४५	०५	९	२६	४४	४०	९	१२	४२	२०	७	१८	२७	५७	२
३	०	१९	००	३४	०	०३	१३	३७	१	०५	३४	४८	०	११	५३	४६	०	२२	४७	१८	०	०८	२७	४५	०	२५	३४	५०	३	०४	४१	५४	९	२६	४५	४६	९	१२	४२	३१	९	१८	२६	३६	३
४	०	१९	५८	४४	०	१७	३५	३५	१	०६	१६	५६	०	१३	५८	२३	०	२३	०१	३५	०	०९	४१	३६	०	२५	४२	३१	३	०४	३८	४४	९	२६	४६	५०	९	१२	४२	४०	७	१८	२५	१३	४
५	०	२०	५६	५२	१	०२	१२	५१	१	०६	५९	०२	०	१६	०४	२३	०	२३	१५	५२	०	१०	५५	२६	०	२५	५०	१३	३	०४	३५	३३	९	२६	४७	५०	९	१२	४२	४८	७	१८	२३	५०	५
६	०	२१	५४	५९	१	१६	५७	४७	१	०७	४१	०६	०	१८	११	३४	०	२३	३०	०८	०	१२	०९	१६	०	२५	५७	५५	३	०४	३२	२२	९	२६	४८	४८	९	१२	४२	५४	७	१८	२२	२५	६
७	०	२२	५३	०४	२	०१	४२	३३	१	०८	२३	०५	०	२०	१९	४७	०	२३	४४	२६	०	१३	२३	०६	०	२६	०५	३७	३	०४	२९	११	९	२६	४९	४३	९	१२	४२	५८	७	१८	२१	००	७
८	०	२३	५१	०८	२	१६	२०	२१	१	०९	०५	०३	०	२२	२८	४८	०	२३	५८	४३	०	१४	३६	५५	०	२६	१३	१९	३	०४	२६	०१	९	२६	५०	३५	९	१२	४२	५९व	७	१८	१९	३४	८
९	०	२४	४९	१०	३	००	४६	१५	१	०९	४६	५९	०	२४	३८	२५	०	२४	१३	००	०	१५	५०	४४	०	२६	२१	०१	३	०४	२२	५०	९	२६	५१	२४	९	१२	४२	५९	७	१८	१८	०६	९
१०	०	२५	४७	१०	३	१४	५७	२३	१	१०	२८	५०	०	२६	४८	३४	०	२४	२७	१७	०	१७	०४	३३	०	२६	२८	४३	३	०४	१९	३९	९	२६	५२	१०	९	१२	४२	५७	७	१८	१६	३८	१०
११	०	२६	४५	०८	३	२८	५२	४७	१	११	१०	४०	०	२८	५९	१२	०	२४	४१	३३	०	१८	१८	२१	०	२६	३६	२५	३	०४	१६	२८	९	२६	५२	५३	९	१२	४२	५३	७	१८	१५	१०	११
१२	०	२७	४३	०५	४	१२	३२	४०	१	११	५२	२७	१	०१	०९	५६	०	२४	५५	४९	०	१९	३२	०९	०	२६	४४	०७	३	०४	१३	१८	९	२६	५३	३३	९	१२	४२	४८	७	१८	१३	४०	१२
१३	०	२८	४१	०१	४	२५	५७	५९	१	१२	३४	१०	१	०३	२०	२०	०	२५	१०	०५	०	२०	४५	५७	०	२६	५१	४९	३	०४	१०	०७	९	२६	५४	१०	९	१२	४२	३९	७	१८	१२	१०	१३
१४	०	२९	३८	५५	५	०९	०९	४५	१	१३	१५	५२	१	०५	३०	११	०	२५	२४	२१	०	२१	५९	४४	०	२६	५९	३१	३	०४	०६	५६	९	२६	५४	४५	९	१२	४२	२९	७	१८	१०	३८	१४
१५	१	००	३६	४७	५	२२	०८	५३	१	१३	५७	३०	१	०७	३९	१४	०	२५	३८	३६	०	२३	१३	३१	०	२७	०७	१२	३	०४	०३	४५	९	२६	५५	१६	९	१२	४२	१७	७	१८	०९	०७	१५
१६	१	०१	३४	३८	६	०४	५५	५६	१	१४	३९	०६	१	०९	४७	१६	०	२५	५२	५०	०	२४	२७	१७	०	२७	१४	५४	३	०४	००	३४	९	२६	५५	४४	९	१२	४२	०३	७	१८	०७	३४	१६
१७	१	०२	३२	२७	६	१७	३१	१९	१	१५	२०	३९	१	११	५४	०३	०	२६	०७	००	०	२५	४१	०३	०	२७	२२	३५	३	०३	५७	२४	९	२६	५६	१०	९	१२	४१	४८	७	१८	०६	०१	१७
१८	१	०३	३०	१५	६	२९	५५	२१	१	१६	०२	०९	१	१३	५९	२०	०	२६	२१	१६	०	२६	५४	४९	०	२७	३०	१६	३	०३	५४	१३	९	२६	५६	३३	९	१२	४१	३०	७	१८	०४	२८	१८
१९	१	०४	२८	०१	७	१२	०८	३६	१	१६	४३	३७	१	१६	०२	४५	०	२६	३५	१९	०	२८	०८	३४	०	२७	३७	५७	३	०३	५१	०२	९	२६	५६	५३	९	१२	४१	११	७	१८	०२	५४	१९
२०	१	०५	२५	४६	७	२४	१२	०६	१	१७	२५	०२	१	१८	०३	४३	०	२६	४९	४०	०	२९	२२	२०	०	२७	४५	३८	३	०३	४७	५१	९	२६	५७	११	९	१२	४०	४९	७	१८	०१	१९	२०
२१	१	०६	२३	३०	८	०६	०७	३०	१	१८	०६	२६	१	२०	०२	३४	०	२७	०३	५०	१	००	३६	०५	०	२७	५३	१८	३	०३	४४	४१	९	२६	५७	२६	९	१२	४०	२६	७	१७	५९	४४	२१
२२	१	०७	२१	१३	८	१७	५७	१३	१	१८	४७	४५	१	२१	५९	००	०	२७	१७	५९	१	०१	४९	४९	०	२८	००	५८	३	०३	४१	३०	९	२६	५७	३८	९	१२	४०	०२	७	१७	५८	०८	२२
२३	१	०८	१८	५४	८	२९	४४	२७	१	१९	२९	०२	१	२३	५२	५१	०	२७	३२	०७	१	०३	०३	३४	०	२८	०८	३७	३	०३	३८	१९	९	२६	५७	४७	९	१२	३९	३४	७	१७	५६	३२	२३
२४	१	०९	१६	३३	९	११	३३	०९	१	२०	१०	१७	१	२५	४४	०१	०	२७	४६	१५	१	०४	१७	१९	०	२८	१६	१५	३	०३	३५	०८	९	२६	५७	५२	९	१२	३९	०५	७	१७	५४	३६	२४
२५	१	१०	१४	११	९	२३	२७	५३	१	२०	५१	२९	१	२७	३२	२४	०	२८	००	२१	१	०५	३१	०३	०	२८	२३	५२	३	०३	३१	५७	९	२६	५७	५५	९	१२	३८	३५	७	१७	५३	२०	२५
२६	१	११	११	४८	१०	०५	३३	३९	१	२१	३२	३९	१	२९	१८	०२	०	२८	१४	२४	१	०६	४४	४६	०	२८	३१	२९	३	०३	२८	४७	९	२६	५७	५५व	९	१२	३८	०३	७	१७	५१	४७	२६
२७	१	१२	०९	२४	१०	१७	५५	३६	१	२२	१३	४५	२	०१	००	५०	०	२८	२८	२८	१	०७	५८	३०	०	२८	३९	०५	३	०३	२५	३६	९	२६	५७	५२	९	१२	३७	२८	७	१७	५०	१०	२७
२८	१	१३	०६	५८	११	००	३८	३७	१	२२	५४	४९	२	०२	४०	५०	०	२८	४२	३०	१	०९	१२	१४	०	२८	४६	४०	३	०३	२२	२५	९	२६	५७	४६	९	१२	३६	५३	७	१७	४८	३२	२८
२९	१	१४	०४	३१	११	१३	४६	४४	१	२३	३५	५१	२	०४	१७	५९	०	२८	५६	३०	१	१०	२५	५८	०	२८	५४	१४	३	०३	१९	१४	९	२६	५७	३७	९	१२	३६	१५	७	१७	४६	५५	२९
३०	१	१५	०२	०४	११	२७	२२	३२	१	२४	१६	५०	२	०५	५२	०१	०	२९	१०	२९	१	११	३९	४०	०	२९	०१	४७	३	०३	१६	०३	९	२६	५७	२५	९	१२	३५	३५	७	१७	४५	१८	३०
३१	१	१५	५९	३६	०	११	२६	१८	१	२४	५७	४७	२	०७	२२	४५	०	२९	२४	२७	१	१२	५३	२४	०	२९	०९	१९	३	०३	१२	५३	९	२६	५७	१०	९	१२	३४	५४	७	१७	४३	४०	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जून सन् २००० ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५१ '।३०"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जून
१	१ १६ ५७ ०५	० २५ ५५ ३२	१ २५ ३८ ४१	२ ०८ ५० २२	० २९ ३८ २१	१ १४ ०७ ०७	० २९ १६ ५०	३ ०३ ०९ ४२	९ २६ ५६ ५३	९ १२ ३४ ११	७ १७ ४२ ०२	१
२	१ १७ ५४ ३५	१ १० ४४ ४७	१ २६ १९ ३३	२ १० १४ ४७	० २९ ५२ १५	१ १५ २० ४९	० २९ २४ २०	३ ०३ ०६ ३१	९ २६ ५६ ३३	९ १२ ३३ २६	७ १७ ४० २५	२
३	१ १८ ५२ ०३	१ २५ ४६ ०६	१ २७ ०० २२	२ ११ ३६ ०४	१ ०० ०६ ०७	१ १६ ३४ ३२	० २९ ३१ ४९	३ ०३ ०३ २१	९ २६ ५६ ११	९ १२ ३२ ३९	७ १७ ३८ ४७	३
४	१ १९ ४९ ३२	२ १० ५० १९	१ २७ ४१ ०९	२ १२ ५४ १४	१ ०० १९ ५७	१ १७ ४८ १५	० २९ ३९ १६	३ ०३ ०० १०	९ २६ ५५ ४५	९ १२ ३१ ५१	७ १७ ३७ ०९	४
५	१ २० ४६ ५९	२ २५ ४८ २६	१ २८ २१ ५४	२ १४ ०९ १५	१ ०० ३३ ४५	१ १९ ०१ ५७	० २९ ४६ ४२	३ .०२ ५७ ००	९ २६ ५५ १५	९ १२ ३१ ०१	७ १७ ३५ ३२	५
६	१ २१ ४४ २४	३ १० ३३ ०२	१ २९ ०२ ३६	२ १५ २१ ०२	१ ०० ४७ ३१	१ २० १५ ४०	० २९ ५४ ०६	३ ०२ ५३ ४९	९ २६ ५४ ४२	९ १२ ३० ०९	७ १७ ३३ ५५	६
७	१ २२ ४१ ४९	३ २४ ५९ ००	१ २९ ४३ १६	२ १६ २९ ३६	१ ०१ ०१ १५	१ २१ २९ २२	१ ०० ०१ २८	३ ०२ ५० ३८	९ २६ ५४ ०६	९ १२ २९ १६	७ १७ ३२ १७	७
८	१ २३ ३९ १४	४ ०९ ०३ ४२	२ ०० २३ ५४	२ १७ ३४ ५०	१ ०१ १४ ५६	१ २२ ४३ ०४	१ ०० ०८ ४८	३ ०२ ४७ २७	९ २६ ५३ २८	९ १२ २८ २१	७ १७ ३० ४०	८
९	१ २४ ३६ ३७	४ २२ ४६ ३६	२ ०१ ०४ २९	२ १८ ३६ ४०	१ ०१ २८ ३६	१ २३ ५६ ४६	१ ०० १६ ०६	३ ०२ ४४ १६	९ २६ ५२ ४६	९ १२ २७ २५	७ १७ २९ ०४	९
१०	१ २५ ३३ ५९	५ ०६ ०८ ४२	२ ०१ ४५ ०२	२ १९ ३४ ५८	१ ०१ ४२ १३	१ २५ १० २९	१ ०० २३ २२	३ ०२ ४१ ०६	९ २६ ५२ ०२	९ १२ २६ २८	७ १७ २७ २७	१०
११	१ २६ ३१ २०	५ १९ ११ ५२	२ ०२ २५ ३३	२ २० २९ ३७	१ ०१ ५५ ४७	१ २६ २४ ११	१ ०० ३० ३६	३ ०२ ३७ ५५	९ २६ ५१ १५	९ १२ २५ २९	७ १७ २५ ५१	११
१२	१ २७ २८ ४१	६ ०१ ५८ २३	२ ०३ ०६ ००	२ २१ २० ३१	१ ०२ ०९ २०	१ २७ ३७ ५३	१ ०० ३७ ४८	३ ०२ ३४ ४४	९ २६ ५० २६	९ १२ २४ २८	७ १७ २४ १६	१२
१३	१ २८ २६ ०१	६ १४ ३० ३५	२ ०३ ४६ २६	२ २२ ०७ ३२	१ ०२ २२ ४९	१ २८ ५१ ३६	१ ०० ४४ ५८	३ ०२ ३१ ३३	९ २६ ४९ ३४	९ १२ २३ २५	७ १७ २२ ४०	१३
१४	१ २९ २३ २१	६ २६ ५० ३८	२ ०४ २६ ५०	२ २२ ५० ३१	१ ०२ ३६ १७	२ ०० ०५ १९	१ ०० ५२ ०६	३ ०२ २८ २३	९ २६ ४८ ३९	९ १२ २२ २१	७ १७ २१ ०५	१४
१५	२ ०० २० ३९	७ ०९ ०० ३०	२ ०५ ०७ ११	२ २३ २९ २४	१ ०२ ४९ ४१	२ ०१ १९ ०२	१ ०० ५९ १२	३ ०२ २५ १२	९ २६ ४७ ४१	९ १२ २१ १७	७ १७ १९ ३१	१५
१६	२ ०१ १७ ५७	७ २१ ०२ ००	२ ०५ ४७ ३०	२ २४ ०४ ०४	१ ०३ ०३ ०३	२ ०२ ३२ ४५	१ ०१ ०६ १६	३ ०२ २२ ०१	९ २६ ४६ ४१	९ १२ २० ११	७ १७ १७ ५७	१६
१७	२ ०२ १५ १५	८ ०२ ५६ ५६	२ ०६ २७ ४६	२ २४ ३४ ३२	१ ०३ १६ २२	२ ०३ ४६ २८	१ ०१ १३ १८	३ ०२ १८ ५१	९ २६ ४५ ३९	९ १२ १९ ०२	७ १७ १६ २४	१७
१८	२ ०३ १२ ३२	८ १४ ४७ १२	२ ०७ ०८ ०१	२ २५ ०० ३८	१ ०३ २९ ३८	२ ०५ ०० ११	१ ०१ २० १९	३ ०२ १५ ४०	९ २६ ४४ ३३	९ १२ १७ ५४	७ १७ १४ ५१	१८
१९	२ ०४ ०९ ४८	८ २६ ३४ ५७	२ ०७ ४८ १४	२ २५ २२ २१	१ ०३ ४२ ५०	२ ०६ १३ ५४	१ ०१ २७ १८	३ ०२ १२ २९	९ २६ ४३ २५	९ १२ १६ ४३	७ १७ १३ १९	१९
२०	२ ०५ ०७ ०३	९ ०८ २२ ४४	२ ०८ २८ २३	२ २५ ३९ ३५	१ ०३ ५६ ००	२ ०७ २७ ३७	१ ०१ ३४ १५	३ ०२ ०९ १८	९ २६ ४२ १५	९ १२ १५ ३१	७ १७ ११ ४७	२०
२१	२ ०६ ०४ १८	९ २० १३ ३४	२ ०९ ०८ ३२	२ २५ ५२ १३	१ ०४ ०९ ०७	२ ०८ ४१ २०	१ ०१ ४१ ०९	३ ०२ ०६ ०८	९ २६ ४१ ०२	९ १२ १४ १८	७ १७ १० १६	२१
२२	२ ०७ ०१ ३३	१० ०२ १० ५५	२ ०९ ४८ ३८	२ २६ ०० २२	१ ०४ २२ ११	२ ०९ ५५ ०३	१ ०१ ४८ ०१	३ ०२ ०२ ५७	९ २६ ३९ ४७	९ १२ १३ ०५	७ १७ ०८ ४६	२२
२३	२ ०७ ५८ ४७	१० १४ १८ ४४	२ १० २८ ४२	२ २६ ०४ ०७व	१ ०४ ३५ ११	२ ११ ०८ ४७	१ ०१ ५४ ५०	३ ०१ ५९ ४६	९ २६ ३८ २९	९ १२ ११ ४९	७ १७ ०७ १७	२३
२४	२ ०८ ५६ ०१	१० २६ ४१ १५	२ ११ ०८ ४४	२ २६ ०३ ३१	१ ०४ ४८ ०७	२ १२ २२ ३०	१ ०२ ०१ ३७	३ ०१ ५६ ३५	९ २६ ३७ ०९	९ १२ १० ३२	७ १७ ०५ ४८	२४
२५	२ ०९ ५३ १४	११ ०९ २२ ४३	२ ११ ४८ ४३	२ २५ ५८ ३७	१ ०५ ०१ ०१	२ १३ ३६ १३	१ ०२ ०८ १९	३ ०१ ५३ २४	९ २६ ३५ ४६	९ १२ ०९ १४	७ १७ ०४ २०	२५
२६	२ १० ५० २७	११ २२ २७ ०४	२ १२ २८ ४०	२ २५ ४९ ३२	१ ०५ १३ ५१	२ १४ ४९ ५७	१ ०२ १४ ५९	३ ०१ ५० १४	९ २६ ३४ २१	९ १२ ०७ ५६	७ १७ ०२ ५३	२६
२७	२ ११ ४७ ४०	० ०५ ५७ १५	२ १३ ०८ ३५	२ २५ ३६ १८	१ ०५ २६ ३७	२ १६ ०३ ४१	१ ०२ २१ ३६	३ ०१ ४७ ०३	९ २६ ३२ ५४	९ १२ ०६ ३५	७ १७ ०१ २७	२७
२८	२ १२ ४४ ५३	० १९ ५४ ४१	२ १३ ४८ ३०	२ २५ १८ ५५	१ ०५ ३९ २०	२ १७ १७ २५	१ ०२ २८ १०	३ ०१ ४३ ५२	९ २६ ३१ २४	९ १२ ०५ १४	७ १७ ०० ०२	२८
२९	२ १३ ४२ ०६	१ ०४ १८ ३२	२ १४ २८ १९	२ २४ ५७ ३९	१ ०५ ५१ ५९	२ १८ ३१ ०८	१ ०२ ३४ ४१	३ ०१ ४० ४१	९ २६ २९ ५३	९ १२ ०३ ५२	७ १६ ५८ ३८	२९
३०	२ १४ ३९ १८	१ १९ ०५ ११	२ १५ ०८ ०९	२ २४ ३२ ३६	१ ०६ ०४ ३४	२ १९ ४४ ५३	१ ०२ ४१ ११	३ ०१ ३७ ३१	९ २६ २८ १९	९ १२ ०२ २८	७ १६ ५७ १५	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जुलाई सन् २००० ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५१' ।३५"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो(वक्री)	ता.
जुला.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जुला.
१	२ १५ ३६ ३०	२ ०४ ०८ १६	२ १५ ४७ ५७	२ २४ ०४ ०८	१ ०६ १७ ०५	२ २० ५८ ३६	१ ०२ ४७ २७	३ ०१ ३४ २०	९ २६ २६ ४४	९ १२ ०१ ०५	७ १६ ५५ ५३	१
२	२ १६ ३३ ४३	२ १९ १९ १७	२ १६ २७ ४१	२ २३ ३२ ४२	१ ०६ २९ ३२	२ २२ १२ २१	१ ०२ ५३ ४६	३ ०१ ३१ ०९	९ २६ २५ ०५	९ ११ ५९ ३९	७ १६ ५४ ३१	२
३	२ १७ ३० ५५	३ ०४ २८ ४०	२ १७ ०७ २५	२ २२ ५८ ३८	१ ०६ ४१ ५५	२ २३ २६ ०६	१ ०३ ०० ०१	३ ०१ २७ ५८	९ २६ २३ २६	९ ११ ५८ १३	७ १६ ५३ ११	३
४	२ १८ २८ ०७	३ १९ २७ २०	२ १७ ४७ ०६	२ २२ २२ २९	१ ०६ ५४ १४	२ २४ ३९ ५०	१ ०३ ०६ ११	३ ०१ २४ ४८	९ २६ २१ ४४	९ ११ ५६ ४६	७ १६ ५१ ५२	४
५	२ १९ २५ २०	४ ०४ ०७ ५३	२ १८ २६ ४५	२ २१ ४५ ४५	१ ०७ ०६ २९	२ २५ ५३ ३५	१ ०३ १२ १७	३ ०१ २१ ३७	९ २६ १९ ५९	९ ११ ५५ १८	७ १६ ५० ३४	५
६	२ २० २२ ३२	४ १८ २५ २२	२ १९ ०६ २३	२ २१ ०८ २७	१ ०७ १८ ३९	२ २७ ०७ २०	१ ०३ १८ १९	३ ०१ १८ २६	९ २६ १८ १३	९ ११ ५३ ५०	७ १६ ४९ १६	६
७	२ २१ १९ ४४	५ ०२ १७ २७	२ १९ ४५ ५८	२ २० ३० ३४	१ ०७ ३० ४५	२ २८ २१ ०४	१ ०३ २४ १७	३ ०१ १५ १५	९ २६ १६ २६	९ ११ ५२ २१	७ १६ ४७ ५९	७
८	२ २२ १६ ५७	५ १५ ४४ ०७	२ २० २५ ३२	२ १९ ५३ २१	१ ०७ ४२ ४७	२ २९ ३४ ५०	१ ०३ ३० १२	३ ०१ १२ ०५	९ २६ १४ ३६	९ ११ ५० ५०	७ १६ ४६ ४४	८
९	२ २३ १४ १०	५ २८ ४७ ०६	२ २१ ०५ ०४	२ १९ १८ ०३	१ ०७ ५४ ४४	३ ०० ४८ ३५	१ ०३ ३६ ०३	३ ०१ ०८ ५४	९ २६ १२ ४४	९ ११ ४९ १९	७ १६ ४५ ३०	९
१०	२ २४ ११ २२	६ ११ २९ १६	२ २१ ४४ ३३	२ १८ ४४ ५५	१ ०८ ०६ ३६	३ ०२ ०२ २०	१ ०३ ४१ ५०	३ ०१ ०५ ४३	९ २६ १० ५१	९ ११ ४७ ४९	७ १६ ४४ १८	१०
११	२ २५ ०८ ३५	६ २३ ५४ ०२	२ २२ २४ ०२	२ १८ १४ ३७	१ ०८ १८ २३	३ ०३ १६ ०६	१ ०३ ४७ ३६	३ ०१ ०२ ३२	९ २६ ०८ ५६	९ ११ ४६ १६	७ १६ ४३ ०७	११
१२	२ २६ ०५ ४८	७ ०६ ०५ ००	२ २३ ०३ २७	२ १७ ४७ ४४	१ ०८ ३० ०६	३ ०४ २९ ५१	१ ०३ ५३ १६	३ ०० ५९ २१	९ २६ ०७ ००	९ ११ ४४ ४३	७ १६ ४१ ५७	१२
१३	२ २७ ०३ ०२	७ १८ ०५ ४०	२ २३ ४२ ५२	२ १७ २३ ५०	१ ०८ ४१ ४३	३ ०५ ४३ ३७	१ ०३ ५८ ५४	३ ०० ५६ ११	९ २६ ०५ ०१	९ ११ ४३ १०	७ १६ ४० ४८	१३
१४	२ २८ ०० १५	७ २९ ५९ १४	२ २४ २२ १५	२ १७ ०३ ४९	१ ०८ ५३ १६	३ ०६ ५७ २३	१ ०४ ०४ २९	३ ०० ५३ ००	९ २६ ०३ ००	९ ११ ४१ ३६	७ १६ ३९ ४०	१४
१५	२ २८ ५७ २९	८ ११ ४८ ३८	२ २५ ०१ ३५	२ १६ ४८ ०१	१ ०९ ०४ ४४	३ ०८ ११ ०९	१ ०४ १० ०१	३ ०० ४९ ४९	९ २६ ०० ५९	९ ११ ४० ०१	७ १६ ३८ ३३	१५
१६	२ २९ ५४ ४३	८ २३ ३६ २९	२ २५ ४० ५५	२ १६ ३७ १३	१ ०९ १६ ०६	३ ०९ २४ ५५	१ ०४ १५ ३०	३ ०० ४६ ३८	९ २५ ५८ ५६	९ ११ ३८ २६	७ १६ ३७ २८	१६
१७	३ ०० ५१ ५७	९ ०५ २५ ०९	२ २६ २० १२	२ १६ ३१३५मा	१ ०९ २७ २३	३ १० ३८ ४१	१ ०४ २० ५५	३ ०० ४३ २७	९ २५ ५६ ५२	९ ११ ३६ ५१	७ १६ ३६ २५	१७
१८	३ ०१ ४९ १२	९ १७ १६ ५६	२ २६ ५९ २७	२ १६ ३१ ४६	१ ०९ ३८ ३५	३ ११ ५२ २७	१ ०४ २६ १६	३ ०० ४० १६	९ २५ ५४ ४५	९ ११ ३५ १५	७ १६ ३५ २४	१८
१९	३ ०२ ४६ २६	९ २९ १४ ०६	२ २७ ३८ ४१	२ १६ ३७ २०	१ ०९ ४९ ४२	३ १३ ०६ १४	१ ०४ ३१ ३३	३ ०० ३७ ०५	९ २५ ५२ ३९	९ ११ ३३ ३८	७ १६ ३४ २४	१९
२०	३ ०३ ४३ ४२	१० ११ १९ ०५	२ २८ १७ ५३	२ १६ ४८ २१	१ १० ०० ४३	३ १४ २० ००	१ ०४ ३६ ४७	३ ०० ३३ ५४	९ २५ ५० ३१	९ ११ ३२ ०३	७ १६ ३३ २५	२०
२१	३ ०४ ४० ५८	१० २३ ३४ २६	२ २८ ५७ ०३	२ १७ ०५ ०८	१ १० ११ ३७	३ १५ ३३ ४७	१ ०४ ४१ ५७	३ ०० ३० ४४	९ २५ ४८ २१	९ ११ ३० २६	७ १६ ३२ २७	२१
२२	३ ०५ ३८ १४	११ ०६ ०२ ५८	२ २९ ३६ ११	२ १७ २७ ३२	१ १० २२ २७	३ १६ ४७ ३२	१ ०४ ४७ ०३	३ ०० २७ ३३	९ २५ ४६ १०	९ ११ २८ ४९	७ १६ ३१ ३०	२२
२३	३ ०६ ३५ ३०	११ १८ ४७ ३५	३ ०० १५ १९	२ १७ ५५ २५	१ १० ३३ १०	३ १८ ०१ १८	१ ०४ ५२ ०५	३ ०० २४ २२	९ २५ ४३ ५८	९ ११ २७ १२	७ १६ ३० ३५	२३
२४	३ ०७ ३२ ४८	० ०१ ५१ ०७	३ ०० ५४ २३	२ १८ २९ ०५	१ १० ४३ ४८	३ १९ १५ ०६	१ ०४ ५७ ०३	३ ०० २१ ११	९ २५ ४१ ४४	९ ११ २५ ३४	७ १६ २९ ४१	२४
२५	३ ०८ ३० ०६	० १५ १६ ०५	३ ०१ ३३ २८	२ १९ ०८ २१	१ १० ५४ २०	३ २० २८ ५२	१ ०५ ०१ ५७	३ ०० १८ ००	९ २५ ३९ २९	९ ११ २३ ५६	७ १६ २८ ४९	२५
२६	३ ०९ २७ २५	० २९ ०४ ०६	३ ०२ १२ २९	२ १९ ५३ १६	१ ११ ०४ ४५	३ २१ ४२ ३८	१ ०५ ०६ ४७	३ ०० १४ ५०	९ २५ ३७ १४	९ ११ २२ १९	७ १६ २७ ५९	२६
२७	३ १० २४ ४४	१ १३ १५ ३०	३ ०२ ५१ ३०	२ २० ४३ ५०	१ ११ १५ ०४	३ २२ ५६ २५	१ ०५ ११ ३२	३ ०० ११ ३९	९ २५ ३४ ५८	९ ११ २० ४१	७ १६ २७ ११	२७
२८	३ ११ २२ ०५	१ २७ ४८ ३८	३ ०३ ३० २८	२ २१ ४० ००	१ ११ २५ १७	३ २४ १० ११	१ ०५ १६ १२	३ ०० ०८ २८	९ २५ ३२ ४०	९ ११ १९ ०४	७ १६ २६ २५	२८
२९	३ १२ १९ २६	२ १२ ३९ ३४	३ ०४ ०९ २६	२ २२ ४१ ४४	१ ११ ३५ २४	३ २५ २३ ५८	१ ०५ २० ४७	३ ०० ०५ १७	९ २५ ३० २३	९ ११ १७ २६	७ १६ २५ ४१	२९
३०	३ १३ १६ ४८	२ २७ ४२ ०४	३ ०४ ४८ २१	२ २३ ४८ ५८	१ ११ ४५ २४	३ २६ ३७ ४४	१ ०५ २५ १७	३ ०० ०२ ०७	९ २५ २८ ०४	९ ११ १५ ४८	७ १६ २४ ५९	३०
३१	३ १४ १४ ११	३ १२ ४८ ०४	३ ०५ २७ १६	२ २५ ०१ ३३	१ ११ ५५ १७	३ २७ ५१ ३२	१ ०५ २९ ४२	२ २९ ५८ ५६	९ २५ २५ ४४	९ ११ १४ १०	७ १६ २४ १९	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अगस्त सन् २००० ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५१' ४०"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
अगस्त	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अगस्त
१	३ १५ ११ ३४	३ २७ ४८ ३८	३ ०६ ०६ ०८	२ २६ १९ २१	१ १२ ०५ ०४	३ २९ ०५ १८	१ ०५ ३४ ०१	२ २९ ५५ ४५	९ २५ २३ २५	९ ११ १२ ३३	७ १६ २३ ४०	१
२	३ १६ ०८ ५९	४ १२ ३५ १६	३ ०६ ४४ ५९	२ २७ ४२ १०	१ १२ १४ ४४	४ ०० १९ ०४	१ ०५ ३८ १४	२ २९ ५२ ३४	९ २५ २१ ०४	९ ११ १० ५५	७ १६ २३ ०४	२
३	३ १७ ०६ २४	४ २७ ०१ ०५	३ ०७ २३ ४८	२ २९ ०९ ५३	१ १२ २४ १७	४ ०१ ३२ ५०	१ ०५ ४२ २१	२ २९ ४९ २३	९ २५ १८ ४२	९ ११ ०९ १८	७ १६ २२ २९	३
४	३ १८ ०३ ४९	५ ११ ०१ ४१	३ ०८ ०२ ३५	३ ०० ४२ ०७	१ १२ ३३ ४२	४ ०२ ४६ ३७	१ ०५ ४६ २३	२ २९ ४६ १३	९ २५ १६ २१	९ ११ ०७ ४१	७ १६ २१ ५६	४
५	३ १९ ०१ १६	५ २४ ३४ १७	३ ०८ ४१ २२	३ ०२ १८ ४३	१ १२ ४३ ०१	४ ०४ ०० २४	१ ०५ ५० १९	२ २९ ४३ ०२	९ २५ १३ ५२	९ ११ ०६ ०४	७ १६ २१ २५	५
६	३ १९ ५८ ४४	६ ०७ ४२ ३२	३ ०९ २० ०७	३ ०३ ५९ १७	१ १२ ५२ १३	४ ०५ १४ १०	१ ०५ ५४ १०	२ २९ ३९ ५१	९ २५ ११ ३६	९ ११ ०४ २७	७ १६ २० ५६	६
७	३ २० ५६ १३	६ २० २५ ५६	३ ०९ ५८ ५०	३ ०५ ४३ २९	१ १३ ०१ १८	४ ०६ २७ ५६	१ ०५ ५७ ५६	२ २९ ३६ ४०	९ २५ ०९ १३	९ ११ ०२ ५१	७ १६ २० २९	७
८	३ २१ ५३ ४३	७ ०२ ४९ १६	३ १० ३७ ३२	३ ०७ ३१ ०१	१ १३ १० १४	४ ०७ ४१ ४३	१ ०६ ०१ ३६	२ २९ ३३ ३०	९ २५ ०६ ५०	९ ११ ०१ १५	७ १६ २० ०४	८
९	३ २२ ५१ १४	७ १४ ५६ ५४	३ ११ १६ १२	३ ०९ २१ ३३	१ १३ १९ ०३	४ ०८ ५५ २९	१ ०६ ०५ १०	२ २९ ३० १९	९ २५ ०४ २७	९ १० ५९ ४०	७ १६ १९ ४१	९
१०	३ २३ ४८ ४६	७ २६ ५३ २७	३ ११ ५४ ५१	३ ११ १४ ४३	१ १३ २७ ४५	४ १० ०९ १४	१ ०६ ०८ ३६	२ २९ २७ ०८	९ २५ ०२ ०३	९ १० ५८ ०५	७ १६ १९ २०	१०
११	३ २४ ४६ १९	८ ०९ ४३ २३	३ १२ ३३ २८	३ १३ १० १२	१ १३ ३६ १८	४ ११ २३ ००	१ ०६ ११ ५७	२ २९ २३ ५७	९ २४ ५९ ३९	९ १० ५६ ३०	७ १६ १९ ०१	११
१२	३ २५ ४३ ५४	८ २० ३० ४९	३ १३ १२ ०६	३ १५ ०७ ४०	१ १३ ४४ ४५	४ १२ ३६ ४६	१ ०६ १५ १२	२ २९ २० ४७	९ २४ ५७ १५	९ १० ५४ ५६	७ १६ १८ ४४	१२
१३	३ २६ ४१ २९	९ ०२ १९ २१	३ १३ ५० ३९	३ १७ ०६ ४६	१ १३ ५३ ०३	४ १३ ५० ३१	१ ०६ १८ २१	२ २९ १७ ३६	९ २४ ५४ ५२	९ १० ५३ २३	७ १६ १८ २९	१३
१४	३ २७ ३९ ०६	९ १४ १२ ०३	३ १४ २९ १२	३ १९ ०७ ०६	१ १४ ०१ १२	४ १५ ०४ १६	१ ०६ २१ २६	२ २९ १४ २५	९ २४ ५२ २८	९ १० ५१ ५०	७ १६ १८ १५	१४
१५	३ २८ ३६ ४४	९ २६ ११ २४	३ १५ ०७ ४३	३ २१ ०८ १४	१ १४ ०९ १५	४ १६ १८ ००	१ ०६ २४ २५	२ २९ ११ १४	९ २४ ५० ०५	९ १० ५० १८	७ १६ १८ ०३	१५
१६	३ २९ ३४ २३	१० ०८ १९ २२	३ १५ ४६ १४	३ २३ ०९ ४७	१ १४ १७ ०८	४ १७ ३१ ४५	१ ०६ २७ १८	२ २९ ०८ ०४	९ २४ ४७ ४२	९ १० ४८ ४६	७ १६ १७ ५२	१६
१७	४ ०० ३२ ०४	१० २० ३७ ३०	३ १६ २४ ४३	३ २५ ११ ४७	१ १४ २४ ५३	४ १८ ४५ २९	१ ०६ ३० ०५	२ २९ ०४ ५३	९ २४ ४५ १९	९ १० ४७ १५	७ १६ १७ ४३	१७
१८	४ ०१ २९ ४६	११ ०३ ०७ ०२	३ १७ ०३ १०	३ २७ १३ ५१	१ १४ ३२ ३०	४ १९ ५९ १३	१ ०६ ३२ ३६	२ २९ ०१ ४२	९ २४ ४२ ५६	९ १० ४५ ४५	७ १६ १७ ३६	१८
१९	४ ०२ २७ ३०	११ १५ ४९ ०५	३ १७ ४१ ३७	३ २९ १५ ५३	१ १४ ३९ ५८	४ २१ १२ ५७	१ ०६ ३५ ११	२ २८ ५८ ३१	९ २४ ४० ३४	९ १० ४४ १६	७ १६ १७ ३१	१९
२०	४ ०३ २५ १५	११ २८ ४४ ४१	३ १८ २० ०२	४ ०१ १७ २८	१ १४ ४७ १७	४ २२ २६ ४०	१ ०६ ३७ ४०	२ २८ ५५ २१	९ २४ ३८ १२	९ १० ४२ ४७	७ १६ १७ २८	२०
२१	४ ०४ २३ ०१	० ११ ५४ ५६	३ १८ ५८ २६	४ ०३ १८ २२	१ १४ ५४ २८	४ २३ ४० २३	१ ०६ ४० ०३	२ २८ ५२ १०	९ २४ ३५ ५१	९ १० ४१ १९	७ १६ १७२६मा	२१
२२	४ ०५ २० ४८	० २५ २० ५६	३ १९ ३६ ४८	४ ०५ १८ २३	१ १५ ०१ ३०	४ २४ ५४ ०६	१ ०६ ४२ २०	२ २८ ४८ ५९	९ २४ ३३ ३१	९ १० ३९ ५३	७ १६ १७ २७	२२
२३	४ ०६ १८ ३७	१ ०९ ०३ ३६	३ २० १५ १०	४ ०७ १७ ३२	१ १५ ०८ २२	४ २६ ०७ ४८	१ ०६ ४४ ३१	२ २८ ४५ ४८	९ २४ ३१ ११	९ १० ३८ २७	७ १६ १७ ३०	२३
२४	४ ०७ १६ २७	१ २३ ०३ २६	३ २० ५३ ३०	४ ०९ १५ ४१	१ १५ १५ ०६	४ २७ २१ २९	१ ०६ ४६ ३६	२ २८ ४२ ३८	९ २४ २८ ५२	९ १० ३७ ०२	७ १६ १७ ३५	२४
२५	४ ०८ १४ १९	२ ०७ १९ ५९	३ २१ ३१ ४९	४ ११ १२ ३३	१ १५ २१ ४०	४ २८ ३५ १०	१ ०६ ४८ ३५	२ २८ ३९ २७	९ २४ २६ ३३	९ १० ३५ ३७	७ १६ १७ ४२	२५
२६	४ ०९ १२ १३	२ २१ ५१ २८	३ २२ १० ०६	४ १३ ०८ ०५	१ १५ २८ ०५	४ २९ ४८ ५२	१ ०६ ५० २८	२ २८ ३६ १६	९ २४ २४ १६	९ १० ३४ १४	७ १६ १७ ५१	२६
२७	४ १० १० ०८	३ ०६ ३४ १७	३ २२ ४८ २२	४ १५ ०२ १४	१ १५ ३४ २१	५ ०१ ०२ ३२	१ ०६ ५२ १५	२ २८ ३३ ०५	९ २४ २१ ५९	९ १० ३२ ५२	७ १६ १८ ०२	२७
२८	४ ११ ०८ ०५	३ २१ २३ ०१	३ २३ २६ ३७	४ १६ ५५ ०१	१ १५ ४० २८	५ ०२ १६ १२	१ ०६ ५३ ५६	२ २८ २९ ५५	९ २४ १९ ४३	९ १० ३१ ३१	७ १६ १८ १४	२८
२९	४ १२ ०६ ०३	४ ०६ १० ४२	३ २४ ०४ ५१	४ १८ ४६ २५	१ १५ ४६ २५	५ ०३ २९ ५१	१ ०६ ५५ ३१	२ २८ २६ ४४	९ २४ १७ २८	९ १० ३० ११	७ १६ १८ २८	२९
३०	४ १३ ०४ ०२	४ २० ४९ ४१	३ २४ ४३ ०४	४ २० ३६ २९	१ १५ ५२ १२	५ ०४ ४३ ३०	१ ०६ ५७ ००	२ २८ २३ ३३	९ २४ १५ १४	९ १० २८ ५२	७ १६ १८ ४४	३०
३१	४ १४ ०२ ०३	५ ०५ १२ ४३	३ २५ २१ १५	४ २२ २५ १५	१ १५ ५७ ४९	५ ०५ ५७ ०९	१ ०६ ५८ २३	२ २८ २० २२	९ २४ १३ ०२	९ १० २७ ३४	७ १६ १९ ०२	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सितम्बर सन् २००० ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५१' ४४"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो	ता.
सितं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	सितं.
१	४ १५ ०० ०७	५ १९ १४ ०७	३ २५ ५९ २५	४ २४ १३ २१	१ १६ ०३ १६	५ ०७ १० ४६	१ ०६ ५९ ४०	२ २८ १७ १२	९ २४ १० ५०	९ १० २६ १८	७ १६ १९ २२	१
२	४ १५ ५८ ११	६ ०२ ५० २८	३ २६ ३७ ३४	४ २५ ५९ ५१	१ १६ ०८ ३२	५ ०८ २४ २३	१ ०७ ०० ५१	२ २८ १४ ०१	९ २४ ०८ ४०	९ १० २५ ०३	७ १६ १९ ४४	२
३	४ १६ ५६ १७	६ १६ ०० ५४	३ २७ १५ ४१	४ २७ ४५ ०७	१ १६ १३ ४०	५ ०९ ३७ ५९	१ ०७ ०१ ५६	२ २८ १० ५०	९ २४ ०६ ३१	९ १० २३ ४९	७ १६ २० ०९	३
४	४ १७ ५४ २४	६ २८ ४६ ४९	३ २७ ५३ ४८	४ २९ २९ २१	१ १६ १८ ३६	५ १० ५१ ३६	१ ०७ ०२ ५५	२ २८ ०७ ४०	९ २४ ०४ २३	९ १० २२ ३५	७ १६ २० ३६	४
५	४ १८ ५२ ३४	७ ११ ११ २४	३ २८ ३१ ५३	५ ०१ १२ ३६	१ १६ २३ २३	५ १२ ०५ ११	१ ०७ ०३ ४८	२ २८ ०४ २९	९ २४ ०२ १७	९ १० २१ २३	७ १६ २१ ०६	५
६	४ १९ ५० ४६	७ २३ १९ ०४	३ २९ ०९ ५९	५ ०२ ५४ ४९	१ १६ २७ ५८	५ १३ १८ ४५	१ ०७ ०४ ३५	२ २८ ०१ १८	९ २४ ०० ११	९ १० २० १३	७ १६ २१ ३८	६
७	४ २० ४८ ५९	८ ०५ १४ ५३	३ २९ ४८ ०२	५ ०४ ३५ ५४	१ १६ ३२ २३	५ १४ ३२ २०	१ ०७ ०५ १४	२ २७ ५८ ०७	९ २३ ५८ ०७	९ १० १९ ०५	७ १६ २२ १२	७
८	४ २१ ४७ १४	८ १७ ०४ ०५	४ ०० २६ ०३	५ ०६ १५ ३६	१ १६ ३६ ३८	५ १५ ४५ ५३	१ ०७ ०५ ४६	२ २७ ५४ ५६	९ २३ ५६ ०५	९ १० १७ ५७	७ १६ २२ ४८	८
९	४ २२ ४५ ३०	८ २८ ५१ ४७	४ ०१ ०४ ०५	५ ०७ ५३ ५६	१ १६ ४० ३२	५ १६ ५९ २६	१ ०७ ०६ ११	२ २७ ५१ ४६	९ २३ ५४ ०५	९ १० १६ ५१	७ १६ २३ २६	९
१०	४ २३ ४३ ४८	९ १० ४२ ३९	४ ०१ ४२ ०५	५ ०९ ३१ ०२	१ १६ ४४ ३५	५ १८ १२ ५८	१ ०७ ०६ ३०	२ २७ ४८ ३५	९ २३ ५२ ०५	९ १० १५ ४७	७ १६ २४ ०६	१०
११	४ २४ ४२ ०९	९ २२ ४० ४२	४ ०२ २० ०५	५ ११ ०७ ०२	१ १६ ४८ १६	५ १९ २६ २९	१ ०७ ०६ ४३	२ २७ ४५ २४	९ २३ ५० ०८	९ १० १४ ४४	७ १६ २४ ४८	११
१२	४ २५ ४० ३१	१० ०४ ४९ ०६	४ ०२ ५८ ०२	५ १२ ४१ ५५	१ १६ ५१ ४७	५ २० ४० ००	१ ०७ ०६ ४९व	२ २७ ४२ १३	९ २३ ४८ १३	९ १० १३ ४२	७ १६ २५ ३१	१२
१३	४ २६ ३८ ५४	१० १७ १० ०६	४ ०३ ३५ ५९	५ १४ १५ ३९	१ १६ ५५ ०८	५ २१ ५३ ३०	१ ०७ ०६ ५०	२ २७ ३९ ०३	९ २३ ४६ १९	९ १० १२ ४२	७ १६ २६ १७	१३
१४	४ २७ ३७ १९	१० २९ ४४ ५६	४ ०४ १३ ५४	५ १५ ४८ १३	१ १६ ५८ १६	५ २३ ०६ ५९	१ ०७ ०६ ४५	२ २७ ३५ ५२	९ २३ ४४ २७	९ १० ११ ४३	७ १६ २७ ०५	१४
१५	४ २८ ३५ ४७	११ १२ ३३ ५०	४ ०४ ५१ ४९	५ १७ १९ ३६	१ १७ ०१ १३	५ २४ २० २८	१ ०७ ०६ ३३	२ २७ ३२ ४१	९ २३ ४२ ३७	९ १० १० ४५	७ १६ २७ ५५	१५
१६	४ २९ ३४ १७	११ २५ ३६ २१	४ ०५ २९ ४३	५ १८ ४९ ४८	१ १७ ०३ ५९	५ २५ ३३ ५५	१ ०७ ०६ १५	२ २७ २९ ३०	९ २३ ४० ४९	९ १० ०९ ५०	७ १६ २८ ४४	१६
१७	५ ०० ३२ ४८	० ०८ ५१ २८	४ ०६ ०७ ३६	५ २० १८ ५७	१ १७ ०६ ३४	५ २६ ४७ २१	१ ०७ ०५ ५०	२ २७ २६ २०	९ २३ ३९ ०३	९ १० ०८ ५६	७ १६ २९ ३६	१७
१८	५ ०१ ३१ २१	० २२ १८ ०४	४ ०६ ४५ २८	५ २१ ४७ ०३	१ १७ ०८ ५७	५ २८ ०० ४७	१ ०७ ०५ १९	२ २७ २३ ०९	९ २३ ३७ १८	९ १० ०८ ०४	७ १६ ३० ३०	१८
१९	५ ०२ २९ ५६	१ ०५ ५५ ०९	४ ०७ २३ १९	५ २३ १४ १८	१ १७ ११ ०८	५ २९ १४ १२	१ ०७ ०४ ४२	२ २७ १९ ५८	९ २३ ३५ ३६	९ १० ०७ १४	७ १६ ३१ २६	१९
२०	५ ०३ २८ ३३	१ १९ ४२ ००	४ ०८ ०१ ०९	५ २४ ४० ४१	१ १७ १३ ०८	६ ०० २७ ३७	१ ०७ ०३ ५९	२ २७ १६ ४७	९ २३ ३३ ५५	९ १० ०६ २५	७ १६ ३२ २४	२०
२१	५ ०४ २७ ११	२ ०३ ३८ १७	४ ०८ ३८ ५७	५ २६ ०५ ४३	१ १७ १४ ५७	६ ०१ ४१ ००	१ ०७ ०३ ०९	२ २७ १३ ३६	९ २३ ३२ १८	९ १० ०५ ३७	७ १६ ३३ २४	२१
२२	५ ०५ २५ ५१	२ १७ ४३ ३७	४ ०९ १६ ४५	५ २७ २९ ५४	१ १७ १६ ३३	६ ०२ ५४ २२	१ ०७ ०२ १३	२ २७ १० २६	९ २३ ३० ४१	९ १० ०४ ५१	७ १६ ३४ २६	२२
२३	५ ०६ २४ ३४	३ ०१ ५७ १९	४ ०९ ५४ ३१	५ २८ ५२ ३४	१ १७ १७ ५७	६ ०४ ०७ ४४	१ ०७ ०१ ११	२ २७ ०७ १५	९ २३ २९ ०८	९ १० ०४ ०७	७ १६ ३५ ३०	२३
२४	५ ०७ २३ १९	३ १६ १७ ४८	४ १० ३२ १७	६ ०० १४ ०३	१ १७ १९ १०	६ ०५ २१ ०५	१ ०७ ०० ०३	२ २७ ०४ ०४	९ २३ २७ ३६	९ १० ०३ २५	७ १६ ३६ ३६	२४
२५	५ ०८ २२ ०५	४ ०० ४२ १४	४ ११ १० ०१	६ ०१ ३४ १०	१ १७ २० ११	६ ०६ ३४ २४	१ ०६ ५८ ४८	२ २७ ०० ५३	९ २३ २६ ०८	९ १० ०२ ४५	७ १६ ३७ ४४	२५
२६	५ ०९ २० ५३	४ १५ ०६ २३	४ ११ ४७ ४५	६ ०२ ५२ ५७	१ १७ २१ ००	६ ०७ ४७ ४४	१ ०६ ५७ २६	२ २६ ५७ ४३	९ २३ २४ ४०	९ १० ०२ ०६	७ १६ ३८ ५४	२६
२७	५ १० १९ ४३	४ २९ २४ ५३	४ १२ २५ २८	६ ०४ १० २८	१ १७ २१ ३६	६ ०९ ०१ ०१	१ ०६ ५५ ५८	२ २६ ५४ ३२	९ २३ २३ १६	९ १० ०१ २९	७ १६ ४० ०६	२७
२८	५ ११ १८ ३६	५ १३ ३२ ००	४ १३ ०३ १०	६ ०५ २६ ३७	१ १७ २२ ०२	६ १० १४ १८	१ ०६ ५४ २३	२ २६ ५१ २१	९ २३ २१ ५५	९ १० ०० ५४	७ १६ ४१ २०	२८
२९	५ १२ १७ ३०	५ २७ २२ २६	४ १३ ४० ५१	६ ०६ ४१ २१	१ १७ २२ १४व	६ ११ २७ ३३	१ ०६ ५२ ४३	२ २६ ४८ १०	९ २३ २० ३५	९ १० ०० २१	७ १६ ४२ ३६	२९
३०	५ १३ १६ २६	६ १० ५२ १६	४ १४ १८ ३१	६ ०७ ५४ ३४	१ १७ २२ १४	६ १२ ४० ४९	१ ०६ ५० ५४	२ २६ ४५ ००	९ २३ १९ १८	९ ०९ ५९ ५०	७ १६ ४३ ५४	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्टूबर सन् २००० ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५१' ।४७"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो	ता.
अक्टू.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अक्टू.
१	५ १४ १५ २५	६ २३ ५९ ३४	४ १४ ५६ १०	६ ०९ ०६ ०७	१ १७ २२ ०४	६ १३ ५४ ०३	१ ०६ ४९ ००	२ २६ ४१ ४९	९ २३ १८ ०४	९ ०९ ५९ २१	७ १६ ४५ १३	१
२	५ १५ १४ २५	७ ०६ ४४ २९	४ १५ ३३ ४७	६ १० १५ ४९	१ १७ २१ ४०	६ १५ ०७ १५	१ ०६ ४६ ५९	२ २६ ३८ ३८	९ २३ १६ ५३	९ ०९ ५८ ५२	७ १६ ४६ ३१	२
३	५ १६ १३ २८	७ १९ ०९ ०६	४ १६ ११ २४	६ ११ २३ ३१	१ १७ २१ ०४	६ १६ २० २७	१ ०६ ४४ ५१	२ २६ ३५ २७	९ २३ १५ ४४	९ ०९ ५८ २७	७ १६ ४७ ५१	३
४	५ १७ १२ ३३	८ ०१ १७ ०१	४ १६ ४८ ५९	६ १२ २९ ०७	१ १७ २० १६	६ १७ ३३ ३८	१ ०६ ४२ ३६	२ २६ ३२ १७	९ २३ १४ ३७	९ ०९ ५८ ०३	७ १६ ४९ १२	४
५	५ १८ ११ ४०	८ १३ १२ ५७	४ १७ २६ ३३	६ १३ ३२ २८	१ १७ १९ १६	६ १८ ४६ ४८	१ ०६ ४० १३	२ २६ २९ ०६	९ २३ १३ ३३	९ ०९ ५७ ४२	७ १६ ५० ३५	५
६	५ १९ १० ५०	८ २५ ०२ १५	४ १८ ०४ ०६	६ १४ ३३ २१	१ १७ १८ ०४	६ १९ ५९ ५६	१ ०६ ३७ ४३	२ २६ २५ ५५	९ २३ १२ ३२	९ ०९ ५७ २२	७ १६ ५२ ००	६
७	५ २० १० ०१	९ ०६ ५० २६	४ १८ ४१ ३९	६ १५ ३१ ३५	१ १७ १६ ४०	६ २१ १३ ०४	१ ०६ ३५ ०७	२ २६ २२ ४४	९ २३ ११ ३३	९ ०९ ५७ ०३	७ १६ ५३ २६	७
८	५ २१ ०९ १४	९ १८ ४२ ५७	४ १९ १९ १०	६ १६ २६ ५६	१ १७ १५ ०३	६ २२ २६ १०	१ ०६ ३२ २५	२ २६ १९ ३३	९ २३ १० ३७	९ ०९ ५६ ४७	७ १६ ५४ ५३	८
९	५ २२ ०८ २९	१० ०० ४४ ४५	४ १९ ५६ ४०	६ १७ १९ ११	१ १७ १३ १५	६ २३ ३९ १६	१ ०६ २९ ३७	२ २६ १६ २३	९ २३ ०९ ४४	९ ०९ ५६ ३४	७ १६ ५६ २२	९
१०	५ २३ ०७ ४५	१० १३ ०० ०३	४ २० ३४ १०	६ १८ ०८ ०३	१ १७ ११ १५	६ २४ ५२ २०	१ ०६ २६ ४४	२ २६ १३ १२	९ २३ ०८ ५३	९ ०९ ५६ २२	७ १६ ५७ ५२	१०
११	५ २४ ०७ ०५	१० २५ ३१ ५७	४ २१ ११ ३८	६ १८ ५३ १६	१ १७ ०९ ०२	६ २६ ०५ २२	१ ०६ २३ ४६	२ २६ १० ०१	९ २३ ०८ ०६	९ ०९ ५६ १२	७ १६ ५९ २४	११
१२	५ २५ ०६ २६	११ ०८ २२ ०८	४ २१ ४९ ०४	६ १९ ३४ ३१	१ १७ ०६ ३८	६ २७ १८ २४	१ ०६ २० ४३	२ २६ ०६ ५०	९ २३ ०७ २२	९ ०९ ५६ ०४	७ १७ ०० ५८	१२
१३	५ २६ ०५ ४९	११ २१ ३० ४५	४ २२ २६ ३१	६ २० ११ २२	१ १७ ०४ ०२	६ २८ ३१ २४	१ ०६ १७ ३५	२ २६ ०३ ४०	९ २३ ०६ ३९	९ ०९ ५५ ५७	७ १७ ०२ ३३	१३
१४	५ २७ ०५ १५	० ०४ ५६ २७	४ २३ ०३ ५६	६ २० ४३ २९	१ १७ ०१ १४	६ २९ ४४ २३	१ ०६ १४ २३	२ २६ ०० २९	९ २३ ०६ ०१	९ ०९ ५५ ५३	७ १७ ०४ १०	१४
१५	५ २८ ०४ ४२	० १८ ३६ ३३	४ २३ ४१ १९	६ २१ १० २७	१ १६ ५८ १४	७ ०० ५७ २१	१ ०६ ११ ०६	२ २५ ५७ १८	९ २३ ०५ २५	९ ०९ ५५ ५१	७ १७ ०५ ४८	१५
१६	५ २९ ०४ १२	१ ०२ २७ ४०	४ २४ १८ ४२	६ २१ ३१ ४५	१ १६ ५५ ०४	७ ०२ १० १८	१ ०६ ०७ ४५	२ २५ ५४ ०७	९ २३ ०४ ५१	९ ०९ ५५ ५१मा	७ १७ ०७ २८	१६
१७	६ ००' ०३ ४३	१ १६ २६ १५	४ २४ ५६ ०४	६ २१ ४६ ४७	१ १६ ५१ ४०	७ ०३ २३ १३	१ ०६ ०४ २०	२ २५ ५० ५७	९ २३ ०४ २१	९ ०९ ५५ ५२	७ १७ ०९ ०९	१७
१८	६ ०१ ०३ १७	२ ०० २९ १४	४ २५ ३३ २४	६ २१ ५५ ०३व	१ १६ ४८ ०६	७ ०४ ३६ ०७	१ ०६ ०० ५१	२ २५ ४७ ४६	९ २३ ०३ ५३	९ ०९ ५५ ५६	७ १७ १० ५२	१८
१९	६ ०२ ०२ ५२	२ १४ ३४ २०	४ २६ १० ४४	६ २१ ५५ ५३	१ १६ ४४ २१	७ ०५ ४८ ५९	१ ०५ ५७ १८	२ २५ ४४ ३५	९ २३ ०३ २९	९ ०९ ५६ ०२	७ १७ १२ ३६	१९
२०	६ ०३ ०२ २८	२ २८ ४० ०४	४ २६ ४८ ०२	६ २१ ४८ ४६	१ १६ ४० २४	७ ०७ ०१ ५०	१ ०५ ५३ ४१	२ २५ ४१ २४	९ २३ ०३ ०७	९ ०९ ५६ १०	७ १७ १४ २२	२०
२१	६ ०४ ०२ ०८	३ १२ ४५ ३५	४ २७ २५ २०	६ २१ ३३ ११	१ १६ ३६ १५	७ ०८ १४ ४०	१ ०५ ५० ००	२ २५ ३८ १४	९ २३ ०२ ४९	९ ०९ ५६ २१	७ १७ १६ ०९	२१
२२	६ ०५ ०१ ४९	३ २६ ५० ०७	४ २८ ०२ ३५	६ २१ ०८ ४१	१ १६ ३१ ५६	७ ०९ २७ २७	१ ०५ ४६ १५	२ २५ ३५ ०३	९ २३ ०२ ३३	९ ०९ ५६ ३४	७ १७ १७ ५८	२२
२३	६ ०६ ०१ ३३	४ १० ५२ ३३	४ २८ ३९ ५०	६ २० ३५ ११	१ १६ २७ २७	७ १० ४० १३	१ ०५ ४२ २६	२ २५ ३१ ५२	९ २३ ०२ २१	९ ०९ ५६ ४६	७ १७ १९ ४८	२३
२४	६ ०७ ०१ १८	४ २४ ५१ ०५	४ २९ १७ ०४	६ १९ ५२ २७	१ १६ २२ ४६	७ ११ ५२ ५९	१ ०५ ३८ ३३	२ २५ २८ ४१	९ २३ ०२ ११	९ ०९ ५७ ०२	७ १७ २१ ४०	२४
२५	६ ०८ ०१ ०५	५ ०८ ४३ ०७	४ २९ ५४ १७	६ १९ ०१ २७	१ १६ १७ ५५	७ १३ ०५ ४२	१ ०५ ३४ ३६	२ २५ २५ ३०	९ २३ ०२ ०५	९ ०९ ५७ २१	७ १७ २३ ३३	२५
२६	६ ०९ ०० ५४	५ २२ २५ २५	५ ०० ३१ २८	६ १८ ०२ ०९	१ १६ १२ ५५	७ १४ १८ २३	१ ०५ ३० ३५	२ २५ २२ २०	९ २३ ०२ ०१	९ ०९ ५७ ४१	७ १७ २५ २८	२६
२७	६ १० ०० ४४	६ ०५ ५४ ३९	५ ०१ ०८ ३९	६ १६ ५५ ४९	१ १६ ०७ ४३	७ १५ ३१ ०३	१ ०५ २६ ३१	२ २५ १९ ०९	९ २३ ०२ ०१मा	९ ०९ ५८ ०३	७ १७ २७ २४	२७
२८	६ ११ ०० ३७	६ १९ ०७ ५९	५ ०१ ४५ ४७	६ १५ ४३ ४८	१ १६ ०२ २२	७ १६ ४३ ४२	१ ०५ २२ २३	२ २५ १५ ५८	९ २३ ०२ ०३	९ ०९ ५८ २७	७ १७ २९ २२	२८
२९	६ १२ ०० ३२	७ ०२ ०३ ३५	५ ०२ २२ ५६	६ १४ २८ ०१	१ १५ ५६ ५१	७ १७ ५६ १८	१ ०५ १८ १२	२ २५ १२ ४७	९ २३ ०२ ०८	९ ०९ ५८ ५३	७ १७ ३१ २१	२९
३०	६ १३ ०० २९	७ १४ ४१ ०१	५ ०३ ०० ०२	६ १३ १० ४३	१ १५ ५१ ११	७ १९ ०८ ५२	१ ०५ १३ ५८	२ २५ ०९ ३७	९ २३ ०२ १७	९ ०९ ५९ २२	७ १७ ३३ २१	३०
३१	६ १४ ०० २८	७ २७ ०१ २४	५ ०३ ३७ ०८	६ ११ ५४ ३०	१ १५ ४५ २०	७ २० २१ २५	१ ०५ ०९ ४१	२ २५ ०६ २६	९ २३ ०२ २९	९ ०९ ५९ ५१	७ १७ ३५ २३	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नवम्बर सन् २००० ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५१' ५०"

ता. नवं.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध (वक्री) रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	हर्शल रा. अं. क. वि.	नेपच्यून रा. अं. क. वि.	प्लूटो रा. अं. क. वि.	ता. नवं.
१	६ १५ ०० २९	८ ०९ ०७ १२	५ ०४ १४ १२	६ १० ४१ ३८	१ १५ ३९ २२	७ २१ ३३ ५६	१ ०५ ०५ २१	२ २५ ०३ १५	९ २३ ०२ ४३	९ १० ०० २३	७ १७ ३७ २६	१
२	६ १६ ०० ३१	८ २१ ०२ ०९	५ ०४ ५१ १६	६ ०९ ३४ १५	१ १५ ३३ १५	७ २२ ४६ २५	१ ०५ ०० ५८	२ २५ ०० ०४	९ २३ ०३ ००	९ १० ०० ५६	७ १७ ३९ २९	२
३	६ १७ ०० ३६	९ ०२ ५० ५२	५ ०५ २८ १७	६ ०८ ३३ ५२	१ १५ २६ ५८	७ २३ ५८ ५१	१ ०४ ५६ ३२	२ २४ ५६ ५४	९ २३ ०३ २१	९ १० ०१ ३२	७ १७ ४१ ३३	३
४	६ १८ ०० ४२	९ १४ ३८ ३४	५ ०६ ०५ १८	६ ०७ ४२ ०५	१ १५ २० ३३	७ २५ ११ १५	१ ०४ ५२ ०४	२ २४ ५३ ४३	९ २३ ०३ ४५	९ १० ०२ ०९	७ १७ ४३ ३८	४
५	६ १९ ०० ५१	९ २६ ३० ४४	५ ०६ ४२ १८	६ ०७ ०० ४५	१ १५ १४ ००	७ २६ २३ ३९	१ ०४ ४७ ३३	२ २४ ५० ३२	९ २३ ०४ १३	९ १० ०२ ४९	७ १७ ४५ ४४	५
६	६ २० ०१ ०१	१० ०८ ३२ ५०	५ ०७ १९ १५	६ ०६ ३० ३५	१ १५ ०७ २०	७ २७ ३५ ५९	१ ०४ ४३ ००	२ २४ ४७ २१	९ २३ ०४ ४१	९ १० ०३ ३०	७ १७ ४७ ५१	६
७	६ २१ ०१ १३	१० २० ४९ ५५	५ ०७ ५६ १२	६ ०६ ११ ५४	१ १५ ०० ३२	७ २८ ४८ १६	१ ०४ ३८ २४	२ २४ ४४ १०	९ २३ ०५ १४	९ १० ०४ १३	७ १७ ४९ ५९	७
८	६ २२ ०१ २६	११ ०३ २६ ११	५ ०८ ३३ ०८	६ ०६ ०४४९मा	१ १४ ५३ ३७	८ ०० ०० ३१	१ ०४ ३३ ४६	२ २४ ४१ ००	९ २३ ०५ ४९	९ १० ०४ ५९	७ १७ ५२ ०८	८
९	६ २३ ०१ ४२	११ १६ २४ ३०	५ ०९ १० ०२	६ ०६ ०८ ५१	१ १४ ४६ ३५	८ ०१ १२ ४४	१ ०४ २९ ०७	२ २४ ३७ ४९	९ २३ ०६ २९	९ १० ०५ ४६	७ १७ ५४ १८	९
१०	६ २४ ०१ ५९	११ २९ ४६ ००	५ ०९ ४६ ५४	६ ०६ २३ ३५	१ १४ ३९ २५	८ ०२ २४ ५५	१ ०४ २४ २४	२ २४ ३४ ३८	९ २३ ०७ ११	९ १० ०६ ३६	७ १७ ५६ २९	१०
११	६ २५ ०२ १८	० १३ २९ ४३	५ १० २३ ४६	६ ०६ ४८ १२	१ १४ ३२ १०	८ ०३ ३७ ०३	१ ०४ १९ ३९	२ २४ ३१ २७	९ २३ ०७ ५७	९ १० ०७ २७	७ १७ ५८ ४१	११
१२	६ २६ ०२ ३९	० २७ ३२ ३८	५ ११ ०० ३७	६ ०७ ५१ ५४	१ १४ २४ ४९	८ ०४ ४९ ०८	१ ०४ १४ ५२	२ २४ २८ १७	९ २३ ०८ ४५	९ १० ०८ २०	७ १८ ०० ५४	१२
१३	६ २७ ०३ ०१-	१ ११ ४९ ५७	५ ११ ३७ २५	६ ०८ ०४ ००	१ १४ १७ २१	८ ०६ ०१ ११	१ ०४ १० ०३	२ २४ २५ ०६	९ २३ ०९ ३८	९ १० ०९ १५	७ १८ ०३ ०८	१३
१४	६ २८ ०३ २५	१ २६ १५ ५१	५ १२ १४ १२	६ ०८ ५३ ४९	१ १४ ०९ ४८	८ ०७ १३ १०	१ ०४ ०५ १२	२ २४ २१ ५५	९ २३ १० ३२	९ १० १० १३	७ १८ ०५ २२	१४
१५	६ २९ ०३ ५१	२ १० ४४ २७	५ १२ ५० ५८	६ ०९ ५० ११	१ १४ ०२ ११	८ ०८ २५ ०८	१ ०४ ०० १९	२ २४ १८ ४४	९ २३ ११ ३०	९ १० ११ १२	७ १८ ०७ ३७	१५
१६	७ ०० ०४ १८	२ २५ १० ३९	५ १३ २७ ४३	६ १० ५२ २७	१ १३ ५४ २८	८ ०९ ३७ ०२	१ ०३ ५५ २५	२ २४ १५ ३४	९ २३ १२ ३०	९ १० १२ १३	७ १८ ०९ ५२	१६
१७	७ ०१ ०४ ४७	३ ०९ ३० ३९	५ १४ ०४ २६	६ ११ ५९ ४३	१ १३ ४६ ४१	८ १० ४८ ५२	१ ०३ ५० २९	२ २४ १२ २३	९ २३ १३ ३४	९ १० १३ १६	७ १८ १२ ०८	१७
१८	७ ०२ ०५ १७	३ २३ ४१ ५८	५ १४ ४१ ०७	६ १३ ११ ०५	१ १३ ३८ ५०	८ १२ ०० ३९	१ ०३ ४५ ३६	२ २४ ०९ १२	९ २३ १४ ४०	९ १० १४ २१	७ १८ १४ २४	१८
१९	७ ०३ ०५ ४९	४ ०७ ४३ १९	५ १५ १७ ४७	६ १४ २६ ०१	१ १३ ३० ५५	८ १३ १२ २३	१ ०३ ४० ४३	२ २४ ०६ ०१	९ २३ १५ ५०	९ १० १५ २९	७ १८ १६ ४१	१९
२०	७ ०४ ०६ २२	४ २१ ३४ ०४	५ १५ ५४ २६	६ १५ ४४ ०१	१ १३ २२ ५७	८ १४ २४ ०४	१ ०३ ३५ ५१	२ २४ ०२ ५०	९ २३ १७ ०२	९ १० १६ ३७	७ १८ १८ ५८	२०
२१	७ ०५ ०६ ५७	५ ०५ १३ ५७	५ १६ ३१ ०२	६ १७ ०४ ३५	१ १३ १४ ५६	८ १५ ३५ ४१	१ ०३ ३० ५८	२ २३ ५९ ४०	९ २३ १८ १८	९ १० १७ ४८	७ १८ २१ १५	२१
२२	७ ०६ ०७ ३३	५ १८ ४२ ३६	५ १७ ०७ ३८	६ १८ २७ १२	१ १३ ०६ ५३	८ १६ ४७ १५	१ ०३ २६ ०५	२ २३ ५६ २९	९ २३ १९ ३५	९ १० १९ ०१	७ १८ २३ ३३	२२
२३	७ ०७ ०८ ११	६ ०१ ५९ ३०	५ १७ ४४ १२	६ १९ ५१ ३१	१ १२ ५८ ४७	८ १७ ५८ ५५	१ .०३ २१ १२	२ २३ ५३ १८	९ २३ २० ५६	९ १० २० १४	७ १८. २५ ५१	२३
२४	७ ०८ ०८ ४९	६ १५ ०३ ५६	५ १८ २० ४५	६ २१ १७ १८	१ १२ ५० ३९	८ १९ १० १०	१ ०३ १६ १९	२ २३ ५० ०७	९ २३ २२ २१	९ १० २१ ३०	७ १८ २८ ०९	२४
२५	७ ०९ ०९ ३०	६ २७ ५५ १२	५ १८ ५७ १५	६ २२ ४४ १७	१ १२ ४२ ३०	८ २० २१ ३२	१ ०३ ११ २७	२ २३ ४६ ५७	९ २३ २३ ४७	९ १० २२ ४८	७ १८ ३० २७	२५
२६	७ १० १० १२	७ १० ३२ ५२	५ १९ ३३ ४४	६ २४ १२ २२	१ १२ ३४ २०	८ २१ ३२ ५०	१ ०३ ०६ ३५	२ २३ ४३ ४६	९ २३ २५ १७	९ १० २४ ०७	७ १८ ३२ ४६	२६
२७	७ ११ १० ५५	७ २२ ५७ ०३	५ २० १० ११	६ २५ ४१ २७	१ १२ २६ ०९	८ २२ ४४ ०३	१ ०३ ०१ ४३	२ २३ ४० ३५	९ २३ २६ ४९	९ १० २५ २८	७ १८ ३५ ०५	२७
२८	७ १२ ११ ४०	८ ०५ ०८ ३५	५ २० ४६ ३८	६ २७ ११ १७	१ १२ १७ ५७	८ २३ ५५ १२	१ ०२ ५६ ५२	२ २३ ३७ २४	९ २३ २८ २५	९ १० २६ ५१	७ १८ ३७ २४	२८
२९	७ १३ १२ २६	८ १७ ०९ १३	५ २१ २३ ०२	६ २८ ४१ ४८	१ १२ ०९ ४६	८ २५ ०६ १६	१ ०२ ५२ ०१	२ २३ ३४ १४	९ २३ ३० ०३	९ १० २८ १५	७ १८ ३९ ४३	२९
३०	७ १४ १३ १३	८ २९ ०१ ३४	५ २१ ५९ २४	७ ०० १२ ५३	१ १२ ०१ ३५	८ २६ १७ १६	१ ०२ ४७ १०	२ २३ ३१ ०३	९ २३ ३१ ४४	९ १० २९ ४१	७ १८ ४२ ०३	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दिसम्बर सन् २००० ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५१' ५४"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
दिसं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	दिसं.
१	७ १५ १४ ०१	९ १० ४९ ०५	५ २२ ३५ ४५	७ ०१ ४४ ३३	१ ११ ५३ २४	८ २७ २८ १०	१ ०२ ४२ ११	२ २३ २७ ५२	९ २३ ३३ २७	९ १० ३१ ०८	७ १८ ४४ २२	१
२	७ १६ १४ ५१	९ २२ ३५ ५७	५ २३ १२ ०४	७ ०३ १६ ३८	१ ११ ४५ १६	८ २८ ३८ ५९	१ ०२ ३७ ३०	२ २३ २४ ४१	९ २३ ३५ १४	९ १० ३२ ३८	७ १८ ४६ ४२	२
३	७ १७ १५ ४१	१० ०४ २६ ५५	५ २३ ४८ २०	७ ०४ ४९ ०७	१ ११ ३७ ०९	८ २९ ४९ ४३	१ ०२ ३२ ५०	२ २३ २१ ३०	९ २३ ३७ ०३	९ १० ३४ ०९	७ १८ ४९ ०१	३
४	७ १८ १६ ३३	१० १६ २७ ०३	५ २४ २४ ३५	७ ०६ २१ ४७	१ ११ २९ ०४	९ ०१ ०० २१	१ ०२ २८ १२	२ २३ १८ २०	९ २३ ३८ ५५	९ १० ३५ ४१	७ १८ ५१ २१	४
५	७ १९ १७ २७	१० २८ ४१ २९	५ २५ ०० ४८	७ ०७ ५४ २५	१ ११ २१ ००	९ ०२ १० ५५	१ ०२ २३ ३६	२ २३ १५ ०९	९ २३ ४० ४८	९ १० ३७ १५	७ १८ ५३ ४०	५
६	७ २० १८ २१	११ ११ १५ ०४	५ २५ ३६ ५९	७ ०९ २७ ०९	१ ११ १३ ००	९ ०३ २१ २१	१ ०२ १९ ०३	२ २३ ११ ५८	९ २३ ४२ ४६	९ १० ३८ ५१	७ १८ ५५ ५९	६
७	७ २१ १९ १६	११ २४ ११ ४७	५ २६ १३ ०८	७ ११ ०० ०५	१ ११ ०५ ०४	९ ०४ ३१ ४२	१ ०२ १४ ३२	२ २३ ०८ ४७	९ २३ ४४ ४५	९ १० ४० २८	७ १८ ५८ १८	७
८	७ २२ २० १२	० ०७ ३४ २०	५ २६ ४९ १४	७ १२ ३३ १६	१ १० ५७ १०	९ ०५ ४१ ५७	१ ०२ १० ०३	२ २३ ०५ ३७	९ २३ ४६ ४७	९ १० ४२ ०६	७ १९ ०० ३६	८
९	७ २३ २१ ०८	० २१ २३ २३	५ २७ २५ १९	७ १४ ०६ ३९	१ १० ४९ २१	९ ०६ ५२ ०६	१ ०२ ०५ ३८	२ २३ ०२ २६	९ २३ ४८ ५१	९ १० ४३ ४५	७ १९ ०२ ५४	९
१०	७ २४ २२ ०६	१ ०५ ३७ १५	५ २८ ०१ २३	७ १५ ४० ०२	१ १० ४१ ३६	९ ०८ ०२ ०७	१ ०२ ०१ १५	२ २२ ५९ १५	९ २३ ५० ५९	९ १० ४५ २५	७ १९ ०५ १२	१०
११	७ २५ २३ ०६	१ २० ११ ४१	५ २८ ३७ २४	७ १७ १३ २२	१ १० ३३ ५४	९ ०९ १२ ०२	१ ०१ ५६ ५६	२ २२ ५६ ०४	९ २३ ५३ ०८	९ १० ४७ ०८	७ १९ ०७ ३०	११
१२	७ २६ २४ ०६	२ ०५ ०० १२	५ २९ १३ २२	७ १८ ४६ ४३	१ १० २६ १९	९ १० २१ ५०	१ ०१ ५२ ४७	२ २२ ५२ ५४	९ २३ ५५ २०	९ १० ४८ ५३	७ १९ ०९ ४८	१२
१३	७ २७ २५ ०६	२ १९ ५५ ०१	५ २९ ४९ १८	७ २० २० १२	१ १० १८ ४८	९ ११ ३१ ३१	१ ०१ ४८ २८	२ २२ ४९ ४३	९ २३ ५७ ३४	९ १० ५० ३८	७ १९ १२ ०५	१३
१४	७ २८ २६ ०७	३ ०४ ४८ ०५	६ ०० २५ १३	७ २१ ५३ ४०	१ १० ११ २३	९ १२ ४१ ०४	१ ०१ ४४ २०	२ २२ ४६ ३२	९ २३ ५९ ५१	९ १० ५२ २५	७ १९ १४ २२	१४
१५	७ २९ २७ ०९	३ १९ ३२ १८	६ ०१ ०१ ०५	७ २३ २७ ०७	१ १० ०४ ०३	९ १३ ५० २९	१ ०१ ४० १६	२ २२ ४३ २१	९ २४ ०२ १०	९ १० ५४ १२	७ १९ १६ ३८	१५
१६	८ ०० २८ १२	४ ०४ ०२ १५	६ ०१ ३६ ५५	७ २५ ०० ४३	१ ०९ ५६ ५१	९ १४ ५९ ४५	१ ०१ ३६ १६	२ २२ ४० ११	९ २४ ०४ ३१	९ १० ५६ ०२	७ १९ १८ ५४	१६
१७	८ ०१ २९ १५	४ १८ १४ ३२	६ ०२ १२ ४२	७ २६ ३४ २९	१ ०९ ४९ ४४	९ १६ ०८ ५४	१ ०१ ३२ २०	२ २२ ३७ ००	९ २४ ०६ ५५	९ १० ५७ ५२	७ १९ २१ ०९	१७
१८	८ ०२ ३० १८	५ ०२ ०७ ३९	६ ०२ ४८ २७	७ २८ ०८ १८	१ ०९ ४२ ४५	९ १७ १७ ५४	१ ०१ २८ २८	२ २२ ३३ ४९	९ २४ ०९ २१	९ १० ५९ ४४	७ १९ २३ २४	१८
१९	८ ०३ ३१ २३	५ १५ ४१ ३३	६ ०३ २४ १०	७ २९ ४२ १२	१ ०९ ३५ ४८	९ १८ २६ ४५	१ ०१ २४ ४१	२ २२ ३० ३८	९ २४ ११ ४८	९ ११ ०१ ३७	७ १९ २५ ३८	१९
२०	८ ०४ ३२ २८	५ २८ ५७ १४	६ ०३ ५९ ५०	८ ०१ १६ १४	१ ०९ २९ ०७	९ १९ ३५ २६	१ ०१ २० ५९	२ २२ २७ २७	९ २४ १४ १९	९ ११ ०३ ३०	७ १९ २७ ५२	२०
२१	८ ०५ ३३ ३४	६ ११ ५६ १४	६ ०४ ३५ २८	८ ०२ ५० २६	१ ०९ २२ २९	९ २० ४३ ५९	१ ०१ १७ २२	२ २२ २४ १७	९ २४ १६ ५१	९ ११ ०५ २६	७ १९ ३० ०५	२१
२२	८ ०६ ३४ ३९	६ २४ ४० १८	६ ०५ ११ ०३	८ ०४ २४ ५१	१ ०९ १६ ०१	९ २१ ५२ २१	१ ०१ १३ ५०	२ २२ २१ ०६	९ २४ १९ २५	९ ११ ०७ २३	७ १९ ३२ १७	२२
२३	८ ०७ ३५ ४६	७ ०७ ११ ०७	६ ०५ ४६ ३६	८ ०५ ५९ २३	१ ०९ ०९ ४०	९ २३ ०० ३२	१ ०१ १० २३	२ २२ १७ ५५	९ २४ २२ ०२	९ ११ ०९ २०	७ १९ ३४ २९	२३
२४	८ ०८ ३६ ५३	७ १९ ३० २०	६ ०६ २२ ०६	८ ०७ ३४ १४	१ ०९ ०२ २७	९ २४ ०८ ३४	१ ०१ ०७ ०२	२ २२ १४ ४४	९ २४ २४ ४१	९ ११ ११ १७	७ १९ ३६ ४०	२४
२५	८ ०९ ३८ ००	८ ०१ ३९ ३०	६ ०६ ५७ ३३	८ ०९ ०९ १४	१ ०८ ५७ २४	९ २५ १६ २५	१ ०१ ०३ ४७	२ २२ ११ ३४	९ २४ २७ २१	९ ११ १३ १७	७ १९ ३८ ५१	२५
२६	८ १० ३९ ०८	८ १३ ४० १४	६ ०७ ३२ ५८	८ १० ४४ ३७	१ ०८ ५१ २९	९ २६ २४ ०४	१ ०१ ०० ३८	२ २२ ०८ २३	९ २४ ३० ०४	९ ११ १५ १७	७ १९ ४१ ०१	२६
२७	८ ११ ४० १६	८ २५ ३४ १५	६ ०८ ०८ २०	८ १२ २० २२	१ ०८ ४५ ४५	९ २७ ३१ ३२	१ ०० ५७ ३५	२ २२ ०५ १२	९ २४ ३२ ४८	९ ११ १७ १९	७ १९ ४३ ११	२७
२८	८ १२ ४१ २४	९ ०७ २३ ३३	६ ०८ ४३ ३९	८ १३ ५६ ३१	१ ०८ ४० १०	९ २८ ३८ ४७	१ ०० ५४ ३८	२ २२ ०२ ०१	९ २४ ३५ ३५	९ ११ १९ २१	७ १९ ४५ २१	२८
२९	८ १३ ४२ ३३	९ १९ १० ३६	६ ०९ १८ ५६	८ १५ ३२ ५१	१ ०८ ३४ ४४	९ २९ ४५ ५०	१ ०० ५१ ४७	२ २१ ५८ ५१	९ २४ ३८ २३	९ ११ २१ २४	७ १९ ४७ ३१	२९
३०	८ १४ ४३ ४२	१० ०० ५८ १८	६ ०९ ५४ ०९	८ १७ ०९ ३२	१ ०८ २९ २८	१० ०० ५२ ४१	१ ०० ४९ ००	२ २१ ५५ ४०	९ २४ ४१ १३	९ ११ २३ २८	७ १९ ४९ ४२	३०
३१	८ १५ ४४ ५०	१० १२ ५० ०५	६ १० २९ १९	८ १८ ४६ ३३	१ ०८ २४ २३	१० ०१ ५९ १८	१ ०० ४६ ०३	२ २१ ५२ २९	९ २४ ४४ ०५	९ ११ २५ ३३	७ १९ ५१ ५२	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जनवरी सन् २००१ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५२' ००"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जन.
१	८ १६ ४५ ५९	१० २४ ४९ ५१	६ ११ ०४ २७	८ २० २३ ५२	१ ०८ १९ २९	१० ०३ ०५ ४०	१ ०० ४३ ३०	२ २१ ४९ १८	९ २४ ४६ ५९	९ ११ २७ ३९	७ १९ ५४ ०१	१
२	८ १७ ४७ ०८	११ ०७ ०१ ५३	६ ११ ३९ ३१	८ २२ ०१ ५७	१ ०८ १४ ४४	१० ०४ ११ ५०	१ ०० ४० ५५	२ २१ ४६ ०७	९ २४ ४९ ५३	९ ११ २९ ४६	७ १९ ५६ ०९	२
३	८ १८ ४८ १७	११ १९ ३० ३७	६ १२ १४ ३३	८ २३ ४० १७	१ ०८ १० ११	१० ०५ १७ ४४	१ ०० ३८ २९	२ २१ ४२ ५७	९ २४ ५२ ५१	९ ११ ३१ ५४	७ १९ ५८ १५	३
४	८ १९ ४९ २६	० ०२ २० १९	६ १२ ४९ ३०	८ २५ १८ ५३	१ ०८ ०५ ४८	१० ०६ २३ २२	१ ०० ३६ ०८	२ २१ ३९ ४६	९ २४ ५५ ४९	९ ११ ३४ ०२	७ २० ०० २०	४
५	८ २० ५० ३५	० १५ ३४ ३६	६ १३ २४ २५	८ २६ ५७ ४०	१ ०८ ०१ ३७	१० ०७ २८ ४६	१ ०० ३३ ५४	२ २१ ३६ ३५	९ २४ ५८ ४९	९ ११ ३६ १०	७ २० ०२ २३	५
६	८ २१ ५१ ४३	० २९ १५ ५५	६ १३ ५९ १७	८ २८ ३६ ४१	१ ०७ ५७ ३७	१० ०८ ३३ ५३	१ ०० ३१ ४५	२ २१ ३३ २४	९ २५ ०१ ५०	९ ११ ३८ २०	७ २० ०४ २७	६
७	८ २२ ५२ ५१	१ १३ २४ ४६	६ १४ ३४ ०४	९ ०० १५ ५१	१ ०७ ५३ ४८	१० ०९ ३८ ४३	१ ०० २९ ४४	२ २१ ३० १४	९ २५ ०४ ५४	९ ११ ४० ३१	७ २० ०६ ३०	७
८	८ २३ ५३ ५८	१ २७ ५९ १२	६ १५ ०८ ४९	९ ०१ ५५ १८	१ ०७ ५० १०	१० १० ४३ १७	१ ०० २७ ४६	२ २१ २७ ०३	९ २५ ०७ ५८	९ ११ ४२ ४२	७ २० ०८ ३२	८
९	८ २४ ५५ ०६	२ १२ ५४ २५	६ १५ ४३ ३०	९ ०३ ३४ ४१	१ ०७ ४६ ४५	१० ११ ४७ ३१	१ ०० २५ ५७	२ २१ २३ ५२	९ २५ ११ ०४	९ ११ ४४ ५३	७ २० १० ३१	९
१०	८ २५ ५६ १३	२ २८ ०३ ०१	६ १६ १८ ०७	९ ०५ १३ ५१	१ ०७ ४३ ३१	१० १२ ५१ २७	१ ०० २४ १४	२ २१ २० ४१	९ २५ १४ ११	९ ११ ४७ ०६	७ २० १२ ३०	१०
११	८ २६ ५७ २१	३ १३ १५ ४५	६ १६ ५२ ४१	९ ०६ ५३ ०५	१ ०७ ४० २९	१० १३ ५५ ०५	१ ०० २२ ३७	२ २१ १७ ३१	९ २५ १७ १९	९ ११ ४९ १९	७ २० १४ २८	११
१२	८ २७ ५८ २८	३ २८ २२ ५२	६ १७ २७ १२	९ ०८ ३२ २२	१ ०७ ३७ ३९	१० १४ ५८ २२	१ ०० २१ ०७	२ २१ १४ २०	९ २५ २० ३०	९ ११ ५१ ३२	७ २० १६ २५	१२
१३	८ २८ ५९ ३५	४ १३ १५ ३६	६ १८ ०१ ३९	९ १० ११ ४०	१ ०७ ३५ ०१	१० १६ ०१ १८	१ ०० १९ ४३	२ २१ ११ ०९	९ २५ २३ ४१	९ ११ ५३ ४६	७ २० १८ २१	१३
१४	९ ०० ०० ४१	४ २७ ४७ १७	६ १८ ३६ ०२	९ ११ ५० ५५	१ ०७ ३२ ३४	१० १७ ०३ ५४	१ ०० १८ २४	२ २१ ०७ ५८	९ २५ २६ ५३	९ ११ ५५ ५९	७ २० २० १५	१४
१५	९ ०१ ०१ ४७	५ ११ ५४ ००	६ १९ १० २०	९ १३ ३० ०२	१ ०७ ३० २०	१० १८ ०६ ०७	१ ०० १७ १३	२ २१ ०४ ४७	९ २५ ३० ०७	९ ११ ५८ १३	७ २० २२ ०९	१५
१६	९ ०२ ०२ ५३	५ २५ ३४ ३३	६ १९ ४४ ३४	९ १५ ०८ ५२	१ ०७ २८ १८	१० १९ ०७ ५७	१ ०० १६ ०९	२ २१ ०१ ३७	९ २५ ३३ २१	९ १२ ०० २८	७ २० २४ ००	१६
१७	९ ०३ ०३ ५८	६ ०८ ४९ ५५	६ २० १८ ४५	९ १६ ४७ १५	१ ०७ २६ ३०	१० २० ०९ २५	१ ०० १५ ११	२ २० ५८ २६	९ २५ ३६ ३८	९ १२ ०२ ४२	७ २० २५ ५०	१७
१८	९ ०४ ०५ ०३	६ २१ ४२ ३८	६ २० ५२ ५२	९ १८ २४ ५९	१ ०७ २४ ५०	१० २१ १० २७	१ ०० १४ २०	२ २० ५५ १५	९ २५ ३९ ५४	९ १२ ०४ ५९	७ २० २७ ४०	१८
१९	९ ०५ ०६ ०८	७ ०४ १६ ०४	६ २१ २६ ५४	९ २० ०१ ४७	१ ०७ २३ २६	१० २२ ११ ०३	१ ०० १३ ३५	२ २० ५२ ०४	९ २५ ४३ १२	९ १२ ०७ १५	७ २० २९ २८	१९
२०	९ ०६ ०७ १३	७ १६ ३३ ५८	६ २२ ०० ५३	९ २१ ३७ २२	१ ०७ २२ १४	१० २३ ११ १५	१ ०० १२ ५७	२ २० ४८ ५४	९ २५ ४६ ३०	९ १२ ०९ ३०	७ २० ३१ १४	२०
२१	९ ०७ ०८ १८	७ २८ ३९ ५६	६ २२ ३४ ४५	९ २३ ११ १९	१ ०७ २१ १३	१० २४ १० ५८	१ ०० १२ २६	२ २० ४५ ४३	९ २५ ४९ ५०	९ १२ ११ ४६	७ २० ३२ ५९	२१
२२	९ ०८ ०९ २२	८ १० ३७ १९	६ २३ ०८ ३५	९ २४ ४३ १३	१ ०७ २० २३	१० २५ १० १३	१ ०० १२ ०२	२ २० ४२ ३२	९ २५ ५३ ११	९ १२ १४ ०२	७ २० ३४ ४३	२२
२३	९ ०९ १० २६	८ २२ २९ ०३	६ २३ ४२ १९	९ २६ १२ ३६	१ ०७ १९ ४७	१० २६ ०९ ०१	१ ०० ११ ४५	२ २० ३९ २१	९ २५ ५६ ३२	९ १२ १६ १९	७ २० ३६ २५	२३
२४	९ १० ११ २९	९ ०४ १७ ४०	६ २४ १५ ५९	९ २७ ३८ ५३	१ ०७ १९ २४	१० २७ ०७ १७	१ ०० ११ ३५	२ २० ३६ ११	९ २५ ५९ ५४	९ १२ १८ ३५	७ २० ३८ ०६	२४
२५	९ ११ १२ ३१	९ १६ ०५ २३	६ २४ ४९ ३३	९ २९ ०१ ३१	१ ०७ १९।१२मा	१० २८ ०५ ०१	१ ०० ११।३२मा	२ २० ३३ ००	९ २६ ०३ १७	९ १२ २० ५२	७ २० ३९ ४५	२५
२६	९ १२ १३ ३१	९ २७ ५४ १२	६ २५ २३ ०४	१० ०० १९ ४९	१ ०७ १९ १४	१० २९ ०२ १४	१ ०० ११ ३४	२ २० २९ ४९	९ २६ ०६ ४०	९ १२ २३ ०९	७ २० ४१ २४	२६
२७	९ १३ १४ ३१	१० ०९ ४६ ०७	६ २५ ५६ २९	१० ०१ ३३ ०७	१ ०७ १९ २९	१० २९ ५८'५२	१ ०० ११ ४२	२ २० २६ ३८	९ २६ १० ०५	९ १२ २५ २५	७ २० ४३ ०१	२७
२८	९ १४ १५ ३०	१० २१ ४३ १५	६ २६ २९ ४८	१० ०२ ४० ४१	१ ०७ १९ ५५	११ ०० ५४ ५५	१ ०० १२ ०१	२ २० २३ २८	९ २६ १३ ३०	९ १२ २७ ४२	७ २० ४४ ३५	२८
२९	९ १५ १६ २९	११ ०३ ४८ ०१	६ २७ ०३ ०४	१० ०३ ४१ ४६	१ ०७ २० ३४	११ ०१ ५० २३	१ ०० १२ २४	२ २० २० १७	९ २६ १६ ५६	९ १२ २९ ५९	७ २० ४६ ०७	२९
३०	९ १६ १७ २६	११ १६ ०३ १०	६ २७ ३६ १३	१० ०४ ३५ ३६	१ ०७ २१ २५	११ ०२ ४५ १३	१ ०० १२ ५५	२ २० १७ ०६	९ २६ २० २२	९ १२ ३२ १५	७ २० ४७ ३८	३०
३१	९ १७ १८ २२	११ २८ ३१ ४९	६ २८ ०९ १७	१० ०५ २१ २४	१ ०७ २२ २८	११ ०३ ३९ २३	१ ०० १२ ३१	२ २० १३ ५५	९ २६ २३ ४८	९ १२ ३४ ३२	७ २० ४९ ०८	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फरवरी सन् २००१ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५२' ।०४"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
फर.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	फर.
१	९ १८ १९ १६	० ११ १७ २१	६ २८ ४२ १६	१० ०५ ५८ २५	१ ०७ २३ ४३	११ ०४ ३२ ५४	१ ०० १४ १५	२ २० १० ४४	९ २६ २७ १५	९ १२ ३६ ४७	७ २० ५० ३८	१
२	९ १९ २० १०	० २४ २३ १२	६ २९ १५ १०	१० ०६ २५ ५६	१ ०७ २५ ११	११ ०५ २५ ४३	१ ०० १५ ०६	२ २० ०७ ३४	९ २६ ३० ४२	९ १२ ३९ ०३	७ २० ५२ ०३	२
३	९ २० २१ ०२	१ ०७ ५२ २२	६ २९ ४७ ५७	१० ०६ ४३ १८	१ ०७ २६ ५१	११ ०६ १७ ४७	१ ०० १६ ०४	२ २० ०४ २३	९ २६ ३४ १०	९ १२ ४१ १९	७ २० ५३ २९	३
४	९ २१ २१ ५३	१ २१ ४६ ५४	७ ०० २० ३९	१० ०६ ५० ००व	१ ०७ २८ ४३	११ ०७ ०९ ०७	१ ०० १७ ०९	२ २० ०१ १२	९ २६ ३७ ३८	९ १२ ४३ ३४	७ २० ५४ ५२	४
५	९ २२ २२ ४१	२ ०६ ०७ १२	७ ०० ५३ १४	१० ०६ ४५ ४३	१ ०७ ३० ४८	११ ०७ ५९ ४०	१ ०० १८ २०	२ १९ ५८ ०१	९ २६ ४१ ०६	९ १२ ४५ ५०	७ २० ५६ १२	५
६	९ २३ २३ २९	२ २० ५१ १३	७ ०१ २५ ४४	१० ०६ ३० १७	१ ०७ ३३ ०४	११ ०८ ४९ २३	१ ०० १९ ३८	२ १९ ५४ ५१	९ २६ ४४ ३४	९ १२ ४८ ०६	७ २० ५७ ३१	६
७	९ २४ २४ १५	३ ०५ ५४ ०३	७ ०१ ५८ ०८	१० ०६ ०३ ५२	१ ०७ ३५ ३२	११ ०९ ३८ १६	१ ०० २१ ०३	२ १९ ५१ ४०	९ २६ ४८ ०३	९ १२ ५० २१	७ २० ५८ ५०	७
८	९ २५ २५ ००	३ २१ ०७ ५६	७ ०२ ३० २६	१० ०५ २६ ५८	१ ०७ ३८ ०९	११ १० २६ १६	१ ०० २२ ३४	२ १९ ४८ २९	९ २६ ५१ ३२	९ १२ ५२ ३५	७ २१ ०० ०७	८
९	९ २६ २५ ४३	४ ०६ २२ ५९	७ ०३ ०२ ३६	१० ०४ ४० २५	१ ०७ ४१ ००	११ ११ १३ २१	१ ०० २४ १२	२ १९ ४५ १८	९ २६ ५५ ००	९ १२ ५४ ४९	७ २१ ०१ २३	९
१०	९ २७ २६ २६	४ २१ २८ ४५	७ ०३ ३४ ४०	१० ०३ ४५ २६	१ ०७ ४४ ०३	११ ११ ५९ ३०	१ ०० २५ ५५	२ १९ ४२ ०८	९ २६ ५८ २९	९ १२ ५७ ०२	७ २१ ०२ ३६	१०
११	९ २८ २७ ०७	५ ०६ १५ ५४	७ ०४ ०६ ३८	१० ०२ ४३ ३४	१ ०७ ४७ १७	११ १२ ४४ ३८	१ ०० २७ ४५	२ १९ ३८ ५७	९ २७ ०१ ५८	९ १२ ५९ १५	७ २१ ०३ ४७	११
१२	९ २९ २७ ४७	५ २० ३७ ३७	७ ०४ ३८ २९	१० ०१ ३६ ३९	१ ०७ ५० ४४	११ १३ २८ ४५	१ ०० २९ ४२	२ १९ ३५ ४६	९ २७ ०५ २७	९ १३ ०१ २७	७ २१ ०४ ५६	१२
१३	१० ०० २८ २६	६ ०४ ३० २३	७ ०५ १० १२	१० ०० २६ ४०	१ ०७ ५४ २१	११ १४ ११ ४९	१ ०० ३१ ४६	२ १९ ३२ ३५	९ २७ ०८ ५५	९ १३ ०३ ३९	७ २१ ०६ ०३	१३
१४	१० ०१ २९ ०४	६ १७ ५३ ४७	७ ०५ ४१ ४८	९ २९ १५ ४२	१ ०७ ५८ ०९	११ १४ ५३ ४५	१ ०० ३३ ५६	२ १९ २९ २४	९ २७ १० २४	९ १३ ०५ ५१	७ २१ ०७ ०८	१४
१५	१० ०२ २९ ४१	७ ०० ५० ००	७ ०६ १३ १८	९ २८ ०५ ४३	१ ०८ ०२ ०९	११ १५ ३४ ३२	१ ०० ३६ १२	२ १९ २६ १४	९ २७ १५ ५२	९ १३ ०८ ०२	७ २१ ०८ १२	१५
१६	१० ०३ ३० १६	७ १३ २२ ४९	७ ०६ ४४ ३९	९ २६ ५८ ३१	१ ०८ ०६ १८	११ १६ १४ ०८	१ ०० ३८ ३५	२ १९ २३ ०३	९ २७ १९ २०	९ १३ १० ११	७ २१ ०९ १४	१६
१७	१० ०४ ३० ५१	७ २५ ३६ ५९	७ ०७ १५ ५३	९ २५ ५५ ४०	१ ०८ १० ४०	११ १६ ५२ २९	१ ०० ४१ ०५	२ १९ १९ ५२	९ २७ २२ ४८	९ १३ १२ २०	७ २१ १० १४	१७
१८	१० ०५ ३१ २३	८ ०७ ३७ २९	७ ०७ ४७ ००	९ २४ ५८ २३	१ ०८ १५ ११	११ १७ २९ ३१	१ ०० ४३ ४०	२ १९ १६ ४१	९ २७ २६ १६	९ १३ १४ २९	७ २१ ११ १२	१८
१९	१० ०६ ३१ ५४	८ १९ २९ ०९	७ ०८ १७ ५८	९ २४ ०७ ३४	१ ०८ १९ ५३	११ १८ ०५ १३	१ ०० ४६ २१	२ १९ १३ ३१	९ २७ २९ ४३	९ १३ १६ ३७	७ २१ १२ ०७	१९
२०	१० ०७ ३२ २५	९ ०१ १६ २०	७ ०८ ४८ ४८	९ २३ २३ २८	१ ०८ २४ ४८	११ १८ ३९ ३२	१ ०० ४९ ०९	२ १९ १० २०	९ २७ ३३ ०९	९ १३ १८ ४५	७ २१ १३ ०१	२०
२१	१० ०८ ३२ ५४	९ १३ ०२ ४५	७ ०९ १९ ३०	९ २२ ४७ २४	१ ०८ २९ ५२	११ १९ १२ २२	१ ०० ५२ ०३	२ १९ ०७ ०९	९ २७ ३६ ३५	९ १३ २० ५२	७ २१ १३ ५३	२१
२२	१० ०९ ३३ २२	९ २४ ५१ २६	७ ०९ ५० ०४	९ २२ १८ २९	१ ०८ ३५ ०६	११ १९ ४३ ४२	१ ०० ५५ ०३	२ १९ ०३ ५८	९ २७ ४० ०१	९ १३ २२ ५८	७ २१ १४ ४३	२२
२३	१० १० ३३ ४८	१० ०६ ४४ ४३	७ १० २० ३०	९ २१ ५६ ५९	१ ०८ ४० ३१	११ २० १३ २८	१ ०० ५८ ०९	२ १९ ०० ४८	९ २७ ४३ २६	९.१३ २५ ०३	७ २१ १५ ३०	२३
२४	१० ११ ३४ १२	१० १८ ४४ २२	७ १० ५० ४६	९ २१ ४२ ४३	१ ०८ ४६ ०५	११ २० ४१ ३६	१ ०१ ०१ २१	२ १८ ५७ ३७	९ २७ ४६ ५१	९ १३ २७ ०७	७ २१ १६ १५	२४
२५	१० १२ ३४ ३४	११ ०० ५१ ४३	७ ११ २० ५३	९ २१ ३५२५मा	१ ०८ ५१ ५०	११ २१ ०८ ०२	१ ०१ ०४ ३९	२ १८ ५४ २६	९ २७ ५० १५	९ १३ २९ १०	७ २१ १७ ००	२५
२६	१० १३ ३४ ५४	११ १३ ०७ ५३	७ ११ ५० ५१	९ २१ ३४ ४६	१ ०८ ५७ ४४	११ २१ ३२ ४४	१ ०१ ०८ ०३	२ १८ ५१ १५	९ २७ ५३ ३८	९ १३ ३१ १३	७ २१ १७ ४३	२६
२७	१० १४ ३५ १३	११ २५ ३४ ०२	७ १२ २० ४०	९ २१ ४० २७	१ ०९ ०३ ५१	११ २१ ५५ ३६	१ ०१ ११ ३३	२ १८ ४८ ०४	९ २७ ५७ ००	९ १३ ३३ १४	७ २१ १८ २२	२७
२८	१० १५ ३५ ३०	०० ०८ ११ ३१	७ १२ ५० १९	९ २१ ५२ ०८	१ ०९ १० ०५	११ २२ १६ ३६	१ ०१ १५ ०९	२ १८ ४४ ५४	९ २८ ०० २२	९ १३ ३५ १५	७ २१ १८ ५८	२८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्च सन् २००१ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५२' ०८"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मार्च
१	१० १६ ३५ ४५	० २१ ०२ ०६	७ १३ १९ ४९	९ २२ ०९ २९	१ ०९ १६ ३२	११ २२ ३५ ४१	१ ०१ १८ ५०	२ १८ ४१ ४३	९ २८ ०३ ४४	९ १३ ३७ १४	७ २१ १९ ३४	१
२	१० १७ ३५ ५८	१ ०४ ०७ ५३	७ १३ ४९ ०९	९ २२ ३२ ११	१ ०९ २३ ०५	११ २२ ५२ ४४	१ ०१ २२ ३७	२ १८ ३८ ३२	९ २८ ०७ ०४	९ १३ ३९ १२	७ २१ २० ०७	२
३	१० १८ ३६ ०९	१ १७ ३१ ११	७ १४ १८ १७	९ २२ ५९ ५५	१ ०९ २९ ४८	११ २३ ०७ ४४	१ ०१ २६ ३०	२ १८ ३५ २१	९ २८ १० २३	९ १३ ४१ १०	७ २१ २० ४०	३
४	१० १९ ३६ १८	२ ०१ १४ ०६	७ १४ ४७ १६	९ २३ ३२ २४	१ ०९ ३६ ४२	११ २३ २० ३६	१ ०१ ३० २९	२ १८ ३२ ११	९ २८ १३ ४१	९ १३ ४३ ०६	७ २१ २१ ०९	४
५	१० २० ३६ २४	२ १५ १८ ०१	७ १५ १६ ०३	९ २४ ०९ २०	१ ०९ ४३ ४३	११ २३ ३१ १६	१ ०१ ३४ ३३	२ १८ २९ ००	९ २८ १६ ५८	९ १३ ४५ ०१	७ २१ २१ ३८	५
६	१० २१ ३६ २९	२ २९ ४२ ५२	७ १५ ४४ ४१	९ २४ ५० २६	१ ०९ ५० ५४	११ २३ ३९ ४१	१ ०१ ३८ ४१	२ १८ २५ ४९	९ २८ २० १५	९ १३ ४६ ५५	७ २१ २२ ०४	६
७	१० २२ ३६ ३२	३ १४ २६ २०	७ १६ १३ ०६	९ २५ ३५ २७	१ ०९ ५८ १४	११ २३ ४५ ५०	१ ०१ ४२ ५६	२ १८ २२ ३८	९ २८ २३ ३०	९ १३ ४८ ४९	७ २१ २२ २७	७
८	१० २३ ३६ ३२	३ २९ २३ २७	७ १६ ४१ २०	९ २६ २४ ०६	१ १० ०५ ३३	११ २३ ४९ ३७	१ ०१ ४७ १६	२ १८ १९ २८	९ २८ २६ ४४	९ १३ ५० ४१	७ २१ २२ ४९	८
९	१० २४ ३६ ३१	४ १४ २६ ३६	७ १७ ०९ २३	९ २७ १६ ०८	१ १० १३ २२	११ २३ ५०५१व	१ ०१ ५१ ४१	२ १८ १६ १७	९ २८ २९ ५७	९ १३ ५२ ३१	७ २१ २३ ०९	९
१०	१० २५ ३६ २७	४ २९ २६ २७	७ १७ ३७ १४	९ २८ ११ २०	१ १० २१ ०९	११ २३ ४९ ५६	१ ०१ ५६ ११	२ १८ १३ ०६	९ २८ ३३ १०	९ १३ ५४ २२	७ २१ २३ २६	१०
११	१० २६ ३६ २१	५ १४ १३ २४	७ १८ ०४ ५२	९ २९ ०९ २७	१ १० २९ ०४	११ २३ ४६ २२	१ ०२ ०० ४६	२ १८ ०९ ५५	९ २८ ३६ २०	९ १३ ५६ १०	७ २१ २३ ४१	११
१२	१० २७ ३६ १४	५ २८ ३९ १६	७ १८ ३२ १७	१० ०० १० १९	१ १० ३७ ०८	११ २३ ४० २२	१ ०२ ०५ २६	२ १८ ०६ ४४	९ २८ ३९ २९	९ १३ ५७ ५७	७ २१ २३ ५४	१२
१३	१० २८ ३६ ०५	६ १२ ३८ ३६	७ १८ ५९ २९	१० ०१ १३ ४३	१ १० ४५ १९	११ २३ ३१ ४९	१ ०२ १० ११	२ १८ ०३ ३४	९ २८ ४२ ३७	९ १३ ५९ ४३	७ २१ २४ ०६	१३
१४	१० २९ ३५ ५४	६ २६ ०९ ०६	७ १९ २६ २९	१० ०२ १९ २९	१ १० ५३ ३९	११ २३ २० ४७	१ ०२ १५ ०१	२ १८ ०० २३	९ २८ ४५ ४५	९ १४ ०१ २७	७ २१ २४ १६	१४
१५	११ ०० ३५ ४२	७ ०९ ११ २७	७ १९ ५३ १५	१० ०३ २७ २८	१ ११ ०२ ०७	११ २३ ०७ १५	१ ०२ १९ ५६	२ १७ ५७ १२	९ २८ ४८ ५०	९ १४ ०३ १०	७ २१ २४ २३	१५
१६	११ ०१ ३५ २८	७ २१ ४८ ३९	७ २० १९ ४८	१० ०४ ३७ ३२	१ ११ १० ४४	११ २२ ५१ १६	१ ०२ २४ ५६	२ १७ ५४ ०१	९ २८ ५१ ५४	९ १४ ०४ ५१	७ २१ २४ २७	१६
१७	११ ०२ ३५ ११	८ ०४ ०५ १४	७ २० ४६ ०६	१० ०५ ४९ ३७	१ ११ १९ २७	११ २२ ३२ ५१	१ ०२ ३० ००	२ १७ ५० ५१	९ २८ ५४ ५७	९ १४ ०६ ३१	७ २१ २४ ३०	१७
१८	११ ०३ ३४ ५३	८ १६ ०६ ३२	७ २१ १२ १०	१० ०७ ०३ ३५	१ ११ २८ १८	११ २२ १२ ०५	१ ०२ ३५ ०९	२ १७ ४७ ४०	९ २८ ५७ ५८	९ १४ ०८ ०९	७ २१ २४ ३१व	१८
१९	११ ०४ ३४ ३४	८ २७ ५८ ०३	७ २१ ३७ ५९	१० ०८ १९ २४	१ ११ ३७ १८	११ २१ ४९ ००	१ ०२ ४० २३	२ १७ ४४ २९	९ २९ ०० ५७	९ १४ ०९ ४७	७ २१ २४ ३१	१९
२०	११ ०५ ३४ १३	९ ०९ ४५ ०५	७ २२ ०३ ३४	१० ०९ ३७ ०१	१ ११ ४६ २४	११ २१ २३ ४५	१ ०२ ४५ ४१	२ १७ ४१ १८	९ २९ ०३ ५६	९ १४ ११ २२	७ २१ २४ २८	२०
२१	११ ०६ ३३ ५०	९ २१ ३२ २७	७ २२ २८ ५२	१० १० ५६ २३	१ ११ ५५ ३८	११ २० ५६ २५	१ ०२ ५१ ०४	२ १७ ३८ ०८	९ २९ ०६ ५२	९ १४ १२ ५८	७ २१ २४ २३	२१
२२	११ ०७ ३३ २६	१० ०३ २४ १२	७ २२ ५३ ५४	१० १२ १७ २६	१ १२ ०४ ५९	११ २० २७ ०९	१ ०२ ५६ ३१	२ १७ ३४ ५७	९ २९ ०९ ४७	९ १४ १४ ३०	७ २१ २४ १६	२२
२३	११ ०८ ३२ ५९	१० ०५ २३ ३१	७ २३.१८ ४०	१० १३ ४० ०७	१ १२ १४ २७	११ १९ ५६ ०६	१ ०३ ०२ ०३	२ १७ ३१ ४६	९ २९ १२ ४०	९ १४ १५ ०१	७ २१ २४ ०७	२३
२४	११ ०९ ३२ ३१	१० २७ ३२ ३९	७ २३ ४३ ११	१० १५ ०४ २९	१ १२ २४ ०२	११ १९ २३ २६	१ ०३ ०७ ३८	२ १७ २८ ३५	९ २९ १५ ३२	९ १४ १७ ३१	७ २१ २३ ५६	२४
२५	११ १० ३२ ००	११ ०९ ५२ [illegible]	७ २४ ०७ २४	१० १६ ३० २८	१ १२ ३३ ४५	११ १८ ४९ २०	१ ०३ १३ १८	२ १७ २५ २४	९ २९ १८ २१	९ १४ १९ ००	७ २१ २३ ४३	२५
२६	११ ११ ३१ २८	११ २२ २४ ४५	७ २४ ३१ २०	१० १७ ५८ ०४	१ १२ ४३ ३४	११ १८ १४ ०२	१ ०३ १९ ०३	२ १७ २२ १४	९ २९ २१ ०९	९ १४ २० २८	७ २१ २३ २८	२६
२७	११ १२ ३० ५३	० ०५ ०८ १४	७ २४ ५४ ५८	१० १९ २७ १५	१ १२ ५३ २९	११ १७ ३७ ४५	१ ०३ २४ ५१	२ १७ १९ ०३	९ २९ २३ ५५	९ १४ २१ ५३	७ २१ २३ ११	२७
२८	११ १३ ३० १६	० १८ ०३ ०४	७ २५ १८ १८	१० २० ५७ ५८	१ १३ ०३ ३२	११ १७ ०० ४२	१ ०३ ३० ४३	२ १७ १५ ५२	९ २९ २६ ३९	९ १४ २३ १६	७ २१ २२ ५२	२८
२९	११ १४ २९ ३७	१ ०१ ०९ ०७	७ २५ ४१ १९	१० २२ ३० ११	१ १३ १३ ४०	११ १६ २३ ११	१ ०३ ३६ ३९	२ १७ १२ ४१	९ २९ २९ २१	९ १४ २४ ३७	७ २१ २२ ३१	२९
३०	११ १५ २८ ५६	१ १४ २६ ३३	७ २६ ०४ ०२	१० २४ ०३ ५१	१ १३ २३ ५५	११ १५ ४५ २३	१ ०३ ४२ ३९	२ १७ ०९ ३१	९ २९ ३२ ०२	९ १४ २५ ५७	७ २१ २२ ०८	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सम्वत्सर फल श्रवण

अचिन्त्या व्यक्त रूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥
विनायकं प्रणम्यादौ देवी वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सर फलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया ॥२॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का नूतन सम्वत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरणादि से गृह सुशोभित करें, मंगल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करें। स्त्रियां शिशु आदि वस्त्र-आभूषण आदि धारण करके उत्सव मनावें, ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे सम्वत्सर का फल श्रवण करें।

प्रातःकाल में कटु नीम के कोमल पत्ते और पुष्प लेकर उसमें काली मिर्च, हींग, नमक (सेंधा), आजवायन, जीरा और खाँड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है।

सम्वत्सर के फल श्रवण का माहात्म्य— चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव सम्वत् का वर्षफल किसी ब्राह्मण या ज्योतिषी द्वारा सुने एवं गायत्री मंत्र **"ॐ भूर्भुवः स्वः सम्वत्सर अधिपति आवाहयामि पूजयामि च"** मंत्र का जप कर पूजन करें तथा पंजागस्थ गणेश जी और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को दान मिष्ठान्नादि युक्त भोजन करवा कर उन्हें नव वर्ष पंचांग, वस्त्र, फल, मिठाई आदि दक्षिणा सहित यथाशक्ति दान देकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करें, तदुपरान्त सम्वत्सर फल श्रवण कर सम्पूर्ण दिन आनन्द पूर्वक व्यतीत करें, जैसे कहा है—

"यश्चैत्र शुक्ल प्रतिपदे धीमान् शृंणोति वार्षीय फल पवित्रं भवेद् धनाढ्यों बहुसस्य भोगो जह्याच्च पीड़ां तनुजां च वार्षिकीम्।"

अर्थात् जो व्यक्ति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को इस पवित्र वर्ष फल का श्रवण करता है, वह बहु धन धान्य से युक्त होता है और उसके अनेक दुःखों की निवृत्ति होती है। इस दिन से श्री राम नवमी तक श्री दुर्गा पूजने एवं पाठादि का भी विशेष माहात्म्य होता है।

अथ युग व्यवस्ता (काल गणना) चारों युग एक हजार बार बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन पूरा होता है। चतुर्युगी का मान ४३,२०,००० सौर वर्ष है। इस प्रकार १००० चतुर्युगी वीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन होता है। ब्रह्मा जी के एक दिन में १४ मन्वन्तर होते हैं। एक मन्वन्तर में ७१ महायुग (चतुर्युगी) होती है। अब तक ६ मन्वन्तर के २६ महायुग बीत गये हैं और २७वां महायुग चल रहा है। इस महायुग में सतयुग, त्रेता, द्वापर बीत गये हैं। कलियुग की आयु ४३२०० वर्ष है। इसमें ५०९९ वर्ष बीत गये हैं। ब्रह्माजी की आयु का ५१वां वर्ष चल रहा है, प्रथम दिन का उदय होकर १३ घड़ी ४२ पल ३ विपल ४३ प्रविपल बीत गये हैं।

चतुर्युगानां व्यवस्था

सतयुग— इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी को हुई। इसकी आयु १७,२८,००० वर्ष की है। इसमें मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह यह चार अवतार हुए, मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरयण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी, ब्राह्मण लोग वेदों के ज्ञाता और सत्य बोलने वाले तथा त्यागी होते थे। शाप और वरदान देने में समर्थ थे। क्षत्रिय अपने बाहुबल से संसार की मर्यादा को बांधे हुये थे। वैश्य व्यापार में तत्पर, सत्यवक्ता थे। शूद्र सेवा करते हुए अपने धर्म में तत्पर थे। समय पर वर्षा होती थी, फसलें अच्छी होती थी। स्त्रियां पतिव्रता थीं, गौएं दूध अधिक देती थीं! मनुष्य की परमायुः १,००,००० वर्ष, बाल्यावस्था १०,००० वर्ष, देह की लम्बाई २१ हाथ थी। पुण्य २० विश्वे, पाप का नाम तक भी न था। सुवर्ण और रत्नादि का व्यवहार था और पुष्कर तीर्थ प्रधान था। सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण २,००० थे।

त्रेतायुग— बैशाख शुक्ल तृतीया को त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२,९६,००० वर्ष थई। इस युग से तीन अवतार वामन, परशुराम, रामचन्द्र हुए। श्री वामन जी ने राजा बलि से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समस्त पृथ्वी को तीन पैर में नाप कर राजा बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार वध करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्रजी ने रावणादि राक्षसों का वध किया। मनुष्य की परमायुः १०,००० वर्ष और बाल्यावस्था १,००० वर्ष थी। पुण्य १५ विश्वे, पाप ५ विश्वे था। पुरुष का देहमान १४ हाथ था, ब्राह्मण वेदों के ज्ञाता थे और किंचिन्नचून तपोनिष्ट त्यागी थे। वे शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियाँ पतिव्रता थीं। सुवर्ण का सिक्का चलता था। सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण ३०,००० थे। तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर युग— माघ कृष्ण ३० को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ८,६४,००० वर्ष थी। इसमें २ अवतार श्री कृष्ण जी ने कंस शिशुपालादि का वध किया और बलराम ने धर्म का उद्धार किया। पुरुष की परमायु १,००० वर्ष थी, बाल्यावस्था १०० वर्ष थी। पुरुष का देहमान ७ हाथ था। ब्राह्मण कुछ धर्म में तत्पर कुछ सत्यवक्ता, कुछ झूठ भी बोलते थे। अपने धर्म-कर्म पर स्थित परन्तु लोभयुक्त थे। चांदी के सिक्के का व्यवहार अधिक था। कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था। पुण्य १० विश्वे था। सूर्यग्रहण २४,००० और चन्द्र ग्रहण ३६,००० थे।

कलियुग— भाद्र कृष्ण १३ को कलियुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ४,३२,००० वर्ष है, इसमें बुद्ध व कल्कि अवतार हैं, उनका काम धर्म का उद्धार करना है। मनुष्य की परमायु १२० वर्ष और बाल्यावस्था १० वर्ष है। पुरुष का देहमान ३॥ हाथ है। पुण्य ५ विश्वे, पाप १५ विश्वे है, गंगा तीर्थ प्रधान है। इस युग में मिट्टी के पात्र और पत्र व ताम्र का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा। सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जायेंगे। ब्राह्मण लोग वेदों से विमुख तप, यज्ञादि धर्म-कर्म से विमुख शाप देने में असमर्थ होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को छोड़ देंगे। वैश्य लोग व्यवहार में खोटे होंगे। धूर्त विद्या की पूजा होगी। सूर्य और चन्द्र ग्रहण ४६,००० होंगे। सं. २०४६ में कलियुग के ५०९० वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और शेष कलियुग के ४,२६,९१० वर्ष रहे हैं। कलियुग के अन्त में सम्भल ग्राम में विष्णुयश नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा। कलियुग में नीच लोगों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। व्यभिचारी स्त्रियां अपने को सती कहेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे। पिता कन्या को बेचेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे। लोग गौ, ब्राह्मण की हत्या से भय नहीं करेंगे। संतान का माता-पिता के साथ धन के कारण ही प्रेम रहेगा। धर्म गौण व अर्थ प्रधान रहेगा। मुख्य तीर्थ श्रीगंगा होंगी।

प्रकाशक: ... २२८५२३४
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सम्वत् २०५७ वि. मध्ये सम्वत्सर राजादि फलम्

अथास्मिन् सम्वत्सर २०५७ वर्षे सृष्टितोगताब्दा सौर वर्ष संख्या १९५५८८५१०१, तत्र कृतयुग प्रमाणम् १७२८०००, त्रेतायुग प्रमाणम् १२९६०००, द्वापर युग प्रमाणम् ८६४०००, कलियुग प्रमाणम् ४३२०००, तन्मध्ये गतकलि: ५१०१, भोग्यकलि: सौरवर्ष संख्या ४२६८९९, श्रीकृष्ण जन्मतोगताब्दा: ५२३६, श्रीमन्नृपति वीर विक्रमादित्य राज्यात् गताब्दा: २०५७, शकाब्दा: १९२२, बार्हस्पत्यमानेन वर्षनाम आश्विन:, ईस्वीय सन २०००-२००१, हिजरी सन १४२०-२१, श्रीमहावीर निर्वाण जैन संवत् २५२६-२७, भारतीय गणराज्य सम्वत् ५१-५२ प्रवर्तते।

समय विश्वा १०, समय वाहन सिंचाणु, स्तम्भ दो वायु जलयो:, सोमवती अमावस्या २, सोमवती पंचमी ३, अंगार की चतुर्थी २, बुधाष्टमी २, भानुसप्तमी २, रवि दशमी २, समय मुहूर्ता: ३७५, समय दिनानि ३५५, तिथि क्षय: १६, तिथि वृद्धि: ११, उत्पत्ति विश्वा १०५, खर्पति विश्वा ९६, वर्षा विश्वा १५, धान्यम् १५, तृण १७, शीत ९, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, ऐक्यम् १२१, सत्य आधा, धर्म ड्योढ़ा, पाप १८, शनि दृष्टि पूर्वे नेष्टं, अस्मिन् वर्षे भारते ग्रहण २ चन्द्रमस:। वर्षनाम आश्विन:, मेघनाम आवर्त:, रोहिणी निवासो तटे, समय निवासो रजक गृहे। शुभं नास्ति दैवज्ञं शुभाशुभ चिन्तनीयम्।

वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णुविंशति का "विजय" नाम का सम्वत्सर है। जिसका फल प्राचीन आर्ष ग्रन्थों में इस प्रकार लिखा है:—

युध्यंते भू भृतोऽन्योन्यं लोकानां च धन क्षय:। दुर्भिक्षं च क्वचित् स्वस्थं बहुसस्यार्घ वृष्टय:॥

विजय नाम के सम्वत्सर में अनेक देशों में युद्धादि का भय बढ़ेगा। आतंकवादी व घुसपैठियों की गतिविधियां तेज होंगी। आर्थिक पक्ष कमजोर अर्थात् मंहगाई में वृद्धि होगी। कुछ स्थानों पर दुर्भिक्ष भय से प्रजा पीड़ित होगी। कहीं श्रेष्ठ वर्षा से अन्नादि की पैदावार भी बढ़ेगी।

अखिलेश्वर काल के कर्ता, अभियन्ता, लोकनायक, परमपिता परमात्मा की आज्ञा से चुने गये वर्ष के दशाधिकारी राजा-मन्त्री आदि का फल न्यूनाधिक मात्रा में सर्वत्र होता है। लेकिन राजा का प्रभाव सर्वाधिक वसुन्धरा का स्वर्ग, भारत का ताज काश्मीर व अफगानिस्तान में होता है। ऐसे ही मन्त्री का पूर्व के देश कलिंग में, सस्येश का ईशान पूर्वोत्तर के मध्य विदर्भ देश में, धान्येश का नर्मदा तट मध्यप्रदेश में, मेघेश का मगध देश में, रसेश का कौंकण व गोआ में, नीरसेश का उज्जैन, इन्दौर व मालवा देश में, फलेश का पश्चिमी भूभाग पर के साथ कश्मीरादि प्रदेशों में विशेष शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है। धान्येश तथा दुर्गेश का फल सर्वत्र एक समान होता है।

राजा बुधस्तत्फलम्

बुधस्य राज्ये सजलं महीतलं गृहे-गृहे तूर्य विवाह मंगलम्।
प्रकुर्वते दानदयां जनोपि स्वस्थं सुभिक्षं धनधान्य संकुलम्॥

राजा बुध का फल—इस वर्ष वर्षा उत्तम होने से धान्यादि के उत्पादन में वृद्धि होगी। प्रजा में मांगलिक व धार्मिक कार्य अधिक सम्पन्न होंगे। जनता का स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए सरकार विशेष अभियान चलायेगी। रस पदार्थों में मंदी तथा जनता का जीवन स्तर ऊंचा बढ़ेगा।

मंत्री गुरुस्तत्फलम्

विविध धान्ययुता खलु मेदिनी प्रचुर तोयधनामुदिता भवेत्।
नृपतयो जनपालन तत्परा: सुरगुरौ ननु मंत्रि समागते॥

मंत्री गुरु का फल—गुरु को मंत्री का पद मिलने से धान्यादि की पैदावार बढ़ेगी तथा वृक्षों के फल फूल अधिक लगेंगे। प्रजा में धार्मिक भावना बढ़ने से यज्ञादि अधिक होंगे। शासकों द्वारा प्रजा के हित में नये कार्यक्रमों की घोषणा की जायेगी। धान्य, फल, मेवा आदि में मंदी होगी।

सस्येश: सूर्यस्तत्फलम्

सस्याधिनाथे तरणौ हि पूर्वं धान्यंमहर्घं बहवोऽपि चौरा:।
युद्धं नृपाणां जलदा जलाढ्या स्वल्पं च सस्यं बहुमूरुहाश्च॥

सस्येश सूर्य का फल—वर्ष में जल की कमी अन्नादि के उत्पादन को प्रभावित करेगी। मानसिक व हृदय रोगों से जनता अधिक पीड़ित होगी। जीवन रक्षक दवाईयों की कीमतों में वृद्धि होने से प्रजा को कष्ट होगा। कहीं दो देशों में युद्ध अथवा आपसी सम्बन्ध कटुतापूर्ण बनेंगे।

धान्येश: शुक्रस्तत्फलम्

भृगौ पश्चिमधान्येशे पश्चात्धान्यं न पच्यते।
सस्यं समर्घतां याति स्वल्पं क्षीरं गवामपि॥

धान्येश शुक्र का फल—वैज्ञानिक अन्वेषण के आधार पर रवी की फसलों का उत्पादन अच्छा बढ़ेगा। वर्षा की कमी रहे तथा गायों के दूध भी कम रहे। अन्नादि के भाव मंदे एवं घृतादि के भाव तेज होंगे।

मेघेशो बुधस्तत्फलम्

अमृतरश्मि सुते यदि वारिपे बहुजलं तुषधान्यं रसादिकम्।
द्विजवरा यजनोत्सुक चेतसो विविध सौख्ययुता धरणी तदा॥

मेघेश बुध का फल—वर्षा असामयिक लेकिन अच्छी होगी। रसादि पदार्थों के अलावा जौ, गेहूं, चनादि का उत्पादन अच्छा होगा। व्यापारी वर्ग अपने व्यवसाय में अच्छा लाभ कमायेंगे। पृथ्वी पर सुखशांति की वृद्धि होगी।

रसेशश्चंद्रस्तत्फलम्

यदि विधौ रसपे भुवि मानवो नव नवां युवती बुभुजे प्रियाम्।
जलधरा बहुवारि विधायका रसवती धन धान्यवती मही॥

रसेश चन्द्र का फल—इस वर्ष रसपदार्थ व धान्यों का उत्पादन अच्छा हो। वर्षा उत्तम होने से जनमानस प्रसन्न रहेगा। नवीन युवास्त्रियों को भोगविलास की प्राप्ति होगी। विवाहादि उत्सव अधिक सम्पन्न होंगे तथा तेल, गुड़, खांड में मन्दी होगी।

नीरसेश: शनिस्तत्फलम्

अय: पिंडादि लोहानां कृष्ण वस्त्रादि वस्तूनाम्।
अर्घ वृद्धि: प्रजायेत मंदे नीरस नायके॥

नीरसेश शनि का फल—पेट्रोलियम पदार्थ, लोहा, डीजल, सीमेंट, काले रंग के वस्त्रों में तेजी होगी। रेल व बस तथा डाक खर्चा के शुल्क में वृद्धि होने से प्रजा को कष्ट होगा।

फलेशो बुधस्तत्फलम्

यदि बुध फलपे फलमुत्तमं जलधरा जलराशि मुचस्तदा।
बहुतृणं कुसुमै: कमलैर्युतं जनपदा जनसौख्यं मुदान्विता:॥

फलेश बुध का फल—वर्षा समयानुकूल अच्छी होने से घास-फूस, फल-फूल का उत्पादन बढ़ेगा। जनता में सुख-शांति तथा व्यापारी वर्ग धन्धों में लाभान्वित होंगे। किन्तु राजनेता अपनी-अपनी स्वार्थसिद्धि में परायण होने से लोक कल्याण के हित में नहीं सोचेंगे।

धनेशो शनिस्तत्फलम्

द्रविणपे रविजे विरलं धनं गदरता धरणी तदा सदा।
अधनतां वणिजां कृषि जीविनो द्विजवरा: पर पीडन मानसा:॥

धनेश शनि का फल—राज प्रजा व देश की आर्थिक स्थिति संकटग्रस्त होगी। देश का धन विकास कार्यों में न लगकर अनुत्पादक कार्यों में लगेगा। अधिकारी व राजनेता भ्रष्टाचार में अधिक लिप्त होंगे। ब्राह्मणों व संतजनों का अनादर होगा।

दुर्गेशो बुधस्तत्फलम्

विषम् साम्यसुखं शशिजे प्रभौ भवति राष्ट्र जनेषु विशेषत:।
शशिसुते यदि कोटक पालके पथिषु द्रव्यवतां न भयं क्वचित्॥

दुर्गेश बुध का फल—प्रजा को कभी सुख तो कभी दुख की अनुभूति होगी। चोरी, डाके, अपहरण की घटनाएं बढ़ेंगी। विदेश नीति में कमजोरी महसूस होगी जिससे उसमें परिवर्तन संभव होगा। शासकों को अपने पद को बनाये रखने के लिए अनेक असामान्य परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा।

वर्षनाम आश्विन फलम्

सुभिक्षं पूर्वसस्यं स्याज्जवर रोगाकुलं जगत्।
आश्विने शोभना वृष्टि नृपसौख्यकरी तदा॥

वर्षनाम आश्विन का फल—आश्विन नाम का वर्ष में सुभिक्ष का संचार तथा शीतकालीन फसल की पैदावार बढ़े। आधुनिक हथियारों की संग्रह करने की होड़ चलेगी। प्रजा में रोग पीड़ा की वृद्धि होगी। शासकों द्वारा प्रजा हित में नवीन विकास की योजना बनाई जाये।

मेघनाम आवर्त: फलम्—"आवर्त छिन्न वृष्टि: स्यात्।" इस वर्ष चतुर्मेघों में आवर्त नाम का मेघ होने से कहीं कम तो कहीं अधिक वर्षा होगी। प्रजा में धार्मिक भावना की वृद्धि होने से उत्सवादि अधिक होंगे।

रोहिणी निवासस्तटे फलम्—इस वर्ष रोहिणी का निवास "तट" पर है। मे जिसका फल—"तटे वृष्टि: सुशोभना॥" वर्षा की श्रेष्ठता चावल, सिंगाड़ा, गन्ना आदि पानी से उत्पन्न वस्तुओं का उत्पादन बढ़ायेगा। प्रजा में सुख-समृद्धि बढ़ेगी। खाद्यान्नों के भाव में कमी तथा उत्पादन में बढ़ोत्तरी होगी।

समय निवासो रजक गृहे फलम्—समय का निवास धोबी के घर होने से वर्षा उत्तम होगी। नदी, तालाब जल से परिपूर्ण होंगे। कहीं वायु प्रकोप भी बने। समय वाहन-"सिंचाणु" होने से पृथ्वी के कुछ भागों में अराजकता, वायु प्रकोप तथा अशांति बढ़ेगी। कहीं दुर्भिक्ष भय भी व्यापेगा। अन्नादि में तेजी होगी।

अथ (विन्ध्य से दक्षिणवासियों के लिए) अष्टोत्तरी मत से आय-व्यय चक्रम्॥

राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	५	१४	२	११	१४	२	१४	५	८	११	११	८
व्यय	५	११	११	८	२	११	११	५	११	५	५	११

अथ (विन्ध्य से उत्तरवासियों के लिए) विंशोत्तरी मत से आय-व्यय चक्रम्॥

राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	२	११	२	११	१४	२	११	२	१४	८	८	१४
व्यय	५	११	११	५	२	११	११	५	८	११	११	८

आय-व्यय देखने की विधि—अपनी राशि के आय-व्यय अंकों को जोड़कर उसमें १ घटा दें, शेष में ८ का भाग देने पर यदि अंक १।२।६।७ शेष बचें तो उस वर्ष में लाभ उत्तम रहेगा। व्यापार धन्धों में बढ़ोत्तरी होगी। यदि अंक ३।४।५ या ८ (०) शेष रहे तो लाभ कम खर्चा अधिक होगा। व्यापार में मन्दी का दौर चलेगा। दौड़धूप की अधिकता एवं अनावश्यक चिन्ताओं में बढ़ोत्तरी होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शनि की साढ़ेसाती ढैय्या और लघु कल्याणी ढैय्या विचार

इस वर्ष के प्रारम्भ से ६ जून २००० ई. तक शनि मेष राशि में तथा ७ जून २००० ई. से वर्ष समाप्ति तक शनि वक्री-मार्गी गति से वृष राशि में विचरण करेगा। मेष राशिस्थ शनि की साढ़ेसाती ढैय्या और लघु कल्याणी ढैय्या में मेष, वृष व मीन राशिवालों को क्रमश: मध्यकालीन, प्रारम्भिक एवं उतरती साढ़ेसाती तथा कन्या व मकर राशि वालों को ढैय्या शनि रहेगा। मेष राशि के शनि गोचर फल आगे दिया जा रहा है।

दिनांक ७ जून २००० ई. से वर्ष समाप्ति तक शनि वृष राशिस्थ रहेंगे। अत: मेष, वृष व मिथुन राशिवालों को क्रमश: उतरती, मध्यकालीन एवं प्रारम्भिक शनि की साढ़ेसाती रहेगी। तुला व कुंभ राशि वालों को ढैय्या शनि रहेगा। जिसका गोचर फल भी आगे दिया जा रहा है।

वर्षारम्भ से ६ जून २००० ई. तक मेष के शनि का गोचर फल

मेष-मध्यकालीन साढ़ेसाती चांदी के पाये से चालू होगी। स्वास्थ्य में नरमी, खर्चा की अधिकता रहेगी। परिश्रम प्रयत्न करने से भी कामधन्धों में सफलता कम प्राप्त होगी। स्त्री कष्ट से मन अशान्त रहेगा।

वृष-शनि की शिर पर चढ़ती साढ़ेसाती लोहे के पाद से अच्छी नहीं है। शत्रु पक्ष बढ़ने से चलते कामों में बाधा आयेगी। यात्रा में कष्ट तथा पारिवारिक क्लेश से मन में असन्तोष रहेगा।

मिथुन-आपको शनि ग्यारहवें भाव में तांबे के पाये से चलेगा। वाद-विवाद तथा राजकाज में सफलता मिलेगी। विविध प्रकार की सुख सुविधाओं में वृद्धि तथा व्यापार-धन्धों का विस्तार होगा। धर्म में रुची बढ़ेगी।

कर्क-शनि राज्य भवन में स्वर्णपाद से साधारण फलप्रद है। नवीन कार्य को सोच समझकर हाथ में लें। चालू कार्यों में सफलता व लाभ प्राप्त होगा। उच्चवर्ग के लोगों से मेलजोल बढ़ने से खर्चा बढ़ेगा।

सिंह-राशि वालों को शनि नवम भाव में रजतपाद से मिश्रित फलप्रद है। बड़े लोगों की सूझबूझ से कार्य करेंगे तो लाभ के चांस प्राप्त होंगे। अटके कार्य बनने की संभावना होगी। व्यापार में लाभ परन्तु दौड़धूप की अधिकता मन को बेचैन रखेगी।

कन्या-आपको अष्टम भाव में लघुकल्याणी ढैय्या लोहपाद से शनि अशांति व कष्टकारक रहेगा। शारीरिक व मानसिक अशान्ति से अनियमित दिनचर्या बनेगी। क्रोध की अधिकता से बनते कार्य रुक जायेंगे। आर्थिक तंगी ऋण लेने को बाध्य करेगी।

तुला-राशि वालों को सप्तम भाव में तांबे के पाये से शनि मिले-जुले फल देगा। व्यवसाय में परिश्रम प्रयत्न से लाभ के तथा प्रगति के चांस मिलेंगे। शरीर सुख साधारण तथा स्त्री सुख में कमी आने से मन अशान्त रहेगा। मित्रादि से सहयोग मिलेगा।

वृश्चिक-राशि से छटवाँ शनि रजतपाद से पारिवारिक सुख व साधनों में वृद्धि करेगा। शत्रु व रोग की कमी आने से उत्साह में बढ़ोत्तरी होगी। व्यापार धन्धों में लाभ के अच्छे चांस प्राप्त होंगे। कर्तव्यनिष्ठा बढ़ने से नये आयामों में सफलता मिलेगी।

धनु-आपको शनि पांचवें भाव में स्वर्णपाद से अच्छा नहीं है। मन विचलित, कार्य की अधिकता धन खर्चा में वृद्धि होगी। स्त्री, सन्तान सुख भी साधारण मिलेगा। व्यवसाय में अपने स्वजनों द्वारा धोखा हो सकता है। अत: सावधानी से कार्य करना श्रेयष्कर रहेगा।

मकर-राशि वालों को लोहा के पाये से लघुकल्याणी ढैय्या नेष्ट फलप्रद है। स्थान परिवर्तन, व्यवसाय में उथल-पुथल तथा मानसिक वेदना में वृद्धि होगी। शरीर में रोगपीड़ा तथा भोजन व्यवस्था में रुकावटें आने लगेंगी। स्वजनों से मनमुटाव होगा।

कुंभ-शनि तृतीय भाव में सोने के पाये से चलने से उत्साह में वृद्धि से अधूरे काम पूरे होंगे। आर्थिक लाभ भौतिक सुविधाओं में बढ़ोत्तरी करेगा किन्तु शरीर में कष्ट तथा दौड़ धूप की अधिकता बनी रहेगी। भाइयों से मनुमुटाव होगा।

मीन-राशि वालों को पैरों पर उतरती साढ़ेसाती तांबे के पाये से मानसिक खेदनाकारक है। दौड़-धूप से भी लाभ कम व खर्चा की अधिकता रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में स्थिरता तथा मान-सम्मान यथावत् रहेगा।

७ जून २००० ई. से वर्षान्त तक वृष के शनि का गोचर फल

मेष-शनि की पैरों पर उतरती साढ़ेसाती लोहे के पाये के शारीरिक पीड़ा के साथ धन खर्चा की बढ़ोत्तरी करेगी। शत्रु वृद्धि होने से बनते कार्यों में रुकावटें तथा लाभ मध्यम होगा। पारिवारिक अशांति से मन बेचैन रहेगा।

वृष-आपको शनि की मध्यकालीन साढ़ेसाती हृदय पर चालू होगी। स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव के साथ पारिवारिक सुख में कमी की अनुभूति होगी। किन्तु तांबे के पाये से प्रवेश धर्म और धैर्यावलम्बन से रुका कार्य पूरा होने में सहायक होगा। श्रम व प्रयत्न से अनेक कार्यों में सफलता भी प्राप्त होगी।

मिथुन-राशिवालों को आरम्भिक शनि की साढ़ेसाती शिर पर रजत पाद से प्रारम्भ होगी। आर्थिक संकट के साथ शारीरिक रोग पीड़ा की वृद्धि होगी। स्वजनों से मनमुटाव तथा शत्रु वृद्धि होने से मन विचलित रहेगा। पुराने व्यवसाय में लाभ यथावत् किन्तु नये कार्यों में बाधाएं उत्पन्न होंगी।

कर्क-आपको एकादश भाव में शनि श्रेष्ट किन्तु स्वर्णपाद से श्रम-संघर्ष कारक रहेगा। धर्म व अध्यात्म में रुचि बढ़ने के साथ परिवार में आदर सम्मान बढ़ेगा। भाई बहिनों व स्वजनों का सुख सहयोग मिलेगा। वाद-विवाद, मुकदमा व परीक्षा प्रतियोगिताओं में सफलता मिलने के योग हैं।

सिंह-शनि सिंह राशिवालों को दशमभाव में लोहे के पाये से आने के कारण भौतिक सुख-सुविधाओं की वृद्धि मानसिक चिन्ता का कारण बनेगी। उच्चाधिकारियों से मेलजोल तथा यात्रा से लाभ के चांस बढ़ेंगे किन्तु धन व्यय की अधिकता से ऋण लेने के अवसर बढ़ेंगे।

कन्या-आपको स्वर्ण पाद से नवम भाव का शनि साधारण फलदायक रहेगा. शारीरिक निर्बलता किसी भी काम में मन नहीं लगने देगी। पारिवारिक सुख में कमी रहेगी। परिश्रम प्रयत्न करने पर भी लाभ के चांस कम प्राप्त होंगे। धार्मिक भावना भी कम होती दिखाई देगी।

तुला-तुला राशिवालों को अष्टमभाव में लघु कल्याणी ढैय्या ताम्रपद से रहेगा. क्रोध व जोश बनते कार्यों में बाधक बनेंगे। ग्रह क्लेश, अनियमित दिनचर्या स्वास्थ्य को कमजोर बनायेगी। धन लाभ कम खर्च अधिक होगा। स्वजनों का सहयोग नाममात्र का प्राप्त होगा।

वृश्चिक-शनि आपको सप्तम भाव में रजत पाद से मध्यम फलप्रद रहेगा। लगन मेहनत से कार्य करने पर लाभ तथा मनोबल बना रहेगा। खर्चा की अधिकता, शरीर में कमजोरी के बावजूद सभी कार्य व्यवस्थित रूप से चलेंगे। नौकरी-व्यापार में साधारण सफलता के योग हैं।

धनु-आपको शनि छठे भाव में रचनात्मक कार्यों में सफलता के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में रुचि बढ़ायेगा। पारिवारिक झंझटों को बुद्धि की चातुर्यता से निपटायेंगे। सहयोगियों के निर्णय को पूर्ण विचार कर अन्तिम निर्णय दें अन्यथा चिन्ता व अशान्ति तथा धन हानि के योग बन सकते हैं।

मकर-राशि वालों को तांबे के पाये से पंचम भाव में शनि विचरण करेगा। बुद्धि में न्यूनता धन का सदुपयोग कम करेगी। भाई बहिनों से सहयोग सामान्य तथा दौड़धूप की अधिकता रहेगी। घर गृहस्थी के निर्वाह में सफल होने से मनोबल अच्छा बना रहेगा।

कुंभ-आपको शनि का लघु कल्याणी ढैय्या स्वर्णपाद से अशांतिप्रद रहेगा। अधिक परिश्रम प्रयत्न करने से स्वल्प लाभ, पारिवारिक संघर्ष तथा पेट के रोग से कष्ट संभव है। व्यापार में लगे व्यक्तियों को दौड़धूप की अधिकता एवं चलते कामों में बाधा उपस्थित हो सकती है।

मीन-शनि पराक्रम स्थान में चांदी के पाये से भौतिक सुख साधनों के साथ मान-सम्मान में वृद्धि होगी। उच्चाधिकारियों से मेलजोल तथा अधूर पड़े कार्यों में पुन: चालू करने का अवसर मिलेगा। व्यवसाय में प्रगति होने से धन लाभ तथा घर में मांगलिक उत्सवादि में मन प्रसन्न रहेगा।

गुरु संचार का फल

सम्वत् २०५७ वि. के प्रारंभ में गुरु मेष राशि में विचरण करते हुए दिनांक २ जून २००० को सायंकाल के समय वृष राशि में प्रवेश करेगा। गतवर्ष गुरुदेव २६ मई १९९९ ई. को १६।३९ बजे मेष राशि में प्रवेश किया। प्रवेश के समय तात्कालिक चन्द्रमा कन्या राशि में रहा तदनुसार मेष, कन्या, वृश्चिक राशिवालों को स्वर्णपाद से, वृष, सिंह, मकर राशिवालों को रजतपाद से, मिथुन, तुला, कुंभ राशिवालों को स्वर्णपाद से तथा कर्क, धनु व मीन राशि वालों को ताम्रपाद से गुरु वर्षारम्भ में विचरण करेगा। जिसका गोचर फल गतवर्ष की पंचांग जंत्री में देखा जा सकता है।

इसी वर्ष गुरु दिनांक २ जून २००० ई. को सायं ६।५५ बजे वृष राशि में प्रवेश कर वर्ष अन्त तक वक्रमार्गी गति से विचरण करता रहेगा। वृष राशि में प्रवेश करते समय तात्कालिक चन्द्रमा वृष राशि में ही रहेगा। अत: यहां गुरु, मेष, कन्या, मकर राशिवालों को रजतपाद से भाग्योन्नति, कर्मक्षेत्र का विस्तार व लाभदायक रहेगा। वृष, कर्क व धनु राशि वालों को स्वर्णपाद से संघर्ष, दुर्बलता व स्वजनों से मनमुटाव कारक रहेगा। मिथुन, तुला व कुंभ राशिवालों को गुरु लोहे के पाये से अच्छा नहीं रहेगा। ग्रह प्रपंच, अपव्यय तथा सत्कर्मों में मन कम लगेगा। कामधन्धों से लाभ कम खर्चा अधिक बढ़ेगा। सिंह, वृश्चिक, मीन राशि वालों को ताम्रपाद से गुरु अभीष्ट योजनाओं से लाभ, सुख तथा मान सम्मान में बढ़ोत्तरी करेगा।

राहु-केतु का गोचर फल

इस वर्ष २०५७ वि. में वर्षारम्भ से ३० जुलाई सन् २००० ई. तक राहु कर्क राशि में तथा केतु मकर राशि में विचरण करेगा। दिनांक ३० जुलाई २००० ई. रात्रि के ९।२७ बजे से राहु मिथुन राशि में तथा केतु धन राशि में प्रवेश कर वर्ष समाप्ति तक इसी राशि में विचरण करेंगे। जिसका गोचर फल इस प्रकार है।

वर्ष प्रारम्भ से ३० जुलाई २००० ई. तक राहु—वृष, कन्या, तुला एवं कुंभ राशिवालों को उत्तम फलप्रद और मेष, कर्क, सिंह व धनु राशिवालों को नेष्ट फलप्रद रहेगा। यहां केतु, सिंह, वृश्चिक, मीन राशिवालों को उत्तम तथा मिथुन, तुला, मकर व कुंभ राशिवालों को नेष्ट फलदायक रहेगा। शेष अन्य राशिवालों को मिलेजुले फल होंगे।

दिनांक ३१ जुलाई २००० ई. से वर्ष अन्त तक राहु—मेष, सिंह, कन्या व मकर राशि वालों को श्रेष्ठ तथा मिथुन, कर्क, वृश्चिक एवं मीन राशिवालों को अशुभ फलदायक रहेगा। शेष राशिवालों को मिलेजुले फल प्राप्त होंगे। यहां केतु—कर्क, तुला, कुंभ व मीन राशिवालों को उत्तम फल प्रद रहेगा। वृष, कन्या, धनु व मकर राशि वालों को अशांति कारक तथा शेष अन्य राशिवालों को मिश्रित फलप्रद रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र शुक्ल पक्ष-१

श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ता. ५ से १८ अप्रैल सन् २००० ई., राष्ट्रीय मिति १६ से २९ चैत्र तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, बसंत ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ना. मि.	ति	वा	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	न	नक्षत्र घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	यो	योग घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	क	करण घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	स्टैं.टा. सूर्योदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
१६	१	बु	३९	१०	२१	५२	रे	२०	४०	१४	२८	वै	५२	३२	२७	१३	कि	११	४०	१०	५२	३१	०४	६	१२	१८	३९	२३	२९	5	मे. १४।४८	११	२१	३९	१७	[illegible]	६	५९	१९	२६	बसन्त नवरात्रारंभ, नूतन संवत्सरारंभ, घटस्थापनं, वर्षफल श्रवण, A
१७	२	गु	३३	५२	१९	४४	अ	१७	२७	१३	१०	वि	४५	१२	२४	१६	बा	६	४०	८	५१	३१	०८	६	११	१८	३९	२४	३०	6	मेष	११	२२	३८	२१	३	७	५१	२०	१४	भरणी २ में गुरु प्र. २७।४८, चन्द्रदर्शन मु. १५, महर्घ, सिंधारा, चेटीचंड B
१८	३	शु	२८	००	१७	२२	भ	१३	३५	११	३६	प्री	३७	३७	२१	१३	तै	१	०	६	३४	३१	१३	६	१०	१८	४०	२५	मुह.	7	वृ. १७।११	११	२३	३७	२४	०	८	४३	२१	११	भद्रा २८।०८ से, गणगौर पूजन मेला राजस्थान, मत्स्य ज., मन्वादि, C
१९	४	श	२१	५५	१४	५५	कृ	९	२५	९	५५	आ	२९	५०	१८	०५	वि	२१	५५	१४	५५	३१	१७	६	०९	१८	४०	२६	२	8	वृष	११	२४	३६	२४	[illegible]	९	३५	२२	०८	भद्रा १४।५५ तक, मीन में बुध प्रवेश २४।२३, वैनायक ४ व्रत
२०	५	र	१५	५५	१२	३०	रो	५	१७	८	१५	सौ	२२	०७	१४	५१	बा	१५	५५	१२	३०	३१	२२	६	०८	१८	४१	२७	३	9	मि. १९।५६	११	२५	३५	२१	५६	१०	२७	२३	०५	श्री लक्ष्मी पूजनारंभ, कल्पादि ५, हयव्रत ५, श्री रामजन्मोत्सव D
२१	६	चं	१०	०७	१०	१०	मृ	२/५०	१०/४२	६/२०	३८/२२	शो	१४	४०	११	५९	तै	१०	०७	१०	१०	३१	२६	६	०७	१८	४१	२८	४	10	मिथुन	११	२६	३४	१७	५४	११	२२	२४	०२	मे. माई सरखाना अमृतसर, जैन आयंबिल ओली प्रा., भा. रेल सप्ताह प्रा.
२२	७	मं	४	४५	८	००	पुन	५४	३२	२७	४५	अ	७	३२	९	०७	व	४	४५	८	००	३१	३०	६	०६	१८	४२	२९	५	11	क. २२।५४	११	२७	३३	११	५१	१२	१७	२४	५७	भद्रा ८।०० से १९।०२ तक, उ.भा. में बुध प्रवेश ८।३०, श्री दुर्गाष्टमी, E
०	८	मं	५९	५५	३०	०४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी क्षयः F (पंजाब), मेषादि (तमिल.), सौर मास वैशाख प्रा.
२३	९	बु	५५	३०	२८	१७	पु	५२	०२	२६	५४	सु	०/५४	४५/२७	६/२७	२३/५२	बा	२७	३७	१७	०८	३१	३४	६	०५	१८	४३	३०	६	12	कर्क	११	२८	३२	०२	४९	१३	१२	१	३१	नवरात्रा समाप्त, श्री रामनवमी व्रत, मध्यान्ह कर्क लग्न में रामजन्मोत्सव
२४	१०	गु	५१	४०	२६	४३	श्ले	५०	०३	२६	०४	शू	४८	३५	२५	२९	तै	२३	३०	१५	२७	३१	३८	६	०३	१८	४३	वै.	७	13	सिं. २६।०४	११	२९	३०	५१	४८	१४	०४	२	१५	अश्विनी मेष में सूर्य प्रवेश १७।२३, संक्रांति मु. १५, महर्घ, वैशाखी F
२५	११	शु	४८	२५	२५	२४	म	४८	३२	२५	२७	गं	४३	०७	२३	१७	व	२०	००	१४	०२	३१	४२	६	०२	१८	४४	२	८	14	सिंह	००	००	२९	३९	४६	१४	५६	२	५९	भद्रा १४।०२ से २५।२४ तक, कामदा एकादशी व्रत स्मा. वैष्ण., G
२६	१२	श	४५	५०	२४	२१	पू.फा.	४७	४०	२५	०५	वृ	३८	१५	२१	१९	ब	१७	०५	१२	५१	३१	४६	६	०१	१८	४४	३	९	15	सिंह	००	०१	२८	२५	४३	१५	४८	३	४४	रेव. में शुक्र प्रवेश १२।५३, भर. ४ में शनि प्र. १०।२०, कामदा एका. H
२७	१३	र	४४	००	२३	३६	उ.फा.	४७	३७	२५	०३	ध्रु	३३	५७	१९	३५	की	१४	४५	११	५४	३१	५०	६	००	१८	४५	४	१०	16	कं. ७।०४	००	०२	२७	०८	४१	१६	४७	४	२९	प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी, श्री महाबीर ज., मुहर्रम ताजिया (मु.) J
२८	१४	चं	४३	००	२३	११	ह	४८	२२	२५	२०	व्या	३२	०२	१८	४८	ग	१३	२०	११	१९	३१	५४	५	५९	१८	४५	५	११	17	कन्या	००	०३	२५	४९	३९	१७	३२	५	१४	भद्रा २३।११ से, दमनक चतुर्दशी, बाला सुन्दर मेला देवबन्द (उ.प्र.)
२९	१५	मं	४३	००	२३	१०	चि	५०	१५	२६	०४	ह	२७	३२	१६	५९	वि	१२	५५	११	०८	३१	५८	५	५८	१८	४६	६	१२	18	तु. १३।४०	००	०४	२४	२८	३८	१८	२४	५	५९	भद्रा ११।०८ तक, **चैत्री पूर्णिमा, सत्यव्रत**, वैशाख स्नान प्रा., K

A गुड़ी पड़वा, आर्य समाज स्थापना दिवस, गौतम ज., मेला चीमान नानकसर (पं.), वैधृतिपुण्यम्, पंचक समाप्त १४।२८ B श्री झूलेलाल जयंती, उत्सव सिन्धी सम्प्रदाय C सौभाग्य तृतीया व्रत, आन्दोलन तृतीया (बिहार), मन्वादि, शिव शक्ति पूजन. मुहर्रम मु. मास १ हिजरी सन् १४२१ प्रा., विश्व स्वास्थ्य दिवस D प्रा. कर्क लग्न में, स्कन्द षष्ठी E अशोकाष्टमी, अन्नपूर्णा पूजा, भवान्युत्पत्ति, दुर्गापजून प्रा., मेला मनसा देवी, मेला बाहुफोर्ट (कश्मीर), भौमाष्टमी G श्री लक्ष्मीकान्त डोलोत्सव, डॉ. अम्बेडकर ज., विशु (केरल), वैशाखादि (बंगाल), विगुविधु (आसाम) H व्रत निम्बा., हरिदमनोत्सव J मीनाक्षी कल्याणम् K श्री हनुमान जयन्ती, मन्वादि, सिद्धांचल यात्रा, जैन आयंबिल ओली समाप्त, मेला मानकपुर, शरीफ रोपड़

चैत्र शु. ७ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ११ अप्रैल [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. १८ अप्रैल ❖ चैत्र शु. १५ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	२	०	११	०	११	०	३	९	९	९	७
२७	२०	१९	३	१७	११	२२	५	५	२६	१२	१८
३३	९	५५	८	३६	२१	४९	५१	५१	१०	३०	५१
११	५५	३७	५९	१७	१७	१२	५०	५०	४१	४६	१०
५८	८१३	४३	८८	१३	७४	७	३	३	२	०	०
५९	५३	११	२०	५४	०	१७	११	११	३	५२	५२
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

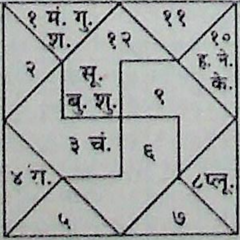

इस चान्द्र सम्वत्सर का प्रारम्भ बुधवार को होने से वर्ष का राजा बुध बना है अतः प्रजा में सुख शांति तथा मांगलिक कार्यों के प्रति जनता में उत्साह रहेगा। वर्षा उत्तम होने से धन धान्यादि की वृद्धि होगी। यथा—"**बुधस्य राज्ये धन धान्य सङ्कुलम्। महीतलं वृष्टिरनुत्तमा च। जन्म विवाहोत्सव यज्ञकांक्षिणः। सुभिक्षमस्मिन्बहुवात वृष्टिः॥**" किन्तु वर्ष सम्वत्सर का नाम "विजय" होने से शासकों में परस्पर विरोध, युद्धादि भय, आणुविक स्पर्धा से जन धन की हानि होगी। यहां मंगल-शनि का योग भी मेष राशि में चल रहा है। ता. १५ व १६ अप्रैल को अंश साम्य योग होगा। जिसके फलस्वरूप युद्धप्रिय देश शांति प्रयासों को विफल करेंगे। जनता रोगोत्पात, अराजकता, साम्प्रदायिक उपद्रवों से पीड़ित रहेगी। आर्थिक तंगी तथा महंगाई की वृद्धि भी होगी। **मंगल शनि के योग का फल—"युद्धदौ शनि माहेयो।"** उत्तरी-पश्चिमी देशों में परिस्थितियां विषम होती दिखाई देंगी। पाकिस्तान, चीन, अरब, ईरान, ईराक में युद्धादि गतिविधियां बढ़ेंगी। **तेजी मन्दी**

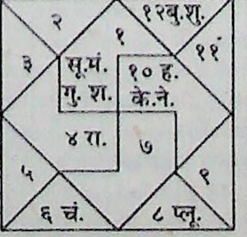

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	५	०	११	०	११	०	३	९	९	९	७
४	२५	२४	१४	१९	१९	२३	५	५	२६	१२	१८
२४	४	५६	०२	१४	५९	४०	२९	२९	२४	३६	४४
२८	४१	५७	१०	१३	१२	४१	३५	३५	११	१२	३६
५८	८०४	४२	९९	१४	७३	७	३	३	१	०	१
३८	३९	४१	५२	६	५७	२७	११	११	०५	३९	३
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

विचार—द्वितीया गुरुवार को चन्द्रदर्शन तथा दशमी गुरुवार को मेष संक्रांति १५ मुहूर्ती को होने से रुई, कपास, सूत, तेल, घृत, सरसों, अलसी, पाट, बारदाना में तेजी तथा सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में घटाबढ़ी से मन्दी की चाल निकले। अनाजों के भाव स्थिर रहेंगे। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में सुदूर पूर्वोत्तर असम, नागालैण्ड, सिक्किम में बादल वर्षा का योग रहेगा। राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली में वायुवेग बढ़ेगा। कहीं कहीं साधारण वर्षा या बूंदाबांदी होगी। पक्षान्त में कहीं वर्षा से कृषि में हानि संभव है। **शकुन विचार**—चैत्र सुदी (शुक्ल) में उत्तर, पूर्व की वायु चले तो बहुत श्रेष्ठ होती है। प्राचीन आचार्यों ने इस वायु को—"**मृदु मृदुल शुभ पवना शस्ताः**" बताया है। चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को आकाश साफ रहे तो उत्तम माना गया है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वैशाख कृष्ण पक्ष-२ श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ता. १९ अप्रैल से ४ मई सन् २००० ई., राष्ट्रीय मिति ३० चैत्र से १४ वैशाख तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
३०	१	बु	४४	२०	२३	४१	स्वा	५३	१७	२७	१६	वज्र	२५	३७	१६	१२	बा	१३	३५	११	२३	३२	०२	५	५७	१८	४७	७	१३	19	तुला	००	०५	२३	०६	[illegible]	१९	२६	६	४१	रेवती में बुध प्रवेश १९।१३, सायन वृष में सूर्य प्रवेश २४।०९,
३१	२	गु	४७	००	२४	४४	वि	५७	३५	२८	५८	सि	२४	४०	१५	४८	तै	१५	२७	१२	०७	३२	०६	५	५६	१८	४७	८	१४	20	वृ. २२।३०	००	०६	२१	४२	३४	२०	१०	७	३३	कृत्तिका में मंगल प्रवेश १५।१६, ग्रीष्म ऋतु प्रारंभ
वैशा.	३	शु	५०	५५	२६	१७	अनु	६०	००	-	-	व्य	२४	५५	१५	५३	व	१८	४७	१३	२६	३२	१०	५	५५	१८	४८	९	१५	21	वृश्चिक	००	०७	२०	१६	३१	२१	३९	९	१७	भद्रा १३।२६ से २६।१७ तक, भरणी तीन में गुरु प्रवेश ११।२०, A
२	४	श	५६	०५	२८	२०	अनु	३	१५	७	१२	व	२६	००	१६	१८	ब	२३	२२	१५	१५	३२	१४	५	५४	१८	४८	१०	१६	22	वृश्चिक	००	०८	१८	४७	३०	२१	५५	८	२५	कृष्ण चतुर्थी व्रत
३	५	र	६०	००	-	-	ज्ये	१०	००	९	५३	प	२७	५५	१७	०३	कौ	२९	००	१७	२९	३२	१८	५	५३	१८	४९	११	१७	23	ध. ९।५३	००	०९	१७	१७	२८	२२	२४	१०	०९	शनि पश्चिम में अस्त ५।५८, इस्टर सण्डे, बाबू कुंअर सिंह ज. (बिहार)
४	५	चं	२	०७	६	४३	मू	१७	३०	१२	५२	शि	३०	३०	१८	०४	तै	२	०७	६	४३	३२	२२	५	५२	१८	५०	१२	१८	24	धनु	००	१०	१५	४५	२६	२३	०९	११	०१	गुरु तेग बहादुर जयंती [अगस्त्य तारा अस्त]
५	६	मं	८	४५	९	२१	पू.षा	२५	१७	१५	५८	सि	३३	०५	१९	०५	व	८	४५	९	२१	३२	२६	५	५१	१८	५०	१३	१९	25	म. २२।४५	००	११	१४	११	२४	२३	४५	११	५३	भद्रा ९।२१ से २२।३५ तक, वृष में मंगल प्रवेश ७।४७, गुरु वृद्धत्व प्रा. B
६	७	बु	१५	०५	११	५२	उ.षा	३२	५२	१८	५९	सा	३५	३५	२०	०४	ब	१५	०५	११	५२	३२	३०	५	५०	१८	५१	१४	२०	26	मकर	००	१२	१२	३५	२३	२४	२१	१२	४५	अश्विनी मेष में शुक्र प्रवेश ८।३३, अश्विनी मेष में बुध प्रवेश २९।४४, C
७	८	गु	२०	३२	१४	०२	श्र	३९	२५	२१	३५	शुभ	३७	०७	२०	४०	कौ	२०	३२	१४	०२	३२	३३	५	४९	१८	५१	१५	२१	27	मकर	००	१३	१०	५८	२०	२४	५७	१३	३७	भरणी में सूर्य प्रवेश ९।१३, बुध पूर्व में अस्त १०।३८, शीतलाष्टमी D
८	९	शु	२४	३७	१५	४०	ध	४४	३२	२३	३८	शु	३७	३२	२०	५०	ग	२४	३७	१५	४०	३२	३६	५	४९	१८	५२	१६	२२	28	कुं. १०।४०	००	१४	०९	१८	१८	१	३३	१४	२९	भद्रा २८।०७ से, गुरु पश्चिम में अस्त १७।३५, धनि. १ में हर्षल प्रवेश E
९	१०	श	२६	५२	१६	३३	श	४७	३७	२४	५१	ब	३६	३३	२०	२५	वि	२६	५२	१६	३३	३२	४०	५	४८	१८	५३	१७	२३	29	कुम्भ	००	१५	०७	३६	१७	२	०९	१५	२१	भद्रा १६।३३ तक, [गुरु अस्त]
१०	११	र	२७	१२	१६	४०	पू.भा	४८	५७	२५	२२	ऐं	३३	५२	११	२०	बा	२७	१२	१६	४०	३२	४४	५	४७	१८	५३	१८	२४	30	मी. ११।२०	००	१६	०५	५३	१६	२	४५	१६	१३	वरूथिनी एकादशी व्रत (सबका), श्री बल्लभाचार्य जयंती
११	१२	चं	२५	२२	१५	५५	उ.भा	४८	०७	२५	०१	वै	२९	३५	१७	३६	तै	२५	२२	१५	५५	३२	४८	५	४६	१८	५४	१९	२५	M1	मीन	००	१७	०४	०९	१४	३	२९	१७	०५	मंगल पश्चिम में अस्त १४।५०, सोम प्रदोष व्रत, मई मास ५ ता. ३१,F
१२	१३	मं	२१	४२	१४	२६	रे	४५	३७	२४	००	वि	२३	५०	१५	१७	व	२१	४२	१४	२६	३२	५२	५	४५	१८	५४	२०	२६	2	मे. २४।००	००	१८	०२	२३	११	४	१२	१८	५७	भद्रा १४।२६ से २५।२३ तक, पंचक समाप्त २४।००, मासशिवरात्रि व्रत
१३	१४	बु	१६	२७	१२	१९	अ	४१	४५	२२	२६	प्री	१६	४५	१२	२६	श	१६	२७	१२	१९	३२	५५	५	४४	१८	५५	२१	२७	3	मेष	००	१९	००	३४	१०	४	५६	१९	४५	भरणी में बुध प्रवेश २२।०६, पितृकार्याऽमावस्या
१४	३०	गु	९	५५	९	४२	भ	३६	४२	२०	२५	आ	८	४५	९	१४	ना	९	५५	९	४२	३२	५८	५	४४	१८	५६	२२	२८	4	वृ. २५।५२	००	१९	५८	४४	८	५	३९	१९	४९	देवकार्याऽमावस्या, श्री शुकदेव जयंती, देव दामोदर तिथि आसाम.G

A राष्ट्रीय वैशाख मासारंभ, गुडफ्राइडे, व्यतिपात पुण्यं B १७।३५, अगस्त्य (तारा) अस्त १८।३८ C गुरु अर्जुन देव जयंती, कालाष्टमी D (बूढ़ा बासोड़ा), ठंडा भोजन करना चाहिए
E १०।०७, पंचक प्रारंभ १०।४० से F मई दिवस, विश्व मजदूर दिवस, वैधृति पुण्यं G मेला पिंजोर (हरियाणा)

वैशाख कृ. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २७ अप्रैल [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. ४ मई ❖ वैशाख कृ. ३० गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	९	१	११	०	०	०	३	९	९	९	७
१३	१५	१	२९	२१	१	२४	५	५	२६	१२	१८
१०	१४	२०	५८	२१	४	४४	०	०	३८	४०	३४
५८	४	५६	५३	४४	३१	४७	५८	५८	२३	५२	२३
५८	७९६	४२	११४	१४	७३	७	३	३	१	०	१
२०	२७	२६	५३	१४	५४	६०	११	११	२२	२१	१५
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अश्वि.	[illegible]	कृत्ति.	रेवती	भरणी	अश्वि.	भरणी	पुष्य	उ.षा.	धनि.	श्रवण	ज्येष्ठा

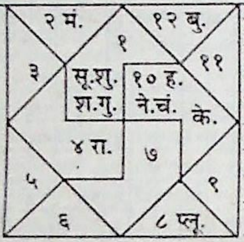

इस पक्ष के आरम्भ में (मेष राशि में) चार ग्रहों का योग तथा ता. ३ व ४ मई को छः ग्रहों का योग बन रहा है। जिसका फल प्राचीन आचार्यों ने अशांति कारक बताया है। **यथा—"षड्वै ग्रहाः घ्नंति समस्त भूपान्।"** विश्व के अनेक शासकों के सामने असामान्य परिस्थितियां उपस्थित होंगी। कुछ देशों में युद्धादि भय, प्रकृति प्रकोप, महामारी से जन-धन की हानि होगी। राजनैतिक उथल-पुथल, आर्थिक संकट, लूटपाट की वृद्धि से जनता में असन्तोष बढ़ेगा। चीन, जापान, अमेरिका, रूस, अफ्रीका, भारत व पाकिस्तान आदि देशों में अशांति के बादल अधिक मंडरायेंगे। यहां आठ से दश ग्रहों का केन्द्र योग भी बना हुआ है जो भूमण्डल पर अनेकत्र विषमय कारी घटनाएं उपस्थित करेगा। विकसित देश विकासशील देशों पर अपना प्रभुत्व जमाने का प्रयास करेंगे। **तेजी मन्दी विचार**—पक्षारंभ में धान्य, जौ, गेहूँ, चना, मूंगफली, सरसों में मन्दी का संचार हो किन्तु २३ अप्रैल को शनि का अस्त एवं २५ अप्रैल को वृष राशि में मंगल आने से तेजी की चाल निकलेगी। रुई, सूत, पाट, बारदाना, सोना, चांदी, तांबा, पीतल आदि धातु में व शेयर्स बाजार में तेजी होगी। **यथा—"वृष राशी यदा भौम सर्वधान्य महर्घता। चन्दनं कुंकुमं वस्त्रं कार्पासादि महर्घता॥"** **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में मंगल, बुध, गुरु, शनि चारों ग्रहों के अस्त होने से राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, म. प्र. के साथ तटीय प्रदेशों में आंधी तूफान व रोगोत्पात से हानि होगी। कहीं-कहीं तेज हवाओं के साथ वर्षा व बादल गर्जना संभव है। **शकुन विचार**—वैशाख कृष्ण प्रतिपदा को सूर्य बादलों में उगे तथा एकादशी को आकाश में अच्छे बादल चाल बंधे तो अन्नादि का स्टाक नहीं करना चाहिए अर्थात् संवत् श्रेष्ठ तथा धान्यों में मंदीकारक रहेगा।

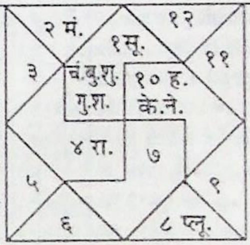

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	०	१	०	०	०	०	३	९	९	९	७
१९	१७	६	१३	२३	९	२५	४	४	२६	१२	१८
५८	३५	१६	५८	१	४१	४२	३८	३८	४६	४२	२५
४४	३५	५६	२३	३५	३६	३१	४४	४४	५०	४०	१३
५८	[illegible]	४२	१२६	१४	७३	७	३	३	१	०	१
८	१६	६	०	१७	५०	४२	११	११	०	८	२३
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	अ	अ	अ	अ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
भरणी	भरणी	कृत्ति.	भरणी	भरणी	अश्वि.	भरणी	पुष्य	उ.षा.	धनि.	श्रवण	ज्येष्ठा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वैशाख शुक्ल पक्ष-३

श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ता. ५ से १८ मई सन् २००० ई., राष्ट्रीय मिति १५ से २८ वैशाख तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
१५	१	शु	२	३७	६	४६	कृ	३१	०७	१८	१०	सौ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ब	२	३७	६	४६	३३	०२	५	४३	१८	५६	२३	२९	5	वृष	०	२०	५६	५२	[illegible]	६	३१	२०	०८	भरणी ४ में गुरु प्र. १२।२८, चन्द्रदर्शन मु. ४५, संमर्घ, गुरु अनंगदेव A
०	२	शु	५४	५२	२७	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया क्षयः
१६	३	श	४७	१०	२४	३४	री	२५	२०	१५	५०	अति	४१	५०	२२	२६	तै	२०	५७	१४	०५	३३	०५	५	४२	१८	५७	२४	साम	6	मि. २६।४०	०	२१	५४	५९	५	७	२३	२१	१५	भरणी में शुक्र प्रवेश २८।३०, अक्षया तृतीया, श्री परशुराम जयंती, B
१७	४	र	३९	४०	२१	३३	मृ	१९	४५	१३	३५	सु	३३	००	१८	५३	व	१३	२५	११	०३	३३	०९	५	४१	१८	५७	२५	२	7	मिथुन	०	२२	५३	०४	४	८	१५	२२	२३	भद्रा ११।०३ से २१।३३ तक, वैनायक ४ व्रत, कवीन्द्र रवीन्द्र नाथ टैगोर ज.
१८	५	चं	३२	५५	१८	५०	आ	१४	४२	११	३३	धृ	२४	४०	१५	३२	ब	६	१५	८	१०	३३	१२	५	४०	१८	५८	२६	३	8	क. २८।१३	०	२३	५१	०८	२	९	०७	२३	३०	शुक्र पूर्व में अस्त ७।०६, वक्री नेपच्यून २५।२५, [शुक्र अस्त] C
१९	६	मं	२६	५०	१६	२४	पुन	१०	१७	९	४७	शू	१६	५२	१२	२५	तै	२६	५०	१६	२४	३३	१६	५	४०	१८	५९	२७	४	9	कर्क	०	२४	४९	१०	०	९	५९	२४	३७	रोहिणी में मंगल प्रवेश १२।५८, कृत्तिका में बुध प्रवेश २७।५५. D
२०	७	बु	२१	४५	१४	२१	पु	६	५५	८	२५	गं	९	५७	९	३८	व	२१	४५	१४	२१	३३	१९	५	३९	१८	५९	२८	५	10	कर्क	०	२५	४७	१०	[illegible]	१०	५१	०१	२३	भद्रा १४।२१ से २५।३३ तक, कृत्तिका में सूर्य प्रवेश २७।२३, E
२१	८	गु	१७	४७	१२	४५	श्ले	४	३२	७	२७	वृ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ब	१७	४७	१२	४५	३३	२२	५	३८	१९	००	२९	६	11	सिं. ७।२७	०	२६	४५	०८	५७	११	४३	०२	०८	वृष में बुध प्र. १६।४०, कृत्तिका १ में शनि प्रवेश १६।४०, श्री दुर्गाष्टमी, F
२२	९	शु	१४	५०	११	३४	म	३	०५	६	५२	व्या	५४	०२	२७	१५	कौ	१४	५०	११	३४	३३	२५	५	३८	१९	००	३०	७	12	सिंह	०	२७	४३	०५	५६	१२	३५	०२	५४	श्री सीता नवमी (जानकी नवमी) H व्यतिपात पुण्यं
२३	१०	श	१२	५२	१०	४६	पूफा	२	५२	६	४६	ह	५०	३०	२५	४९	ग	१२	५२	१०	४६	३३	२८	५	३७	१९	०१	३१	८	13	कं. १२।४५	०	२८	४१	०१	५४	१३	२७	०३	३९	भद्रा २२।३५ से, श्री महावीर स्वामी केवल ज्ञान (जैन)
२४	११	र	११	५७	१०	२३	उफा	३	३०	७	००	वज्र	४७	४५	२४	४२	वि	११	५७	१०	२३	३३	३२	५	३६	१९	०२	ज्ये	९	14	कन्या	०	२९	३८	५५	५२	१४	१९	०४	०२	भद्रा १०।२३ तक, वृष में सूर्य प्र. १४।१५, संक्रांति मु. ३०, मोहिनी G
२५	१२	चं	१२	०५	१०	२६	ह	५	१०	७	४०	सि	४५	४२	२३	५३	बा	१२	०५	१०	२६	३३	३५	५	३६	१९	०२	२	१०	15	तु. २०।१०	१	००	३६	४७	५१	१५	११	०४	२५	सोम प्रदोष व्रत, परशुराम द्वादशी, राधा द्वादशी
२६	१३	मं	१३	१७	१०	५४	चि	७	५५	८	४५	व्य	४४	३७	२३	२६	तै	१३	१७	१०	५४	३३	३८	५	३५	१९	०३	३	११	16	तुला	१	०१	३४	३८	४९	१६	०३	०४	४८	रोहिणी में बुध प्रवेश ७।५५, श्री नृसिंह जयंती, अशोक त्रिरात्रि व्रत, H
२७	१४	बु	१५	२५	११	४५	स्वा	११	४०	१०	१५	व	४४	१५	२३	१७	व	१५	२५	११	४५	३३	४०	५	३५	१९	०३	४	१२	17	तुला	१	०२	३२	२७	४८	१६	५५	०५	११	भद्रा ११।४५ से २४।२४ तक, कृत्तिका में शुक्र प्रवेश २४।४१, कूर्म जयंती J
२८	१५	गु	१८	४५	१३	०४	वि	१६	२७	१२	०९	प	४४	४७	२३	२९	ब	१८	४५	१३	०४	३३	४३	५	३४	१९	०४	५	१३	18	वृ. ५।३७	१	०३	३०	१५	४६	१७	४७	०५	४३	वैशाखी पूर्णिमा पुण्यं, बुद्ध पू., वैशाख स्नान समा., यम प्रीतियर्थं K

A जयंती, छत्रपति शिवाजी जयंती (प्राचीन मत से) शुक्र वृद्धत्व प्रा. B त्रेतायुगादि, कल्पादि, बद्री-केदारनाथ यात्रा, श्री मातंगी जयंती, वर्षीतप समापन (जैन), सफर मु. मा. २ प्रा. C श्री आद्यशंकराचार्य ज., सोमवती पंचमी, श्री सूरदास जयंती, श्री रामानुजाचार्य ज. (द.भा.) D श्री रामानुजाचार्य जयंती (उत्तर भारत में) E श्री गंगासप्तमी, गंगोत्पत्ति, मध्यान्ह में गंगा पूजा F श्री बगलामुखी जयंती G एकादशी व्रत (सबका), लक्ष्मी नारायण एकादशी (उड़ीसा), सौर ज्येष्ठ मास प्रा., मेला डूंगरी जातरी (मनाली) J सत्यव्रत, छिन्नमस्ता जयंती, गुरु अमरदास जयंती K जलकुंभ दानम्, मेला शाढ़ी जातर नगर (हिमाचल)

वैशाख शु. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ११ मई [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. १८ मई ❖ वैशाख शु. १५ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	३	१	०	०	०	०	३	९	९	९	७
२६	२८	११	२८	२४	१८	२६	४	४	२६	१२	१८
४५	५२	१०	५९	४१	१८	३६	१६	१६	५२	४२	१५
८	४७	४०	१२	३३	२१	२५	२८	२८	५३	५३	१०
५७	८११	४१	१३०	१४	७३	७	३	३	०	०	१
५७	५३	४७	४४	१६	४८	४२	११	११	४०	५	३०
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
उ	उ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

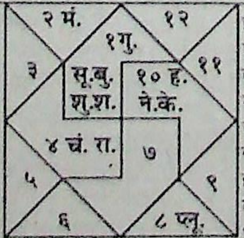

इस पक्ष के पूर्वार्ध में पंचग्रही योग तथा पूर्णिमासी को गुरु-शुक्र का अंश साम्य योग भी अच्छा नहीं है। मासान्तर्गत कृष्ण पक्ष में शनि का अस्त तथा शुक्ल पक्ष में शुक्र का अस्त मेष राशि में हुआ है जिससे अनेक राष्ट्रों में भय, विग्रह, युद्धादि भय से प्रजा आतंकित रहेगी। कई देशों में खाद्यान्नों की समस्या उग्ररूप धारण करेगी। पश्चिमी राष्ट्र ईरान, ईराक, इजरायल, पाकिस्तान, भारत, ब्रिटेन, यूरोप आदि देशों में आणुविक प्रतिस्पर्धा व युद्धादि की ज्वाला भड़केगी। यथा—"शुक्र शौरिद्वयोरस्त एक राशौ यदा भवेत्। अन्न पीड़ा महादुःखं देशे देशे च विग्रहः॥" यहां भारत सरकार को विशेष सावधानी रखते हुए उत्तर पश्चिमी सीमाओं पर सुरक्षा व्यवस्था करनी चाहिए। **तेजी मन्दी विचार**—प्रतिपदा शुक्रवार को ४५ मुहूर्ति चन्द्रदर्शन होने से सोना, चांदी, रुई में पटाबढ़ी से तेजी तथा सरसों, तेल, तिल, चावल, चना, जौ, गेहूं में मन्दी के योग हैं। किन्तु पक्ष मध्य में बुध वृष राशि पर आने से सभी धान्यादि पदार्थों में तेजी के आसार नजर आने लगेंगे। यहां मन्दी वस्तु का स्टाक करने वालों को आगे लाभ के चांस प्राप्त होंगे। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में शुक्र का अस्त पर्वतीय प्रदेश,आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, गुजरात, महाराष्ट्र आदि में चक्रवात से वर्षा व कृषि में हानि करेगा। मैदानी भाग उ.प्र., राजस्थान, म.प्र., हरियाणा व दिल्ली में कहीं-कहीं आंधी तूफान व जन-जीवन अस्त-व्यस्त होगा। **शकुन विचार**—वैशाख शुक्ल १, २, ३, ७, ८, ९, १४ को बादल गाज व पवन के साथ वर्षा हो तो आगे खरीफ की फसल अच्छी होती है। यथा—"वैशाखे बादल पचरंग अथवा चमके बिजली संग। तो अनेक घन जल बरसाई, सावन में बहु अन्न निप जाई॥"

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	६	१	१	०	०	०	३	९	९	९	७
३	२९	१६	१३	२६	२६	२७	३	३	२६	१२	१८
३०	५५	२	५९	२१	५४	३०	५४	५४	५६	४१	४
१५	२१	९	२०	१६	४९	१६	१३	१३	३३	३०	२८
५७	७३३	४१	१२३	१४	७३	७	३	३	०	०	१
४६	१५	२८	४५	३	४५	४१	११	११	२०	१९	३४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
उ	उ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष-४

श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ता. १९ मई से २ जून सन् २००० ई., राष्ट्रीय मिति २९ वैशाख से १२ ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

ता. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
२९	१	शु	२३	००	१४	४६	अनु	२२	१२	१४	२७	शि	४६	०२	२३	५९	कौ	२३	००	१४	४६	३३	४६	५	३४	१९	०५	६	१४	19	वृश्चिक	१	०४	२८	०१	[illegible]	१९	४२	६	३५	कृतिका १ में गुरु प्र. १३।०९, देव ऋषि नारद ज., वीणादि वाद्य यंत्र दान
३०	२	श	२८	२५	१६	५५	ज्ये	२८	५५	१७	०७	मि	४८	०३	२४	४६	ग	२८	२५	१६	५५	३३	४९	५	३३	१९	०५	७	१५	20	ध. १७।०७	१	०५	२५	४६	४४	२०	२४	७	२७	बुध पश्चिम में उदय १४।१०, वृष में शुक्र प्र. १७।४५, सायन मिथुन A
३१	३	र	३४	२२	१९	१८	मू	३६	२२	२०	०६	सा	५०	३२	२५	४६	व	१	२०	६	०५	३३	५२	५	३३	१९	०६	८	१६	21	धनु	१	०६	२३	३०	४३	२१	०६	८	१९	भद्रा ६।०५ से १९।१८ तक, श्री श्री मां आनन्दमयी ज., कृष्ण ४ व्रत
ज्ये	४	चं	४०	५०	२१	५२	पू.षा	४४	२२	२३	१३	शुभ	५३	२०	२६	५२	ब	७	३५	८	३४	३३	५५	५	३२	१९	०६	९	१७	22	धनु	१	०७	२१	१३	४१	२१	४८	०९	११	मृगशिर में बुध प्रवेश २२।३५, राष्ट्रीय ज्येष्ठ मासारम्भ
२	५	मं	४७	२०	२४	२८	उ.षा	५२	०२	२६	२१	शु	५५	५५	२७	५४	कौ	१४	०५	११	१०	३३	५७	५	३२	१९	०७	१०	१८	23	म. ५।५९	१	०८	१८	५४	३९	२२	३०	१०	०३	
३	६	बु	५३	१०	२६	४७	श्र	५९	१२	२९	१२	ब्र	५८	०७	२८	४६	ग	२०	२५	१३	४१	३३	५९	५	३१	१९	०८	११	१९	24	मकर	१	०९	१६	३३	३८	२३	१२	१०	५५	भद्रा २६।४७ से, रोहिणी में सूर्य प्रवेश २३।३६, B [गुरु उदय]
४	७	गु	५७	५७	२८	४२	ध	६०	००	-	-	ऐं	५९	३२	२९	२०	वि	२५	४७	१५	५०	३४	१	५	३१	१९	०८	१२	२०	25	कुं. १८।२९	१	१०	१४	११	३७	२३	५३	११	४७	भद्रा १५।५० तक, वक्री हर्षल १८।४५, पंचक प्रा. १८।२९ से, चेहलम (मु.)
५	८	शु	६०	००	-	-	ध	५	१७	७	३८	वै	५९	३२	२९	२०	बा	२९	४०	१७	२३	३४	३	५	३१	१९	०९	१३	२१	26	कुम्भ	१	११	११	४८	३६	२४	३५	१२	३९	मिथुन में बुध प्रवेश १५।१८, कालाष्टमी, मेला चनानी माताजी, C
६	८	श	१	५	५	५६	श	९	५२	९	२७	वि	५८	०७	२८	४५	कौ	१	०५	५	५६	३४	५	५	३०	१९	०९	१४	२२	27	मी. २८।१५	१	१२	०९	२४	३४	१	१७	१३	३१	अष्टमी वृद्धि, पं. जवाहरलाल नेहरू पुण्य तिथि
७	९	र	२	१२	६	२३	पू.भा	१२	२०	१०	२६	प्री	५४	५७	२७	२९	ग	२	१२	६	२३	३४	७	५	३०	१९	१०	१५	२३	28	मीन	१	१३	०६	५८	३३	१	५९	१४	२३	भद्रा १८।१३ से, मृगशिर में मंगल प्रवेश २०।१४, रोहिणी में शुक्र प्रवेश D
८	१०	चं	१	२२	६	०३	उ.भा	१२	५०	१०	३८	आ	५०	०७	२५	३३	वि	१	२२	६	०३	३४	९	५	३०	१९	१०	१६	२४	29	मीन	१	१४	०४	३१	३३	२	३७	१५	१५	भद्रा ६।०३ तक, अपरा एका. व्रत (स्मार्त), चौ. चरणसिंह पुण्य तिथि
०	११	चं	५८	२०	२८	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी क्षयः
९	१२	मं	५३	२७	२६	५३	रे	११	२०	१०	०२	सौ	४३	४७	२३	०१	कौ	२६	०७	१५	५७	३४	११	५	३०	१९	११	१७	२५	30	मे. १०।०२	१	१५	०२	०४	३१	३	१४	१६	०७	आर्द्रा में बुध प्रवेश १८।१२, पंचक समाप्त १०।०२, अपरा एकादशी E
१०	१३	बु	४६	५५	२४	१५	अ	७	५५	८	३९	शो	३५	५७	१९	५२	ग	२०	२५	१३	३९	३४	१३	५	२९	१९	११	१८	२६	31	मेष	१	१५	५९	३५	३०	३	५१	१६	५९	भद्रा २४।१५ से, प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रतारंभ, आखरी चहार शम्बा (मु.)
११	१४	गु	३९	०७	२१	०८	भ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अ	२७	१५	१६	२३	वि	१३	१०	१०	४५	३४	१५	५	२९	१९	१२	१९	२७	J1	वृ. १२।०५	१	१६	५७	०५	३०	४	२८	१७	५१	भद्रा १०।४५ तक, मास शिवरात्रि व्रत, सावित्री चतुर्दशी, F
१२	३०	शु.	३०	४०	१३	४५	रो	५०	१७	२५	३६	सु.	१७	३५	१२	३१	च	५	००	७	२९	३४	१७	५	२९	१९	१२	२०	२८	2	वृष	१	१७	५४	३५	२९	५	०५	१८	४३	कृतिका २ वृष में गुरु प्रवेश १८।५५, देव पितृ कार्या अमावस्या, G

A में सूर्य प्रवेश २३।१९ B गुरु पूर्व में उदय १८।३० C श्री दादूदयाल पुण्य तिथि, वैधृति पुण्यं D २१।०३, पुनर्वसु ४ में राहु, उ.षा. २ में केतु प्रवेश २३।४३, शनि पूर्व में उदय २४।३३ E व्रत (वैष्णव), भद्रकाली एकादशी (पंजाब), मधुसूदन द्वादशी, जलक्रीड़ा एकादशी (उड़ीसा) F फलहारिणी कालिका पूजन, जून मा. ६ ता. ३० G भावुका अमावस्या, शनि जयंती, वटसावित्री व्रत, बड़ पूजनार्चन, सावित्री सत्यवान व्रत कथा श्रवणामृत

ज्येष्ठ कृ. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २७ मई [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. २ जून ❖ ज्येष्ठ कृ. ३० शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	१०	१	२	०	१	०	३	९	९	९	७
१२	१७	२२	१	२८	७	२८	३	३	२६	१२	१७
९	५५	१३	०	२८	५८	३९	२५	२५	५७	३७	५०
२८	३६	८०	५०	२८	३०	५	३६	३६	५२	२८	१०
५७	६३	४१	१००	१४	७३	७	३	३	०	०	१
३६	१	४	०	२	४४	३५	११	११	६	३५	१८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
अ	अ	अ	उ	उ	अ	अ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

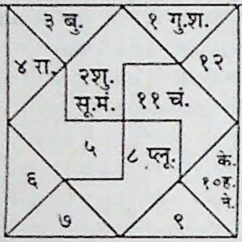

इस पक्ष में पिछले एक वर्ष से मेष राशि में चल रहे गुरु शनि के योग में अंश साम्य का योग ता. २५ जून से २ जुलाई तक बनेगा। जिसका फल प्राचीन आचार्यों ने इस प्रकार लिखा है। फल— "यदा जीव युतो मंदो जीवाद्वा सप्तमे स्थितः। तदा प्रजा विनश्यन्ति भूयश्वान् परिक्षयः॥" विश्व के अनेक भागों में चल रहे अशांतिप्रद वातावरण को और बढ़ावा मिलेगा। कुछ भागों में अघटित घटनाएं घटने से प्रजा स्तब्ध रहेगी। राजनैतिक समीकरण बदलते दिखाई देंगे। भारत, पाकिस्तान, बंग्लादेश के अलावा चीन, जापान, जर्मनी, इंग्लैण्ड, अमेरिका, आस्ट्रिया में प्रकृति प्रकोप, आतंकवादी गतिविधियां, बम विस्फोट तथा आर्थिक संकट से प्रगति रुक सी जायेगी। पृथ्वी रक्त रंजित होगी अथवा कहीं छत्र भंग से राजनीति में परिवर्तन होगा। **तेजी मंदी विचार**— पक्षारंभ में बुध का पश्चिम में उदय तथा वृष राशि में शुक्र आने से धान्य जौ, गेहूं, चना, मूंगफली, सरसों, सोना, चांदी में घटाबढ़ी से तेजी होगी। पक्ष मध्य में मिथुन का बुध आने से पशुओं में तेजी तथा वायुवेग की प्रबलता बढ़ेगी। धातु व रस पदार्थों में मंदी का झटका आकर बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे। यहां बाजार रुख देखकर कार्य करना लाभप्रद रहेगा। **आकाश लक्षण**— इस पक्ष में बुध-गुरु-शनि के उदय अनेक स्थानों पर आंधी, वायु के साथ बादल चाल या वर्षा कारक रहेंगे। पूर्वोत्तरी भारत व दक्षिणी राज्यों में आंधी तूफान के साथ कहीं-कहीं वर्षा से हानि भी होगी। **शकुन विचार**— ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी को यदि दक्षिण दिशा की हवा चले तो घृत, तेल खरीदने वालों को आगे लाभ होगा। ज्येष्ठी अमावस्या को बादल चाल होना आगे चौमासा के लिए अच्छा नहीं होता है। **यथा**— "ज्येष्ठ अमावस दिवस वा रजनी बादल होय। चौमासा सूखा रहे भारी बड़बड़ होय॥"

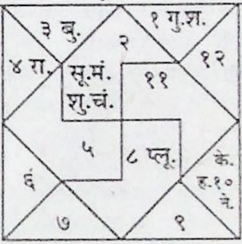

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	१	१	२	०	१	०	३	९	९	९	७
१७	१०	२६	१०	२९	१५	२९	३	३	२६	१२	१७
५४	४४	१९	१४	५२	२०	२४	६	६	५६	३३	४०
३५	४७	३३	४७	१५	४९	२०	३१	३१	३३	२६	२५
५७	१०१	४०	८१	१३	७३	७	३	३	०	०	१
२९	११	४९	१७	५२	४३	२९	११	११	२२	४७	३८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	अ	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-५

श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ता. ३ से १६ जून सन् २००० ई., राष्ट्रीय मिति १३ से २६ ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

रा. मि.	ति	वा	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
१३	१	श	२१	३७	१४	०८	मृ	४३	२२	२२	५०	धृ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ब	२१	३७	१४	०८
१४	२	र	१२	४५	१०	३५	आ	३६	४०	२०	०९	गं	४७	४०	२४	३३	कौ	१२	४५	१०	३५
१५	३	चं	४	१७	७	११	पुन	३०	३२	१७	४१	वृ	३८	२२	२०	४९	ग	४	१७	७	११
०	४	चं	५६	३२	२८	०५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१६	५	मं	४९	४०	२५	२०	पु	२५	२०	१५	३६	ध्रु	२९	५५	१७	२६	ब	२२	५५	१४	३८
१७	६	बु	४४	१७	२३	११	श्ले	२१	१२	१३	५७	व्या	२२	२५	१४	२६	कौ	१६	५२	१२	१३
१८	७	गु	४०	१७	२१	३५	म	१८	३५	१२	५४	हर्ष	१६	००	११	५२	ग	१२	०२	१०	१७
१९	८	शु	३७	४२	२०	३३	पूफा	१७	२२	१२	२५	वज्र	१०	५२	९	४९	वि	८	५०	९	००
२०	९	श	३६	४०	२०	०८	उफा	१७	३५	१२	३०	सि	६	५५	८	१४	बा	७	०२	८	४७
२१	१०	र	३७	००	२०	१६	ह	११	२०	१३	१२	व्य	४	०७	७	०७	तै	६	४०	८	०८
२२	११	चं	३८	४७	२०	५९	चि	२२	२२	१४	२५	व	२	२७	६	२७	व	७	४५	८	३४
२३	१२	मं	४१	४२	२२	०९	स्वा	२६	३२	१६	०५	प	१	४७	६	११	ब	१०	०५	९	३०
२४	१३	बु	४५	४२	२३	४५	वि	३१	५५	१८	१४	शि	२	००	६	१६	कौ	१३	३७	१०	५५
२५	१४	गु	५०	३५	२५	४२	अनु	३८	०५	२०	४२	सि	३	००	६	४०	ग	१८	०७	१२	४३
२६	१५	शु	५६	१०	२७	५६	ज्ये	४५	०५	२३	३०	सा	४	४२	७	२१	वि	२३	२०	१४	४८

दिनांक अं.	दिनमान घं	दिनमान मि	सूर्योदय उदय घं	मि	अस्त घं	मि	प्र.	मु.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
3	३४	१९	५	२९	१९	१३	२१	२१	मि. १२।१२	१	१८	५२	०४	[illegible]	५	५७	१९	५४	चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ, करवीर व्रत, श्री गंगादशाश्वमेध स्नान प्रा. A
4	३४	२०	५	२९	१९	१३	२२	१.अ	मिथुन	१	१९	४९	३२	२७	६	४९	२०	४६	रम्भा तृतीया व्रत, रवि-उल-अव्वल मु. मास ३ प्रा.
5	३४	२२	५	२८	१९	१४	२३	२	क. ११।१५	१	२०	४६	५१	२५	७	४१	२१	३८	भद्रा १७।३८ से २८।०५ तक, विश्व पर्यावरण दि., महाराणा प्रताप B
0	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	**चतुर्थी क्षयः**
6	३४	२३	५	२८	१९	१४	२४	३	कर्क	१	२१	४४	२४	२५	८	३३	२२	३०	कृत्तिका २ वृष में शनि प्रवेश २४।४३, श्रुति पंचमी (जैन)
7	३४	२५	५	२८	१९	१५	२५	४	सिं. १३।५७	१	२२	४१	४९	२५	९	२५	२३	२२	मृग. में सूर्य प्रवेश २१।२८, मिथुन में मंगल प्रवेश १५।२३, अरण्य षष्ठी C
8	३४	२६	५	२८	१९	१६	२६	५	सिंह	१	२३	३९	१४	२३	१०	१७	२४	०४	भद्रा २१।३५ से, मृगशिर में शुक्र प्रवेश १७।३२
9	३४	२७	५	२८	१९	१६	२७	६	क. १८।२२	१	२४	३६	३७	२२	११	०९	२४	४५	भद्रा ९।०० तक, **श्री दुर्गाष्टमी**, धूमावती ज., मेला क्षीर भवानी-कश्मीर
10	३४	२८	५	२८	१९	१६	२८	७	कन्या	१	२५	३३	५९	२१	१२	०१	१	२६	पुनर्वसु में बुध प्रवेश १६।००, श्री माहेश्वरी नवमी
11	३४	२९	५	२८	१९	१६	२९	८	तु. २५।१५	१	२६	३१	२०	२१	१२	५३	२	०७	**श्री गंगा दशहरा, मेला हरिद्वार,** रवि दशमी, बटुक भैरव जयंती, D
12	३४	३०	५	२८	१९	१७	३०	९	तुला	१	२७	२८	४१	२०	१३	४५	२	४८	भद्रा ८।३४ से २०।५९ तक, **निर्जला एकादशी व्रत (सबका)**, E
13	३४	३१	५	२८	१९	१७	३१	१०	तुला	१	२८	२६	०१	२०	१४	३७	३	२९	मिथुन में शुक्र प्रवेश २७।४६, **चम्पक द्वादशी**
14	३४	३२	५	२८	१९	१७	आ	११	वृ. ११।४३	१	२९	२३	२१	१८	१५	२९	४	०९	**मिथुन में सूर्य प्र. २०।५१, संक्रांति मु. ३०, राजस संक्रांति (उड़ीसा)**, F
15	३४	३३	५	२८	१९	१८	२	१२	वृश्चिक	२	००	२०	३९	१८	१६	२१	४	५०	भद्रा २५।४२ से, **चम्पक १४ (बंगाल में), ईद-ए-मिलाद (बारावफात)**
16	३४	३४	५	२८	१९	१८	३	१३	ध. २३।३०	२	०१	१७	५७	१८	१७	१३	५	३०	भद्रा १४।४८ तक, **ज्येष्ठी पूर्णिमा, सत्यव्रत, वट सावित्री व्रत समाप्त** G

A शहादते इमाम हसन (मु.) B ज., मेला हल्दी घाटी (राज.), विनायक ४ व्रत, गु. अर्जुन देव बलिदान दि. C व्रत (बंगाल में प्रसिद्ध), विन्ध्यवासिनी पूजा, जामित्री ६ (बंगाल) D श्री सेतुबन्ध रामेश्वर प्रतिष्ठा दि., रामेश्वर यात्रा, दर्शन पूजन, दशहरा व्रत समा., व्यतिपात पुण्यं E मेला बहिरे भटिण्डा-पंजाब F प्रदोष व्रत, वट-सावित्री व्रत प्रा. (गुज. में), सौर आषाढ़ मास प्रा., मेला भुन्तर (हि.प्र.) G (गुजरात) मन्वादि, सन्त कबीर ज., देव स्नान पू. (बंगाल-उड़ीसा में)

ज्येष्ठ शु. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ९ जून **[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]** **ता. १६ जून ❖ ज्ये. शु. १५ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट**

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	४	२	२	१	१	१	३	९	९	९	७
२४	२२	१	१८	१	२३	०	२	२	२६	१२	१७
३६	४५	४	३६	२८	५६	१६	४४	४४	५२	२७	२९
३७	३५	२९	४०	३६	४५	६	१६	१६	४५	२५	४
५७	[illegible]	४०	५८	१३	७३	७	३	३	०	०	१
२२	६	३३	१८	३७	४३	१६	११	११	४४	५७	३७
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

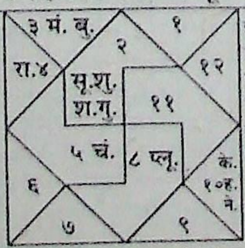

इस पक्ष के प्रारम्भ में गुरु देव वृष राशि में प्रवेश करेंगे तथा ता. ६ जून को शनि भी वृष राशि में प्रवेश करेगा, जिससे गुरु-शनि का योग पुनः प्रारम्भ हो जायेगा। जिसके फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में तनाव यथावत् बना रहेगा। ईरान, ईराक, पाकिस्तान, चीन, रूस, भारत में राज विग्रह, भय, प्रकृति-प्रकोप, भूकम्पादि से प्रजा को कष्ट होगा। *वृष राशि के गुरु का फल*—**"जीवे वृषे सुभिक्षं स्याद्घोरसस्य महर्घता। स्वल्प वृष्टिः प्रजापीड़ा सस्यानां बहुधा भवेत्॥"** यहां इस मास पांच शुक्रवार होने से भारत में कृषि की नवीन तकनीकों का विकास होने से धान्यादि का उत्पादन बढ़ेगा। विकास कार्यों पर विशेष ध्यान दिया जायेगा तथा व्यापारिक संधियां अधिक होंगी। किन्तु मंगल-शनि का द्विर्द्वादश योग आर्थिक संकट को बराबर बनाये रखेगा। कहीं-कहीं आतंकवाद और साम्प्रदायिक दंगे होते दिखाई देंगे। **तेजी मन्दी विचार**—पक्षारंभ में शनिवार का चन्द्रदर्शन एवं चतुर्थी तिथि का क्षय होने से रुई, सूत, पाट, बारदाना, सरसों, सोना, चांदी, लोहा, पीतल में तेजी होगी। जिसे मिथुन का मंगल यथावत् बनाये रखेगा। पक्षान्त में घटाबढ़ी से मंदी की चाल निकलेगी। **आकाश लक्षण**—तटीय प्रदेश व उत्तरी पश्चिमी भारत के साथ मैदानी भागों में तापमान उत्तरोत्तर बढ़ेगा। कहीं लू, हैजे की बीमारी अधिक रहेगी। पक्षान्त में आंधी तथा वायुवेग से संचार व्यवस्थाओं में बाधा उत्पन्न होगी। तटीय प्रदेश व पूर्वोत्तर भारत के कुछ स्थानों पर कहीं-कहीं तेज हवाओं के साथ वर्षा संभव है। **शकुन विचार**—ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी व सप्तमी को पवन वेग के साथ बादल वर्षा व मेघ गर्जना हो तो आश्विन-कार्तिक मास में रस पदार्थ, तिलहन आदि की खरीद लाभदायक होवे।

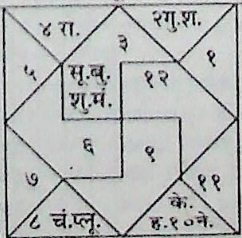

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	७	२	२	१	२	१	३	९	९	९	७
१	२१	५	२४	३	२	१	२	२	२६	१२	१७
१७	२	४७	४	३	३२	६	२२	२२	४६	२०	१७
५७	०	३०	४	३	४५	१६	१	१	४१	११	५७
५७	७११	४०	३०	१३	७३	७	३	३	१	१	१
१८	५६	१६	२८	१९	४३	२	११	११	२	९	३३
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आषाढ़ कृष्ण पक्ष-६ श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ता. १७ जून से १ जुला. सन् २००० ई., रा. मिति २७ ज्येष्ठ से १० आषाढ़ तक। रवि उ.-दक्षिणायने, उत्तर गोले, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान	दिनमान	स्टैं.टा. सूर्योदय उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	क्रां.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
२७	१	श	६०	००	-	-	मू	५२	३७	२६	३१	शुभ	६	५०	८	१२	बा	२२	१०	१७	०८	३४	३४	५	२८	१९	१८	४	१४	17	धनु	२	०२	१५	१५	[illegible]	१९	५३	६	२२	आर्द्रा में मंगल प्रवेश १२।४८, कृत्तिका ३ में गुरु प्रवेश १२।०४, A
२८	१	र	२	२०	६	२५	पू.षा	६०	००	-	-	शु	९	२५	९	१५	कौ	२	२०	६	२५	३४	३५	५	२९	१९	१९	५	१५	18	धनु	२	०३	१२	३२	१६	२०	२६	७	१४	गुरु हर गोविन्द सिंह जयंती
२९	२	चं	८	४२	८	५८	पू.षा	०	२०	५	३७	ब्र	१२	१०	१०	२१	ग	८	४२	८	५८	३४	३५	५	२९	१९	१९	६	१६	19	म. १२।२८	२	०४	०९	४८	१५	२०	५९	८	०६	भद्रा २३।५३ से, आर्द्रा में शुक्र प्रवेश १४।००
३०	३	मं	१५	०७	११	३२	उ.षा	८	१२	८	४६	ऐं	१४	५२	११	२६	वि	१५	०७	११	३२	३४	३६	५	२९	१९	१९	७	१७	20	मकर	२	०५	०७	०३	१५	२१	३२	८	५८	भद्रा ११।३२ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत, ईद-ए-मीलाद (मु.)
३१	४	बु	२१	०५	१३	५५	श्र	१५	४०	११	४५	वै	१७	१७	१२	२४	बा	२१	०५	१३	५५	३४	३६	५	२९	१९	१९	८	१८	21	कुं. २५।४५	२	०६	०४	१८	१५	२२	०५	९	५०	आर्द्रा में सूर्य प्र. २०।२८, धनिष्ठा १ में वक्री हर्षल प्रवेश २५।१७,B
आ	५	गु	२६	०७	१५	५६	ध	२२	१७	१४	२४	वि	१९	०२	१३	०६	तै	२६	०७	१५	५६	३४	३६	५	२९	१९	२०	९	१९	22	कुंभ	२	०७	०१	३३	१४	२२	३७	१०	४२	राष्ट्रीय आषाढ़ मासारम्भ
२	६	शु	२९	५०	१७	२६	श	२७	४५	१६	३६	प्री	१९	४२	१३	२३	व	२९	५०	१७	२६	३४	३६	५	३०	१९	२०	१०	२०	23	कुंभ	२	०७	५८	४७	१४	२३	२७	११	३४	भद्रा १७।२६ से, वक्री बुध २२।५३
३	७	श	३२	०५	१८	२०	पू.भा	३१	३५	१८	०८	आ	१९	२२	१३	१५	वि	१	१५	६	००	३४	३५	५	३०	१९	२०	११	२१	24	मी. ११।०९	२	०८	५६	०१	१३	२४	१६	१२	२६	भद्रा ६।०० तक, कालाष्टमी
४	८	र	३२	३०	१८	३०	उ.भा	३३	३७	१८	५७	सौ	१७	३०	१२	३०	बा	२	३०	६	३०	३४	३४	५	३०	१९	२०	१२	२२	25	मीन	२	०९	५३	१४	१३	१	०६	१३	१८	
५	९	चं	३०	४५	१७	४८	रे	३३	४५	१९	००	शो	१४	०७	११	०९	तै	१	५०	६	१४	३४	३३	५	३०	१९	२०	१३	२३	26	मे. १९।००	२	१०	५०	२७	१३	१	५४	१४	१०	भद्रा २९।१० से, पंचक समाप्त १९।००
६	१०	मं	२७	०७	१६	२२	अश्वि	३१	५०	१८	१५	अ	९	०५	९	०९	वि	२७	०७	१६	२२	३४	३२	५	३१	१९	२०	१४	२४	27	मेष	२	११	४७	४०	१३	२	४४	१५	०२	भद्रा १६।२२ तक, बुध पश्चिम में अस्त २१।१०
७	११	बु	२१	४५	१४	१३	भ	२८	२०	१६	५१	सु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बा	२१	४५	१४	१३	३४	३१	५	३१	१९	२०	१५	२५	28	वृ. २२।२२	२	१२	४४	५३	१३	३	२५	१५	५४	योगिनी एकादशी व्रत सबका
८	१२	गु	१४	४५	११	२५	कृ	२३	०७	१४	४६	शू	४५	४५	२३	४९	तै	१४	४५	११	२५	३४	३०	५	३१	१९	२०	१६	२६	29	वृष	२	१३	४२	०६	१२	४	०५	१६	४६	प्रदोष व्रत
९	१३	शु	६	३५	८	१०	रो	१६	५२	१२	१७	गं	३५	५७	१९	५५	व	६	३५	८	१०	३४	३०	५	३२	१९	२०	१७	२७	30	मि. २२।५५	२	१४	३९	१८	१२	४	४६	१७	३८	भद्रा ८।१० से १८।२२ तक, पुनर्वसु में शुक्र प्रवेश १०।२५, C
०	१४	शु	५७	३७	२८	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी क्षयः
१०	३०	श	४८	१२	२४	४२	मृ	९	५५	९	३०	वृ	२५	३७	१५	४७	च	२२	५२	१४	४१	३४	२९	५	३२	१९	२०	१८	२८	J1	मिथुन	२	१५	३६	३०	१३	५	२६	१८	३०	देवपितृकार्याऽमावस्या, शनैश्चरी अमा., जुलाई मास ७ ता. ३१

A वट सावित्री व्रत पारणा B सायन कर्क में सूर्य प्रवेश ७।१८, रवि दक्षिणायन, वर्षा ऋतु प्रा., पंचक प्रां. २५।०५ से, वैधृति पुण्यं C मास शिवरात्रि व्रत

आषाढ़ कृ. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २५ जून [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. १ जुलाई ❖ आषाढ़ कृ. ३० शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	११	२	२	१	२	१	३	९	९	९	७
९	९	११	२५	५	१३	२	१	१	२६	१२	१७
५३	२२	४८	५८	१	३६	८	५३	५३	३५	९	४
१६	४३	४३	३७	१	१३	१९	२४	२८	४६	१४	२०
५७	[illegible]	३९	९	१२	३३	६	३	३	१	१	१
१३	२१	५७	५	५०	४४	४०	११	११	२५	१८	२७
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

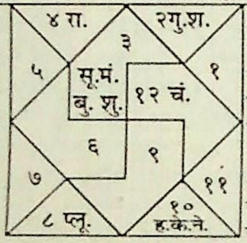

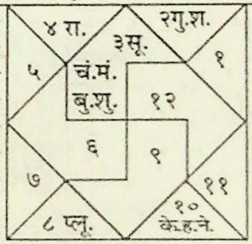

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	२	२	२	१	२	१	३	९	९	९	७
१५	४	१५	२४	६	२०	२	१	१	२६	१२	१६
३६	८	४७	४	१७	५८	४७	३४	३४	२६	१	५५
३०	१६	५७	८	५	३६	२७	२०	२०	४४	५	५३
५७	७११	३९	३१	१२	७३	६	३	३	१	१	१
१३	१	४४	२६	२७	४५	१९	११	११	३९	२६	२२
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	अ	अ	अ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इस पक्ष के प्रारम्भ में मिथुन राशि में चार ग्रहों का तथा ता. १ व २ जुलाई को पंचग्रही योग बना है। जिसका फल प्राचीन आचार्यों ने नेष्ट बताया है। यथा—"एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंच खेचराः। प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा॥" विश्व के अनेक भागों में प्रकृति प्रकोप, अशांति, वैर विरोध, हिंसक आन्दोलन, सीमा विवाद तथा सैन्य शक्ति के प्रदर्शन से जन मानस पीड़ित होगा। ईरान, ईराक, इंग्लैण्ड, जर्मन, फिलस्तीन, आयरलैण्ड, मिश्र, बेल्जियम तथा भारत में उत्पात अधिक होंगे। कुछ स्थानों पर प्रकृति प्रकोप, यान दुर्घटना व सांसर्गिक रोग आदि से भी प्रजा त्रस्त रहेगी। सामान्य से अधिक मंहगाई बढ़ने से जनता कठिनाई महसूस करेगी। **तेजी मन्दी विचार**— प्रतिपदा को आर्द्रा में मंगल आने से चांदी में मंदी तथा रुई, सूत, अलसी, तिल, तेल, गुड़, खांड में तेजी होगी। पक्ष मध्य में बुध वक्री होकर ता. २७ जून को पश्चिम में अस्त होगा जिससे सोना, चांदी, पाट, बारदाना, रुई, गुड़, खांड, अनाज, मूंग, मोंठ, बाजरा में मन्दी की चाल निकल कर तेजी होगी। शेयर्स बाजारों में सूचकांक नीचे की तरफ रहेंगे। **आकाश लक्षण**— इस पक्ष में बुध का अस्त राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, दिल्ली, पंजाब में वायु के साथ वर्षा होगी। आन्ध्र प्रदेश, केरल, असम, बिहार के तटवर्ती इलाकों में कहीं-कहीं अच्छी वर्षा होगी। **शकुन विचार**— आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को यदि आकाश में बादल वर्षा व मेघ गर्जना हो तो आगे वर्षा कम तथा अनाजादि के भावों में तेजी होती है। यदि इसी दिन आकाश साफ रहे तो आगे वर्षा ऋतु में श्रेष्ठ वर्षा होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आषाढ़ शुक्ल पक्ष-७

श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ता. २ से १६ जुलाई सन् २००० ई., राष्ट्रीय मिति ११ से २५ आषाढ़ तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
११	१	र	३८	५२	२१	०५	आ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ध्रु	२५	१०	११	३६	किं	१३	३०	१०	२६	३४	२८	५	३२	१९	२०	१९	२९	2	क. २२।२२	२	१६	३३	४३	[illegible]	५	५२	१९	२२	कृत्तिका ४ में गुरु प्रवेश २५।४७, मनोरथ द्वितीया व्रत (बंगाल में)
१२	२	चं	२९	५०	१७	२२	पु	४८	३३	२५	००	व्या	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बा	४	१५	७	१५	३४	२७	५	३३	१९	२०	२०	३०	3	कर्क	२	१७	३०	५५	१२	६	४४	२०	४३	चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ, श्री जगदीश रथयात्रा जगन्नाथपुरी (उड़ी.)
१३	३	मं	२१	३०	१४	०९	श्ले	४२	४०	२२	४०	वज्र	४५	०२	२३	४८	ग	२१	३०	१४	०९	३४	२६	५	३३	१९	२०	२१	१	4	सि. २२।४०	२	१८	२८	०७	१३	७	३६	२१	३३	भद्रा २४।५४ से, रवि उस्सानी मु. मास ४ प्रारम्भ
१४	४	बु	१४	२५	११	२०	म	३८	१२	२०	५१	सि	३८	०५	२०	४४	वि	१४	२५	११	२०	३४	२५	५	३४	१९	२०	२२	२	5	सिंह	२	१९	२५	२०	१२	८	२८	२२	२२	भद्रा ११।२० तक, पुनर्वसु में सूर्य प्रवेश २०।०३, विनायक ४ व्रत
१५	५	गु	८	४०	९	०२	पूफा	३५	२५	१९	४०	व्य	३१	२५	१८	०८	बा	८	४०	९	०२	३४	२६	५	३४	१९	२०	२३	३	6	कं. २५।२७	२	२०	२२	३२	१२	९	२०	२३	१२	कृत्तिका ३ में शनि प्रवेश १२।१६, स्कन्द पंचमी, हेरा पंचमी (उड़ीसा) A
१६	६	शु	४	३७	७	२६	उफा	३३	५५	१९	०१	व	२६	०५	१६	०१	तै	४	३७	७	२६	३४	२२	५	३५	१९	२०	२४	४	7	कन्या	२	२१	१९	४४	१३	१०	१२	२४	०१	पुनर्वसु में मंगल प्रवेश १४।०१, आर्द्रा में वक्री बुध प्रवेश २५।१३, B
१७	७	श	२	२७	६	३४	ह	३४	२७	१९	२२	प	२२	१७	१४	३०	व	२	२७	६	३४	३४	२१	५	३५	१९	२०	२५	५	8	कन्या	२	२२	१६	५७	१३	११	०२	२४	५०	भद्रा ६।३४ से १८।२९ तक, कर्क में शुक्र प्रवेश १३।४१, जैन अट्ठाई प्रा.
१८	८	र	२	०२	६	२४	चि	३६	४७	२०	१८	शि	२०	०२	१३	३६	ब	२	०२	६	२४	३४	२०	५	३५	१९	२०	२६	६	9	तु. ७।१६	२	२३	१४	१०	१२	११	५४	१	१०	श्री दुर्गाष्टमी, खरसी पूजा (त्रिपुरा)
१९	९	चं	३	१५	६	५४	स्वा	४०	४२	२१	५३	सि	१८	५७	१३	११	कौ	३	१५	६	५४	३४	१८	५	३६	१९	१९	२७	७	10	तुला	२	२४	११	२२	१३	१२	४६	१	३१	भडुली नवमी, मे. शरीफ भवानी (कश्मीर), कन्दर्प ९, शूद्रादि नवमी
२०	१०	मं	६	१५	८	०६	वि	४६	०७	२४	०३	सा	१९	१५	१३	१८	ग	६	१५	८	०६	३४	१६	५	३६	१९	१९	२८	८	11	वृ. १७।२६	२	२५	०८	३५	१३	१३	३८	१	५२	भद्रा २०।५७ से, पुष्य में शुक्र प्रवेश ६।४६, गिरिजा पूजा दशमी, C
२१	११	बु	१०	३०	९	४८	अनु	५२	२५	२६	३५	शुभ	२०	२०	१३	४५	वि	१०	३०	९	४८	३४	१५	५	३७	१९	१९	२९	९	12	वृश्चिक	२	२६	०५	४८	१४	१४	३०	२	१३	भद्रा ९।४९ तक, देवशयनी एकादशी व्रत (सबका), चातुर्मास्य D
२२	१२	गु	१५	४७	११	५५	ज्ये	५९	४७	२९	३२	शु	२२	२५	१४	३१	बा	१५	४७	११	५५	३४	१३	५	३७	१९	१९	३०	१०	13	ध. १९।३२	२	२७	०३	०२	१३	१५	२२	३	०५	अनुराधा ४ में वक्री प्लूटो प्रवेश २२।२६, प्रदोष व्रत, हरिवासराऽभाव E
२३	१३	शु	२१	४२	१४	१९	मू	६०	००	-	-	ब्र	२४	४२	१५	३१	तै	२१	४२	१४	१९	३४	११	५	३८	१९	१८	३१	११	14	धनु	२	२८	००	१५	१४	१६	१४	३	५७	फतीहा यजदहुम (ग्यारहवीं शरीफ), जया पार्वती व्रत शुरु
२४	१४	श	२८	०७	१६	५३	मू	७	२२	८	३५	ऐं	२७	२२	१६	३५	व	२८	०७	१६	५३	३४	०८	५	३८	१९	१८	३२	१२	15	धनु	२	२८	५७	२९	१४	१७	०६	४	४९	भद्रा १६।५३ से, बुध पूर्व में उदय २३।२०, मेला ज्वालामुखी (काश्मीर) F
२५	१५	र	३४	२०	१९	२३	पूषा	४५	०७	११	४२	वै	३०	०२	१७	४०	वि	१	१२	६	०८	३४	०६	५	३९	१९	१८	श्रा	१३	16	म. १८।५८	२	२९	५४	४३	१४	१७	५८	५	४१	भद्रा ६।०८ तक, कर्क में सूर्य प्र. ७।४३, संक्रांति मु. ३०, [शुक्र उदय] G

A व्यतिपात पुण्यं B कुमार षष्ठी व्रत, विवस्वत सप्तमी सूर्यपूजा, श्री महावीर गर्भ कल्याणंक C उल्टारथ (उड़ीसा) पुनर्यात्रा, मन्वादि, बहुधा यात्रा D व्रत नियमादि प्रारंभ, अजमेर दादा मेला प्रा., जिनदत्त शूरी जयंती (जैन) E मन्व्यर दिवस (काश्मीर) F चौमासी चौदस (जैन), वायु परीक्षा सायं G शुक्र पश्चिम में उदय १३।५०, आषाढ़ी पूर्णिमा, सत्यव्रत, गुरु पूर्णिमा, व्यासपूजा, मन्वादि, वैधृति पुण्यं, मनसा पूजा प्रारंभ (बंगाल में), मेला नैमिषारण्य, सन्यासियों का चातुर्मास नियमादि प्रारंभ, खग्रास ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण, सौर श्रावण मासारम्भ

आषाढ़ शु. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ९ जुलाई [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. १६ जुलाई ❖ आषाढ़ शु. १५ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	५	२	२	१	३	१	३	९	९	९	७
२३	२८	२१	१९	७	०	३	१	१	२६	११	१६
१४	४७	५	१८	५४	४४	३६	८	८	१२	४९	४५
१०	६	४	३	४४	३५	३	५४	५४	४४	१९	३०
५७	८२	३९	३३	११	७३	५	३	३	१	१	१
१२	१०	२९	८	५२	४५	४७	११	११	५३	३०	१२
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	अ	अ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

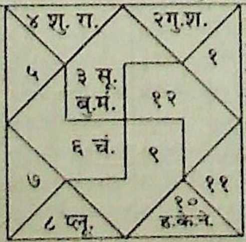

इस मास में पांच शनिवार एवं पांच रविवार होना अशुभ है। जिसका फल—"शनिवारा यदा पंच जायन्ते रवि पंचकम्। महार्घं जायन्ते धान्यं रोगशोकाकुला मही॥" विश्व के अनेक भागों में रोगोत्पात, महामारी, प्रकृति-प्रकोप से जनता पीड़ित होगी। मंहगाई वृद्धि से आम जनता का जीना दुर्भर हो जायेगा। शासकों में मतभेद व मंत्रिमंडलों में भी परिवर्तन संभव है। पूर्वोत्तर देश चीन, रूस, ब्रह्मा, बंगलादेश, नेपाल आदि के अलावा असम, त्रिपुरा, जम्मू-कश्मीर, दिल्ली, पंजाब में विशेष उपद्रव होंगे। यहां संघट चक्र में सूर्य, मंगल, बुध का गुरु-शनि से वेध भी चल रहा है जो अशुभ फलों को और बढ़ावा देगा। भारत-पाक सीमाओं पर सैनिक हलचल दिखाई देगी। कहीं आन्दोलन, बम विस्फोट, हत्या, हिंसा से जनता त्रस्त होगी। तेजी मन्दी विचार—द्वितीया सोमवार को ३० मुहूर्त्ती चन्द्रदर्शन चांदी में घटाबढ़ी से मंदी तथा सोना, रुई, सूत, पाट, बारदाना में साधारण तेजी की चाल निकालेगी। पक्ष मध्य में कर्क राशि में शुक्र आने से गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, घृतादि में तेजी तथा चांदी में मंदी यथावत बनी रहेगी। पक्षान्त में धान्यों में भी तेजी के योग हैं। आकाश लक्षण—इस पक्ष में दक्षिण भारत, आसाम, पं. बंगाल, बिहार, हिमाचल प्रदेश में वायु वेग के साथ श्रेष्ठ वर्षा होगी। पक्ष मध्य से पंजाब, उ.प्र., दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र में सर्वत्र मानसून सक्रिय होगा। शकुन विचार—"आषाढ़ां नवमी दिनां ना बादल ना बीज। हल फाड़ ईंधन करो बैठा खाओ बीज॥" आषाढ़ सुदी नवमी के दिन बादल वर्षा होना श्रेष्ठ होता है। यदि सम्पूर्ण दिन आकाश साफ रहे तो वर्षा की कमी से धान्यादि में तेजी होगी।

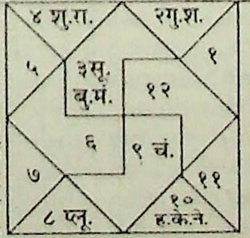

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	८	२	२	१	३	१	३	९	९	९	७
२९	२३	२५	१६	९	९	४	०	०	२५	११	१६
५४	३६	४०	३७	१६	२४	१५	४५	४५	५८	३८	३७
४३	२९	५५	१३	६	५५	३०	३८	३८	५६	२६	२८
५७	७८	३९	५	११	७३	५	३	३	२	१	१
१४	४०	१७	३८	१७	४५	२५	११	११	४	३५	३
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रावण कृष्ण पक्ष-८

श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ता. १७ से ३१ जुलाई सन् २००० ई., राष्ट्रीय मिति २६ आषाढ़ से ९ श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.
२६	१	चं	४०	३२	२१	५२	उ.षा	२२	५०	१४	४७	वि	३२	३२	१८	४०	बा	७	३५	८	४१	३४	०४	५	३९	१९	१७	२	१४	17
२७	२	मं	४६	०२	२४	०५	श्र	३०	००	१७	४०	प्री	३४	४७	१९	३५	तै	१३	२५	११	०२	३४	०२	५	४०	१९	१७	३	१५	18
२८	३	बु	५०	५७	२६	०३	ध	३६	३०	२०	१६	आ	३६	२०	२०	१२	व	१८	३७	१३	०७	३४	००	५	४०	१९	१७	४	१६	19
२९	४	गु	५४	४७	२७	३६	श	४२	०७	२२	३२	सौ	३७	१२	२०	३४	ब	२३	०२	१४	५४	३३	५८	५	४१	१९	१६	५	१७	20
३०	५	शु	५७	१७	२८	३७	पू.भा	४६	२७	२४	१७	शो	३७	०७	२०	३३	कौ	२६	१०	१६	१०	३३	५६	५	४२	१९	१६	६	१८	21
३१	६	श	५८	२५	२९	०४	उ.भा	४९	३०	२५	३०	अ	३६	०२	२०	०७	ग	२८	०२	१६	५५	३३	५३	५	४२	१९	१५	७	१९	22
श्रा	७	र	५७	५७	२८	५४	रे	५१	००	२६	०७	सु	३३	३७	१९	१०	वि	२८	२०	१७	०३	३३	५०	५	४३	१९	१५	८	२०	23
२	८	चं	५५	४७	२८	०२	अ	५०	५२	२६	०४	धृ	२९	५५	१७	४१	बा	२७	०२	१६	३२	३३	४८	५	४३	१९	१४	९	२१	24
३	९	मं	५१	५५	२६	३०	भ	४९	००	२५	२०	शू	२४	५५	१५	४२	तै	२४	०२	१५	२१	३३	४५	५	४४	१९	१४	१०	२२	25
४	१०	बु	४६	३२	२४	२१	कृ	४५	४०	२४	००	गं	१८	३५	१३	१०	व	१९	२५	१३	३०	३३	४२	५	४४	१९	१३	११	२३	26
५	११	गु	३९	५२	२१	४२	रो	४१	००	२२	०९	वृ	११	००	१०	०९	ब	१३	२०	११	०५	३३	३८	५	४५	१९	१३	१२	२४	27
६	१२	शु	३२	०७	१८	३६	मृ	३५	१२	१९	५०	ध्रु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कौ	६	०७	८	१२	३३	३५	५	४५	१९	१२	१३	२५	28
७	१३	श	२३	२५	१५	०८	आ	२८	३५	१७	१२	हर्ष	४३	०७	२३	०१	व	२३	२५	१५	०८	३३	३२	५	४६	१९	११	१४	२६	29
८	१४	र	१४	२५	११	३३	पुन	२१	३७	१४	२६	वज्र	३२	५७	१८	५८	श	१४	२५	११	३३	३३	२९	५	४७	१९	११	१५	२७	30
९	३०	चं	५	२२	७	५६	पु	१४	४२	११	४०	सि	२२	४७	१४	५४	ना	५	२२	७	५६	३३	२६	५	४७	१९	१०	१६	२८	31

अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	क्रां.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
17	मकर	३	००	५१	५७	[illegible]	१९	५३	६	३३	मार्गी बुध २८।००, श्रावण सोमवार व्रत
18	मकर	३	०१	४९	१२	१४	२०	३४	७	२५	अशून्य शयन २ व्रत (बंगाल में), मंगला गौरी पूजन
19	कुं. ७।००	३	०२	४६	२६	१६	२१	१६	८	१७	भद्रा १३।०७ से २६।०३ तक, पुष्य में सूर्य प्र. ११।३४, रोहिणी A
20	कुंभ	३	०३	४३	४२	१६	२१	५८	९	०९	कृष्ण चतुर्थी व्रत
21	मी. १७।५५	३	०४	४०	५८	१६	२२	४०	१०	०१	अश्ले. में शुक्र प्र. २७।०३, नाग पंचमी (बंगाल व मरुस्थल में)
22	मीन	३	०५	३८	१४	१६	२३	२१	१०	५३	भद्रा २९।०४ से, कर्क में मंगल प्रवेश २०।०६, सायन सिंह में B
23	मे. २६।०७	३	०६	३५	३०	१८	२४	०३	११	४५	भद्रा १७।०३ तक, श्री लोकमान्य तिलक जयंती, राष्ट्रीय C
24	मेष	३	०७	३२	४८	१८	२४	४५	१२	३७	कालाष्टमी, श्रावण सोमवार व्रत
25	मेष	३	०८	३०	०६	१९	१	२७	१३	२९	गुरु हरकिशन ज., केर पूजा (त्रिपुरा में), मंगला गौरी पू.
26	वृ. ७।०३	३	०९	२७	२५	१९	२	०९	१४	२१	भद्रा १३।३० से २४।२१ तक, पुनर्वसु में बुध प्रवेश ८।४२
27	वृष	३	१०	२४	४४	२१	२	५१	१५	१३	पुष्य में मंगल प्र. २३।०३, कामदा एका. व्रत (सबका)
28	मि. ९।०२	३	११	२२	०५	२१	३	३४	१६	५	प्रदोष व्रत
29	मिथुन	३	१२	१९	२६	२२	४	१८	१६	५७	भद्रा १५।०८ से २५।२० तक, मासशिवरात्रि व्रत
30	क. ९।०७	३	१३	१६	४८	२३	५	०२	१७	४९	पुन: ३ मिथुन में राहु उ.षा. १ धनु में केतु प्रवेश २१।२७, D
31	कर्क	३	१४	१४	११	२३	५	४६	१८	४१	हरियाली अमावस्या, देवकार्या अमावस्या, सोमवती अमावस E

A १ में गुरु प्रवेश २७।५६, शुक्र बाल्यत्व समाप्त १३।५०, पंचक प्रारंभ ७।०० से B सूर्य प्रवेश १८।१३ C श्रावण मासारंभ, पंचक समाप्त २६।०७ D पितृकार्याऽमावस्या E सरस माधुरी जयंती, चितलगी अमावस्या (उड़ीसा), श्रावण सोमवार व्रत, नक्त व्रत प्रारंभ

श्रावण कृ. ८ चन्द्र प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २४ जुलाई [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. ३१ जुलाई ❖ श्रावण कृ. ३० चन्द्र प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	०	३	२	१	३	१	३	९	९	९	७
७	१	०	१८	१०	१९	४	०	०	२५	११	१६
३२	५१	५४	२९	४३	१५	५७	२१	२१	४१	२५	२९
४८	७	२३	५	४८	६	३	११	११	४४	३८	४१
५७	८०४	३९	३९	१०	७३	४	३	३	२	१	०
१८	५८	५	१६	३२	६६	५८	११	११	१५	३८	५२
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

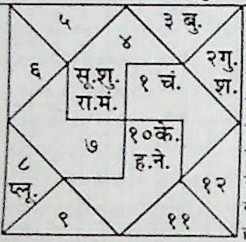

इस पक्ष में ता. २२ जुलाई को मंगल अपनी नीच राशि में प्रवेश करेगा। जिससे कर्क राशि में चार ग्रहों का योग अशुभ फल प्रद है किन्तु इन्ही चार ग्रहों का गुरु-शनि से त्रिरेकादश योग श्रेष्ठ है अत: यहां मिलेजुले फल प्राप्त होंगे। बड़े राष्ट्र अमेरिका रूस, चीन, जापान, इगलैण्ड, स्वार्थ परायण होते हुए भी पारस्परिक राजनैतिक तथा आर्थिक सम्बन्ध सुधारने की चेष्टा करेंगे। भारत की नीति अच्छे सम्बन्ध बनाने में सफल होगी। अफ्रीका, अमेरिका, अफ्नागिस्तान, मिश्र, इजरायल, ईरान, ईराक, हालैण्ड, स्काटलैण्ड में कहीं-कहीं अनाचार, हिंसा, प्रकृति, प्रकोप, बमविस्फोट, रेल, यान दुर्घटना से जनधन की हानि होगी। सोमवती अमावस्या भारत के लिए सुखशांति कारक रहेगी। औद्योगिक विकास तथा अनुसंधान में सफलता प्राप्त होगी। तेजी मन्दी विचार—प्रतिपदा को रात में बुध मार्गी होने से सभी व्यापारिक वस्तुओं के चलते रुख में भारी उलटफेर का योग बनेगा। बुध मार्गी होने का फल—"वक्र चाल चलते हुए बुध मार्गी हो जाय। चालू रुख बाजार का एकदम पलटा खाय।।" जो वस्तु मंदी चल रही थी वह तेज या उसमें घटाबढ़ी होगी। आकाश लक्षण—पाक्षारंभ में राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र में वायु के साथ व्यापक वर्षा होगी। कहीं-कहीं बाढ़ की स्थिति बनने से हानि होगी। यातायात व संचार व्यवस्थाओं में बाधा उत्पन्न होगी। शकुन विचार—श्रावण कृष्ण ५ व ११ को तथा अमावस्या को हवा चले तो दुर्भिक्ष तथा बादल चाल व वर्षा होना सुमिक्ष कारक होता है। यथा—"सूर्योदय के साथ ही मेघ गर्जना होय। प्रहर एक या दोय में अच्छी वर्षा होय।।"

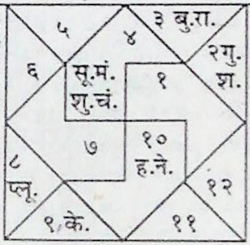

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	३	३	२	१	३	१	२	८	९	९	७
१४	१२	५	२५	११	२७	५	२९	२९	२५	११	१६
१४	४८	२७	१	५५	५१	२९	५८	५८	२५	१४	२४
११	४	१६	३३	१७	३२	४२	५६	५६	४४	१०	१९
५७	१००	३८	७७	९	७३	४	३	३	२	१	०
२३	३४	५२	४८	४७	४६	१९	११	११	१९	३७	३९
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
पुष्य	पुष्य	पुष्य	पुन.	रोहि.	आश्ले.	कृत्ति.	पुन.	उ.षा.	धनि.	श्रव.	अनु.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रावण शुक्ल पक्ष-१

श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ता. १ से १५ अगस्त सन् २००० ई., राष्ट्रीय मिति १० से २४ श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान		सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि
०	१	चं	२६	३७	२८	२६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१०	२	मं	४८	२७	२५	११	श्ले	८	०६	९	०२	व्य	१३	०२	११	०१	बा	२२	२२	१४	४५	३३	२३	५	४८	१९	०९	१७	२२	A1	सिं. १।०१	३	१५	११	३४	[illegible]	५	३८	२०	३६
११	३	बु	४१	२७	२२	२७	म	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तै	१४	५५	११	४६	३३	२०	५	४८	१९	०९	१८	[illegible]	2	सिंह	३	१६	०८	५९	२५	६	३०	२१	२९
१२	४	गु	३६	०५	२०	१५	पूफा	०४	४२	२७	४२	शि	४९	१७	२५	३२	व	८	३७	९	१६	३३	१६	५	४९	१९	०८	१९	२	3	क. १०।३०	३	१७	०६	२४	२५	७	२२	२२	१९
१३	५	शु	३२	२०	१८	४५	ह	५३	३०	२७	१३	सि	४४	०५	२३	२७	ब	४	०२	७	२६	३३	१३	५	४९	१९	०७	२०	३	4	कन्या	३	१८	०३	४१	२७	८	१४	२३	१०
१४	६	श	३०	३५	१८	०४	चि	५४	१७	२७	३३	सा	४०	२५	२२	००	कौ	१	१०	६	१८	३३	०९	५	५०	१९	०७	२१	४	5	तु. १५।१८	३	१९	०१	१६	२८	९	०६	२४	०१
१५	७	र	३०	५५	१८	१२	स्वा	५६	५७	२८	३७	शुभ	३८	२०	२१	१०	ग	०	२७	६	०१	३३	०६	५	५०	१९	०६	२२	५	6	तुला	३	१९	५८	४४	२९	९	५८	२४	५२
१६	८	चं	३३	०२	१९	०४	वि	६०	००	-	-	शु	३७	४२	२०	५६	वि	१	३७	६	३०	३३	०३	५	५१	१९	०५	२३	६	7	वृ. २३।५१	३	२०	५६	१३	३०	१०	५०	१	२८
१७	९	मं	३६	५०	२०	३६	वि	१	३०	६	२८	ब्र	३८	२५	२१	१४	बा	४	४५	७	४६	३३	००	५	५२	१९	०४	२४	७	8	वृश्चिक	३	२१	५३	४३	३१	११	४२	२	०४
१८	१०	बु	४२	१०	२२	४४	अ	७	३२	८	५३	ऐं	४०	१०	२१	५६	तै	९	२२	९	३७	३२	५७	५	५२	१९	०३	२५	८	9	वृश्चिक	३	२२	५१	१४	३२	१२	३४	२	४०
१९	११	गु	४८	१०	२५	०९	ज्ये	१४	४७	११	४८	वै	४२	३२	२२	५४	व	१५	०५	११	५५	३२	५३	५	५३	१९	०२	२६	९	10	ध. ११।४८	३	२३	४८	४६	३३	१३	२६	३	१६
२०	१२	शु	५४	३५	२७	४३	मू	२२	२३	१४	५०	वि	४५	१०	२३	५७	ब	२१	२७	१४	२८	३२	५०	५	५३	१९	०२	२७	१०	11	धनु	३	२४	४६	१९	३५	१४	१८	३	५२
२१	१३	श	६०	००	-	-	पू.षा	३०	१५	१८	००	प्री	४७	५२	२५	०३	कौ	२७	५०	१७	०२	३२	४६	५	५४	१९	०१	२८	११	12	म. २४।०६	३	२५	४३	५४	३५	१५	१०	४	२८
२२	१३	र	१	०३	६	१९	उ.षा	३७	४७	२१	०१	आ	५०	१७	२६	०१	तै	१	०३	६	१९	३२	४३	५	५४	१९	००	२९	१२	13	मकर	३	२६	४१	२९	३७	१६	०७	४	५८
२३	१४	चं	६	५५	८	४१	श्र	४४	४०	२३	४७	सौ	५२	०२	२६	४४	व	६	५५	८	४१	३२	४०	५	५५	१८	५९	३०	१३	14	मकर	३	२७	३९	०६	३७	१७	५०	५	२८
२४	१५	मं	११	५७	१०	४२	ध	५०	४२	२६	१२	शो	५३	२०	२७	१५	ब	११	५७	१०	४२	३२	३६	५	५५	१८	५८	३१	१४	15	कुं. १३।०१	३	२८	३६	४४	३९	१८	४७	५	५७

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

- 0 — प्रतिपदा क्षयः
- A1 — मघा सिंह में शुक्र प्रवेश २३।१८, चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ, सिंधारा, A
- 2 — अश्ले. में सूर्य प्र. १८।२८, मधुश्रवा तीज, हरि ३, हरियाली तीज, B
- 3 — भद्रा ९।१६ से २०।१५ तक, कर्क मे बुध प्रवेश १८।३२, विनायक ४ C
- 4 — नागपंचमी देशाचारे, तक्षक भित्ति चित्रित नागपूजन, जीवंतिका पू. D
- 5 — पुष्य में बुध प्र. २०।०८ से, कल्की ज., वर्ण श्रृयाल ६, अश्वत्थ मारुति पू.
- 6 — भद्रा १८।१२ से. गो. तुलसीदास जयंती, शीतला **सप्तमी पूजन** E
- 7 — भद्रा ६।३० तक, **श्री दुर्गाष्टमी**, मेला चिन्तपूर्णी व नयना देवी F
- 8 — मंगला गौरी पूजन
- 9 — रोहिणी २ में गुरु प्रवेश ८।०७, **बुध पूर्व में अस्त १८।१८**
- 10 — भद्रा ११।५५ से २५।९ तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत (सबका)**, G
- 11 — जीवंतिका पूजन, वरद लक्ष्मी व्रत, श्री विष्णु पवित्रारोपण, दधि H
- 12 — अश्लेषा में बुध प्रवेश २४।०६, पू.फा. में शुक्र प्रवेश १९।३४, शनि J
- 13 — त्रयोदशी वृद्धि
- 14 — भद्रा ८।४१ से २१।४२ तक, **सत्यव्रत, श्रावण सोमवार व्रत**, K
- 15 — **पूर्णिमा पुण्य, रक्षाबन्धन, श्रीगायत्री जयंती, अमरनाथ दर्शन** L

A मंगला गौरी पूजन, श्री लोकमान्य तिलक पुण्य, व्यतिपात पुण्यं B मधुश्रवा गौरी व्रत, [illegible] C व्रत, वरद चतुर्थी, श्रवण तप (जैन) D अमरनाथ यात्रा E (सिन्ध में), भानु सप्तमी F (हि. प्र.), श्रावण सोमवार व्रत G झूलन यात्रारंभ (पूर्वान्ह व प्रदोष) वैधृतिपुण्यं H त्याग व्रत प्रारंभ J प्रदोष व्रत, अश्वत्थ मारुतिपूजन K झूलन यात्रा समापन (प्रदोष) बलभद्र पूजा (उड़ीसा), नारली पूर्णिमा, ऋक् उपाकर्म L (काश्मीर) झूलन यात्रा समापन (पूर्वान्ह), मंगला गौरी पूजन, शुक्ल-कृष्ण यजुर्वेदी उपाकर्म, भारतीय स्वतन्त्रता दिवस, पंचक प्रारंभ १३।०१ से

श्रावण शु. ८ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ७ अगस्त [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. १५ अगस्त ❖ श्रावण शु. १५ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	६	३	३	१	४	१	२	८	९	९	७
२०	२०	९	५	१३	६	५	२९	२९	२५	११	१६
५६	२५	५८	४३	१	२७	५७	३६	३६	९	२	२०
१३	५६	५०	२९	१८	५६	५६	४०	४०	१३	५१	२९
५७	[illegible]	३८	१०९	८	७३	३	३	३	२	१	०
३०	२०	४२	३२	५६	४७	४०	११	११	२३	३६	२५
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

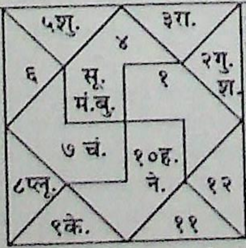

इस पक्ष में प्रतिपदा तिथि का क्षय तथा द्वितिया को सिंह राशि में शुक्र आने से वर्षा में कमी तथा वायु प्रकोप अधिक रहेगा। शासनकर्त्ताओं में मतभेद होकर सत्ता संघर्ष होगा। आगामी चार मासों में अमेरिका, रूस, पाकिस्तान, जापान, इंग्लैण्ड, ईरान, ईराक आदि देशों की राजनीति में भारी उथल-पुथल होगी। भारत में भी राजनैतिक क्षेत्र के साथ-साथ वर्षा की कमी से अकाल की स्थिति बनेगी। **सिंह के शुक्र का फल-सिंह शुक्र जब होय भवानी। चाले पवन नहीं बरसे पानी॥** यहाँ जनजीवनोपयोगी वस्तुओं की अनुपलब्धता से मंहगाई तीव्रगति से बढ़ेगी। प्रजा में अशांति, रोगपीड़ा तथा असामाजिक तत्वों द्वारा गुण्डागर्दी फैलाई जायेंगी। कहीं प्रकृति प्रकोप, रेल, यान दुर्घटना, भूकम्प व अग्निकाण्ड से जनधन की हानि भी संभव है। **तेजी मंदी विचार**—पक्षारंभ में सोना, चांदी, तांबा, पीतल, गेहूँ, चना, जौ, लालचन्दन, लाल मिर्च में तेजी होगी जिसमें ता. ५ अगस्त को पुष्य नक्षत्र में बुध आने पर रोक लगेगी। कई में घटाबढ़ी से मंदी की चाल निकलेगी। पक्षान्त में अनाज, जौ, गेहूँ, बाजरा, मूंग, मोठ आदि में मंदी तथा रसपदार्थ गुड़, खांड, तिल, तेल में तेजी होगी। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, दिल्ली, पश्चिमी उत्तरप्रदेश में वायु प्रकोप अधिक तथा वर्षा में कमी होगी। ता. ९ अगस्त को बुध का अस्त उत्तरी पूर्वी भारत तथा केरल, आन्ध्रप्रदेश के तटवर्ती क्षेत्रों में कहीं-कहीं अच्छी वर्षा करेगा। **शकुन विचार**—श्रावण मास में श्रवण नक्षत्र के दिन और पूर्णिमासी के दिन चन्द्रमा बादलों में उदय हो तो आगे वर्षा श्रेष्ठ तथा सुभिक्ष का संचार होता है। सुदी पक्ष की ५-६ तिथि को वर्षा अथवा दक्षिण-पश्चिम की हवा चले तो आगे अनाज में तेजी होगी।

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	९	३	३	१	४	१	२	८	९	९	७
२८	२६	१५	२१	१४	१६	६	२९	२९	२४	१०	१६
३६	११	७	८	९	१८	२४	११	११	५०	५०	१८
४४	२४	४३	१४	१५	०	२५	१४	१४	५	१८	३
५७	७२७	३८	१२१	७	७३	२	३	३	२	१	०
३९	५८	३१	३३	५३	४५	५३	११	११	२३	३२	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भाद्रपद कृष्ण पक्ष-१०

श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ता. १६ से २९ अगस्त सन् २००० ई., राष्ट्रीय मिति २५ श्रावण से ७ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा-शरद् ऋतु।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान		सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
२५	१	बु	१६	०७	१२	२३	श	५५	४७	२८	१५	अति	५३	३५	२७	२२	कौ	१६	०७	१२	२३	३२	३२	५	५६	१८	५७	भा	१५	16	कुंभ	३	२९	३४	२३	५९ ४१	१९	४७	६	४१	मघा सिंह में सूर्य प्रवेश १६।०१, संक्रान्ति मु. १५, मनसा पूजा समाप्त A
२६	२	गु	१९	२०	१३	४०	पू.भा	५९	५७	२९	५५	सु	५३	१०	२७	१२	ग	१९	२०	१३	४०	३२	२८	५	५६	१८	५६	२	१६	17	मी. २३।३०	४	००	३२	०४	४२	२०	२९	७	४१	भद्रा २६।०५ से, आश्लेषा में मंगल प्रवेश १५।०२, कज्जली तृतीया व्रत
२७	३	शु	२१	२५	१४	३१	उ.भा	६०	००	-	-	धृ	५१	४७	२६	४०	वि	२१	२५	१४	३१	३२	२४	५	५७	१८	५५	३	१७	18	मीन	४	०१	२९	४६	४४	२१	१०	८	३३	भद्रा १४।३१ तक, सातूड़ी तीज, कृष्ण चतुर्थी व्रत, बहुला ४ व्रत, B
२८	४	श	२२	१२	१४	५१	उ.भा	२	४५	७	०४	शू	४९	३०	२५	४६	बा	२२	१२	१४	५१	३२	२०	५	५८	१८	५४	४	१८	19	मीन	४	०२	२७	३०	४५	२१	५२	९	२५	मघा सिंह में बुध प्र. १४।१३, रक्षा ५ (उड़ीसा), अश्वत्थ मारुती पू.
२९	५	र	२१	५२	१४	४३	रे	४	३०	७	४६	गं	४६	१५	२४	२८	तै	२१	५२	१४	४३	३२	१६	५	५८	१८	५३	५	१९	20	मे. ७।४६	४	०३	२५	१५	४६	२२	३३	१०	१७	कृतिका ४ में शनि प्र. २९।००, चन्द्र षष्ठी व्रत, श्री माधव देव C
३०	६	चं	२०	२२	१४	०८	अ	५	०७	८	०२	वृ	४२	००	२२	४७	व	२०	२२	१४	०८	३२	१२	५	५९	१८	५२	६	२०	21	मेष	४	०४	२३	०१	४७	२३	१८	११	०९	भद्रा १४।०८ से २५।३६ तक, मार्गी प्लूटो ११।५०, हल षष्ठी, ललही D
३१	७	मं	१७	४२	१३	०४	भ	४	३२	७	४८	ध्रु	३६	५२	२०	४४	ब	१७	४२	१३	०४	३२	०८	५	५९	१८	५१	७	२१	22	वृ. १३।४०	४	०५	२०	४८	४९	२४	०९	१२	०१	सायन कन्या में सूर्य प्रवेश २५।१८, श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त, E
भा.	८	बु	१३	४५	११	३०	कृ	२ ५९	४० ५३	७ २९	०० ५०	व्या	३०	४५	१८	१८	कौ	१३	४५	११	३०	३२	०४	६	००	१८	५०	८	२२	23	वृष	४	०६	१८	३७	५०	१	०४	१२	५३	उ.फा. में शुक्र प्रवेश १६।००, श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत वै., राष्ट्रीय F
२	९	गु	८	४५	९	३०	मृ	५५	५७	२८	२३	हर्ष	२३	४५	१५	३०	ग	८	४५	९	३०	३२	००	६	००	१८	४९	९	२३	24	मि. १७।१२	४	०७	१६	२७	५२	२	००	१३	४५	भद्रा २०।१७ से, गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव), गोगा नवमी
३	१०	शु	२	४०	७	०५	आ	५१	०२	२६	२६	वज्र	१५	५५	१२	२३	वि	२	४०	७	०५	३१	५६	६	०१	१८	४८	१०	२४	25	मिथुन	४	०८	१४	११	५४	२	५६	१४	३७	भद्रा ७।०५, तक, मंगल पूर्व में उदय २६।५४, अजा एका. व्रत (स्मार्त),G
०	११	शु	५५	४७	२८	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी क्षयः G जीवंतिका पूजन
४	१२	श	४८	१०	२५	१७	पुन	४५	३२	२४	१४	सि	७ ५८	२२ २३	८ २९	५८ २२	कौ	२२	०५	१४	५१	३१	५२	६	०१	१८	४७	११	२५	26	क. १८।४८	४	०९	१२	१३	५५	३	४२	१५	२९	पू.फा. में बुध प्रवेश ८।००, कन्या में शुक्र प्रवेश ९।०८, अजा एका. H
५	१३	र	४०	१२	२२	०७	पु	३९	३५	२१	५२	व	४९	०२	२५	३९	ग	१४	१२	११	४३	३१	४८	६	०२	१८	४६	१२	२६	27	कर्क	४	१०	१०	०८	५७	४	२८	१६	२१	भद्रा २२।०७ से, प्रदोष व्रत, कैलाश यात्रा २ दिन, मासशिव रात्रि व्रत
६	१४	चं	३२	१२	१८	५५	श्ले	३३	३२	१९	२७	प	३९	४५	२१	५६	वि	६	१२	८	३१	३१	४४	६	०२	१८	४५	१३	२७	28	सिं. ११।२७	४	११	०८	०५	५७	५	१३	१७	१३	भद्रा ८।३१ तक, अघोरा १४ व्रत
७	३०	मं	२४	२५	१५	४९	म	२७	४७	१७	१०	शि	३०	४०	१८	१९	ना	२४	२५	१५	४९	३१	४०	६	०३	१८	४४	१४	२८	29	सिंह	४	१२	०६	०३	५९	५	५८	१८	०५	देवपितृकार्या अमावस्या, भौमवती अमा., J [अगस्त्य तारा उदय]

A (बंगाल में), सौर भाद्रपद मासारंभ, अशून्य शयन २ व्रत B जीवंतिका पूजन C तिथि (आसाम), पंचक समाप्त ७।४६ D छठ, पुत्रार्थी व्रत E मेला द्रौण दनकौर (यू.पी.), संत ज्ञानेश्वर ज., कालाष्टमी F भाद्रपद मासारम्भ शरद्ऋतु, दूर्वा ८ व्रत H व्रत (वैष्णव), जयंती, महा द्वादशी व्रत, जैन पर्युषण पर्वारंभ (चतुर्थी-पंचमी पक्ष), वत्स द्वादशी, बीछ बारस, अश्वत्थ मारुति पूजन, व्यतिपात पुण्यं, J कुशोत्पाटनी ३० (ॐ हूँ फट् स्वाहा मंत्र से कुशोत्पाटन), मेला सुथरेशाह दिल्ली, अग्रजवंशे कल्पसूत्र पाठ जैन, वृषभोत्सव, पिठौरी ३०, मन्वादि, अगस्त्य (तारा) उदय ८।४१, सती पूजन

भाद्रपद कृ. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २३ अगस्त [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. २९ अगस्त ❖ भाद्रपद कृ. ३० मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	१	३	४	१	४	१	२	८	९	९	७
६	९	२०	७	१५	२६	६	२८	२८	२४	१०	१६
१८	३	१५	१७	८	७	४४	४५	४५	३१	३८	१७
३७	३६	१०	३२	२२	४८	३१	४८	४८	११	२७	३०
५७	८३९	३८	११८	६	७३	२	३	३	२	१	०
५०	५०	२०	०९	४४	६१	५	११	११	१९	२५	०५
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
१	४	१	३	१	४		३	२	२	२	४
मघा	कृति.	आश्ले.	मघा	रोहि.	पू.फा.	कृति.	पुन.	उ.षा.	धनि.	श्रवण	अनु.

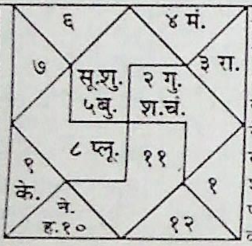

इस पक्ष में सूर्य-शुक्र का गुरु, शनि, प्लूटो से तथा ता.१९ अगस्त से बुध से भी केन्द्र योग बनेगा। यह विश्व के अनेक भागों में भय, विग्रह, प्रकृति-प्रकोप आदि से जन-मानस को पीड़ित करेगा। भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी को शनिवार का होना प्राचीन आचार्यों ने नेष्ट फलप्रद बताया है। यथा—**''शनौ भाद्रपदे कृष्णे चतुर्थी यदि जायते। देश भंगश्च दुर्भिक्षं लोके भिक्षापि दुर्लभा॥''** शासकों में मतभेद से शासन व्यवस्था कमजोर बनेगी। मंत्रिमंडलों पर परिवर्तन तथा कहीं छत्र भंग या सत्ता परिवर्तन संभव है। वर्षा की अनियमितता से कुछ स्थानों पर दुर्भिक्ष की संभावना होगी। अफगानिस्तान, इटली, फ्रांस, ईराक, पाकिस्तान सहित भारत में भी यत्रतत्र अशुभ फलों का बोलवाला रहेगा। श्रमजीवी लोग अपने परिश्रम का फल पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं कर सकेंगे। मंहगाई में वृद्धि होगी। **तेजी मन्दी विचार**—पक्षारंभ में सिंह संक्रांति १५ मुहूर्ती लगने से सोना, चांदी, शेयर्स, गुड़, खांड, शक्कर, रुई व लाल रंग की वस्तुओं में तेजी होगी। यथा—''सिंह राशि गते भानौ इक्ष्वादि मिष्ट शर्करा। रक्तानि सर्वभाण्डानि तिल तैल महर्घता॥'' यहाँ आई तेजी का लाभ व्यापारी वर्ग बाजार रुख देखकर उठा सकते हैं। पक्षान्त में एकादशी का क्षय व कन्या का शुक्र घटाबढ़ी को प्रोत्साहन देगा। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में बुध-शुक्र का योग तथा मंगल का उदय दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, काश्मीर, असम, पंजाब, हरियाणा में वायु के साथ वर्षा करेगा। कुछ स्थानों पर वायुवेग की अधिकता रहे। भारत के तटवर्ती इलाकों में तेज हवाओं के साथ वर्षा होगी। **शकुन विचार**—भाद्रपद कृष्ण पक्ष में चन्द्रमा के कुण्डल दिखाई दे तो आगे वर्षा अच्छी होगी। यथा—**''दो दो कुण्डल शशि इक नजदीक इक दूर। वर्षा झड़ी लगायसी नदी बहे भरपूर॥''** तिथि १३ को प्रदोष के समय उत्तर दिशा में बादल बने तो आगे प्रजा में सुख शांति का वातावरण बनेगा।

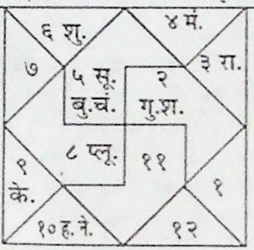

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	४	३	४	१	५	१	२	८	९	९	७
१२	६	२४	१८	१५	३	६	२८	२८	२४	१०	१६
६	१०	४	४६	४६	२९	५५	२६	२६	१७	३०	१८
३	४२	५१	२५	२५	५१	३१	४४	४४	२८	११	२८
५७	८०८	३८	११०	५	७३	१	३	३	२	१	०
५९	५९	१३	४	४७	३९	२९	११	११	१४	१९	१६
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
४	१	३	१	१	३	४	३	२	२	२	४
मघा	मघा	आश्ले.	पू.फा.	रोहि.	उ.फा.	कृति.	पुन.	उ.षा.	धनि.	श्रवण	अनु.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भाद्रपद शुक्ल पक्ष-११

श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ता. ३० अगस्त से १३ सितम्बर सन् २००० ई., राष्ट्रीय मिति ८ से २२ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, शरद् ऋतु।

ता.मि	ति	वा	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र	मु	दिनांक अं	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा	अं	क	वि	क्रां	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं	मि	अस्त घं	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
८	१	बु	१७	२५	१३	०१	पू.फा	२२	४७	१५	१०	सि	२२	१५	१४	०७	ब	१७	२५	१३	०१	३१	३६	६	०३	१८	४३	१५	२९	30	क. २०।४४	४	१३	०४	०२	१	६	५०	१९	३१	पू.फा. में सूर्य प्रवेश १२।०६. चन्द्रदर्शन मु. ४५, समर्घ, नक्त A
९	२	गु	११	२५	१०	३८	उ.फा	१८	५०	१३	३६	सा	१४	४५	११	५८	कौ	११	२५	१०	३८	३१	३२	६	०४	१८	४१	१६	१	31	कन्या	४	१४	०२	०३	४	७	४२	२०	२२	नक्त व्रत उद्यापन, तेलाधर तप (जैन), रुणीचा मे. रामदेव B
१०	३	शु	६	४७	८	४७	ह	१६	२०	१२	३६	शुभ	८	२२	९	२५	ग	६	४७	८	४७	३१	२८	६	०४	१८	४०	१७	२	S1	तु. २४।१५	४	१५	००	०७	४	८	३४	२१	१२	भद्रा २०।१३ से. हरितालिका ३ व्रत, गौरी तीज व्रत, वाराह जं. C
११	४	श	३	५७	७	४०	चि	१५	४५	१२	२६	शु	३	२५	७	२७	वि	३	५७	७	४०	३१	२४	६	०५	१८	३९	१८	३	2	तुला	४	१५	५८	११	६	९	२६	२२	०२	भद्रा ७।४० तक, उ.फा. में बुध प्रवेश १४।३९, ऋषि ५ व्रत, D
१२	५	र	३	००	७	१७	स्वा	१७	००	१२	५३	ब	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बा	३	०	७	१७	३१	२०	६	०५	१८	३८	१९	४	3	तुला	४	१६	५६	१७	७	१०	१८	२२	५२	हस्त में शुक्र प्रवेश १२।४१, मेला पात ३ दिन का (काश्मीर)
१३	६	चं	४	१५	७	४८	वि	२०	२०	१४	१४	वै	५८	०७	२१	२१	तै	४	१५	७	४८	३१	१६	६	०६	१८	३७	२०	५	4	वृ. ७।४८	४	१७	५४	२४	१०	१०	१०	२३	४२	कन्या में बुध प्रवेश १२।३७, **सूर्य षष्ठी, बलदेव छठ**, मेला E
१४	७	मं	७	२५	९	०४	अनु	२५	२२	१६	१५	वि	५९	१५	२१	४८	ब	७	२५	९	०४	३१	१२	६	०६	१८	३६	२१	६	5	वृश्चिक	४	१८	५८	३४	१२	११	०२	२४	२३	भद्रा ९।०४ से २२।०० तक, **बुध पश्चिम में उदय** २७।१८. F
१५	८	बु	१२	०७	१०	५८	ज्ये	३१	५२	१८	५२	प्री	६०	००	-	-	ब	१२	०७	१०	५८	३१	०८	६	०७	१८	३४	२२	७	6	ध. १८।५२	४	१९	५०	४६	१३	१२	५४	१	०३	**श्री दुर्गाष्टमी, बुधाष्टमी, श्री राधाष्टमी**, श्री दधीचि ज., G
१६	९	गु	१८	०५	१३	२१	मू	३१	२२	२१	५२	प्री	१	१२	६	३६	कौ	१८	०५	१३	२१	३१	०४	६	०७	१८	३३	२३	८	7	धनु	४	२०	४८	५१	१५	१३	४६	१	४४	मघा सिंह में मंगल प्रवेश १३।०३, श्री चन्द्रनवमी, (उदासीन H
१७	१०	शु	२४	३२	१५	५७	पू.षा	४७	१०	२५	००	आ	३	४२	७	३७	ग	२४	३२	१५	५७	३१	००	६	०८	१८	३२	२४	९	8	धनु	४	२१	४७	१४	१६	१४	३८	२	२४	भद्रा २९।१४ से, रोहि. ३ में गुरु प्र. २६।१३, विश्व साक्षरता J
१८	११	श	३०	५७	१८	३१	उ.षा	५८	४५	२८	०२	सौ	६	२०	८	४०	वि	३०	५७	१८	३१	३०	५६	६	०८	१८	३१	२५	१०	9	म. ७।१६	४	२२	४५	३०	१८	१५	३०	३	०४	भद्रा १८।३१ तक, **पद्मा एकादशी व्रत सबका**, जलझूलनी K
१९	१२	र	३६	४०	२०	४९	श्र	६०	००	-	-	शो	८	४२	९	३८	ब	४	००	७	४५	३०	५२	६	०९	१८	३०	२६	११	10	मकर	४	२३	४३	४८	२१	१६	२२	३	५१	हस्त में बुध प्रवेश १२।४५, **विजया महाद्वादशी व्रत**, श्री वामन L
२०	१३	चं	४१	३०	२२	४५	श्र	१	३५	६	४७	अ	१०	२२	१०	१८	कौ	९	२०	९	५३	३०	४८	६	०९	१८	२९	२७	१२	11	कुं. २०।००	४	२४	४२	०९	२२	१७	१४	४	३८	**सोम प्रदोष व्रत**, गोत्रि रात्रि व्रतारंभ, भूदान ज., **पंचक प्रा. २०।०० से**
२१	१४	मं	४५	०२	२४	११	ध	७	१७	९	०५	सु	११	१२	१०	३९	ग	१३	२७	११	३३	३०	४४	६	१०	१८	२७	२८	१३	12	कुंभ	४	२५	४०	३१	२३	१८	०६	५	२५	भद्रा २४।११से, उ.फा. में सूर्य प्र. २९।५७, **वक्री शनि १३।३०**, M
२२	१५	बु	४७	२३	२५	०७	श	११	५५	१०	५६	धृ	१०	५७	१०	३३	वि	१६	२५	१२	४४	३०	४०	६	१०	१८	२६	२९	१४	13	मी. २९।५०	४	२६	३८	५४	२५	१८	५८	६	१२	भद्रा १२।४४ तक, **सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्य**, भागवत सप्ताह N

पत्थर ४, कलंक ४, चन्द्रदर्शन निषेध, गणेश जन्मोत्सवारंभ (महा.)

A व्रत समाप्त, वीर जन्मोत्सव (जैन), श्री शंकर देव तिथि (आसाम) B जैसलमेर (राज.), जमादि उस्सानी मु. मा. ६ प्रा. C मन्वादि, सामश्रावणी, वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी, पत्थर ४, कलंक ४, चन्द्रदर्शन निषेध, गणेश जन्मोत्सवारंभ (महा.) D जैनसम्वत्सरी, क्षमावाणी पर्व E व्रजमण्डल, वैधृति पुण्यं F डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्ण ज., शिक्षक दिवस, मुक्ताभरण ७, सन्तान ७, अपराजिता ७, श्री महालक्ष्मी व्रतारंभ G श्री महालक्ष्मी व्रतारंभ सोलह दिन का H सम्प्रदाय महोत्सव), अदुःख नवमी व्रत, भागवत सप्ताह प्रा., श्री महालक्ष्मी व्रत समा. J दिवस, मेला रामदेव जैसलमेर व नवलगढ़ दुर्ग, दशावतार दशमी K मेला श्री चार भुजानाथ गढ़बोर मेवाड़ (राज.), डोल ग्यारस (म.प्र.), प्रथम ओणम दिन (केरल) L ज., श्री भुवनेश्वरी ज., हरिवासर १२।५७ से, मे. अम्बाला पटियाला, वीरू ओणम दिवस (केरल) M अनन्त १४ व्रत, मेला सोढल जालन्धर N व गोत्रि रात्रि व्रत समा., सन्यासियों का चातुर्मास्य स., प्रौष्ठपदी पूर्णिमा श्राद्ध, महालयारंभ

भाद्रपद शु. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ६ सितंबर [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. १३ सितंबर ❖ भाद्रपद शु. १५ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	७	३	५	१	५	१	२	८	९	९	७
१९	२३	२९	२	१६	१३	७	२८	२८	२४	१०	१६
५०	१९	९	५४	२७	१८	४	१	१	०	२०	२१
०६	४	५९	०९	५८	०५	३५	१८	१८	११	१३	३८
५८	३०	३८	१००	४	७२	०	३	३	२	१	०
१३	०९	३	५	३५	३५	३९	११	११	८	८	३६
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

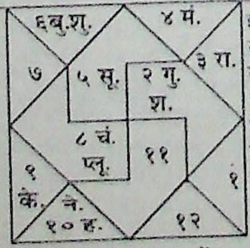

इस मास में पांच बुधवार होने से प्रजा में सुख-शांति व सुभिक्ष का संचार होगा। ता. ५ सितं. को बुध का पश्चिम में उदय होगा। जिससे पूंजीवादी राष्ट्रों का प्रभाव बढ़ेगा। धान्यादि सभी व्यापारिक वस्तुओं में भारी घटाबढ़ी होगी। यथा— **नोत्पात परित्यक्तः कदाचिदपि चन्द्रजो व्रजत्युदयम्। जलदहन पवन भय कृद्धन्यार्घ क्षयविवृद्धयै वा॥** भारत के कुछ राज्यों में अनावृष्टि या अतिवृष्टि से प्रजा पीड़ित रहेगी। दक्षिणी अमेरिका, अरब देशों में अशांति, रोगोत्पात पाकिस्तान, इरान, इराक में तोड़फोड़ व साम्प्रदायिक उपद्रव से हानि होगी। पक्षान्त में ता १२ सितंबर को शनि वक्री होने से अशुभ फलों में वृद्धि होगी। अकल्पित घटानाएं घटेंगी तथा जनता को भयानक त्रासदी के दौर से गुजरना पड़ेगा। शनि वक्री होने का फल— **शनि वक्रे च दुर्भिक्षं रुण्ड मुण्डा च मेदिनी॥ तेजी मन्दी विचार**— प्रतिपदा बुधवार को ४५ मुहूर्ती चन्द्रदर्शन होने से सोना, चांदी, सूत, सन, वस्त्र, गुड़, खांड, शकर में मंदी की चाल निकलेगी। वहां आई मंदी में बाजार रुख देखकर स्टाक करना लाभप्रद रहेगा। पक्ष मध्य में सिंह का मंगल आने से गुड़, खांड, अलसी, सोना चांदी, लाल वस्त्रों में तेजी होगी। यथा— **यदा सिंह गतौ भौमः कांचनं रूक्मताम्रकम्। आरक्त सर्व द्रव्याणि महर्घाणि भवंति हि॥ आकाश लक्षण**— इस पक्ष में दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, कश्मीर में बादल चाल तथा कुछ स्थानों पर वायु के साथ वर्षा होगी। कहीं-कहीं खण्डवृष्टि भी संभव है। **शकुन विचार**— भाद्रपद शुक्ल में चित्रा से विशाखा नक्षत्र तक तीन दिन में बादल वर्षा न हो वर्षा ऋतु को समाप्त हुई मानना चाहिए। भाद्रपद पूर्णिमा को आकाश बादलों से आच्छादित रहे तो अन्नादि का स्टाक कम करना चाहिए आगे मंदा होगा।

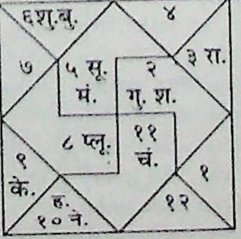

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	१०	४	५	१	५	१	२	८	९	९	७
२६	१७	३	१४	१६	२१	७	२७	२७	२३	१०	१६
३८	१०	३५	१५	५५	५३	६	३९	३९	०६	१२	२६
५४	६	५९	३९	८	३०	५०	३	३	१९	४२	१७
५८	७५	३७	९२	३	७३	०	३	३	१	०	०
२५	५०	५५	३४	८	२९	५	११	११	५२	५९	४८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आश्विन कृष्ण पक्ष-१२

श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ता. १४ से २७ सितम्बर सन् २००० ई., राष्ट्रीय मिति २३ भाद्रपद से ५ आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, उ.-दक्षिण गोले, शरद् ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	स्टैं.टा. सूर्योदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	क्रान्ति	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि	
२३	१	गु	४८	२२	२५	३२	पू.भा	१५	०७	१२	१४	शू	९	४७	१०	०६	बा	१७	५७	१३	२२	३०	३६	६	११	१८	२५	३०	१५	14	मीन	४	२७	३७	११	[illegible]	१९	०८	७	०४	चित्रा में शुक्र प्रवेश ९।४५, पितृपक्ष प्रारंभ, **प्रतिपदा श्राद्ध**
२४	२	शु	४८	१२	२५	२८	उ.भा	१७	१२	१३	०४	ग	७	३५	९	१३	तै	१८	२५	१३	३३	३०	३१	६	११	१८	२४	३१	१६	15	मीन	४	२८	३५	४७	३०	१९	५५	७	५६	अशून्य शयन २ व्रत, **द्वितीया श्राद्ध**, इन्जिनियर्स दिवस
२५	३	श	४७	००	२५	००	रे	१८	१०	१३	२८	वृ	४	३०	८	००	व	१७	४२	१३	१७	३०	२७	६	१२	१८	२३	आ	१७	16	मे. १३।२८	४	२९	३४	१७	३१	२०	४१	८	४८	भद्रा १३।१७ से २५।०० तक, **कन्या में सूर्य प्र. १६।०५**, संक्रान्ति A
२६	४	र	४४	५२	२४	०९	अ	१८	१५	१३	३०	धु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ब	१६	०२	१२	३७	३०	२३	६	१२	१८	२१	२	१८	17	मेष	५	००	३२	४८	३३	२१	५८	९	४०	**कृष्ण चतुर्थी व्रत, चतुर्थी श्राद्ध**, विश्वकर्मा पूजा
२७	५	चं	४२	००	२३	०१	भ	१७	२७	१३	१२	हर्ष	५१	००	२६	३७	कौ	१३	३०	११	३७	३०	१८	६	१३	१८	२०	३	१९	18	वृ. ११।०४	५	०१	३१	२१	३५	२२	१४	१०	३२	**पंचमी श्राद्ध**, भरणी श्राद्ध
२८	६	मं	३८	२५	२१	३५	कृ	१६	००	१२	३७	वज्र	४५	२०	२४	२१	ग	१०	१७	१०	२०	३०	१४	६	१३	१८	१९	४	२०	19	वृष	५	०२	२९	५६	३७	२३	१४	११	२४	भद्रा २१।३५ से, चित्रा में बुध प्र. ७।०५, तुला में शुक्र प्र. २०।२८,B
२९	७	बु	३४	१०	१९	५४	रो	१३	४७	११	४५	सि	३९	०२	२१	५१	वि	६	१७	८	४५	३०	१०	६	१४	१८	१८	५	२१	20	मि. २३।१४	५	०३	२८	३३	३८	२३	५८	१२	१६	भद्रा ८।४५ तक, **सप्तमी श्राद्ध, कालाष्टमी**, श्री महालक्ष्मी व्रत समा.
३०	८	गु	२९	२५	१८	००	मृ	११	०२	१०	३९	व्य	३२	२०	१९	१०	बा	१	४७	६	५७	३०	०५	६	१४	१८	१७	६	२२	21	मिथुन	५	०४	२७	११	४०	२४	५५	१३	०८	**अष्टमी श्राद्ध**, जीवित्पुत्रिका ८ व्रत, **व्यतिपात पुण्यं**
३१	९	शु	२४	००	१५	५१	आ	७	४०	९	१९	व	२५	१०	१६	१९	ग	२४	००	१५	५१	३०	०१	६	१५	१८	१५	७	२३	22	क. २६।१२	५	०५	२५	५१	४३	१	५२	१४	०२	भद्रा २६।४० से, सायन तुला में सूर्य प्रवेश २२।५७, रवि दक्षिणC
आ	१०	श	१८	०५	१३	२९	पुन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	प	१७	३५	१३	१७	वि	१८	०५	१३	२९	२९	५७	६	१५	१८	१४	८	२४	23	कर्क	५	०६	२४	३४	४५	२	४९	१४	५४	भद्रा १३।२९ तक, तुला में बुध प्रवेश २५।२२, **दशमी व एका.** D
२	११	र	११	४७	१०	५९	श्ले	५५	०५	२८	१८	शि	९	३७	१०	०७	बा	११	४७	१०	५९	२९	५३	६	१६	१८	१३	९	२५	24	सिं. २८।१८	५	०७	२३	११	४६	३	४६	१५	४६	**इन्दिरा एकादशी व्रत (सबका), द्वादशी श्राद्ध, सन्यासी श्राद्ध**
३	१२	चं	५	२७	८	२७	म	५०	३५	२६	३०	सि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तै	५	२७	८	२७	२९	४९	६	१६	१८	१२	१०	२६	25	सिंह	५	०८	२२	१५	४८	४	३५	१६	३८	भद्रा २९।५५ से, स्वाति में शुक्र प्रवेश ७।२०, **सोम प्रदोष व्रत**,E
०	१३	चं	५९	०७	२१	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	**त्रयोदशी क्षयः,**
४	१४	मं	५३	०२	२७	३०	पू.फा	४६	२२	२४	५०	शुभ	४५	५५	२४	३९	वि	२५	५७	१६	४०	२९	४५	६	१७	१८	११	११	२७	26	सिंह	५	०९	२०	५३	५०	५	२४	१७	३०	भद्रा १६।४० तक, हस्त में सूर्य प्रवेश २१।२७, ज्येष्ठा १ में प्लूटोF
५	३०	बु	४३	४५	२५	२३	उ.फा	४२	५०	२३	२५	शु	३८	४२	२१	४६	च	२०	२०	१४	२५	२९	४०	६	१७	१८	०९	१२	२८	27	कं. ६।०७	५	१०	१९	४३	५३	६	१३	१८	२२	**देवपितृकार्याऽमावस्या, सर्वपितृ अमा. श्राद्ध**, पितृ विसर्जन

A मु. ३०, तृतीया श्राद्ध, सौर आश्विन मासारंभ, पंचक समाप्त १३।२८ B षष्ठी श्राद्ध C गोल में प्रवेश, शरद् समाप्त, मातृनवमी, नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध D श्राद्ध, राष्ट्रीय आश्विन मास प्रारंभ, गुरु नानक शहीद दिवस E त्रयोदशी श्राद्ध, कलियुगादि तिथि F प्रवेश २७।३०, मास शिव रात्रि व्रत, चतुर्दशी श्राद्ध, विषाग्नि शस्त्रादि से मृतकों का श्राद्ध

आश्विन कृ. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २१ सितम्बर **[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]** ता. २७ सितंबर ❖ आश्विन कृ. ३० बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	२	४	५	१	६	१	२	८	९	९	७
८	३	८	२६	१७	१	७	२७	२७	२३	१०	१६
२७	३८	३८	५	१४	४१	३	१३	१३	३२	५	३३
११	१७	५७	५३	५७	०	९	३६	३६	१८	३७	२८
५८	[illegible]	३७	८४	१	७३	०	३	३	१	०	१
६०	२०	६८	१	३६	२२	५६	११	११	३७	६८	२
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

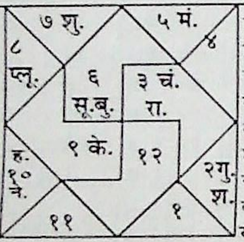

इस मास में पांच गुरुवार एवं पांच शुक्रवार उत्तम हैं किन्तु गुरु-शनि से बुध-शुक्र का षडाष्टक योग पक्ष मध्य से बनने के कारण सामाजिक व राजनैतिक कार्यों में गतिरोध उत्पन्न होगा। सत्ता में उच्च पदासीन लोगों में अन्तर्विरोध बढ़ता दिखाई देगा। मासारंभ में शुक्र चित्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा तथा मंगल मघा नक्षत्र में विचरण करने से प्रजा में रोगपीड़ा व दुर्भिक्ष की संभावना बढ़ेगी। तथा धान्यादि में तेजी होगी। यथा—''मघायां भूमिपुत्रञ्च चित्रायां भृगुनन्दनः। रोहिण्यां तु गतः सौरिः सर्वशस्यविनाशकः॥'' पश्चिमी देश अरब, इजरायल, यूगोस्लाबिया, पाकिस्तान, ईरान, ईराक आदि देशों में राजनैतिक उथल-पुथल एवं प्रकृति प्रकोप से प्रजा अधिक पीड़ित होगी। कुछ देशों की आर्थिक स्थिति भी ढाँवाढोल होगी। **तेजी मंदी विचार**—आश्विन कृष्ण चतुर्थी को रविवार होने से धान्यादि में तेजी तथा घृत, तेल आदि के व्यापारियों को स्टाक कम कर देना चाहिए। आगे मंदी का योग है। यथा—''चतुर्थ्यामाश्विने सूर्ये विक्रेतव्यं घृतं जनैः। संग्रह्यंते च धान्यानि पुरो लाभाय तान्यपि॥'' पक्षान्त में तुला का बुध चांदी, सरसों, मूंगफली में मंदी करेगा। **आकाश लक्षण**—पक्ष प्रारंभ में गुजरात तथा सौराष्ट्र में स्वल्प वर्षा के योग हैं। पक्षान्त में बुध-शुक्र का योग दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान के कुछ भागों में वायु के साथ वर्षा तथा कहीं-कहीं बूंदाबादी होगी। **शकुन विचार**—आश्विन कृष्ण दशमी से द्वादशी तक मेघ गर्जना तथा बिजली चमके तो आगे गेहूँ का भाव तेज होगा। यथा—''दशमी अरु एकादशी तथा द्वादशी जान। घन गरजे बिजली खिवे गेहूँ तेज पिछान॥''

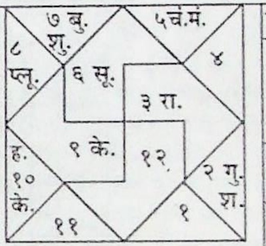

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	४	४	६	१	६	१	२	८	९	९	७
१०	२९	१२	४	१७	९	६	२६	२६	२३	१०	१६
१९	२४	२५	१०	२१	१	५५	५४	५४	२३	१	४०
४३	५३	२८	२८	३६	१	५८	३२	३२	१६	२९	६
५८	[illegible]	३७	७५	०	७३	१	३	३	१	०	१
५३	७	४२	९	२६	१७	३५	११	११	२१	३५	१४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आश्विन शुक्ल पक्ष-१३

श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ग.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि
६	१	गु	४३	३०	२३	४२	ह	४०	१७	२२	२५	ब	३२	१०	१९	१०	किं	१५	२५	१२	२८	२९	३५	६	१८	१८	०८	१३	२९	28	कन्या	५	११	१८	३६	[illegible]	७	१४	१९	१४
७	२	शु	४०	३०	२२	३०	चि	३९	०२	२१	५५	ऐं	२६	४५	१७	००	बा	११	५०	११	०२	२९	३१	६	१८	१८	०७	१४	३०	29	तु. १०।०५	५	१२	१७	३०	५६	८	०६	१९	४८
८	३	श	३९	१५	२२	०१	स्वा	३९	२७	२२	०६	वै	२२	३२	१५	२०	तै	९	४२	१०	१२	२९	२७	६	१९	१८	०६	१५	रज	30	तुला	५	१३	१६	२६	५९	८	५८	२०	३६
९	४	र	३९	५०	२२	१५	वि	४१	४०	२२	५९	वि	१९	५५	१४	१७	व	९	१७	१०	०२	२९	२३	६	१९	१८	०५	१६	२	01	वृ. १६।४०	५	१४	१५	२५	[illegible]	९	५०	२१	२४
१०	५	चं	४२	२२	२३	१७	अनु	४५	४२	२४	३७	प्री	१८	४५	१३	५०	ब	१०	५०	१०	४०	२९	१९	६	२०	१८	०४	१७	३	2	वृश्चिक	५	१५	१४	२५	३	१०	४२	२२	१२
११	६	मं	४६	३७	२४	५९	ज्ये	५१	२७	२६	५५	आ	१८	५७	१३	५५	कौ	१४	१५	१२	०२	२९	१५	६	२०	१८	०२	१८	४	3	ध. २६।५५	५	१६	१३	२८	५	११	३४	२२	५९
१२	७	बु	५२	०७	२७	१२	मू	५८	२२	२९	४२	सौ	२०	१५	१४	२७	ग	११	१२	१४	०२	२९	१०	६	२१	१८	०१	१९	५	4	धनु	५	१७	१२	३३	७	१२	२६	२३	४९
१३	८	गु	५८	३५	२९	४७	पू.षा	६०	००	-	-	शो	२२	२२	१५	१८	वि	२५	२५	१६	३१	२९	०५	६	२१	१८	००	२०	६	5	धनु	५	१८	११	४०	१०	१३	१८	२४	३८
१४	९	शु	६०	००	-	-	पू.षा	६	०५	८	४८	अ	२४	५२	१६	१९	बा	३१	५७	१९	०९	२९	०१	६	२२	१७	५९	२१	७	6	म. १५।३४	५	१९	१०	५०	११	१४	१०	१	२८
१५	९	श	५	०७	८	२५	उ.षा	१३	४७	११	५३	सु	२७	२२	१७	१९	कौ	५	०७	८	२५	२८	५७	६	२२	१७	५८	२२	८	7	मकर	५	२०	१०	०१	१३	१५	०२	२	१७
१६	१०	र	११	०५	१०	४९	श्र	२०	५०	१४	४३	धृ	२९	१०	१८	०३	ग	११	०५	१०	४९	२८	५३	६	२३	१७	५७	२३	९	8	कुं. २७।५८	५	२१	०९	१४	१५	१५	५४	३	०६
१७	११	चं	१५	५२	१२	४५	ध	२६	५२	१७	०९	शू	३०	०५	१८	२६	वि	१५	५२	१२	४५	२८	४९	६	२४	१७	५६	२४	१०	9	कुंभ	५	२२	०८	२९	१६	१६	४६	३	४७
१८	१२	मं	१९	१७	१४	०७	श	३१	२०	१८	५६	गं	२९	४७	१८	१९	बा	१९	१७	१४	०७	२८	४५	६	२४	१७	५५	२५	११	10	कुंभ	५	२३	०७	४५	२०	१७	३८	४	२७
१९	१३	बु	२१	००	१४	४९	पू.भा	३४	१५	२०	०७	वृ	२८	१५	१७	४३	तै	२१	००	१४	४९	२८	४१	६	२५	१७	५३	२६	१२	11	मी. १३।५४	५	२४	०७	०५	२१	१७	०८	५	०८
२०	१४	गु	२१	१२	१४	५४	उ.भा	३५	३७	२०	४०	ध्रु	२५	३२	१६	३८	व	२१	१२	१४	५४	२८	३७	६	२५	१७	५२	२७	१३	12	मीन	५	२५	०६	२६	२३	१७	५०	५	४८
२१	१५	शु	१९	५५	१४	२४	रे	३५	४०	२०	४२	व्या	२१	३०	१५	०२	ब	१९	५५	१४	२४	२८	३३	६	२६	१७	५१	२८	१४	13	मे. २०।४२	५	२६	०५	४९	२६	१८	००	६	२८

ता. २८ सितम्बर से १३ अक्टूबर सन् २००० ई., राष्ट्रीय मिति ६ से २१ आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद् ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

पू.फा. में मंगल प्र. १६।१३, स्वाति में बुध प्रवेश २९।०४, शारदीय नवरात्रा A
वक्री गुरु १५।२०, श्रवण ४ में वक्री हर्षल प्रवेश १६।२५, उ.षा. ४ में वक्री B
बैंकों में अर्द्धवार्षिकी लेखाबंदी, वैधृति पुण्यं, रज्जब मु. मा. ७ प्रा., मोइनुद्दीन C
भद्रा १०।०२ से २२।१५ तक, पुनर्वसु २ में राहु पू.षा. ४ में केतु प्र. ११।१२, D
उपांग ललिता पंचमी व्रत, ललिता पंचमी, सोमवती पंचमी, महात्मा गांधी E
B नेपच्यून प्रवेश २१।४५, चन्द्रदर्शन मु. ३० साम्यार्घ E व शास्त्री जन्म दिन
भद्रा २७।१२ से, दुर्गा पूजा प्रारंभ, श्री सरस्वती आवाहन, अन्नपूर्णा F
भद्रा १६।३१ तक, विशाखा में शुक्र प्रवेश २९।३१, कृतिका ३ में वक्री शनि G
महानवमी, श्री सरस्वती बलिदान, नवरात्र समाप्त, मन्वादि, अस्त्र-शस्त्र पूजा
विजयादशमी (रावणदाह), अपराजिता पूजन, शमी पूजा
भद्रा २३।४७ से, रवि दशमी, सरस्वती विसर्जन, श्री माधाचार्य जयंती, H
भद्रा १२।४५ तक, पापांकुशा एका. व्रत स. D विनायक ४ व्रत, अक्टू. १० ता. ३१
चित्रा में सूर्य प्रवेश १०।२७, भौम प्रदोष व्रत F परिक्रमा २७।१२ से
A प्रा., कलश स्थापना, अग्रसेन जयंती, मातामह श्राद्ध
भद्रा १४।५४ से २६।३१ तक, विशाखा में बुध प्रवेश २२।०६, शरद् पूर्णिमा, J
पूर्णिमा पुण्यं, महर्षि बाल्मीकि जयंती, कार्तिक स्नान प्रा., जैन आयंबिल K

C चिश्ती सज्जरी अलह (ख्वाजा) की मजार पर अजमेर में उर्स मेला शुरू G प्रवेश ७।३५, श्री सरस्वती पूजन, श्री महाष्टमी व्रत पूजन, भद्रकाल्यावतार, अन्नपूर्णा परिक्रमा २९।४७ तक, जैन आयंबिल ओली प्रा., मेला ज्वालामुखी, तारा देवी (हि.प्र.) H बौद्धावतार १०, भरत मिलाप, वायु सेना दि., पंचक प्रा. २७।५८ से J सत्यव्रत, कोजागरी व्रत, मे. देवबन्द, मेला शाकम्भरी देवी (उ. प्र.), कुबेर व लक्ष्मी पूजा (बंगाल में) K ओली समा., पंचक समाप्त २०।४२, जन्म हजरत अली (मु.)

आश्विन शु. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ५ अक्टू. [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. १३ अक्टू. ❖ आश्विन शु. १५ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	८	८	६	१	६	१	२	८	९	९	७
१८	१३	१७	१३	१७	१८	६	२६	२६	२३	९	१६
११	१२	२६	३२	१९	०६	४०	२९	२९	१३	५७	५०
४०	५७	३३	२८	१६	४८	१३	६	६	३३	४२	३५
५९	[illegible]	३७	६०	१	७३	२	३	३	१	०	१
१०	१८	३३	५३	१२	०८	३०	११	११	१	२०	३५
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

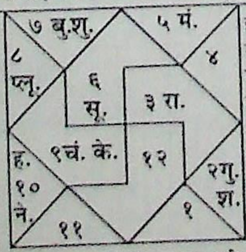

इस मास में कृष्ण पक्ष की तिथि क्षय और शुक्ल पक्ष की तिथि वृद्धि उत्तम हैं। जिसका फल—"यदा यान्ति वृद्धिं सिताख्यश्च पक्षस्तदा यान्ति वृद्धिं नृपा लोक संघा॥" राज-प्रजा में सुखशान्ति का विस्तार होगा। अन्तरिक्ष विज्ञान में भारत अपना वर्चस्व बनाये रखने में आशातीत सफलता प्राप्त करेगा। देश-विदेश में भारत की ख्याति बढ़ेगी। पक्षारंभ में गुरु वक्री होने से शुभ फलों में वृद्धि होगी। यथा—"गुरौ वक्रे सुभिक्षं च॥" किन्तु यहाँ गुरु-शनि का वृष राशि में योग होने से शुभ फलों में न्यूनता करेगा। कहीं रोग-पीड़ा, अग्निकांड, अराजकता, बम विस्फोट से प्रजा पीड़ित रहेगी। मध्य एशिया, ईरान, ईराक, आयरलैण्ड के अलावा भारत देश का मध्य भाग में कोई विशेष घटना जनता को आकर्षित करेगी। **तेजी मन्दी विचार**—द्वितीया शुक्रवार का चन्द्रदर्शन चावल, चना, उरद, सरसों, तिल, तेल व ऊनी वस्त्र में मन्दी तथा सोना, चांदी, रूई में घटाबढ़ी से तेजी करेगा। पक्ष मध्य में विशाखा का शुक्र मंदी को ही प्रोत्साहन देगा किन्तु ता. १० अक्टू. को चित्रा का सूर्य आने से सोना, चांदी, गुड़, खांड, केसर, गेहूँ, चना, कपास, रूई में तेजी की चाल निकलेगी। **आकाश लक्षण**— इस मास में पर्वतीय इलाकों के अलावा बंगाल, बिहार, आसाम में सामान्य से अच्छी तथा राजस्थान, पंजाब हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, मध्य प्रदेश में बादल चाल, वायु वेग तथा कहीं-कहीं साधारण वर्षा के योग हैं। **शकुन विचार**—"सातें, आठें क्वार सुदी जो वर्षा हो जाय। राज प्रजा दोनों सुखी सब संशय मिट जाय॥" आश्विन की पूर्णिमा को रात में आकाश निर्मल रहे तो उत्तम है। यदि चन्द्रमा बादलों में उगे तो धान्य करने वालों को चैत्र में लाभ हो।

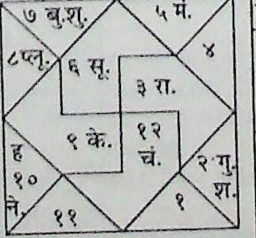

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	११	४	६	१	६	१	२	८	९	९	७
२६	२१	२२	२०	१७	२८	६	२६	२६	२३	९	१७
५	३०	२६	११	४	३१	१७	३	३	६	५५	२
४९	४५	३१	२२	२	२४	३५	४०	४०	३९	५७	३३
५९	८०	३७	३२	२	७२	३	३	३	०	०	१
२६	४२	२५	७	४८	५९	१२	११	११	३८	४	३७
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कार्तिक कृष्ण पक्ष-१४

श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ता. १४ से २७ अक्टूबर सन् २००० ई., राष्ट्रीय मिति २२ आश्विन से ५ कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद्-हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	ति	वा	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि
२३	१	श	१७	१७	१३	२२	अ	३४	३०	२०	१५	हर्ष	१६	३७	३१	०६	कौ	१७	१७	१३	२२
२३	२	र	१३	४७	११	५८	भ	३२	३५	११	२९	वज्र	११	०	०	५१	ग	१३	४७	११	५८
२४	३	चं	९	३५	१०	१८	कृ	२९	५७	१८	२७	सि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि	९	३५	१०	१८
२५	४	मं	५	०२	८	२९	रो	२७	००	१७	१६	व्य	५१	२२	२७	०१	बा	५	०२	८	२९
२६	५	बु	०	०७	६	३२	मृ	२३	५०	१६	०१	प	४४	२७	२४	१६	तै	०	०७	६	३२
०	६	बु	५५	०७	२८	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२७	७	गु	४९	५७	२६	२९	आ	२०	३०	१४	४२	शि	३७	२५	२१	२८	वि	२२	३५	१५	३२
२८	८	शु	४५	००	२४	३०	पुन	१७	१५	१३	२४	सि	३०	२५	१८	४०	बा	१७	२५	१३	२८
२९	९	श	३९	५५	२२	२९	पु	१४	०२	१२	०८	सा	२३	२५	१५	५३	तै	१२	२५	११	२९
३०	१०	र	३५	०२	२०	३२	श्ले	१०	५५	१०	५३	शुभ	१६	३५	१३	०९	व	७	२७	९	३०
का	११	चं	३०	२५	१८	४२	म	७	५५	९	४२	शु	९	४२	१०	२५	ब	२	४०	७	३६
२	१२	मं	२६	००	१६	५७	पूफा	५	१०	८	३७	ब्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तै	२६	००	१६	५७
३	१३	बु	२२	१५	१५	२७	उफा	२	५२	७	४२	वै	५१	२५	२७	०७	व	२२	१५	१५	२७
४	१४	गु	१९	१०	१४	१४	ह	१	२०	७	०६	वि	४६	२५	२५	०८	श	१९	१०	१४	१४
५	३०	शु	१७	१०	१३	२७	चि	०	३७	६	५०	प्री	४२	२७	२३	३४	ना	१७	१०	१३	२७

ति	दिनमान घं	दिनमान मि	सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	सूर्यास्त घं	सूर्यास्त मि	दिनांक प्र.	दिनांक मु.	दिनांक अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	चन्द्रोदय उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ
१	२८	२९	६	२७	१७	५०	२९	१५	14	मेष	५	२७	०५	१५	[illegible]	१८	३६	७	२०	वृश्चिक में शुक्र प्रवेश १०।३८, अशून्य शयन २ व्रत
२	२८	२५	६	२७	१७	४९	३०	१६	15	वृ. २१।१५	५	२८	०४	४२	३०	१९	३६	८	१२	भद्रा २३।०८ से, मार्गी नेपच्यून १७।३०, श्री गुरु रामदास जयंती
३	२८	२०	६	२८	१७	४८	का	१७	16	वृष	५	२९	०४	१२	३१	२०	३६	९	०४	भद्रा १०।१८ तक, तुला में सूर्य प्रवेश २८।००, संक्रान्ति मु. ४५, A
४	२८	१६	६	२८	१७	४७	२	१८	17	मि. २८।३९	६	००	०३	४३	३४	२१	३६	९	५६	
५	२८	१२	६	२९	१७	४६	३	१९	18	मिथुन	६	०१	०३	१७	३५	२२	३६	१०	४८	भद्रा २८।३२ से, वक्री बुध १०।३२
६	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी क्षयः
७	२८	०८	६	३०	१७	४५	४	२०	19	मिथुन	६	०२	०२	५२	३६	२३	३६	११	४०	भद्रा १५।३२ तक, उ. फा. में मंगल प्रवेश २४।२०
८	२८	०४	६	३०	१७	४४	५	२१	20	क. ७।१६	६	०३	०२	२८	४०	२४	२२	१२	३२	रोहिणी २ में वक्री गुरु प्रवेश ७।४९, कालाष्टमी, अहोई अष्टमी, B
९	२८	००	६	३१	१७	४३	६	२२	21	कर्क	६	०४	०२	०८	४१	१	०२	१३	२४	भद्रा ९।३० से २०।३२ तक F गोवर्धन पूजा, बलिराज पूजा
१०	२७	५६	६	३१	१७	४२	७	२३	22	सिं. १०।५३	६	०५	०१	४९	४४	१	५३	१४	१६	
११	२७	५२	६	३२	१७	४१	८	२४	23	सिंह	६	०६	०१	३३	४५	२	३८	१५	०८	स्वाति में सूर्य प्रवेश २०।५७, स्वाति में वक्री बुध प्रवेश २५।१६, बुध C
१२	२७	४८	६	३३	१७	४०	९	२५	24	कं. १४।२२	६	०७	०१	१८	४७	३	३८	१६	००	भौम प्रदोष व्रत, धनतेरस, धनवन्तरी जयंती, यम दीपदानम्
१३	२७	४४	६	३३	१७	४०	१०	२६	25	कन्या	६	०८	०१	०५	४९	४	३८	१६	५२	भद्रा १५।२७ से २६।५० तक, कन्या में मंगल प्रवेश ९।११, मासशिव D
१४	२७	४०	६	३४	१७	३९	११	२७	26	तु. १८।१५	६	०९	००	५४	५०	५	३८	१७	४४	मार्गी हर्षल ११।३०, दीपावली, श्री महालक्ष्मी पूजन, प्रदोषकाले E
३०	२७	३६	६	३५	१७	३८	१२	२८	27	तुला	६	१०	००	४४	५३	६	३७	१८	००	ज्येष्ठा में शुक्र प्रवेश २८।१७, देवपितृकार्या अमावस्या, अन्नकूट, F

A अनुराधा में शुक्र प्रवेश २८।२६, दशरथ चतुर्थी, करक चतुर्थी (करवा चौथ व्रत), सौर कार्तिक मासारंभ, व्यातिपात पुण्यं, B राधा कुण्ड स्नान मथुरा C पश्चिम में अस्त २७।२६, सायन वृश्चिक में सूर्य प्रवेश ८।१७, हेमन्त ऋतु प्रारंभ, रमा एकादशी व्रत (सबका), राष्ट्रीय कार्तिक मास प्रारंभ, गोवत्स पूजा, (प्रदोष व्यापिनी) D रात्रि व्रत, नरक चतुर्दशी, रूप १४, तिलाभ्यङ्ग स्नान, वैधृति पुण्यं, चन्द्रोदय व्यापिनी में नरक चतुर्दशी स्नान व दीपदानं दीपदानं, निशीथ काल में महाकाली पूजा, कमला जयंती, स्वा. दयानन्द सरस्वती व महावीर निर्वाण दिवस, श्री हनुमान जयंती, शबे-ए-मिराज

कार्तिक कृ. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २० अक्टू. **[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]** ता. २७ अक्टू. ❖ कार्तिक कृ. ३० शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	२	४	६	१	७	१	२	८	९	९	७
३	२८	२५	२१	१६	७	५	२५	२५	२३	९	१७
२	४०	४८	४८	४०	१	५३	४१	४१	३	५६	१४
२८	४	२	४६	२४	५०	४१	२४	२४	७	१०	२२
५९	८०	३७	१५	४	७२	३	३	३	०	०	१
६०	३१	१८	३५	९	५०	४१	११	११	१८	११	४७
मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व	व	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

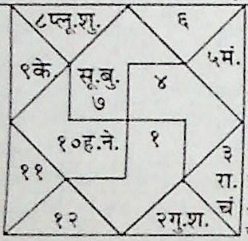

इस मास में शनिवार एवं पूर्णिमा शनिवार की नेष्ट फलप्रद है। जिसका फल- **शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणी। ईशान देश भंगश्च वह्नि दाहो महर्घता॥** कहीं प्रकृति-प्रकोप, भूकम्प, अग्निकाण्ड, बम, विस्फोट, दुर्भिक्ष भय से जनधन की हानि होगी। समुद्रतटवर्ती भू-भाग इस योग से ज्यादा प्रभावित होंगे। पूर्वोत्तर देश आसाम, बंगाल, बर्मा, चीन, जापान आदि देश विशेष में आन्तरिक कलह, रोग, पीड़ा, अराजकता तथा उपद्रव अधिक होंगे। किसी शासक को पदत्याग के लिए विवश होना पड़े। दीपमालिका चतुर्दशी गुरुवार की भारत के लिए श्रेष्ठ है।

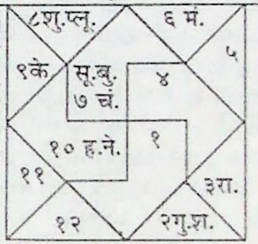

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	६	५	६	१	७	१	२	८	९	९	७
१०	५	१	१६	१६	१५	५	२५	२५	२३	९	१७
०	५४	८	५५	७	३१	२६	१९	१९	२	५८	२७
४४	३९	३९	४९	४३	३	३१	९	९	१	३	२८
५९	७३	३७	७२	५	७२	४	३	३	०	०	१
५३	२०	८	१	२१	३९	८	११	११	२	२८	५८
मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भारत प्रजातांत्रिक और गुटनिरपेक्ष देशों के विकास में रचनात्मक भूमिका अदा करेगा। **तेजी मन्दी विचार—** पक्षारंभ में वृश्चिक राशि में शुक्र प्रवेश करने से जौ, गेहूँ, चना, उरद, मूंग, मोठ, बाजरा में मंदी तथा रुई, अलसी, चांदी में तेजी होगी। जिसे तुला संक्रान्ति सोमवार की ४५ मुहूर्ती होने से बढ़ावा देगी। यहाँ अनाजादि में मंदी की चाल बनी रहेगी। पक्षान्त में बुध का अस्त तथा कन्या का मंगल आने से सभी धातु पदार्थ, वस्त्र, रुई, पाट, बारदाना में तेजी होगी। **कन्या राशि के मंगल का फल—"कन्या राशिगते भौम चन्दनं पट्टवस्त्रकम्। आरक्ताद्यर्घवस्त्राणां प्रभवेत्तु महर्घता॥"** यहाँ आई तेजी का लाभ व्यापारी बाजार रुख देखकर अवश्य उठावें। **आकाश लक्षण—** इस पक्ष में ऋतु परिवर्तन होने से सर्दी का अहसास होने लगेगा। वायु वेग के साथ उ.प्र., मं. प्र., बंगाल, आसाम में वर्षा तथा राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब में कहीं-कहीं बादल चाल या छुटपुट वर्षा होगी। **शकुन विचार—** कार्तिक कृष्ण एकादशी को बादल वर्षा होना आगामी आषाढ़ मास के लिए श्रेष्ठ माना गया है। यथा—**"कार्तिक वदी एकादशी, बादल वर्षा होय। आषाढ़ मास में वर्षा अधिक, संशय करो न कोय॥"**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

कार्तिक शुक्ल पक्ष-१५

श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ता. २८ अक्टू. से ११ नवं. सन् २००० ई., राष्ट्रीय मिति ६ से २० कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

रा.मि.	ति	वा	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदयास्त स्टैं.टा. उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	टि	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
६	१	श	१६	३०	१३	१२	स्वा	१	१२	७	०५	आ	३९	३०	२२	२४	ब	१६	३०	१३	१२	२७	३२	६	३६	१७	३७	१३	२९	28	वृ. २१।३८	६	११	००	३७	[illegible]	७	२९	१८	३१	चन्द्रदर्शन मु. ४५, समर्घ, गोसंवर्धन सप्ताह प्रारंभ, द्यूत क्रीड़ा दिवस
७	२	र	१७	३७	१३	३५	वि	३	१०	७	५२	सौ	३७	४७	२१	४३	कौ	१७	३७	१३	३५	२७	२८	६	३६	१७	३६	१४	सा	29	वृश्चिक	६	१२	००	३२	५७	८	२१	१९	२२	सावान मु, मास ८ प्रा., भैया दूज, टिक्का, यम द्वितीया, विश्वकर्मा A
८	३	चं	१९	४७	१४	३२	अनु	६	४२	९	१८	शो	३७	२२	२१	३४	ग	१९	४७	१४	३२	२७	२४	६	३७	१७	३५	१५	२	30	वृश्चिक	६	१३	००	२९	५९	९	१३	२०	१४	भद्रा २७।२१ से A ज., चित्रगुप्त पूजा C दि., नवं. मा. ११ ता. ३०
९	४	मं	२३	५२	१६	११	ज्ये	११	४५	११	२०	अ	३८	०२	२१	०१	वि	२३	५२	१६	११	२७	२१	६	३८	१७	३४	१६	३	31	ध. ११।२०	६	१४	००	२८	[illegible]	१०	०५	२१	०६	भद्रा १६।११ तक, श्रवण १ में नेप. प्रवेश १२।१५, विनायक ४ व्रत, B
१०	५	बु	२९	२२	१८	२३	मू	१८	१२	१३	०५	सु	३९	५०	२२	३४	बा	२९	२२	१८	२३	२७	१७	६	३८	१७	३४	१७	४	N1	धनु	६	१५	००	२९	२	१०	०५	२१	५८	सौभाग्य पंचमी, ज्ञान पंचमी (जैन), पांडव ५, गुरु गोविन्द सिंह पुण्य C
११	६	गु	३५	४५	२०	०७	पू.षा	२५	३५	१६	०३	धृ	४२	१०	२३	३१	कौ	२	२७	७	३८	२७	१३	६	३९	१७	३३	१८	५	2	म. २३।५०	६	१६	००	३१	४	१०	५७	२२	५०	सूर्य षष्ठी व्रत, डाला छट (बिहार) H जन्मोत्सव (पंजाब)
१२	७	शु	४२	२२	२३	३७	उ.षा	३३	२०	२०	००	शू	४४	३५	२४	३०	ग	९	०७	१०	११	२७	१०	६	४०	१७	३२	१९	६	3	मकर	६	१७	००	३६	६	११	४९	२३	४२	भद्रा २३।३७ से, कल्पादि ७, अष्टान्हिक जैन व्रतारंभ, सहस्त्रार्जुन ज.
१३	८	श	४८	४५	२६	११	श्र	४१	०२	२३	०६	गं	४६	५०	२५	२५	वि	१५	३७	१२	५६	२७	०६	६	४१	१७	३२	२०	७	4	मकर	६	१८	००	४२	९	१२	४१	२४	३४	भद्रा १२।५६ तक, श्री दुर्गाष्टमी, गोपाष्टमी, गोपूजा यवअन्नादिदान D
१४	९	र	५४	१०	२८	२१	ध	४७	४०	२५	४५	वृ	४८	२०	२६	०१	बा	२१	३५	१५	१९	२७	०३	६	४१	१७	३१	२१	८	5	कुं. १२।२७	६	१९	००	५१	१०	१३	३३	१	२५	विशा. में सूर्य प्र. २९।०६, चित्रा में वक्री बुध प्रवेश २२।००, बुध पूर्व E
१५	१०	चं	५७	५२	२९	५१	श	५२	५५	२७	५२	ध्रु	४८	३७	२६	०९	तै	२६	१५	१७	१२	२७	००	६	४२	१७	३०	२२	९	6	कुंभ	६	२०	०१	०१	१२	१४	२५	२	१६	L रथयात्रा (जैन), शबे-ए-बरात (मु.), व्यतिपात पुण्य
१६	११	मं	५९	५७	३०	४२	पू.भा	५६	२५	२९	१७	व्या	४७	३७	२५	४६	व	२९	०७	१८	२२	२६	५६	६	४३	१७	३०	२३	१०	7	मी. २३।००	६	२१	०१	१३	१३	१५	१७	३	०७	भद्रा १८।२२ से ३०।४२ तक, मूल धनु में शुक्र प्रवेश २१।२०, देव F
१७	१२	बु	५९	५७	३०	४३	उ.भा	५८	००	२९	५६	हर्ष	४५	०७	२४	४७	ब	३०	१०	१८	४८	२६	५२	६	४४	१७	२९	२४	११	8	मीन	६	२२	०१	२५	१६	१६	०९	४	००	मार्गी बुध १२।०५, देव प्रबोधिनी एका. व्रत (वैष्णव), तुलसी विवाह, G
१८	१३	गु	५८	०५	२९	५८	रे	५७	४७	२९	५५	वज्र	४१	१०	२३	१२	कौ	२९	१५	१८	२६	२६	४९	६	४४	१७	२८	२५	१२	9	मे. २९।५५	६	२३	०१	४२	१७	१७	०१	४	५३	प्रदोष व्रत, पंचक समाप्त २९।५५, मेला वीर वैरागी नकोदर H
१९	१४	शु	५४	४०	२८	३७	अ	५६	०७	२९	१२	सि	३५	५०	२१	०५	ग	२६	३५	१७	२३	२६	४५	६	४५	१७	२८	२६	१३	10	मेष	६	२४	०१	५९	१९	१७	५३	५	४६	भद्रा २८।३७ से, हस्त में मंगल प्रवेश १४।०२, स्वाति में बुध प्रवेश J
२०	१५	श	५०	००	२६	४६	भ	५३	००	२७	५८	व्य	२९	२२	१८	३१	वि	२२	२५	१५	४४	२६	४२	६	४६	१७	२७	२७	१४	11	मेष	६	२५	०२	१८	२१	१८	००	६	४१	भद्रा १५।४४ तक, कार्तिकी पूर्णिमा, सत्यव्रत, देव दीवाली, मेला K

B सरदार पटेल ज., इन्दिरा गांधी पुण्य दि., सूर्यषष्ठी व्रतारंभ (बिहार) तीन दिन का, अंगारक चतुर्थी D गौशाला निर्माण, गौसंवर्धन सप्ताहपूर्ण E में उदय २१।२५, अक्षय ९, आंवला ९, कुष्मांड ९, कृतयुगादि, जगद्धातृ पूजा, मथुरा प्रदक्षिणा, पंचक प्रा. १२।२७ से F प्रबोधिनी एका. व्रत (स्मार्त), भीष्म पंचकारम्भ, पुष्कर मेला प्रा. (राज.) G चातुर्मासा व्रत नियमादि पूर्ण, पुण्ढरपुर यात्रा (महा.), मन्वादि १२, हरिवासराऽभावः, कालीदास ज. J २१।३०, बैकुंठ चतुर्दशी व्रत, काशी विश्वनाथ प्रति. दिवस, चौमासी चौदस (जैन) K पुष्करराज व रेणुका तीर्थ गढ़गंगा, गुरुनानक ज., भीष्म पंचक समाप्त, निम्बार्काचार्य ज., मन्वादि १५, कार्तिक स्नान समा., अष्टान्हिक जैन व्रत समा., L

कार्तिक शु. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ४ नवं. [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. ११ नवं. ❖ कार्तिक शु. १५ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

ता. ४ नवं.:

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	९	५	६	१	७	१	२	८	९	९	७
१८	१४	६	७	१५	२५	४	२४	२४	२३	१०	१७
०	३८	५	४२	२०	११	५२	५३	५३	३	२	४३
४२	३६	१८	५	३३	१५	४	४३	४३	४५	९	३८
६०	८२२	३७	४१	६	७२	४	३	३	०	०	२
९	२०	०	२०	३३	२४	३१	११	११	२९	४०	६
मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

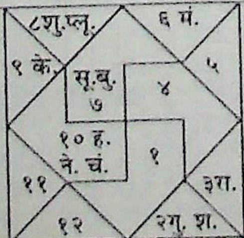

इस मास के प्रारंभ में शुक्र वृश्चिक राशि में प्रवेश कर गुरु से सम सप्तम योग बनायेगा जो ता. ७ नवम्बर तक बना रहेगा। जिसका फल प्राचीन आचार्यों ने इस प्रकार बताया है। ''गुरौ सिते च यामित्रे सितादर्काद्गुरोरपि। यामित्रस्था ग्रहाः सर्वे अनावृष्टि र्भवेत्तदा॥'' अनावृष्टि से खाद्यानों का उत्पादन कम होगा और मंहगाई सुरसा के मुख के समान बढ़ती दिखाई देगी। अमेरिका, नार्वे, स्वीडन, मध्य, एशिया, ईरान, ईराक देशों में प्रकृति प्रकोप, भूकम्प, रेल, यान

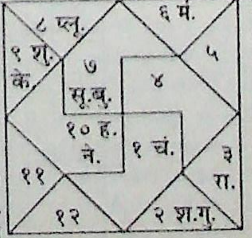

ता. ११ नवं.:

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	०	५	६	१	८	१	२	८	९	९	७
२५	१३	१०	६	१४	३	४	२४	२४	२३	१०	१७
२	२९	२३	४८	३२	३७	११	३१	३१	७	७	५८
१८	४३	४६	१२	१०	३	३९	२७	२७	५७	२७	४१
६०	८१२	३६	६३	७	७३	४	३	३	०	०	२
२१	५५	५१	४२	२१	५	४७	११	११	४९	५३	१३
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दुर्घटना तथा बम विस्फोट से जनधन की हानि होगी। कई देशों में राजनैतिक उथल-पुथल या सत्ता परिवर्तन के परिदृश्य दिखाई देंगे। भारत में भी असामाजिक तत्वों द्वारा तोड़फोड़ तथा अराजकता फैलाने की कोशिश की जायेगी। शासन कर्त्ताओं में पदलोलुपता की वृद्धि होगी। **तेजी मन्दी विचार**— पक्षारंभ में अलसी, सूत पाट, बारदाना, सोना, चांदी में घटाबढ़ी होकर तेजी की चाल बनेगी। जिसे पक्ष मध्य में बुध का उदय प्रोत्साहन देगा। किन्तु ता. ८ नवम्बर को बुध मार्गी होने से चलते भावों में उलटफेर होने की संभावना बढ़ेगी। यथा— **''वक्र चाल चलते हुए बुध मार्गी हो जाय। चालू रुख मार्केट का एकदम पलटा खाय॥''** **आकाश लक्षण**— यहाँ इस पक्ष में दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, म. प्र. तथा उ. प्र. में वायुमण्डल दूषित रहेगा। कहीं झंझावात से तो कहीं वायुवेग से कृषि में हानि होगी। तटवर्ती क्षेत्रों में वर्षा होगी। **शकुन विचार**— कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को यदि सूर्य के चारों ओर कुण्डल हो तो तिलहन, तिल, मूंगफली, एरण्डा, सरसों आदि पदार्थ तेज होंगे। अतः कुंडल दिखाई पड़े तो व्यापारियों को उक्त पदार्थों का संग्रह करना चाहिए।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष-१६ श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ता. १२ से २५ नवम्बर सन् २००० ई., राष्ट्रीय मिति २१ कार्तिक से ४ मार्गशीर्ष तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान		स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
२१	१	र	४४	१५	२४	२९	कृ	४९	०२	२६	२४	व	२१	५७	१५	३४	बा	१७	०७	१३	३८	२६	३९	६	४७	१७	२७	२८	१५	12	वृ. १।४०	६	२६	०२	३९	[illegible]	१८	२५	७	३३	महामना मालवीय पुण्य दिवस
२२	२	चं	३७	५७	२१	५८	रो	४४	३०	२४	३५	प	१४	०२	१२	२४	तै	११	०७	११	१४	२६	३६	६	४७	१७	२६	२९	१६	13	वृष	६	२७	०३	०१	२४	१९	३७	८	२५	अशून्य शयन २ व्रत
२३	३	मं	३१	२२	१९	२१	मृ	३९	४७	२२	४३	शि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व	४	४२	८	४१	२६	३३	६	४८	१७	२६	३०	१७	14	मि. ११।४०	६	२८	०३	२५	२६	२०	५०	९	१७	भद्रा ८।४१ से १९।२१ तक. सौभाग्य सुन्दरी व्रत. कृष्ण चतुर्थी A
२४	४	बु	२४	५२	१६	४६	आ	३५	०५	२०	५१	सा	४९	१२	२६	३०	बा	२४	५२	१६	४६	२६	३०	६	४९	१७	२५	मा.	१८	15	मिथुन	६	२९	०३	५१	२७	२२	०३	१०	०१	वृश्चिक में सूर्य प्र. २७।४८, संक्रांति मु. ४५, सौर मार्गशीर्ष मासारंभ
२५	५	गु	१८	३५	१४	१६	पुन	३०	४२	१९	०७	शुभ	४१	१५	२३	२०	तै	१८	३५	१४	१६	२६	२७	६	५०	१७	२५	२	१९	16	क. १३।३३	७	००	०४	१८	२९	२३	१६	११	०१	सुविधानाथ जयंती व दीक्षा दिवस जैन
२६	६	शु	१२	४५	११	५७	पु	२६	४५	१७	३३	शु	३३	३७	२०	१८	व	१२	४५	११	५७	२६	२४	६	५१	१७	२४	३	२०	17	कर्क	७	०१	०४	४७	३०	२४	२९	११	५३	भद्रा ११।५७ से २२।५४ तक. लाला लाजपतराय पुण्य दिवस
२७	७	श	७	३०	९	५१	श्ले	२३	२५	१६	१३	ब्र	२६	३७	१७	३०	ब	७	३०	९	५१	२६	२१	६	५१	१७	२४	४	२१	18	सिं. १६।१३	७	०२	०५	१७	३२	१	१८	१२	४५	कालाष्टमी, श्री महाकाल भैरवाष्टमी, भैरव जी दर्शन-पूजनार्चन
२८	८	र	२	५५	८	०२	म	२०	४५	१५	१०	ऐं	२०	०२	१४	५३	कौ	२	५५	८	०२	२६	१८	६	५२	१७	२४	५	२२	19	सिंह	७	०३	०५	४९	३३	२	०७	१३	३७	अनुराधा में सूर्य प्रवेश ११।०७, पू.षा. में शुक्र प्रवेश ८।०३. B
०	९	र	५९	०५	३०	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी क्षयः
२९	१०	चं	५५	५५	२९	१५	पूफा	१८	५०	१४	२५	वै	१४	०७	१२	३२	व	२७	२२	१७	५०	२६	१६	६	५३	१७	२३	६	२३	20	क. २०।१५	७	०४	०६	२२	३५	२	५६	१४	२९	भद्रा १७।५० से २९।१५ तक, रोहि. १ में वक्री गुरु १४।२०. C
३०	११	मं	५३	३५	२८	२०	उफा	१७	३५	१३	५६	वि	८	४५	१०	२४	ब	२४	३७	१६	४५	२६	१३	६	५४	१७	२३	७	२४	21	कन्या	७	०५	०६	५७	३६	३	४४	१५	२१	सायन धनु में सूर्य प्रवेश २९।५०. उत्पत्ति एका. व्रत (स्मार्त), D
मार्ग	१२	बु	५२	१५	२७	४८	ह	१७	१५	१३	४८	प्री	४	०७	८	३३	कौ	२२	४७	१६	०१	२६	१०	६	५४	१७	२३	८	२५	22	तु. २१।५१	७	०६	०७	३३	३७	५	३२	१६	१३	धनि. १ में हर्षल प्रवेश १२।५५. उत्पत्ति एकादशी व्रत (वैष्णव),E
२	१३	गु	५१	४७	२७	३८	चि	१७	४५	१४	०१	आ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ग	२१	५०	१५	३९	२६	०८	६	५५	१७	२२	९	२६	23	तुला	७	०७	०८	११	३८	५	१९	१७	०५	भद्रा २७।३८ से. विशा. में बुध प्र. ७।५२. कृत्तिका २ में वक्री F
३	१४	शु	५२	३०	२७	५६	स्वा	१९	१५	१४	३८	शो	५४	३५	२८	४६	वि	२२	००	१५	४४	२६	०५	६	५६	१७	२२	१०	२७	24	तुला	७	०८	०८	४९	४१	६	०६	१७	५७	भद्रा १५।४४ तक. मास शिवरात्रि व्रत, श्री बाला जयंती, G
४	३०	श	५४	१७	२८	४०	वि	२१	५५	१५	४३	अ	५३	०५	२८	११	चतु	२३	१२	१६	१४	२६	०३	६	५७	१७	२२	११	२८	25	वृ. १।२४	७	०९	०९	३०	४२	६	५३	१८	४९	देवपितृकार्याऽमावस्या, कमला जयंती, शनैश्चरी अमा.

A व्रत, पं. जवाहरलाल नेहरू जयंती (बलिदान). बाल मेला दिल्ली **B प्रथमाष्टमी (उड़ीसा)**, इन्दिरा गांधी जन्म दिवस (एकता दिवस) **C महावीर स्वामी दीक्षा दिवस, वैधृति पुण्यं**
D पद्म प्रभु मोक्ष दिवस (जैन) **E राष्ट्रीय मार्गशीर्ष मास प्रारंभ F शनि प्रवेश** ११।२५, **प्रदोष व्रत**, संत ज्ञानेश्वर महाराज पुण्य तिथि **G** मेला पुरमण्डल. देविका स्नान (जम्मू कश्मीर)

मार्गशीर्ष कृ. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १९ नवं. **[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]** ता. २५ नवंबर ❖ मार्गशीर्ष कृ. ३० शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	४	५	६	१	८	१	२	८	९	९	७
३	७	१५	१४	१३	१३	३	२४	२४	२३	१०	१८
५	४३	१७	२६	३०	१२	४०	६	६	१५	१५	१६
४९	१९	४३	१	५५	२३	०३	१	१	५०	२९	४१
६०	७३०	३६	९८	७	७१	४	३	३	१	१	२
३३	४५	३९	०	५८	४१	५२	११	११	१२	८	१७
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

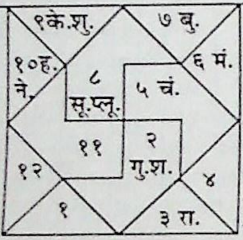

इस पक्ष में मिश्रित फल होंगे। कहीं अशुभ फल अधिक तो कहीं शुभ फल अधिक होंगे। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में नवीन अनुसंधान में सफलता मिलने से नया कीर्तिमान बनेगा किन्तु विश्व में बढ़ती अराजकता, मंहगाई, बेरोजगारी को रोकना असम्भव महसूस होगा। विश्व व्यापार सन्धि से आयात निर्यात की वृद्धि होगी। आम जनता का जीवन स्तर ऊंचा होने लगेगा। यहां गुरु-शनि का बुध, शुक्र केतु से षडाष्टक योग भी बना होने से आस्ट्रेलिया, अरब राष्ट्र, चीन, जापान, आस्ट्रिया, तिब्बत, ईरान, ईराक आदि देशों में अशांति व प्रकृति प्रकोप से जन धन की हानि होगी। सरकारी मशीनरी आदि का खुलकर दुरुपयोग होगा। चोर, उच्चके, व असामाजिक तत्व निरंकुश घूमते फिरेंगे। भारत में यत्र-तत्र अशुभ फल होते दिखाई देंगे। **तेजी मंदी विचार-पक्षारंभ में** रुई, सूत, कपास, चांदी, चावल, लाल चन्दन, जौ, गेहूं, चना, मूंग मोठ, बाजरा, मूंगफली आदि में मंदी का संचार होगा।

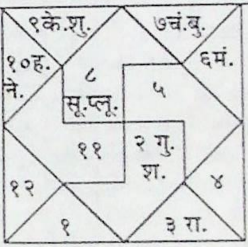

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	६	५	६	१	८	१	२	८	९	९	७
९	२७	१८	२२	१२	२०	३	२३	२३	२३	१०	१८
९	५५	५७	४४	४२	२१	११	४६	४६	२३	२२	३०
३०	१२	१५	१७	३०	३२	२७	५७	५७	४७	४८	२७
६०	८१०	३६	८८	८	७१	४	३	३	१	१	२
४२	४०	२९	५	१०	१८	५२	११	११	३०	१९	१९
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वृश्चिक संक्रान्ति बुधवार की ४५ मुहूर्ती लौंग, सुपारी, लालमिर्च में तेजी तथा अनाजादि में मंदी कारक है यथा-**बुधे च पुंगादिफलं महर्घम्॥** पक्षान्त में घटाबढ़ी से तेजी की चाल निकलेगी। **आकाश लक्षण**--इस पक्ष में दिल्ली, पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, उ. प्र., म. प्र. में साधारण बादल व वायुमण्डल दूषित रहेगा। पक्षान्त में सुदूर उत्तरी भारत में व्यापक रूप से हल्की वर्षा की संभावना बनेगी। **शकुन विचार-मार्गशीर्षस्थ सप्तम्यां निर्मलं चेद् दिवानिशम्। धान्यं समर्घं वैशाखे साभ्रतायां महर्घता॥** मार्गशीर्ष कृष्ण ७ को आकाश एकदम साफ रहे तो आगे बैशाख मास में धान्य मंदा होता है। ति. १४ व अमावस्या को बादल चाल हो तो अन्न तृण में तेजी होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष-१७ श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ता. २६ नवं. से ११ दिसम्बर सन् २००० ई., राष्ट्रीय मिति ५ से २० मार्गशीर्ष तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.	तिथि				स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		दिन मान		स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय		अस्त		दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि.				गति	चन्द्रोदय दिल्ली उदय		अस्त		
मि.	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	घ	प	घं	मि	घं	मि				रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.		घं.	मि.	घं.	मि.	
५	१	र	५७	३०	२१	५८	अनु	२५	४२	१७	१५	सु	५२	४०	२८	०२	कि	२५	४२	१७	१५	२६	००	६	५८	१७	२२	१२	२१	26	वृश्चिक	७	१०	१०	१२	५०/४३	७	२३	१९	१३	रुद्रव्रत (पीड़िया व्रत) E मोचन श्रा., त्रिपुर भैरव ज., संभवनाथ ज.
६	२	चं	६०	००	-	-	ज्ये	३०	५०	११	१८	धृ	५३	१२	२८	१५	बा	२९	३२	१८	४७	२५	५८	६	५८	१७	२२	१३	३०	27	ध. ११।१८	७	११	१०	५५	४५	८	१५	१९	१३	चन्द्रदर्शन मु. १५, महर्घ F जयंती, श्री दत्तात्रेय जयंती
७	२	मं	१	५५	७	४५	मू	३७	०५	२१	४९	शू	५४	३२	२८	४८	कौ	१	५५	७	४५	२५	५५	६	५९	१७	२२	१४	रम	28	धनु	७	१२	११	४०	४६	९	०७	१९	५८	द्वितीया वृद्धि, रमजान मु. मास १ प्रा., रोजा प्रा.
८	३	बु	७	३०	१०	००	पू.षा	४४	२५	२४	४२	गं	५६	४०	२९	४०	ग	७	३०	१०	००	२५	५३	७	००	१७	२२	१५	२	29	धनु	७	१३	१२	२६	४७	९	५९	२०	४२	भद्रा २३।१७ से, वृश्चिक में बुध प्रवेश २६।०६
९	४	गु	१३	५२	१२	३४	उ.षा	५२	०२	२७	५०	वृ	५९	०२	३०	३८	वि	१३	५२	१२	३४	२५	५१	७	०१	१७	२१	१६	३	30	म. ७।१७	७	१४	१३	१३	४८	१०	४१	२१	२७	भद्रा १२।३४ तक, उ.षा में शुक्र प्रवेश १३।१२, विनायक ४ व्रत
१०	५	शु	२०	४५	१५	२०	श्र	५९	४७	३०	५७	ध्रु	६०	००	-	-	बा	२०	४५	१५	२०	२५	४९	७	०२	१७	२१	१७	४	D1	मकर	७	१५	१४	०१	५०	११	३३	२२	११	अनु. में बुध प्रवे. ३०।२२, बुध पूर्व में अस्त २८।०८, श्री राम A
११	६	श	२७	२७	१८	०१	ध	६०	००	-	-	ध्रु	१	२७	७	३७	तै	२७	२७	१८	०१	२५	४७	७	०२	१७	२१	१८	५	2	कुं. २०।३०	७	१६	१४	५१	५०	१२	२५	२२	५५	ज्ये. में सूर्य प्रवेश १५।२५, चित्रा में मंगल प्रवे. १०।४५, श्री राम B
१२	७	र	३३	२२	२०	२४	ध	७	१२	९	५६	व्या	३	४५	८	२९	ग	०	३२	७	१६	२५	४५	७	०३	१७	२१	१९	६	3	कुंभ	७	१७	१५	४१	५२	१३	२७	२३	५०	भद्रा २०।२४ से, मकर में शुक्र प्रवेश ९।००, पुन. १ में राहु पू.षा. ३ C
१३	८	चं	३८	००	२२	१६	श	१३	३५	१२	३०	हर्ष	४	५२	९	०१	वि	५	५२	९	२५	२५	४४	७	०४	१७	२२	२०	७	4	कुंभ	७	१८	१६	३२	५४	१४	०९	२४	४५	भद्रा ९।२५ तक, श्री दुर्गाष्टमी
१४	९	मं	४०	५०	२३	२५	पू.भा	१८	२५	१४	२७	वज्र	४	५७	९	०४	बा	९	३७	१०	५६	२५	४२	७	०५	१७	२२	२१	८	5	मी. ८।००	७	१९	१७	२७	५४	१५	०१	१	४०	महानन्दा नवमी, कल्पादि ९, जैन दिवाकतर चौथ पुण्यं
१५	१०	बु	४१	४०	२३	४५	उ.भा	२१	२०	१५	३७	सि	३	४०	८	३३	तै	११	३५	११	४३	२५	४०	७	०५	१७	२२	२२	९	6	मीन	७	२०	१८	२१	५५	१५	५३	२	३४	श्री अमरनाथ जन्म व मोक्ष दिन (जैन), व्यतिपात पुण्यं
१६	११	गु	४०	३०	२३	१८	रे	२२	१५	१६	००	व्य	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व	११	२०	११	३८	२५	३९	७	०६	१७	२२	२३	१०	7	मे. १६।००	७	२१	१९	१६	५६	१६	४५	३	२८	भद्रा ११।३८ से २३।१८ तक, मोक्षदा एकादशी व्रत (सबका), D
१७	१२	शु	३७	०७	२१	५८	अ	२१	१०	१५	३५	प	५०	१७	२७	१४	ब	९	०५	१०	४५	२५	३७	७	०७	१७	२२	२४	११	8	मेष	७	२२	२०	१२	५६	१७	१५	४	२४	अखण्ड द्वादशी, व्यंजन द्वादशी, भरणी दीपम
१८	१३	श	३२	१३	२०	०२	भ	१८	१३	१४	२६	शि	४२	५७	२४	१८	कौ	४	५२	९	०४	२५	३६	७	०७	१७	२२	२५	१२	9	वृ. २०।०३	७	२३	२१	०८	५८	१७	३५	५	२०	शनि प्रदोष व्रत, गुरु ग्रंथ साहिब का वार्षिक उत्सव, कृत्तिका दीपम
१९	१४	र	२५	५०	१७	२८	कृ	१४	०२	१२	४५	सि	३४	३०	२०	५६	व	२५	५०	१७	२८	२५	३४	७	०८	१७	२२	२६	१३	10	वृष	७	२४	२२	०६	५९/०	१७	५५	६	१५	भद्रा १७।२८ से २८।०० तक, ज्येष्ठा में बुध प्रवेश २०।५५, पिशाच E
२०	१५	चं	१८	३०	१४	३३	रो	८	३५	१०	३५	सा	२५	१५	१३	१५	ब	१८	३०	१४	३३	२५	३३	७	०९	१७	२२	२७	१४	11	मि. २१।२३	७	२५	२३	०६	०	१८	००	७	१०	श्रवण में शुक्र प्रवेश २२।००, सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्यं, अन्नपूर्णा जं. F

A त्रिवाहोत्सव, नाग पंचमी (द.भा. में), गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस, दिसं. मास १२ ता. ३१ B कलेवा, स्कन्द षष्ठी व्रत, चम्पा षष्ठी (महा.), गुहा ६ व्रत, मूलक रूपिणी षष्ठी (बंगाल), पंचक प्रा. २०।३० से C में केतु प्रवेश १६।५०, मित्र सप्तमी, नरसी मेहता जयंती, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जन्म दिवस, भानु सप्तमी D श्री गीता जयंती, मौनी एका. (जैन), वैकुण्ठ एकादशी, मातंगी जयंती, पंचक समा. १६।००, झंडा दिवस

मार्ग. शु. ८ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ४ दिसंबर [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. ११ दिसं. ❖ मार्ग. शु. १५ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	१०	५	७	१	९	१	२	८	९	९	७
१८	१६	२४	६	११	१	२	२३	२३	२३	१०	१८
१६	२७	२४	२२	२९	०	२८	१८	१८	३८	३५	५१
३३	३	३५	४७	४	२२	११	२०	२०	५५	४१	२१
६०	७३४	३६	९२	८	७०	६	३	३	१	१	२
५४	२६	१३	३८	४	३४	३६	११	११	५३	३४	१९
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

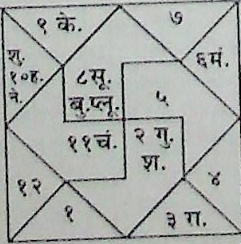

इस मास में पांच रविवार, पांच सोमवार मध्यम-उत्तम हैं। आरम्भ में राजनैतिक, सामाजिक तनाव बढ़कर मध्य में सुधरेंगे। चल रहे सामयिक कार्यों में प्रगति होगी। कल कारखानों में उत्पादन बढ़ने से सर्वत्र खुशहाली का संचार होगा। विश्व शांति के उपायों पर गंभीरता से विचार-विमर्श किया जायेगा। यहां गुरु-शनि का वृष राशि में योग शुभ फलों में कमी करके नेष्ट फलों की बढ़ोत्तरी करेगा। विश्व में कहीं प्रकृति-प्रकोप, रेल-यान दुर्घटना, बम विस्फोट से जन धन की हानि होगी। इस मास में कृष्ण पक्ष की तिथि क्षय तथा शुक्ल पक्ष में तिथि वृद्धि अशुभ फलों को नियंत्रण करेगी। शासक गण आम जनता के कल्याणार्थ नवीन योजना प्रारंभ करेंगे। भारत गुटनिरपेक्ष देशों में अपनी अहम् भूमिका निभाने में सफल होगा। **तेजी मंदी विचार**—पक्षारंभ में वृश्चिक का बुध धान्य, बाजरा, मूंग, मोंठ, घृत, तेल, तिल में मन्दी को प्रोत्साहन देगा किन्तु ता. ३ दिसंबर को मकर का शुक्र आने से रुई, चांदी में घटाबढ़ी तथा अन्नादि के साथ गुड़-खांड, घृत में तेजी होगी। यथा—**"मकरे च यदा शुक्र सर्वसस्य विनाश कृत। जायतेऽत्र महर्घाणि नात्र कार्या विचारणा॥"** **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में शीत वायु का संचार एवं यत्र-तत्र न्यूनाधिक वर्षा या बादल चाल होगी। समुद्र तटवर्ती तथा पहाड़ों पर वर्षा एवं ओलावृष्टि या हिमपात होने की संभावना है। मैदानी भागों में कहीं कहीं अच्छी वर्षा होगी। **शकुन विचार—"काले वर्ण का बादल जिसमें बिजली होय, उत्तर दिशि जो होय तो वर्षा अच्छी होय॥"** मार्गशीर्ष शुक्ल अष्टमी को बिजली तथा दशमी को दिन रात उत्तर दिशा की हवा चले तो वर्षा काल में उत्तम वर्षा होती है।

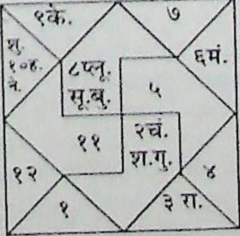

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	१	५	७	१	९	१	२	८	९	९	७
२५	२०	२८	१७	१०	९	१	२२	२२	२३	१०	१९
२३	११	३७	१३	३३	१२	५६	५६	५६	५३	४७	७
६	४१	२४	२२	५४	२	५६	८	८	८	८	३०
६१	८८८	३५	९३	७	६९	६	३	३	२	१	२
०	३१	५८	२१	३५	४४	९	११	११	१२	४५	१८
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पौष कृष्ण पक्ष-१८

श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ता. १२ से २५ दिसंबर सन् २००० ई., राष्ट्रीय मिति २१ मार्ग. से ४ पौष तक। रवि द.-उत्तरायणे दक्षिण गोले, हेमन्त-शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ता. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	दिनमान प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि	अस्त घं	मि	संदर्भ
२१	१	मं	१०	२७	११	२१	मृ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	शुभ	१५	३५	१३	२४	कौ	१०	२७	११	२१	२५	३२	७	१०	१७	२३	२८	१५	12	मिथुन	७	२६	२४	०६	०	१८	१३	८	०२	
२२	२	बु	२	१७	८	०५	पुन	४२	५५	२७	०८	शु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ग	२	१७	८	०५	२५	३१	७	१०	१७	२३	२२	१६	13	क. २१।४४	७	२७	२५	०६	१	१९	२०	८	५४	भद्रा १८।२८ से २८।५१ तक. तुला में मंगल प्रवेश १२।३९
०	३	बु	५४	१२	२८	५१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया क्षयः
२३	४	गु	४६	३२	२५	४८	पु	४४	००	२४	४७	ऐं	४६	४७	२५	५४	ब	२०	१२	१५	१६	२५	३०	७	११	१७	२३	३०	१७	14	कर्क	७	२८	२६	७	२	२०	२७	९	४६	कृष्ण चतुर्थी व्रत
२४	५	शु	३९	४२	२३	०४	श्ले	३८	५५	२२	४५	वै	३८	१०	२२	२७	कौ	१३	००	१२	२३	२५	२९	७	११	१७	२४	पौ	१८	15	सिं. २२।४५	७	२९	२७	०९	३	२१	३४	१०	३८	मूल धनु में सूर्य प्र. १८।२५, संक्रांति मु. १५, कृत्तिका ४ में A
२५	६	श	३३	५२	२०	४५	म	३४	४७	२१	०७	वि	३०	२०	१९	२०	ग	६	३७	९	५१	२५	२८	७	१२	१७	२४	२	१९	16	सिंह	८	००	२८	१२	३	२२	४०	११	३०	भद्रा २०।४५ से.
२६	७	र	२९	१७	१८	५६	पूफा	३१	५२	१९	५८	प्री	२३	२२	१६	३४	वि	१	२२	७	४६	२५	२७	७	१३	१७	२५	३	२०	17	क. २।४६	८	०१	२९	१५	३	२३	४६	१२	२२	भद्रा ७।४६ तक
२७	८	चं	२५	५७	१७	३६	उफा	३०	१५	१९	१९	आ	१७	३५	१४	१५	कौ	२५	५७	१७	३६	२५	२६	७	१३	१७	२५	४	२१	18	कन्या	८	०२	३०	१८	५	२४	४२	१३	१४	कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध, जिन सागर पु. तिथि (जैन). B
२८	९	मं	२४	००	१६	५०	ह	३०	०२	१९	१५	सौ	१२	४७	१२	२१	ग	२४	००	१६	५०	२५	२५	७	१४	१७	२५	५	२२	19	कन्या	८	०३	३१	२३	५	१	३८	१४	०६	भद्रा २८।४३ से, मूल धनु में बुध प्रवेश १०।०३
२९	१०	बु	२३	२७	१६	३७	चि	३१	०७	१९	४१	शो	९	०२	१०	५१	वि	२३	२७	१६	३७	२५	२४	७	१४	१७	२६	६	२३	20	तु. ७।२५	८	०४	३२	२८	६	२	३४	१४	५८	भद्रा १६।३७ तक. श्री पार्श्वनाथ जयंती
३०	११	गु	२४	१५	१६	५७	स्वा	३३	२५	२०	३७	अ	६	२२	९	४८	बा	२४	१५	१६	५७	२५	२३	७	१५	१७	२६	७	२४	21	तुला	८	०५	३३	३४	६	३	३०	१५	५०	सायन मकर में सूर्य प्र. १९।०७. रवि उत्तरायणे, शिशिर ऋतु C
पौ.	१२	शु	२६	१५	१७	४५	वि	३७	०२	२२	०४	सु	४	४५	९	०९	तै	२६	१५	१७	४५	२५	२३	७	१५	१७	२७	८	२५	22	वृ. १५।४०	८	०६	३४	४०	६	४	२६	१६	४२	राष्ट्रीय पौष मास प्रारंभ, जुमातुलविदा (मु.)
२	१३	श	२९	२७	१९	०३	अनु	४१	३७	२३	५५	धृ	३	५७	८	५१	व	२९	२७	१९	०३	२५	२२	७	१६	१७	२७	९	२६	23	वृश्चिक	८	०७	३५	४६	७	५	२२	१७	३४	भद्रा १९।०३ से. धनि. में शुक्र प्रवेश १२।२२. शनि प्रदोष व्रत, D
३	१४	र	३३	५०	२०	४८	ज्ये	४७	१५	२६	१०	शू	४	०२	८	५३	वि	१	२५	७	५०	२५	२३	७	१६	१७	२८	१०	२७	24	ध. २६।१०	८	०८	३६	५३	७	६	१८	१८	२६	भद्रा ७।५० तक, स्वा. में मंगल प्र. १७।३७. शब्बे-ए-कदर (मु.)
४	३०	चं	३८	५२	२२	५०	मू	५३	४७	२८	४८	गं	४	५०	९	१३	च	६	१०	९	४५	२५	२३	७	१७	१७	२८	११	२८	25	धनु	८	०९	३८	००	८	७	१३	१८	४६	देवपितृकार्याऽमावस्या, सोमवती अमावस्या, वकुला E

A वक्री गुरु प्रवेश १९।००, सौर पौष मासारंभ, सरदार पटेल पुण्य तिथि, वैधृति पुण्यं, धनु मलमास प्रारंभ B शहादते हजरत अली C प्रारंभ, सफला एकादशी व्रत (सबका) D श्री चन्द्रप्रभु जयंती (जैन), मास शिवरात्रि व्रत, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस E अमावस्या (उड़ीसा), क्रिसमस डे, ईसा जयंती, महामना मदन मोहन मालवीय जयंती

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

पौष कृ. ८ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १८ दिसं.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	५	६	७	१	९	९	२	८	९	९	७
२	२	२	२८	९	१७	१	२२	२२	२४	१०	१९
३०	७	४८	८	४२	१७	२८	३३	३३	९	५९	२३
१८	३९	२७	१८	४५	५८	२८	४९	४९	२१	४४	२४
६१	८३	३५	९३	६	६८	३	३	३	२	१	२
५	५८	६३	५८	५७	५१	६३	११	११	२७	५३	१४
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

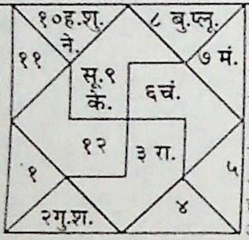

इस मास के प्रारम्भ में मंगल तुला राशि में प्रवेश कर गुरु-शनि से षडाष्टक योग आगामी ५० दिन के लिए बनायेगा। यहां संघट्ट चक्र में मंगल का गुरु, शुक्र, शनि, हर्षल, नेपच्यून से वेध भी बनेगा। जिसके फलस्वरूप कहीं रोग भय, अग्निकांड, चोरी, डाका, प्रकृति-प्रकोप से प्रजा त्रस्त रहेगी। भारत सहित चीन, जापान, नेपाल, आस्ट्रिया, ईरान, आयरलैण्ड आदि देशों में उत्पात, विग्रह का विशेष भय होगा। कहीं भूकम्प से जनधन की हानि होगी। सोमवती अमावस्या भारत के लिए अशुभ फलों में कभी कारक है।

ता. २५ दिसम्बर ❖ पौष कृ. ३० चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

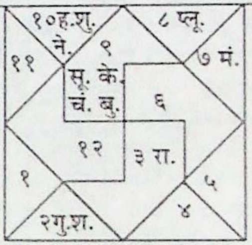

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	८	६	८	१	९	१	२	८	९	९	७
९	१	६	९	८	२५	१	२२	२२	२४	११	१९
३८	३९	५७	९	५७	१६	३	११	११	२७	१३	३८
०	३०	३३	१४	२४	२५	४७	३४	३४	२१	१७	५१
६१	७२०	३५	९५	५	६७	३	३	३	२	२	२
८	४४	२५	२३	५५	३९	९	११	११	४३	०	१०
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

औद्योगिक प्रतिष्ठानों में श्रमिक आन्दोलन के समझौते होकर उत्पादन वृद्धि के चांस बनेंगे। आयात व निर्यात के नये व्यापारिक संधियों पर हस्ताक्षर कर भारत विदेशों में अपने साख बढ़ाने में सफल होगा। **तेजी मंदी विचार**—पक्षारंभ में तृतीया का क्षय व धन संक्रांति १५ मुहूर्ती होने से गुड़, खांड, शक्कर, तेल, सरसों, अलसी, मूंग, मोंठ आदि में घटाबढ़ी से तेजी होगी। ता. १९ दिसं. को बुध धनु राशि में प्रवेश करेगा। जिसका फल—"धने मीने बुधो याति मारयति मृगानुगजान। राजा विरोध कृत्तत्र चान्यथा न भविष्यति॥" सोना, चांदी, रुई, कपास, वस्त्र, सूत में तेजी होगी। राज-प्रजा में विरोध व मृग तथा हाथियों में रोग पीड़ा बढ़ेगी। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में आसाम, नागालैण्ड, त्रिपुरा, पं. बंगाल में आकस्मिक बादल वर्षा व वायु वेग रहेगा। पर्वतीय प्रदेशों तथा दक्षिणी भारत में साधारण वर्षा के साथ शीत वायु का जोर होगा। मैदानी भागों में बादल चाल के योग हैं। **शकुन विचार**—पौष कृष्ण ७ व ८ को अर्धरात्रि में बादल गर्जे तथा वर्षा हो तो आगे चौमासे में श्रेष्ठ वर्षा होती है। यथा—"तेरस, चौदस, मावसा पौष वदी में जान। तीन दिनों में गर्भ हो श्रावण वर्षा मान॥"

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पौष शुक्ल पक्ष-१९

श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ता. २६ दिसं. २००० से ९ जन. २००१ ई., राष्ट्रीय मिति ५ से १९ पौष तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ग. मि	ति	वा	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	दिनमान घ	दिनमान प	सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	सूर्यास्त घं	सूर्यास्त मि	दिनांक प्र.	दिनांक मु.	दिनांक अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क.वि.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं	उदय मि	अस्त घं	अस्त मि	
५	१	मं	४४	०७	२५	१६	पू.षा	००	००	-	-	वृ	६	२०	९	४९	किं	११	५२	१२	०२	२५	२४	७	१७	१७	२९	१२	२९	26	धनु	८	१०	३९	०८	६१	८	०८	१९	०१	मेला जोड़ प्रारंभ ३ दिन का (पंजाब)
६	२	बु	५१	३५	२९	५५	पू.षा	१	०२	७	४२	ध्रु	८	२०	१०	३७	बा	१८	१०	१४	३३	२५	२५	७	१७	१७	३०	१३	३०	27	म. १८।२६	८	११	४०	१६	८	९	००	१९	२०	पू.षा. में बुध प्रवेश २०।२३, चन्द्रदर्शन मु. ४५, समर्घ
७	३	गु	५८	२०	३०	३८	उ.षा	८	४५	१०	४८	व्या	१०	४०	११	३४	तै	२४	५५	१७	१६	२५	२६	७	१८	१७	३०	१४		28	मकर	८	१२	४१	२४	९	९	५२	२०	१२	पू.षा. में सूर्य प्रवेश २०।३९, जोड़ मेला समा., सब्वाल मु. मास १० A
८	४	शु	६०	००	-	-	श्र	१६	३२	१३	५५	हर्ष	१३	२२	१२	३५	व	३१	४५	२०	००	२५	२७	७	१८	१७	३१	१५	२	29	कुं. २०।३०	८	१३	४२	३३	९	१०	४४	२१	०४	भद्रा २०।०० से, कुंभ में शुक्र प्रवेश १०।३५, विनायक ४ व्रत, B
९	४	श	५	०७	९	२२	ध	२४	१२	१७	०	वज्र	१५	३२	१३	३२	वि	५	०७	९	२२	२५	२८	७	१९	१७	३२	१६	३	30	कुंभ	८	१४	४३	४२	८	११	३६	२१	५६	भद्रा ९।२२ तक
१०	५	र	११	२२	११	५२	श	३१	२०	१९	५१	सि	१७	२५	१४	१७	बा	११	२२	११	५२	२५	३०	७	१९	१७	३२	१७	४	31	कुंभ	८	१५	४४	५०	९	१२	२८	२२	४८	ईसाई नव वर्ष की पूर्व संध्या का पर्व न्यू इयर इव
११	६	चं	१६	४०	१३	५९	पू.भा	३७	२०	२२	२५	व्य	१८	३२	१४	४४	तै	१६	४०	१३	५९	२५	३१	७	१९	१७	३३	१८	५	J1	मी. १५।४४	८	१६	४५	५९	९	१३	१२	२१	२८	व्यतिपात पुण्यं, नववर्ष दि., जन. मास १ ता. ३१ सन् २००१ ई. प्रा.
१२	७	मं	२०	३२	१५	३२	उ.भा	४१	५२	२४	०४	व	१८	४०	१४	४७	व	२०	३२	१५	३२	२५	३२	७	१९	१७	३४	१९	६	2	मीन	८	१७	४७	०८	९	१३	५५	३२	४२	भद्रा १५।३२ से २७।५६ तक, श्री गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती, C
१३	८	बु	२२	३०	१६	२०	रे	४४	३५	२५	१०	प	१७	१७	१४	१५	ब	२२	३०	१६	२०	२५	३४	७	२०	१७	३४	२०	७	3	मे. २०।१०	८	१८	४८	१७	९	१४	३९	२३	५६	ज्येष्ठा २ में प्लूटो प्रवेश २५।४०, श्री दुर्गाष्टमी, बुधाष्टमी, D
१४	९	गु	२२	३५	१६	२२	अ	४५	१७	२५	२७	शि	१४	३२	१३	०९	कौ	२२	३५	१६	२२	२५	३६	७	२०	१७	३५	२१	८	4	मेष	८	१९	४९	२६	९	१५	२३	१	१०	उ.षा. में बुध प्रवेश २५।१३, शतभिषा में शुक्र प्रवेश ११।३६
१५	१०	शु	२०	३२	१५	३३	भ	४४	०७	२४	५१	सि	१०	०७	११	२३	ग	२०	३२	१५	३३	२५	३८	७	२०	१७	३६	२२	९	5	वृ. ३०।१०	८	२०	५०	३५	८	१६	०७	२	२८	भद्रा २६।४५ से, शाम्ब दशमी (उड़ीसा), आचार्य जिन सागर पुण्य E
१६	११	श	१६	३५	१३	५८	कृ	४१	०५	२३	४६	सा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि	१६	३५	१३	५८	२५	३९	७	२०	१७	३६	२३	१०	6	वृष	८	२१	५१	४३	८	१६	५१	३	२८	भद्रा १३।५८ तक, मकर में बुध प्र. २५।४०, पवित्रा (पुत्रदा) F
१७	१२	र	१०	५५	११	४२	रो	३६	१७	२१	५१	शु	४८	१०	२६	३६	बा	१०	५५	११	४२	२५	४१	७	२०	१७	३७	२४	११	7	वृष	८	२२	५२	५१	७	१७	३५	४	४६	प्रदोष व्रत, पापनाशिनी महाद्वादशी व्रत
१८	१३	चं	३	४२	८	४९	मृ	३०	२५	१९	३०	ब्र	३८	३५	२२	४६	तै	३	४२	८	४९	२५	४३	७	२०	१७	३८	२५	१२	8	मि. ८।४४	८	२३	५३	५८	८	१८	१९	५	५६	भद्रा १९।३१ से
०	१४	चं	५५	२७	२२	३१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी क्षयः
१९	१५	मं	४६	२५	२५	०४	आ	२३	३०	१६	४४	ऐं	२८	१५	१८	३८	वि	२१	००	१५	४४	२५	४५	७	२०	१७	३९	२६	१३	9	मिथुन	८	२४	५५	०६	८	१९	०३	७	१०	भद्रा १५।४४ तक, पौषी पूर्णिमा, सत्यव्रत, माघ स्नान प्रारंभ, G

A प्रारंभ, ईदुलफितर (मु.), श्री यतीन्द्र सूरीश्वर पुण्य त्रिस्तुति (जैन) B पंचक प्रारंभ २७।३० से C श्री राजेन्द्र सूरीश्वर जन्म पुण्य (जैन) D पंचक समाप्त २५।१० E दिवस (जैन), नानकशाही कलेण्डर अनुसार गुरु गोविन्द सिंह जयंती F एकादशी व्रत (सबका), मन्वादि ११, वैकुण्ठ एका. (दक्षिण भारत में) G शाकम्भरी जयंती, काशीघाट दशाश्व मेध स्नानारंभ, खग्रास चन्द्रग्रहण

पौष शु. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३ जन.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	११	६	८	१	१०	१	२	८	९	९	७
१८	१९	१२	२३	८	५	०	२१	२१	२४	११	१९
४४	३०	१४	४०	२०	१७	३८	४२	४२	५२	३१	५८
१७	३७	३३	१७	११	४४	२९	५७	५७	५१	५६	१५
६१	[illegible]	३४	९८	८	६५	२	३	३	२	२	२
०	४१	०७	३६	२३	३८	२१	११	११	५८	८	५
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

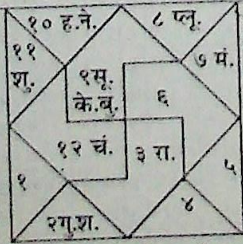

इस मास में पांच मंगलवार तथा पूर्णिमासी मंगलवार की नेष्ट फलों को बढ़ावा देगी। यथा—''यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥'' विश्व के अशांत प्रिय राष्ट्र आपस में युद्ध की भड़काने वाली कार्यवाही करेंगे। जिससे शांतिप्रिय राष्ट्रों को आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ेगा। कहीं यान दुर्घटना, अग्निकांड, प्रकृति प्रकोप, ओलावृष्टि, भूकम्प से जनधन की हानि होगी। अरब राष्ट्र, अफ्रीका, काश्मीर, तिब्बत, यूरोप में उत्पात, विग्रह से भय व्याप्त होगा। कहीं धार्मिक व साम्प्रदायिक दंगे उग्ररूप धारण करेंगे। भारत को भी अपनी सीमाओं पर अधिक सुरक्षा के उपाय करने होंगे। वरना पाकिस्तान घुसपैठियों द्वारा सीमा नियंत्रण रेखा को पार करने में नहीं चूकेगा। **तेजी मंदी विचार**-द्वितीया बुधवार को ४५ मुहूर्ती चन्द्रदर्शन सोना, चांदी, सूत, सन, गुड़, खांड, शक्कर में मंदी तथा घृत व अनाज में घटाबढ़ी होगी। तिथि चतुर्थी की वृद्धि व चतुर्दशी का क्षय भी मन्दी को ही प्रोत्साहन देगा। **यथा—''जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मंदी बिके, मंहगाई हट जाय॥''** पौष मास का चन्द्रग्रहण मासान्त में व्यापारिक वस्तुओं में तेजी कारक रहेगा। **आकाश लक्षण**—इस मास में राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उ. प्र., म. प्र. में सर्दी का प्रकोप बढ़ेगा। पर्वतीय इलाकों में हिमपात होने से मैदानी भागों में शीत लहर पखवाड़े में चलेगी। कुछ स्थानों पर बादल वर्षा के योग भी हैं। **शकुन विचार— ''पौष सुदी चौदस दिना बिजली का घन घोर। शुभ वर्षा आषाढ़ में बोले दादुर मोर॥''** पौष शुक्ल १४ व पूर्णिमासी को आकाश में बादल व बिजली चमके तो आगे आने वाले आषाढ़ मास में श्रेष्ठ वर्षा होती है।

ता. ९ जन. ❖ पौष शु. १५ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

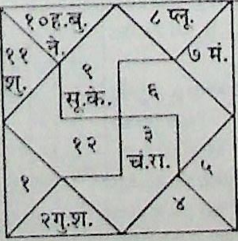

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	२	६	९	१	१०	१	२	८	९	९	७
२४	१२	१५	३	७	११	०	२१	२१	२५	११	२०
५५	५८	४३	३४	४६	४७	२५	२३	२३	११	४४	१०
६	२५	३०	४१	४५	३१	५७	५२	५२	४	५३	३१
६१	[illegible]	३४	९९	३	६३	१	३	३	३	२	१
८	३६	३७	१०	१४	५६	४३	११	११	७	१३	५९
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

माघ कृष्ण पक्ष-२०

श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ता. १० से २४ जन. सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति २० पौष से ४ माघ तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं	मि
२०	१	बु.	३७	०७	२२	११	पुन	१६	१२	१३	४९	वै	१७	३७	१४	२३	बा	११	४७	१२	०३	२५	४७	७	२०	१७	३९	२७	१४	10	क. ८।३४	८	२५	५६	१३	८	११	४७	७	५३
२१	२	गु.	२८	०२	१८	३३	पु	८	४५	१०	५०	वि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तै	२	३२	८	२१	२५	४९	७	२०	१७	४०	२८	१५	11	कर्क	८	२६	५७	२१	७	२०	३७	८	३६
२२	३	शु.	१९	२०	१५	०७	श्ले	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	आ	४६	४५	२६	०२	वि	१९	२७	१५	०७	२५	५०	७	२०	१७	४१	२९	१६	12	सिं. ८।०३	८	२७	५८	२८	७	२१	२७	९	१९
२३	४	श.	११	४७	१२	०३	पूफा	५०	४२	२७	३७	सौ	३७	५७	२२	३१	बा	११	४७	१२	०३	२५	५२	७	२०	१७	४२	मा	१७	13	सिंह	८	२८	५९	३५	६	२२	१७	१०	०३
२४	५	र.	५	२२	९	२९	उफा	४७	१०	२६	१२	शो	३०	१७	११	२७	तै	५	२२	९	२९	२५	५४	७	२०	१७	४३	२	१८	14	कं. ९।११	९	००	००	४१	६	२३	०७	१०	४७
२५	६	चं.	०	४०	७	३६	ह	४५	२२	२५	२९	अ	२४	००	१६	५६	व	०	४०	७	३६	२५	५७	७	२०	१७	४४	३	१९	15	कन्या	९	०१	०१	४७	६	२३	५७	११	३१
०	७	चं.	५७	४२	३०	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२६	८	मं.	५६	३५	२९	५८	चि	४५	२५	२५	३०	सु	१९	०७	१४	५९	बा	२६	५२	१८	०५	२५	५९	७	२०	१७	४४	४	२०	16	तु. १३।१९	९	०२	०२	५३	५	२४	४७	१२	१५
२७	९	बु.	५७	२०	३०	१६	स्वा	४७	१७	२६	१५	धृ	१५	४५	१३	३८	तै	२६	४२	१८	०१	२६	०१	७	२०	१७	४५	५	२१	17	तुला	९	०३	०३	५८	५	१	३७	१२	५९
२८	१०	गु.	५९	४७	३१	१५	वि	५०	५२	२७	४१	शू	१३	४७	१२	५१	व	२८	२०	१८	४०	२६	०४	७	२०	१७	४६	६	२२	18	वृ. २१।१५	९	०४	०५	०३	५	२	२७	१३	४३
२९	११	शु.	६०	००	-	-	अनु	५५	४७	२९	३९	गं	१३	०५	१२	३४	ब	३१	३७	१९	५९	२६	०७	७	२०	१७	४७	७	२३	19	वृश्चिक	९	०५	०६	०८	५	३	१७	१४	२७
३०	११	श.	३	४७	८	५०	ज्ये	६०	००	-	-	वृ	१३	३०	१२	४३	बा	३	४७	८	५०	२६	१०	७	१९	१७	४८	८	२४	20	वृश्चिक	९	०६	०७	१३	५	४	०७	१५	११
माघ	१२	र.	८	५५	१०	५३	ज्ये	२	०२	८	०८	ध्रु	१४	४५	१३	१३	तै	८	५५	१०	५३	२६	१२	७	१९	१७	४८	९	२५	21	ध. ८।०८	९	०७	०८	१८	४	४	५७	१५	५५
२	१३	चं.	१४	५२	१३	१६	मू	९	०२	१०	५६	व्या	१६	३२	१३	५६	व	१४	५२	१३	१६	२६	१५	७	१९	१७	४९	१०	२६	22	धनु	९	०८	०९	२२	४	५	४७	१६	४०
३	१४	मं.	२१	२७	१५	५४	पूषा	१६	३७	१३	५८	हर्ष	१८	४७	१४	५०	श	२१	२७	१५	५४	२६	१७	७	१९	१७	५०	११	२७	23	म. २०।४४	९	०९	१०	२६	३	६	३७	१७	२५
४	३०	बु.	२८	१७	१८	३७	उषा	२४	३०	१७	०६	वज्र	२१	१०	१५	४६	ना	२८	१७	१८	३७	२६	२०	७	१८	१७	५१	१२	२८	24	मकर	९	१०	११	२९	२	७	२७	१८	१०

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

उ. षा. में सूर्य प्रवेश २२।४१, वैधृति पुण्य
भद्रा २८।५० से
भद्रा १५।०७ तक, श्रवण में बुध प्रवेश २६।४१, संकष्ट कृष्णा A
मकर में सूर्य प्रवे. २९।१४, संक्रा. मु. ४५, सौर माघ मासारंभ, B
संक्रांति पुण्यकाल पूर्वान्ह में, मकर संक्रा., गंगासागर यात्रा, C
भद्रा ७।३६ से १९।०० तक, बुध पश्चिम में उदय २५।५०, स्वामी D
सप्तमी क्षयः   D विवेकानन्द व श्री रामानन्दाचार्य जयंती
विशाखा में मंगल प्रवेश १६।२०, पू. भा. में शुक्र प्रवेश २५।४९, E
E कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध
भद्रा १८।४० से ३१।१५ तक
सायन कुंभ में सूर्य प्रवेश २९।४६, एकादशी वृद्धि
षट्तिला एकादशी व्रत सबका, उन्मीलनी महाद्वादशी व्रत
धनिष्ठा में बुध प्रवेश ७।४६, राष्ट्रीय माघ मास प्रारंभ, F
भद्रा १३।१६ से २६।३५ तक, मेरु त्रयोदशी (जैन), G
श्रवण में सूर्य प्रवेश २४।५९, रटन्ती कालिका पूजन, H
मार्गी शनि २९।५५, देवपितृकार्यांऽमावस्या, मौनी अमावस्या, J

A चतुर्थी व्रत, उर्स मेला निजामुद्दीन (दिल्ली में), लोहड़ी उत्सव (पंजाब व जम्मू काश्मीर में) B भोगी (दक्षिण भारत) C मलमास समाप्त, पौंगल पर्व (दक्षिण भारत), माघ बिहु (आसाम), तिल संक्रांति. F प्रदोष व्रत, श्री शीतलनाथ जयंती (जैन) G मासशिवरात्रि व्रत, श्री आदिनाथ निर्वाण कल्याणक (जैन) H श्री सुभाषचन्द्र बोस जयंती, J द्वापरयुगादि, विशाल मेला हरिद्वार

माघ कृ. ८ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १६ जनवरी [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. २४ जन. ❖ माघ कृ. ३० बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	५	६	९	१	१०	१	२	८	९	९	७
२	२५	११	१५	७	११	०	२१	२१	२५	१२	२०
२	३४	४४	८	२८	७	१६	१	१	३३	०	२४
५३	३३	३४	५२	१८	५७	९	३७	३७	२१	२८	०
६१	७९५	३४	९८	१	६१	०	३	३	३	२	१
५	२२	११	२३	४४	२८	५८	११	११	१७	१४	५०
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	श्रवण	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	श्रवण	[illegible]

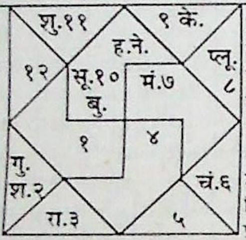

इस पक्ष में मकर का सूर्य आने से इसी राशि में चार ग्रहों का तथा अमावस्या को पांच ग्रहों का योग बनेगा। जिससे विश्व के अनेक भागों में भय, विग्रह, प्रकृति-प्रकोप आदि से जन मानस पीड़ित रहेगा। माघ कृष्णा ४ शनिवार है जिसका फल भी प्राचीन आचार्यों ने अच्छा नहीं बताया है। यथा—"चतुर्थी माघ मासस्य शनिवारेण संयुता। दुर्भिक्षं मृत्युचौराग्निभयं धान्य विनाशनम्॥" कहीं असामयिक वर्षा, ओलावृष्टि, प्रकृति-प्रकोप से दुर्भिक्ष की संभावना बढ़ेगी। रेलयान दुर्घटना, बम विस्फोट, अग्निकांड, भूकम्पादि से जनधन की हानि होगी। शासकों में स्वार्थपरायणता की वृद्धि से जन लाभार्थ चलाये गये कार्यक्रमों में रुकावटें आयेंगी। श्रमजीवी लोग अपने परिश्रम का पूर्णरूप से फल नहीं प्राप्त कर सकेंगे। **तेजी मन्दी विचार**—पक्षारंभ में उ.षा. का सूर्य आने से रुई, कपास, सूत, बारदाना, गुड़, खांड, शक्कर के अलावा धान्य जौ, गेहूँ, चना, मूंग, उरद में तेजी होगी। किन्तु बुध का उदय व सप्तमी तिथि का क्षय चलते भावों में घटाबढ़ी से मंदी करेंगे। अमावस्या को रात्रि में शनि मार्गी होने से बाजारों में ओछी घटाबढ़ी होगी। यथा—"वक्र चाल चलते हुए शनि मार्गी हो जाय। चालू रुख बाजार का एकदम पलटा खाय॥" **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में बुध का उदय उत्तरी पूर्वी राजस्थान, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा में बादल चाल व वर्षा करेगा। सर्दी एवं वायुवेग की प्रबलता से तापमान गिरेगा। पहाड़ों पर हिमपात होने से शीतलहर जोर पकड़ेगी। **शकुन विचार**-माघ कृष्ण ६ को यदि आकाश साफ रहे तो कपास का संग्रह करने वालों को आगे लाभ होगा। यदि माघ कृष्ण ७ को बादल हो तो अन्नादि के भावों में तेजी की संभावना बनेगी।

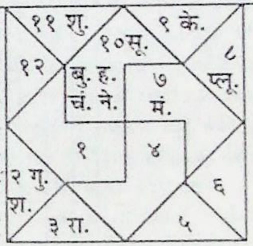

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	९	६	९	१	१०	१	२	८	९	९	७
१०	४	२४	२७	७	२७	०	२०	२०	२५	१२	२०
११	१७	१५	३८	१९	७	११	३६	३६	५९	१८	३८
२९	४०	५९	५३	२४	१७	३५	११	११	५४	३५	६
६१	[illegible]	३३	८२	०	५७	०	३	३	३	२	१
२	४३	३४	३८	१२	४४	३	११	११	२३	१७	३९
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
श्रवण	उ.षा.	विशा.	धनि.	धनि.	पू.भा.	धनि.	पुनर्वसु	पू.षा.	धनि.	श्रवण	ज्येष्ठा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

माघ शुक्ल पक्ष-२१

श्री सं. २०५७ शाके १९२२

ता. २५ जन. से ८ फर. सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति ५ से १९ माघ तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

रा.	तिथि				स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		दिन मान		स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय		अस्त		दिनांक प्र. मु. अं.			चन्द्र संचार	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि.				गति	चन्द्रोदय दिल्ली उदय		अस्त		निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
मि.	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	घ	प	घं	मि	घं	मि	प्र.	मु.	अं.	भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.	क.	घं.	मि.	घं.	मि	
५	१	गु	३५	०२	२१	१९	श्र	३२	१५	२०	१२	सि	२३	४२	१६	४७	कि	१	४०	७	५८	२६	२३	७	१८	१७	५२	१३	२९	25	मकर	९	११	१२	३१	[illegible]	८	१७	१८	५५	कुंभ में बुध प्रवेश २३।२५, मार्गी गुरु १४।०८, श्री बल्लभ जयंती
६	२	शु	४१	२५	२३	५२	ध	३९	४२	२३	११	व्य	२५	५७	१७	४१	बा	८	२०	१०	३८	२६	२६	७	१८	१७	५३	१४	३०	26	कुं. १।४२	९	१२	१३	३१	०	९	०३	१९	४१	मीन में शुक्र प्रवेश २९।५९, चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ, बाबा लाल A
७	३	श	४७	३०	२६	१७	श	४६	५२	२६	०२	व	२७	५५	१८	२७	तै	१४	३०	१३	०५	२६	२९	७	१७	१७	५३	१५	त्रि.	27	कुंभ	९	१३	१४	३१	[illegible]	९	४९	२०	३४	जिल्काद मु. मास ११ प्रा. D श्री माधवाचार्य ज., पचंक समा. ८।१५
८	४	र	५२	४०	२८	२१	पूभा	५३	१०	२८	३३	प	२९	१७	१९	००	व	२०	१०	१५	२१	२६	३२	७	१७	१७	५४	१६	२	28	मी. २१।४७	९	१४	१५	३०	५९	१०	३५	२१	२७	भद्रा १५।२१ से २८।२१ तक, वैनायक चतुर्थी व्रत, तिल चतुर्थी, B
९	५	चं	५६	४७	२९	५१	उभा	५८	३०	३०	४०	शि	२९	५७	१९	१५	ब	२४	५५	१७	१४	२६	३५	७	१६	१७	५५	१७	३	29	मीन	९	१५	१६	२९	५७	११	२१	२२	२०	बसंत पंचमी, श्री ५. सरस्वती पू., तक्षक पूजा, सोमवती पंचमी
१०	६	मं	५९	३०	३१	०४	रे	६०	००	-	-	सि	२९	४०	१९	०८	कौ	२८	२०	१८	३६	२६	३९	७	१६	१७	५६	१८	४	30	मीन	९	१६	१७	२६	५६	१२	०७	२३	१३	उ.भा. में. शुक्र प्रवेश २०।५५, महात्मा गाँधी निर्वाण दि., सर्वोदय C
११	७	बु	६०	००	-	-	रे	२	३०	८	१५	सा	२८	२५	१८	३७	ग	३०	२२	१९	२४	२६	४२	७	१५	१७	५७	१९	५	31	मे. ८।१५	९	१७	१८	२२	५४	१२	५३	२४	०६	रथ सप्तमी, अचला सप्तमी, मन्वादि सप्तमी, चन्द्रभागा ७, आरोग्य ७, D
१२	७	गु	०	४५	७	३३	अ	५	००	९	१५	शुभ	२५	४५	१७	३३	व	०	४५	७	३३	२६	४५	७	१५	१७	५८	२०	६	F1	मेष	९	१८	१९	१६	५४	१३	३९	२४	५९	भद्रा ७।३३ से १९।२६ तक, श्री दुर्गाष्टमी, भीष्माष्टमी, फरवरी मा. ता. २८,E
१३	८	शु	०	१५	७	२०	भ	५	५५	९	३६	शु	२१	४७	१५	५७	ब	०	१५	७	२०	२६	४९	७	१४	१७	५८	२१	७	2	वृ. १५।३३	९	१९	२०	१०	५२	१४	२५	१	४२	शतभिषा में बुध प्रवेश २४।५६, श्री महानन्दा ९, श्री हरसू ब्रह्मदेव F
०	९	शु	५७	५२	३०	२३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी क्षयः K ललिता जयंती, रामचरण स्नेही जयंती, सत्यव्रत
१४	१०	श	५३	४०	२८	४२	कृ	४	५२	९	११	ब्र	१६	२०	१३	४६	तै	२६	००	१७	३८	२६	५२	७	१४	१७	५९	२२	८	3	वृष	९	२०	२१	०२	५१	१५	११	२	३५	वृश्चिक में मंगल प्रवेश १४।२१ L मेला (बांसवाड़ा) माघ स्नान प्रा.
१५	११	र	४८	००	२६	२५	रो	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ऐं	९	३०	११	०१	व	२१	०२	१५	३८	२६	५६	७	१३	१८	००	२३	९	4	मि. १९।१७	९	२१	२१	५३	४९	१५	५८	३	२८	भद्रा १५।३८ से २६।२५ तक, वक्री बुध ७।२०, आर्द्रा ४ में राहु पू.षा. G
१६	१२	चं	४०	४०	२३	२८	आ	५२	१५	२८	०६	वै	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व	१४	३०	१३	००	२६	५९	७	१२	१८	०१	२४	१०	5	मिथुन	९	२२	२२	४२	४७	१६	४५	४	२१	धनि. में सूर्य प्रवेश २८।०८, धनिष्ठा में वक्री बुध प्रवेश १४।२४, जया H
१७	१३	मं	३२	२०	२०	०८	पुन	४५	३०	२५	२४	प्री	४२	१०	२४	०४	कौ	६	४०	९	५२	२७	०३	७	१२	१८	०२	२५	११	6	क. २०।०८	९	२३	२३	२९	४६	१७	३२	५	२४	बुध पश्चिम में अस्त ७।२०, भौम प्रदोष व्रत, कल्पादि १३, गुरु हरराय J
१८	१४	बु	२३	१५	१६	२२	पु	३८	१०	२२	२७	आ	३१	३७	१९	५०	व	२३	१५	१६	२२	२७	०६	७	११	१८	०२	२६	१२	7	कर्क	९	२४	२४	१५	४५	१८	१९	६	१७	भद्रा १६।२९ से २६।३५ तक, श्री जितेन्द्र रथयात्रा (जैन), श्री K
१९	१५	गु	१३	५०	१२	४२	श्ले	३०	३७	१९	२५	सौ	२०	४७	१५	२९	ब	१३	५०	१२	४२	२७	१०	७	१०	१८	०३	२७	१३	8	सिं. १९।१५	९	२५	२५	००	४३	१९	०६	७	१०	माघी पूर्णिमा पुण्यं, श्री गुरु रविदास ज., भैरव जयंती, वेणेश्वर L

A दयाल ज., पंचक प्रा. १।४२ से, भा. गणतंत्र दि., व्यतिपात पुण्यं B कुन्द ४, वरद ४, श्री गणेश पूजा (बंगाल में), लाला लाजपतराय ज. C पखवाड़ा प्रा., बलिदान दि. E मे. मस्तुआणा (पंजाब) F पुण्य दि. (चैनपुर व रोहतास), दस्तकार दि. G २ में केतु प्रवेश १४।३३, धनि. २ में हर्षल प्र. २१।५५, जया एका. व्रत (स्मा.), भैमी एका. (बंगाल) H एका. व्रत (वै.), भीष्म द्वादशी, भीष्म तर्पण श्राद्ध, तिल स्नान व होम, वैधृतिपुण्यं J ज., मे. पंचखण्ड पीठ, विराटनगर (राज.), हेबर्ट उत्सव, मे. जैसलमेर ३ दिन का प्रा.

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

माघ शु. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २ फर.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	०	६	१०	१	११	१	२	८	९	९	७
१९	२८	२९	६	७	५	०	२०	२०	२६	१२	२०
२०	२३	१५	२५	२५	२५	१५	७	७	३०	३९	५२
१०	१२	१०	५६	११	४३	६	३८	३८	४२	३	३
६०	[illegible]	३२	१७	१	५२	०	३	३	३	२	१
५२	१०	४७	२२	४०	८	५८	११	११	२८	१६	२६
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

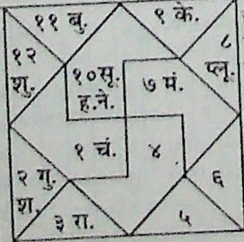

इस पक्ष के प्रारंभ में शुक्र अपनी उच्च राशि (मीन) में प्रवेश कर सूर्य, गुरु, शनि, हर्षल, नेपच्यून से त्रैकादश योग बनायेगा। जिससे अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में सुधार होकर विश्व के विभिन्न भागों में होने वाले उत्पात शांत होंगे। मीन राशि के शुक्र का फल- ''मीन राशि गते शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं भवेत्। मेदिनी सुख संयुक्ता भविष्यति न संशयः।'' पृथ्वी पर सुख समृद्धि में बढ़ोतरी तथा राजा प्रजा में सुख शांति व्यापेगी। धार्मिक आयोजन अधिक होंगे। धान्यादि का उत्पादन बढ़ने से आम जनता को अधिक सुलभ होगा। नवीन उद्योग धन्धों की स्थापना तथा सरकार द्वारा चलाये गये विकास कार्यक्रमों को गति मिलेगी। **तेजी मंदी विचार**—पक्ष प्रारंभ में गुड़, खांड, घृत, तेल, चावल, चना, उड़द, सरसों में मंदी के योग हैं। जिसे शुक्रवार का चन्द्रदर्शन भी सहयोग प्रदान करेगा किन्तु यहाँ चांदी व रुई में घटाबढ़ी होकर तेजी की चाल निकलेगी। पक्ष में सप्तमी तिथि की वृद्धि तथा नवमी का क्षय भी मंदी कारक है किन्तु पक्षान्त में वृश्चिक का मंगल चलते भावों में परिवर्तन व तेजी को प्रोत्साहन देगा। व्यापारी वर्ग बाजार रुख देखकर कार्य करें। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान में कहीं-कहीं वर्षा या बादल चाल रहेगी। पक्षान्त में बुध का अस्त पर्वतीय भागों में वर्षा या हिमपात करेगा जिससे शीत प्रकोप बना रहेगा। कहीं-कहीं वायु प्रकोप बढ़ेगा। **शकुन विचार**—''माघ उजाली दूज वा तीज रखो जलचार। चमके दामिनी जानिये चौमासा भयकार॥ माघ सुदी जो सप्तमी बादल बिजली होय। पूर्व उत्तर हवा चले सम्वत् अच्छा होय॥''

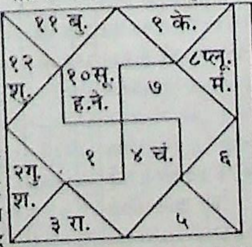

ता. ८ फर. ❖ माघ शु. १५ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	३	७	१०	१	११	१	२	८	९	९	७
२५	२१	२	५	७	१०	०	१९	१९	२६	१२	२१
२५	७	३०	२६	३८	२६	२२	४४	४४	५१	५२	०
०	५६	२६	५८	०९	१६	३४	२९	२९	३२	३५	७
६०	११५	३२	८६	२	४७	१	३	३	३	२	१
४३	३	१०	३३	५१	५	३८	११	११	२८	१४	१६
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फाल्गुन कृष्ण पक्ष-२२

श्री वि. सं. २०५७ शाके १९२२

ता. ९ से २३ फरवरी सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति २० माघ से ४ फाल्गुन तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर-बसंत ऋतु।

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
२०	१	शु	४	२७	८	५७	म	२३	१७	१६	२९	शो	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	को	४	२७	८	५७	२७	१४	७	१०	१८	०४	२८	१४	9	सिंह	९	२६	२५	४३	[illegible]	१९	५३	७	५९	अनुराधा में मंगल प्रवेश १८।३१
०	२	शु	५५	४०	२९	२६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया क्षयः
२१	३	श	४७	५२	२६	१८	पूफा	२६	४०	१३	४९	सु	५०	३०	२७	२१	व	२१	३७	१५	४८	२७	१८	७	०९	१८	०५	२९	१५	10	कं. १९।५३	९	२७	२६	२६	४१	२०	४०	८	४९	भद्रा १५।४८ से २६।१८ तक
२२	४	र	४१	३०	२३	४४	उफा	११	१७	११	३९	धृ	४२	२०	२४	०४	ब	१४	२७	१२	५५	२७	२२	७	०८	१८	०५	३०	१६	11	कन्या	९	२८	२७	०७	४०	२१	२७	९	३९	कृष्ण चतुर्थी व्रत
२३	५	चं	३६	५२	२१	५२	ह	७	२५	१०	०५	शू	३५	३५	२१	२१	कौ	८	५७	१०	४२	२७	२६	७	०७	१८	०६	फा	१७	12	तु. २१।३५	९	२९	२७	४७	३९	२२	१४	१०	२९	कुंभ में सूर्य प्रवे. १८।१५, संक्रान्ति मु. ३०, सौर फाल्गु. मास प्रा., A
२४	६	मं	३४	१७	२०	५०	चि	५	२५	९	१७	गं	३०	२५	१९	१७	ग	५	२०	९	१५	२७	३०	७	०७	१८	०७	२	१८	13	तुला	१०	००	२८	२६	३८	२३	०१	११	११	भद्रा २०।५० से, मकर में वक्री बुध प्रवेश १४।३१
२५	७	बु	३३	४७	२०	३७	स्वा	५	३२	९	१९	वृ	२७	०२	१७	५५	वि	३	५०	८	३८	२७	३४	७	०६	१८	०८	३	१९	14	वृ. २०।५५	१०	०१	२९	०४	३७	२३	४८	१२	०९	भद्रा ८।३८ तक
२६	८	गु	३५	४०	२१	२१	वि	७	४७	१०	१२	धु	२५	१७	१७	१२	बा	४	४२	८	५८	२७	३८	७	०५	१८	०८	४	२०	15	वृश्चिक	१०	०२	२९	४१	३५	२४	३५	१२	५९	कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध, श्री सीताष्टमी, जानकी जयंती
२७	९	शु	३९	२०	२२	४८	अनु	१२	००	११	५२	व्या	२५	०२	१७	०५	तै	७	१७	९	५९	२७	४२	७	०४	१८	०९	५	२१	16	वृश्चिक	१०	०३	३०	१६	३५	१	२२	१३	४९	रेवती में शुक्र प्रवेश २१।४१, समर्थ गुरु रामदास जयंती
२८	१०	श	४४	३५	२४	५३	ज्ये	१७	५२	१४	१२	हर्ष	२६	०३	१७	२८	व	११	४५	११	४५	२७	४५	७	०३	१८	१०	६	२२	17	ध. १४।१२	१०	०४	३०	५१	३२	२	०९	१४	३९	भद्रा ११।४५ से २४।५३ तक, स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती व B
२९	११	र	५०	५०	२७	२३	मू	२४	५०	१६	५९	वज्र	२७	५७	१८	१४	ब	१७	३५	१४	०५	२७	४९	७	०३	१८	११	७	२३	18	धनु	१०	०५	३१	२३	३१	२	५६	१५	२९	सायन मीन में सूर्य प्रवेश १९।५७, बसन्त ऋतु प्रारंभ, विजया C
३०	१२	चं	५७	४०	३०	०६	पूषा	३२	४०	२०	०६	सि	३०	२०	१९	१०	कौ	२४	०७	१६	४१	२७	५३	७	०२	१८	११	८	२४	19	म. २६।५२	१०	०६	३१	५४	३१	३	४३	१६	१९	शतभिषा में सूर्य प्रवेश ८।४२, बुध पूर्व में उदय १३।३८
फा	१३	मं	६०	००	-	-	उषा	४०	४०	२३	१७	व्य	३३	००	२०	१३	ग	३१	१०	१९	२९	२७	५७	७	०१	१८	१२	९	२५	20	मकर	१०	०७	३२	२५	२९	४	३०	१७	०९	श्रवण में वक्री बुध प्रवेश ८।००, श्रवण २ में नेपच्यून प्रवेश १९।४०, D
२	१३	बु	४	३७	८	५१	श्र	४८	३०	२६	२४	व	३५	३५	२१	१४	व	४	३७	८	५१	२८	०१	७	००	१८	१३	१०	२६	21	मकर	१०	०८	३२	५४	२८	५	१७	१७	५९	भद्रा ८।५१ से २२।१० तक, महाशिवरात्रि व्रत (स्मार्त); चतुर्दशी E
३	१४	गु	११	१५	११	२९	ध	५५	५०	२९	१९	प	३७	४७	२२	०६	श	११	१५	११	२९	२८	०५	६	५९	१८	१३	११	२७	22	कुं. १५।५४	१०	०९	३३	२२	२६	६	०४	१८	४९	महाशिवरात्रि व्रत (वैष्णव), पंचक प्रारंभ १५।५४ से, F
४	३०	शु	१७	१२	१३	५१	श	६०	००	-	-	शि	३९	३०	२२	४६	ना	१७	१२	१३	५१	२८	१०	६	५८	१८	१४	१२	२८	23	कुंभ	१०	१०	३३	४८	२४	६	५७	१९	३९	देवकार्याऽमावस्या, मन्वादि, शिव खप्पर पूजा, आर्य समाज सप्ताह समा.

A दीनबन्धु एण्ड्रयूज जयंती, सर्वोदय मेला व पखवाड़ा समाप्त B बोधोत्सव, आर्यसमाज सप्ताह प्रारंभ C एकादशी व्रत (सबका)

D भौम प्रदोष व्रत, राष्ट्रीय फाल्गुन मास प्रारंभ, व्यतिपात पुण्य E ज्योतिर्लिङ्ग, पूजनार्चन, रुद्राभिषेक F पितृकार्याऽमावस्या, श्री वासुदेव पूज्य जयंती (जैन)

फाल्गुन कृ. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १५ फर. **[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]** ता. २३ फरवरी ❖ फाल्गुन कृ. ३० शुक्र, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	७	७	९	१	११	१	२	८	९	९	७
२	०	६	२८	८	१५	०	१९	१९	२७	१३	२१
२९	५०	१३	५	२	३४	३६	२६	२६	१५	८	८
४९	०	१८	४३	९	३२	१२	१४	१४	५२	२	१२
६०	[illegible]	३१	६७	४	३९	२	३	३	३	२	१
३५	४९	२१	१२	९	३६	२३	११	११	२८	९	२
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

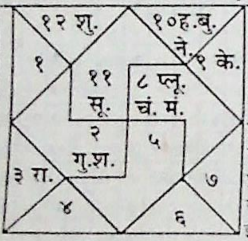

इस मास के प्रारंभ से पूर्व ही मंगल वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा। जिससे मंगल का शनि से प्रतियोग (समसप्तम) चालू हो गया। जो आगामी दो मास तक जारी रहेगा। जिसका फल—"सम सप्तम शनि भौम हो अथवा एक ही संग। प्रजा कष्ट औ अन्न से जन विग्रह का रङ्ग॥" विश्व के अनेक भागों में प्रकृति-प्रकोप, अराजकता, आन्दोलन, बन्द व घेराव से जन जीवन अस्त व्यस्त होगा। मध्य एशिया आयरलैण्ड, ईरान, ईराक, युगोस्लाविया, अमेरिका, इंग्लैण्ड देशों में विषम परिस्थिति उत्पन्न होगी। कहीं पर भूकम्प, बम विस्फोट, हिंसाकाण्ड, युद्धादि भय से जनता पीड़ित होगी। सैन्य सम्बन्धी व्यय में वृद्धि तथा सीमाओं पर तनाव की स्थिति बढ़ेगी। विश्व के किसी प्रमुख नेता को सत्ताच्युत होने या असामयिक निधन से जनता स्तब्ध रहेगी। मंहगाई भी उग्ररूप धारण करेगी। तेजी मंदी विचार—द्वितीया का क्षय तथा कुंभ संक्रान्ति सोमवार की होने से रुई, सूत, कपास, मूंग, मोठ, अलसी, सरसों में तेजी तथा गुड़, खांड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना, सुपारी में तेजी आकर मंदी होगी। पक्षान्त में बाजारों में स्थिरता का रुख अधिक बनेगा। मंदी वस्तु का स्टाक तथा तेजी वस्तु का बेचान कर लाभ कमावें। आकाश लक्षण—इस पक्ष में पर्वतीय प्रदेशों में वर्षा या बूंदाबांदी होगी। दक्षिण भारत में ऋतु परिवर्तन दिखाई देने लगेगा। पक्षान्त में बुध का उदय होने से उ. प्र. राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा के अनेक भागों में बादल चाल या वायु के साथ वर्षा होगी। शकुन विचार—फाल्गुन कृष्ण २ को आकाश साफ रहे तो अगले वर्ष श्रावण भाद्रपद मास में अच्छी वर्षा हो। यथा-"फाल्गुनकारी दूज दिन निर्मल रहे आकाश। श्रावण भादों जल बहु सुधर जाय चौमास॥"

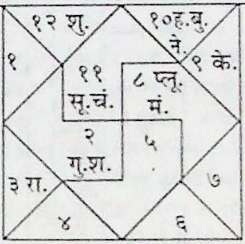

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	१०	७	९	१	११	१	२	८	९	९	७
१०	६	१०	२१	८	२०	०	१९	१९	२७	१३	२१
३३	४४	२०	५६	४०	१३	५८	०	०	४३	२५	१५
४८	४३	३०	५९	३१	२८	९	४८	४८	२६	३	३०
६०	[illegible]	३०	१४	५	२८	३	३	३	३	२	०
२४	३९	१६	१६	३४	८	१२	११	११	२५	४	४५
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फाल्गुन शुक्ल पक्ष-२३

श्री वि. सं. २०५७ शाके १९२२

ता. २४ फरवरी से ९ मार्च सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति ५ से १८ फाल्गुन तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, बसन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ग.मि.	ति	वा	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान		सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
५	१	श	२२	२७	१५	५६	श	२	३२	७	५८	सि	४०	३७	२३	१२	ब	२२	२७	१५	५६	२८	१४	६	५७	१८	१५	१३	२९	24	मी. २७।५८	१०	११	३४	१२	[illegible]	७	४२	२०	०८	चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ
६	२	र	२६	५७	१७	४३	पूभा	८	३०	१०	२०	मा	४१	०७	२३	२३	कौ	२६	५७	१७	४३	२८	१८	६	५६	१८	१५	१४	जि	25	मीन	१०	१२	३४	३४	२०	८	३७	२१	१६	मार्गी बुध २१।२०, फुलरिया दोज, श्री रामकृष्ण परमहंस ज. A
७	३	चं	३०	२५	१९	०५	उभा	१३	३०	१२	११	शुभ	४०	५०	२३	१५	ग	३०	२५	१९	०५	२८	२२	६	५५	१८	१६	१५	२	26	मीन	१०	१३	३४	५४	१९	९	३२	२२	०४	पं. लेखराम वीर तृतीया
८	४	मं	३२	५०	२०	०२	रे	१७	३५	१३	५६	शु	३९	५५	२२	५२	व	१	४२	७	३५	२८	२६	६	५४	१८	१७	१६	३	27	मे. १३।५६	१०	१४	३५	१३	१७	१०	२७	२२	५२	भद्रा ७।३५ से २०।०२ तक, विनायक ४ व्रत, संत चतुर्थी B
९	५	बु	३४	१०	२०	३३	अ	२०	३७	१५	०८	ब्र	३७	५७	२२	०४	ब	२	३७	८	२०	२८	३०	६	५३	१८	१७	१७	४	28	मेष	१०	१५	३५	३०	१५	११	२२	२३	४०	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पुण्य दिवस
१०	६	गु	३४	१५	२०	३४	भ	२२	३०	१५	५२	ऐ	३५	०५	२०	५८	कौ	४	१७	८	३५	२८	३४	६	५२	१८	१८	१८	५	M1	वृ. २१।५८	१०	१६	३५	४५	१३	१२	१७	२४	२८	गोरूपिणी षष्ठी (बंगाल), मार्च मास ३ ता. ३१, अष्टान्हिक C
११	७	शु	३२	५५	२०	०१	कृ	२३	००	१६	०३	वै	३१	१२	१९	२०	ग	३	४५	८	२१	२८	३८	६	५१	१८	१९	१९	६	2	वृष	१०	१७	३५	५८	११	१३	१२	१	१६	भद्रा २०।०१ से, होलाष्टक प्रारंभ २०।०१ से, वैधृति पुण्यं
१२	८	श	३०	१७	१८	५७	रो	२२	१५	१५	४४	वि	२६	१०	१७	१८	वि	१	४७	७	३३	२८	४३	६	५०	१८	१९	२०	७	3	मि. २७।२०	१०	१८	३६	०९	९	१४	०७	२	०४	भद्रा ७।३३ तक, धनि. में बुध प्र. २०।२०, श्री दादूदयाल ज. D
१३	९	र	२६	१०	१७	१७	मृ	२०	०२	१६	५०	प्री	२०	००	१६	४९	कौ	२६	१०	१७	१७	२८	४७	६	४९	१८	२०	२१	८	4	मिथुन	१०	१९	३६	१८	६	१५	०२	२	५२	पू.भा. में सूर्य प्रवेश १४।५८
१४	१०	चं	२०	३५	१५	०२	आ	१६	२५	१३	२२	आ	१२	४२	१३	५३	ग	२०	३५	१५	०२	२८	५२	६	४८	१८	२१	२२	९	5	क. २९।५६	१०	२०	३६	२४	५	१५	५७	३	४०	भद्रा २५।४० से, हज्ज
१५	११	मं	१३	५२	१२	२०	पुन	११	३७	११	२६	सौ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि	१३	५२	१२	२०	२८	५६	६	४७	१८	२१	२३	१०	6	कर्क	१०	२१	३६	२९	३	१६	५२	४	२८	भद्रा १२।२० तक, आमला एकादशी व्रत सबका, श्री रामस्नेही E
१६	१२	बु	६	१२	९	१५	पु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अ	४५	३०	२४	५८	बा	६	१२	९	१५	२९	००	६	४६	१८	२२	२४	११	7	सिं. ३०।२०	१०	२२	३६	३२	[illegible]	१७	४६	५	१६	ज्येष्ठा में मंगल प्रवेश २८।२२, रोहिणी १ में गुरु प्रवेश ११।१८. F
०	१३	बु	५७	४०	२९	५३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रोयदशी क्षयः F प्रदोष व्रत, गोविन्द द्वादशी
१७	१४	गु	४९	००	२६	२१	म	५२	५५	२७	४३	सु	३५	२५	२०	५५	ग	२३	२७	१६	०८	२९	०५	६	४५	१८	२३	२५	१२	8	सिंह	१०	२३	३६	३२	[illegible]	१८	४०	६	०४	भद्रा २६।२१ से, वक्री शुक्र ३०।३५, विश्व महिला दिवस
१८	१५	शु	४०	२५	२२	५३	पूफा	४५	४५	२५	०१	धृ	३५	२२	१६	५२	वि	१४	४२	१२	३६	२९	०९	६	४३	१८	२३	२६	१३	9	कं. ३०।२२	१०	२४	३६	३१	५६	१९	३४	६	५२	भद्रा १२।३६ तक, सत्यव्रत, होलिकादहन सायंकाले, दारुणरात्रि, G

A जिल्हेज मु. मास १२ प्रारंभ B (उड़ीसा), पंचक समाप्त १३।५६, अंगारक चतुर्थी C जैन व्रत प्रारंभ D श्री दुर्गाष्टमी, अन्नपूर्णाष्टमी E सम्प्रदाय शाहपुरी का फूलडोल महोत्सव प्रारंभ, मेला श्यामजी खाटू (राज.) दो दिन का प्रारंभ, ईद-उल-जुहा (मु.) G हुताशिनी, पूर्णिमा पुण्यं, होलाष्टक समाप्त, चैतन्य महाप्रभु जयंती, अष्टान्हिक जैन व्रत समाप्त, मन्वादि १५

फाल्गुन शु. ८ शनि, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३ मार्च [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. ९ मार्च ❖ फाल्गुन शु. १५ शुक्र, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	१	७	९	१	११	१	२	८	९	९	७
१८	१७	१८	२२	९	२३	१	१८	१८	२८	१३	२१
३६	३१	१८	५९	२९	७	२६	३५	३५	१०	४१	२०
९	११	१७	५५	४८	४४	३०	२१	२१	२३	१०	४०
६०	८३४	२८	३२	६	१२	३	३	३	३	१	०
९	५५	५१	२९	५८	५२	५९	११	११	१८	५६	२९
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

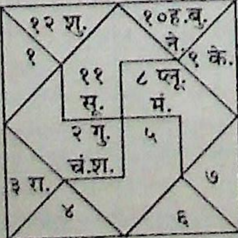

इस पक्ष में सूर्य, मंगल, गुरु, शनि, प्लूटो का केन्द्र योग नेष्ट फलप्रद किन्तु फाल्गुन मास में पांच शुक्रवारों का फल श्रेष्ठ है अतः यहाँ मिलेजुले फल प्राप्त होंगे। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में विश्व शांति की चर्चायें अधिक होने लगेंगी किन्तु स्वार्थ परायणता वश इनकी सफलता संदिग्ध बनेगी। पांच शुक्रवार का फल— "शुक्रस्य पंचवारास्युर्यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजावृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥" राज प्रजा में सुख शांति तथा सुभिक्ष का संचार होगा।

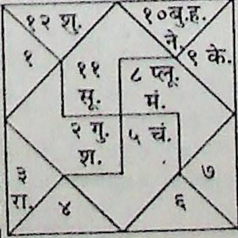

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	४	७	९	१	११	१	२	८	९	९	७
२४	१४	१७	२७	१०	२३	१	१८	१८	२८	१३	२१
३६	२६	९	१६	१३	५०	५१	१६	१६	२९	५२	२३
३१	३६	२३	८	२२	५९	४१	१७	१७	५७	३१	९
५९	८११	२७	५५	७	१	४	३	३	३	१	०
५६	५१	५१	१२	४७	३	३०	११	११	१३	५१	१७
मा	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शुक्रवार का होलिकादहन भारत के लिए श्रेष्ठ फलों में वृद्धि करेगा। नवीन उद्योग धन्धों की स्थापना से श्रमिकों व बेरोजगारों को धन्धा उपलब्ध होगा। पश्चिमी राष्ट्रों के कुछ भागों में अशांति, भय, विग्रह तथा प्रकृति-प्रकोप से जन-धन की हानि हो सकती है। तेजी मंदी विचार—पक्षारंभ में शनिवार का चन्द्रदर्शन व मार्गी बुध होने से चांदी, सोना, रूई, सरसों, अलसी, सूत, वस्त्रों में घटावढ़ी होकर तेजी की चाल निकलेगी। पक्ष मध्य में धनिष्ठा का बुध आंशिक मंदी का झटका प्रदान करेगा किन्तु अन्त में ज्येष्ठा का मंगल पुनः बाजारों को तेजी प्रदान करेगा। आकाश लक्षण—इस पक्ष में मौसम का क्रम अनिश्चित रहेगा। दक्षिण भारत के कुछ स्थानों पर वर्षा तो कुछ स्थानों पर बादल चाल व ओलावृष्टि होगी। राजस्थान, दिल्ली, उ.प्र., म.प्र., हरियाणा, पंजाब में साधारण बादल चाल व बूंदाबांदी के योग हैं। शकुन विचार—"फाल्गुन सुदी जो सप्तमी वर्षा महाघन छाय। पांचम नवमी आसोज सुदी जल थल एक कराय॥ फाल्गुन सुदी जो पूर्णिमा गर्जे वर्षा होय। धान्य सातवां मास में निश्चय महंगा होय॥"

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र कृष्ण पक्ष-२४

श्री वि. सं. २०५७ शाके १९२२

ता. १० से २५ मार्च सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति १९ फाल्गुन से ४ चैत्र तक। रवि उत्तरायणे, द.-उत्तर गोले, बसन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	दिनमान प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार (भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.)	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ
१९	१	श	३२	२५	११	४०	फा	३९	४०	२२	३४	शू	१५	३७	१२	५७	बा	६	१७	९	१३	२९	१३	६	४२	१८	२४	२७	१४	10	कन्या	१०	२५	३६	२७	[illegible]	२०	२८	७	३६	छारेण्डी, (धूलण्डी), धूलिवन्दन, बसन्त प्रतिपदा, बसन्तोत्सव, A
२०	२	र	२५	१७	१६	४८	ह	३४	४०	२०	३३	गं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ग	२५	१७	१६	४८	२९	१८	६	४१	१८	२४	२८	१५	11	कन्या	१०	२६	३६	२१	५३	२१	१०	८	२०	भद्रा २७।४० से, कुंभ में बुध प्रवेश २५।२५, भाई २, संत तुकाराम B
२१	३	चं	१९	३७	१४	३१	चि	३१	१०	१९	०८	धृ	५१	५७	२७	२७	वि	१९	३७	१४	३१	२९	२२	६	४०	१८	२५	२९	१६	12	तु. ०।१०	१०	२७	३६	१४	५१	२१	५२	९	०४	भद्रा १४।३१ तक, कृष्ण गणेश ४ व्रत, कल्यादि ३
२२	४	मं	१५	४७	१२	५८	स्वा	२९	३०	१८	२७	व्या	४६	५५	२५	२५	बा	१५	४७	१२	५८	२९	२६	६	३९	१८	२६	३०	१७	13	तुला	१०	२८	३६	०५	४९	२२	३४	९	४८	C सौर चैत्र मासारम्भ, मीन (खर) मास प्रारम्भ
२३	५	बु	१४	०५	१२	१६	वि	२९	५७	१८	३७	हर्ष	४३	३५	२४	०४	तै	१४	०५	१२	१६	२९	३१	६	३८	१८	२६	चै.	१८	14	वृ. १२।२७	१०	२९	३५	५४	४८	२३	१६	१०	३२	मीन में सूर्य प्रवेश १५।१०, संक्रान्ति मु. ४५, रंग पंचमी, श्री जयंती, C
२४	६	गु	१४	३२	१२	२६	अनु	३२	२७	१९	३६	वज्र	४१	५७	२३	२४	व	१४	३२	१२	२६	२९	३५	६	३७	१८	२७	२	१९	15	वृश्चिक	११	००	३५	४२	४६	२३	५८	११	१६	भद्रा १२।२६ से २४।५० तक, एकनाथ षष्ठी, मे. शीतला माता कुराली (पंजाब)
२५	७	शु	१७	०७	१३	२७	ज्ये	३७	०२	२१	२५	सि	४१	५७	२३	२३	ब	१७	०७	१३	२७	२९	३९	६	३६	१८	२७	३	२०	16	ध. २१।२५	११	०१	३५	२८	४३	२४	४०	१२	०१	शीतला ७, शीतला पूजन (बासी भोजन करना चाहिए), कालाष्टमी
२६	८	श	२१	३७	१५	१३	मू	४३	२०	२३	५४	व्य	४३	१२	२३	५१	कौ	२१	३७	१५	१३	२९	४३	६	३४	१८	२८	४	२१	17	धनु	११	०२	३५	११	४२	१	२२	१२	४६	उ.भा. में सूर्य प्रवेश २३।३१, शत. में बुध प्रवेश २१।५१, शीतलाष्टमी, D
२७	९	र	२७	३०	१७	३३	पूषा	५०	३७	२६	४८	व	४५	१७	२४	४०	ग	२७	३०	१७	३३	२९	४७	६	३३	१८	२८	५	२२	18	धनु	११	०३	३४	५३	४१	२	०४	१३	३१	वक्री प्लूटो ८।०३
२८	१०	चं	३४	१०	२०	१२	उषा	५८	३५	२९	५८	प	४७	५७	२५	४३	व	०	४२	६	४९	२९	५२	६	३२	१८	२९	६	२३	19	म. ९।३६	११	०४	३४	३४	३९	२	४६	१४	१६	भद्रा ६।४९ से २०।१२ तक, दशमाता व्रत
२९	११	मं	४०	५७	२२	५४	श्र	६०	००	-	-	शि	५०	३७	२६	४६	ब	७	३७	९	३४	२९	५६	६	३१	१८	३०	७	२४	20	मकर	११	०५	३४	१३	३७	३	२८	१५	०१	सायन मेष में सूर्य प्रवेश १९।०१, सूर्य उत्तर गोल में प्रवेश, E
३०	१२	बु	४७	२०	२५	२६	श्र	६	३०	९	०६	सि	५२	५७	२७	४१	कौ	१४	१५	१२	१२	३०	००	६	३०	१८	३०	८	२५	21	कुं. २२।३६	११	०६	३३	५०	३६	४	१०	१५	४६	पंचक प्रारंभ २२।३७ से, विजया व पक्षवर्धिनी महाद्वादशी व्रत
चैत्र	१३	गु	५२	५७	२७	४०	ध	१३	५५	१२	०३	सा	५४	४०	२८	२१	ग	२०	१५	१४	३५	३०	०५	६	२९	१८	३१	९	२६	22	कुंभ	११	०७	३३	२६	३३	४	५२	१६	३१	भद्रा २७।४० से, प्रदोष व्रत, वारुणी पर्व १२।०३ से, राष्ट्रीय चैत्र F
२	१४	शु	५७	३५	२९	२९	श	२०	२७	१४	३८	शुभ	५५	३७	२८	४२	वि	२५	२७	१६	३८	३०	०९	६	२७	१८	३१	१०	२७	23	कुंभ	११	०८	३२	५९	३२	५	३४	१७	१६	भद्रा १६।३८ तक, मासशिवरात्रि व्रत, मेला पृथूदक पिहोवा (हरियाणा)
३	३०	श	६०	००	-	-	पूभा.	२५	५७	१६	४९	शु	५५	४२	२८	४३	च	२९	३२	१८	१५	३०	१४	६	२६	१८	३२	११	२८	24	मी. १०।१०	११	०९	३२	३१	२९	६	१६	१८	०१	देव पितृकार्याऽमावस्या, शनैश्चरी अमावस
४	३०	र	१	०२	६	५०	उभा.	३०	१५	१८	३१	ब	५५	००	२८	२५	ना	१	०२	६	५०	३०	१८	६	२५	१८	३२	१२	२९	25	मीन	११	१०	३२	००	२८	६	५८	१८	४६	मन्वादि, चान्द्र सम्वत्सर २०५७ समाप्त, ॥ शुभम्॥

A होला मेला आनन्दपुर साहिब (पंजाब), पंखा मेला झझर B जयंती, कलमदान पूजा देशाचारे D अष्टका श्राद्ध, व्यतिपात पुण्यं, ऋषभ जयंती (जैन), वर्षीतप प्रारंभ (जैन), मेला केसरिया मेवाड़ व केला देवी करौली (राज.)

E महाविषुव दिन, बसन्त सम्पात, पापमोचनी एकादशी व्रत (सबका) F मासारंभ, शाकः १९२३ प्रारंभ

चैत्र कृ. ८ शनि, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १७ मार्च [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. २५ मार्च ❖ चैत्र कृ. ३० रवि, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	८	७	१०	१	११	१	२	८	९	९	७
२	४	२०	५	११	२२	२	१७	१७	२८	१४	२१
३५	५	८	४९	१९	३२	३०	५०	५०	५४	६	२४
११	१४	६	३७	२७	५१	०	५१	५१	५७	३१	३०
५९	७२४	२६	७३	८	२०	५	३	३	३	१	०
४२	१८	४	५८	५१	८६	९	११	११	१	३८	१
मा	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
४ [illegible]	२ [illegible]	२ [illegible]	४ [illegible]	१ [illegible]	२ [illegible]	२ [illegible]	४ [illegible]	२ [illegible]	२ [illegible]	२ [illegible]	२ [illegible]

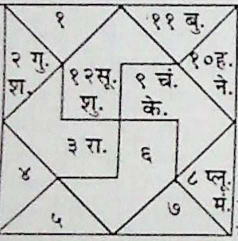

इस पक्ष में मीन संक्रान्ति ४५ मुहूर्ती तथा यहां मीन राशि गत शुक्र वक्री चलने से अराजकता, उत्पात, भय में कमी महसूस होगी किन्तु चैत्र कृष्ण पक्ष की अमावस्या वृद्धि तथा शुक्ल पक्ष में सप्तमी तिथि का क्षय होने से धान्यादि की पैदावार कम होगी। विश्व के कुछ देशों में भय विग्रह, उत्पात तथा महंगाई से राज-प्रजा को कष्ट होगा। यथा—"मधुमासे कृष्ण पक्षे तिथिवृद्धिर्यदा भवेत्। शुक्ल पक्षस्य हानिः स्यादन्नहीना तदा मही॥" यहां मंगल-शनि के सम सप्तम योग के अलावा मंगल-राहू का षडाष्टक योग भी बना हुआ है जिससे विकसित देश शांति वार्ताओं का दिखावा मात्र करके विकासशील देशों में अराजकता, आतंकवाद की ओर बढ़ावा देंगे। उद्योग धन्धों में श्रमिक आन्दोलन, हड़ताल, तोड़फोड़ की घटनाऐं अधिक होंगी। तेजी मंदी विचार—पाक्षारंभ में गुड़, खांड, शक्कर, जौ, गेहूं, चना, सरसों में मन्दी की चाल निकलेगी। जिसे बुधवार की मीन संक्रान्ति भी यथावत् बरकरार रखेगी। पक्ष मध्य में उत्तराभाद्रपदा का सूर्य आने से सोना, चांदी, रुई, गुड़, खांड, शक्कर में तेजी की चाल निकलेगी। पक्षान्त में भाव स्थिर रहेंगे। आकाश लक्षण—इस मास में तेज हवा के वेग से अनाज समय से पूर्व पकेंगे। दिन में गरमी तथा रात्रि में ठंडक रहेगी। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उ.प्र. म.प्र. में वायु वेग तथा कहीं-कहीं बादल चाल भी संभव है। शकुन विचार—चैत्र मास में संक्रान्ति के दिन बादल वर्षा हो तो आगे वैशाख ज्येष्ठ मास में अन्नादि के भावों में तेजी होगी। यथा-"चैत्र मासेऽर्कसंक्रांतौ यदि वर्षति वासवः। वैशाखे मासे वा ज्येष्ठे तदा सस्यमहर्घता॥"

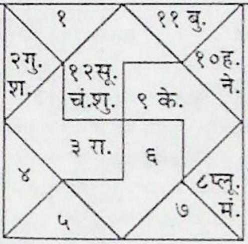

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	११	७	१०	१	११	१	२	८	९	९	७
१०	९	२४	१६	१२	१८	३	१७	१७	२९	१४	२१
३२	५२	७	३०	३३	४९	१३	२५	२५	१८	१९	२३
०	५३	२४	२८	४५	२०	१८	२४	२४	२१	०	४३
५९	७५१	२३	८७	९	३५	५	३	३	२	१	०
२८	५२	५६	३६	४९	१८	४५	११	११	४८	२८	१५
मा	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	मा	मा	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
३ उ.भा.	२ उ.भा.	३ ज्ये.	३ श्रव.	१ रोहि.	१ रेवती	२ कृत्ति.	४ आर्द्रा	२ पू.षा.	२ धनि.	२ श्रवण	२ ज्येष्ठा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारिणी देखने की विधि

इस पंचांग में दी गई यह लग्न सारिणी दिल्ली के अक्षांश-रेखांश पर है। इसका समय ऊपर दिए गए लग्न के समाप्तिकाल रेलवे-स्टैंडर्ड टाईम में घण्टा-मिनट के रूप में लिखा है। जिस लग्न के नीचे समाप्तिकाल है वह आगे के लग्न का प्रारम्भकाल है।

उदाहरण—१५ जुलाई को सारिणी के तुला लग्न के नीचे घण्टे १४ मिनट ५६ लिखे हैं अतः तुला लग्न मध्याह्न २ बजकर ५६ मिनट पर समाप्त हुआ। इसमें लिखे घण्टा-मिनट आधी रात के बाद शून्य से आरम्भ होंगे जैसे रात के १२ बजकर २५ मिनट पर ००।२५ लिखे हुए हैं इसी तरह दोपहर के पश्चात् १ बजे के स्थान पर १३।०० लिखे हुए हैं।

लग्न सारिणी परिवर्तन उदाहरण

यदि किसी को इस लग्न सारिणी से किसी दूसरे स्थान का लग्न-समाप्तिकाल मालूम करना अर्थात् लाना हो तो जो भी लग्न जिस तारीख को लाना हो उस तारीख का वह लग्न-समाप्तिकाल का घण्टा-मिनट लिखें, इसके बाद पंचांग परिवर्तन में जिस नगर का लग्न परिवर्तन करना हो, उस नगर के आगे अथवा नगर के पास के नगर के आगे लिखे हुए देशान्तर मिनट लेवें वह देशान्तर मिनट (—) ऋण हो तो ऊपर के लग्न समाप्तिकाल में मिलावें, देशान्तर मिनट धन (+) हो तो ऋण करो तो वह देशान्तर संस्कृत स्थानीय रेलवे टाईम का लग्न-समाप्तिकाल होगा फिर जिस स्थान का लग्न-समाप्तिकाल लाना है—उसके अक्षांश और क्रान्ति से चरान्तर कोष्ठक से चरान्तर साधन करें। वह चरान्तर धन आया हो तो उपर्युक्त देशान्तर लग्न-समाप्तिकाल में मिला दें, यदि ऋण आया हो तो घटा दें, वह स्थानीय रेलवे टाईम से स्पष्ट लग्न का समाप्ति-काल होगा।

उदाहरण—१५ जुलाई को बीकानेर का तुला लग्न समाप्तिकाल निकालना है। अक्षांश सारिणी दिल्ली से बीकानेर का देशान्तर (—) १५।३२ है, दैनिक लग्न-सारिणी में १५ जुलाई को तुला लग्न का समाप्तिकाल दिल्ली में १४।५६ है। उसमें बीकानेर का देशान्तर (—) १५ मिनट ३२ सैकिण्ड ऋण होने के कारण जोड़ने से १५।११।३२ आता है, १५ जुलाई की रविक्रान्ति २१।३७ उत्तर है और बीकानेर का अक्षांश २८।०१ है, इसकी सहायता से चरान्तर सारिणी में २१ क्रान्त्यंश २८ अक्षांश के कोष्ठक में १ चरान्तर मिनट है और २२ क्रान्त्यंश का भी १ चरान्तर मिनट है अतः चरान्तर मिनट (१) उत्तर क्रान्ति होने से १५।११।३२ में धन किया गया तो बीकानेर में तुला लग्न का समाप्तिकाल १५।१२।३२ हुआ।

नवांश का प्रारम्भ तथा अन्त जानने की विधि

ऊपर लिखे अनुसार जिस लग्न में नवांश-समय लाना हो उस लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल साधन करें, पश्चात् समाप्तिकाल में से प्रारम्भ समय हीन करें। शेष घं. मि. रहेंगे, घण्टा को ६० से गुणाकार मिनट मिला देवें, यह कुल लग्नमान के मिनट होंगे, उन मिनटों को ९ का भाग देवें, लब्धि १ नवांश के मिनट प्राप्त होंगे शेष को ६० से गुणाकर फिर ९ का भाग देने पर सैकेण्ड आयेंगे, यह मिनट और सैकेण्ड एक नवांश का मान होने से जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से एक नवांश के मान को गुणाकर जो मिनट हों वह मिनट लग्न प्रारम्भकाल में मिलाने से नवांश प्रारम्भ समय आएगा और इस नवांश प्रारम्भ समय में एक नवांश का मान मिला देने पर नवांश समाप्तिकाल आयेगा। मेष, सिंह, धनु लग्न में नवांश का प्रारम्भ मेष से होगा। वृष, कन्या, मकर लग्न में नवांश का मकर से मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न में नवांश का प्रारम्भ तुला से तथा कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न में नवांश का प्रारम्भ कर्क से होगा। इसी प्रकार सर्वत्र जानें। विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेशादि में लग्न तथा नवांश इस प्रकार से सूक्ष्म साधन करने से मुहूर्त योग्य समय में होता है और फल भी जो मिलना चाहिए वह मिलता है। ज्योतिर्विदों को चाहिए कि नवांश सूक्ष्म से सूक्ष्म साधन करके विवाह आदि का समय निश्चित करें।

स्मार्त्त-वैष्णव विचार

पंचांग में एकादशी व्रत प्रायः स्मार्त्त-वैष्णव भेद से दो दिन अलग-अलग होता है, स्मार्त्त व्रत पहले दिन और वैष्णवों का दूसरे दिन लिखते हैं। इनका निर्णय धर्म शास्त्रीय व्यवस्था से पंचांगों में लिखा जाता है। यदि ५४ घटी से एक पल भी दशमी अधिक हो तो वैष्णव सम्प्रदाय का व्रत एकादशी को न होकर द्वादशी में होता है। निम्बार्क सम्प्रदाय वाले कपाल वेध मानते हैं। स्मार्त्त लोग जिस दिन अर्धरात्रि के समय अष्टमी हो उसी दिन श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी का व्रत करते हैं और वैष्णव सम्प्रदाय वाले उदय व्यापिनी अष्टमी मानते हैं।

स्मार्त्त कौन और वैष्णव कौन ?—आम आदमी यह नहीं समझ पाता कि वह स्मार्त्त है या वैष्णव ! उसे स्मरण रखना चाहिए कि श्रुति-स्मृति को मानने वाले सभी आस्तिक-जन स्मार्त्त हैं। वैसे तो द्विज-मात्र (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य) जो गायत्री की उपासना करते हैं और वेद पुराण धर्मशास्त्र स्मृति को मानने वाले पंचदेवोपासक सभी स्मार्त्त हैं। **"श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः।"** (मनुः) जो लोग यह समझते हैं कि मांस, मदिरा, प्याज, लहसुन से दूर रहने वाले राम-कृष्ण-विष्णु के उपासक सब वैष्णव हैं, यह उनका भ्रम है। जिन लोगों ने वैष्णव गुरु से तप्तमुद्रा द्वारा अपनी भुजा पर शंख-चक्र अंकित करवाये हैं वे, या जिन्होंने किसी वैष्णव सम्प्रदाय के धर्माचार्य से विधिपूर्वक दीक्षा लेकर कण्ठी और तुलसी की माला धारण की हुई है वे ही वैष्णव कहला सकते हैं, उनको और विधवा स्त्रियों को दूसरे दिन वैष्णव व्रत करने का अधिकार है, अन्य को नहीं।

(शेष पृष्ठ १३८ का)

स्वप्न	स्वप्न का फल	स्वप्न	स्वप्न का फल
नावा देखना	हैरानी हो	खून करना	सेहत पाना
नंगी तलवार देखना	शत्रु पर विजय	चित्र देखना	राज्य लाभ
हरी तरकारी देखना	खुशी प्राप्त हो	चील कारना	संकट
खाना बनाना	बच्चे बीमार हों	जहाज देखना	स्त्री क्लेश
तेल पीना	कुष्ट रोग से भय	जहाज पर चढ़ना	तबदीली
तिल चबाना	कलंक लगे	तालाब स्नान	इज्जत पाना
तोप देखना	शत्रु नष्ट हो	श्वेत सर्प काटना	लाभ
तीर चलाना	आशा पूर्ण हो	दरिया में नकाना	रोगनाश
जवाहरात देखना	कार्य सफलता	दूध पीना	खुशी

शेष पृष्ठ १०४ पर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्च की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर
१	७।२८	८।५३	१०।२८	१२।२३	१४।३६	१६।५५	१९।१३	२१।३०	२३।५०	२। ८	४।११	५।५५
२	७।२४	८।४९	१०।२४	१२।१९	१४।३२	१६।५१	१९। ९	२१।२६	२३।४६	२। ४	४। ७	५।५१
३	७।२०	८।४५	१०।२०	१२।१५	१४।२८	१६।४७	१९। ५	२१।२२	२३।४२	२। १	४। ३	५।४७
४	७।१६	८।४१	१०।१६	१२।११	१४।२४	१६।४३	१९। १	२१।१८	२३।३८	१।५६	३।५९	५।४३
५	७।१३	८।३८	१०।१३	१२। ८	१४।२१	१६।४०	१८।५८	२१।१५	२३।३५	१।५३	३।५६	५।४०
६	७। ९	८।३४	१०। ९	१२। ४	१४।१७	१६।३६	१८।५४	२१।११	२३।३१	१।४९	३।५२	५।३६
७	७। ५	८।३०	१०। ५	१२। ०	१४।१३	१६।३२	१८।५०	२१। ७	२३।२७	१।४५	३।४८	५।३२
८	७। १	८।२६	१०। २	११।५६	१४। ९	१६।२८	१८।४६	२१। ३	२३।२३	१।४१	३।४४	५।२८
९	६।५७	८।२२	९।५७	११।५२	१४। ५	१६।२४	१८।४२	२०।५९	२३।१९	१।३७	३।४०	५।२४
१०	६।५२	८।१७	९।५२	११।४७	१४। ०	१६।१९	१८।३७	२०।५४	२३।१४	१।३२	३।३५	५।१९
११	६।४८	८।१३	९।४८	११।४३	१३।५६	१६।१५	१८।३३	२०।५०	२३।१०	१।२८	३।३१	५।१५
१२	६।४४	८। ९	९।४४	११।३९	१३।५२	१६।११	१८।२९	२०।४६	२३। ६	१।२४	३।२७	५।११
१३	६।४०	८। ५	९।४०	११।३५	१३।४८	१६। ७	१८।२५	२०।४२	२३। २	१।२०	३।२३	५। ७
१४	६।३६	८। १	९।३६	११।३१	१३।४४	१६। ३	१८।२१	२०।३८	२२।५८	१।१६	३।१९	५। ३
१५	६।३२	७।५७	९।३२	११।२७	१३।४०	१५।५९	१८।१७	२०।३४	२२।५४	१।१२	३।१५	४।५९
१६	६।२८	७।५३	९।२८	११।२३	१३।३६	१५।५५	१८।१३	२०।३०	२२।५०	१। ८	३।११	४।५५
१७	६।२४	७।४९	९।२४	११।१९	१३।३२	१५।५१	१८। ९	२०।२६	२२।४६	१। ४	३। ७	४।५१
१८	६।२०	७।४५	९।२०	११।१५	१३।२८	१५।४७	१८। ५	२०।२२	२२।४२	१। ०	३। ३	४।४७
१९	६।१६	७।४१	९।१६	११।११	१३।२४	१५।४३	१८। १	२०।१८	२२।३८	०।५६	२।५९	४।४३
२०	६।१२	७।३७	९।१२	११। ७	१३।२०	१५।३९	१७।५७	२०।१४	२२।३४	०।५२	२।५५	४।३९
२१	६। ८	७।३३	९। ८	११। ३	१३।१६	१५।३५	१७।५३	२०।१०	२२।३०	०।४८	२।५१	४।३५
२२	६। ४	७।२९	९। ४	१०।५९	१३।१२	१५।३१	१७।४९	२०। ६	२२।२६	०।४४	२।४७	४।३१
२३	६। १	७।२५	९। १	१०।५५	१३। ८	१५।२७	१७।४५	२०। २	२२।२२	०।४०	२।४३	४।२७
२४	५।५५	७।२१	८।५६	१०।५१	१३। ४	१५।२३	१७।४१	१९।५८	२२।१८	०।३६	२।३९	४।२३
२५	५।५२	७।१७	८।५२	१०।४७	१३। ०	१५।१९	१७।३७	१९।५४	२२।१४	०।३२	२।३५	४।१९
२६	५।४८	७।१३	८।४८	१०।४३	१२।५६	१५।१५	१७।३३	१९।५०	२२।१०	०।२८	२।३१	४।१५
२७	५।४४	७। ९	८।४४	१०।३९	१२।५२	१५।११	१७।२९	१९।४६	२२। ६	०।२४	२।२७	४।११
२८	५।४०	७। ५	८।४०	१०।३५	१२।४८	१५। ७	१७।२५	१९।४२	२२। २	०।२०	२।२३	४। ७
२९	५।३६	७। २	८।३६	१०।३१	१२।४४	१५। ३	१७।२१	१९।३८	२१।५८	०।१६	२।१९	४। ३
३०	५।३२	६।५७	८।३२	१०।२७	१२।४०	१४।५९	१७।१७	१९।३४	२१।५४	०।१२	२।१५	३।५९
३१	५।२८	६।५३	८।२८	१०।२३	१२।३६	१४।५५	१७।१३	१९।३०	२१।५०	०। ८	२।११	३।५५

अप्रैल की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ
१	६।५०	८।२३	१०।२२	१२।३५	१४।५४	१७।११	१९।२९	२१।४९	२४। ७	२।११	३।५४	५।२
२	६।४६	८।२०	१०।१८	१२।३१	१४।५०	१७। ७	१९।२५	२१।४५	२४। ३	२। ७	३।५०	५।१
३	६।४२	८।१७	१०।१४	१२।२७	१४।४६	१७। ३	१९।२१	२१।४१	२३।५९	२। ४	३।४६	५।१
४	६।३९	८।१३	१०।१०	१२।२३	१४।४२	१६।५९	१९।१७	२१।३७	२३।५५	१।५९	३।४२	५।
५	६।३५	८।१०	१०। ६	१२।१९	१४।३८	१६।५५	१९।१३	२१।३३	२३।५१	१।५५	३।३८	५।
६	६।३१	८। ६	१०। २	१२।१५	१४।३४	१६।५१	१९। ९	२१।२९	२३।४७	१।५१	३।३४	५।
७	६।२७	८। ३	९।५७	१२।११	१४।३०	१६।४७	१९। ५	२१।२५	२३।४३	१।४७	३।३०	४।
८	६।२२	७।५८	९।५३	१२। ६	१४।२५	१६।४३	१९। ०	२१।२०	२३।३८	१।४२	३।२५	४।
९	६।१८	७।५४	९।४९	१२। २	१४।२१	१६।३९	१८।५६	२१।१६	२३।३४	१।३८	३।२१	४।
१०	६।१४	७।५०	९।४५	११।५८	१४।१७	१६।३५	१८।५२	२१।१२	२३।३०	१।३४	३।१७	४।
११	६।१०	७।४६	९।४१	११।५४	१४।१३	१६।३१	१८।४८	२१। ८	२३।२६	१।३०	३।१३	४।
१२	६। ६	७।४३	९।३७	११।५१	१४।१०	१६।२७	१८।४५	२१। ४	२३।२३	१।२७	३।१०	४।
१३	६। ३	७।३९	९।३४	११।४७	१४। ६	१६।२४	१८।४१	२१। ०	२३।१९	१।२३	३। ६	४।
१४	५।५९	७।३५	९।३०	११।४३	१४। २	१६।२०	१८।३७	२०।५६	२३।१५	१।१९	३। २	४।
१५	५।५६	७।३२	९।२७	११।४०	१३।५९	१६।१७	१८।३४	२०।५३	२३।१२	१।१६	२।५९	४।
१६	५।५२	७।२८	९।२३	११।३६	१३।५५	१६।१३	१८।३०	२०।४९	२३। ८	१।१२	२।५५	४।
१७	५।४८	७।२४	९।१९	११।३२	१३।५१	१६। ९	१८।२६	२०।४५	२३। ४	१। ८	२।५१	४।
१८	५।४४	७।२०	९।१५	११।२८	१३।४७	१६। ५	१८।२२	२०।४१	२३। ०	१। ४	२।४७	४।
१९	५।४०	७।१६	९।११	११।२४	१३।४३	१६। २	१८।१८	२०।३७	२२।५६	१। १	२।४३	४।
२०	५।३६	७।१२	९। ७	११।२०	१३।३९	१५।५७	१८।१४	२०।३३	२२।५२	०।५६	२।३९	३।
२१	५।३२	७। ७	९। ३	११।१६	१३।३५	१५।५३	१८।१०	२०।२९	२२।४८	०।५२	२।३५	३।
२२	५।२७	७। ३	८।५८	११।११	१३।३०	१५।४८	१८। ५	२०।२४	२२।४३	०।४७	२।३०	३।
२३	५।२३	६।५९	८।५४	११। ७	१३।२६	१५।४४	१८। १	२०।२०	२२।३९	०।४३	२।२६	३।
२४	५।१९	६।५५	८।५०	११। ३	१३।२२	१५।४०	१७।५७	२०।१६	२२।३५	०।३९	२।२२	३।
२५	५।१५	६।५१	८।४६	१०।५९	१३।१८	१५।३६	१७।५३	२०।१२	२२।३१	०।३५	२।१८	३।
२६	५।११	६।४७	८।४२	१०।५५	१३।१४	१५।३२	१७।४९	२०। ८	२२।२७	०।३१	२।१४	३।
२७	५। ६	६।४२	८।३७	१०।५०	१३।१०	१५।२८	१७।४५	२०। ४	२२।२२	०।२६	२। ९	३।
२८	५। ३	६।३८	८।३३	१०।४६	१३। ६	१५।२४	१७।४१	२०। ०	२२।१८	०।२२	२। ५	३।
२९	४।५८	६।३४	८।२९	१०।४२	१३। २	१५।२०	१७।३७	१९।५६	२२।१४	०।१८	२। १	३।
३०	४।५५	६।३१	८।२६	१०।३९	१२।५९	१५।१७	१७।३४	१९।५३	२२।११	०।१५	१।५८	३।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मई की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन
१	६।२६	८।२१	१०।३३	१२।५३	१५।११	१७।२८	१९।४८	२२। ६	०। ९	१।५३	३।२२	४।४६
२	६।२२	८।१७	१०।२९	१२।४९	१५। ७	१७।२४	१९।४४	२२। २	०। ५	१।४९	३।१८	४।४२
३	६।१८	८।१३	१०।२५	१२।४५	१५। ३	१७।२०	१९।४०	२१।५८	०। १	१।४५	३।१४	४।३८
४	६।१५	८।१०	१०।२२	१२।४१	१५। ०	१७।१७	१९।३७	२१।५५	२३।५८	१।४२	३।११	४।३५
५	६।११	८। ६	१०।१८	१२।३७	१४।५६	१७।१३	१९।३३	२१।५१	२३।५४	१।३७	३। ७	४।३१
६	६। ७	८। २	१०।१४	१२।३३	१४।५२	१७। ९	१९।२९	२१।४७	२३।५०	१।३४	३। ३	४।२७
७	६। ३	७।५७	१०।१०	१२।२९	१४।४८	१७। ५	१९।२५	२१।४३	२३।४५	१।३०	२।५९	४।२३
८	५।५८	७।५४	१०। ६	१२।२५	१४।४४	१७। १	१९।२१	२१।३९	२३।४२	१।२६	२।५५	४।१९
९	५।५४	७।५०	१०। २	१२।२१	१४।४०	१६।५७	१९।१७	२१।३५	२३।३७	१।२२	२।५१	४।१४
१०	५।५०	७।४६	९।५७	१२।१७	१४।३६	१६।५३	१९।१३	२१।३१	२३।३४	१।१८	२।४७	४।१०
११	५।४५	७।४१	९।५३	१२।१३	१४।३२	१६।४८	१९। ८	२१।२६	२३।२९	१।१३	२।४२	४। ५
१२	५।४१	७।३७	९।४९	१२। ९	१४।२८	१६।४४	१९। ४	२१।२२	२३।२५	१। ९	२।३८	४। २
१३	५।३८	७।३४	९।४६	१२। ५	१४।२४	१६।४१	१९। १	२१।१९	२३।२२	१। ६	२।३५	३।५८
१४	५।३४	७।३०	९।४२	१२। १	१४।२०	१६।३७	१८।५७	२१।१५	२३।१८	१। २	२।३१	३।५४
१५	५।३१	७।२६	९।३७	११।५७	१४।१६	१६।३३	१८।५३	२१।११	२३।१४	०।५७	२।२७	३।५१
१६	५।२७	७।२३	९।३५	११।५४	१४।१३	१६।३०	१८।५०	२१। ८	२३।११	०।५५	२।२४	३।४८
१७	५।२५	७।२०	९।३२	११।५०	१४।१०	१६।२७	१८।४७	२१। ५	२३। ८	०।५२	२।२१	३।४५
१८	५।२१	७।१६	९।२८	११।४६	१४। ६	१६।२३	१८।४३	२१। १	२३। ४	०।४८	२।१७	३।४१
१९	५।१७	७।१३	९।२५	११।४३	१४। ३	१६।२०	१८।४०	२०।५८	२३। १	०।४५	२।१४	३।३८
२०	५।१४	७। ९	९।२१	११।४०	१३।५९	१६।१६	१८।३६	२०।५४	२२।५७	०।४१	२।१०	३।३४
२१	५।१०	७। ५	९।१७	११।३६	१३।५५	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२२।५३	०।३७	२। ६	३।३०
२२	५। ६	७। १	९।१३	११।३३	१३।५१	१६। ८	१८।२८	२०।४६	२२।४९	०।३३	२। २	३।२५
२३	५। ३	६।५७	९। ९	११।२९	१३।४७	१६। ४	१८।२४	२०।४२	२२।४५	०।२९	१।५८	३।२२
२४	४।५८	६।५३	९। ५	११।२५	१३।४३	१६। ०	१८।२०	२०।३८	२२।४१	०।२५	१।५४	३।१८
२५	४।५४	६।४९	९। २	११।२१	१३।३९	१५।५६	१८।१६	२०।३४	२२।३७	०।२१	१।५०	३।१४
२६	४।५०	६।४५	८।५७	११।१७	१३।३५	१५।५२	१८।१२	२०।३०	२२।३३	०।१७	१।४६	३।१०
२७	४।४६	६।४१	८।५३	११।१२	१३।३१	१५।४८	१८। ८	२०।२६	२२।२९	०।१३	१।४२	३। ६
२८	४।४२	६।३७	८।४९	११। ८	१३।२७	१५।४४	१८। ४	२०।२२	२२।२५	०। ९	१।३८	३। ३
२९	४।३८	६।३३	८।४५	११। ३	१३।२३	१५।४०	१८। ०	२०।१७	२२।२१	०। ५	१।३४	२।५८
३०	४।३४	६।२९	८।४१	१०।५९	१३।१९	१५।३६	१७।५६	२०।१४	२२।१७	०। २	१।३०	२।५४
३१	४।२९	६।२४	८।३६	१०।५६	१३।१६	१५।३१	१७।५१	२०। ९	२२।१२	२३।५६	१।२५	२।४९

जून की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	६।१९	८।३१	१०।५१	१३। ९	१५।२६	१७।४६	२०। ४	२२। ८	२३।५२	१।२०	२।४५	४।२[illegible]
२	६।१५	८।२८	१०।४७	१३। ५	१५।२२	१७।४२	२०। ०	२२। ३	२३।४७	१।१५	२।४०	४।१[illegible]
३	६।११	८।२४	१०।४३	१३। १	१५।१८	१७।३८	१९।५६	२१।५९	२३।४३	१।११	२।३६	४।१[illegible]
४	६। ७	८।२०	१०।३९	१२।५७	१५।१४	१७।३४	१९।५२	२१।५५	२३।३९	१। ७	२।३२	४।[illegible]
५	६। ३	८।१६	१०।३५	१२।५३	१५।१०	१७।३०	१९।४८	२१।५१	२३।३५	१। ३	२।२८	४।[illegible]
६	५।५९	८।१२	१०।३१	१२।४९	१५। ६	१७।२६	१९।४४	२१।४७	२३।३१	०।५९	२।२४	४।[illegible]
७	५।५५	८। ८	१०।२७	१२।४५	१५। २	१७।२२	१९।४०	२१।४३	२३।२७	०।५५	२।२०	३।५[illegible]
८	५।५२	८। ५	१०।२४	१२।४२	१४।५९	१७।१९	१९।३७	२१।४०	२३।२४	०।५२	२।१७	३।५३
९	५।४८	८। २	१०।२०	१२।३८	१४।५५	१७।१५	१९।३३	२१।३६	२३।२०	०।४८	२।१३	३।४९
१०	५।४४	७।५७	१०।१६	१२।३४	१४।५१	१७।११	१९।२९	२१।३२	२३।१६	०।४४	२। ९	३।४५
११	५।४०	७।५३	१०।१२	१२।३०	१४।४७	१७। ७	१९।२५	२१।२८	२३।१२	०।४०	२। ५	३।४१
१२	५।३६	७।४९	१०। ८	१२।२६	१४।४३	१७। ३	१९।२१	२१।२४	२३। ८	०।३६	२। १	३।३७
१३	५।३२	७।४५	१०। ४	१२।२२	१४।३९	१६।५९	१९।१७	२१।२०	२३। ४	०।३२	१।५७	३।३३
१४	५।२९	७।४२	१०। १	१२।१९	१४।३६	१६।५६	१९।१४	२१।१७	२३। १	०।२९	१।५४	३।३०
१५	५।२५	७।३८	९।५७	१२।१५	१४।३२	१६।५२	१९।१०	२१।१३	२२।५७	०।२५	१।५०	३।२६
१६	५।२१	७।३४	९।५३	१२।११	१४।२८	१६।४८	१९। ६	२१। ९	२२।५३	०।२१	१।४६	३।२२
१७	५।१७	७।३०	९।४९	१२। ७	१४।२४	१६।४४	१९। २	२१। ५	२२।४९	०।१७	१।४२	३।१८
१८	५।१३	७।२६	९।४५	१२। ३	१४।२१	१६।४०	१८।५८	२१। १	२२।४५	०।१३	१।३८	३।१४
१९	५।१०	७।२३	९।४२	१२। ०	१४।१८	१६।३७	१८।५५	२०।५७	२२।४२	०।१०	१।३५	३।११
२०	५। ६	७।१९	९।३८	११।५६	१४।१४	१६।३३	१८।५१	२०।५४	२२।३८	०। ६	१।३१	३। ७
२१	५। ३	७।१५	९।३४	११।५२	१४।१०	१६।२९	१८।४७	२०।५०	२२।३४	०। २	१।२७	३। ३
२२	४।५८	७।११	९।३०	११।४८	१४। ६	१६।२५	१८।४३	२०।४६	२२।३०	२३।५८	१।२३	२।५९
२३	४।५४	७। ७	९।२६	११।४४	१४। २	१६।२१	१८।३९	२०।४२	२२।२६	२३।५४	१।१९	२।५५
२४	४।५०	७। ३	९।२२	११।४०	१३।५८	१६।१७	१८।३५	२०।३८	२२।२२	२३।५०	१।१५	२।५१
२५	४।४७	७। १	९।१९	११।३७	१३।५५	१६।१४	१८।३२	२०।३५	२२।१९	२३।४७	१।१२	२।४८
२६	४।४३	६।५६	९।१५	११।३३	१३।५१	१६।१०	१८।२८	२०।३१	२२।१५	२३।४३	१। ८	२।४४
२७	४।३९	६।५२	९।११	११।२९	१३।४७	१६। ६	१८।२४	२०।२७	२२।११	२३।३९	१। ४	२।४०
२८	४।३५	६।४८	९। ७	११।२५	१३।४३	१६। २	१८।२०	२०।२३	२२। ७	२३।३५	१। १	२।३६
२९	४।३१	६।४४	९। ३	११।२१	१३।३९	१५।५८	१८।१६	२०।१९	२२। ३	२३।३१	०।५५	२।३२
३०	४।२७	६।४०	८।५९	११।१७	१३।३५	१५।५४	१८।१२	२०।१५	२१।५९	२३।२७	०।५२	२।२८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जुलाई को दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ
१	६।३६	८।५६	११।१३	१३।३१	१५।५१	१८। ८	२०।१२	२१।५५	२३।२४	०।४९	२।२४	४।१९
२	६।३२	८।५२	११। ९	१३।२७	१५।४७	१८। ४	२०। ८	२१।५१	२३।२०	०।४५	२।२०	४।१५
३	६।२८	८।४८	११। ५	१३।२३	१५।४३	१८। ०	२०। ४	२१।४७	२३।१६	०।४१	२।१६	४।११
४	६।२४	८।४४	११। १	१३।१९	१५।३९	१७।५६	२०। १	२१।४३	२३।१२	०।३७	२।१२	४। ७
५	६।२०	८।४०	१०।५७	१३।१५	१५।३५	१७।५२	१९।५७	२१।३९	२३। ८	०।३३	२। ८	४। ३
६	६।१६	८।३६	१०।५३	१३।११	१५।३१	१७।४८	१९।५३	२१।३५	२३। ४	०।२९	२। ४	३।५९
७	६।१२	८।३२	१०।४९	१३। ७	१५।२७	१७।४४	१९।४९	२१।३१	२३। ०	०।२५	२। १	३।५५
८	६। ८	८।२८	१०।४५	१३। ३	१५।२३	१७।४०	१९।४५	२१।२७	२२।५६	०।२१	१।५६	३।५१
९	६। ४	८।२४	१०।४१	१२।५९	१५।१९	१७।३६	१९।४१	२१।२३	२२।५२	०।१७	१।५२	३।४७
१०	६। ०	८।२०	१०।३७	१२।५५	१५।१५	१७।३२	१९।३७	२१।१९	२२।४८	०।१३	१।४८	३।४३
११	५।५७	८।१७	१०।३४	१२।५२	१५।१२	१७।२९	१९।३४	२१।१६	२२।४५	०।१०	१।४५	३।४०
१२	५।५३	८।१३	१०।३०	१२।४८	१५। ८	१७।२५	१९।३०	२१।११	२२।४१	०। ६	१।४१	३।३६
१३	५।४९	८। ९	१०।२६	१२।४४	१५। ४	१७।२१	१९।२६	२१। ८	२२।३७	०। ३	१।३७	३।३२
१४	५।४५	८। ५	१०।२२	१२।४०	१५। ०	१७।१७	१९।२२	२१। ४	२२।३३	२३।५८	१।३३	३।२८
१५	५।४१	८। २	१०।१८	१२।३६	१४।५६	१७।१३	१९।१८	२१। ०	२२।२९	२३।५४	१।२९	३।२४
१६	५।३७	७।५७	१०।१४	१२।३२	१४।५२	१७। ९	१९।१४	२०।५६	२२।२५	२३।५०	१।२५	३।२०
१७	५।३३	७।५३	१०।१०	१२।२८	१४।४८	१७। ५	१९।१०	२०।५१	२२।२१	२३।४६	१।२१	३।१६
१८	५।२९	७।४९	१०। ६	१२।२४	१४।४५	१७। १	१९। ६	२०।४८	२२।१७	२३।४२	१।१७	३।१२
१९	५।२५	७।४५	१०। २	१२।२०	१४।४०	१६।५७	१९। २	२०।४४	२२।१३	२३।३८	१।१३	३। ८
२०	५।२१	७।४१	९।५८	१२।१६	१४।३६	१६।५३	१८।५८	२०।४०	२२। ९	२३।३४	१। ९	३। ४
२१	५।१७	७।३७	९।५४	१२।१२	१४।३२	१६।४९	१८।५४	२०।३६	२२। ५	२३।३०	१। ५	३। १
२२	५।१३	७।३३	९।५०	१२। ८	१४।२८	१६।४५	१८।५०	२०।३२	२२। १	२३।२६	१। १	२।५४
२३	५।१०	७।३०	९।४७	१२। ५	१४।२५	१६।४२	१८।४७	२०।२९	२१।५८	२३।२३	०।५८	२।५१
२४	५। ६	७।२६	९।४३	१२। १	१४।२१	१६।३८	१८।४३	२०।२५	२१।५४	२३।१९	०।५४	२।४७
२५	५। २	७।२२	९।४०	११।५७	१४।१७	१६।३४	१८।३९	२०।२१	२१।५०	२३।१५	०।५०	२।४३
२६	४।५८	७।१८	९।३६	११।५३	१४।१३	१६।३०	१८।३५	२०।१७	२१।४६	२३।११	०।४६	२।३९
२७	४।५४	७।१४	९।३२	११।४९	१४। ९	१६।२६	१८।३१	२०।१३	२१।४२	२३। ७	०।४२	२।३५
२८	४।५०	७।१०	९।२८	११।४५	१४। ५	१६।२२	१८।२७	२०। ९	२१।३८	२३। ३	०।३८	२।३१
२९	४।४६	७। ६	९।२४	११।४१	१४। १	१६।१८	१८।२३	२०। ५	२१।३४	२२।५९	०।३४	२।२७
३०	४।४२	७। २	९।२०	११।३७	१३।५७	१६।१४	१८।१९	२०। १	२१।३०	२२।५५	०।३०	२।२३
३१	४।३९	६।५९	९।१७	११।३४	१३।५४	१६।११	१८।१६	१९।५८	२१।२७	२२।५२	०।२७	२।२०

अगस्त को दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन
१	६।५५	९।१३	११।३१	१३।५०	१६। ८	१८।११	१९।५५	२१।२३	२२।४८	०।२४	२।१८	४।३
२	६।५१	९। ९	११।२७	१३।४६	१६। ४	१८। ७	१९।५१	२१।१९	२२।४४	०।२०	२।१४	४।२७
३	६।४७	९। ५	११।२३	१३।४२	१६। १	१८। ३	१९।४७	२१।१५	२२।४०	०।१६	२।१०	४।२३
४	६।४३	९। १	११।१९	१३।३७	१५।५६	१७।५९	१९।४३	२१।११	२२।३६	०।१२	२। ६	४।१९
५	६।३९	८।५७	११।१५	१३।३४	१५।५२	१७।५५	१९।३९	२१। ७	२२।३२	०। ८	२। २	४।१५
६	६।३५	८।५३	११।११	१३।३०	१५।४८	१७।५१	१९।३५	२१। ३	२२।२८	०। ४	१।५८	४।११
७	६।३१	८।४९	११। ७	१३।२६	१५।४४	१७।४७	१९।३१	२०।५९	२२।२४	०। १	१।५४	४। ७
८	६।२८	८।४६	११। ४	१३।२३	१५।४१	१७।४४	१९।२८	२०।५६	२२।२१	२३।५७	१।५१	४। ४
९	६।२४	८।४२	११। १	१३।१९	१५।३७	१७।४०	१९।२४	२०।५२	२२।१७	२३।५३	१।४७	४। १
१०	६।२०	८।३८	१०।५६	१३।१५	१५।३३	१७।३६	१९।२०	२०।४८	२२।१३	२३।४९	१।४३	३।५६
११	६।१६	८।३४	१०।५२	१३।११	१५।२९	१७।३२	१९।१६	२०।४४	२२। ९	२३।४५	१।३९	३।५२
१२	६।१२	८।३०	१०।४८	१३। ७	१५।२५	१७।२८	१९।१२	२०।४०	२२। ५	२३।४१	१।३५	३।४८
१३	६। ८	८।२६	१०।४४	१३। ३	१५।२१	१७।२४	१९। ८	२०।३६	२२। १	२३।३७	१।३१	३।४४
१४	६। ४	८।२२	१०।४०	१२।५९	१५।१७	१७।२०	१९। ४	२०।३२	२१।५७	२३।३३	१।२७	३।४०
१५	६। १	८।१८	१०।३६	१२।५५	१५।१३	१७।१६	१९। ०	२०।२८	२१।५३	२३।२९	१।२३	३।३६
१६	५।५५	८।१३	१०।३१	१२।५०	१५। ८	१७।११	१८।५५	२०।२३	२१।४८	२३।२४	१।१८	३।३२
१७	५।५१	८। ९	१०।२७	१२।४६	१५। ४	१७। ७	१८।५१	२०।१९	२१।४४	२३।२०	१।१४	३।२८
१८	५।४७	८। ५	१०।२३	१२।४२	१५। ०	१७। ३	१८।४७	२०।१५	२१।४०	२३।१६	१।१०	३।२४
१९	५।४३	८। १	१०।१९	१२।३८	१४।५६	१६।५९	१८।४३	२०।११	२१।३६	२३।१२	१। ६	३।२
२०	५।३९	७।५७	१०।१५	१२।३४	१४।५२	१६।५५	१८।३९	२०। ७	२१।३२	२३। ८	१। २	३।१
२१	५।३५	७।५३	१०।११	१२।३०	१४।४८	१६।५१	१८।३५	२०। ३	२१।२८	२३। ४	०।५८	३।१
२२	५।३१	७।४९	१०। ७	१२।२६	१४।४४	१६।४७	१८।३१	१९।५९	२१।२४	२३। ०	०।५४	३।
२३	५।२७	७।४५	१०। ३	१२।२२	१४।४०	१६।४३	१८।२७	१९।५५	२१।२०	२२।५६	०।५०	३।
२४	५।२३	७।४१	९।५९	१२।१८	१४।३६	१६।३९	१८।२३	१९।५१	२१।१६	२२।५२	०।४६	२।५
२५	५।१९	७।३७	९।५५	१२।१४	१४।३२	१६।३५	१८।१९	१९।४७	२१।१२	२२।४८	०।४२	२।५
२६	५।१६	७।३४	९।५२	१२।११	१४।२९	१६।३२	१८।१६	१९।४४	२१। ९	२२।४५	०।३९	२।५
२७	५।१२	७।३०	९।४८	१२। ७	१४।२५	१६।२८	१८।१२	१९।४०	२१। ५	२२।४१	०।३५	२।४
२८	५। ८	७।२६	९।४४	१२। ३	१४।२१	१६।२४	१८। ८	१९।३६	२१। १	२२।३७	०।३१	२।४
२९	५। ४	७।२२	९।४०	११।५९	१४।१७	१६।२०	१८। ४	१९।३२	२०।५७	२२।३३	०।२७	२।४
३०	५। १	७।१९	९।३७	११।५६	१४।१४	१६।१७	१८। १	१९।२९	२०।५४	२२।३०	०।२४	२।३७
३१	४।५८	७।१६	९।३४	११।५३	१४।११	१६।१४	१७।५८	१९।२६	२०।५१	२२।२७	०।२१	२।३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सितम्बर की दैनिक लग्न-सारणी स्टेण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क
१	७।१२	९।३०	११।५०	१४। ७	१६।११	१७।५४	१९।२३	२०।४८	२२।२३	०।१८	२।३०	४।५०
२	७। ८	९।२६	११।४६	१४। ३	१६। ७	१७।५०	१९।१९	२०।४४	२२।१९	०।१४	२।२६	४।४६
३	७। ४	९।२२	११।४२	१३।५९	१६। ३	१७।४६	१९।१५	२०।४०	२२।१५	०।१०	२।२२	४।४२
४	७। ०	९।१८	११।३८	१३।५५	१५।५९	१७।४२	१९।११	२०।३६	२२।११	०। ६	२।१८	४।३८
५	६।५६	९।१४	११।३४	१३।५१	१५।५५	१७।३८	१९। ७	२०।३२	२२। ७	०। २	२।१४	४।३४
६	६।५२	९।१०	११।३०	१३।४७	१५।५१	१७।३४	१९। ३	२०।२८	२२। ३	२३।५८	२।१०	४।३०
७	६।४८	९। ६	११।२६	१३।४३	१५।४७	१७।३०	१८।५९	२०।२४	२१।५९	२३।५४	२। ६	४।२६
८	६।४४	९। २	११।२२	१३।३९	१५।४३	१७।२६	१८।५५	२०।२०	२१।५५	२३।५०	२। २	४।२२
९	६।४०	८।५८	११।१८	१३।३५	१५।३९	१७।२२	१८।५१	२०।१६	२१।५१	२३।४६	१।५८	४।१८
१०	६।३६	८।५४	११।१४	१३।३१	१५।३५	१७।१८	१८।४७	२०।१२	२१।४७	२३।४२	१।५४	४।१४
११	६।३२	८।५०	११।१०	१३।२७	१५।३१	१७।१४	१८।४३	२०। ८	२१।४३	२३।३७	१।५०	४।१०
१२	६।२८	८।४६	११। ६	१३।२३	१५।२७	१७।१०	१८।३९	२०। ४	२१।३९	२३।३४	१।४६	४। ६
१३	६।२४	८।४२	११। २	१३।१९	१५।२३	१७। ६	१८।३५	२०। १	२१।३५	२३।३०	१।४२	४। ३
१४	६।२०	८।३८	१०।५८	१३।१५	१५।१९	१७। २	१८।३१	१९।५६	२१।३१	२३।२६	१।३८	३।५८
१५	६।१६	८।३४	१०।५४	१३।११	१५।१५	१६।५८	१८।२७	१९।५२	२१।२७	२३।२२	१।३४	३।५४
१६	६।११	८।२९	१०।४९	१३। ६	१५।१०	१६।५३	१८।२२	१९।४७	२१।२२	२३।१७	१।२९	३।५०
१७	६। ७	८।२५	१०।४५	१३। २	१५। ६	१६।४९	१८।१८	१९।४३	२१।१८	२३।१३	१।२५	३।४५
१८	६। ३	८।२१	१०।४१	१२।५८	१५। २	१६।४५	१८।१४	१९।३९	२१।१४	२३। ९	१।२१	३।४१
१९	५।५९	८।१७	१०।३७	१२।५४	१४।५८	१६।४१	१८।१०	१९।३५	२१।१०	२३। ५	१।१७	३।३७
२०	५।५५	८।१३	१०।३३	१२।५०	१४।५४	१६।३७	१८। ४	१९।३१	२१। ६	२३। १	१।१३	३।३३
२१	५।५१	८। ९	१०।२९	१२।४६	१४।५०	१६।३३	१८। ०	१९।२७	२१। २	२२।५७	१। ९	३।२९
२२	५।४७	८। ५	१०।२५	१२।४२	१४।४६	१६।२९	१७।५६	१९।२३	२०।५८	२२।५३	१। ५	३।२५
२३	५।४३	८। १	१०।२१	१२।३८	१४।४२	१६।२५	१७।५२	१९।१९	२०।५४	२२।४९	१। १	३।२१
२४	५।३९	७।५७	१०।१७	१२।३४	१४।३८	१६।२१	१७।४८	१९।१५	२०।५०	२२।४५	०।५७	३।१७
२५	५।३५	७।५३	१०।१३	१२।३०	१४।३४	१६।१७	१७।४४	१९।११	।४६	२२।४१	०।५३	३।१३
२६	५।३१	७।४९	१०। ९	१२।२६	१४।३०	१६।१३	१७।४०	१९। ७	२०।४२	२२।३७	०।४९	३। ९
२७	५।२७	७।४५	१०। ५	१२।२२	१४।२६	१६। ९	१७।३६	१९। ३	२०।३८	२२।३३	०।४५	३। ५
२८	५।२३	७।४१	१०। २	१२।१८	१४।२२	१६। ५	१७।३२	१८।५९	२०।३४	२२।२९	०।४१	३। २
२९	५।१९	७।३७	९।५७	१२।१४	१४।१८	१६। २	१७।२८	१८।५५	२०।३०	२२।२५	०।३७	२।५७
३०	५।१४	७।३४	९।५४	१२।११	१४।१५	१५।५८	१७।२५	१८।५२	२०।२७	२२।२२	०।३३	२।५४

अक्तूबर की दैनिक लग्न-सारणी स्टेण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह
१	७।३०	९।५०	१२। ७	१४।११	१५।५४	१७।२१	१८।४८	२०।२३	२२।१८	०।३०	२।५०	५। ८
२	७।२६	९।४६	१२। ३	१४। ७	१५।५०	१७।१७	१८।४४	२०।१९	२२।१४	०।२६	२।४६	५। ४
३	७।२२	९।४२	११।५९	१४। ३	१५।४६	१७।१३	१८।४०	२०।१५	२२।१०	०।२२	२।४२	५। ०
४	७।१८	९।३८	११।५५	१३।५९	१५।४२	१७। ९	१८।३६	२०।११	२२। ६	०।१८	२।३८	४।५६
५	७।१४	९।३४	११।५१	१३।५५	१५।३८	१७। ५	१८।३२	२०। ७	२२। २	०।१४	२।३४	४।५२
६	७।१०	९।३०	११।४७	१३।५१	१५।३४	१७। १	१८।२८	२०। ३	२१।५८	०।१०	२।३०	४।४८
७	७। ६	९।२६	११।४३	१३।४७	१५।३०	१६।५७	१८।२४	१९।५९	२१।५४	०। ६	२।२६	४।४४
८	७। २	९।२२	११।३९	१३।४३	१५।२६	१६।५३	१८।२०	१९।५५	२१।५०	०। २	२।२२	४।४०
९	६।५८	९।१८	११।३५	१३।३९	१५।२२	१६।४९	१८।१६	१९।५१	२१।४६	२३।५८	२।१८	४।३६
१०	६।५३	९।१३	११।३०	१३।३४	१५।१७	१६।४४	१८।११	१९।४६	२१।४१	२३।५३	२।१३	४।३१
११	६।४९	९। ९	११।२६	१३।३०	१५।१३	१६।४०	१८। ७	१९।४२	२१।३७	२३।४९	२। ९	४।२७
१२	६।४५	९। ५	११।२२	१३।२६	१५। ९	१६।३६	१८। ३	१९।३८	२१।३३	२३।४५	२। ५	४।२३
१३	६।४१	९। १	११।१८	१३।२२	१५। ५	१६।३२	१७।५९	१९।३४	२१।२९	२३।४१	२। १	४।१९
१४	६।३८	८।५८	११।१५	१३।१९	१५। २	१६।२९	१७।५६	१९।३१	२१।२६	२३।३८	१।५८	४।१६
१५	६।३४	८।५४	११।११	१३।१५	१४।५८	१६।२५	१७।५२	१९।२७	२१।२२	२३।३४	१।५४	४।१२
१६	६।३०	८।५०	११। ७	१३।११	१४।५४	१६।२१	१७।४८	१९।२३	२१।१८	२३।३०	१।५०	४। ८
१७	६।२५	८।४५	११। २	१३। ६	१४।४९	१६।१६	१७।४३	१९।१८	२१।१३	२३।२५	१।४५	४। ३
१८	६।२१	८।४१	१०।५८	१३। २	१४।४५	१६।१२	१७।३९	१९।१४	२१। ९	२३।२१	१।४१	३।५९
१९	६।१७	८।३७	१०।५४	१२।५८	१४।४१	१६। ८	१७।३५	१९।१०	२१। ५	२३।१७	१।३७	३।५५
२०	६।१३	८।३३	१०।५०	१२।५४	१४।३७	१६। ४	१७।३१	१९। ६	२१। १	२३।१३	१।३३	३।५१
२१	६। ९	८।२९	१०।४६	१२।५०	१४।३३	१६। १	१७।२७	१९। २	२०।५७	२३। ९	१।२९	३।४७
२२	६। ५	८।२५	१०।४२	१२।४६	१४।२९	१५।५६	१७।२३	१८।५८	२०।५३	२३। ५	१।२५	३।४३
२३	६। १	८।२१	१०।३८	१२।४२	१४।२५	१५।५२	१७।१९	१८।५४	२०।४९	२३। १	१।२१	३।३९
२४	५।५७	८।१७	१०।३४	१२।३८	१४।२१	१५।४८	१७।१५	१८।५०	२०।४५	२२।५७	१।१७	३।३५
२५	५।५३	८।१३	१०।३०	१२।३४	१४।१७	१५।४४	१७।११	१८।४६	२०।४१	२२।५३	१।१३	३।३१
२६	५।५०	८।१०	१०।२७	१२।३१	१४।१४	१५।४१	१७। ८	१८।४३	२०।३७	२२।५०	१।१०	३।२८
२७	५।४६	८। ६	१०।२३	१२।२७	१४।१०	१५।३७	१७। ४	१८।३९	२०।३३	२२।४६	१। ६	३।२४
२८	५।४२	८। २	१०।१९	१२।२३	१४। ६	१५।३३	१७। ०	१८।३५	२०।२९	२२।४२	१। २	३।२०
२९	५।३८	७।५८	१०।१५	१२।१९	१४। २	१५।२९	१६।५६	१८।३१	२०।२५	२२।३८	०।५८	३।१६
३०	५।३४	७।५४	१०।११	१२।१५	१३।५८	१५।२५	१६।५२	१८।२७	२०।२१	२२।३४	०।५४	३।१२
३१	५।३०	७।५०	१०। ७	१२।११	१३।५४	१५।२२	१६।४८	१८।२३	२०।१७	२२।३०	०।५०	३। ७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नवम्बर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	तुला	वृश्चिक	धनु:	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	७।४५	१०। ३	१२। ७	१३।५०	१५।१९	१६।४३	१८।१९	२०।१४	२२।२६	०।४६	३। ३	५।२१
२	७।४१	९।५९	१२। ३	१३।४६	१५।१५	१६।३९	१८।१५	२०।१०	२२।२२	०।४२	२।५९	५।१७
३	७।३७	९।५५	११।५९	१३।४२	१५।११	१६।३५	१८।११	२०। ६	२२।१८	०।३८	२।५५	५।१३
४	७।३३	९।५१	११।५५	१३।३८	१५। ७	१६।३१	१८। ७	२०। २	२२।१४	०।३४	२।५१	५। ८
५	७।२९	९।४७	११।५१	१३।३४	१५। ३	१६।२७	१८। ३	१९।५८	२२।१०	०।३०	२।४७	५। ५
६	७।२५	९।४३	११।४७	१३।३०	१४।५९	१६।२३	१७।५९	१९।५४	२२। ६	०।२६	२।४३	५। २
७	७।२१	९।३९	११।४३	१३।२६	१४।५५	१६।१९	१७।५५	१९।५०	२२। २	०।२२	२।३९	४।५७
८	७।१८	९।३६	११।४०	१३।२३	१४।५२	१६।१६	१७।५२	१९।४७	२१।५९	०।१९	२।३६	४।५४
९	७।१४	९।३२	११।३६	१३।१९	१४।४८	१६।१२	१७।४८	१९।४३	२१।५५	०।१५	२।३२	४।५०
१०	७।१०	९।२८	११।३२	१३।१५	१४।४४	१६। ८	१७।४४	१९।३९	२१।५१	०।११	२।२८	४।४६
११	७। ६	९।२४	११।२८	१३।११	१४।४०	१६। ४	१७।४०	१९।३५	२१।४७	०। ७	२।२४	४।४२
१२	७। २	९।२०	११।२४	१३। ७	१४।३६	१६। १	१७।३६	१९।३१	२१।४३	०। ३	२।२०	४।३८
१३	६।५८	९।१७	११।२०	१३। ३	१४।३२	१५।५६	१७।३२	१९।२७	२१।३९	२३।५९	२।१६	४।३४
१४	६।५४	९।१३	११।१६	१२।५९	१४।२८	१५।५२	१७।२८	१९।२३	२१।३५	२३।५५	२।१२	४।३०
१५	६।५०	९। ९	११।१२	१२।५५	१४।२४	१५।४८	१७।२४	१९।१९	२१।३१	२३।५१	२। ८	४।२६
१६	६।४७	९। ६	११। ९	१२।५२	१४।२१	१५।४५	१७।२१	१९।१६	२१।२८	२३।४८	२। ५	४।२३
१७	६।४३	९। २	११। ५	१२।४८	१४।१७	१५।४१	१७।१७	१९।१२	२१।२४	२३।४४	२। १	४।१९
१८	६।३९	८।५८	११। १	१२।४४	१४।१३	१५।३७	१७।१३	१९। ८	२१।२१	२३।४१	१।५७	४।१५
१९	६।३१	८।५४	१०।५७	१२।४०	१४। ९	१५।३३	१७। ९	१९। ४	२१।१७	२३।३७	१।५३	४।११
२०	६।३१	८।५०	१०।५३	१२।३६	१४। ५	१५।२९	१७। ५	१९। ०	२१।१३	२३।३३	१।४९	४। ७
२१	६।२७	८।४६	१०।४९	१२।३२	१४। १	१५।२५	१७। १	१८।५६	२१। ९	२३।२९	१।४५	४। ३
२२	६।२३	८।४२	१०।४५	१२।२८	१३।५७	१५।२१	१६।५७	१८।५२	२१। ५	२३।२५	१।४१	३।५९
२३	६।१९	८।३८	१०।४१	१२।२४	१३।५३	१५।१७	१६।५३	१८।४८	२१। १	२३।२१	१।३७	३।५५
२४	६।१५	८।३४	१०।३७	१२।२०	१३।४९	१५।१३	१६।४९	१८।४४	२०।५७	२३।१७	१।३३	३।५१
२५	६।११	८।३०	१०।३३	१२।१६	१३।४५	१५। ९	१६।४५	१८।४०	२०।५३	२३।१३	१।२९	३।४७
२६	६। ७	८।२६	१०।२९	१२।१२	१३।४१	१५। ५	१६।४१	१८।३६	२०।४९	२३। ९	१।२५	३।४३
२७	६। ३	८।२२	१०।२५	१२। ८	१३।३७	१५। १	१६।३७	१८।३२	२०।४५	२३। ५	१।२१	३।३९
२८	५।५९	८।१८	१०।२१	१२। ४	१३।३३	१४।५७	१६।३३	१८।२८	२०।४१	२३। २	१।१७	३।३५
२९	५।५५	८।१४	१०।१७	१२। ०	१३।२९	१४।५३	१६।२९	१८।२४	२०।३७	२२।५७	१।१३	३।३१
३०	५।५२	८।१०	१०।१४	११।५७	१३।२६	१४।५०	१६।२६	१८।२१	२०।३४	२२।५४	१।१०	३।२८

दिसम्बर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	वृश्चिक	धनु:	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	८। ५	१०। ९	११।५३	१३।२१	१४।४६	१६।२१	१८।१६	२०।२९	२२।४८	१। ६	३।२३	५।४३
२	८। १	१०। ५	११।४९	१३।१७	१४।४२	१६।१७	१८।१२	२०।२५	२२।४४	१। २	३।१९	५।३९
३	७।५७	१०। २	११।४५	१३।१३	१४।३८	१६।१३	१८। ८	२०।२१	२२।४०	०।५८	३।१५	५।३५
४	७।५३	९।५७	११।४१	१३। ९	१४।३४	१६। ९	१८। ४	२०।१७	२२।३६	०।५४	३।११	५।३१
५	७।४९	९।५३	११।३७	१३। ५	१४।३०	१६। ५	१८। ०	२०।१३	२२।३२	०।५०	३। ७	५।२७
६	७।४६	९।४९	११।३३	१३। १	१४।२६	१६। १	१७।५६	२०। ९	२२।२८	०।४६	३। ३	५।२३
७	७।४३	९।४६	११।३०	१२।५८	१४।२३	१५।५८	१७।५३	२०। ६	२२।२५	०।४३	३। ०	५।२०
८	७।३९	९।४३	११।२७	१२।५५	१४।२०	१५।५५	१७।५०	२०। ३	२२।२२	०।४०	२।५७	५।१७
९	७।३५	९।३९	११।२३	१२।५१	१४।१६	१५।५१	१७।४६	१९।५९	२२।१८	०।३६	२।५३	५।१३
१०	७।३१	९।३५	११।१९	१२।४७	१४।१२	१५।४७	१७।४२	१९।५५	२२।१४	०।३२	२।४९	५। ९
११	७।२७	९।३१	११।१५	१२।४३	१४। ८	१५।४३	१७।३८	१९।५१	२२।१०	०।२८	२।४५	५। ५
१२	७।२३	९।२७	११।११	१२।३९	१४। ४	१५।३९	१७।३४	१९।४७	२२। ६	०।२४	२।४१	५। १
१३	७।१९	९।२३	११। ७	१२।३५	१४। ०	१५।३५	१७।३०	१९।४३	२२। २	०।२०	२।३७	४।५७
१४	७।१५	९।१९	११। ३	१२।३१	१३।५६	१५।३१	१७।२७	१९।३९	२१।५८	०।१६	२।३३	४।५३
१५	७।१०	९।१४	१०।५८	१२।२६	१३।५१	१५।२६	१७।२१	१९।३४	२१।५३	०।११	२।२८	४।४८
१६	७। ६	९।१०	१०।५४	१२।२२	१३।४७	१५।२२	१७।१७	१९।३०	२१।४९	०। ७	२।२४	४।४४
१७	७। २	९। ६	१०।५०	१२।१८	१३।४३	१५।१८	१७।१३	१९।२६	२१।४३	०। ३	२।२०	४।४०
१८	६।५८	९। २	१०।४६	१२।१४	१३।३९	१५।१४	१७। ९	१९।२२	२१।४१	२३।५९	२।१६	४।३६
१९	६।५४	८।५८	१०।४२	१२।१०	१३।३५	१५।१०	१७। ५	१९।१८	२१।३७	२३।५५	२।१२	४।३२
२०	६।५०	८।५४	१०।३८	१२। ६	१३।३१	१५। ६	१७। १	१९।१४	२१।३३	२३।५१	२। ८	४।२८
२१	६।४६	८।५०	१०।३४	१२। २	१३।२७	१५। २	१६।५७	१९।१०	२१।२९	२३।४७	२। ४	४।२४
२२	६।४२	८।४६	१०।३०	११।५८	१३।२३	१४।५८	१६।५३	१९। ६	२१।२५	२३।४३	२। १	४।२०
२३	६।३८	८।४२	१०।२६	११।५४	१३।१९	१४।५४	१६।४९	१९। २	२१।२१	२३।३९	१।५६	४।१६
२४	६।३५	८।३९	१०।२३	११।५१	१३।१६	१४।५१	१६।४६	१८।५९	२१।१८	२३।३६	१।५३	४।१३
२५	६।३१	८।३५	१०।१९	११।४७	१३।१२	१४।४७	१६।४२	१८।५५	२१।१४	२३।३२	१।४९	४। ९
२६	६।२८	८।३२	१०।१६	११।४४	१३। ९	१४।४४	१६।३९	१८।५२	२१।११	२३।२९	१।४६	४। ६
२७	६।२४	८।२८	१०।१२	११।४०	१३। ५	१४।४०	१६।३५	१८।४८	२१। ७	२३।२५	१।४२	४। २
२८	६।२०	८।२४	१०। ८	११।३६	१३। १	१४।३६	१६।३१	१८।४४	२१। ३	२३।२१	१।३८	३।५८
२९	६।१६	८।२०	१०। ४	११।३२	१२।५७	१४।३२	१६।२७	१८।४०	२०।५९	२३।१७	१।३४	३।५४
३०	६।१३	८।१७	१०। २	११।२९	१२।५४	१४।२९	१६।२४	१८।३७	२०।५६	२३।१४	१।३१	३।५१
३१	६। ९	८।१३	९।५७	११।२५	१२।५०	१४।२५	१६।२०	१८।३३	२०।५२	२३।१०	१।२७	३।४७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जनवरी की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
१	८। ९	९।५३	११।२१	१२।४६	१४।२२	१६।१६	१८।२९	२०।४९	२३। ६	१।२४	३।४३	६। २
२	८। ५	९।४९	११।१७	१२।४२	१४।१८	१६।१२	१८।२५	२०।४५	२३। २	१।२०	३।३९	५।५७
३	८। २	९।४५	११।१३	१२।३८	१४।१४	१६। ८	१८।२१	२०।४१	२२।५८	१।१६	३।३५	५।५३
४	७।५७	९।४१	११। ९	१२।३४	१४।१०	१६। ४	१८।१७	२०।३७	२२।५४	१।१२	३।३१	५।४९
५	७।५३	९।३७	११। ५	१२।३०	१४। ६	१६। ०	१८।१३	२०।३३	२२।५०	१। ८	३।२७	५।४५
६	७।४९	९।३३	११। १	१२।२६	१४। २	१५।५६	१८। ९	२०।२९	२२।४६	१। ४	३।२३	५।४१
७	७।४५	९।२९	१०।५७	१२।२२	१३।५८	१५।५२	१८। ५	२०।२५	२२।४२	१। ०	३।१९	५।३७
८	७।४२	९।२६	१०।५४	१२।१९	१३।५५	१५।४९	१८। २	२०।२२	२२।३९	०।५७	३।१६	५।३४
९	७।३७	९।२२	१०।५०	१२।१५	१३।५१	१५।४५	१७।५८	२०।१८	२२।३५	०।५३	३।१२	५।३०
१०	७।३४	९।१८	१०।४६	१२।११	१३।४७	१५।४१	१७।५४	२०।१४	२२।३१	०।४९	३। ८	५।२६
११	७।३१	९।१५	१०।४३	१२। ८	१३।४४	१५।३८	१७।५१	२०।११	२२।२८	०।४६	३। ५	५।२३
१२	७।२७	९।११	१०।३९	१२। ४	१३।४०	१५।३४	१७।४७	२०। ७	२२।२४	०।४२	३। १	५।१९
१३	७।२४	९। ८	१०।३६	१२। १	१३।३७	१५।३१	१७।४४	२०। ४	२२।२१	०।३८	२।५८	५।१६
१४	७।२०	९। ४	१०।३२	११।५७	१३।३३	१५।२७	१७।४०	२०। ०	२२।१७	०।३५	२।५४	५।१२
१५	७।१७	९। २	१०।२९	११।५४	१३।३०	१५।२४	१७।३७	१९।५७	२२।१४	०।३२	२।५१	५। ९
१६	७।१३	८।५७	१०।२५	११।५०	१३।२६	१५।२०	१७।३३	१९।५३	२२।१०	०।२८	२।४७	५। ५
१७	७। ९	८।५३	१०।२१	११।४६	१३।२२	१५।१६	१७।२९	१९।४९	२२। ६	०।२४	२।४३	५। १
१८	७। ४	८।४८	१०।१६	११।४१	१३।१७	१५।११	१७।२४	१९।४४	२२। १	०।१९	२।३८	४।५६
१९	७। ०	८।४४	१०।१२	११।३७	१३।१३	१५। ७	१७।२०	१९।४०	२१।५७	०।१५	२।३४	४।५२
२०	६।५६	८।४०	१०। ८	११।३३	१३। ९	१५। ३	१७।१६	१९।३६	२१।५३	०।११	२।३०	४।४८
२१	६।५२	८।३६	१०। ४	११।२९	१३। ५	१४।५९	१७।१२	१९।३२	२१।४९	०। ७	२।२६	४।४४
२२	६।४८	८।३२	१०। ०	११।२५	१३। १	१४।५५	१७। ८	१९।२८	२१।४४	०। ४	२।२२	४।४०
२३	६।४३	८।२७	९।५५	११।२०	१२।५६	१४।५०	१७। ३	१९।२३	२१।४०	२३।५८	२।१७	४।३५
२४	६।३९	८।२३	९।५१	११।१६	१२।५२	१४।४६	१६।५९	१९।१९	२१।३६	२३।५४	२।१३	४।३१
२५	६।३५	८।१९	९।४७	११।१२	१२।४८	१४।४२	१६।५५	१९।१५	२१।३२	२३।५०	२। ९	४।२७
२६	६।३१	८।१५	९।४३	११। ८	१२।४४	१४।३८	१६।५१	१९।११	२१।२८	२३।४६	२। ५	४।२३
२७	६।२७	८।११	९।३९	११। ४	१२।४०	१४।३४	१६।४७	१९। ७	२१।२४	२३।४२	२। १	४।१९
२८	६।२३	८। ७	९।३५	११। ०	१२।३६	१४।३०	१६।४३	१९। ३	२१।२०	२३।३८	१।५७	४।१५
२९	६।१९	८। ३	९।३१	१०।५६	१२।३२	१४।२६	१६।३९	१८।५९	२१।१६	२३।३४	१।५३	४।११
३०	६।१५	७।५९	९।२७	१०।५२	१२।२८	१४।२२	१६।३५	१८।५५	२१।१२	२३।३०	१।४९	४। ७
३१	६।११	७।५५	९।२३	१०।४८	१२।२४	१४।१८	१६।३१	१८।५१	२१। ७	२३।२६	१।४५	४। ३

फरवरी की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः
१	७।५०	९।१९	१०।४३	१२।१९	१४।१४	१६।२६	१८।४६	२१। ४	२३।२१	१।४१	३।५८	६। २
२	७।४६	९।१५	१०।३९	१२।१५	१४।१०	१६।२२	१८।४२	२१। ०	२३।१७	१।३७	३।५४	५।५८
३	७।४३	९।१२	१०।३६	१२।१२	१४। ७	१६।१९	१८।३९	२०।५७	२३।१४	१।३४	३।५१	५।५५
४	७।३९	९। ८	१०।३२	१२। ८	१४। ३	१६।१५	१८।३५	२०।५३	२३।१०	१।३०	३।४७	५।५१
५	७।३६	९। ५	१०।२९	१२। ५	१४। ०	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२३। ७	१।२७	३।४४	५।४८
६	७।३२	९। १	१०।२५	१२। १	१३।५६	१६। ८	१८।२८	२०।४६	२३। ३	१।२३	३।४१	५।४४
७	७।२८	८।५७	१०।२१	११।५७	१३।५२	१६। ४	१८।२४	२०।४२	२२।५९	१।१९	३।३७	५।४०
८	७।२४	८।५३	१०।१७	११।५३	१३।४८	१६। ०	१८।२०	२०।३८	२२।५५	१।१५	३।३३	५।३६
९	७।२०	८।४९	१०।१३	११।४९	१३।४४	१५।५६	१८।१६	२०।३४	२२।५१	१।११	३।२९	५।३२
१०	७।१५	८।४४	१०। ८	११।४४	१३।३९	१५।५१	१८।११	२०।२९	२२।४६	१। ६	३।२४	५।२७
११	७।११	८।४०	१०। ४	११।४०	१३।३५	१५।४७	१८। ७	२०।२५	२२।४२	१। २	३।२०	५।२३
१२	७। ७	८।३६	१०। ०	११।३६	१३।३१	१५।४३	१८। ३	२०।२१	२२।३८	०।५८	३।१६	५।१९
१३	७। ३	८।३२	९।५६	११।३२	१३।२७	१५।३९	१७।५९	२०।१७	२२।३४	०।५४	३।१२	५।१५
१४	६।५९	८।२८	९।५२	११।२८	१३।२३	१५।३५	१७।५५	२०।१३	२२।३०	०।५०	३। ८	५।११
१५	६।५५	८।२४	९।४८	११।२४	१३।१९	१५।३१	१७।५१	२०। ९	२२।२६	०।४६	३। ४	५। ७
१६	६।५१	८।२०	९।४४	११।२०	१३।१५	१५।२७	१७।४७	२०। ५	२२।२२	०।४२	३। ०	५। ४
१७	६।४७	८।१६	९।४०	११।१६	१३।११	१५।२३	१७।४३	२०। १	२२।१८	०।३८	२।५६	४।५९
१८	६।४२	८।१२	९।३६	११।१२	१३। ७	१५।१९	१७।३९	१९।५७	२२।१४	०।३४	२।५२	४।५५
१९	६।३९	८। ८	९।३२	११। ८	१३। ३	१५।१५	१७।३५	१९।५३	२२।१०	०।३०	२।४८	४।५१
२०	६।३४	८। ३	९।२७	११। ३	१२।५८	१५।१०	१७।३०	१९।४८	२२। ५	०।२५	२।४३	४।४६
२१	६।३०	७।५९	९।२३	१०।५९	१२।५४	१५। ६	१७।२६	१९।४४	२२। १	०।२१	२।३९	४।४२
२२	६।२६	७।५५	९।१९	१०।५५	१२।५०	१५। २	१७।२२	१९।४०	२१।५७	०।१७	२।३५	४।३८
२३	६।२२	७।५१	९।१५	१०।५१	१२।४६	१४।५८	१७।१८	१९।३६	२१।५३	०।१३	२।३१	४।३४
२४	६।१८	७।४७	९।११	१०।४७	१२।४२	१४।५४	१७।१४	१९।३२	२१।४९	०। ९	२।२७	४।३०
२५	६।१४	७।४३	९। ७	१०।४३	१२।३८	१४।५०	१७।१०	१९।२८	२१।४५	०। ५	२।२३	४।२६
२६	६।११	७।४०	९। ४	१०।४०	१२।३५	१४।४७	१७। ७	१९।२५	२१।४२	०। ३	२।२०	४।२३
२७	६। ७	७।३६	९। १	१०।३६	१२।३१	१४।४३	१७। ३	१९।२१	२१।३८	२३।५८	२।१६	४।१९
२८	६। ३	७।३२	८।५६	१०।३२	१२।२७	१४।३९	१६।५९	१९।१७	२१।३४	२३।५४	२।१२	४।१५

ऊपर दिया गया समय प्रत्येक मास में प्रत्येक तारीख मे प्रत्येक लग्न के समाप्त होने का समय भारतीय स्टैण्डर्ड समय में घण्टा मिनटों में दिया गया है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ जन्म समय आदि विचार

ज्योतिष शास्त्र वेदों का मुख्य अंग है और षटशास्त्रों में सर्वोत्तम शास्त्र माना गया है। प्राचीन काल से लेकर आज के आधुनिक जेट व कम्प्यूटर युग तक इसकी महत्ता सदा मानी जाती रही है। इसका कारण यही है कि वह प्रत्यक्ष फल बतलाता है। चन्द्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण का समय, सूर्योदय, चन्द्रोदय का प्रत्येक स्थान, अक्षांश का समय, ऋतु परिवर्तन आदि अनेक विषय है जिनका गणित द्वारा निर्णय इस शास्त्र द्वारा ठीक-ठीक किया जाता है। ऐसा और कोई शास्त्र नही है जो भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों की बातों को ठीक-ठीक बतला सके। इसीलिये हमारी संस्कृति में इस शास्त्र को सब से ऊँचा स्थान दिया गया है। वेदों के समय से ही यह परम्परा रही कि चाहे सभी वेदों और अन्य शास्त्रों को पढ़ लेने पर जब तक ज्योतिष शास्त्र में पारगत नहीं होता था उसकी विद्या और ज्ञान अधूरा समझा जाता था। ज्योतिष शास्त्र के द्वारा सही भविष्य ज्ञात करने के लिये आवश्यक होता है कि जन्म का ठीक समय ज्ञात हो। आजकल छोटे-छोटे गांवों तक और साधारण से साधारण व्यक्ति के पास घड़ी उपलब्ध है और जन्म का ठीक समय जानना उतना कठिन नही रह गया है जितना अब से कुछ समय पहले हुआ करता था। फिर भी बहुत सी ऐसी परिस्थितियां होती हैं जब जन्म का ठीक समय नोट नहीं हो पाता था ज्योतिषी के पास पुरानी पत्री बनने को आती है। और बनवाने वाला लगभग समय बतालाता है। इस कारण ज्योतिष शास्त्र में बहुत सी ऐसी बातें बताई गई हैं जिनकी सहायता से ठीक लग्न का निर्णय करने मे सहायता मिलती है। दिन-रात के चौबीस घंटों में बारह लग्न क्षितिज पर निकल जाते हैं और एक लग्न लगभग दो घंटे होता है। कोई लग्न दो घंटे से कुछ कम कोई दो घंटे से कुछ ज्यादा। वर्ष भर की दैनिक लग्न सारणी दिल्ली नगर की पंचांग में दे दी गई है और इस की सहायता से अन्य नगरों में प्रत्येक लग्न का आरम्भ व समाप्ति काल निकालना भी बता दिया गया है। मान लो कोई व्यक्ति आपको बताता है कि बालक का जन्म रात में दिन निकलने से २-३ घंटे पहले हुआ था तो इसी अवस्था में आपको २ या ३ लग्नों में से एक लग्न का निर्णय करना पड़ेगा। तब जिस लग्न की बातें सबसे अधिक मिलें वही सही लग्न समझना चाहिये। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि घड़ी में ठीक समय देख कर ही जन्म समय नोट किया है। परन्तु घड़ी कुछ धीमी-तेज गति से चलने के कारण थोड़ा-बहुत गलत समय भी बता सकती है और संयोग से जन्म समय के आस-पास ही लग्न का समाप्ति काल भी हो तो उस समय भी सही लग्न का निर्णय करने में निम्न जानकारी बहुत सहायक होवी है। मान लो १२ नवम्बर रात के २-१५ का जन्म है और उस तारीख को सिंह लग्न २-२० पर समाप्त हो रही हो तो सिंह और कन्या दोनों लग्नों की विशेषताओं पर विचार करके ही आप को निर्णय करना पडेगा।

पितृ परोक्ष ज्ञान-- सब से पहले आप पता कीजिये कि बालक के जन्म समय पिता घर पर था या नहीं। घर से यहां तात्पर्य जन्म स्थान से है। जन्म यदि किसी अस्पताल, नर्सिंग होम में हुआ हो तो उस स्थान से है। लग्न पर चन्द्रमा की पूर्ण या अपूर्ण (एक पाद, दो पाद आदि) दृष्टि है तो पिता घर पर ही होना चाहिये। सूर्य आठवां, नौवां, ग्यारहवां या बारहवां है (लग्न से) तो पिता घर पर नहीं होता। लग्न से ८वां, ९वां, ११वें, १२वें भाव में जिस में सूर्य पडा हो वह राशि यदि चर राशि है तो पिता दूसरे देश में होना चाहिये। सूर्य इन भावों में स्थिर राशि का हो तो देश में ही होना चाहिये। सूर्य ८, ९, १०, १२वें ऐ से किसी भी भाव में हो और सूर्य की राशि द्विस्वाभाव राशि हो तो पिता घर की ओर मार्ग में होता है। इन सभी योगों में लग्न पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो पिता घर में ही होता है बाहर नहीं। शनि लग्न में हो या मंगल सातवें स्थान में हो, या बुध-शुक्र चन्द्रमा से दूसरे या बारहवें स्थान में हो अर्थात् बुध-शुक्र में से कोई एक-दूसरे में हो, दूसरा बारहवें स्थान में हो, तो भी पिता को घर पर न होना ही ज्ञात होता है। बुध-शुक्र के इस योग में अंशों से भी विचार होता है। चाहे तीनों एक ही राशि में हों या दो राशियों में परन्तु एक के अंश चन्द्रमा से कम दूसरे के अधिक हों तो भी चन्द्रमा दोनों के मध्य ही समझा जाता है। जैसे चन्द्रमा के किसी राशि में १५ अंश, बुध के ८ अंश और शुक्र के २५ अंश हों तो यह कर्तरी योग बन जाता है।

चिन्ह ज्ञान - बहुधा बालक के शरीर पर आये चिन्ह तिल, भोंरी, लहसन, मसा आदि से भी लग्न का निर्णय करने मे सहायता मिलती है। जन्म कुण्डली में लग्न से १, ५, ६, या ९वें स्थान में सूर्य हो तो भुजा में कोई चिन्ह होता है। यदि लग्न में सूर्य और शनि दोनों हों, दूसरे भाव में मंगल और केन्द्र (१, ४, ७, १०) में चन्द्रमा हो तो बालक की छः उँगलियां होती हैं। जो ग्रह बलवान होता है उसी के अनुसार चिन्ह भी आते हैं। सूर्य सिर में, मस्तक पर, चन्द्रमा मुख, मंगल गले में, बुध छाती में, गुरु नाभि व पेट पर, शुक्र पीठ व जांघ पर, शनि, राहु, केतु पेट, होंठ, दांतों पर चिन्ह पैदा करते हैं। सप्तम भाव में गुरु या लग्न में राहु व गुरु दोनों हों और अष्टम में पाप ग्रह शनि, मंगल, राहु आदि हों, या लग्न में शुक्र तथा अष्टम में पाप ग्रह हो तो बाईं भुजा पर तिल, मसा, लहसन आदि का चिन्ह होता है। लग्न से ३।६ या ११वें स्थानों में मंगल हो या बारहवें भाव में मंगल-शुक्र दोनों हों तो बाईं बगल में तिल आदि चिन्ह होता है। लग्न में शुक्र और सातवें राहु हो तो माथे पर या बांये कान पर चिन्ह होता है। लग्न में मंगल हो, ५।६ स्थानों में शनि हो और ११।१२ में शुक्र हो तो गुदा या लिंग (योनि) के समीप तिल आदि चिन्ह होता है। ५ या ६ठे स्थान में शनि हो, ८वां बुध या लग्न में गुरु और ४था शनि हो तो पेट पर चिन्ह होता है। दूसरा शुक्र, तीसरा मंगल या आठवां सूर्य कमर पर चिन्ह लाता है। चौथा शुक्र या राहु, लग्न में मंगल या शनि बांये पैर पर १२वां गुरु, दूसरा चन्द्रमा, ३, ६, ११वां बुध गुदा के समीप गोल चिन्ह या व्रण आदि उत्पन्न करता है। छठे भाव का स्वामी ग्रह पाप ग्रहों के साथ लग्न या सातवें घर में हो तो शरीर में फोड़े-फुंसी होते हैं। लग्न में मंगल, सप्तम में गुरु या शुक्र हो तो सिर में चोट या फोडा-फुंसी का चिन्ह हो सकता है। लग्न में मंगल, शुक्र, चन्द्रमा साथ हो तो दूसरे या छठे वर्ष में सिर में चिन्ह होने की आशंका होती है। मंगल चन्द्र से व्रण और शुक्र चन्द्र से तिल होते हैं।

अन्तरिक्ष जन्म ज्ञान-- बालक का जन्म भूमि पर हुआ है या ऊँचे स्थान पर हुआ है? मकान की पहली मंजिल भूमि और दूसरी तथा ऊपर की मंजिलों को अंतरिक्ष कहा जाता है। जन्म लग्न मिथुन, कन्या, धनु या मीन हों तो अन्तरिक्ष या ऊँचे स्थान पर जन्म समझना।

बालक का रोदन ज्ञान—जन्म समय मेष, मिथुन, सिंह, धनु लग्न हों तो बालक ने पैदा होते ही जल्दी रोना आरम्भ कर दिया ऐसा जानना। कन्या, तुला, कुम्भ लग्न हो तो बालक धीरे मन्द स्वर में रोया, अन्य लग्नों में बालक देर से रोया हो ऐसा जानना चाहिये। आप जानते हैं कि जन्म कुंडली में दो कुंडली बनती हैं, एक लग्न कुंडली दूसरी राशि कुंडली। इन में जौन सी ज्यादा बलवान हो उसी का फल कहना चाहिये। लग्न बलवान हो तो लग्न के अनुसार और राशि बलवान हो तो राशि के अनुसार फल कहना चाहिये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्नेश लग्न को देखता हो लग्नेश स्वग्रही उच्च मित्र क्षेत्री हो, लग्न को शुभ ग्रह देखता हो तो लग्न बलवान होती है इसी प्रकार राशि भी बलवान होती है ।

उपसूतिका ज्ञान—प्रसव के समय मुख्य डाक्टर या डाक्टरनी के अतिरिक्त कितनी नर्स या अन्य स्त्रियां उस समय उपस्थित थीं इसका ज्ञान करने के लिये यह देखना चाहिये कि लग्न में या लग्नेश के साथ और इनके यानी लग्न के व लग्नेश के दूसरे व १२वें स्थान में जितने ग्रह हों उतनी ही उपसूतिकायें जाननी चाहिये । अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य जितने ग्रह हों उतनी संख्या जानना चाहिये । लग्न से सप्तम स्थान तक अदृश्य और सप्तम से लग्न तक दृश्य होता है । अतएव सप्तम से लग्न तक जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिकायें प्रसूतिका माता के पास और लग्न से सप्तम तक जितने ग्रह हों उतनी घर के बाहर होती है । अस्पतालों में जिस कमरे में प्रसव हो उसे मुख्य घर समझना चाहिये । उस कमरे में प्रसव समय पर उपस्थित नर्सें आदि प्रथम कोटि में और जो बाहर आ जा रही हों वह दूसरी कोटि में समझनी चाहिये । गावों में जहां प्रसव घर हो वहां आस-पडोस की स्त्रियों की गिनती भी साथ ही की जाती है । उपसूतिकाओं के वर्ण, जाति, आयु का विचार ग्रहों के अनुसार ही करना । उच्च तथा वक्री ग्रहों की संख्या को ३ से गुणा कर के तथा स्वराशि स्वनवांश, स्वद्रेष्काण के ग्रहों को दुगना करके और नीच तथा अस्त ग्रहों की संख्या को आधा करके संख्या ज्ञात करनी होती है ।

शिर पाद प्रसव ज्ञान—बच्चे का जन्म सिर से हुआ है या पैर से इसको जानने के लिये देखो कि यदि ३।५।६।७।८।११ राशियों में या इन राशियों के नवांश में जन्म हुआ है तो सिर से प्रसव जानना । यह शीर्षोदय राशियां है । इनके अतिरिक्त अन्य १।२।४।९।१० ।१२ पृष्ठोदय राशियां है । इनमें या इनके नवांश में जन्म हो तो पैरों से प्रसव जानना । मीन राशि में या मीन के नवांश में जन्म हाथों से होता है । यानी पहले हाथ बाहर आते हैं । पैर पहले बाहर आयें तो पैरों से प्रसव और सिर पहले आये तो सिर से प्रसव कहा जाता है ।

सूतिका ग्रह द्वार ज्ञान—सूतिका ग्रह या अस्पताल, नर्सिंग होम आदि के उस कमरे का जिसमें प्रसव हुआ हो द्वार किस दिशा की ओर है इसके ज्ञान के लिए देखो कि केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा कौन सी है । यदि केन्द्र में कई ग्रह हों तो सबसे बलवान ग्रह की दिशा के अनुसार और कोई ग्रह केन्द्र में नहीं हो तो लग्न की राशि की दिशा बताना चाहिये ।

पुरुष शरीर में सूर्यादि ग्रहों का अधिकार—सिर व मुख प्रदेश में सूर्य का, छाती गले में चन्द्रमा का, पीठ, पेट में मंगल का, हाथ व पैरों में बुध का, कमर व जांघ में गुरु (बृहस्पति) का, जननेन्द्रिय व वृषणों में शुक्र का, घुटने (जानु), पेड़ (ऊरु) में शनि का अधिकार होता है । जन्म समय, प्रश्न समय गोचर में जब-जब वह ग्रह अनिष्ट कारक होते हैं तब-तब अपने अधिकार प्रदेश के अंगों को ही कष्ट पहुंचाते हैं ।

मेषादि राशियों का अंग विभाग—मेष राशि का स्थान सिर में, वृष का मुख, मिथुन दोनों भुजायें, कर्क हृदय प्रदेश, सिंह उदर, कन्या कमर, तुला वस्ति (मूत्राशय), वृश्चिक जननेन्द्रियां, धनु दोनों जंघायें, मकर दोनों घुटने, कुम्भ दोनों पिंडलियां और मीन राशि से दोनों पैरों (पादों) का विचार किया जाता है । इसी प्रकार प्रथम भाव लग्न से सिर, दूसरे भाव से मुख, तीसरे से भुजा, चौथे से हृदय, पांचवें से पेट, छठे से कमर, सातवें से वस्ति, आठवें से गुह्येन्द्रिय, नवम से ऊरु, दशम से जानु, ग्यारहवें से जंघा और बारहवें भाव से पैरों का विचार करते हैं । उपरोक्त बारह राशियों अथवा बारह भावों में शुभ-अशुभ ग्रहों की स्थिति दृष्टि आदि से तत्सम्बन्धी अंगों के स्वस्थ या पीड़ित रहने का विचार किया जाता है ।

लग्नों के अनुसार प्रत्येक लग्न के अलग-२ लक्षण इस प्रकार होते हैं ।

अथ प्रसूति लग्न विचार

मेष—सूतिका गृह—(वह स्थान जहाँ बच्चा पैदा होता है, अस्पताल, नर्सिंग होम, घर आदि) । इमारत पुरानी, मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर, चारपाई, बैंड, पलंग जिस पर प्रसविनी माता को लिटाया गया उसका सिर पूर्व दिशा की ओर, माता ने लाल रंग के वस्त्र पहने हुए थे, प्रसव से पहले मीठा भोजन किया था । प्रसव में कष्ट अधिक हुआ, जन्म भूमि पर हुआ (यदि इमारत में कई मंजिलें हों तो सबसे नीचे की मंजिल भूमि की सतह पर समझें) प्रसव बाद बालक अधिक रोया । उपसूतिका १ या ३, बालक के मुख का रंग श्यामता पर, नेत्र भूरे, प्रकृति वात श्लेष्म, कद छोटा, शरीर मजबुत, वाणी चंचल, कष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८, उपाय गौदान, तुलादान, मृत्युंजय जप आदि, आयु १०० वर्ष ।

नोट—कष्ट वर्षों में शरीर कष्ट की आशंका होती है उपाय करने से कष्ट टल जाता है । चन्द्रमा पर बृहस्पति या शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आयु पूर्ण होती है । वैद्यक शास्त्र के अनुसार प्रकृति तीन प्रकार की होती है वात, पित्त, कफ । श्लेष्म कफ को ही कहते है ।

वृष—माता का सिर दक्षिण में, सूतिक घर नया, द्वार दक्षिण में, माता ने सफेद वस्त्र पहने हुए हों और प्रसव से पहले सूखा साग आदि खाया हो, अधोमुख होकर पैरों से प्रसव, बालक ऊंचे स्वर से रोया, उपसूतिका ३ या ४, दीपक (या बत्ती लाइट) उत्तर में, बालक का रंग गोरा, स्वरूप सुन्दर, प्रकृति रक्त, पित्तकष्ट वर्ष १।२।८।३३।४४।६१, कष्ट निवारण के लिए उपाय अन्नदान, ब्राह्मण भोजन, मृत्युंजय जप आदि । उपरान्त आयु ९० वर्ष । आजकल बच्चा पेट में उल्टा या टेढ़ा हो जाता है तो आपरेशन से प्रसव करते हैं । वह इसी श्रेणी में समझना चाहिए ।

मिथुन—माता का सिर पश्चिम में, मकान नया, द्वार पश्चिम में, माता के कपड़े पीले रंग के, प्रसव से पहले नमकीन भोजन किया हो, माता के दाहिने अंग में कोई चिन्ह, जन्म अन्तरिक्ष (छत पर) या ऊपर की मंजिलों में, सिर से प्रसव, रोना उच्च लम्बे स्वर में, उपसूतिका ३ या ५, स्तनों में दूध कम, देर से उतरे, बालक के नेत्र रोग युक्त, प्रकृति बलगमी, स्वभाव चंचल, अग्निमन्द (हाजमा मन्दा), बुद्धि विलक्षण, प्रसव से पहले माता को कुछ ज्वर आदि हुआ हो । कष्ट वर्ष ४।१०।१४।३८।५८, उपाय शिवार्चन, मृत्युंजय जप होम आदि । उपरान्त आयु ८६ वर्ष ।

कर्क—प्रसव के समय माता का सिर उत्तर में, मकान नया, मकान का या उस कमरे का जिस में प्रसव हुआ हो द्वार उत्तर में, माता ने पुराने सफेद या लाल रंग के वस्त्र पहने हुये हों, पिता क्लेश में परेशानी में हो, प्रसव कष्ट अधिक, माता ने मधुर, शीतल (मीठा ठंडा) भोजन किया हो, भूमि पर जन्म पैर से प्रसव, रोदन शब्द दीर्घ, बालक जोर से रोया, उपसूतिका ४ या ५, बालक के वामांग में चिह्न, बालक का सिर मोटा, आंखें चंचल, प्रकृति वात, कफ, रंग गोरा, कद लम्बा, शरीर कोमल, कष्ट वर्ष ५। २५। ४०। ४८। ६२ उपाय छायापात्र, तुलादान, मृतसंजीवनी मंत्र का जप । उपरान्त आयु १०० वर्ष ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सिंह—माता का सिर पूर्व में, मकान नया, द्वार पूर्व को, माता के वस्त्र लाल या चित्र-विचित्र भोजन के साथ शाक-भाजी व खट्टी चीज खाई हो, भूमि पर जन्म, रोदन स्वर दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, बालक की पीठ पर चिन्ह, केश घने, नाक लम्बी, कद छोटा, शरीर कोमल, रंग गोरा, हठीला, चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ, पित्त। कष्ट कारक वर्ष ५।१३।२८।३६।४८, उपाय सूर्य पूजन, आदित्य हृदय का पाठ, अपूपान्न दान (मीठे माल पूये आदि) उपरान्त आयु ८३ वर्ष।

कन्या—माता का सिर उत्तर, प्रसव स्थान घर के दक्षिण भाग में, पिता घर से बाहर गया हो, छत पर ऊँची जगह पर जन्म, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५, भुजा में साधारण भूषण, बालक का रंग गोरा, गले व जांघ में चिन्ह, कष्ट कारक वर्ष ४।१६।२३।३६।५५, उपाय मुदगान्न दान, गोदान, मृत्युंजय जप, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

तुला—माता क सिर पश्चिम में, मकान कुछ नया, प्रसूतिका गृह पश्चिम भाग में, माता के बाल साधारण सफेद, प्रसव कष्ट ज्यादा, पिता क्लेश-परेशानी में, माता ने प्रसव से पहले कुछ खा कर ठंडा पानी पिया हो, घर में कुछ लड़ाई-झगड़ा हुआ हो, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज धीमी, उपसूतिका २ या ५, वहां एक कन्या भी हो, दीपक हाथ में उठाया हो या लाइट बल्ब ऊंचा लटका हो, बालक का रंग जरदी पर, बदन में फोड़े-फुंसी, शरीर दुबला, कष्ट वर्ष ८।१५।२१।२५।५२।५४, उपाय गोदान, तन्दुल दान, नवग्रह पूजन, होम से शान्ति तदुपरान्त आयु ८५ वर्ष।

वृश्चिक—माता का सिर दक्षिण या उत्तर में, मकान पुराना, द्वार उत्तर में, माता के बाल लाल या जला हुआ, प्रसव कष्ट अधिक साधारण, भोजन, माता कुछ क्रोध में, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज आधी दबी हुई, उपसूतिका ४ या ५, पिता क्लेश परेशानी में, बालक के केश लम्बे, काले पीठ पर चिन्ह, गले में पीड़ा, रंग गौर, श्याम बीच का, प्रकृति रक्त-पित्त, कष्ट वर्ष ११।२८।३८।५२।६२ उपाय तुलादान, मृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

धनु—माता का सिर पूर्व दिशा की ओर, प्रसूति स्थान घर के दक्षिण भाग में, द्वार पूर्व में, मकान नया, माता के वस्त्र लाल या बसन्ती, माता ने पका हुआ भोजन करके जल पिया हो, जन्म ऊंचे स्थान पर या छत पर, रोने का स्वर काफी ऊँचा, उपसूतिका १ या ५, बालक का रंग गोरा, आकृति सुन्दर, नेत्र विशाल, सिर ऊँचा, हृदय पर चिन्ह, कष्ट वर्ष २।१०।१८।३१।३८।४२, उपाय कष्ट वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, तदुपरान्त आयु ८१ वर्ष।

मकर—माता सिर दक्षिण में, मकान पुराना, दरवाजा उत्तर या दक्षिण की ओर, प्रसूति स्थान पश्चिम भाग में, वस्त्र मैले फटे पुराने, माता ने शाक-सब्जी के साथ भोजन कर के ठंडा पानी पिया हो, भूमि पर जन्म, कुछ देर बाद बालक धीरे स्वर से रोया, उपसूतिका १ या ५, बालक के केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊँचा, रंग श्याम, कष्ट वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७, उपाय रुद्राभिषेक, स्वर्ण दान, तैल, माषान्न दान, छायापात्र दान, उपरान्त आयु ९५ वर्ष।

कुम्भ—माता का सिर पश्चिम में, मकान का अधिकांश भाग पुराना, प्रसूतिका घर दक्षिण-पश्चिम में, द्वार पूर्वोत्तर में, माता के वस्त्र कुछ काले मैले, पुराने, कम्बल ओढ़ा हो, मामूली कसैला चटपटा भोजन किया हो, पिता घर पर नहीं हो, भूमि पर जन्म के काफी देर बाद बलक थोड़ा सा रोया, उपसूतिका ३ या ४, बालक के होठ मोटे, मस्तक लम्बा, प्रकृति गर्म, कद नाटा, नेत्र में रोग, कष्ट वर्ष २।२८।३३।४८।६४, उपाय तुला दान, महिषि दान, मृत्युंजय जप उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मीन—माता का सिर उत्तर में, मकान का कुछ हिस्सा पुराना, प्रसूति गृह उत्तर में, द्वार दक्षिण को, माता के वस्त्र मैले बसन्ती रंग के, पिता घर पर, जन्म ऊँचे स्थान पर, बालक जन्म के बाद देर से रोया, माता ने प्रसव से पहले ठण्डा जल पिया हो, उपसूतिका पहले, पीछे ३ या ५, पलंग का पाया टूटा हुआ, बालक का रंग गोरा, नाक चपटी, आँख भूरी, सिर ऊँचा, बाल कपिल, प्रकृति बल्गमी, कष्ट वर्ष १।८।१३।३६।४८, उपरान्त आयु ८३ वर्ष, उपाय मोदकान्न दान, गोदान, ग्रह शान्ति मृत्युंजय जप।

प्रत्येक लग्न के—विषय में जो सूचनायें दी गई हैं वे साधारण, सामान्य रूप से ठीक मिलती हैं। परन्तु ग्रहों के अन्य योगों से उन में अन्तर भी आ सकता है। ग्रह योगों का जो प्रभाव पड़ता है उनके विषय में संक्षेप में इससे पहले विचार किया है उस पर भी ध्यान देना चाहिये। कभी-कभी ऐसा होता है कि जन्म समय के बारे में निश्चित रूप से ठीक सूचना नहीं मिलती और जो समय बताया होता है उस के आस-पास ही लग्न का आरम्भ या समाप्ति काल होता है तब उपरोक्त लक्षणों के आधार पर ही ठीक लग्न का निर्णय करना होता है। जिस लग्न के लक्षण, चिन्ह आदि अधिक मिलें वही लग्न ठीक समझनी चाहिये। इसको और स्पष्ट करने के लिये २-१ उदाहरण देकर समझाना ठीक होगा। मान लो किसी ने बताया कि १२ नवम्बर को रात के बारह बजे के आस-पास का जन्म है। लग्न सारणी में देखने पर ज्ञात हुआ कि १२ नवम्बर को १२ बज कर ३ मिनट तक कर्क लग्न है और उस के बाद सिंह लग्न है। अब आप कर्क और सिंह दोनों लग्नों के लक्षणों, चिन्हों का मिलान कीजिये और जिस लग्न की बातें ज्यादा मिलें वही लग्न निर्धारित कर दीजिये।

बालारिष्ट—जन्म लग्न में चन्द्रमा छठे, आठवें या बारहवें घर में हो और उस पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक के जीवन को संकट होता है। यदि इस प्रकार के चन्द्रमा को शुभ ग्रह देख रहे हों तो संकट टल जाता है। ६।८।१२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उन पर क्रूर ग्रहों या वक्री ग्रहों की दृष्टि हो, लग्न में कोई शुभ ग्रह न हो, लग्न को या लग्नेश को कोई शुभ ग्रह नहीं देखता हो तो बालक को अल्पायु योग होता है। जिस कुण्डली में पंचम स्थान में सूर्य, मंगल व शनि तीनों हों उस बालक को, उसकी माता को, उसके भाई को, तीनों को ही कष्ट प्रदान करते हैं। १०वां शनि, ६ठा चन्द्रमा और १०वां मंगल, तीनों ग्रहों का इस प्रकार का योग भी बालक तथा माता दोनों को अपार कष्ट प्रदान करता है। लग्न में शनि, आठवां चन्द्रमा, तीसरा बृहस्पति—इस प्रकार से ग्रहों का योग हो तो वह भी बालक को महान कष्ट कारक होता है। अल्पायु योग माना जाता है। बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह हो तो कष्ट ही देता है। परन्तु सूर्य, चन्द्र, शुक्र व राहु हों तो विशेष रूप से अरिष्ट दायक होते हैं। लग्न के १२वें तथा दूसरे भाग में क्रूर ग्रह होने से अशुभ कर्तरी योग बनता है। अर्थात लग्न दुष्ट ग्रहों के बीच में आ जाने से कष्ट दायक हो जाती है। लग्न में दूसरे भाव में, छठे, आठवें, बारहवें भाव में क्रूर ग्रहों का होना अरिष्ट बताता है।

अरिष्ट भंग योग—बुध, बृहस्पति, शुक्र इन शुभ ग्रहों से कोई भी एक, दो या तीनों १।४।७।१० केन्द्र स्थानों में हों या लग्न में गुरु स्वग्रही उच्च क्षेत्री बलवान हो कर पड़ा हो या लग्नेश बलवान् हो कर केन्द्र में हो, या शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो और लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो अथवा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और लग्न शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हो। इन पाँचों योगों में से कोई भी एक या अधिक योग हो तो वह उपरोक्त सभी अरिष्ट योगों, अल्पायु योगों को भंग कर देता है। समाप्त कर देता है।

माता-पिता को अरिष्ट योग—सूर्य से पिता का तथा चन्द्रमा से माता का विचार किया जाता है। सूर्य के साथ पाप ग्रह बैठे हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ गया हो या सूर्य पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो, अथवा सूर्य से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रह हों और शुभ ग्रह न हों तो पिता को कष्ट दायक होते हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा के साथ यह अरिष्ट योग माता को कष्ट कारक होते हैं, जैसे - चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह चन्द्रमा से २।१२वें भाव में पाप ग्रह चन्द्रमा पर पाप ग्रहों की दृष्टि चन्द्रमा से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रहों की स्थिति शुभ ग्रहों की अनुपस्थिति माता को कष्ट देने वाली होती है।

प्रसव दोष—चैत्र मास में कुतिया प्रसव करे, वैसाख में ऊँटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, आषाढ़ में गधी, श्रावण में घोड़ी, भाद्रपद में गाय, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस प्रसूत हो तो प्रसूतिका को तथा उसके स्वामी को कष्ट कारक होती है। सभी प्रकार के अरिष्ट योगों की शान्ति के लिये दान, जप, हवन, शान्ति पाठ, पुण्याहवाचन आदि अनुष्ठान करा देना चाहिये।

त्रिखल दोष—तीन पुत्रों के बाद कन्या अथवा तीन कन्याओं के बाद पुत्र हो तो त्रिखल दोष होता है। यह माता-पिता को कष्ट कारक, धन हानि कारक होता है। इस के लिये त्रिखल शान्ति अनुष्ठान करा देना चाहिये।

दन्तोत्पत्ति फल—बालक दांतों सहित जन्म ले तो माता-पिता को महा अरिष्ट दोष होता है। प्रथम दांत नीचे की पंक्ति में आना चाहिये, यदि ऊपर की पंक्ति में प्रथम दांत उत्पन्न हो तो मातुल पक्ष को भय दायक होता है। दांत ६ महीने से पहले आना ठीक नहीं होते। प्रथम मास में शरीर कष्ट, द्वितीय में छोटे भाई को, तीसरे में बहन को, चौथे में बड़े भाई को, पांचवें में बड़े बन्धु जनों को कष्ट कारक होते हैं। छठे में बहुत भाग्य शाली, ७वें में पिता को भाग्य वर्धक, ८वें में शरीर पुष्टि कारक, ९वें में धनवान, १० वें में सुखी ११वें में महा सुखी, १२ वें में महा धनी बनाते हैं।

एक नक्षत्र जात फल—पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-कन्या, पिता-कन्या या दो भाई एक ही नक्षत्र में जन्में तो दोनों को ही महान् कष्ट दायक माने गये हैं। नक्षत्रों में, चरण में, तथा राशि में भेद हो तो कुछ कम कष्ट दायक होते हैं। अरिष्ट निवारण के लिये स्वर्ण दान, शान्ति पाठ, जप, हवन आदि कर्म अवश्य करा देना चाहिये।

गण्डमूल के नक्षत्र

अश्विनी	अश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

उपरोक्त नक्षत्र गण्डमूल नक्षत्र होते हैं। इन में जन्मा बालक माता-पिता, अपने कुल या अपने शरीर को कष्ट कारक होता है। इस के विपरीत यदि संकट समाप्त हो जाय तो अपार धन, वैभव, ऐश्वर्य, वाहनादि का स्वामी भी होता है। शास्त्रानुसार तो उचित यही समझा जाता है कि २७ दिन तक पिता को ऐसे बालक का मुख नहीं देखना चाहिये। मूल शान्ति कराने के बाद ही दान, हवन, पूजा आदि करा कर २७ दिन बाद ही मुख देखें। परन्तु यह तभी उचित है जब बालक पिता को कष्ट दायक हो या अभुक्त मूल में उत्पन्न हो। २७ दिन बाद वही नक्षत्र जब फिर आये तब पुरोहित द्वारा मूल शान्ति करा यथा सम्भव दानादि करके ही प्रसूति स्नान शुद्धि कराई जानी चाहिये।

जन्म मास जन्म लग्न के अनुसार मूल का निवास कहाँ है तक उसका क्या फल होता है यह नीचे के चक्र में दिया है :

मूल निवास चक्र

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चै. श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूल निवास स्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

नक्षत्रों के चरणों और जन्म समय के अनुसार जो फल होता है वह नीचे के चक्र में दिया है :

अथ मूला-श्लेषा—पाद फल

मूल पाद फल		अश्लेषा पाद फल		समय फल	
चरण	फल	चरण	फलम्	समय	फल
१	पितृ-नाश	१	शांति से शुभ	दिन में	पिता को भय
२	मातृ-नाश	२	धन-नाश	सन्ध्या में	स्व-शरीर भय
३	धन-नाश	३	मातृ-नाश	रात्रि	माता को भय
४	शांति से शुभ	४	पितृ-नाश		

प्रत्येक नक्षत्र लगभग ६० घटी का मान कर मूल नक्षत्र को एक वृक्ष की उपमा दी गई है और उसकी घटियों के अनुसार उसके मूल आदि विभाग किये गये हैं। बालक का जन्म जिस विभाग में हो उसी के अनुसार फल बताये गये हैं। जैसे प्रथम ७ घटी मूल (जड़), अगली ८ घटी स्तम्भ (तना) उसकी अगली १० त्वचा (छाल) आदि। मूल नक्षत्र में जन्म हो तो निम्न चक्र से फल देखें :

मूलजनन वृक्ष विभाग

मूले	स्तम्भे	त्वचायां	शाखायां	पत्रे	पुष्पे	फले	शिखायां	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घट्यः
मूल नाशः	वंश-नाशः	मातृ-क्लेशः	मातुल नाशः	मंत्री पदम्	मंत्री पदम्	विपुल-लाभः	अल्पजीवी	फलम्

इसी प्रकार नक्षत्र को पुरुष मान कर उस की घटियों को पुरुष के अंगो में स्थापित करके तदनुसार फल प्रतिपादन किया जाता है। यथा प्रथम ५ घटी में जन्म हो तो मूर्ध्नि-फल-राजा राजसी ठाट-बाट उपरान्त ७ घटी मुख संज्ञा-फल पिता को कष्ट आदि-आदि ! बालक के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखें। मूल नक्षत्र में जन्मे बालक के लिये :

अथ मूल पुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुखे	स्कंधे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जानुनि	पादे	स्थानं
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घट्यः
राजा	पि मृ	नम्री	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	कामी	मतिमान्	मतिमान्	फलम्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मूल नक्षत्र में बालिका के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखना चाहिये :

अथ कन्याजन्मनि मूल चक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जानुनि	पादे स्थानं
४	६	५	५	५	८	९	४	४	१० घटयः
पशुनाश	धन नाश	धन लाभ	कुटिला	धनला.	दयावः	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्यं फलम्

अश्लेषा नक्षत्र में जन्मे बालक-बालिका का फल पुरुष अंगों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिये :

अथ अश्लेषा चक्रम्

शिरसि	मुखे	नेत्रे	ग्रीवायां	स्कंधे	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुदे	पादे स्थान
५	७	२	४	४	८	१०	६	७	७ घटयः
पुत्रादि	पितृना.	मातृना.	स्त्री लाभ	गुरुभक्त	बली	आत्महा.	भ्रमः	तपस्वी	धनहा. फलम्

अश्लेषा नक्षत्र में जन्मे बालक-बालिका का फल वृक्ष के अंगों की घटियों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिये ;

अथ अश्लेषा पुरुष वृक्ष चक्रम्

फले	पुष्पे	दले	शाखायां	त्वचायां	लतायां	स्कन्धे
१०	५	९	७	१३	१२	४
धनम्	धनम्	राजभयम्	हानिः	मातृ हानिः	पितृ हानिः	अल्पायुः

अश्विनी, मघा, ज्येष्ठा और रेवती नक्षत्रों में जन्मे बालक-बालिका का नक्षत्र के चरण अनुसार फल निम्न तालिका से देखें, मूल व अश्लेषा की इसी प्रकार की तालिका ऊपर दे दी गई हैं।

अश्विनीपाद फल	मघा पाद फल	ज्येष्ठा पाद फल	रेवती पाद फल
१ पिता को भय	१ माता को नेष्ट	१ बड़े भ्राता को नेष्ट	१ राज्य-सम्मान
२ सुख ऐश्वर्य	२ पितृ भय	२ छोटे भ्राता को नेष्ट	२ मंत्रित्व प्राप्ति
३ मन्त्री पद	३ सुख	३ मातृ नाश	३ धन सुख की प्राप्ति
४ राज्य सम्मान	४ धन विद्या प्राप्ति	४ खुद का नाश	४ अनेक कष्ट

अभुक्त मूल विचार

ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की ४ घटी, अन्य किसी मत से १ घटी और मूल नक्षत्र के आदि की ४ घटी, अन्य मत से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इन घटियों में बालक जन्मे तो पिता ८ वर्ष पर्यन्त बालक का मुख न देखे, असमर्थ हो तो ६ मास त्याग करे। शांति हवन, अभिषेक आदि से युक्त अभुक्त मूल शांति, रुद्रार्चन, महामृत्युञ्जयादि विधान कर शुभ मुहूर्त में बालक के मुख का अवलोकन करें।

कहते हैं संत तुलसीदास जी का जन्म इसी प्रकार के अभुक्त मूल में हुआ था।

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में जन्मे बालक पर भी अरिष्ट दोष होता है उसका निर्णय निम्न तालिका के अनुसार करना चाहिये :

अथ कृष्ण चतुर्दशी विभाग फलम्

१	२	३	४	५	६	विभागः
शुभम्	पितृ नाश	मातृ नाश	मातुलनाश	कुल हानिः	धन हानिः	फलम्

त्रयोदशी की घटियों को ६० में से घटा कर चतुर्दशी की घटियाँ युक्त कर ६ का भाग दें, जो प्रथम भाग में होगा, उसके द्विगुणित दूसरा ऐसे ही क्रम से जानें। जिस भाग में जन्म हुआ हो उसके अनुसार फल को कहें, अरिष्ट हो तो शान्ति विधान करें। .

सिनीवाली-कुहू जनन फल

सिनीवाली—अमावस्या की अन्तिम पांच घटियों में जन्म हो तो सिनीवाली जनन समझा जाता है। जन्म के बाद अमावस्या की ५ या उससे कम घटियां रह गई हों। अर्थात् चन्द्रमा की केवल कुछ कलायें ही दृष्य मान हों तब सिनीवाली जनन होता है। इसका निर्णय सूक्ष्म गणित द्वारा चन्द्रमा की गति अनुसार करना चाहिये। यह अन्तिम घटियां ४ और ५ के बीच होती हैं। इनमें जन्म होने से घर में बालक-बालिका या पशु गाय, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूत हो तो धन हानि, अपयश आदि का भय होता है।

कुहू जनन फल—अमावस्या की अन्तिम घटी के भी अन्तिम ५-१० पलों में जब चन्द्रमा की कलायें समाप्त या बिल्कुल नष्ट हो जांय तब अन्तिम घटी के भी अन्तिम पलों में जन्म हो तो कुहू जनन होता है। उस समय बालक या पशु जन्म हो तो अति अरिष्ट कारक होता है। इसका शास्त्रोक्त विधि से शान्ति विधान अवश्य कराना चाहिये।

अन्य अरिष्ट दोष

व्यतीपात योग में जन्म हो तो अंग हानि, वैधृति योग में जन्म हो तो पिता से वियोग, परिघ योग में जन्म हो तो स्वयं को मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। मृत्यु योग, दग्ध योग, भद्रा, संक्रान्ति के दिन, सूर्य चन्द्रग्रहण समय में शूल योग, व्याघात योग, अतिगण्ड योग, वज्र योग, तिथि क्षय, क्रान्ति साम्य (महा पात योग), विश्वघस्त्र पक्ष में क्षय मास में जन्मे बालकों को कुयोग में जन्मा समझा जाता है। इनकी आयु तथा आरोग्य के लिये शास्त्रोक्त विधि-विधान से ग्रह शान्ति करा देना चाहिये। जिस प्रकार २७ नक्षत्र होते हैं उसी प्रकार २७ योग होते हैं। व्यतीपात, वैधृति, परिघ, व्याघात, अतिगण्ड, शूल, वज्र, इन २७ में से कुछ अशुभ योग हैं। तिथि के अर्ध भाग को करण कहते हैं। विष्टि करण को भद्रा कहते हैं। तिथि, नक्षत्र, वार आदि के संयोगों से कुछ योग बनते हैं। जिनकी सूचना पंचांगों में दी होती है। मृत्यु योग, दग्ध योग आदि ऐसे ही कुयोग हैं इनको शान्ति कराना आवश्यक होता है।

स्त्री-दासी-गौ आदि पशु यमल जन्म फलम्

त्रिविधा यमलोत्पत्तिर्जायते योषितामिह ।
सुतौ च सुत कन्ये वा कन्या एव तथा पुनः ॥
एक लिंगो विनाशाय द्वि लिंगो मध्यमौ स्मृतौ ।
पित्रोर्विघ्नकरौ ज्ञेयो तत्र शान्तिर्विधीयते ॥

तीन प्रकार से जुड़वां सन्तानों की उत्पत्ति होती है। दोनों लड़के हों या दोनों लड़की हों या एक लड़का एक लड़की हो। इस में एक लडका एक लड़की का होना तो मध्यम, साधारण है। परन्तु एक ही तरह के लिंग वाली सन्तान हों तो उनका फल माता-पिता के लिये अच्छा नहीं बताया गया है। उसकी शान्ति कराना श्रेयस्कर होता है।

[शेष पृष्ठ १२५ पर]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा विधि)

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़कर बलि को ७ बेर शिर पर फिरा कर उचित स्थान पर नाम से रख आवे।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है	असित लक्षण	पूजन द्रव्य	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	बलि विधान व समय	धूप	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद मन्दस्वर, कम्पन अरुचि, अंगशोष।	श्वेत चंदन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	राई, खस, कमल के फूल बिल्ली और मनुष्य के बाल निम्बपत्र, गोघृत।	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ-पैर जकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्र रोग भय, कृषता।	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	भात, एक सेर आटे के पुड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय प. दिशा में चौरास्ते पर रखना।		ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चै हांहां हींहीं हुंहुं दुष्टाग्रहा गच्छन्त्वतः स्थानाद्रुद्राज्ञया स्वाहा।
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हड़फूटन, खांसी, शिर झुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा।	रक्तचंदन रक्तपुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	एक सेर लाल भात, आध सेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	लहसुन, गोश्रृंग सांप की काँचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।	सुनन्दना विधानोक्त
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्र भंग, शिर झुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	तिल चूर्ण एक सेर	भात, १सेर आटे के पूड़े, आध सेर पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।		सुनन्दना विधानोक्त
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी तेज।	श्वेतचंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये।	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत भात, ७ पूड़ियाँ सांयकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना		ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलिं गृह्ण-२ अस्त्र ठः ठः चामुण्डे चण्डिके ठः ठः स्वाहा
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हडफूटन, हँसना, कभी-२ रोना, मोह, मूर्च्छा।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेत ध्वजा ५।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर	कूठ, गुग्गल,	योगिनी विधानोक्त
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीर कम्पन।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	चावलों का आटा एक सेर	भात, ७ पूड़ियाँ सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखना।	राई, हाथीदांत घृत।	विडालिका विधानोक्त
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप।	रक्तचंदन, ५ रंग की झंडी ५, दीपक ५।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छाग मांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।		विडालिका विधानोक्त
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, अफारा, घृणा।	चंदन, पुष्प, ५ दीपक, रंग की झण्डी ५।	एक सेर गेहूं का आटा	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी, सुहाली उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखना।	गोश्रृंग, लहसुन,	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहन हुं फट् स्वाहा
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हडफूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास।	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	एक सेर गेहूं का आटा	गुड़ के चीमुने चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	सांप की कांचली, निम्ब पत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।	ॐ नमो भगवते वैश्वेदेवाय हन हुं फट् स्वाहा।
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हडफूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झण्डी, २५ आटे के सतिये।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।		ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्र हस्ताय ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्र पीड़ा, संताप।	१३ दीपक, १३ झण्डी, १३ सतिये आटे के।	चावलों का आटा एक सेर	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियाँ ७, मत्स्य-मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।		ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय२ तापय २ हुं २ हन २ दुष्टानां ह्रां ह्रीं फट् स्वाहा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	जपनीय वेदोक्त मन्त्र	जप सं०	होम द्रव्य	बलि द्रव्य	करे धारणम्	बन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
अश्विनी (दस्रौ)	वातज्वर, गात्रपीड़ा, निद्रा भय, बुद्धि भ्रम	६	१ २ ३ ४ ६ ११ १० २०	ॐ अश्विनातेजसाचक्षुः प्राणंनसरस्वतीवीर्यम् । वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः ॥	५ सहस्र	खण्ड यव घृत	गुडोदन तिल	अपमार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत-दीप, क्षीर, मोदक, गुड़, नैवेद्य ।	सुवर्ण घृत कुम्भ
भरणी (यमः)	छर्द रोग, तीव्र ज्वर अनेक रोग, आलस्य	११	० ८० ४० ११	ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे ॥ ॐ यमाय नमः ॥	१० सहस्र	घृत मधु तिलाक्षत	कृषरान्न (खिचड़ी)	अगस्त मूलम्	अगर गंध, करवीर पुष्प, घृत दीप, घृत, गुग्गुल, धूप, गुडोदन नैवेद्य ।	गो, महिषी घृत शर्करा, छायापात्र स्वर्ण, गोदान
कृत्तिका (अग्निः)	नेत्र पीड़ा, अनिद्रा, अतिदाह, उरूशूल	६	६ ११ १६ २८	ॐ अग्निमूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपा ऽ रेता ऽ सिजिन्वति ॥ ॐ अग्नये नमः ॥	१० सहस्र	तिलयव घृत	पायस घृत मोदक	कार्पास मूलम्	श्वेतचन्दन गंध, जुहीपुष्प, घृतदीप, घृत, गुग्गुल, धूप, तिलमाषान्न, बडाधीका, नैवेद्य ।	
रोहिणी (ब्रह्मा)	शिर पीड़ा, ज्वर, कुक्षिशूल, प्रलाप	७	७ ६ १८ ३०	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरूचोवेनआवः सुबेध्न्या उपमाअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः ॥ ॐ ब्रह्मणेनमः ॥	५ सहस्र	तिलाज्य घृतयव	मध्वा-ज्यक्षो शाल्यन्नक्षी	अपामार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, घृत, पायस, नैवेद्य ।	सप्तधान्य, कृष्ण गौ दान, ५ कन्या भोजन
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	त्रिदोष, महाकष्ट, अर्द्ध गात्र पीड़ा	३	६ ५ ७ १०	ॐइमन्देवा असपत्न ऽ सुवध्वं महतेक्षत्राय महते ज्यैष्ठ-याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्यपुत्रममुष्यं पुत्रमस्यैविश एषवोऽमीराजासोमोऽस्माक ब्राह्मणाना ऽ राजा ॥ ॐ चन्द्रमसेनमः ॥	१० सहस्र	दधि पायस	दधिशर्करा शाल्यन्न	जयन्ती मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायस, अपूपमध्वोदन नैवेद्य ।	दधि, तन्दुल सवत्सा गोदान
आर्द्रा (शिव)	त्रिदोष, ज्वर, सर्वांग पीड़ा, अनिद्रा	मृ.तु.	० १८ ० ०	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः बाहुभ्यामुतते नमः ॥ ॐ रुद्राय नमः ॥	१० सहस्र	घृत मधु	दध्योदन मध्वाज्य	सचंदना-श्वत्यमूलम्	श्वेत चन्दन गंध, सौरभ पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायसौदन नैवेद्य ।	श्याम वृषभ दान श्याम वस्त्र
पुनर्वसु (अदिति)	ज्वर, शिर पीड़ा, कटि पीड़ा	७	७ १४ २ २१	ॐ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति माता स पिता स पुत्रः विश्वे देवा अदितिः पञ्चजनाअदितिर्जातमदिति-र्जनित्वम् ॥ ॐ अदिताय नमः ॥	१० सहस्र	घृत तन्दुल	साज्य पीत तन्दुल	अर्क मूलम्	हरिद्राकुंकुम गंध, सेवन्तिका पुष्प, अष्ट गंध धूप, घृत दीप, घृताक्तपीतवर्णान्न नैवेद्य ।	वस्त्र, स्वर्ण, कमल ५, ५ कन्या भोजन
पुष्य (गुरु)	ज्वर, शूल, महा कष्ट	७	७ ७ १० २१	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतु मज्जनेषु । यदीदयच्छवसऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् । ॐ बृहस्पतये नमः ॥	१० सहस्र	घृत पायस	समण्डक मोदक	तुषार मूलम्	कुंकुम गंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, पायस, शर्करा, नैवेद्य ।	सुवर्ण गौ, पीत वस्त्र
आश्लेषा (सर्पः)	सर्वांग पीड़ा, पाद पीड़ा, मृत्युसम कष्ट	मृ.तु.	० ० ४१ ०	ॐ नमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनुः ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्प्पेभ्योनमः ॥ ॐ सर्प्पेभ्यो नमः ॥	१० सहस्र	शर्करा घृत	हवि दध्योदन	पटोल मूलम्	कुंकुम, अगर गंध, अगस्त पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृत, क्षीर, नैवेद्य ।	सवत्सा श्याम गौ, छायापात्र
मघा (पितरः)	शिर पीड़ा, अर्द्ध गात्र पीड़ा	२०	१५ ७ १७ २०	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । प्रपितामहेभ्यस्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्नपित्रोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ ॐ पितरभ्ये नमः ॥	१० सहस्र	तिल घृत तन्दुल	सतिलाज्य दुग्धान	भृंगराज मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, चम्पक पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत मिष्टान्न, नैवेद्य ।	वस्त्र, तिल, माष दान
पू. फा. (भग.)	गात्र व्यथा, ज्वर, शिर पीड़ा	मृ.तु.	० १५ ० ३०	ॐ भगप्रणोतर्भगसत्यराधोभगेमांधियमुदवाददन्नः भगये प्रणोजनयगोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नृ वनः स्याम ॥ ॐ भगाय नमः ॥	१० सहस्र	कङ्गनी तिल घृत	घृतोदन पायस	कटकारी मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, मालती पुष्प, घृत विल्व, धूप, घृत दीप, अपुपोदन मोदक, नैवेद्य ।	पित्तल, यवमाषान्न स्वर्ण गौ दान
उ. फा. (अर्यमा)	कुक्षिशूल, ज्वर, शिरपीड़ा, अतिकष्ट	७	७ १४ ७ ६०	ॐ देवावध्वर्यूश्चागतरथेनसूर्यंत्वचा मध्वायज्ञं ऽ समंजाये तं प्रत्नया यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥ ॐ अर्यम्णे नमः ॥	१० सहस्र	तिल घृत	घृत शर्करा शाल्यन्न	पटोल मूलम्	कर्पूर, केसर गंध, अर्क पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत पायस, नैवेद्य ।	सुवस्त्र, स्वर्ण, रजत अन्न, गौदान
हस्त (सविता)	उरशूल, अफारा, सर्वांग पीड़ा, प्रस्वेद	१५	१५ १७ १५ ०	ॐ विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्य मध्यायुर्दधयज्ञपत्त च विह्रुतमम् वातजूतो योअभिरक्षतित्मनाप्रजाः पुपोषपुरुधा विराजति ॥ ॐ सवित्रे नमः ॥	५ सहस्र	दधि घृत	मिष्ठान्न पायस	जाति मूलम्	रक्त चन्दन, केसर गंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृत, पायस, नैवेद्य ।	सुवर्ण, पयस्विनी गौ दान
चित्रा (विश्व.)	विचित्र रोग अतिकष्ट	११	११ ६ ६ १६	ॐ त्वष्टातुरीयोअद्भुतइन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम् । द्विपदा-छन्दइन्द्रियमुक्षागौत्रवयोदधः ॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः ॥	१० सहस्र	तिलाज्य घृत तन्दुल	विचित्रान्न घृत	मल्व मूलम्	केसर गंध, विचित्रवर्ण पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृतदीप, विचित्रान्न मोदक, नैवेद्य ।	तिल, गुड़, विचित्र वृषभ, छायापात्र

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	जपनीय वेदोक्त मन्त्राः	जप सं०	होम द्रव्य	बलि द्रव्य	करे धारणम्	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
स्वाती (वायु:)	नाना कष्ट, ज्वर-पीडा	मृ.तु.	६० १७ ३० ०	ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथा सस्ते त्रिरागहि नियुत्वाम सोम पीतये ।। ॐ वायवे नमः ।।	१० सहस्र	तिल, यव घृत	घृतपायस	जाति मूलम्	चन्दनगन्ध (दमनक पुष्प) अगरु, गुग्गुल धूप, घृतदीपक, घृतपायस नैवेद्य ।	स्वर्ण, रक्तधेनु पक्वान्न
विशाखा (इंद्राग्नि)	सर्वाङ्गपीडा, कुक्षिशूल	१५	१५ ० ४ १३	ॐ इन्द्राग्नी आगत ऽ सुतं गीर्भिर्नमो वरेण्यम् । अस्यं पातं धियेषिता ।। ॐ इन्द्राग्निभ्यां नमः ।।	१० सहस्र	आज्य पायस	सहवि चित्रान्न	गुञ्जा मूलम्	चन्दन, केसरगन्ध, कमल पुष्प, देवदारु, घृतधूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य ।	रक्तपीतवस्त्र कृष्ण-वृषभच्छायापात्रदान
अनुराधा (मित्रः)	शिरपीड़ा, तीव्र ज्वर		६० १२ ३६ ३०	ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृत ऽ सपर्यत दूर दृशे देव जाताय केतवे दिवसपुत्राय सूर्यायश ऽ सत ।। ॐ मित्रायनमः ।।	१० सहस्र	यव-घृत	मध्वाज्य गुडमाषान्न	सुपुष्प मूलम्	केसरगन्ध, कमल पुष्प, चन्दन धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य ।	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
ज्येष्ठा (इन्द्र:)	पित्तरोग, कम्पन, व्याकुलता	मृ.तु.	१९ ९ ६ ४	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ऽ हवे हवे सुहव ऽ शूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ऽ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ।। ॐ शक्राय नमः ।।	५ सहस्र	तिल, घृत तण्डुल	दध्योदन सुपुष्प	अपामार्ग मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, चम्पकादि पुष्प, कपूर-धूप, घृतदीप, चित्रान्न नैवेद्य ।	स्वर्ण तिल, नील-वस्त्रदान
मूल (राक्षसः)	मुख तथा उदर-रोग, सन्निपात	७	० ९ १५ ६	ॐ मातेव पुत्र पृथिवी पुरीष्यमग्नि ऽ स्वेयोनाव-भारुषा। तां विश्वैर्देवैर्ऋतुभिः संवदानः प्रजापतिर्वि-श्वकर्मा विमुञ्चतु ।। ॐ निर्ऋतये नमः ।।	५ सहस्र	कन्दमूल घृत	सहवि माषान्न	मन्दार मूलम्	कृष्ण अगरुगन्ध, नीलोत्पलपुष्प, घृतदीप कृष्णागरुधूप, माषमिश्रान्न नैवेद्य ।	गौ, छायापात्र, वस्त्र, कुमारी पूजा
पू. षा. (जलम्)	शिरपीड़ा, कंपन, महाकष्ट	मृ.तु.	० १५ २४ १०	ॐ अपाघमप किल्विषमपकृत्यामपोरपः । अपाम्मार्ग-त्वमस्मदनदुःस्वप्न्य ऽ सुव ।। ॐ अद्भ्यो नमः ।।	५ सहस्र	तिल, घृत तण्डुल	घृतपायस मिष्ठान्न-हवि	कर्पास मूलम्	श्वेतचंदनगंध, कमल पुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायसान्न नैवेद्य ।	स्वर्ण वस्त्र, तिल, तण्डुल, जल कुम्भ गौदान
उ. षा. (विश्वे-देवा)	कटिपीड़ा, उरुशूल, प्रलाप	३०	३० २४ २९ १६	ॐ विश्वेदेवाः शृणुतेम ऽ हवं मे ये अन्तरिक्षे य उपद्यविष्ठम् । अग्निजिह्वा उतवायजत्रा आसद्यास्मि-न्बर्हिषि मादयध्वम् ।। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योनमः ।।	१० सहस्र	तिलाज्य यव	सहवि पायस तिलाज्य	कर्पास मूलम्	श्वेतचंदनगन्ध, कमलपुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायसान्न नैवेद्य ।	आमान्न, स्वर्णदान
श्रवण (विष्णुः)	सर्वांगपीड़ा, त्रिदोष-भय, अतिसार	११	६० २४ ६ ९	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ।। ॐ विष्णवे नमः ।।	१० सहस्र	तिलाज्य यव	सहवि पायस	अपामार्ग मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, मालती पुष्प, कर्पूर, गुग्गुलधूप, घृतदीप, षड्रस शाल्यन्न नैवेद्य ।	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
धनिष्ठा (वसवः)	ज्वर-कम्पन, रक्ता-तिसार, मूत्रकृच्छ्र	१५	१५ २ २७ २१	ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामधुक्षः ।। ॐ वसुभ्यो नमः ।।	१० सहस्र	तिलाज्य पायस	पायस मोदक पूप-तिलपिष्ठ	भृङ्गराज मूलम्	श्वेतचंदनगन्ध, कमलपुष्प, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायस नैवेद्य ।	छत्रोपानत् अश्व, स्वर्ण, गौ
शतभिषा (वरुणः)	वात-ज्वर, सन्नि-पात, कष्ट	११	० ५५ ६	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनिस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसी वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदन मासीद ।। ॐ वरुणाय नमः ।।	१० सहस्र	आज्य दध्योदन	घृत चित्रान्न	कमल मूलम्	केसर अगरुगंध, कमलपुष्प, कर्पूर-चंदन धूप, घृतदीपक, घृतपोलिका नैवेद्य ।	स्वर्ण, तिलान्न, घट, अश्व, छायापात्र
पू. भा. (अजै-कपाद)	वमन, व्याकुलता, शरीरपीड़ा, त्रिदोष	मृ.तु.	० १२ ५१ १७	ॐ उतनोऽहिर्बुध्न्य शृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः । विश्वेदेवाऽऋतावृधोहुवानास्तुता मंत्राः कविशस्ता अवन्तु ।। ॐ अजैकपदे नमः ।।	१० सहस्र	क्षीराज्य शर्करा	दध्योदन पायस	भृङ्गराज मूलम्	केसर चंदनगंध, श्वेताऽर्क पुष्प, शतौषधि, मिश्रित धूप, घृतदीपक, दधिपायस नैवेद्य ।	स्वर्णरजत, अन्न, श्वेतवस्त्र, छाया-पात्रदान
उ. भा. (अहि-र्बुध्न्य)	कामला, अतिसार, शूल, वात-ज्वर	७	१० २० ७ १५	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामाहि ऽ सी नवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ।। ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ।।	१० सहस्र	तिलाज्य यव	तिल घृत मुद्ग माष	अश्वत्थ मूलम्	चन्दन-कर्पूरगंध, कमलपुष्प, बिल्वगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य ।	स्वर्णरजत, तिल कृष्ण वस्त्रदान
रेवती (पूषा)	वात, पित्तमय-ज्वर, उरुशूल, चित्तभ्रम		१८ १० ९ २०	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि ।। ॐ पूष्णे नमः ।।	५ सहस्र	तिलाज्य तण्डुल	सहवि दध्यन्न	अश्वत्थ मूलम्	रक्तचंदनगंध, मंदार पुष्प, घृत गुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य ।	रजतवस्त्र, पैत्तलपात्रं वृषभ, छायापात्र

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बाल कष्टावली-चक्र में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ :

बालक को जब अरिष्ट होता है तो उसके निवारण के लिए जो पूजा की जाती है, वह उपरोक्त चक्र में दी हुई है। बालक को कष्ट हो तो ज्ञात करो कि उसकी आयु का कौन-सा दिन, मास या वर्ष है। बारह दिन, मास, वर्ष तक कौन-सी पूतना का कब-कब प्रभाव रहता है, उनका नाम दिया गया है। रोग, पीड़ा के लक्षणों में ज्वर (बुखार को), स्वेद (पसीना आने को), मन्द स्वर (मन्दी, धीमी आवाज), कण्ठ स्वर को कम्पन से कपकपी (शरीर में रोये खड़े हो जाना), अरुचि (भोजन में दूध पीने की इच्छा न होना, उससे अरुचि हो जावे को कहते हैं)। अंगशोथ (शरीर में सूजन), संकोच शरीर का सिकुड़ना), कृशता (शरीर का कमजोर होना), खून की कमी (हड्डियां दिखाई देना), सूखा शरीर, हड़फूटन, (हड्डियों में दर्द अकड़न को), नेत्रमीलन (आंखें मसलना, मीड़ना), बच्चा हाथ से आंखें मसलता है (आंख में खुजली होती है)। श्यामता (शरीर का रंग काला पड़ जाना), रुदन (रोना), नेत्र पीड़ा (आंखों के रोग को समझना चाहिए)। गात्र भंग (शरीर में दर्द होना, शरीर का ढीला पड़ जाना), अनिन्द्रा (नींद न आना, हड़फूटन), हंसली (गले की हड्डी उतर जाना), मोह मूर्च्छा (नींद जैसी विहोशी), वमन (उल्टी होना), मुखशोथ, (मुंह की सूजन), सन्ताप (मानसिक कष्ट), शोक (वियोग कष्ट), श्वांश जल्दी-जल्दी चलना, (शूल दर्द पीड़ा), अफारा (पेट फूल जाना), घृणा, घिन हो जाना (हर चीज से अरुचि), रोमांच (रोंगटे खड़े हो जाना) और बहुरोदन (बच्चा ज्यादा रोता है) उसको कहते हैं। बीमारी के लक्षणों से भी पूतना की पहचान की जाती है।

पूतना की मूर्ति बनाने के लिए जो चीजें लिखी हैं, उनसे एक स्त्री मूर्ति बना ली जाती है और उसमें जिसकी पूजा करनी हो उसके मन्त्रों से उसी योगिनी आदि की स्थापना कर ली जाती है। नदी के दोनों किनारों की मिट्टी या किसी तालाब, जलाशय, कुये, बावड़ी के दोनों किनारों की मिट्टी, पिसे तिल, चावल, काले उड़द का आटा जैसा जहां लिखा है, उसमें पानी मिला कर या तेल मिलाकर पूतना की मूर्ति बनाई जाती है।

पूजा के पदार्थों में श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन) को घिसकर तिलक बनाते हैं। श्वेत पुष्प (सफेद फूलों को), पचरंगी झंडियों में कोई से भी पांचरंग के कागज या कपड़े लेकर झंडी बनाई जाती है और मूर्ति के चारों तरफ दीपक व सतिये के साथ लगाते हैं। सतिये आटे से स्वास्तिक की शकल बनाते हैं, उस पर आटे के दीपक बनाकर रुई की बत्ती व घी, तेल डालकर जलाकर रखते हैं। कपूर, लोवान जैसा बताया हो जलाते हैं। जहाँ रक्त चन्दन लिखा है वहां लाल चन्दन लो, रक्त पुष्प (लाल रंग के फूल), श्वेत ध्वजा (सफेद झंडा-झंडी), जहां कोई रंग नहीं लिखा हो वहां सफेद रंग की होती है। सतिये चावल या गेहूं के आटे के बनाने चाहिये।

बलि विधान में भात चावल का होता है। पूर्ण पोली (गेहूं के आटे में गुड़ मिलाकर बड़े पूये बनाते हैं उसको कहते हैं), मत्स्य (मछली का मांस होता है) लाल भात (चावल के भात में लाल चन्दन का चूरा मिलाने से बनता है।) मीठी पूड़ियों को सुहाली कहते हैं। छागमांस (बकरे-बकरी के मांस को), पापड़ी (छोटे पापड़ जैसी तेल में तली आटे की पापड़ियां होती हैं)। जिस समय, जिस दिशा में, जिस स्थान पर रखने को बताया गया है—समस्त बलि पदार्थ बिना टोका-टाकी के रख आना चाहिए, वापिसी में पीछे मुड़ कर नहीं देखना चाहिये। पूजा समय धूप दी जाती है, वह जिस विधान में जिन वस्तुओं से बनाने को लिखा है उन्हीं से बनाना चाहिये।

राई, खस की जड़, कमल के फूल सुखाकर या बीज या कमल गट्टे, बिल्ली के बाल (किसी पालतू बिल्ली के मिल सकते हों), मनुष्य के बाल, निम्बपत्र (नीबू के पेड़ के पत्ते) पीसकर गोघृत (गाय के घी) में मिलाकर धूप बना लो। गोश्रृंग (गाय का सींग), कूट (एक दवा होती है), अत्तर दवा बेचने वालों के यहां मिल जाती है, गुग्गल को गूगल भी कहते हैं। स्नान, पूजा मार्जन मन्त्र प्रत्येक पूतना का दिया हुआ है। इसी मन्त्र से मूर्ति का आवाहन (स्नान पूजा व मार्जन) अर्थात् मन्त्र पढ़कर चारों ओर जल छिड़कना चाहिए। बलि पदार्थ को हाथ में लेकर २१ बार मन्त्र पढ़कर बालक के शरीर के ऊपर सिर से पैर तक सात बार फिराते हैं, इसे ओसारा कहते हैं। फिर उसे जैसा बताया है यथा स्थान रख देना चाहिए। बालक के माता-पिता, सम्बन्धी कोई भी इस काम को कर सकता है।

नक्षत्र कष्टावली विवेचन

नक्षत्र कष्टावली में कठिन संस्कृत शब्दों के सरल अर्थ और विशेष विवरण दिया जा रहा है। बालक का जन्म जिस नक्षत्र के जिस चरण में हो, उसके सामने यदि कष्ट दिन लिखे हों तो निवारणार्थ पूजा विधान कराना चाहिए। मान लो यदि अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म हुआ हो तो इसमें २० दिन तक के बालक को कष्ट हो सकता है। किस प्रकार का कष्ट हो सकता है, उसके लक्षण दिये हैं—वात, ज्वर, गात्र पीड़ा, निद्रा-भय, बुद्धिभ्रम, वात, ज्वर में बुखार के साथ शरीर में दर्द भी होता है। गात्र पीड़ा से तात्पर्य शरीर में पीड़ा, दर्द, शूल आदि से है। निद्राभय (सोते में डर जाना), बुद्धिभ्रम (बच्चा अपनी स्वाभाविक बुद्धि खो देता है), आँखें फाड़-फाड़ कर देखना, इस प्रकार के लक्षण प्रगट होते हैं। लक्षणों में प्रयुक्त अन्य शब्द जैसे—तीव्र ज्वर, तेज बुखार, अति दाह, तीव्र जलन, उरु शूल (पेट दर्द), कुक्षि शूल (पेट के नीचे भाग में दर्द), प्रलाप भी एक प्रकार का बुद्धि भ्रंश है। त्रिदोष (सन्निपात), अर्धगात्र पीड़ा (शरीर के एक ओर के आधे भाग में पीड़ा), छोटे बच्चे में इन लक्षणों व कारणों का जानना अनुभव से ही होता है। सर्वांग पीड़ा (सारे अंग में पीड़ा), कटि पीड़ा (कमर में दर्द), पाद पीड़ा (पैरों में दर्द), अफारा (पेट फूलना), प्रस्वेद (बहुत पसीना आना), अतिसार (दस्त लगना), पेचिश रक्त अतिसार (खूनी पेचिश), मूत्र कृच्छ (पेशाब का रोग) होता है। रोग का निदान व औषधि तो डाक्टर वैद्य से ही कराना चाहिये परन्तु उसका निवारण पूजा विधि से करा देना चाहिए।

गन्धादि पदार्थों में—श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन), कमल पुष्प (कमल के फूल), गुग्गल (गूगल की धूप), क्षीर (खीर), मोदक (लड्डू), गुड़ नैवेद्य (मिष्ठान्न), अगर गन्ध (अगर एक खुशबूदार जड़ी होती है), करवीर पुष्प (करवीर का फूल), गुड़ोदन (दही में गुड़ मिला कर बनाया जाता है)। जुही पुष्प (जुही का फूल), तिल माषान्न (तिल व उड़द को मिलाकर बनाया गया बड़ा), दशाङ्ग धूप में दस सुगन्ध पदार्थ पड़ते हैं। अगर, तगर, कपूर, केसर, गोरोचन, कस्तूरी, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, बाल छड़, घी। पायस (दूध, चावल की खीर), अपूप (आटे के मीठे पूये), मध्वोदन (शहद, दही मिलाकर बनता है), नैवेद्य (भोग प्रसाद को कहते हैं)। सौरभ पुष्प (खुशबूदार फूल), पायसोदन (दूध, दही, मधु या गुड़ मिलाकर बनता है, हरिद्रा (हल्दी), कुंकुम, (रोली), सेवन्तिका पुष्प (सेवन्तिका का फूल), अष्टगन्ध धूप (अष्टगन्ध की धूप), घृताक्त पीतवर्ण नैवेद्य (पीले रंग का घी में तला भोग, बेसन का बना घी में सिका, तला लड्डू या अन्य पदार्थ), घृत पायस शर्करा (घी, शक्कर, दूध का नैवेद्य), घृत बिल्व धूप (बेलपत्र के फल से बनी धूप), घृत (घी), मिष्ठान्न (मिठाई), घृत मिष्ठान्न (घी की मिठाई), घी से तात्पर्य—गाय, भैंस का घी होता है। अपूपोदन मोदक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(अपूप-मीठे पूये, ओदन-दही में गुड़ मिला रस, मोदक-लड्डू तीनों मिलाकर अपूपोदन मोदक), अर्क पुष्प (अकौआ का फूल, सफेद फूल थोड़ा बैंगनी या नीला रंग का होता है, इसमें बौंडे होते हैं, जिनमें से रुई के रेशे के समान पदार्थ हवा में उड़ता रहता है। शिवजी का प्रिय फूल आक का ही होता है)। विचित्र वर्ण पुष्प (रंग बिरंगे कई रंग के या अलग-२ रंग के फूल), विचित्रान्न मोदक (अनेक प्रकार के चित्र विचित्र अन्न से बने हुए लड्डू जैसे—कूट्टू, सिंघाड़ा आदि के आटे के या मूंग के लड्डू), अगरु (अगर), दमनक पुष्प (दमनक का फूल), (फूलों की जातियों, नामों की जानकारी माली या नरसरी से प्राप्त की जा सकती है।) यह सफेद रंग का, बसन्ती रंग का पुष्प होता है। देवदारु (खुशबूदार लकड़ी देवदार का बुरादा बढ़ई या फर्नीचर वालों से मिल सकती है), चम्पकादि पुष्प (चम्पक वगैरा के फूल), चित्रान्न नैवेद्य (कई प्रकार के अन्नों के आटे आदि से बना भोग-प्रसाद नैवेद्य), कृष्ण अगर गन्ध (काली अगर की खुशबू या घिसकर बना तिलक), नीलोत्पल पुष्प (नीली पंखड़ी वाले फूल), माष मिश्रान्न नैवेद्य (देवताओं के प्रसाद भोग लगाने को बनाये पदार्थ को नैवेद्य कहते हैं) उड़द के साथ और भी पिसा हुआ अन्न मिलाकर बनाया गया नैवेद्य। षडरस शाल्यान्न नैवेद्य, षडरस (षटरस, छः प्रकार के रस स्वाद वाला शाल्य यानी चावलों से बना षटरस व्यञ्जन का खट्टा, मीठा, चिरपिरा, कसैला, नमकीन, कड़ुवा सब प्रकार के स्वादों से युक्त षटरस होता है।), श्वेतार्क (सफेद आक), शतोषधि (मिश्रित धूप १०० वनस्पतियों को मिलाकर बनी धूप)। मदार पुष्प भी आक, अकौआ के फूल को कहते हैं।

दान पदार्थ—घृत कुम्भ (घी भरा घड़ा), गोमहिषी घृत (गाय भैंस का घी), शर्करा (शक्कर), छायापात्र (तैलयुक्त बर्तन जिसमें अपने मुख की छाया देखी जा सके), सप्तधान्य (सात प्रकार के अन्न), तन्दुल (चावल), सवत्सा गोदान (बछड़े सहित गौ का दान), श्याम वृषभ दान (काले बैल का दान), माष (उड़द), यव (जौ), सुवस्त्र (उत्तम वस्त्र), पयस्विनी गौदान (दूध देने वाली गाय का दान), विचित्र वृषभ (चितकबरे रंग का बैल), रक्तधेनु (लाल गाय), पक्वान्न (पकवान), जल कुम्भ (जल से भरा घड़ा), छत्रोपानत् (छतरी), पैत्तल पात्र (पीतल का बर्तन) होता है।

बलिद्रव्य (बलिदान के लिये पदार्थ), गुड़ोदन (गुड़ का ओदन दही में गुड़ या शक्कर और पानी मिलाकर बनता है), शाल्यन्न क्षीर (चावल की खीर), पीत तन्दुल (पीले चावल), तिल पिष्ठ (तिल की पिट्ठी), मुद्ग (मूंग), माष (उड़द), विचित्रान्न (अनेक प्रकार के अन्न)।

होमद्रव्य (हवन करने के लिये पदार्थ), खण्ड यव (टूटे जौ), मधु (शहद), कंगनी (एक अन्न है जो चिड़ियों को चुगाया जाता है), कंदमूल (ऐसे फल जो जड़ों में पैदा होते हैं जैसे—जिमीकन्द, शकरकन्द, गाजर, मूली आदि)। पायस (खीर), तन्दुल (चावल), यव (जौ)।

करेधारणम् (हवन करते साथ हाथ में पहनने के लिये पदार्थ), अपामार्ग मूलम् (गोखरू की जड़), अगस्त एक वृक्ष होता है, कार्पास कपास को कहते हैं। अश्वत्थ (पीपल की जड़), अर्क मूलम् (आक की जड़), जयन्ती, तुषार, पटील, भृंगराज, कण्टकारि यह सब जड़ी बूटियों के नाम हैं। गुञ्जा--सफेद या लाल गोगचीं लक्ष्मणा को कहते हैं। सुपुष्प—किसी सुन्दर पुष्प, वृक्ष की जड़, भृंगराज प्रसिद्ध जड़ी है जिसको तेलों में डाला जाता है। कण्टकारि कटेरी होती है। इनकी जानकारी वैद्यों से मिल सकती है।

वेदोक्त मन्त्रों का उच्चारण ठीक होना चाहिये, विशेष कर ꣳ का उच्चारण किसी ज्ञाता से सीख लेना चाहिये।

अन्य शुभाशुभ योग

(१) मंगल-शनि दोनों त्रिकोण (१, ५, ६) में हों और चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो जन्मा बालक माता से बिछड़ जाता है। चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि हो तो बालक सुखी व दीर्घायु होता है और माता से पुनर्मिलन भी हो जाता है। लोक-लाज के भय से कुछ मातायें बच्चों को त्याग देती हैं। कुछ का दुष्टों द्वारा अपहरण हो जाता है। यदि स्वराशि या उच्च गुरु की चन्द्रमा पर दृष्टि हो तो बालक-माता का मिलन हो जाता है।

(२) दशम भाव में बुध-गुरु हो, केन्द्र (१, ४, ७, १०) में सूर्य तृतीय मंगल, ग्यारहवें भाव में पाप ग्रह हो तो बालक की छः उँगली होती हैं।

(३) १२वें स्थान में चन्द्रमा व मंगल हो तो बांया नेत्र और सूर्य राहु हो तो दांया नेत्र पीड़ित होता है।

(४) पंचम स्थान में शनि-राहु व मंगल हो तो बाईं कोख में लहसुन, मसा, तिल होता है। कोख, कुक्षि, पेडू को भी कहते हैं और बाहुमूल कांख को भी।

(५) तीसरे स्थान में शुक्र हो, मेष या सिंह का गुरु हो, १०वें स्थान में सूर्य-मंगल हो तो बालक गूंगा होता है।

(६) कृष्ण पक्ष में दिन का या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म हो तो छठा या आठवां चन्द्रमा शुभ समझना चाहिये कष्ट व अरिष्ट का निवारण करता है।

(७) ८वां चन्द्रमा, ७वां मंगल, ९वां राहु लग्न में शनि, तीसरा गुरु, पांचवां सूर्य, छठा शुक्र, चौथा बुध हो तो बालक की आयु बहुत कम होती है।

(८) लग्न में बुध-शुक्र न हो, केन्द्र में गुरु न हो, दशम में मंगल न हो तो उसका भाग्य अच्छा नहीं होता। दशम मंगल हो, केन्द्र त्रिकोण में बृहस्पति, बुध, शुक्र हो तो बालक भाग्यवान, दीर्घायु, गुणवान, धनवान, बुद्धिमान होता है।

(९) लग्न में शनि-छठा, चन्द्रमा-सप्तम मंगल पिता की आयु को कम करते हैं।

(१०) ६, १२वें स्थान में पाप ग्रह हों या चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो माता को कष्ट दायक होते हैं।

(११) १०वें स्थान में पाप ग्रह हो या सूर्य के साथ पाप ग्रह हो या शत्रु राशि का मंगल दशम भाव में हो तो पिता को कष्ट कारक होता है।

(१२) लग्न में गुरु, दूसरे में शनि, सूर्य-भौम तथा बुध हों बालक के विवाह समय पिता को मारक होता है।

(१३) सातवां राहु, छठा-आठवां चन्द्रमा हो और चन्द्रमा पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक अल्पायु होता है।

(१४) शनि-सूर्य का परिवर्तन योग हो (अर्थात् सूर्य शनि की राशि में, शनि सूर्य की राशि में) अथवा लग्न में मंगल व अष्टम गुरु हो तो बालक की आयु १२ वर्ष की हो।

(१५) छठे स्थान में बुध हो, लग्नेश व अष्टमेश, पापग्रहों से युक्त हो या परिवर्तन योग या दृष्टि योग द्वारा एक दूसरे को देखते हों तो बालक की आयु ४ वर्ष।

(१६) मंगल की राशियों में गुरु हो और चन्द्रमा ६ या ८वें भाव में हो तो बालक की आयु ८ वर्ष की होती है।

(१७) दशम स्थान में राहु हो, अष्टमेश होकर क्षीण चन्द्रमा राहु के साथ हो तो बालक व उसके माता-पिता तीनों को अरिष्ट करता है। चन्द्रमा राहु के साथ न हो तो बालक की आयु १६ वर्ष होती है।

(१८) तीसरे स्थान में सूर्य बड़े भाई को और शनि या मंगल छोटे भाई को कष्ट दायक होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अवकहड़ा चक्र: भुक्त नक्षत्र चरण राश्यादि और स्वामी, चरणात्मक अष्टोत्तरी : विंशोत्तरी महादशाओं और ऋतुओं की सारणी

चन्द्र राशि		वर्ण	हंसक	वश्य
(१) मेष		क्षत्रिय	अग्नि	चतुष्पाद
(२) वृषभ		वैश्य	भूमि	चतुष्पाद
(३) मिथुन		शूद्र	वायु	मानव
(४) कर्क		ब्राह्मण	वारि	जलचर
(५) सिंह		क्षत्रिय	अग्नि	वनचर
(६) कन्या		वैश्य	भूमि	मानव

नक्षत्र	अश्विनी १	भरणी २	कृत्तिका ३	रोहिणी ४	मृगशीर्ष ५	आर्द्रा ६	पुनर्वसु ७
चरण	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४
अक्षर	चु चे चो ला	ली लु ले लो	अ ई उ ए	ओ वा वी वु	वे वो का की	कु घ ङ छ	के को हा ही
वर्ग	सिंह : : मृग	: : : :	गरुड : : :	: मृग : :	: : मार्जार :	: : : सिंह	मार्जार : मेढ़ा :
अवकहड़ा चक्र	योनि गण यु.ना. नाड़ी	योनि गण यु.ना. नाड़ी	योनि गण यु.ना. नाड़ी	योनि गण यु.ना. नाड़ी	योनि गण यु.ना. नाड़ी	योनि गण यु.ना. नाड़ी	योनि गण यु.ना. नाड़ी
	अश्व देव पूर्व आद्य	गज मनुष्य पूर्व मध्य	मेष राक्षस पूर्व अन्त्य	सर्प मनुष्य पूर्व अन्त्य	सर्प देव पूर्व मध्य	श्वान मनुष्य मध्य आद्य	मार्जार देव मध्य आद्य
पूर्वराशि	० ० ० ०	० ० ० ०	१ १ १ १	१ १ १ १	१ २ २ २	२ २ २ २	२ २ २ ३
अंश	३ ६ १० १३	१६ २० २३ २६	० ३ ६ १०	१३ १६ २० २३	२६ ० ३ ६	१० १३ १६ २०	२३ २६ ० ३
कला	२० ४० ० २०	४० ० २० ४०	० २० ४० ०	२० ४० ० २०	४० ० २० ४०	० २० ४० ०	२० ४० ० २०
अष्टोत्तरी महादशा	राहु	राहु	शुक्र	शुक्र	शुक्र	रवि	रवि
भुक्त वर्ष	६ ७ ८ ९	९ १० ११ १२	१ ३ ५ ७	८ १० १२ १४	१५ १७ १९ २१	० ० १ १	१ २ २ ३
भुक्त मास	९ ६ ३ ०	९ ६ ३ ०	९ ६ ३ ०	९ ६ ३ ०	९ ६ ३ ०	४ ९ १ ६	१० ३ ७ ०
भुक्त दिन	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	१५ ० १५ ०	१५ ० १५ ०
विंशोत्तरी महादशा	केतु ७	शुक्र २०	रवि ६	चन्द्र १०	मंगल ७	राहु १८	गुरु १६
भुक्त वर्ष	१ ३ ५ ७	५ १० १५ २०	१ ३ ४ ६	२ ५ ७ १०	१ ३ ५ ७	४ ९ १३ १८	४ ८ १२ १६
भुक्त मास	९ ६ ३ ०	० ० ० ०	६ ० ६ ०	६ ० ६ ०	९ ६ ३ ०	६ ० ६ ०	० ० ० ०
चरण	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४
नवमांश	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१ २ ३ ४
स्वामि	मं. शु. बु. च.	सू. बु. शु. मं.	गु. श. श. गु.	मं. शु. बु. चं.	सू. बु. शु. मं.	गु. श. श. गु.	मं. शु. बु. चं.
नक्षत्र	अश्विनी १	भरणी २	कृत्तिका ३	रोहिणी ४	मृगशीर्ष ५	आर्द्रा ६	पुनर्वसु ७
योग	विष्कुम्भ	प्रीति	आयुष्मान	सौभाग्य	शोभन	अतिगंड	सुकर्मा

नक्षत्र	पुष्य ८	आश्लेषा ९	मघा १०	पू. फा. ११	उ. फा. १२	हस्त १३	चित्रा १४
चरण	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २
अक्षर	हु हे हो डा	डी डु डे डो	मा मी मू मे	मो टा टी टू	टे टो पा पी	पू ष ण ठ	पे पो
वर्ग	: : : श्वान	: : : :	उंदर : : :	उंदर श्वान : :	: : उंदर :	: मृग श्वान :	उंदर :
अवकहड़ा चक्र	योनि गण यु.ना. नाड़ी	योनि गण यु.ना. नाड़ी	योनि गण यु.ना. नाड़ी	योनि गण यु.ना. नाड़ी	योनि गण यु.ना. नाड़ी	योनि गण यु.ना. नाड़ी	योनि गण
	मेष देव मध्य मध्य	मार्जार राक्षस मध्य अन्त्य	मूषक राक्षस मध्य अन्त्य	मूषक मनुष्य मध्य मध्य	गौ मनुष्य मध्य आद्य	महिषी देव मध्य आद्य	व्याघ्र राक्षस
पूर्वराशि	३ ३ ३ ३	३ ३ ३ ४	४ ४ ४ ४	४ ४ ४ ४	५ ५ ५ ५	५ ५ ५ ५	५ ६
अंश	६ १० १३ १६	२० २३ २६ ०	३ ६ १० १३	१६ २० २३ २६	० ३ ६ १०	१३ १६ २० २३	२६ ०
कला	४० ० २० ४०	० २० ४० ०	२० ४० ० २०	४० ० २० ४०	० २० ४० ०	२० ४० ० २०	४० ०
अष्टोत्तरी महादशा	रवि	रवि	चन्द्र	चन्द्र	चन्द्र	मंगल	मंगल
भुक्त वर्ष	३ ३ ४ ४	४ ५ ५ ६	१ २ ३ ५	६ ७ ८ १०	११ १२ १३ १५	० १ १ २	२ ३
भुक्त मास	४ ९ १ ६	१० ३ ७ ०	३ ६ ९ ०	३ ६ ९ ०	३ ६ ९ ०	६ ० ६ ०	६ ०
भुक्त दिन	१५ ० १५ ०	१५ ० १५ ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ०
विंशोत्तरी महादशा	शनि १९	बुध १७	केतु ७	शुक्र २०	रवि ६	चन्द्र १०	मंगल ७
भुक्त वर्ष	४ ९ १४ १९	४ ८ १२ १७	१ ३ ५ ७	५ १० १५ २०	१ ३ ४ ६	२ ५ ७ १०	१ ३
भुक्त मास	९ ६ ३ ०	३ ६ ९ ०	९ ६ ३ ०	० ० ० ०	६ ० ६ ०	६ ० ६ ०	९ ६
चरण	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २
नवमांश	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१ २ ३ ४	५ ६
स्वामि	सू. बु. शु. मं.	गु. श. श. गु.	मं. शु. बु. चं.	सू. बु. शु. मं.	गु. श. श. गु.	मं. शु. बु. चं.	सू. बु.
नक्षत्र	पुष्य ८	आश्लेषा ९	मघा १०	पूर्वा फा. ११	उ. फा. १२	हस्त १३	चित्रा १४
योग	धृति	शूल	गंड	वृद्धि	ध्रुव	व्याघात	हर्षण

सूर्यकी सायन राशि लेनी	अयन	गोल	ऋतु
(१) मेष (Aries)	उत्तर	उत्तर	वसंत
(२) वृष (Taurus)	उत्तर	उत्तर	ग्रीष्म
(३) मिथुन (Gemini)	उत्तर	उत्तर	ग्रीष्म
(४) कर्क (Cancer)	दक्षिण	उत्तर	वर्षा
(५) सिंह (Leo)	दक्षिण	उत्तर	वर्षा
(६) कन्या (Virgo)	दक्षिण	उत्तर	शरद

अवकहड़ा चक्र तथा महादशाओं के लिये चंद्र राशि लेनी । अब अयन (उत्तरायण या दक्षिणायन) गोल (क्रांति उत्तर या दक्षिण) और ऋतु के लिये केवल सायन सूर्य लेना । पंचांग से लिये दैनिक स्पष्ट सूर्य या कोई भी ग्रह के राशि को अयनांश मिलाने से सूर्य या कोई भी ग्रह सायन हो सकेगा ।

हरेक वार को एक घण्टा (कलाक) सूर्योदय से स्थानिक समय के शुभाशुभ ज्ञान के लिये होरा प्रवेश चक्र

	वार / कलाक	रवी	सोम	मं.	बुध	गुरु	शुक्र	शनी
प्रभात पहला	६	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी
	७	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु
	८	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग
	९	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	रवी
	१०	शनी	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र
	११	गुरु	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग	बुध
मध्याह्न बाद	१२	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र
	१३	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी
	१४	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु
	१५	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग
	१६	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	रवी
	१७	शनी	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र
सूर्यास्त के बाद	१८	गुरु	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग	बुध
	१९	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र
	२०	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी
	२१	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु
	२२	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग
	२३	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	रवी
मध्यरात्री के बाद	२४	शनी	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र
	१	गुरु	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग	बुध
	२	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र
	३	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी
	४	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु
	५	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग

शुभ होरा चंद्र बुध गुरु और शुक्र है । सूर्य की होरा राज्य सेवा करने में, बुध की ज्ञान प्राप्त करने में, शुक्र की प्रवास में, शनी की द्रव्य संग्रह में, गुरु की विवाह करने में, मंगल की युद्ध अथवा वाद-विवाद में और चंद्र की होरा हरेक कार्य में शुभ है ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

उत्तराषाढ़ा तीसरे चरण के पश्चात् ९-६-४० से ९-१०-५३-२० (कला २५३ वि. २० जो श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण में समाते हैं) तक अभिजित नक्षत्र कहलाता है। इस नक्षत्र की (अष्टोत्तरी) शनि महादशा २॥ वर्ष की होती है। इसके पश्चात् ९-१०-५३-२० से ९-२३-२० (कला ७४६-४० भोग) तक श्रवण नक्षत्र की शनि महादशा ७॥ वर्ष भुक्त होती है, अर्थात् उत्तराषाढ़ा के तीसरे चरण तक वर्ष पांच और श्रवण नक्षत्र पूर्ण की कुल अष्टोत्तरी शनि महादशा १० वर्ष की भोग्य होती है। अभिजित नक्षत्र की योनि नकुल, गण मनुष्य और नाड़ी अन्त्य है।

अष्टोत्तरी शनि महादशा :
A ०६,११,२०,३१,३५ B ०७,११,२६,४७,०८
C ०८,०७,२७,५१,२५ D ०१,०३,२८,५५,४३

अवकहड़ा चक्र : भुक्त नक्षत्र चरण राश्यादि और स्वामी, चरणात्मक अष्टोत्तरी : विंशोत्तरी महादशाओं और ऋतुओं की सारणी

चक्र राशि	(७) तुला			(८) वृश्चिक		(९) धनु		(१०) मकर		(११) कुंभ		(१२) मीन		
वर्ण हंसक वश्य	शूद्र वायु मानव			ब्राह्मण वारि कीट जल		क्षत्रिय अग्नि मान/चतु.		वैश्य भूमि चतु./जल		शूद्र वायु मानव		ब्राह्मण वारि जलचर		
नक्षत्र	चित्रा १४	स्वाती १५	विशा. १६	अनु. १७	ज्येष्ठा १८	मूल १९	पू.षा. २०	उ.षा. २१	श्रवण २२	धनिष्ठा २३	शत. २४	पू.भा. २५	उ.भा. २६	रेवती २७
चरण	३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४
अक्षर	रा री	रु रे रो ता	ती तू ते तो	ना नी नू ने	नो य यी यु	ये यो भा भी	भू धा फा ढा	भे भो जा जी	खी खू खे खो	गा गी गु गे	गो सा सी सू	से सो दा दी	दू था झा	दे दो चा ची
वर्ण	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अवकहड़ा चक्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पूर्णराशि	६ ६	६ ६ ६ ६	६ ६ ७ ७	७ ७ ७ ७	७ ७ ७ ८	८ ८ ८ ८	८ ८ ८ ८	९ ९ ९ ९	९ ९ ९ ९	९ १० १० १०	१० १० १० १०	१० १० ११ ११	११ ११ ११ ११	११ ११ ११ ०
अंश	३ ६	१० १३ १६ २०	२३ २६ ० ३	६ १० १३ १६	२० २३ २६ ०	३ ६ १० १३	१६ २० २३ २६	० ३ ६ १०	१३ १६ २० २३	२६ ० ३ ६	१० १३ १६ २०	२३ २६ ० ३	६ १० १३ १६	२० २३ २६ ०
कला	२० ४०	० २० ४० ०	२० ४० ० २०	४० ० २० ४०	० २० ४० ०	२० ४० ० २०	४० ० २० ४०	० २० ४० ०	२० ४० ० २०	४० ० २० ४०	० २० ४० ०	२० ४० ० २०	४० ० २० ४०	० २० ४० ०
अष्टोत्तरी महादशा	मंग	मंगल	मंगल	बुध	बुध	बुध	शनि	शनि	शनि	गुरु	गुरु	गुरु	राहु	राहु
भुक्त वर्ष	३ ४	४ ५ ५ ६	६ ७ ७ ८	१ २ ४ ५	७ ८ ९ ११	१२ १४ १५ १७	० १ १ २	३ ४ ५ ६	७ ८ ९ १०	१ ३ ४ ६	७ ९ ११ १२	१४ १५ १७ १९	० १ २ ३	३ ४ ५ ६
भुक्त मास	९ ०	९ ० ९ ०	९ ० ९ ०	५ १० ३ ८	१ ६ ११ ४	९ २ ७ ०	७ ३ १० ६	४ २ ० ११	११ ७ ३ ०	७ २ ९ ४	११ ६ १ ८	३ १० ५ ०	९ ६ ३ ०	९ ६ ३ ०
भुक्त दिन	० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	१५ ० १५ ०	० ० ० २१	२७ २८ २९ ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०
विंशोत्तरी महादशा	मं. ७	राहु १८	गुरु १६	शनि १९	बुध १७	केतु ७	शुक्र २०	A रवि ६	B C D चन्द्र १०	मंगल ७	राहु १८	गुरु १६	शनि १९	बुध १७
भुक्त वर्ष	५ ७	४ ९ १३ १८	४ ८ १२ १६	४ ९ १४ १९	४ ८ १२ १७	१ ३ ५ ७	५ १० १५ २०	१ ३ ४ ६	२ ५ ७ १०	१ ३ ५ ७	४ ९ १३ १८	४ ८ १२ १६	४ ९ १४ १९	४ ८ १२ १७
भुक्त मास	३ ०	६ ० ६ ०	० ० ० ०	९ ६ ३ ०	३ ६ ९ ०	९ ६ ३ ०	० ० ० ०	६ ० ६ ०	६ ० ६ ०	९ ६ ३ ०	६ ० ६ ०	० ० ० ०	९ ६ ३ ०	३ ६ ९ ०
चरण	३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४
नवमांश	७ ८	९ १० ११ १२	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२
स्वामि	शु. मं.	गु. श. श. गु.	मं. शु. बु. चं.	सू. बु. शु. मं.	गु. श. श. गु.	मं. शु. बु. चं.	सू. बु. शु. मं.	गु. श. श. गु.	मं. शु. बु. चं.	सू. बु. शु. मं.	गु. श. श. गु.	मं. शु. बु. चं.	सू. बु. शु. मं.	गु. श. श. गु.
नक्षत्र	चित्रा १४	स्वाती १५	विशाखा १६	अनु १७	ज्येष्ठा १८	मूल १९	पू.षा. २०	उ.षा २१	श्रवण २२	धनिष्ठा २३	शत २४	पू. भा. २५	उ.भा. २६	रेवती २७
योग	हर्षण	वज्र	सिद्धि	व्यतिपात	वरीयान	परिघ	शिव	सिद्ध	साध्य	शुभ	शुक्ल	ब्रह्म	ऐंद्र	वैधृति

राशि का अयन गोल ऋतु	(७) तुला (Lybra)			(८) वृश्चिक (Scorpio)			(९) धनु (Sagittarus)			(१०) मकर (Capricorn)			(११) कुंभ (Aquarius)			(१२) मीन (Piscies)		
	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु
	दक्षिण	दक्षिण	शरद्	दक्षिण	दक्षिण	हेमन्त	दक्षिण	दक्षिण	हेमन्त	उत्तर	दक्षिण	शिशिर	उत्तर	दक्षिण	शिशिर	उत्तर	दक्षिण	बसन्त

अन्तर्दशा निकालने की समझ— कोई भी ग्रह की महादशा में प्रथम खुद की और उसके बाद अनुक्रम से (दशाधिपति) महादशा वाले ग्रह की अन्तर्दशा आती है। अन्तर्दशा निकालने के लिए नियम यह है कि एक ग्रह की महादशा में कोई भी ग्रह की अन्तर्दशा निकालनी हो तो महादशा और अन्तर्दशा वाले दोनों ग्रहों की जितनी वर्ष की महादशा है उनको गुणा करके जवाब में आ जाय उसे मास समझना और वह अष्टोत्तरी हो तो नौ से तथा विंशोत्तरी हो तो दश से भाग कर जो आवे उसे मास समझना।

उदाहरण के लिए अष्टोत्तरी सूर्य की महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा निकालनी है तो सूर्य के वर्ष ६ और चन्द्र के वर्ष १५ का गुना करने से ९० होता है, उसको मास समझना अष्टोत्तरी है, इसलिए नौ से भाग से सूर्य में चन्द्र (या चन्द्र में सूर्य) मास १० आये, इसी तरह विंशोत्तरी सूर्य महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा निकालनी है, तो सूर्य के वर्ष ६ तथा शुक्र के वर्ष २० का गुना करने से १२० मास होते हैं, इसको १० से भाग करने से सूर्य में शुक्र (या शुक्र में सूर्य) १२ मास (१ वर्ष) आते हैं। इसी तरह हरेक महादशा में अन्तर्दशा आसानी से निकल सकती है।

राशि	अक्षर	राशि	अक्षर
१. मेष	अ, ल, ई	७. तुला	र, त
२. वृषभ	ब, व, ऊ	८. वृश्चिक	न, य
३. मिथुन	क, छ, घ	९. धनु	भ,ध,फ,ढ
४. कर्क	ड, ह	१०. मकर	ख, ज
५. सिंह	म, ट	११. कुम्भ	ग, श
६. कन्या	प, ठ, ण	१२. मीन	द, च, झ, थ

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यादि ग्रहों के लिए दान													संख्या	मन्त्र	अवस्था
सूर्य	कनक	भनि	धन	गुड़	सुवण	ताम्र	कमल	रक्तवस्त्र	रक्त चंदन	चामर	दक्षिणा	जप	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	वर्ष २२
चन्द्र	मोती	चाँदी	सिता	शख	वंशपात्र	चावल	कपुर	श्वेतवस्त्र	श्वेत चंदन	श्वेतवस्त्र	दक्षिणा	जप	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	वर्ष २४
भौमः	मूंगा	कनक	गुड	सुवर्ण	ताम्र	रक्तवस्त्र	रक्तचन्दन	रक्तवृषभ	मसूर	रक्तपुष्प	दक्षिणा	जप	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	वर्ष २८
बुधः	हरितवस्त्र	मूंगी	कांस्य	घृत	मिश्री	हाथीदांत	सवर्ण	पन्ना	पुष्प	कपूर	दक्षिणा	जप	८०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	वर्ष २२
गुरुः	हरिद्रा	घोड़ा	खाण्ड	सुवर्ण	सिता	पुष्पराग	पीतवस्त्र	लवण	पीतपुष्प	मोदक	दक्षिणा	जप	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	वर्ष १६
शुक्रः	श्वेतवस्त्र	श्वेतवस्त्र	घृत	श्वेतचन्दन	हीरा	चांदी	चावल	खाण्ड	दुग्ध	श्वेतपुष्प	दक्षिणा	जप	११०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	वर्ष २५
शनिः	तिल	तेल	माष	नीलम	कृष्णपुष्प	कृष्णवस्त्र	कृष्ण गौ	महिषी	लोहा	सुवर्ण	दक्षिणा	जप	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	वर्ष ३६
राहु	गुलभेद	घोडा	खड़ग	नीलम	कम्बल	सूवर्ण	तिल	तेल	नरेल	सप्तधान्य	दक्षिणा	जप	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	वर्ष ४२
केतु	कस्तूरी	कम्बल	खण्ड	बकरा	तिल	सवर्ण	खण्ड	सप्तधान्य	खोपा	कृष्णवस्त्र	दक्षिणा	जप	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	वर्ष ४२

सूर्यादिग्रहपीडासु स्नानार्थमौषधानि—(यथा सिद्धौषधं रोगान्नश्येयुर्मन्त्रतो भयम् तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति ।।)

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनशिला	पंचगंव्य	बिल्व छाल	गोबर	मालती	इलायची	काले तिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्त चंदन	अक्षत	पुष्प	मनशिला	सुरमा	तिल पत्र	तिल पत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	श्वेत सरसों	सुवृक्ष मूल	लोबान	मुत्थरा	मुत्थरा
केशर	सिप्पी	रक्त पुष्प	गोरोचन	मुलट्ठी	केशर	धमनी	गजदन्त	गजदन्त
खश	श्वेत चंदन	सिंगरफ	मधु	मधु		सौंफ	कस्तूरी	छागमूत्र
मुलट्ठी	स्फटिक	माल कंगनी	मोती	मालती		मुत्थरा		
रक्तपुष्प		मौलसिरी	सुवर्ण			खिल्लां		
रक्तकनेर								

ग्रहपीड़ा निवृत्ति के लिए यन्त्र

सूर्ययन्त्रम्			चन्द्रयन्त्रम्			भौमयन्त्रम्			बुधयन्त्रम्			गुरुयन्त्रम्			शुक्रयन्त्रम्			शनियन्त्रम्			राहुयन्त्रम्			केतुयन्त्रम्		
६	१	८	७	२	९	८	३	१०	९	४	११	१०	५	१२	११	६	१३	१२	७	१४	१३	८	१५	१४	९	१६
७	५	३	८	६	४	९	७	५	१०	८	६	११	९	७	१२	१०	८	१३	११	९	१४	१२	१०	१५	१३	११
२	९	४	३	१०	५	४	११	६	३	१२	७	६	१३	८	७	१४	९	८	१५	१०	९	१६	११	१०	१७	१२

नवरत्न मुद्रा		
गुरु-पन्ना	शुक्र-हीरा	चन्द्र-मोती
गुरु-पुखराज	सूर्य-मणि	म०-मूंगा
केतु-लग्न	शनि-नीलमे	रा०-गुल्मे

अदरक के लाभः—अदरक को नमक लगाकर खाने से हाजमा को तेज करता हैं। जबान और गले को साफ करता है। कबज को दूर करके भूख को बढ़ाता है। अदरक के रस में मधु मिलाकर प्रयोग करने से खांसी, दमा और जिगर के रोगों को दूर करता है। अदरक घी में भूनकर कुछ नमक मिलाकर खाने से अफारा दूर होता है। अदरक का रस निंबू के रस में नमक डालकर पीने से बदहजमी दूर होती है। चाय की तरह जल में पका कर दूध मिलाकर पीने से सर्दी, खांसी, जुकाम को लाभ होता है।

सर्वाङ्ग विभागे पल्ली (छिपकली कोड़ किरली) पतन फलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रू मध्ये	राज्य संबंधः	वामपादे	नाशः
नासग्रे	वधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	प्रधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयं	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्र लाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धि नाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा.मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभी	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्न भोजन
ललाटे	बंधुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
द० कर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनाप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिवधे	मनस्तोषः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धनलाभः

छिक्का फल—छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग से अथवा "छींक सूंघनी छलकर लीन्हीं। पीनस, सर्दी, घास फल हीनीं ।। छींक पीठ की कुशल उचारे। बांई कारज सबैं संवारे ।।१।। सम्मुख छींक लड़ाई भाषैं, छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ।।२।। ऊँची छींक कहे जयकारी, नीची छींक होये भयकारी। अपनी छींक महादुखदायी, ऐसे छींक विचारो भाई ।।३।। कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वेश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले। शयन के समय और सन्ध्यावन्दन जपादि के आरम्भ में छींक अशुभ नहीं होती।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

पल्लीपतने (छिपकली के गिरने पर) शुभ तिथि वार नक्षत्र—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ लाभदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल होता है। अश्वि. रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। इनके अतिरिक्त तिथि नक्षत्र वारादि में छिपकली गिरे तो अशुभ होता है।

पल्लीपातेकर्त्तव्य कर्म्म—पल्ली (किरली) तथा सरठ (गिरगट) स्पर्श पर वस्त्र सहित स्नान करें। जन्म नक्षत्र, मृत्यु योग, दग्ध दिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पाप ग्रह-युक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा में पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्यु-ञ्जय का जप वा तिल स्वर्णदान पंचगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्रदान करना भी उत्तम है।

अंगस्फुरण फलम्

पुरुषों का दायां अङ्ग और स्त्रियों का बायां अङ्ग फड़कना शुभ है। इन्हीं अङ्गों में तिल, लहसुन, मस्सा हो या खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज उठे तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक ललाट	पृथ्वीलाभ स्थानलाभ	स्कन्ध भ्रू मध्य	भोगसमृद्धि सुख प्राप्ति	कपोल नेत्र	शुभाप्ति वनाप्ति	हस्त नेत्रोर्ध्व	द्रव्य लाभ विजय	पादोपरि वक्षः स्थल	स्थान लाभ विजय	हृदय कटि	इष्ट सिद्धि प्रमोद	नाभि आंत्रिक	स्त्री नाश कोष वृद्धि	भग कुक्षि	पति प्राप्ति सुप्रीति	उदर लिंग	कोष लाभ स्त्री लाभ

नामाक्षरों से वैरवर्ग देखने का कोष्ठक। स्वकीय-वर्ग से पंचक वर्ग वैरी समझना

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुण	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढा

घाततिथिर्घातवारः घातनक्षमेव च।
यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम् ॥

अथ } घातचक्र

{ विवाह व उपनयनादि में यह घात चक्र वर्ज्य नहीं है।
यह घातचक्र द्यूत, प्रवास, राजदर्शन और यात्रा में वर्ज्य करें।

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५	४।९।१४	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	३।८।१२	५।१०।१५
घातवार	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगलवार	गुरुवार	शुक्रवार
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शततारका	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	विष्कुंभ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शुक्ल	शुक्ल	व्यतिपात	वज्र	वैधृति	गंड	वज्र
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बव	कौलव	तैतिल	ग र	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पाद
प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पुरुष घातचन्द्रः	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनुः	वृषभ	मीन	सिंह	धनुः	कुम्भ
स्त्री घातचन्द्र	मेष	धनुः	धनुः	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनुः	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहाः	गोचराद्यैर्दशाक्रमाद्यं ग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः												जप सं०	जपनीय मन्त्राः	समय	समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केसर	मूंगा	रक्त गौ	रक्त चंदन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सू. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर	श्वेत बैल	श्वेत चंदन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्त चंदन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरा वस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपा मार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचणे	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेत चंदन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उडद	कुलथी	तेल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णगौ	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड़ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रौ	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	केबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रौ	कुशा
मुन्था	मोती	सवर्ण	कांसी	चावल	सवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेनपुष्प	कपूर	मिसरी	श्वेत चंदन	हाथी दांत	मुंथेशवत्	मुन्थेश मन्त्र		मुन्थेशकाले

अथ ग्रहाणां विंशोत्तरीय महादशायामन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्र दशा वर्ष १०				भौम दशा वर्ष ७			
कृ.उ.फा.उ.षा. तन्मध्येऽन्तरम्				रो. ह. श्रवण तन्मध्येऽन्तरम्				मृ. चि. ध. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७
चं	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६
रा	०	१०	२४	बृ	१	४	०	श	१	१	९
बृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६
शु	०	[illegible]	[illegible]	र	०	६	०	चं	०	७	०

राहु दशा वर्ष १८				गुरु दशा वर्ष १६				शनि दशा वर्ष १९			
आर्द्रा स्वा.श. तन्मध्येऽन्तरम्				पुन. वि. पूभा. तन्मध्येऽन्तरम्				पु. अनु. उभा. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि
रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८	श	३	०	३
बृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९
बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०
के	१	०	१८	शु	२	८	०	र	०	११	१२
शु	३	०	०	र	०	९	१८	चं	१	७	०
र	०	१०	२४	चं	१	४	०	मं	१	१	९
चं	१	६	०	म	०	११	६	रा	२	१०	६
मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ	२	६	१२

बुध दशा वर्ष १७				केतु दशा वर्ष ७				शुक्र दशा वर्ष २०			
अश्ले. ज्ये. रे. तन्मध्येऽन्तरम्				म. मू. अश्वि. तन्मध्येऽन्तरम्				पूफा. पूषा. भ. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	०
के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	०
शु	२	१०	०	र	०	४	६	चं	१	८	०
र	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
चं	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
म	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	[illegible]	२	०

[शेष पृष्ठ १४१ का]

विभिन्न ग्रहों के रत्न और धातुएं

ग्रह	रत्न	धातुएं
१. सूर्य	माणिक्य	स्वर्ण
२. चन्द्र	मोती	चांदी
३. मंगल	मूंगा	स्वर्ण
४. बुध	पन्ना	स्वर्ण, कांसी
५. गुरु	पुखर	चांदी
६. शुक्र	हीरा	चांदी
७. शनि	नीलम	लोहा, शीशा
८. राहु	गोमेद	पंच धातु
९. केतु	लहसुनियां	पंच धातु

१२ राशियों के रत्न और उपरत्न

राशि	रत्न और उपरत्न
१. मेष	त्रिकोण प्रवाल (मूंगा)
२. वृष	हीरा एवं षट्कोण पन्ना
३. मिथुन	पंचकोण पन्ना एवं मोती
४. कर्क	नीलम एवं गोल मोती
५. सिंह	गोल माणिक
६. कन्या	पन्ना
७. तुला	श्वेत पुखराज एवं हीरा
८. वृश्चिक	प्रवाल (मूंगा)
९. धनु	पीला पुखराज
१०. मकर	नीलम
११. कुम्भ	वैदूर्य (लहसुनिया) फिरोजा एवं नीलम
१२. मीन	गोमेद और पुखराज

विभिन्न अंग्रेजी महीनों में जन्म लेने वाले व्यक्तियों के लिए धारण करने योग्य रत्न

महीने का नाम	संबन्धित रत्न	महीने का नाम	सम्बन्धित रत्न
१. जनवरी	मूंगा (प्रवाल)	७. जुलाई	माणिक
२. फरवरी	एमेथिस्ट	८. अगस्त	गोमेद
३. मार्च	एक्वामरीन	९. सितम्बर	नीलम
४. अप्रैल	हीरा	१०. अक्टूबर	चन्द्रकान्त
५. मई	पन्ना	११. नवम्बर	पुखराज
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ सूर्यादिग्रहाणां भावानुसार गोचर फलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानांतर	भयं	श्रीः	मानभंग	दैन्य	विजयः	मार्गः	पीड़ाः	सुख. नाश	सिद्धिः	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्रः	धनलाभ	सन्तोष	सुखं	रोगः	ज्ञानवृ.	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोगः	धर्मलाभ	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
भौमः	शत्रुभय	धनहानि	धनलाभ	शत्रुभीः	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्रीकष्ट	शत्रुभय	शत्रु पीड़ा	शोकः	धनलाभ	धनहानि
बुधः	सुख	धनलाभ	शत्रु भय	पशुलाभ	सुखं	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेश	धनलाभ	सुखं	शोकः	राजमान्य	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभः	शत्रुभय	शोकः	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुखः	धनलाभ	धनलाभ
शनिः	भयं	धनहानि	ऐश्वर्यं	शत्रु भीः	पुत्र कष्टं	धनलाभ	दोषः	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन.	धनलाभ	धनलाभ
राहुः	हानिः	धनहानि	धनलाभ	वैरं	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्युः	दुःखं	वैरं	सुखं	शोकः
केतुः	रोगः	वैर	सुखं	भयं	सुखं	धनलाभ	कलहः	रोगः	पापं	शोकः	कीर्तिः	शत्रुभय

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	नृपभीः	धनलाभ	हानिः	कष्टम्	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाश	सुखं	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभ	हर्षः	शत्रुना.	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदय	विजयः	धनलाभ	व्यग्रः
भौमः	प्रणाः	धननाश	जयः	व्यसनं	दुर्मति	शत्रुना.	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यला.	धनलाभ	विरोध
बुधः	सौख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मानलाभ	सुखला.	रोगः
गुरुः	सुखम्	धनलाभ	जयः	वाह.ला.	पुत्रः प्रा.	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्मलाभ	राज्यला.	धनला.	शोकः
शुक्रः	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला.	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रु भीः	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोदय	मानला.	क्षेमला.	व्यय
शनिः	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभ	दुःखम्	पुत्र पीड़ा	जयः	स्त्रीकष्ट	रोगः	भाग्यहा.	धनहानि	धनला.	चिन्ता
राहुः	शिरोर्ति	राजभीः	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रुना.	रोगभीः	कष्टम्	धर्महानि	विजयः	सुलाभ	व्याधि
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्य	राजभीः	दुर्बुद्धिः	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्यना.	धनलाभ	लाभः	शोकः
मुंथा	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनं	दुःखम्	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभः	कष्टम्

अथ पुरुषजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनं २	भ्रातः ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	स्त्री ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	शूरः	धनी	सुखी	दुखी	अपुत्रः	बली	स्त्रीजित्	अल्पायुः	सुखी	शूरः	धनी	पतितः
चन्द्रः	जड़ः	कुटुम्बी	क्रूरः	सुशीलः	पुत्रवान्	अल्पायुः	ईर्ष्यालुः	रोगी	सुभगः	धीरः	ख्यातः	हीनांग
भौमः	व्रणीः	कुटिलः	विक्रमी	पीड़ितः	अपुत्रः	शत्रुजित्	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्यः	पतितः
बुधः	विद्वान्	धनी	दुर्जनः	सुखी	मन्त्री	दुःशीलः	धर्मज्ञः	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़ः
गुरुः	चिरायुः	धनी	कृपणः	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्धः	अल्पायुः	पुत्रवान्	सुकृतिः	धनी	दरिद्रः
शुक्रः	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान्	रोगी	क्रोधी	नीचः	प्रतापी	सुमतिः	धनाढ्यः	खलः
शनिः	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दुःखी	दरिद्रः	सुखी	दुःखी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दुःखी
राहुः	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दुःखी	दुर्मगः	बली	अशुचिः	गतायुः	दैन्य	मानी	ख्यातः	पतितः
केतुः	अल्पायुः	धर्महा.	शूरः	दुःखी	अपुत्रः	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जनः

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनः २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	पतिः ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्त्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्रः	अल्पायुः	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पतिप्रि.	दुःखार्त्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनि	हीनांगी
भौमः	दुःखार्त्ता	वन्ध्या	अभ्रातृ.	दुःखिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दुःखिनी	कुपुत्रा	सधर्मा	दुष्टा
बुधः	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्धिः	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरुः	सती	सधना	भ्रातृम॰	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरूपा	सद्व्यया
शुक्रः	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्त्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रि.	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनिः	वन्ध्या	निर्धना	दंक्षा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दुःखार्त्ता	वन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहुः	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्त्ता	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्त्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतुः	दुःखार्त्ता	शोकार्त्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढ्या	विधवा	सदुःखा	शोकार्त्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रह दशा फल

ग्रह दो प्रकार के हैं एक शुभ और दूसरा अशुभ। अतः प्रथम शुभ और अशुभ ग्रहों का सामान्यतः किस तरह का फल मिलता है यह ध्यान में लाना चाहिए।

शुभ ग्रह दशा फल—आरोग्य, धनवृद्धि, शत्रु का पराजय, इष्ट कार्य की सिद्धि, ऐश्वर्य, आदि सुख।

अशुभ ग्रह दशा फल—लोकोपवाद, विश्वासघात, द्रव्य हानि, रोग, आप्तवर्ग के सदस्यों की मृत्यु, वियोग और कार्य में हानि आदि।

ग्रह दशा का फल निश्चित करने से पूर्व प्रथम उस ग्रह की स्थिति का विचार नीचे लिखे अनुसार करना चाहिए।

१. ग्रह किस भाव वा राशि में हैं, उच्च अथवा नीच और शुभ अथवा अशुभ भाव में हैं।

२. ग्रह शुभ या अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हैं अथवा नहीं।

३. महादशा के ग्रह से अन्तर्दशा का ग्रह किस स्थान में है और दोनों परस्पर शुभ योग करते हैं अथवा अशुभ योग।

४. महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु है या मित्र और गोचर ग्रह, शत्रु फलदायी हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।

महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अधिक अशुभ, मित्र हों तो शुभ, सम हों तो साधारण फल मिलता है। इसी प्रकार जन्म दशा का स्वामी और गोचर ग्रह दोनों अनुकूल हों तो शुभ फल, प्रतिकूल हों तो अशुभ फल और एक अनुकूल दूसरा प्रतिकूल हो तो मध्यम फल मिलता है।

इस तरह प्रत्येक विषय अर्थात् भाग्योदय काल, विद्या, उद्योग व्यापार, नौकरी, धन लाभ आदि का विचार करने से योग्य फल मिल सकता है।

ग्रहों की दशा अन्तर्दशा आदि का फल कहते समय यदि गोचर में शुभ ग्रहों की दृष्टि महादशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा के स्वामियों पर हों तो कुछ अशुभ फलों का नष्ट होना भी सम्भव है। इसके विपरीत यदि अशुभ ग्रह से इन दशाओं के स्वामी युक्त वा दृष्ट हों तो अशुभ फल अधिक बढ़ेगा।

इस तरह किसी भी ग्रह का शुभ या अशुभ फल कुंडली के ग्रहों पर से ध्यान में आ सकता है।

१, ४, ७, १० यह केन्द्र स्थान हैं, ५, ९ यह त्रिकोण, ३, ६, ११ यह त्रिषडाय स्थान कहलाते हैं और २, ८, १२ आपोक्लिम स्थान कहलाते हैं।

कई आचार्यों के मत से—४, ७, १० केन्द्र, १, ५, ९ त्रिकोण और शेष स्थान ऊपरवत कहे हैं।

दशा फल कहने से पहले ग्रहों के शुभाशुभत्व में विशेषता देखनी चाहिए। ग्रहों में शुभाशुभत्व दो प्रकार से देखना चाहिए। एक तो स्वाभाविक, दूसरा तात्कालिक।

स्वाभाविक शुभाशुभ—सू. मं. शनि नैसर्गिक क्रूर तथा गुरु शुभ नैसर्गिक पूर्ण बली चन्द्रमा शुभ, क्षीण बली पापी होता है तथा राहु केतु सहचर्य से फलप्रद हैं।

और तात्कालिक शुभाशुभ इस प्रकार कहा है, त्रिकोण का स्वामी हो तो शुभ फलदायक होता है और यदि त्रिषडाय का स्वामी हो तो पाप फलदायक होता है।

इससे सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह भी त्रिकोण-पति हो तो शुभ होता है तथा स्वभाविक शुभ यदि त्रिकोण पति हो तो अत्यन्त शुभदायक होता है। इसी प्रकार स्वभाविक शुभ भी यदि त्रिषड़ायपति हो तो पाप फलदायक होता है। तथा स्वभाविक पाप ग्रह त्रिषड़ाय-पति हो तो अत्यन्त पाप फलदायक होता है।

इसी प्रकार यदि शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बुध पूर्ण चन्द्र) केन्द्र के अधिपति हों तो प्राणियों को शुभाशुभ फल नहीं देते तथा पाप ग्रह (क्षीणचन्द्र, पापयुत बुध, रवि, शनि, मंगल) यदि केन्द्र के स्वामी हों तो अपने स्वभावानुसार पाप फल नहीं देते। अतः केन्द्र के स्वामी होने से शुभ ग्रह में पापत्व और पापग्रह में शुभत्व आ जाता है। इस से यह स्पष्ट है कि केन्द्राधिप न शुभ फल देता है और न अशुभ फल देता है।

लग्न से द्वादशेष तथा द्वितीयेष दूसरे ग्रहों के साहचर्य से तथा अपने स्थानान्तर (अन्य स्थानों) के अनुसार ही शुभ अथवा अशुभ दशा फल को देते हैं। इससे सिद्ध है कि व्ययेश और धनेश स्वभावानुसार शुभाशुभ फल नहीं देते। जिस प्रकार शुभ या अशुभ स्थान में रहते हैं, तथा जिस प्रकार के शुभ या अशुभ भावेश के साथ रहते हैं, अथवा जिस दूसरे स्थान के स्वामी हों वह राशि जैसी शुभ या अशुभ भाव में हो तदनुसार ही शुभ या अशुभ फल देते हैं। भावार्थ यह है कि द्वितीयेश आदि के साथ जो ग्रह रहता है वह तदनुसार ही फल देता है। यदि बहुत ग्रह साथ में हों तो उनमें जो बली हो तदनुरूप ही फल देता है।

तथा दीप्तादि अवस्था के भेद से भी फल में विशेषता होती है, यथा—दीप्त, स्वस्थ हर्षित और शान्त अवस्था बलि ग्रहों की दशा शुभ और अन्य अवस्था वालों की दशा अशुभ है।

शुभ ग्रहों का केन्द्राधिपत्य दोष जो कहा गया है वह गुरु और शुक्र का बलवान होता है। तथा शुभ ग्रहों के मारकत्व (सप्तमेशत्व) होने पर भी गुरु शुक्र में ही विशेषकर मारकत्व दोष होता है। इन दोनों में न्यून दोष बुध में और बुध से न्यून चन्द्रमा में होता है। अष्टमेष यदि त्रिकोण पति हो तो शुभ फल दायक और यदि त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त अशुभ फलदायक होगा।

इसी प्रकार यदि पाप ग्रह केन्द्र पति हो तो उसका स्वभाविक पापत्व मात्र नष्ट होता है। अतः केन्द्रपति होकर यदि त्रिकोणपति भी हो जावे तो उसमें शुभत्व आ जाता है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह यदि केन्द्रपति होकर त्रिषड़ायपति हो तो पापकारक हो जाता है।

प्रबल होने पर भी राहु और केतु जिस भाव में और जिस-जिस भावेश के साथ रहते हैं उसी के अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं।

जैसे कहा है—**यद्यद्भावगतं वाऽपि यद्यद्भावेश संयुतं।
तत्तत्फलानि प्रबलौ प्रदर्शिततावौ ग्रहौ॥**

योग—केन्द्रेश और त्रिकोणेश में परस्पर सम्बन्ध हो किसी अन्य भाव के स्वामी से सह वास न हो तो विशेष कर शुभ लाभदायक होते हैं।

ग्रहों की दीप्तादि अवस्था

ग्रह अपनी उच्च राशि में हो तो दीप्त अपनी राशि में स्वस्थ मित्र राशि में हर्षित शुभ राशि में शान्त नीच राशि में दीन, शत्रु राशि में पीड़ित, उदय राशि में शक्त, अस्तंगत राशि में लुप्त अवस्था होती है।

ग्रहावस्था फल—दीप्त अवस्था सुस्वरूप, कांतिमान्, बुद्धिमान् तीनों में जाने वाला और शत्रु का नाश करने वाला। **स्वस्थ अवस्था**—विजयी, राजपूजित, कीर्तिमान, सदा प्रसन्न, मलकीयत कराने वाला व ज्योतिषी। **हर्षित अवस्था**—धर्मात्मा, सदाचारी। **शान्त अवस्था**—तेजस्वी, शान्त, बांधवयुक्त। **दीन अवस्था**—बुद्धिहीन, पर स्त्री आसक्त। **पीड़ित अवस्था**—चिंता युक्त, मानसिक दुःख, रोगी। **शक्त अवस्था**—निरोगी, सुन्दर, मधुर भाषी, प्रशंसनीय। **लुप्त अवस्था**—अधर्मी, रोगी, शत्रु पीड़ित।

नोट—जन्म समय के ग्रहों की अवस्था के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को आजन्म सुख या दुःख मिलता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यात्रा में त्याज्य तिथियां

षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, परवा (शुक्ल पक्ष की), पूर्णमासी, अमावस्या, चतुर्थी। नवमी, चतुर्दशी ये तिथियां यात्रा में निषिद्ध हैं।

जन्म-लग्न तथा राशि से अष्टम यात्रा लग्न में अशुभ है। कुम्भ लग्न और कुम्भ का निवास, मीन लग्न यात्रा में वर्जित है। केन्द्र १-४-७-१० और त्रिकोण ५-९ स्थान में ग्रह शुभ होते हैं। चन्द्रमा लग्न से ६-८-१२वां अशुभ होता है। दशम में शनि और सप्तम में शुक्र ६-१-६-१२ इन स्थानों में लग्नेश अशुभ होता है। यात्रा में नक्षत्रों की त्याज्य घड़ी—तीनों पूर्वाओं की प्रथम १६ घड़ी, कृत्तिका की प्रथम २१ घड़ी, मघा की ११ घड़ी, भरणी की ७ घड़ी और स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्लेषा इन नक्षत्रों की १४ घड़ी निषिद्ध हैं। यात्रा में भद्रा सर्वथा वर्जित है। पहला, सातवां, पांचवां और तीसरा तारा यात्रा में वर्जित है।

अगर जरूर जाना हो और दिशाशूल दोष हो तो वारों के मुताबिक पदार्थ खाकर जाने से दोष-निवृत्ति हो जाती है। नीचे चक्र में देखें।

चक्रम्

वार	र	चं	मं	बु	गु	शु	श
खाने के पदार्थ	घृतयुक्त पान	चंदन	गुड़	तिल	दही	घृत	तिल

भद्रायाँ मुखपुच्छ घटोज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	मासांतिथीनाम्
।	अ	उ.	नै	ई	द	वा.	पृ.	मासांतिथीनाम्
५	२	७	४	८	३	६	१	एयुयामेष्वादौ
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखप५कुशु
८	१	६	३	७	२	५	४	चपुयामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयंपुच्छंशुभम्

द्विपुष्कर-त्रिपुष्कर योग ज्ञानार्थं चक्र

(क्रूर) वार	रविवार, मंगलवार, शनिवार
(भद्रा) तिथि	२-७-१२
विषम चरण वाले नक्षत्र	कृति. पुन. उ.फा. विशा.उ.षा. पू.भा.
द्विपाद नक्षत्र	मृग. चि.धनि. से द्विपुष्कर योग बनता है।

त्रिपुष्कर-द्विपुष्कर योग फलम्-वार तिथि विषम चरण वाले नक्षत्रों के योग से त्रिपुष्कर योग होता है वह योग मृत्यु:, विनाश और वृद्धि में त्रिगुण फल देता है इसी प्रकार द्विपुष्कर योग के विषय में जानना चाहिए। इन योगों में किसी के यहां मृत्यु हो तो शास्त्रोक्त शान्ति करा लेनी चाहिए।

यात्रा के नक्षत्र

अ. अनु. ज्ये. मू. ह. म. पुन. पु. र. रो. इन नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, ११, १३ तिथियों में शुभ वारों में अच्छा शकुन विचार कर अनुकूल और सामने व दाहिने होने पर यात्रा करें। योगिनी बाएं या पीठ-पीछे हो तो यात्रा सफल होती है।

यात्रा में शकुन

हाथी, घोड़ा, ब्राह्मण, शराब, मांस, मछली, जल से भरा एक कलश, दही, नेवला, पुत्रवती स्त्री, सिंगार किए स्त्री, कन्या, ममोला, सरसों—ये शकुन हों तो कार्य सिद्ध होगा।

अशुभ शकुन परिहार

यात्रा में पहला अपशकुन हो तो ११ श्वास लेकर, दूसरा अपशकुन हो तो १६ श्वास लेकर और अगर तीसरा अपशकुन हो तो कभी न जाये। अनेक आचार्यों का मत है कि एक कोस जाने पर शुभ-अशुभ शकुनों का फल नहीं होगा।

यात्रा में अपशकुन

बिडाल, मुद्ध, विधवा स्त्री, बन्ध्या स्त्री, चमड़ा, सन्यासी, लकड़ियां, छींक, बुरे शब्द, हड्डियां अगर इनमें से कोई यात्रा के समय सामने आवे तो कार्य नष्ट होता है, नई आपत्ति आती है।

यात्रा आदि में शुक्र-विचार

गांव-से-गांव जाने में, दुर्भिक्ष व विवाह में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता। शुक्रान्ध—रे., अ., भ. व कृ. के प्रथम चरण तक शुक्र अन्धे रहते हैं। उसमें सम्मुख शुक्र दोष नहीं। शुक्र एवं गुरु, उदय व अस्त के ३ दिन पहले व ३ दिन बाद क्रमशः बाल व वृद्ध रहते हैं। इसमें शुभ कार्य न करें।

गोरखपतरा यात्रा-मुहूर्त

पौष	माघ	फाल्गु.	चैत्र	वैशा.	ज्येष्ठ	आषा.	श्राव.	भाद्र.	आश्वि.	कार्ति.	अग.	मासों की तिथियों का फल
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहुत सुख और अर्थपूर्ण हो, क्लेश न हो
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	भय, जीवहानि, पछतावा हो A सहित घर आवे
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कामना सिद्ध व अर्थपूर्ण हो B कुशल घर आवे
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश व जीव हानि, कुशल से घर न आवे
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु-लाभ, व्याधि व संकट कटे, मित्र मिलें
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	घर की चिंता, मित्र संकट, कदाचित घर आवे
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	भाग्योदय, मित्र व साधनों की प्राप्ति, रत्न A
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	बहुत बुरा हो, लेन-देन करना नहीं, जीवनाश हो
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	कामना व आशापूर्ण हो, सौभाग्य का उदय हो
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य प्राप्त हो, बहुत दिन लगें किंतु स- B
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश हो, जीव हानि नहीं, सौभाग्य पावे नहीं
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	सिद्धि प्राप्त, मित्र मिलें, विघ्न मिटे, धन लाभ

प्रहर १	प्रहर २	प्रहर ३	प्रहर ४	पूर्व दिशा	दक्षिण दिशा	पश्चि. दिशा	उत्तर दिशा
अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भीति	द्र.लाभ
भय	क्लेश	सुख	सुख	शून्य	नेष्ट	दारिद्र	समता
लाभ	सुख	सुख	हानि	क्लेश	दुःख	इष्टला	धनप्रा.
क्लेश	लाभ	क्लेश	विना	लाभ	सुख	मंगल	श्री.प्रा.
संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्य	धन	सुख
संकट	क्लेश	भय	अर्थ	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थ
विना	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्रव्यला	सुख
शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	का.सि.	कष्ट
लाभ	सम्पूर्ण	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	अर्थ	श्री.प्रा.
मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्र.लाभ	शून्य
मरण	सुख	सुख	सुख	शून्य	सुख	मृत्यु	अतिक.

योगिनी फल

पृष्ठे सुख की दायिनी। सन्मुख हरती प्रान।। दाहिनी दुःख की दायिनी। "कौशिक" योगिनी जान।। नोट—युद्ध, यात्रा में बांये और सन्मुख योगिनी त्याज्य है। टिप्पणी—आग्नेया पूर्वंद्विजेया दक्षिणादिक च नैॠता वायवी पश्चिमादिक स्यादशानी च तथोत्तरा। अग्नेय को पूर्व में, नैॠत्य को दक्षिण, वायव्य को पश्चिम और ईशान को उत्तर दिशा में जानकर चन्द्र निवास व दिशाशूल जानना चाहिये।

[शेष पृष्ठ १२३ पर]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आवश्यक मुहूर्त्ताः

मुहूर्तनाम	तिथयः	वाराः	नक्षत्रादिकम्
सरजोदर्शने स्नानम्	सत्	चं.बु. शु.गु.	ऽश्वि. रो. मृ. उ. ३ हृ. स्वा. ऽनु. ध. ज्ये. रे. ग्राह्याः । त्याज्याः—कृ. भ. मू. आ. पुन. पु. म. चि. वि. श्र.
गर्भाधान	सत्	,,	उ. ३ मृ. हृ. रो. स्वा. श्र. ध. श. अनु.
सीमन्त	सत्	र.मं.गु	मृ. पुन. पु. मू. श्र. हृ. रे. शुक्ले पक्षे मासेश्वरेसबले
जातकर्म नामकर्म	सत्	चं.बु. बृ.शु.	जन्मसमये वा. ११।१२ दिने ऽश्वि. रो. मृ. पुन २ उत्तरा ३ हृ. चि. स्वा. ऽनु. श्र. ध. रे. सद्भानि ।
सूतिका स्नानम्	सत्	सू.मं. गु.	हृ.मू. ऽनु. रो. उत्त. ३ ऽश्वि. स्वा. रे. सद्भानि पंचमशुद्ध लग्ने । त्याज्या: पुन. चि. वि. म.२ मू. आ. म. श्र.(चशबु)
जलपूजा	सत्	बु.गु. चं.	पु. पुष्य हृ. मृ. मू. ऽनु. श्र. सद्भानि । चैत्र पौष मलमास मासान्त गुरु शुक्र का अस्त यह वर्ज्य है ।
अन्नप्रशनं	२।३।५ ७।१० १३।१५	बु.गु. चं.शु.	बालानां षष्ठादि सममासेषु कन्यायाः पंचमादि विषम मासेषु ऽश्वि. रो. मृ. पुन. २ उ. ३ हृ.३ ऽनु. श्र.३ रे. भेषु । मीन वृश्चिक मेष लग्नानि । जन्मभं च वर्ज्यम् १० में शुद्धे ।
कर्णवेधः	४।६।१४ ३० वर्ज्य	बु.गु. शु.चं.	जन्मदिनात् १२ वा १६ दिन वा ६।७।८ मासेषु वा विषमवर्ष ऽश्वि. मृ. पुन.२ हृ.२ ऽनु. ऽभि. श्र. ध.रे. मेषु चन्द्र । ऽर्कबले ८मशुद्धलग्ने । वर्ज्याः चैत्र पौषहरिशयनं जन्म मासतारा ।
चौलकर्म	२।३।५ ७।१० ११।१३	बृ.बु. शु.चं.	३।५।७ वर्षे चैत्रहीनोत्तरायणे ऽश्वि. मृ. पुन. पु.हृ.चि.स्वा. ज्ये. ऽभि.श्र.ध.श.रे. सद्भानि । प्रथमोत्पन्न बालस्य ज्येष्ठे निषिद्धः गलग्रहे नेष्टः । अष्टमशुद्धलग्ने ।
विद्यारंभः	२।३।५।६ १०।११।१२	सू.गु. शु.	५ वर्षे, अ. मृ. आ. पुन. पु. पू ३, हृ. चि. स्वा. मू. श्र. ध. श. सद्भानि अनध्याय वर्जित दिने (उत्तरायणे) ।
निष्क्रमम्	सत्	शुभ वार	४ मासे यात्रोक्त तिथि वार नक्षत्रेषु अथवा जन्म से १२वे दिन या मंगलपूर्वक घर से बाहर निकाले ।
विपणी दुकान	सत्	सू.चं.बृ. बु.शु.श	अश्वि.ऽनु.रो.मृ. उ.३ पुष्य व ऽभि. रे हृ. चि. शुभलग्ने और लग्न में शुक्र चन्द्र होवें व्ययाष्टरहितैं पापैः । कुम्भग्नरहितैः
स्त्रीणां चोटी श्राटीगुथा	सत्	गु.चं.र. शु.मं.	हृ. मू. रो. पु. श्र. स्वा. उ.३ मृ. ऽश्वि. चि. ऽनु. रे. नक्षत्र लग्न २।३।४।५।१२ ।
चूड़ा पहनना	सत्	र.बु.मं गु.शु.	ऽश्वि. हृ. चि. स्वा. वि. ऽनु. ध. रे. सूर्याभाद्गणना । ने ८। श्रे ३। ने २। श्रे ७। ने २। श्रे ४। ने १।
वरवरण	सत्	शुभाः	पू. ३ उ. ३ कृ. रो. चन्द्रबल देखकर कुयोग रहित ।
कन्यावरण	सत्	चं.र.बु शुशगु.	पू. ३ श्र. धनु. उ. ३ स्वा. ध. कृ. रो. रे. मू. मृ. म. हृ. पापाः ३।६।११ शुभाः ५।४।७।१०।९।१ श्रेष्ठः ।
रोगमुक्त स्नानम्	रिक्ता	र.बु.बृ मं.श.	ऽश्वि. ३ मृ. २ पु. पु. ३ हृ. २ चि. ४ श्र. ३ ये नक्षत्र और चर लग्न अशुभ चन्द्र में ।
वापीकूप तडागारंभः	सत्	सत्	ऽनु. हृ. रे. उ. ३ रो. पु. ध. श. मघा मू. पूषा. शुभे मासे स्थिरे लग्ने च शुक्र गुर्वोदये ।
हलवाहनं	सत्	चं.बु. बृ.शु.	ऽश्वि. रो. मृ. पुन. २ उ. ३ हृ. ५ ऽनु. म. मू. ऽभि. श्र. ३ रे. रविभाद्गणना ३ ने । ८ श्रे. । ९ ने. । ८ श्रे. ।
चूल्हा स्थापनं	सत्	,,	पूर्वा ३ रो. पुष्य. उ. ३ ऽश्वि. आर्द्रा । रविभाद्गणना ६ श्रे. । ४ ने. । ८ श्रे. । ५ ने. । २ श्रे. । २ ने. । चन्द्रबलेसति ।
द्वारशाखा	५।७ ८।६	बृ.बु. शु.	रविभाद्ग. ४ श्रे । ८ ने। ८ श्रे। ३ ने। ४ श्रे । काष्ठशा ऽश्वि हृ. पुष्य रो. २उ. ३स्वा श्रे.पापणे ध.श.पूभा.३(७।१० में शु.ल.)
दत्तकपुत्र ग्रहण	सत्	र.मं. बृ.शु.	हृ. ४ ऽनु. ऽश्वि. ध. पुष्य सिंह वृष लग्न में वृश्चिक कुम्भलग्नत्याज्य है ।
वधू प्रवेशः	सत्	सत्	विवाह स २।४।५।६।७।८।९।१०।१२।१४।१६ दिनों में इसके पीछे विषममास विषमवर्ष में । हृ. ३ रो. २ ऽश्वि. रे. म. पुष्य. ध. श्र. ऊ. ३. मू. ऽनु. और स्थिर लग्न में ।
द्विरागमन मुकलावा	सत्	चं.बु. गु.शु.	मे. वृश्च. कुम्भस्थे रवौ मू. हृ. ३ रो. २ ऽश्वि. पुष्य उ. ३ श्र. ध. श. पुन. रे. चि. ऽनु. सौम्ययुक्त दृष्टे ।२।३।४।६।७।१२ लग्ने. रविज्य शुद्धियोगे सति । सन्मुखदक्षिण विवर्जितेभृगौसत्
गंधर्व विवाह	सत्	र.मं. श.	ऽश्वि. कृति. आर्द्रा. पुन. श्लेषा ज्ये. ध. श. एषु भेषु गुरुशुक्रयोरस्तादि दोषोपि नास्ति ।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्तम्

अश्वि. का वै., माघ, मार्ग. फा. मास श्रे. तथा मे. कर्क कं. तु. वृ. म. कुम्भस्थे रवौ श्रेष्ठः २।६।७।१०।१३।१५ आसु तिथिषु । अथवा या तिथिर्वंस्यदेवस्य तस्यांवाशुभद्: स्मृतः बाराः—सू. शु. बृ. सोमो मध्यमः पुन. पु. स्वा. उ. ३ श्र. ध. श. रे. अश्वि. हृ. ऽनु. रो. मृ.वि. ज्ये. व स्वस्वामी नक्षत्रेवा । लग्नाद् ३।६।११ पापा । १।४।५।७।९।१० साम्याः । चन्द्र तारानुकूले । गुरुशुक्रयोरुदितयोः शुभे लग्ने १२ शुद्धे सति मृत्युबाधि योग रहित । विष्णु-मत्रेस्थिरे, शिवस्यचरे । दुर्गाया द्विःस्वेलग्ने । कूर्पचक्रशुद्धी प्रारभेत् ।

सर्व शुभ कार्येषु महापातो वर्ज्यः—पश्चिममन्दिने प्लस्तद्दिनं वर्जयेच्छुभे । इतिनारदः । आद्यन्तकालयोर्मध्येकालोज्ञेयोतिदारुण ज्वलनाकारः सर्वकर्मसु गर्हितः । सूर्यसिद्धान्ते ।

साढ़ेतीन स्वयं सिद्धि मुहूर्त

साढ़े तीन स्वयं सिद्धि मुहूर्त १ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, २ वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तीज) ३ आश्विन शुक्ल दशमी (विजया दशमी) ४ कार्तिक शुक्ल प्रतिप्रदा ये चार स्वयंसिद्धि मुहूर्त हैं । इनमें किसी भी कार्य को करने के लिए पंचांग शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं है इसमें से प्रथम तीन मुहूर्त पूर्ण बली तथा चौथा अर्ध बली होने से इन्हें साढ़े तीन मुहूर्त कहते हैं।

॥ अभिजित मुहूर्त ॥

नित्य मध्याह्न में एक घटी अर्थात् ११ बजकर ४८ मि. से १२ बजकर १२ मि. तक के समय को समस्त विद्वानों ने अभिजित मुहूर्त की संज्ञा दी है । इस अभिजित मुहूर्त में अनेक दोष निवारण की शक्ति है । अतः कोई शुभ लग्न न बनता हो तो जातकादि सभी मुहूर्त अभिजित् मुहूर्त में किए जा सकते हैं ।

। हौमाहुति शुभाशुभ मुख ज्ञानम् ।

रवि नक्षत्र से दैनिक चन्द्र नक्षत्र तक गिने ३ नेष्ट तीन से ९ नक्षत्र संख्यांक तक श्रेष्ठ ९ से १२ तक नेष्ट । १२ से १४ तक श्रेष्ठ, १५ से १८ तक नेष्ट, १८ से २१ तक श्रेष्ठ शेष ६ नक्षत्र नेष्ट होते हैं ।

॥ शिव वास ज्ञानम् ॥

वर्तमान तिथि को दुगनी करके पांच और मिलावें सात से भाग दें । शेष १ बचे तो शिवजी का वास कैलास पर श्रेष्ठ, शेष २ में गौरी पार्श्वे श्रेष्ठ, शेष ३ में वृषारूढ़ श्रेष्ठ, ४ शेष समायां सम, ५ शेष में शावेलायां श्रेष्ठ, ६ शेष बचे तो शिवजी का वास क्रिड़ायों दुःख और ७ शेष में वास श्मशान में जानना फल मृत्युः ।

॥ हौम समये अग्नि वास ज्ञानम् ॥

हवन दिन तिथि संख्या में "वार" संख्या जोड़कर १ और मिलावें, ४ से भाग दें शेष ३।० बचे तो पृथ्वी में अग्नि का वास श्रेष्ठ, १ बचे तो अग्नि का वास आकाश में प्राण नाशक और दो शेष में अग्नि का वास पाताल में होता है जो धन हानि करता है ।

॥ गृहारम्भे शेषनाग फलम् ॥

दोहा—फन दाबे तिरिया क्षपै, पूंछ दबै भरतार ।
जो कोई दाबे मध्य में, होय कुटुम्ब संहार ॥

अर्थ—जो कोई शेषनाग के मुख पर से मकान की नींव रख चिनाई शुरू कर दे तो उस मकान मालिक की स्त्री नहीं बचती, इसी तरह पूंछ से स्वयं गृहकर्त्ता और मध्य से कुटुम्ब का नाश होता है, इसलिए शेष की चाल बचाकर मुहूर्त करना चाहिए । खात चक्र से स्पष्ट जानना ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अथ खात (खोदना) चक्रम्

सूर्य	विवाहे	देवालये	गृहारम्भे	जलाशये	शुभस्थान-अग्ने दिशा
सूर्य	२।३।४	१२।१।२	५।६।७	१०।११।१२	अग्ने दिशा
सूर्य	११।१२।१	९।१०।११	२।३।४	७।८।९	नैॠर्त ,,
सूर्य	८।९।१०	६।७।८	११।१२।१	४।५।६	वायव्य ,,
सूर्य	५।६।७	३।४।५	८।९।१०	१।२।३	ईशान ,,

टिप्पणी—तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से और वार की गिनती रविवार से की जाती है।

गृहारम्भ मुहूर्त शिल्प शास्त्र

दोहा—चार वेद तिथि दुगुनकरि, नाम के अक्षर जोड़।
शिव के नैना भाग दे, विश्वकर्मा ईंट चहोड़॥
एक बचे लक्ष्मेश्वरी, दोय बचे धनवान।
शून्य बचे जीवै नहीं, शिल्प बचन प्रमान॥

सूर्यसंक्रांति से इतना दिन ५।७।९।१०।२१।२४ धरती मूती जानना सूर्यनक्षत्रात् ५।७।९।१२।१९।२६ भूशयनकेचित्।

॥ चन्द्रमा विचार ॥

मेष-मकर लुब ककट सोते, कार्य समय ऐसे राशि होते।
कन्या मिथुन तुला धनु ठाढ़े, कुम्भ मीन सिंह वृश्चिक बैठे॥
सोते कूप खुदाइऐ, बैठि बसइए ग्राम।
ठाढ़े कटक सिधारिए, शिल्प शास्त्र प्रमाण॥

	यज्ञोपवीत मुहूर्त ज्ञानाय चक्रम्
वाराः	सू. चं. बु. बृ. शु. एषां वारे भद्रा ह्ग्वाणादि दोषरहिते
तिथि	२।३।५।१०।११।१२ शुक्ले। कृष्णे तु. २।३।५ परन्तु मास पराहे ने प्रदोषे
नक्षत्र	अ. ह. पु. उ. ३ रो. श्ले. स्वा. पुन. श्र. ध. मृ. चि. मू. अनु. पू. ३ आ. रे.
लग्नशुद्धि	३।६।११ पापाः २।७।१०।३ चन्द्रः १।४।५।७रा।१० सौम्या ११ सर्वशुभाः। चन्द्रशुक्र गुरुलग्नेशाः ६।८ नेष्टाः। चन्द्र-शुक्रौ १२निधौ। लग्नात१।५।८ पापानेष्टाः ३।८।१२ सौम्या-नेष्टाः। पूर्णचन्द्रोवृषकर्कगतो लग्ने शुभोन्याधान लग्ने र्कः शुभः। माघादिपञ्चमासाः शुभः। कवीज्ययोवृद्धस्वास्तवि-शात्वे न श्रेष्ठः। चैत्रे मीनार्कशुभम्।

सूर्यनक्षत्रात्कूप-जलचक्रम्

ईशान ३ क्षारजल	पूर्व ३ खण्डिज	आग्ने ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तमजं	म३ स्वाद तयाशीज	दक्षिण३ निर्जल
वायव्य३ मि. जल	पश्चिम ३ जल	नैॠत्य अमृतज.

गणना क्रम—मध्यपूर्व आग्नेय दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम् जल का वास भी गृहमध्ये कूप विचार से भूमि पर विचारे।

+ + + +

वारों के नाम—

वाराः सप्त रविः सोमो मंगलश्च बुधस्तथा।
बृहस्पति शुक्रश्च शनिश्चैव यथाक्रमम्॥

सायन दिन सात हैं—जैसे रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, ये यथाक्रम से होते हैं।

रविवार में कृत्य—

राजाभिषेकोत्सवयान-सेवा-गोवन्हिरम्भोषधिशस्त्रकर्म।
सुवर्णताम्रं निकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यादि रवौ विदध्यात्॥

राजाभिषेक, उत्सव, यात्रा, नौकरी, गोक्रय-विक्रय, अग्नि सम्बन्धी कार्य, मंत्र, औषध-निर्माण, औषध-भक्षण, शस्त्र सम्बन्धी कार्य, सोना, तांबा, ऊन-काष्ठ सम्बन्धी कार्य, युद्ध और व्यापार सम्बन्धी सब कार्य रविवार में करने चाहिए।

सोमवार में कृत्य—

शंखाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्य-स्त्रीवृक्ष-कृष्यम्बु विभूषणानि।
गीतक्रतुक्षीरविकारश्रृङ्गी पुष्पाक्षरारम्भणमिन्दुवारे॥

शंख, आदि जलोत्पन्न वस्तु, मुक्ता, चांदी, ऊख रस से उत्पन्न गुड़, चीनी आदि भोज्यपदार्थ, स्त्री सेवन, वृक्ष रोपणादि, कृषि जल सम्बन्धी, आभूषण, गीत-नृत्य, यज्ञ, दूध-दही-घृत सम्बन्धी, पशु सम्बन्धी, फूल तथा अक्षारम्भ ये कार्य सोमवार में करने चाहिए।

भौमवार में कृत्य—

भेदानृतस्तेय विषाग्निशस्त्र बन्धानि-घाताहवशाठ्यदम्भान्।
सेनानिवेशाकरधातुहेम-प्रवालकार्यादि कुजेन्हि कुर्यात्॥

चुगुलखोरी, चोरी, विष-सम्बन्धी, शस्त्र-बन्धन, घात, संग्राम, शठता, दम्भ-पाखण्ड, सेना-सम्बन्धी, खान धातु, सोना तथा मूंगा आदि सम्बन्धी कार्य मंगलवार में करने चाहिए।

बुधवार में कृत्य—

नैपुण्य-परायाऽध्ययनं कलाश्च-शिल्पादि सेवालिपिलेखनानि।
धातुक्रिया काञ्चनयुक्तिसन्धि-व्यायामवादाश्च बुधे विधेयाः॥

ट्रेनिंग, व्यापार, अध्ययन, कला, शिल्प, खेल, चित्रकारी, धातु सम्बन्धी, सोना, कांसा, सन्धि, व्यायाम और विवाहादि कार्य बुधवार में करने चाहिए।

गुरुवार में कृत्य—

धर्मक्रिया पौष्टिक कर्म यज्ञ-मांगल्यहेमाम्बर वेश्मयात्राः।
रथाश्वभेषज्यविभूषणाद्य कार्यं विध्यात् सुरमन्त्रिणोऽन्हि॥

धर्मानुष्ठानादि कार्य पौष्टिक यज्ञ विद्या, मांगल्य, सोना, सम्बन्धी गृह कर्म, वस्त्र, यात्रा, रथ आदि सवारी, घोड़ा सम्बन्धी, औषध, आभूषण आदि कार्य गुरुवार में करना चाहिए।

शुक्रवार में कृत्य—

स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्धं वस्त्रोत्सवालंकरणादि कर्म।
भूपण्यगोकोश-कृषिक्रियाश्च सिद्धयन्ति शुक्रस्य दिने समस्तम्॥

स्त्री सम्बन्धी, शय्या, मणि रत्न, सुगन्ध वस्त्र, उत्सव आभूषण, भूमि व्यापार, गोसम्बन्धी, कृषि कर्म, आदि कार्य शुक्रवार में करने से सिद्ध होते हैं।

शनिवार में कृत्य—

लोहाश्मसीसत्रपुरस्त्रदास्य-पापानृतस्तेयविषासवाद्यम्।
गृहप्रवेशो द्विरबन्ध-दीक्षा-स्थिरं च कर्मार्कसुतेन्हि कुर्यात्॥

लोहा, पत्थर, सीसा, रांगा-सम्बन्धी, अस्त्र-शस्त्र, नौकरी, पापकर्म चोरी, मिथ्या, विष सम्बन्धी, आसव, गृह प्रवेश, हाथी को बन्धाना, दीक्षा(मन्त्र-ग्रहण) आदि स्थिर कर्म शनिवार में करने चाहिए

रवि आदि के स्थिरादि संज्ञा—

रविः स्थिरः शीतकरश्चरश्च मही में उग्रः शशिजश्च मिश्रः।
लघुः सुरेज्यो भृगुजो मृदुश्च शनिश्च तीक्ष्णः कथितो मुनीन्द्रैः॥

रवि स्थिर, चन्द्र (सोम) चर, मंगल उग्र, बुध मिश्र, गुरु लघु, शुक्र मृदु और शनि तीक्ष्ण है। विशेष—ग्रहों के नामानुसार कार्य ग्रहों के वार में करने से सिद्ध होता है।

शुभ और अशुभ वार—

सोमशुक्रगुरुसौम्यवासराः सर्वकर्मसु भवन्ति सिद्धिदाः।
भानु-भौम-शनिवासरेषु तु प्रोक्तमेव खलु सिद्धयति॥

सोम, शुक्र, गुरु और बुध ये वार सर्वकार्यों में सिद्धप्रद होते हैं। रवि, मंगल और शनि ये वार-उपरोक्त कार्य में ही प्रशस्त हैं। सब कार्यों में विशेषकर विवाहादि शुभ कार्यों में नहीं।

विशिष्ट वारादि कथन—

वारे प्रोक्तं कालहोरासुप्तस्य धिष्ण्येधोक्तं स्वामितिथ्यंकेऽस्य।
कुर्याद्दिक्शूलादि चिन्त्यं क्षणेसुनैवोल्लंघ्यः परिघश्चापि दण्डः॥

इससे पूर्व और आगे—वार में जो कार्य विधि या निषेध कहा गया है उस कार्य को उसके (होरा=क्षण) वार में करना चाहिए। तथा जिस नक्षत्र में जो कर्म विधि अथवा निषेध कहा गया है वह उसके स्वामी के मुहूर्त में करना चाहिए। दिक्शूल आदि का विचार क्षणवारादि में करना एवं आगे कहे हुए परिघदण्ड का उल्लंघन क्षण नक्षत्र (मुहूर्त) में नहीं करना चाहिए।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यात्रा मुहूर्त्त

यात्रा मुहूर्त्त में चन्द्रमा, योगिनी, कालराहु तथा दिशाशूल का विचार किया जाता है। चन्द्रमा सामने या सीधे हाथ की दिशा में शुभ होता है और राहु, योगिनी तथा दिशाशूल पीठ पीछे या बांये हाथ की तरफ लेना चाहिये। दिशाशूल ले जावें बांये राहु योगिनी पूठ। सम्मुख लेवें चन्द्रमा लावें लक्ष्मी लूट॥

चन्द्रमा मेष, सिंह व धनु का पूर्व में, वृष, कन्या, मकर का दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुम्भ का पश्चिम में तथा कर्क, वृश्चिक, मीन का उत्तर दिशा में वास करता है। यात्रा में चन्द्रमा सन्मुख हो तो धन लाभ, सीधे हाथ की तरफ हो तो सुख सम्पदा प्राप्त होती है। बांये हाथ की ओर हो तो धन हानि तथा पीठ पीछे होने पर मृत्यु भय होता है। जैसे यदि आपने पूर्व दिशा की ओर जाना है तो उसदिन चन्द्रमा पूर्व में या दक्षिण में होना चाहिये। अर्थात् मेष, सिंह या धनु का अथवा वृष, कन्या या मकर राशि का होना चाहिये।

सम्मुखे अर्थ लाभाय दक्षिणे सुख सम्पदा। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः॥

दिशाशूल--सोमवार और शनिवार को दिशाशूल पूर्व दिशा में होता है। गुरुवार को दक्षिण में, रविवार व शुक्रवार को पश्चिम दिशा में तथा बुध और मंगल को उत्तर दिशा में होता है। यदि आपको पूर्व दिशा में यात्रा करनी है तो दिशाशूल उत्तर या पश्चिम में होना चाहियें अतएव पूर्व दिशा की यात्रा सोमवार, शुक्रवार तथा गुरुवार को ही की जानी चाहिये।

दिशाशूल चक्रम्

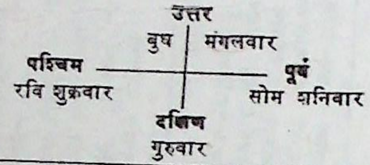

	चन्द्रमा का वास	दिशाशूल	समय शूल
पूर्व दिशा	मेष सिंह धनु	सोम शनि	प्रातः काल
दक्षिण दिशा	वृष कन्या मकर	गुरु	मध्याह्न
पश्चिम दिशा	मिथुन तुला कुम्भ	रवि शुक्र	सन्ध्या काल
उत्तर दिशा	कर्क वृश्चिक मीन	बुध मंगल	अर्धरात्रि

योगिनी वास--प्रतिपदा तथा नवमी तिथियों को योगिनी का वास पूर्व दिशा में होता है। तृतीया व एका. को अग्नि कोण में (पूर्व दक्षिण मध्य) में, पंचमी व त्रयोदशी को दक्षिण में, चतुर्थी व द्वादशी को दक्षिण पश्चिम के मध्य नैऋत्य कोण में, षष्ठी व चतुर्दशी को पश्चिम दिशा में, सप्तमी व पूर्णिमा को पश्चिम उत्तर मध्य वायव्य कोण में, द्वितीया व दशमी को उत्तर दिशा में तथा अष्टमी व अमावस्या को उत्तर व पूर्व के मध्य ईशान कोण में होता है। योगिनी यात्रा समय पर सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होनी चाहिये। इस प्रकार पूर्व दिशा की यात्रा १।९, ३।११ व ५।१३ तिथियों को नहीं करनी चाहिये।

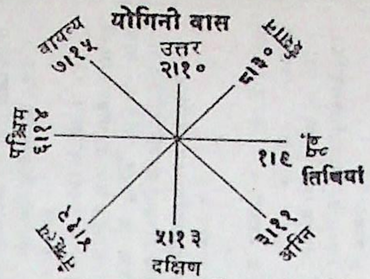

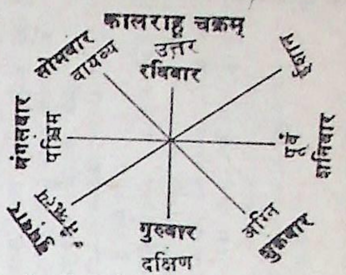

कालराहु वास--शनिवार को पूर्व में, शुक्र को अग्नि कोण में, गुरुवार को दक्षिण में, बुधवार को नैऋत्य कोण में, मंगलवार को पश्चिम में, सोमवार को वायव्य कोण में तथा रविवार को उत्तर दिशा में होता है। यात्रा वाले दिन कालराहु का बास सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होना चाहिये। अतएव पूर्व दिशा की यात्रा शनिवार, शुक्रवार या गुरुवार को नहीं की जा सकती।

	योगिनी बास	कालराहु बास
पूर्व दिशा	१।९ तिथ्य	शनिवार
अग्नि कोण	३।११	शुक्र
दक्षिण दिशा	५।१३	गुरु
नैऋत्य कोण	४।१२	बुध
पश्चिम दिशा	६।१४	मंगल
वायव्य कोण	७।१५	सोम
उत्तर दिशा	२।१०	रवि
ईशान कोण	८।३०	—

समय शूल--पूर्व दिशा की यात्रा के लिये प्रातः काल में समय शूल होता है, अर्थात् पूर्व दिशा की यात्रा प्रातः काल नहीं करनी चाहिये। इसी प्रकार दक्षिण के लिए समयशूल मध्याह्न में, पश्चिम के लिये संध्याकाल में और उत्तर के लिये समय शूल मध्य रात्रि के समय होता है। समय शूल के काल में यात्रा नहीं करनी चाहिये।

महत्वपूर्ण यात्रा के लिये तो आवश्यक है कि मुहूर्त्त में चन्द्रमा, योगिनी, दिशाशूल, कालराहु, समय शूल सभी बातों का ध्यान रखा जाय। परन्तु यदि आपने आवश्यक कार्यवश यात्रा करनी है और उपर्युक्त मुहूर्त्त तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते तो निर्धारित पदार्थ खाकर यात्रा कर सकते हैं। यदि मुहूर्त्त के दिन के कुछ समय पश्चात् यात्रा करना चाहते हैं तो मुहूर्त्त समय पर प्रस्थान कराके इच्छित समय पर यात्रा की जा सकती है। आवश्यक कार्यों में भी जहां तक हो सके अनुकूल चन्द्रमा का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिये। राज्य कार्य सेवा कार्य में मुहूर्त्त नहीं देखा जाता, केवल शूल पदार्थ खाकर ही यात्रा कर सकते हैं। पूर्ण चन्द्र सम्मुख हो तो अन्य दोष नष्ट हो जाते हैं।

[शेष पृष्ठ ९९ पर]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संस्कार प्रकरण

सीमांत मुहूर्त्त विचार

यह सीमांत संस्कार गर्भाधान से छटे और ८वें महीने में होता है, उस महीने का स्वामी बलवान् होना चाहिए। गर्भ से लेकर १० महीने के स्वामियों की संज्ञायें ऐसी हैं, पहले महीने का स्वामी शुक्र, २ भौम, ३ गुरु, ४ सूर्य, ५ चंद्र, ६ शनि, ७ बुध, ८वें का लग्नेश, ९ चन्द्र और १०वें महीने का स्वामी सूर्य होता है। २।३।५।७।१०।११।१३।१५ इन तिथियों में तथा मृ. पुन. पुष्य ह. मू. श्र. नक्षत्रों में सू., मं., वृ. वारों में २।३।५।७।८।११ लग्नों और लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थान में (१।४।७।१०।९।५) में शुक्र ग्रह तथा ३।६।११ स्थान में पाप ग्रह होने पर और लग्न से १।६।८।१२ इन स्थानों में चन्द्रमा न हो, ८वां स्थान शुद्ध हो जन्म लग्न और जन्म राशि से ९वां लग्न न हो तो यह मुहूर्त्त शुभ होता है। स्त्री को चन्द्रमा का बल देखना जरूरी है। गुरु शुक्र के अस्त का दोष इसमें नहीं होता।

स्तनपान मुहूर्त्त—पंचम दिन अथवा भद्रा व्यतिपात वैधृरिक्ता तिथि को त्यागकर शुभ तिथि वार में अ. मृ. पुन. पुष्य हस्त मूल, रे. नक्षत्रों में स्तनपान कराना शुभ है।

प्रसूति स्नान मुहूर्त्त—रिक्ता तिथि को छोड़ कर शुभ तिथि रवि, मं., गुरुवार, अश्वि., रो., मृ. तीनों उत्तरा हस्त, स्वा., ऽनु., रेव. इन नक्षत्रों में वैधृति, व्यतिपात रहित दिन में प्रसूता स्नान शुभ है।

नामकर्ण मुहूर्त्त विचार

(नारद के वचन में) यह नामकर्ण सूतक के अन्त में अपनी-२ कुल परम्परा के अनुसार करना चाहिए। दैववश सुतकांत में न हो सके तो गुरु-शुक्र के उदय होने पर उत्तरायण में पूर्वाह्न के समय चं. बु. वृ. शु. वारों में २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रों में स्थिर लग्न २।५।८।११ में लग्न से १।४।५।७।९।१० स्थान में शुभ ग्रह ३।६।११।१२ स्थान में पापग्रह तथा ८वां, १२वां स्थान शुद्ध होने पर पिता बालक के दाहिने कान में शास्त्र विधि द्वारा नामकर्ण संस्कार करे, वह जातकर्म सम्पूर्ण व्यवहारों का कारण तथा भाग्य और कीर्ति का कारण होने से व्यतिपात वैधृति, संक्रांति और भद्रादि दोष युक्त समय को छोड़ कर शुभ होता है।

दन्तोत्पत्ति में विचार

कई बालकों के दांत पहले महीने से निकलने लग जाते हैं, उसके प्रत्येक महीने का फल नीचे लिखे चक्र से जान लें।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	मास
स्वयं नाश	भ्राता हानि	भगिनि हानि	माता हानि	ज्येष्ठ भ्रातृहा.	मित्रजीव	पितृ जीव	पुष्टिकारक	लक्ष्मी प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	सुख प्राप्ति	सुख प्राप्ति	फल

अन्न प्राशन का विचार

नवजात शिशु को छटे महीने से सम मास में तथा कन्या हो तो ५वें महीने से विषम मासों में, २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथियों में चं., बु., वृ., शु. वारों में अश्वि., रो., मृ., पुन., पुष्य, उत्तरा. ३, ह., चित्रा, स्वा., अनु., श्र., ध., श., रे. नक्षत्रों में २।३।४।५।६।७।९।१०।११ लग्नों में तथा लग्न से दशवां स्थान शुद्ध होने पर और ७वां, ८वां, ९वां स्थान क्रम से शु., मं. और बुध से वर्जित होने पर, ६।८ और १२वें स्थान में चन्द्रमा न हो; जन्म लग्न और जन्म राशि से ८वां लग्न न हो पूर्वाह्न के समय, भद्रादि दोष रहित समय में अन्न प्राशन करना शुभ होता है। इस समय बालक के आगे लेखनी, पुस्तक, स्वर्ण, चांदी, पत्थर और बर्तन रखे, बालक पहले जिस वस्तु को पकड़े उसी से बच्चे की आजीविका जानें।

कर्णवेध

चातुर्मास (आषाढ़ शु. ११ से कार्तिक शुदी ११ तक) चैत्र, पौष जन्म मास, जन्म तिथि नक्षत्र, क्षयतिथि तथा ४।९।१४ तिथि और सम वर्षों को त्याग कर जन्म से १२वें अथवा १६वें दिन अथवा ६।७।८वें मास में या विषम वर्षों में, शुभ वार, अश्वि., मृ., पु., पुष्य, ह., चि., अनु., अभि., श्र., ध., रे. नक्षत्रों में लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध होने पर वृश्चिक, धन, मीन लग्न में और लग्न में गुरु हो तो कर्ण छेदन श्रेष्ठ होता है।

चूड़ाकरण

यह चूड़ाकरण संस्कार गर्भ से वा जन्म से ३।५।७ वर्ष और उत्तरायण में होता है। कन्या हो तो सम वर्षों में होता है। कई एक कुलाचार से प्रथम वर्ष में करते हैं, अथवा यज्ञोपवीत के साथ ही कर लेते हैं। २।३।५।१०।११ तिथियों में चं., बु., गु., शु. वारों में अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, ह., चि., स्वा., ज्ये., श्रव., ध., श., रेव. नक्षत्रों में २।३।४।६।७।८।१२ लग्नों में और लग्न से ८वां स्थान शुद्ध होने पर शुक्र का लग्न से ८वें होना दोष कारक नहीं होता। जन्म लग्न और जन्म राशि से ८वां लग्न न हो, केन्द्र त्रिकोण स्थान में शुभ ग्रह और ३।६।११ वें पाप ग्रह हों ६।८।१२वें चन्द्रमा न हो, जन्म नक्षत्र और जन्म मास न हों। भद्रा व्यतिपात आदि दोष रहित समय में करने से शुभ होता है। (विशेष विचार) माता गर्भवती हो और गर्भ ५ महीने से अधिक का हो गया हो तो चूड़ाकरण न करें। यदि बालक ५ वर्ष से अधिक हो गया हो तो गर्भवती माता होने पर भी चूड़ाकरण न लेवें, बालक जेठा हो तो जेठ के महीने में चूड़ाकरण न करें।

(वशिष्ट के वचन से)

अक्षरारम्भः

पांचवे वर्ष में और उत्तरायण में बालक से गणेश, विष्णु, लक्ष्मी और सरस्वती का पूजन करवा कर २।३।५।६।१०।११।१२ तिथियों में, चं., बु., गु., शु. वारों में, अश्वि., आर्द्रा, पुन., पुष्य, ह., चि., स्वा., अनु., श्रव., रेव., नक्षत्रों में, २।३।७।९।१२ लग्नों में, लग्न से आठवां स्थान शुद्ध होने पर, भद्रादि दोष रहित समय में अक्षरारम्भ शुभ होता है।

विद्यारम्भः

उत्तरायण में २।३।४।६।१०।११।१२ तिथियों में, सू., गु., शु., वारों में, अश्वि., मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, आश्ले., पू. ३, ह., चि., स्वा., मूल, श्रव., ध., श. नक्षत्रों में, २।३।६।९ लग्नों में, लग्न से ८वां स्थान शुद्ध होने पर, व्यतिपात आदि दुष्ट समय को त्याग कर शुभ समय में विद्यारम्भ करना चाहिए।

उपनयनम्

उपनयन संस्कार हो जाने से मनुष्य श्रौत स्मार्त कर्मों का अधिकारी हो जाता है, इस संस्कार के हो जाने

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

से मनुष्य की देह संस्कृत हो जाती है। इस कर्म में काम्य नित्य और गौण काल के भेद से तीन प्रकार के काल कहे हैं। ब्राह्मणों को ५वें, ८वें, १६वें वर्षों में, क्षत्रियों को ६टे, ११वें और २२वें वर्षों में, वैश्यों को ८वें, १२वें और २४वें वर्षों में काम्य नित्य और गौणकाल कहे हैं। चै., वै., ज्ये., आषा., देवशयनी से पूर्व जानें। माघ और फाल्गुन इन महीनों में, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथियों में और कृष्ण पक्ष में, २।३।५ तिथि पर्यन्त, सू., चं., बु., बृ., शु. वारों में, अश्वि., मृ., रो., आर्द्रा, पुन., पुष्य, आश्ले., पू. ३ उत्तरा, ३ हस्त, चि., स्वा., ऽनु., मू., श्र., ध., श., रे. नक्षत्रों में, २।३।४।५।७।६।१२ लग्नों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थान में शुभ ग्रह हों, ३।६।११वें पापग्रह हों चं., बृ., श. और लग्न का स्वामी ६।८ और १२वें स्थान में न हो, १।५।८वें स्थान में पापग्रह न हों, वृष और कर्क राशि के बिना चन्द्रमा का लग्न में होना शुभ नहीं होता तथा रोगवान, संक्रांति, भद्रा, व्यतिपात, अनाध्याय: प्रदोष अपरान्ह काल और वैधृत्यादि दोषरहित समय में यह संस्कार करना शुभ होता है, शाकेश और वर्णेश बलवान् होना चाहिये, ब्राह्मणों के लिए पुनर्वसु नक्षत्र शुभ नहीं होता। बालक को गुरु, सूर्य और चन्द्रमा का बल अवश्य देखना चाहिए।

सूर्यबल	चन्द्रबल	गुरुबल	ग्रहबल
३।६।१०।११	३।६।७।१०।११ १।२।५।६	२।५।७।६।११	शुभ
१।२।५।७।६	....	१।३।६।१०	पूज्य
४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	निंद्य

उच्च मित्र, स्वराशि में गुरु हो तो नेष्ट गुरु भी ग्राह्य है।

सूर्य वर की राशि से दूसरे, पांचवें और नौवें हों तो १३ प्रविष्टे के उपरान्त अपूजनीय हैं क्योंकि लिखा है— कुमारस्योपनयने विवाहेषुयि रवि बलं ३।६।१०।११ श्रेष्ठः, १।२।५।७।६ पूज्यः, ४।८।१२ निंद्यः, २।५।६ त्रयोदशाहात्परतः शुभः। अन्येव-अनिष्ठ स्थानगे सूर्ये शुभ राशिः पुरोभवेत्। त्रयोदशे दिनं त्यक्त्वा शेस्वधं शुभमादिशेद॥

शाकेश ज्ञान				वर्णेश ज्ञान			
ऋक्	यजु	साम	अथर्व	ब्राह्मण	क्षत्री	वैश्य	शूद्र
गुरु	शुक्र	भौम	बुध	गु. शु.	सू. भौ.	चन्द्र	बुध

दीक्षा मुहूर्त्त विचार

चै., वै., ज्ये. आषा., श्रा., आश्वि., का., मार्ग., महीनों में २।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथियों में सू., चं., बु., बृ., शु. वारो में रो., ह., चि., स्वा., अनु., उत्तरा ३ इन नक्षत्रों में भद्रादि दोष रहित समय में दीक्षा ग्रहण करना शुभ होता है।

अथ विवाह संस्कार

सब आश्रमों में गृहस्थाश्रम श्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि ब्रह्मचर्याश्रम, वाणप्रस्थाश्रम और सन्यासाश्रम इन तीनों आश्रमों का आश्रय स्थान, यही गृहस्थाश्रम है। इसी तरह देवऋण, पितृऋण और ऋषिऋण इन तीनों ऋणों से मुक्त करने वाली तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि देने वाला होने के कारण गृहस्थाश्रम सब आश्रमों से श्रेष्ठ माना गया है। और शेष संस्कार भी विवाह संस्कार पर ही निर्भर हैं, क्योंकि विवाह आदि संस्कार होने के पश्चात् ही गर्भाधान आदि समस्त संस्कार हो सकते हैं। इस कारण भी विवाह संस्कार सर्व प्रधान है। यह संस्कार योग्य समय में होने पर ही स्त्री सुख ऐश्वर्य भोग और उत्तम संतान उत्पन्न करके मनुष्य अपने पितृ ऋण से मुक्त होता है। अतः विवाह संस्कार का निर्णय हमारे ऋषि मुनियों ने अति सूक्ष्मता से किया है कि जिस के अनुसार विवाह नियत करके मनुष्य जीवन को सुखी बना सकता है। परन्तु आजकल के कई लोग बिना मुहूर्त्त को अच्छी तरह विचारे और कुण्डलियों तथा गुणादि का मिलान किये बिना ही विवाह नियत कर लेते हैं जो कि सर्वथा अनुचित है।

कन्या का पिता योग्य आयु के वर का निश्चय कर कन्या की कुण्डली का मिलान कर तथा गुण मिलान करके वाग्दान करे, ताकि नूतन दम्पति अपना जीवन सुखमय व्यतीत करें।

मिलान में वर का प्रसिद्ध नाम तथा कन्या का जन्म नाम व कन्या का प्रसिद्ध नाम और वर का जन्म नाम ऐसा विपरीत कदापि न लेवें यह वर-कन्या के लिए हानिप्रद है। या तो दोनों का प्रसिद्ध नाम लेवें या दोनों का जन्म नाम लेवें। विशेषतः दोनों का जन्म नाम ही लेना चाहिए। क्योंकि कहा है—

जन्म राशि विचार

कुर्यात्वोडश कर्माणि जन्म राशौ बलान्विते।
अन्यानि शुभ कर्माणि नामराशौ बलान्विते॥
विवाहे सर्व मांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे।
जन्मराशे प्रधानत्वं नामराशि न चिन्तयेत्॥

नाम राशि विचार

काकिन्यां वर्गशद्धौ च दानेद्युते ज्वरोदये।
मन्त्र पुनर्भूवरणे नामराशि प्रधानता॥
देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।
नाम राशि प्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत्॥

विवाह में द्वादश चन्द्रमा का विचार

[काशी नाथः] अधाने संप्रदाने च विवादे राज विग्रहे। पाणि ग्रह च यात्रायां चन्द्रो द्वादशमः शुभः।

विवाह में वर्ज्य तिथि योग

वैधृति व्यति पाताख्यौ संपूर्णौ वर्जयेच्छुभ।

कृष्ण चतुर्दशी शुक्ला प्रतिपद्दर्श संज्ञिकाः। एतः शुभवे कार्येषु वर्जनीयाः प्रयत्नतः॥

तिथिना त्रितयं वारमेकं स्पृशति यत्र वै। अवमं तद्दिनं ज्ञेयंशुभ कर्म्मसु संत्यजेत्।

वर कन्या की राशि मेलन विचार

वर और कन्या के जन्म नक्षत्र और जन्म राशि में (१) वर्णकूट (२) वश्यकूट (३) ताराकूट (४) योनिकूट (५) ग्रहमैत्रीकूट (६) गणकूट (७) भकूट (८) नाड़ीकूट, इन ८ कूटों द्वारा परस्पर मिलान करें, यदि दोनों का जन्मनाम मालूम न हो तो दोनों के प्रसिद्ध नाम से मिलान करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ योगिनी दशाऽन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४			भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
श्र. आर्द्रा चित्रा			व. पुनर्वसु स्वाती			श. पुष्य विशा.			अश्वि. अश्ले अनु. पू. भा.			भर. मघा ज्ये. उ. भा.			कृ. पू. फा. मूल रेव.			रो. उ. फा. पू. षा.			मृग. हस्त उ. षा.		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	बृ.	मा.	४८	मं.	मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा	८४	शु.	मा.	९६	के.
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
धा.	१	०	भ्रा	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०
भ्रा	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०	मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा	९	१०	भ.	१३	१०
स.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०	भ्रा	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०

मेषादि राशियों का अंग विभाग—कालपुरुष के शिर में मेष राशि का स्थान है। मुख में वृष राशि का, दोनों भुजाओं में मिथुन राशि का, हृदय में कर्क राशि का, उदर में सिंह राशि का, कमर में कन्या राशि का, वस्ति (मूत्राशय) में तुला राशि का, गुप्तेन्द्रिय में वृश्चिक राशि का, उरु (दोनों जंघाओं) में धनु राशि का, दोनों जानु (घुटनों) में मकर राशि का, पिण्डलियों में कुम्भ राशि का और दोनों पादों में मीन राशि का स्थान है। कई एक आचार्य द्वादश भावों में भी इन अंगों की कल्पना करते हैं। जैसे प्रथम भाव में शिर, द्वितीय भाव में मुख, तृतीय भाव में भुजा, चतुर्थ भाव में हृदय, पंचम भाव में उदर, छठे-भाव में कमर, सप्तम भाव में वस्ति, अष्टम भाव में गुप्तेन्द्रिय, नवम भाव में उरु, दशम भाव में जानु, एकादश भाव में जंघा और द्वादश में पादों को जानना। उपर्युक्त मेषादि १२ राशि अथवा लग्नादि द्वादश भाव शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो वह अंग पुष्ट और सुन्दर होता है अथवा पाप ग्रहों से युक्त दृष्ट हों तो वह अंग उपद्रव युक्त होता है। अंगों का विचार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त होता है।

योगिनी दशा का विवरण—मंगलादि योगिनी दशाओं के क्रमशः स्वामी चन्द्र, सूर्य, गुरु, मंगल, बुध, शनि और शुक्र होते हैं। संकटा दशा के पूर्वार्घ (१ से ४ वर्ष) तक में राहु और उत्तरार्द्ध (५ से ८ वर्ष) तक में केतु स्वामी होता है।

शुभ दशाएं—मंगला, धान्या, भद्रिका और सिद्धा अशुभ दशाएं—पिंगल, भ्रामरी, उल्का और संकटा जाननी चाहिए।

तीर्थ यात्रा आदि में घात चन्द्र विचार—तीर्थ यात्रा, विवाह, अन्नप्राशन, उपनयन (यज्ञोपवीत) आदि शुभ कार्यों में घात चन्द्र का विचार नहीं होता। घात तिथि, घात वार. घात नक्षत्र इनका अशुभ फल केवल यात्रा में माना गया है, अन्य शुभ कार्यों में कोई दोष नहीं होता।

॥ प्रश्न विचार ॥

अथ नष्ट वस्तु चक्रम् (फल सहित)

संज्ञा	अन्ध	मन्द	मध्य	मूलोनन
नक्षत्र	धनि. पुष्य रोहि. पू.षा. वि. उफा. रे.	मृग. हस्त उषा. अनु. श. आश्ले. अ.	अभि. आर्द्रा म. चि. पू. भा. ज्ये. भर	पुन स्वा. श्र. कृति उभा. मू. पूफा.
दिशा फलम	पूर्वे गतम शीघ्रलाभम्	दक्षिणेगतम यत्नेनलाभः	पश्चिमेगतम् खबर मात्र	उत्तरे गतम न खबर न प्राप्त

अथ नष्ट वस्तु ज्ञानम् :—प्रश्न कालीन तिथि, वार, नक्षत्र और लग्नांक जोड़ में तीन युक्त कर, पांच से भाग दें। १ शेष बचे तो पृथ्वी में, २ बचे तो जल में है मिले नहीं, ३ बचे तो आकाश में है मिलेगी नहीं, ४ बचे तो अग्नि या राज्य खजाने में विलय हो गई, ५ शेष में वस्तु मिले नहीं केवल शोक सन्ताप ही हो।

पशु खोये गये का प्रश्न :—सूर्याश्रित नक्षत्र से पशु (सफेद व लाल) खोये गये दिन दैनिक चान्द्र नक्षत्र तक गिने ९ नक्षत्र तक पशु को जंगल में भ्रमता जाने, ९ से १५ तक स्वस्थान के समीप जानना १५ से २२ तक शीघ्र घर आ जायेगा, २२ से २४ नष्ट प्रायः, २४ से आगे २७ तक नक्षत्र संख्या होने से पशु की मृत्यु हो गई खबर नहीं मिलेगी।

टिप्पणी—काला पशु बकरी भैंस इत्यादि का प्रश्न हो तो शनि जिस नक्षत्र पर चल रहा हो उससे गिनती कर फल ऊपर लिखे अनुसार जानना। यह मेरा स्वयं का अनुभव है शतप्रतिशत सत्य बैठता है।

। मेषादि लग्नोपरि प्रश्न, फल चक्रम् ।

लग्न	मनश्चिन्तित प्रश्नः	रोगिणां प्रश्नः
मेष	मानवीय जीव की चिन्ता	देवी व कुल दोषः
वृषभ	चौपाये जीव पशु की चिन्ता	पितृ अतृप्ति दोषः
मिथुन	गर्भस्थ संतान की चिन्ता	शांकिनी-डांकिनी दोषः
कर्क	व्यवसाय की चिन्ता	भूत पिशाचादि दोषः
सिंह	नभचर, थलचर जीव	स्वकुलीय मात्र दोषः
कन्या	दाम्पत्य सुखोपयोग चिन्ता	स्वकुलीय देव दोषः
तुला	गुप्त दिये गये धन की चिन्ता	कुपित चण्डिका दोषः
वृश्चिक	दैहिक और भौतिक क्लेश	मृत्वत्सा नारि दोषः
धनु	धनोपार्जन की चिन्ता	यक्षिणी व पिशाशिनी दोषः
मकर	शत्रु पर जय-पराजय चिन्ता	स्थान व ग्राम देव दोषः
कुम्भ	स्वकीय जायदाद की चिन्ता	अपुत्री कुलटा स्त्री दोषः
मीन	देव, भूतपिशाचादि की चिन्ता	आकाश गामी वायु प्रकोपः

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

साधक (प्रश्न कर्त्ता) साध्य (जिसके लिए कर रहा है)

साधक के नाम की वर्ग संख्या को दूना कर उसमें साध्य के नाम की वर्ग संख्या जोड़कर ८ का भाग दें शेष साधक के नाम की काकिणी होती है। इसी प्रकार साध्य की वर्ग संख्या दूनी कर उसमें साधक की वर्ग संख्या जोड़ें, ८ का भाग दें, शेष साध्य की काकिणी होती है। दोनों काकिणियों में जिसकी काकिणी अधिक (धनावशेष) हो वह अर्थप्रद (उत्तम धन देने वाली होती है) अथवा जिसकी काकिणी अल्प होती है, वह ऋणी होता है।

टिप्पणी—साध्य का तात्पर्य यह है कि प्रश्न कर्त्ता जिस किसी व्यक्ति या किसी स्थान विशेष के विषय में प्रश्न कर रहा हो। साधक स्वयं प्रश्न कर्त्ता होता है। वर्गांक और वर्ग की दिशा का पूरा विवरण इस श्री राजधानी पंचांग के मुख्य पृष्ठ पर दिया गया है।

गर्भिणी :—प्रश्न कालीन लग्न कुण्डली के तृतीय, पंचम, सप्तम, नवम स्थान में पुरुष ग्रह रवि, मंगल और गुरु स्थित हों तो पुत्र हो और इन्हीं स्थानों में अन्य ग्रह पड़े हों तो कन्या उत्पन्न हो। विशेषतः—गर्भिणी ऊर्ध्व मुख प्रश्न करे तो पुत्र, अधोमुख प्रश्न करने से कन्या का जन्म जानना चाहिए।

अंक प्रश्न :—प्रश्न कर्त्ता से १०८ अंक में से कोई भी अंक कहलवाये वह अंक मुख से उच्चारण करे उसमें १२ का भाग दें शेष १।७।९ बचे तो देर से कार्य सिद्ध होगा। ४।५।८।१० शेष में कार्य हानि ११ बचने से कार्य सिद्धि, ३।१२ शेष में कार्य सिद्ध होगा।

स्वरोदय यंत्र राज :—प्रश्न कर्त्ता अभीष्ठ प्रश्न के यथार्थ फल ज्ञानार्थ मन में अपने इष्ट देवता का स्मरण कर अभूतपूर्व स्वरोदय प्रश्न यंत्र के किसी भी कोष्टक में अपने दहिने हाथ की तर्जनी अंगुली रखे. जिस कोष्टक में अंगुली रखी जाय उसमें लिखित अंक के अनुसार शुभाशुभ फल ज्ञात करें।

टिप्पणी—कोई भी सज्जन उपहास के लिए इस यंत्र का प्रयोग न करें अन्यथा किसी अनिष्ट का उत्तरदायित्व सम्पादक पर नहीं होगा।

अथ विंशोत्तरी दशा परिलेख :—वर्तमान समय में सभी विद्वानों ने मनुष्य की पूर्णायु १२० वर्ष मान रखी है। १२० वर्ष को ही सूर्यादि नव ग्रहों में विभक्त किया गया है जैसा कि साथ के चक्र में स्पष्ट है। मनुष्य के जीवन में शुभाशुभ दशाओं का उदय ही प्राणि मात्र के पुनर्जन्मार्जित कर्मों का फल होता है। कृतिकादि २७ नक्षत्रों को त्रिआवृत्ति (आ, चं, भौ, रा, जी, श, बु, के, शु) में बाँटा गया है। अर्थात् किसी व्यक्ति का जन्म नक्षत्र उत्तरा फाल्गुनी है, तो उसका जन्म विंशोत्तरी सूर्य ग्रह की महादशा में हुआ है। ऐसा जानना चाहिए। (भयात् भभोग बनाने की विधि जातक प्रकरण में देखें।)

दशा का भुक्त भोग्य जानने की विधि :—जन्म नक्षत्र के कुल घट्यादि मान को भभोग (सर्वक्षः) कहते हैं और जन्म समय तक उसी नक्षत्र के गत घट्यादि मान को भयात् (गतक्षः) कहते हैं। भयात् और भभोग की घटियों को पृथक-पृथक ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात् के सर्व पलों को दशा के वर्षों से गुणा कर फिर भभोग के सर्व पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष, शेषांक को १२ से गुणा कर फिर भभोग पलों से भाग दें, लब्ध मास, पुनः शेषांक को ३० से गुणा कर भभोग के पलों से भाग दें लब्ध दिन आवेंगे। (इसी प्रकार ६० से गुणा कर भाग करने पर घटी-पल उपलब्ध होंगे) यह दशा के भुक्त वर्षादि होंगे। नोट :—इसी प्रकार योगिनी दशा के जानें।

❖ वर्ष फल साधनम् ❖

वर्ष शुभाशुभ फलित हित, जो सम्वत् आमाब्द . .न्मा सम्वत् हीन करि, जो बचें वर्ष शेषाब्द ॥

वर्तमान सम्वत् में से जन्म का सम्वत् घटा दें, जो वर्ष शेष बचें उन्हें शेषाब्द (गताब्द व ध्रुवांक) भी कहते हैं। वर्ष शेषाब्द यानी गत वर्ष संख्यांक तुल्य वर्ष प्रवेश सारणी में जो वारादि अंक प्राप्त हों उन्हें जन्म के वारादि इष्ट काल में जोड़ने से वर्ष प्रवेश का वारादि इष्ट काल होगा। इसी इष्ट परिमित लग्नवत् क्रिया करने से वर्ष लग्न सिद्ध होगा। नोट—प्रति वर्ष जन्म तारीख के लगभग ही वर्षेष्ठ सिद्ध होता है।

❖ योगिनी मुद्दा दशा जानने की विधि: ❖

योगिनी	मं	पि	धा	भ्रा	भ	उ	सि	श
मास	०	१	१	१	१	२	२	२
दिन	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

शेषाब्द (गताब्द) संख्या में जन्म नक्षत्र संख्या जोड़कर ३ और जोड़ दें। ८ से भाग दें शेष तुल्य मंगलादि योगिनी दशा जानना अर्थात् वर्षारम्भ में शेषांक तुल्य मुद्दा दशा रही वर्ष कुंडली में प्रधान ग्रह मुंथाः होती है।

दोहा—जन्म लग्न में मुन्था, जन्म समय बलवान।
भोग एक राशीवर् र, कौशिक वचन प्रमान ॥

जन्म समय में मुन्थाः जन्म लग्न में होती है। प्रति वर्ष प्रति एक राशि में भोग करती हुई पुनः (१३) तेरहवें वर्ष में जन्म लग्नांक राशि में मुन्था आ जाती है।

जानने की विधिः—गताब्द संख्यांक में जन्म लग्नांक जोड़कर १२ का भाग दें शेषांक (राशि) में मुन्था लगा दें।

❖ वर्ष मध्ये मुद्दा (गौरी) दशा चक्रम् ❖

ग्रहा	रवि	चन्द्र	मंगल	रा	जी	श	बु	के	शु
मा.	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

मुद्दा (गौरी) दशा जानने की विधिः—जन्म नक्षत्र संख्या में गताब्द अर्थात् गत वर्ष संख्या जोड़कर २ घटा दें ९ से भाग करने पर जो शेष बचे उसी नम्बर की दशा वर्षा प्रारम्भ में होती है। उससे आगे क्रमशः सभी दशायें अपने-अपने निश्चित समयानुसार भोग करती हुई चक्र (वर्ष) पूरा करती हैं।

नोट—यदि शून्य शेष बचे, अर्थात् ९ का भाग पूरा लग जाय तो वर्षारम्भ में शुक्र की दशा जाननीच ाहिए। नक्षत्र की गणना आश्विनी आदि मानकर की जाती है।

❖ त्रिराशि पति चक्रम् ❖

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
दिवाः	र	शु	श	शु	गु	चं	बु	मं	श	मं	गु	चं
रात्रौ	गु	च	बु	मं	र	शु	श	शु	श	मं	गु	चं

दिन में वर्ष प्रवेश हो तो मेषादि राशियों के क्रमशः त्रिराशि पति (स्वामी) सूर्य शुक्र शनि आदि जानना और यदि रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो गुरु चन्द्र बुधादि त्रिराशि पति होते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कुछ रोगों पर महात्माओं की अनुभूत औषधें

खांसी—काकड़सिंगी, अतीस, मुलहठी ये तीनों चीजें बराबर लेकर चूर्ण कर लें। शहद से मिलाकर चाटें तो खांसी बन्द हो जाय।

घाव मरहम—तिल का तेल दो तोला, मोम देशी छह माशे, कत्था छह माशे, सिंदूर छह माशे, मुरदासंग छह माशे, छोटी इलायची के बीज छह माशे, सफेदा काशगरी छह माशे इन सब चीजों का मरहम बनाकर लगाने से घाव ठीक हो जाता है।

स्तनों में दूध बढ़ाना—कमलगट्टे की खीर से स्तनों में दूध बढ़ जाता है। (२) बिनौले की गिरी के दो तोले चूर्ण की दूध में खीर बनाकर खाने से स्तनों में दूध बढ़ जाता है।

रक्त प्रदर—नीम का तेल गाय के दूध में पीने से स्त्री का रक्त प्रदर नष्ट हो जाता है।

उन्माद—ईख कुटकी सम भाग दूध और शक्कर मिलाकर नासिका में डालकर नस्य लेने से सब प्रकार के उन्माद नष्ट होते हैं।

गर्भ प्राप्त—बिजौरे नीबू के बीजों को दूध में पकाकर घी के साथ पीने से स्त्री को गर्भ प्राप्त होता है।

ज्वरातिसार—असगन्ध, दालचीनी, नागरमोथा, बाराहीकन्द, धाय के फूल और कुड़ा इनसे सिद्ध जल बवाथ चार-पांच दिन में ज्वरातिसार की शान्ति करता है।

अर्श—हरड़ और लहसन चार माशे और हाड़जोड़ आठ माशे, कुछ तेल और नमक मिलाकर लगाने से अर्श रोग का नाश होता है।

बवासीर—अगर बवासीर को जड़ से खोना है तो एक मास तक अन्न नहीं खाना चाहिए। केवल जिमीकन्द का सेवन सुख पूर्वक करने से बवासीर नष्ट होता है।

बिच्छू का जहर—हुलहुल की जड़ बिच्छू काटे मनुष्य को सात बार सुंघाने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

पुराने दस्त—साढ़े चार माशे रीठा को आधा पाव पानी में भिगोकर झाग उठायें। फिर उस पानी को छानकर रोगी को पिला दें। कुछ दिन पिलाने से पुराने दस्त ठीक हो जाते हैं।

जूएं—धतूरे के पत्तों का अर्क कूटकर निकाल लें। इस अर्क को सिर में लगाने से जुएं मर जाते हैं।

आंख दुखना—बबुल के पत्तों को रात के समय कूटकर टिकियां बना लें। इन टिकियों को दुखती आंखों पर रखकर ऊपर से पट्टी बांध कर सो जायं, सुबह तक आंखों की लाली तथा पीड़ा दूर हो जायेगी।

पेट का दर्द—पीपल के दो पत्तों को पीसकर गुड़ में मिलाकर खाने से पेट का दर्द दूर हो जाता है।

गंज—बरगद के पत्तों को अलसी के तेल में भूनकर प्रातः सायं गंज पर मलने से कुछ दिनों में गंजे सिर पर बाल उग आते हैं।

तुतलाना—प्रतिदिन सत्यानाशी की एक नई डाली को तोड़कर जीभ पर लगायें, फिर उसके दूध को उंगली से जीभ पर मलें। कुछ दिन तक यह क्रिया करने से तुतलाना ठीक हो जाता है।

पेट के कीड़े—इन्द्रायण की जड़ को महीन पीस कर कपड़छान कर लें। ३ माशा चूर्ण में १ तोला पुराना गुड़ मिलाकर खूब कूटें फिर गुलाब जल के छींटे देकर नरम करके ६ गोलियां बना लें। प्रतिदिन २ गोली गरम पानी के साथ सेवन करने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

दाद—ढाक के बीज तथा कत्था दोनों को बराबर लें, पानी में पीसकर लेप करने से दाद कुछ ही दिनों में ठीक हो जाता है।

मुंह के दाग—तुलसी के पत्तों के रस में नीबू का रस मिलाकर चेहरे पर मलने से झांई, मुंहासे आदि चेहरे के दाग दूर होते हैं।

उदर-विकार—१ पाव गुलाब जल में १ पाव अनारदाना भिगोकर रात भर रख दें, सुबह उसे मलकर छानकर पी जायें। इससे हर प्रकार के उदर-विकार, आधा सीसी तथा नेत्र रोगों को लाभ होता है।

हैजा—ढाई तोला प्याज तथा ७ काली मिर्च को सिल या खरल में डालकर इतना पीसें कि छानने की जरूरत न रहे, फिर उसमें उतना पानी मिला दें जितना रोगी पी सके। इसे पिलाते ही हैजा की घबराहट, प्यास, कै तथा दस्तों को लाभ होता है।

काली खांसी—छोटे बच्चों के गले में लहसुन की कलियों को गूंथकर माला बनाकर पहना देने से ही उनकी काली खांसी ठीक हो जाती है।

जुलाब—ढाई तोला अण्डी का साफ किया हुआ तेल रात्रि के समय दूध के साथ पीने से प्रातः साफ दस्त आता है।

पेचिश—सौंफ ५ तोला, बेलगिरी ५ तोला और मिश्री १० तोला—तीनों को कूट-पीस कर ६-६ माशे चूर्ण को ताजा पानी के साथ सुबह शाम लेने से पेचिश दूर होती है।

प्लीहा—कच्ची मूली का सेवन करना यकृत् तथा पीलिया रोग में लाभ करता है।

मृगी—दो माशे तम्बाकू के पत्तों को एक पाव खोलते हुए पानी में एक घंटे तक डाले रखें। फिर पानी को छानकर आधी छटांक की मात्रा में प्रातः सायं पिलायें। एक सप्ताह के प्रयोग से मृगी रोग पूरी तरह से ठीक हो जाता है।

कण्ठ माला—काशीफल के टुकड़ों को पानी में गर्म करें। उस गर्म पानी के गरारे करने से कण्ठ माला रोग में लाभ होता है।

दाढ़ का दर्द—एक लाल मिर्च को पानी में महीन पीसकर छान लें। उस पानी को थोड़ा-सा गरम करके जिस ओर की दाढ़ में दर्द हो उसके दूसरी ओर के कान में डाल दें तो दाढ़ का दर्द तुरन्त बन्द हो जाता है। इस प्रयोग से कान में दर्द होने लगे तो थोड़ा सा शुद्ध घी गरम करके कान में डाल देना चाहिए तो उससे कान का दर्द दूर हो जाता है।

प्याज, लहसुन, नमक, मिर्च, हल्दी, धनिया, अदरक, घी, शहद, जीरा, पानी, मिट्टी, मट्ठा, दूध, दही, कौड़ी आदि लगभग ७० वस्तुएं ऐसी हैं, जो हर घर में मौजूद रहती हैं और वह अकेली ही, मिन्टों में विभिन्न प्रकार के रोगों में लाभ पहुंचाती हैं। इन वस्तुओं के गुण तथा उपयोगों की जानकारी देने वाली अलग-अलग पुस्तकें हमारे यहां से प्रकाशित हुई हैं। इन पुस्तकों का अध्ययन आप अवश्य करें। इन पुस्तकों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारे यहां से 'घर का वैद्य, ३५-०० नामक पुस्तक आज ही मंगायें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हस्त-रेखा विचार

हाथ देखने से पहले यह ध्यान रखना आवश्यक है कि पुरुष का दाहिना (सीधा) हाथ तथा स्त्री का बायां (टेढ़ा) हाथ देखना चाहिए। यदि हाथ में मत्स्य-रेखा हो तो धनवान, बहुसंततिवान, बुद्धिमान तथा सुख भोगने वाला होता है। यदि तुला (तराजू), ग्राम, गांव तथा वज्र में कोई चिन्ता चिन्ह हो तो व्यापार में सिद्धी मिलती है। कमल, धनुष, तलवार तथा अष्टकोण में से कोई चिन्ह हो तो धनवान् तथा सुख-समृद्धि से सम्पन्न होता है। त्रिशूल, छत्र, शक्ति वाण, रथ, चक्र और ध्वजा का चिन्ह हो तो राजा या राजा के समान वैभव वाला होता है। गिरि, कंकण, योनि, नर-मुंड आदि चिन्ह हों तो राजा का मन्त्री होता है। सूर्य, चन्द्र, नेत्र, मन्दिर, हाथी, और घोड़ा में से कोई चिन्ह हो तो धनवान् तथा सुखी होता है। यदि अंगूठा के मध्य में यव (जौ) का चिन्ह हो तो वह अपनी उत्पन्न वस्तुओं का भोक्ता तथा सुखी होता है। तर्जनी व मध्यमा उंगलियों में से किसी के बीच में यव (जौ) हो तो वह स्त्री-पुत्र, घर, धन-धान्य से पूर्ण सुखी होता है।

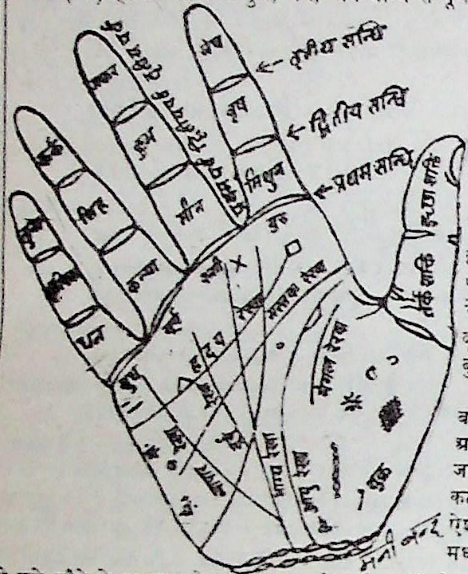

अंगूठे या हाथ में कहीं भी सूप का चिन्ह हो तो अत्यंत दरिद्री होता है। अंगूठे के मूल से लेकर पोंचे के मोड़ तक के उभरे हुए भाग में जितनी रेखाऐं दीख पड़ें, उतने ही भाई-बहिन जानने चाहिए। कनिष्ठा उंगली की जड़ के समीप जितनी रेखाऐं हों, उतने ही विवाह या उतनी ही स्त्रियों का सुख जानें। अंगूठे के पीछे के बीच के मोड़ पर जो तीन रेखाऐं हैं उनमें से एक से बचपन, दूसरी से जवानी तथा तीसरी से बुढ़ापे का सुख-दुःख जानना चाहिये।

● **भाग्य रेखा**—यह रेखा मणिबन्ध (पौंचा) के मूल से लेकर मध्यमा अथवा तर्जनी उंगली के मूल तक जाती है। यदि यह रेखा बीच में कहीं कटी-फटी या खंडित न हो तो व्यक्ति ऐश्वर्यशाली होता है और यदि मध्यमा उंगली के मूल पर समाप्त हो तो उसे सोने के व्यापार से बहुत लाभ होता है। यदि रेखा कटी हो तो ऐसा व्यक्ति निरन्तर अधिक लाभ नहीं कर पाता है। यदि किसी के हाथ में यह रेखा बिल्कुल न हो तो ऐसे व्यक्ति का भाग्य सूर्य रेखा, जीवन रेखा तथा मस्तक रेखाओं की स्थिति से जानना चाहिए।

● **जीवन-रेखा**—यह रेखा तर्जनी उंगली तथा अंगूठे के बीच से मणिबन्ध (पौंचे) की ओर शुक्र-क्षेत्र को घेरती हुई जाती है। यह रेखा सभी हाथों में समान रूप से नहीं होती। यदि यह रेखा स्पष्ट, उठी हुई तथा लम्बाई में पूर्ण हो तो वह व्यक्ति प्राण-शक्ति धारण करने वाला होता है। जिन हाथों स्पष्ट, पतली तथा लम्बाई में पूर्ण रेखा हो तो उनमें प्राण-शक्ति कम ही रहती है। यदि यह रेखा बीच में किसी स्थान पर टूटी हुई हो और साथ ही टूटे हुए स्थान से किसी अन्य रेखा का सम्बन्ध न हो, तो उसी आयु में दुर्घटना घटित होनी है। यदि अन्य लक्षण भी इसके द्योतक हों तो मृत्यु जाननी चाहिए। यह रेखा लम्बाई में पूर्ण होती हुई भी अन्य रेखाओं से कट रही हो अथवा स्वयं ही कटी हुई हो तो कष्ट, दुर्घटना, एक्सीडेंट आदि या मृत्यु के समान दुःख होता है।

● **हृदय-रेखा**—कनिष्ठा उंगली के नीचे से चलकर तर्जनी या मध्यमा उंगली के नीचे के क्षेत्र तक जाने वाली रेखा हृदय रेखा कहलाती है। भारतीय विद्वान् इस रेखा को आयु-रेखा भी कहते हैं। परन्तु पाश्चात्य विद्वानों के मत में यह हृदय-रेखा है इस रेखा से मन, हृदय तथा प्रेम-सम्बन्ध के बारे में देखा जाता है। यदि यह रेखा तर्जनी उंगली के प्रथम पर्व तक चली आये तो ऐसे व्यक्ति का प्रेम-सम्बन्ध समाज में चर्चा का विषय बन जाता है।

यदि यह रेखा मध्यमा उंगली तक जाए तो ऐसा व्यक्ति छल-कपट का व्यवहार करने वाला, स्वार्थी, आत्मलोलुप, धूर्त, कपटी तथा आडम्बर-प्रिय होता है। ऐसे व्यक्ति अपने प्रेमी को भी धोखा देने में नहीं चूकते। इन्हीं कारणों से इन्हें समाज में विशेष आदर नहीं मिलता।

● **मस्तक रेखा**—यह रेखा तर्जनी उंगली और अंगूठे के मध्य भाग से जीवन रेखा से मिलती हुई अथवा उससे कुछ दूर होकर हथेली के मध्य भाग में चन्द्र अथवा राहु-क्षेत्र की ओर जाती है। प्राचीन भारतीय विद्वानों के अनुसार इसे 'धन-रेखा' या 'वैभव रेखा' बताया गया है परन्तु पाश्चात्य विद्वान इसे 'मस्तक रेखा' बताते हैं। इससे शिक्षा, विद्या, बुद्धि का विचार किया जाता है। यदि मस्तक-रेखा जीवन-रेखा निकलने के स्थान से जीवन-रेखा को काटती हुई आगे जाए तो ऐसा व्यक्ति ईर्ष्यालु, झगड़ालू, विवेकशून्य तथा खोटी बुद्धि वाला होता है। बाल्यकाल में वह प्रायः किसी दुर्घटना का शिकार होता है। यदि यह रेखा जीवन-रेखा को छूती हुई आगे बढ़े तो ऐसा व्यक्ति विवेकशील, बुद्धिमान, अवसरवादी तथा सतर्कता एवं सावधानी से काम करने वाला होता है।

● **सूर्य-रेखा**—यह रेखा मणिबन्ध, चंद्र व राहु-क्षेत्र, मस्तक-रेखा, हृदय-रेखा अथवा अन्य किसी स्थान से प्रारम्भ होकर अनामिका उंगली के नीचे सूर्य-क्षेत्र की ओर जाती है। यह रेखा प्रायः प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में नहीं पाई जाती। जिनके हाथ में यह रेखा होती है, वे व्यक्ति भाग्योन्नति, आदर-सत्कार तथा यश के धनी होते हैं। इसे 'यश-रेखा' भी कहा जाता है। यदि यह रेखा जीवन-रेखा से निकलकर सीधी सूर्य-क्षेत्र तक जाए तो ऐसा व्यक्ति यंत्र-तंत्र-मंत्र-वेत्ता, कलाकार, यशस्वी, चित्रकार तथा समाज में प्रतिष्ठा-प्राप्त होता है। यदि मंगल-क्षेत्र से निकलकर सूर्य-क्षेत्र तक जाए तो ऐसा व्यक्ति विद्रोही, परिश्रमी, बहादुर और आत्म-विश्वासी तथां प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

● **स्वास्थ्य-रेखा**—यह रेखा हथेली के मध्य भाग से, जीवन रेखा से, चन्द्र-क्षेत्र से अथवा अन्य किसी स्थान से निकलकर कनिष्ठा उंगली के नीचे बुध-क्षेत्र तक जाती है। इस

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रेखा से भारतीय विद्वान् भाग्य के बारे में भी विचार करते है, परन्तु पाश्चात्य विद्वान् इसे स्वास्थ्य की दशा समझने में प्रयुक्त करते हैं। यह रेखा प्रायः बहुतों के हाथ में नहीं पाई जाती। विशेष रूप से जिनके हाथ में यह रेखा पाई जाती है, उनके स्वास्थ्य पर यह अपना शुभ या अशुभ प्रभाव अवश्य डालती है। जिनके हाथ में यह रेखा नहीं होती वे व्यक्ति प्रायः स्वस्थ, दीर्घ-जीवी एवं प्रसन्नात्मा होते हैं। यदि यह रेखा मस्तक तथा हृदय-रेखा को काटती हुई जाती है, तो ऐसा व्यक्ति मस्तिष्क एवं हृदय दोनों में कमजोर होता है। यह रेखा जितनी स्पष्ट होगी, स्वास्थ्य उतना ही उत्तम होगा और जितनी टेढ़ी, कटी एवं टूटी होगी स्वास्थ्य उतना ही कमजोर होगा।

● **विवाह रेखा**— यह रेखा कनिष्ठा उंगली के नीचे होती है। जितनी रेखाऐं होती हैं, उतने ही विवाह अथवा उतनी स्त्रियों का संसर्ग-सुख भोगने वाला होता है। यदि विवाह-रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति अपनी स्त्री से कलह करने वाला तथा व्यभिचारी होता है। यदि यह रेखा शुद्ध हो और एक हो तो ऐसा व्यक्ति एक पत्नी-व्रती होता है।

विवाह-रेखा के ऊपर-नीचे छोटी-छोटी रेखाऐं, जो बहुत ही सूक्ष्म होती है, उनसे संतान के बारे में विचार करना चाहिए। ये छोटी-छोटी रेखाऐं यदि टूटी-फूटी हों तो सन्तान की मृत्यु अथवा गर्भ-पात की सूचक जाननी चाहिए। संतान के विषय में अंगूठे के मूल से लेकर मणिबन्ध (पौंचे) के मोड़ तक की रेखाओं से भी विचार किया जाता है।

सामान्य रूप से सब कार्यों में लग्न-शुद्धि

१. अपनी जन्म-राशि से ८वीं, १२वीं राशि को छोड़कर अन्य राशि लग्न में हों।
२. लग्न से ८वें, १२वें स्थान में कोई ग्रह न हो।
३. चन्द्रमा लग्न से ३, ६, १० या ११वें स्थान में हो।
४. शेष शुभ ग्रह केंद्र, त्रिकोण (१-४-५-७-९-१०) में और पाप ग्रह त्रिषडाय (३-६-११) में हों।

विशेष—यदि उपर्युक्त प्रकार से शोधित लग्न की राशि अपनी जन्म-राशि से ३, ६, १० या ११वें हों तो वह विशेष उत्तम लग्न का मुहूर्त होता है एवं वह लग्न जितने अधिक शुभ ग्रहों से युत दृष्ट हो, उतना ही अधिक बली एवं फलप्रद होता है।

चन्द्रबल— अपनी जन्म-राशि से १, ३, ६, ७, १०, ११वीं राशि का चन्द्र शुभ होता है। इसके अलावा शुक्ल पक्ष मे २, ५, ९वीं राशि का भी चन्द्र शुभ होता है।

ताराबल—जन्म-नक्षत्र से इष्ट कालीन नक्षत्र तक की संख्या को ९ से भाग दें, शेष १, २, ४, ६, ८, ० रहे तो ताराबल प्राप्त होता है; ३, ५, ७ शेष रहे तो तारा-बल नहीं मिलता। शुक्ल पक्ष में चन्द्र-बल, कृष्ण पक्ष में तारा-बल लेना चाहिए।

सामान्य दिन शुद्धि

शुभ तिथि— दोनों पक्ष की २, ३, ५, ७, १०, १२ और कृष्ण १ प्रतिपद तथा शुक्ल १३ ये शुभ तिथियां हैं। क्षय-तिथि और वृद्धि-तिथि वर्ज्य हैं।

शुभ वार —सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र —अश्वि., रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, उ.षा., श्रवण, धनिष्ठा, शत., उ.भा., रेवती।

शुभ करण—बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर एवं वणिज।

लग्न-प्रशंसा—लग्न का विचार छोड़कर जो कुछ काम किया जाए, वह सब निष्फल होता है; जैसे, ग्रीष्म ऋतु में क्षुद्र नदियां सूख जाती हैं। तिथि नक्षत्र योग अथवा चंद्र के बल का कोई महत्व नहीं; गर्ग, नारद तथा कश्यप मुनि केवल लग्न की प्रशंसा करते हैं। जो लग्न अपने बलवान स्वामी से अथवा बलवान शुभ ग्रहों से दृष्ट हो, पाप ग्रहों से युत अथवा दृष्ट न हो, वह लग्न बलवान होता है।

लग्न-शुद्धी—लोग कहते है कि चन्द्रमा का बल प्रधान है; किन्तु शास्त्रों के अनुसार लग्न-बल ही प्रधान है। लग्न से ग्यारहवें स्थान में सब ग्रह शुभ होतें हैं। ३, ८, स्थानों में सूर्य अथवा शनि शुभ होते हैं। द्वितीय अथवा तृतीय स्थान में चन्द्रमा शुभ होता है ३, स्थानों में मंगल शुभ होता है। २, ३, ४, ५, ६, ९, १० स्थानों में बुध तथा बृहस्पति शुभ होते हैं। २, ३, ४, ५, ९, १० स्थानों में शुक्र शुभ होता है। ३, ५, ६, ८, ९, १०, १२ स्थानों में राहु शुभ होता हैं।

चरत्रय निषेध—चर लग्न चर नवांश तथा चर राशि में स्थित चन्द्रमा; ये तीनों चर निषिद्ध हैं। वर-कन्या के प्राणों का नाश करने वाले हैं। उदाहरण—कर्क अथवा मेष।

[शेष पृष्ठ ९२ का] **दिक्शूल पदार्थ (वार के अनुसार)**

रविवार	घी का बना कोई पदार्थ, ताम्बूल (पान का बीड़ा), रसाल (पका आम)
सोमवार	दूध, खीर या दूध से बने पदार्थ, चन्दन लेपन
मंगलवार	गुड़, मिष्ठान्न या कांजी
बुधवार	तिल या दूध से बने पदार्थ, पुष्प धारण
गुरुवार	दही (दधि)
शुक्रवार	जौ (यव) या घी, दूध से बने पदार्थ
शनिवार	तिल या उड़द से बने पदार्थ खाकर, अदरख, उड़द

प्रस्थान के नियम—यदि यात्रा में देर हो और मुहूर्त्त निकला जा रहा हो तो ब्राह्मण यात्री ब्राह्मण जाति का हो तो जनेऊ, क्षत्रिय कोई हथियार, वैश्य वस्त्र, शूद्र फल अथवा अपनी प्रिय वस्तु या सफर में ले जाने वाला कोई थैला, बक्सा, पेटी आदि अपने पड़ौसी, मित्र, नाते रिश्तेदार के यहां रखवा दें और यात्रा पर जाते समय साथ लेता जावे। पूर्व की यात्रा हो तो प्रस्थान अधिक से अधिक सात दिन का, दक्षिण दिशा की यात्रा हो तो पांच दिन तक का, पश्चिम दिशा की यात्रा में तीन दिन तक और उत्तर दिशा की यात्रा में दो दिन पहले तक रखा जा सकता है। **चन्द्रवास चक्रम्**

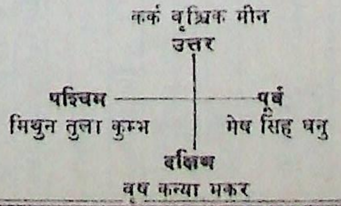

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

फलित में परमोपयोगी ग्रह-दृष्ट्यादि विवरण-चक्र

ग्रह और उनके चिह्न	रवि ☉	चंद्र ☽	मंगल ♂	बुध ☿	गुरु ♃	शुक्र ♀	शनि ♄	राहु ☊	केतु ☋
ग्रहों की एक-पाद दृष्टि	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	०	३-१०	३-१०
दो-पाद दृष्टि	५-९	५-९	५-९	५-९	०	५-९	५-९	५-९	५-९
तीन-पाद दृष्टि	४-८	४-८	०	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८
सम्पूर्ण दृष्टि	७	७	४-७-८	७	५-७-९	७	३-७-१०	७	७
नक्षत्र-दृष्टि	५-१५	१५	७-८-१०-१५	९-१२-१५	१०-१५-१९	९-१२-१५	३-५-१५-१९	९-१५	९-१५
मित्र-ग्रह	चं.मं.गु.	र.बु.	र.चं.गु.	र.शु.रा.	र.चं.मं.	बु.श.रा.	बु.शु.रा.	बु.शु.श.	बु.
सम-ग्रह	बु.	मं.गु.शु.श.	शु.श.	मं. गु. श.	श.रा.	मं. गु.	मं.	गु.	×
शत्रु-ग्रह	शु.श.रा.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र.चं.मं.	र.चं.मं.	×
बलवत्तम भाव	दशम	चतुर्थ	दशम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	सप्तम	×	×
कारक भाव	१-९-१०	४	३-६	४-१०	२-५-९-१०-११	७	६-८-१०-१२	×	×
उच्चराशि एवं परमोच्चांश	मेष १०°	वृषभ ३°	मकर२८°	कन्या १५°	कर्क ५	मीन२७°	तुला२०°	मिथुन१५°	धनु १५°
नीचराशि एवं परम नीचांश	तुला १०°	वृश्चिक ३°	कर्क२८°	मीन १५°	मकर ५°	कन्या२७°	मेष.२०°	धनु१५°	मिथुन१५°
मूल त्रिकोण राशि, अंश	सिंह २०°	४°से३०°	मेष १८	कं.१६°से२०°	धनु १३°	तुला १०°	कुम्भ२०°	कर्क	मकर
स्वगृह-(राशि)	सिंह	कर्क	मेष वृश्चि.	मि., कन्या	धनु, मीन	वृष,तुला	म. कुम्भ	कन्या	मीन
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	×	×
शत्रु-राशियां	२-६-७-१०-११	६	३-६	४	२-३-६-७	४-५	१-४-५-८	१-४-५-८	×
स्वगृह से सप्तम(अस्त)राशि	११	१०	२-७	९-१२	३-६	१-८	४-५	१२	६
विंशो० दशा-नक्षत्र व वर्ष	कृ. उ.षा. उ.फा.६	रो.ह. श्र.१०	मृ.चि. ध. ७	आश्लेषा ज्ये.रे.१७	पुन. वि. पू.भा.१६	म.पू.फा. पू.षा. २०	पुष्य अनुराधा उ.भा. १९	आर्द्रा स्वाती शत. १८	अश्विनी म.मू. ७
ग्रहों के भाग्योदयकारी वर्ष	२२	२४	२८	२	१६	२५	३६	४२	४२
दिशा (१)	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य
कुण्डली-भाव-दिशा	१	५-६	१०	४	२-३	११-१२	७	८-९	८-९
राशिचक्र-परिभ्रमण वर्ष	१	०-०-७४	१-९	०-२	११-९	०-६	२९-५	१८-६	१८-६
मध्यम राशि-भ्रमण-काल	१ मास	२१ दिन	१॥ मास	२५ दिन	१३ मास	२८ दिन	३० मास	१८ मास	१८ मास
नक्षत्र-चार-दिन	१३	१	२०	१०	१७३	१२	४००	२४०	२४०
नक्षत्र-पाद(नवांश)चार-दिन	३१/४	१/४	५	२१/२	४३	३	१००	६०	६०
मध्यमदिनगति,कला,विकला	५९'-८"	७९०'-३५"	३१'-२७"	५९'-८"	४'-५९"	५९'-८"	२'-०"	३'-११"	३'-११"
शीघ्र गति, कला, विकला	६०'-४"	८२३'-४८"	३९'-१"	१०४'-४६"	१२'-२२"	७३'-४३"	५'-२७"	×	×
परमशीघ्रगति (अतिचारी)	६१'	८५७'	४६'-११"	११३'-३२"	१४'-४"	७५'-४२"	७'-४५"	×	×
अतिचार-दिन (स्थूल)	×	×	१५	१०	४५	१०	१८०	×	×
सन् ८३ का मध्यम शर (विक्षेप) नव्य मत	×	५°-८'-४३"·४३	१°-५०'-५९"·४	७°-०'-१५"·९	१°-१८'-१४"·४	३°-२३'-४०"·१	२°-२९'-२१"·३	×	×
गोचर से निंद्य	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	×	×
गोचर से पूज्य	१-२-५-७-९	२-५-९	१-२-५-७-९	१-३-५-७-९	१-३-६-१०	५-६-७-१०	१-२-५-७-९	४-८-१२	४-८-१२
गोचर से शुद्ध	३-६-१०-११	१-३-६-७-१०-११	३-६-१०-११-	२-६-१०-११-	२-५-७-९-११	१-२-३-९-११	३-६-१०-११	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९
अनुक्रम से वेध-स्थान	९-१२-४--५ शनिवर्जित	५-९-१२-२-४-८ बुध वर्जित	१२-९-१०-५	५-१-८-१२ चन्द्र वर्जित	१२-४-३-१०-८	८-७-१-११-३	१२-९-१०-५ सूर्य वर्जित	३-६-१०-११ १२-९-१०-५	३-६-१०-११ १२-९-१०-५

टिप्पणी—चन्द्रमा शुक्लपक्ष में २,५,९वें स्थानों में भी शुभ होता है, यदि क्रमशः ६,८,४ स्थान में बुध के सिवा अन्य ग्रह न हों।
(१)ग्रह जिस दिशा का स्वामी है, यात्रा-कालिक कुण्डली में उसी दिशा में पड़े तो ललाट-योग होता है जो युद्ध-यात्रा में वर्ज्य है। यात्रा की दिशा का स्वामी-ग्रह तात्कालिक कुण्डली के केन्द्र में हो तो यात्रा विहित है। (मुहूर्त-मार्तण्ड)।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

✻ ग्रह-शील-चक्र ✻

ग्रह-चिह्न	सूर्य ☉	चंद्र ☽	मंगल ♂	बुध ☿	गुरु ♃	शुक्र ♀	शनि ♄	राहु ☊	केतु ☋
पर्याय	हेलि	ग्लौ, शीत-रश्मि	आर, वक्र भू-सुत	ज्ञ, इंदु-पुत्र विद्, बोधन	जीव, अंगि. सुरगुरुइज्य	भृगु भृगुसुत सितदे. गुरु	कोण, मंद सूर्य-पुत्र	तम, अगु, असुर	शिखी
शुभ, पाप	उग्र	शुभ (क्षीण चन्द्र पाप	क्रूर	शुभ, (पाप युक्त पाप	शुभ	शुभ	अति पाप	पाप	पाप
देवता	अग्नि	वरुण	स्कन्द	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	वायु	आकाश
काल-पुरुष अंग	आत्मा	मन	सत्व, शौर्य	वाणी	ज्ञान-सुख	काम-सुख	दुःख	मृति	स्थिति
पुरुषादि लिंग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	वैश्य, शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	अंत्यज	शूद्र	संकर
आकार	चतुरस्र	वर्तुल	चतुष्कोण	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ
स्वभाव	स्थिर	चंचल	उग्र	मिश्र	मृदु	लघु	अतितीक्ष्ण	......	......
स्थान	पर्वत	जलचर	पर्वत, वनचर	विद्वानों से युक्तग्रा. चर	विद्वानों से युक्तग्रा. चर	जलचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, वनचर
काल	अयन	क्षण-मुहूर्त	दिन	ऋतु	मास	पक्ष	वर्ष	......	......
दिशा, कोण	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	अग्नि	पश्चिम	नैऋत्य	सर्वदिशा
ग्रह-शांति में दिशा	मध्य	अग्नि	दक्षिण	ईशान	उत्तर	पूर्व	पश्चिम	नैऋत्य	वायव्य
राजादि पदवी	राजा	राजरानी	सेनापति	युवराज	मंत्री	गुप्त मंत्री	प्रेष्य दूत	सेवक	परिचारक
वय-वर्ष अवस्था	प्रौढ़ (५०)	युवा	तरुण	कुमार	युवा (३०)	किशोर	वृद्ध (१००)	अतिवृद्ध	अतिवृद्ध
रंग	पाटल	गौर	रक्तगौर	दूर्वाश्याम	गौर-पीत	श्वेत-श्याम	नील	कृष्ण	धूम्र
ह्रस्वदीर्घ	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ
विद्या	वैद्यक	ज्योतिष	शस्त्र	शिल्प	व्याकरण	संगीत	यावनी वि.	गारुडी	गुप्त-तंत्र
भाग्योदय-वर्ष	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४८
दशा व गोचर फल काल	प्रथम भाग	अन्त्य	प्रथम भाग	सर्वदा	मध्य	मध्य	अन्त्य	......	......
कारक	पिता	माता	बन्धु, पितृव्य	मामा, बुद्धि वाणी	पुत्र, बुद्धि ज्ञान, धर्म	स्त्री	दूत, भृत्य दारिद्र्य	दादा, शत्रु	नाना
कारक भाव	१, ९, १०	४	३, ६	४, १०	२, ५, ९, १०	७	६, ८, १०	......	......
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	......	......
तत्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आका. तेज	जल	वायु	जल-वायु	तेज
गुण	सत्व	सत्व	तामस	राजस	सत्व	राजस	तामस	अति तामस	किंचित तामस
धात्वादि	मूल	जीव	धातु	मिश्रण	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
रस	तिक्त	क्षार	कटु	मिश्र	मधुर	अम्ल, खट्टा	कषायकसै	तीखा	नीरस फीका
धातु	सुवर्ण	रौप्य	लोहा	वशद	वंग	ताम्र	नाग	पञ्चधातु	अष्टधातु
वस्त्र	मोटा	नवीन	अग्नि-दग्ध	आर्द्र	मध्यम	दृढ़	मलिन	चित्र-विचित्र	जीर्ण-शीर्ण
काल-बल	मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रातः	प्रातः	अपराह्न	संध्या	संध्या	संध्या
पाद	चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगअपद	अपद	अपद
भूमि	पशुभूमि	जलभूमि	दग्ध	श्मशान	सुरालय	जलभूमि	उत्कट	ऊसर	ऊसर
स्थान	वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर
शरीर-धातु	अस्थि	रुधिर	मज्जामांस	चर्म त्वचा	मेद	वीर्य-ओज	स्नायु	......	रस
पित्तादि प्रकृति	पित्त	श्लेष्मा	पित्त	समधातु	समधातु	कफ	वात	वात	वात
रोग	नेत्ररोग	नेत्र-पीड़ा	रक्त	त्रिदोष	ज्वर	वीर्य-रोग	वातव्याधि	अस्थि-रोग	अस्थि-रोग
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद	हेमन्त	वसन्त	शिशिर	शिशिर	शिशिर
दृष्टि	ऊर्ध्व	सम	ऊर्ध्व	तिर्यक्	सम	तिर्यक्	अधो.	अधो.	अधो.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

देशान्तर—दिल्ली से पूर्व में + पश्चिम में — अन्तर   स्टैण्डर्ड अन्तर—स्थानीय टाईम और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टैं. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशांतर समय-संस्कार	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टैं. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशांतर समय-संस्कार	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टैं. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशान्तर समय-संस्कार
अयोध्या	उ० प्र०	२६।४८	८२।१४	— १। ४	+२०। ० — ३	उदयपुर	राजस्थान	२४।३५	७३।४२	—३५।१२	—१४। ८ + २	गुरुदासपुर	पंजाब	३२। ३	७५।२७	—२८।१२	— ७। ८ + १
अक्कलकोट	बम्बई	१७।३३	७६।१२	—२५।१२	— ३।५२ + ०	उस्मानाबाद	महाराष्ट्र	१८। ८	७६। ५	—२५।४०	— ४।३६ + ०	गुना	मध्यप्रदेश	२४।४०	७७।३०	—२०। ०	+ १। ४ — ०
अम्बाला	हरियाणा	३०।२२	७६।४६	—२२।५६	— १।५२ + ०	एलिचपुर	,, ,,	२१।१८	७७।३३	—१९।४८	+ १।१६ — ०	घाटमशर	उत्तरप्रदेश	२६। ८	८०।११	— ९।१६	+११।४८ — २
आकोला	महाराष्ट्र	२०।४२	७७। २	—२१।५२	— ०।४८ + ०	एटाकासगंज	उत्तर प्रदेश	२७।३५	७८।४१	—१५।१६	+ ५।४८ — १	चंडीगढ़	चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	—२२।३२	— १।२८ + ०
अजमेर	राजस्थान	२६।२७	७४।४०	—३१।२०	—१०।१६ + २	कच्छभुज	गुजरात	२३।१५	६९।४०	—५१।२०	—३०।१६ + ५	चन्दौसी	उत्तरप्रदेश	२८।२७	७८।४७	—१४।५२	+ ६।१२ — १
अमृतसर	पंजाब	३१।३८	७४।५३	—३०।२८	— ९।२४ + २	कन्नौज	उत्तर प्रदेश	२७। २	७९।५८	—१०। ८	+१०।५६ — २	चन्द्रपुर	महाराष्ट्र	१९।५६	७९।१७	—१२।५२	+ ८।१२ — १
अहमदाबाद	गुजरात	२३। २	७२।३७	—३९।३२	—१८।२८ + ३	कविरत्तिद्वीप	लक्ष द्वीप	१०।१७	७२।२१	—४०।३६	—१९।३२ + ३	चिलास	जम्मू-का.	३५।३६	७४। ७	—३३।३२	—१२।२८ + २
अलीगढ़	उ० प्र०	२७।५४	७८। ५	—१७।४०	+ ३।२४ — ०	कलकत्ता	पश्चिमीबंगाल	२२।३५	८८।२४	+२३।३६	+४४।४० — ७	चीलो	राजस्थान	२७।२३	७३।१९	—३६।५६	—१५।५२ + २
अहमदनगर	महाराष्ट्र	१९। ५	७४।४४	—३१। ४	—१०। ० + २	कपूरथला	पंजाब	३१।२२	७५।१२	—२८।३२	— ७।२८ + १	चिक्कमगलूर	कर्नाटक	१३।१९	७५।४७	—२६।५२	— ५।४८ + १
अलीगढ़टोंक	राजस्थान	२५।२८	७६। ६	—२५।३६	— ४।३२ + ०	करनाल	हरियाणा	२९।४२	७७। २	—२१।५२	— ०।४८ + ०	चित्रकूट	उ. प्र.	२५।१२	८०।५४	— ६।२४	+१४।४० — २
अलीबाग	बम्बई	१८।३८	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६ + २	कन्याकुमारी	तमिलनाडु	८। ४	७७।३६	—१९।३६	+ १।२८ — ०	चित्तौरगढ़	राजस्थान	२४।५४	७४।४२	—३१।१२	—१०। ८ + २
अलवर	राजस्थान	२७।३४	७६।३८	—२३।२८	— २।२४ + ०	कल्पाद	हिमाचल प्र.	३१।४१	७९।१०	—१३।२०	+ ७।४४ — १	छपरा	बिहार	२५।४७	८४।४७	+ ९। ८	+३०।१२ — ४
अखनूर	कश्मीर	३२।५४	७४।३५	—३१।४०	—१०।३६ + २	करीमनगर	आंध्रप्रदेश	१८।२८	७९। ६	—१३।३६	+ ७।२८ — १	छतरपुर	मध्यप्रदेश	२४।५५	७९।३६	—११।३६	+ ९।२८ — १
अनूपशहर	उ० प्र०	२८।२१	७८।२३	—१६।२७	+ ४।३६ — ०	कानपुर	उत्तर प्रदेश	२६।२७	८०।२१	— ८।३६	+१२।२८ — २	छिबरामऊ	उ. प्र.	२७।१०	७९।२९	—१२। ४	+ ९। ० — १
अलमोड़ा	उ० प्र०	२९।३७	७९।४०	—११।२०	+ ९।४४ — १	काठमाण्डो	नेपाल	२७।४२	८५।१७	+११। ८	+३२।१२ — ५	छबरा टोंक	राजस्थान	२४।४०	७६।५१	—२२।३६	— १।३२ + ०
अमेठी	उ० प्र०	२६। ८	८१।४८	— २।४८	+१८।१६ — २	कांगड़ामन्दिर	हिमाचल	३२। ६	७६।१८	—२४।४८	— ३।४४ + ०	जगन्नाथपुरी	उड़ीसा	१९।४६	८५।५०	+१३।२०	+३४।२४ — ५
असिनसोल	प० बंगाल	२३।४२	८७।२०	—२०।४०	+४०।२४ — ६	काशी	उत्तर प्रदेश	२५।२०	८३। ०	— २। ०	+२३। ४ — ३	जबलपुर	मध्यप्रदेश	२३।१०	७९।५८	—१०। ८	+१०।५६ — १
अनूपगढ़	राजस्थान	२९।१०	७३।१३	—३७। ८	—१६। ४ + २	कांचिपुरम	तमिलनाडु	१२।५१	७९।५३	—१०।२८	+१०।३६ — २	जयपुर	राजस्थान	२६।५५	७५।५०	—२६।४०	— ५।३६ + १
अकबरपुर	उ० प्र०	२६।२६	८२।३३	+ ०।१२	+२१।१६ — ३	कारगिल	जम्मू-कश्मीर	३०।३०	७६।१३	—२५। ८	— ४। ४ + ०	जलपाईगुडी	बंगाल	२६।३२	८८।४४	+२४।५६	+४६। ० — ७
अमरेली	गुजरात	२१।३६	७१।१४	—४५। ४	—२४। ० + ४	किशनगढ़	राजस्थान	२७।५२	७०।३४	—४७।४४	—२६।४० + २	जम्मू	जम्मू-का.	३२।४४	७४।५४	—३०।२४	— ९।२० + १
अगरतला	त्रिपुरा	२३।५०	९१।२३	+३५।३२	+५६।३६ — ९	किस्तवाड़	जम्मू	३३।१२	७५।४८	—२६।४८	— ५।४४ + १	जसवन्तनगर	जसवन्तन.	२६।५१	७८।५५	—१४।२०	+ ६।४४ — १
अनन्तपुरम	आंध्रप्रदेश	१४।४१	७७।३७	—१९।३२	+ १।३२ — ०	किशनगढ़ जं.	राजस्थान	२७।१०	७५।२२	—२८।३२	— ७।२८ + १	जनकपुर	मध्यप्रदेश	२३।४२	८१।५१	— २।३६	+१८।२८ — ३
आईजोल	मिजोरम	२३।४५	९२।४५	+४१। ०	+६२। ४ —१०	कोच्चि (कोची)	केरल	१०। ०	७६।१५	—२५। ०	— ३।५६ + ०	जामनगर	गुजरात	२२।२७	७०। ५	—४९।४०	—२८।३६ + ४
महुवा	गुजरात	२०।४७	७३।४२	—३५।१२	—१४। ८ + २	कोलगंगा	बिहार	२५।१९	८७।१६	+१९। ४	+४०। ८ — ६	जालौर	राजस्थान	२५।३५	७२।४४	—३९। ४	—१८। ० + ३
आगरा	उ० प्र०	२७।११	७८। २	—१७।५२	+ ३।१२ — ०	कोहिमा	नागालैंड	२५।४१	९४। ०	+४६। ०	+६७। ४ —११	जूनागढ़	गुजरात	२१।३२	७०।२७	—४८।१२	—२७। ८ + ४
आबू	राजस्थान	२४।३६	७२।४४	—३९। ४	—१८। ० + ३	केलांग	हिमाचल	३२।४७	७७। ४	—२१।३६	—००।४० + ०	जोधपुर	राजस्थान	२६।१९	७३। ४	—३७।४४	—१६।४० + २
आजमगढ़	उ० प्र०	२६। ६	८३।१२	+ २।४८	+२३।५२ — ४	कोटा	राजस्थान	२५।११	७५।५०	—२६।४०	— ५।३६ + ०	जौनपुर	उ. प्र.	२५।४३	८२।४३	+ ०।५२	+२१।५६ — ३
आरा	बिहार	२५।३६	८४।४२	+ ८।४८	+२९।५२ — ५	कोल्हापुर	महाराष्ट्र	१६।४१	७४।१३	—३३। ८	—१२। ४ + २	जींद	हरियाणा	२९।१९	७६।२३	—२४।२८	— ३।२४ + ०
औरंगाबाद	बिहार	२४।४४	८४।२३	+ ७।३२	+२८।३६ — ४	कुशलगढ़	राजस्थान	२३। ८	७४।२७	—३२।१२	—११। ८ + २	जैसलमेर	राजस्थान	२६।५४	७०।५७	—४६।१२	—२५। ८ + ४
औरंगाबाद	महाराष्ट्र	१९।५२	७५।१९	—२८।४४	— ७।४० + १	कूचबिहार	,, ,,	२६।२०	८९।२५	+२७।४०	+४८।४४ — ८	जालन्धर	पंजाब	३१।१९	७५।३५	—२७।४०	— ६।३६ + १
ओंगोलु	आंध्रप्रदेश	१५।३१	८०। ६	— ९।३६	+११।२८ — २	कृष्णा	कर्नाटक	१६।२५	७७।१९	—२०।४४	+००।२० — ०	जाफराबाद	सौराष्ट्र	२०।५२	७१।२१	—४४।३६	—३२।३२ + ४
इन्दौर	मध्यप्रदेश	२२।४२	७५।५२	—२६।२८	— ५।२८ + ०	खम्मम	आंध्रप्रदेश	१७।१५	८०।११	— ९।१६	+११।४८ — २	झांसी	उ. प्र.	२५।२६	७८।३४	—१५।४४	+ ५।२० — १
इटावा	उ० प्र०	२६।४७	७९। २	—१३।५२	+ ७।१२ १	खण्डवा	मध्यप्रदेश	२१।५०	७६।२०	—२४।४०	— ३।३६ + ०	झालावाड़	राजस्थान	२४।३६	७६। ९	—२५।२४	— ४।२० + ०
इम्फाल	मणिपुर	२४।५४	९३।५४	+४५।२६	+६६।४० —११	खेडब्रह्मा	गुजरात	२४। ३	७३। ४	—३७।३६	—१६।४० + २	झुंझुनू	राजस्थान	२८। ७	७५।२५	—२८।२०	— ७।१६ + १
इडुक्की	केरल	९।५९	७७।१४	—२१। ४	००।०० — ०	गयाजी	बिहार	२४।४८	८५। १	+१०। ४	+३१। ८ — ५	टोंक	राजस्थान	२६।११	७५।५०	—२६।४०	— ५।३६ + १
इटानगर	अरुणाचल	२६।५४	९३।३७	+४४।२४	+६५।३२ —१०	ग्वालियर	मध्यप्रदेश	२६।१४	७८।१०	—१७।२०	+ ३।४४ — ०	टैरु	जम्मू-का.	३६।१४	७२।४२	—३९।१२	—१८। ८ + ३
ईगतपुरी	महाराष्ट्र	१९।४१	७३।३५	—३५।४०	—१४।३६ + २	गंगापुर	राजस्थान	२६।२९	७६।४४	—२३। ४	— २।०० — ०	टाकनपुर	उ. प्र.	२९। ९	८०।१०	— ९।२०	+११।४४ — २
इटारसी	मध्यप्रदेश	२२।३७	७७।४६	—१८।५६	+ २। ८ — ०	गाजीपुर	उत्तर प्रदेश	२५।२६	८३।३५	+ ४।२०	+२५।२४ — ५	टाटानगर	बिहार	२४।४६	८६।१३	+१४।५२	+३५।५६ + ०
इलाहाबाद	उत्तर प्रदेश	२५।२८	८१।५२	— २।३४	+१८।३२ — २	गान्तोक	सिक्किम	२७।२०	८८।२५	+२४।२०	+४५।२४ — ८	टेहरी गढ़वाल	उ० प्र०	३०।२३	७८।३०	—१६। ०	+ ५। ४ — ०
उन्नाव	,, ,,	२६।३३	८०।३०	— ८। ०	+१३। ४ — २	गंगानगर	राजस्थान	२९।५२	७३।५१	—३४।३६	—१३।३२ + २	टूंडला जं.	उत्तर प्रदेश	२७।१३	७८।१३	—१७। ८	+ ३।५६ — ०
उतरोला	,, ,,	२७।१९	८२।२८	— ०। ८	+२०।५६ — ३	गोरखपुर	उत्तर प्रदेश	२६।४६	८३।२६	— ३।३२	+२४।३६ — ४	डायमंड	पं. बंगाल	२२।११	८४।१२	+ ६।४८	+२७।५२ — ४
ऊधमपुर	जम्मू	३२।५५	७५। ७	—२९।३२	— ८।२८ + १	गोंडा	उत्तर प्रदेश	२७।१०	८१।५८	— २।१२	+१८।५२ — ३	डिब्रूगढ़	असम	२७।२९	९४।५६	+४९।४४	+७०।४८ —११
उज्जैन	मध्यप्रदेश	२३।११	७५।४४	—२७। ४	— ६। ० + १	गोधा	गोधा	२५।१५	७३।४७	—३४।५२	—१३।४८ + २	डूंगरपुर	राजस्थान	२३।५०	७३।४३	—३५। ८	—१४। ४ + २
उदयमंडलम	तमिलनाडु	११।१७	७६।४४	—२३। ४	— २। ० + ०	गुवाहाटी	असम	२६।११	९१।४५	+३७। ०	+५८। ४ — ८	डिबाई	उ. प्र.	२८।१२	७८।१५	—१७। ०	+ ४। ४ — ०

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

देशान्तर=दिल्ली से पूर्व में + पश्चिम में — अन्तर स्टैण्डर्ड अन्तर—स्थानीय टाईम और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टै. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशांतर समय-संस्कार	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टै. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशांतर समय-संस्कार	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टै. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशांतर समय-संस्कार
डीग	राजस्थान	२७।२८	७७।२०	—२०।४०	+ ०।२४ — ०	परतकोट	मध्यप्रदेश	१९।४५	८०।४६	— ६।५६	+१४। ८ — २	बैतूल	मध्य प्रदेश	२१।५१	७७।५६	—१८।१६	+ २।४८ — ०
डेराबाबा न.	पंजाब	३२। २	७५। ४	—२६।४४	— ८।४० + १	पणजी	गोआ	१५।४७	७३।१०	—३७।२०	—१६।१६ + २	बेलगांव	कर्नाटक	१५।५५	७४।३१	—३१।५६	—१०।५२ + २
ढाका	बंगलादेश	२३।४३	९०।२५	+३१।४०	+५२।४४ — ८	पालनपुर	गुजरात	२४।११	७२।२७	—४०।१२	—१९। ८ + २	बुलन्दशहर	उत्तर प्रदेश	२८।२४	७७।५२	—१८। ३	+ २।३२ — ०
तलागंग	तलागंगा	३२।५६	७२।२८	—४०। ८	—१९। ४ + ३	पाण्डिचेरी	तमिलनाडु	११।५६	७९।४८	—१०।४८	+१०।१६ — २	बिलासपुर	हिमाचल प्र.	३१।१९	७६।५०	—२२।४०	— १।३६ + ०
तराई	बंगाल	२६।४०	८८।३०	+२४। ०	+४५। ४ — ७	पानीपत	हरियाणा	२९।२७	७६।५९	—२२। ४	— १। ० + ०	बिलासपुर	मध्य प्रदेश	२२। ५	८२।१०	— १।२०	+१९।४४ — ३
तेजु	अरुणाचल प्र.	२७।५४	९६।१४	+५४।५६	+७६। ० —१२	प्रयागराज	उ० प्र०	२५।२५	८१।५३	— ३।२८	+१८।३६ — ३	बिजनौर	उत्तर प्रदेश	२९।२३	७८।११	—१७।१६	+ ३।४८ — ०
तंजाबूर	तमिलनाडु	१०।५१	७९।२१	—१२।३६	+ ८।२८ — १	पूना	महाराष्ट्र	१८।३१	७३।५२	—३४।३२	१३।२८ + २	बिहारशरीफ	बिहार	२५।११	८५।३२	+१२। ८	+३३।१२ — ५
त्रिरुवनन्तपुरम	केरल	८।४४	७७।२०	—२०।४०	+ ०।२४ — ०	पोर्टब्लेयर	अन्दमान	११।४४	९२।४१	+४०।४४	+६१।४८ —१०	बीकानेर	राजस्थान	२८। १	७३।१९	—३६।४४	—१५।४० + २
तुर(मेघालय)	शिलङ्ग	२५।३१	९०।१५	+३१। ०	+५२। ४ — ८	पुष्कर	राजस्थान	२६।२८	७४।३३	—३१।४८	—१०।४४ + २	बीजापुर	कर्नाटक	१६।५०	७५।४२	—२७।१२	— ६। ८ + १
थानेश्वर	पंजाब	२९।५८	७६।५६	—२२।१६	— १।१२ + ०	पेशावर	प. पाकिस्तान	३४। १	७१।३६	—४३।३६	—२२।३२ + ४	बीदर	कर्नाटक	१८।१०	७७।४७	—१८।५२	+ २।१२ — ०
दतिया	मध्यप्रदेश	२५।३६	७८।२७	—१६।१२	+ ४।५२ — ०	पोरबन्दर	गुजरात	२१।३८	६९।३५	—५१।३६	—३०।३२ + ५	बीरमगढ़	गुजरात	२३। ०	७२। २	—४१।५२	—२०।४८ + ३
दरभंगा	बिहार	२६।१०	८५।५५	+१३।४०	+३४।४४ — ५	फतेहपुर	उत्तर प्रदेश	२७। ६	७७।४०	—१९।२०	+ १।४४ — ०	बोगरा	बंगलादेश	२४।५१	८९।२४	+२७।२६	+४८।४० — ८
दार्जलिंग	बंगाल	२७। ३	८८।१७	+२३। ८	+४४।१२ — ७	फरीदकोट	पंजाब	३०।४०	७४।४५	—३१। ०	— ९।५६ + २	भरतपुर	राजस्थान	२७।१५	७७।३०	—२०। ०	+ १। ४ — ०
दिसपुर	असम	२६।२०	९२।१०	+३८।४०	+५९।४४ — ९	फर्रुखाबाद	उत्तर प्रदेश	२७। ३	७९।३७	—११।३२	+ ९।३२ — १	भंडारा	महाराष्ट्र	२१।१०	७९।४०	—११।२०	+ ९।४४ — १
दिण्डुक्कल	तमिलनाडु	१०।१३	७८। ५	—१७।४०	+ ३।२४ — ०	फतेहपुर	राजस्थान	२७।५२	७५।	—२९।५२	— ८।४८ + १	भरूच	गुजरात	२१।४१	७३। ०	—३८। ०	—१६।५६ + २
दिल्ली	राजधानी	२८।३८	७७।१४	—२१। ४	— ०। ० — ०	फुलेरा	" "	२६।५२	७५।१६	—२८।५६	— ७।५२ + १	भटिन्डा	पंजाब	३०।११	७४।५७	—३०।१२	— ९। ८ + १
द्वारका	गुजरात	२२।१५	६८।५७	—५४।१२	—३३। ८ + ५	फीरोजपुर	पंजाब	३०।५७	७४।३६	—३१।३६	—१०।३२ + २	भदोही	उ. प्र.	२५।२४	८२।३४	+ ०।१६	+२१।२० — ३
देहरादून	उ० प्र०	३०।१९	७८। ४	—१७।४४	+ ३।२० — ०	फैजाबाद	उत्तर प्रदेश	२६।४७	८२। ८	— १।२८	+१९।३६ — ३	भोपाल	मध्य प्रदेश	२३।१६	७७।२३	—२०।२८	+ ०।३६ — ०
देशनोक	राजस्थान	२७।५४	७३।१९	—३६।५६	—१५।५२ + २	फीरोजाबाद	उत्तर प्रदेश	२७। ९	७८।२४	—१६।२४	+ ४।४० — ०	भीलवाड़ा	राजस्थान	२५।२१	७४।४०	—३१।२०	—१०।१६ + २
देवगढ़	उड़ीसा	२१।३२	८४।४५	+ ९। ०	+३०। ४ — ५	फूलपुर	उत्तर प्रदेश	२५।३२	८२। ७	— १।३२	+१९।३२ — ३	भिवानी	हरियाणा	२८।४८	७६। ८	—२५।२८	— ४।२४ + ०
धर्मशाला मं.	हिमाचल प्र.	३२।१६	७६।२३	—२४।२८	— ३।२४ + ०	फाजिलका	पंजाब	३०।२५	७४। ३	—३३।४८	—१२।४४ + २	भावनगर	गुजरात	२१।४७	७२।१०	—४१।२०	—२०।१६ + ३
धरमपुरी	तमिलनाडु	१२। ८	७८।११	—१७।१६	+ ३।४८ — ०	फतेहगढ़	उत्तर प्रदेश	२७।२३	७९।३५	—११।४०	+ ९।२४ — १	भुवनेश्वर	उड़ीसा	२०।५४	८५।५२	+१३।२८	+३४।३२ — ५
धारवाड़	कर्नाटक	१५।२८	७५। २	—२९।५२	— ८।४८ + १	बक्सर	बिहार	२५।३४	८३।५९	+ ५।५६	+२७। ० — ४	भुसावल	महाराष्ट्र	२१। २	७५।४७	—२६।५२	— ५।४८ + १
धार	मध्य प्रदेश	२२।३६	७५।१२	—२९।१२	— ८। ८ + १	बद्रीनाथ	उत्तर प्रदेश	३०।४४	७९।३०	—१२। ०	+ ९। ४ — १	भूटान	भूटान	२७।३०	९०। ०	+३०। ०	+५१। ४ — ८
धौलपुर	राजस्थान	२६।४२	७७।५३	—१८।२८	+ २।३६ — ०	वरंगल	आंध्रप्रदेश	१८। ४	७९।५३	—१०।२८	+१०।३६ — १	भुजकच्छ	गुजरात	२३।१५	६९।४१	—५१।१६	—३०।१२ + ५
धौलागिर	नेपाल	२९।११	८३। ०	+ २। ०	+२३। ४ — ४	बड़ौदा	महाराष्ट्र	२२।१८	७३।१२	—३७।१२	—१६। ८ + २	मथुरा	उत्तर प्रदेश	२७।२८	७७।४१	—१९।१६	+ १।४८ — ०
ध्रांगध्रा	सौराष्ट्र	२२।५९	७१।३०	—४४। ०	—२२।५६ + ४	बलिया	उत्तर प्रदेश	२५।४४	८४। ९	+ ६।३६	+२७।४० — ५	मद्रास	तमिलनाडु	१३। ५	८०।१७	— ८।५२	+१२।१२ — २
नवलगढ़	राजस्थान	२७।५१	७५।१२	—२९।१२	— ८। ८ + १	बलोतरा	राजस्थान	२५।४९	७२।१६	—४०।५६	—१९।५२ + ३	मणीपुर स्टेट	मणीपुर	२४।२०	९३।५८	+४५।५२	+६६।५६ —११
नसीराबाद	राजस्थान	२६।१८	७४।४६	—३०।५६	— ९।५२ + २	बम्बई	महाराष्ट्र	१८।५५	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६ + ३	मण्डी	हिमाचल प्र.	३१।४३	७६।५८	—२२। ८	— १। ४ + ०
नडियाद	गुजरात	२२।४१	७२।५२	—३८।३२	—१७।२८ + ३	बरेली	उ० प्र०	२८।२२	७९।२४	—१२।२४	+ ८।४० — १	मल्लपुरम	केरल	११। ४	७६। ४	—२५।४४	— ४।४० + ०
नाथद्वारा	राजस्थान	२४।५६	७३।४८	—३४।४८	—१३।४४ + २	बद्रीनाथ	कर्नाटक	१५।२४	७५।५२	—२२।३२	— १।२८ + ०	मालेगांवना	मालेगाव	२०।३१	७४।३०	—३२। ०	—१०।५६ + २
नाभा	पंजाब	३०।२२	७६।१०	—२५।२०	— ४।१६ + ०	बर्द्धमान	प. बंगाल	२३।२४	८७।५४	+२१।३६	+४२।४० — ८	मुरादाबाद	उ. प्र.	२८।५०	७८।५०	—१४।४०	+ ६।२४ — १
नागपुर	महाराष्ट्र	२१। ९	७९। ६	—१३।३६	+ ७।२८ — १	बहराइच	उ० प्र०	२७।३४	८१।३७	— ३।३२	+१७।३२ — २	मुंगेर	बिहार	२५।२३	८६।३०	+१६। ०	+३७। ४ — ६
नासिक	महाराष्ट्र	२१। ०	७३।४७	—३४।५२	—१३।४८ + २	बस्ती	उ० प्र०	२६।४८	८२।४६	+ १। ४	+२२। ८ — ३	मुजफ्फरपुर	बिहार	२६। ७	८५।२७	+११।४८	+३२।५२ — ५
नाचना	राजस्थान	२७।५२	७१।५४	—४२।२४	—२१।२० + ३	ब्यावर	राजस्थान	२६। ७	७३।५४	—३४।२४	—१३।२० + २	मुजफ्फराबाद	कश्मीर	३४।३३	७३।२७	—३६।१२	—१५। ८ + २
नारनौल	"	२८। २	७६। ७	—२५।३२	— ४।२८ + ०	वाराणसी	उ० प्र०	२५।२०	८३। ०	+ २। ०	+२३। ४ — ४	मेघालय	शिलंग	२५।५७	९२। ०	+३८। ०	+५९। ४ —१०
नागरकोविल	तमिलनाडु	८। ७	७७।४७	—१८।५२	+ २।१२ — ०	बांसवाड़ा	मध्य प्रदेश	२३।३३	७८।२६	—१६।१६	+ ४।४८ — ०	मैसूर	कर्नाटक	१२।१९	७६।४०	—२६।२०	— ५।१६ + ०
नीमच	मध्य प्रदेश	२४।२८	७४।५१	—३०।३६	— ९।३२ + १	बाराबंकी	उ० प्र०	२६।५६	८१।१०	— २।२०	+१५।४४ — २	मेरठ	उ. प्र.	२९। १	७७।४५	—१९। ०	+ २। ४ — ०
नैनीताल	उ० प्र०	२९।२५	७९।२७	—१२।१२	+ ८।५२ + १	बालु घाट	प. दिनाज	२५।१४	८८।४७	+२५। ८	+४६।१२ — ७	मिर्जापुर	उ. प्र.	२५।१०	८२।३७	+ ०।२८	+२१।३२ — ३
नेपालगंज	नेपालगंज	२८। ३	८१।३७	— ३।३२	+१७।३२ — ३	बांदा	उ० प्र०	२५।२८	८०।२१	— ८।३६	+१२।२८ — २	मेड़तासिटी	राजस्थान	२६।३९	७४। ३	—३३।४८	—१२।४४ + २
नीलगिरि	उड़ीसा	२१।२७	८६।४७	+१७। ८	+३८।१२ — ६	बांदीकुई	राजस्थान	२७।२६	७६।२४	—२४।२४	— ३।२० + ०	यानामा	आंध्र प्रदेश	१६।४६	८२।१३	— १। ८	+१९।५६ — ३
पटना	बिहार	२५।३७	८५।१३	+१०।५२	+३१।५६ — ५	बूंदी	राजस्थान	२५।२७	७५।४०	—२७।२०	— ६।१६ + १	याखिन	कश्मीर	३६।२१	७३।१९	—३६।४४	—१५।४० + २
पठानकोट	पंजाब	३२।१८	७५।४२	—२७।१२	— ६। ८ + १	ब्रह्मकुण्ड	अरुणाचल प्र.	२७।५६	९६।१०	+५४।४०	+७५।४४ —१२	यवतमाल	महाराष्ट्र	२०।२४	७८। ८	—१७।२८	+ ३।३६ — ०
पटियाला	"	३०।२२	७६।२५	—२४।२०	— ३।१६ + ०	बंगलौर	कर्नाटक	१२।५८	७७।३५	—१९।४०	+ १।२४ — ०	यादगीर	कर्नाटक	१६।४७	७७। ८	—१७।२८	+ ३।३६ + ०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

देशान्तर—दिल्ली से पूर्व में + पश्चिम में — अन्तर स्टैण्डर्ड अन्तर—स्थानीय टाईम और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टैं. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशांतर समय-संस्कार
रतलाम	मध्य प्रदेश	२३।१९	७५। ३	—२९।४८	— ८।४४ + १
रत्नागिरी	महाराष्ट्र	१६।५९	७३।१९	—३६।४४	—१५।४० + २
राजकोट	गुजरात	२२।१८	७०।५०	—४६।४०	—२५।३६ + ४
राजचूर	कर्नाटक	१६।१२	७७।२१	—२०।३६	+ ०।२८ — ०
राजमपेट	आन्ध्र प्रदेश	१४।१२	७९।३४	—११।४४	+ ९।२० — १
रामपुर	उत्तर प्रदेश	२८।४७	७९। २	—१३।५२	+ ७।१२ — १
रामेश्वर	तमिलनाडु	९।१७	७९।१८	—१२।४८	+ ८।१६ — १
रायबरेली	उत्तर प्रदेश	२६।१४	८१।१३	— ५। ८	+१५।५६ — २
राजमंद्रि	आन्ध्र प्रदेश	१७। ५	८१।४८	— २।४८	+१८।१६ — २
रायपुर	मध्यप्रदेश	२१।१५	८१।३८	— ३।२८	+१७।३६ — २
राजगढ़	" "	२४। ०	७६।४४	—२३। ४	— २। ० + ०
" "	राजस्थान	२७।४०	७६।२४	—२४।२४	— ३।२० + ०
राजनन्द गांव	मध्य प्रदेश	२१। ५	८१। ५	— ५।४०	+१५।१५ — ३
रोहतक	हरियाणा	२८।५४	७६।३८	—२३।२८	— २।२४ + ०
रोपड़	पंजाब	३०।५७	७६।३०	—२४। ०	— २।५६ + ०
लखनऊ	उ० प्र०	२६।५१	८०।५९	— ६। ४	+१५। ० — २
ललितपुर	" "	२४।४१	७८।२४	—१६।२४	+ ४।४० — १
लुधियाना	पंजाब	३०।५५	७५।५३	—२६।२८	— ५।२४ + १
शाहजहांनपुर	उत्तर प्रदेश	२७।५४	७९।५७	—१०।१२	+१०।५२ — २
शिलांग	मेघालय	२५।३४	९१।४५	+३७।३६	+५८।४० — ९
शिवपुरी	मध्य प्रदेश	२५।३०	७८। ४	—१३।४४	+ ३।२० — ०
शाजापुर	" "	२३।२४	७६।१४	—२५। ४	— ४। ० + ०
शेरकिला	काश्मीर	३६। ७	७३।५३	—३४।२८	—१३।२४ + २
श्रीनगर	" "	३४। ६	७४।५१	—३०।३६	— ९।३२ + २
शिमला	हिमाचल प्र.	३१। ६	७७।१०	—२१।२०	— ०।१६ + ०
संखालपुर	गुजरात	२३।४७	७०।२८	—४८। ८	—२७। ४ + ४
सातारा	महाराष्ट्र	१७।४७	७३।५४	—३४।२४	—१३।२० + २
सागर	मध्यप्रदेश	२३।५०	७८।४५	—१५। ०	+ ६। ४ — १
सरदारशहर	राजस्थान	२८।२७	७४।३०	—३२। ०	—१०।५६ + २
सवाईमाधोपुर	" "	२५।५९	७६।२४	—२४।२४	— ३।२० + ०
सहारनपुर	उत्तर प्रदेश	२९।५९	७७।२३	—२०।२८	+ ०।३६ — ०
सोमनाथ	गुजरात	२१। १	७०।२६	—४८।१६	—२७।२२ + ४
सोलापुर	महाराष्ट्र	१७।४०	७५।४८	—३०।४८	— ५।४४ + १
सोलन	हिमाचल	३०।५५	७७। ९	—२१।२४	— ०।२० + ०
सूरत	गुजरात	२१।१२	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६ + ३
सिकन्दराबाद	आन्ध्रप्रदेश	१७।२७	७८।३३	—१५।४८	+ ५।१६ — ०
सिरोही	राजस्थान	२४।५६	७२।५१	—३८।३६	—१७।३२ + ३
सीकर	" "	२७।५१	७५।१४	—२९। ४	— ८। ० + १
सीतापुर	उत्तर प्रदेश	२७।३६	८०।४०	— ७।२०	+१३।४४ — २
हरिद्वार	" "	२९।५८	७८।१३	—१७। ८	+ ३।५६ — ०
हरदोई	" "	२७।२३	८०।१०	— ९।२०	+११।४४ — २
हफुवा	हफुवा	२६।१२	८४। ५	+ ६।२०	+२७।२४ — ४
होशंगाबाद	मध्यप्रदेश	२२।४६	७७।४५	—१९। ०	+ २। ४ — ०
जारीबाग	बिहार	२४। ०	८५।२३	+११।३२	—३२।३६ — ५

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टैं. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशांतर समय-संस्कार
हाजीपुर	उत्तर प्रदेश	२५।३५	८३।११	+ २।४४	+२३।४८ — ४
होश्यारपुर	पंजाब	३१।३२	७५।५५	—२६।२०	— ५।१६ + १
होशंगाबाद	मध्यप्रदेश	२२।४६	७७।४३	—१९। ८	+ १।५६ — ०
हैदराबाद	आन्ध्रप्रदेश	१७।२७	७८।३०	—१६। ०	+ ५। ४ — ०
हिसार	हरियाणा	२९।१४	७५।४४	—२७। ४	— ६। ० + १
हैद्राबाद	पाकिस्तान	२५।२३	६८।२२	—५६।३२	—३५।२८ + ६
हिंगाटा	उड़ीसा	२०।२२	८५।१२	+१०।४८	+३१।५२ — ५

विविध मुहूर्तों का विचार

बड़ा व्यापार करने का मुहूर्त

नक्षत्र ह., पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा
वार बुध, गुरु, शुक्र   तिथि २,३,५,७,११,१३

नौकरी करने का मुहूर्त—हस्त, चित्रा, अनु., रे., अ., मृ., पुष्य नक्षत्रों में बुध, गुरु, शुक्र, रवि इन वारों में रिक्ता अमा रहित तिथियों में नौकरी प्रारम्भ करनी श्रेष्ठ है।

कर्ण वेध के मुहूर्त का चक्र

वर्ष विषम वर्ष ६, ७, ८ वें मास जन्म से १२वें या १६वें दिन
तिथि १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५, ३०

मुकद्दमा दायर करने का मुहूर्त

नक्षत्र ज्ये., आर्द्रा., भ., तीनों उत्तरा, मू., आश्ले०, म०
वार रवि, बुध, गुरु, शुक्र   तिथि ३, ५, ८, १०, १३, १५
लग्न ३, ६, ७, ८, ११
लग्न सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र ये ग्रह १, ४, ७, १० इन स्थानों में, पापग्रह ३, ६, ११ स्थानों पर शुभ हैं। अष्टम स्थान में कोई ग्रह न हो।

विशेष—लग्न में कोई प्रबल पापग्रह हो ऐसे लग्न में मुकद्दमा दायर करना अत्यन्त अशुभ है।

स्तन पान कराने का मुहूर्त

जन्म से पांचवें दिन-अथवा भद्रा, व्यतिपात वैधृति ४-९-१४ तिथि को छोड़ कर शुभ तिथि सोम बुध गुरु शुक्र वारों में पुन०, पुष्य, मृ०, ह०, श्र०, रे० नक्षत्रों में बालक को प्रथम बार स्तनपान कराना शुभ है।

स्तनपान कराने के लिए मुहूर्त का चक्र

तिथि २, ३, ५, ८ १०, ११, १२, १३, १५,
वार सोम, बुध, गुरु, शुक्र
नक्षत्र पुन०, पुष्य, मृ०, ह०, श्र०, रे०
त्याज्य भद्रा, व्यतिपात, वैधृति, रिक्ता तिथि

भूमि पर बैठने के लिए मुहूर्त का चक्र

तिथि पंचममास में १, २, ३, ४, ५, ६, ८,१०,११,१२,१३,१५

अन्न प्राशन कराने के लिए मुहूर्त का चक्र

मास पुत्र को ६, ८, १०, १२ कन्या को ५, ७, ९, ११
तिथि, वार १, ३, ५, ७, १०, १३, १५, सोम, बुध, गुरु, शुक्र

(शेष पृष्ठ ९५ का)

स्वप्न	स्वप्न का फल	स्वप्न	स्वप्न का फल	स्वप्न	स्वप्न का फल	स्वप्न	स्वप्न का फल
बिच्छू देखना	चिंता	जुआ खेलना	धन की तंगी	पर्यंक पर चढ़ना	तरक्की	इमारत बनाना	लाभ व तरक्की
बादल देखना	लाभ	अपने को मारना	दीर्घायु शुभ	पानी में डूबना	कष्ट पाना	ऊंट देखना	लाभ
भूषण की चोरी	सफर	अनाज भरना	धन लाभ	बशरी बजाना	इज्जत तरक्की	ऊंचाई से गिरना	मान हानि
मदिरा पीना	कष्ट पाए	अन्न बेचना	नुकसान	बन्दर देखना	धन लाभ	किला देखना	तरक्की पाना
मौत देखना	हानिकारक	आग उठाना	कष्ट	बर्फ गिरते देखना	रोग, चिन्ता	कुत्ते का काटना	शत्रुभय
मकान गिरते देखना	तरक्की	आंधी देखना	सफर, चिंता	बगीचा देखना	ऋण निवृत्ति	कूप में गिरना	परेशानी
		आग देखना	धन प्राप्ति	बारात देखना	रोग	नाव देखना	परेशानी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दुनियां के कुछ देशों के अक्षांश आदि

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख नगर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. समयान्तर मि. सै.	ग्रीन्विच G.M.T. से क्षे. स्टैं. समयान्तर	भारतीय स्टैं. टा. से क्षे. स्टैं. टा. समयान्तर	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशान्तर समय संस्कार	साम्पा. संस्कार
वैलिंग्टन	न्यूजीलैंड	४१।१६द.	१७४।४६पू.	—२०।२५	+१२। ०	+ ६।३०	+६।३०। ८	—१। ३
कानबेर	आस्ट्रेलिया	३५।१५द.	१४६। ८पू.	— ३।२८	„ १०। ०	„ ४।३०	+४।४७।३६	„ ०।४७
आस्ट्रेलिया	दक्षिण	३२। ०द.	१४६।१७पू.	—१४।५२	„ १०। ०	„ ४।३०	+४।३६।१२	„ ०।४७
टोकियो	जापान	३५।३६उ.	१३९।४५पू.	+१९। ०	„ ९। ०	„ ३।३०	+४।१०। ४	„ ०।४४
सेऊल	द.कोरिया	३७।४०उ.	१२७। ०पू.	—३२। ०	„ ९। ०	„ ३।३०	+३।१२। ४	„ ०।३३
प्योंगयांग	उ.कोरिया	३९। ०उ.	१२५।३०पू.	—३८। ०	„ ९। ०	„ ३।३०	+३।१३। ६	„ ०।३२
फार्मोसा	फार्मोसा	२५।१८उ.	१२१।३२पू.	—१३।५२	„ ९। ०	„ ३।३०	+२।५७।१२	„ ०।३०
फिजीदीप	फिजी	१८। ०द.	१७८। ०पू.	+ ६।२६	„ १२। ०	„ ६।३०	+६।४७। ४	„ १। ८
पेकिंग	चीन	३९।५०उ.	११६।२०पू.	—१४।४०	„ ८। ०	„ २।३०	+२।३६।२४	„ ०।२६
हांगकांग	हांगकांग	२२।१८उ.	११४।१०पू.	—२३।२०	„ ८। ०	„ २।३०	+२।२७।४८	„ ०।२२
जकार्ता	इंडोनेशिया	७।५७द.	११०।२०पू.	— ८।४०	„ ७।३०	„ २। ०	+२।१२।२४	„ ०।२१
सिंगापुर	मलाया	१।१६उ.	१०३।४७पू.	—३७।५२	„ ७।३०	„ २। ०	+१।४६।१२	„ ०।१७
बेंगकॉक	स्याम	१३।४५उ.	१००।३०पू.	—१८। ०	„ ७। ०	„ १।३०	+१।३३। ८	„ ०।१५
रंगून	ब्रह्मदेश	१६।४८उ.	९६। ८पू.	— ५।२८	„ ६।३०	„ १। ०	+१।१५।३६	„ ०।१२
मांडले	„ „	२२। ०उ.	९६। ५पू.	— ५।४०	„ ६।३०	„ १। ०	+१।१५।२४	„ ०।१२
ल्हासा	तिब्बत	२९।४०उ.	९१। ८पू.	+३४।३२	„ ५।३०	„ ०। ०	+०।५५।३६	„ ०। ९
ढाका	बांग्लादेश	२३।४३उ.	९०।२५पू.	+ ३।४०	„ ६। ०	„ ०।३०	+०।५२।४८	„ ०। ८
कांडी	सीलोन लंका	७।११उ.	८०।३२पू.	— ०। ०	„ ५।३०	— ०। ०	+०।२१।१२	„ ०। २
राज.दिल्ली	भारत	२८।३८उ.	७७।१४पू.	—२१। ४	„ ५।३०	+ ०। ०	+०। ०। ०	„ ०। ०
काबुल	अफगानिस्तान	३४।३१उ.	६९।१२पू.	+ ६।४८	„ ४।३०	— १। ०	—०।३२। ८	+०। ५
करांची	प.पाकिस्तान	२४।५१उ.	६७। ०पू.	—३२। ०	„ ५। ०	„ ०।३०	—०।४०।५६	„ ०। ६
तेहरान	ईरान	३५।४४उ.	५१।२७पू.	— ४।१२	„ ३।३०	„ २। ०	—१।४३। ८	„ ०।१७
एडन	एडन	१२।५८उ.	४५। १पू.	+ ०। ४	„ ३। ०	„ २।३०	—२। ८।५२	„ ०।२०
बगदाद	ईराक	३३।१८उ.	४४।३०पू.	— २। ०	„ ३। ०	„ २।३०	—२।१०।५६	„ ०।२१
अदन	एडन	१३।२५उ.	४५। ०पू.	— ०। ०	„ ३। ०	„ २।३०	—२। ८।५६	„ ०।२०
रियाध	सऊदी अरब	२४।५०उ.	४६।१८पू.	+ ५।१२	„ ३। ०	„ २।३०	—२। ३।४४	„ ०।१९
मॉस्को	रूस	५५।४५उ.	३७।३५पू.	—२९।४०	„ ३। ०	„ २।३०	—२।३८।३६	„ ०।२६
नाइरोबी	पूर्वीअफ्रीका	१।२०द.	३६।४८पू.	—३२। ४	„ २।३०	„ ३। ०	—२।४२। ०	„ ०।२७
दमास्कस	सीरिया	३३।३०उ.	३६।१८पू.	+२५।१२	„ २। ०	„ ३।३०	—२।४३।४४	„ ०।२७
अमन	जॉर्डन	३१।५७उ.	३५।५७पू.	+२३।४८	„ २। ०	„ ३।३०	—२।४५। ८	„ ०।२८
जेरूसलेम	इसराइल	३१।४८उ.	३५।१२पू.	+२०।४८	„ २। ०	„ ३।३०	—२।४८। ८	„ ०।२८
काहिरा	मिस्र	३०।१ उ.	३१।१४पू.	+ ४।५२	„ २। ०	„ ३।३०	—३। ४। ४	„ ०।३१
अंकारा	तुर्किस्तान	३९।५२उ.	३२।५१पू.	+११।५६	„ २। ०	„ ३।३०	—२।५७। ०	„ ०।३०
ट्रांसवाल्य	दक्षि.अफ्रीका	२५।० द.	२८। ४पू.	+ ४। ०	„ २। ०	„ ३।३०	—३।१२।५६	„ ०।३१
बल्गारिया	यूरोप	४३।१८उ.	२६।१७पू.	+१४।५२	„ २। ०	„ ३।३०	—३।२३।४८	„ ०।३३
एथेन्स	ग्रीस	३७।५९उ.	२३।२०पू.	—२६।४०	„ २। ०	„ ३।३०	—३।३५।३६	„ ०।३६
बेलग्रेड	यूगोस्लाविया	४४।५०उ.	२०।३७पू.	+२२।२८	„ १। ०	„ ४।३०	—३।४६।२८	„ ०।३८
बुडापेस्ट	हंगरी	४७।२६उ.	१९। ५पू.	+१६।२०	„ १। ०	„ ४।३०	—३।५२।३६	„ ०।३९
बर्लिन	पूर्वीजर्मनी	५२।३२उ.	१३।२४पू.	— ६।२४	„ १। ०	„ ४।३०	—४।१५।२०	„ ०।४२
ट्रिपोली	उत्तरीअफ्रीका	३२।५४द.	१३।१५पू.	— ७। ०	„ १। ०	„ ४।३०	—४।१६।५८	„ ०।४३
रोम	इटली	४१।५४उ.	१२।२९पू.	—१०। ४	„ १। ०	„ ४।३०	—४।१९। ०	„ ०।४८
बान	पश्चिम जर्मनी	५०।४४उ.	७। ६पू.	—३१।३६	„ १। ०	„ ४।३०	—४।४०।३२	„ ०।४८
जेनेवा	स्वीट्जरलैंड	४६।१२उ.	६। ९पू.	—३५।२४	„ १। ०	„ ४।३०	—४।४४।२०	„ ०।४९

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख नगर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. समयान्तर मि. सै.	ग्रीन्विच G.M.T. से क्षे. स्टैं. समयान्तर	भारतीय स्टैं. टा. से क्षे. स्टैं. टा. समयान्तर	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशान्तर समय संस्कार	साम्पा. संस्कार
ब्रसेल्स ×	बेल्जियम	५०।५१उ.	४।२१पू.	—४२।३६	+ १। ०	— ४।३०	—४।५१।३२	+०।५०
पेरिस ×	फ्रान्स	४८।५०उ.	२।२०पू.	„ ५०।४०	+ १। ०	„ ४।३०	„ ४।५९।३६	„ ०।५१
ग्रीनविच	इंग्लैंड	५१।२९उ.	रे. शून्य	„ ०। ०	+ ०। ०	„ ५।३०	„ ५। ८।५६	„ ०।५१
लंदन	„	५१।३२उ.	०। ५प.	„ ०।२०	— ०। ०	„ ५।३०	„ ५। ९।१६	„ ०।५३
माड्रिड ×	स्पेन	४०।२५उ.	३।४५प.	„ ७५। ०	+ १। ०	„ ४।३०	„ ५।२३।२६	„ ०।५४
जिब्राल्टर „	जिब्राल्टर	३६। ७उ.	५।२२प.	„ ८१।२८	+ १। ०	„ ४।३०	„ ५।३०।२४	„ ०।५७
लिस्बन	पुर्तगाल	३८।४२उ.	९।१०प.	„ ३६।४०	— ०। ०	„ ५।३०	„ ५।४५।३६	„ १।३७
अर्जेन्टाइना	द. अमेरिका	२६।१२द.	६४।४५प.	+४१। ०	„ ५। ०	„ १०।३०	„ ९।२७।५६	„ १।४०
न्यूयार्क	अमेरिका	४०।४३उ.	७४। ०प.	+ ४। ०	„ ५। ०	„ १०।३०	„ १०। ४।५६	„ १।४०
ओटावा	कैनेडा	४५।२६उ.	७५।४१प.	— २।४४	„ ५। ०	„ १०।३०	„ १०।११।४०	„ १।४०
वाशिंगटन	अमेरिका	३८।४३उ.	७७। ०प.	„ ८। ०	„ ५। ०	„ १०। ०	„ १०।१६।५६	„ १।४२
मेक्सिको	मेक्सिको	१९।२५उ.	९९।१७प.	„ ३७। ८	„ ६। ०	„ ११।३०	„ ११।४६। ४	„ १।५७

नोट— × यहां ग्रीनविच मध्यम समय (G.M.T.) भी व्यवहार में चालू है।

रेलवे टाईम से देशी टाईम बनाने की रीति :—

जिस नगर का देशान्तर मिनट धन होवे उसके मध्यमान्तर को रेलवे टाइम में जोड़ देना और जहां ऋण चिह्न होवे वहां पर मध्यान्तर मिनट घटा देने से अभीष्ट शहर का मध्यम समय होगा, उस मध्यम समय में जिस मास और तारीख का स्पष्ट समय जानना हो तो उस मास और तारीख के सामने जो वेलान्तर मिनट होवे उनको मध्यम टाइम में विपरीत (धन चिन्ह हो तो ऋण और ऋण, चिन्ह हो तो धन) युक्त करने से अभीष्ट शहर का घन्टा मिनिटात्मक स्पष्ट समय उस दिन का होगा। (+) यह धन चिन्ह है। और (—) यह ऋण चिन्ह है।

समय भेद—इस समय समस्त भू-मण्डल पर जो समय प्रयोग में आ रहा है वह ब्रिटेन की राजधानी लन्दन के निकट ग्रीनविच (वेधशाला) से प्रसारित किया जाता है। सभी देशों ने अपने-अपने यहां व्यवहार में लाने के लिए किसी एक स्थान विशेष को आधार मानकर स्वदेशीय स्टैण्डर्ड टाइम चालू कर रखा है। इस समय समस्त भारत वर्ष में जो समय प्रसारित किया जाता है, वह बनारस से कुछ पश्चिम में मिर्जापुर, चिरमिरी, बिलासपुर, कोटपाड़, पोरा और जुम्ला आदि स्थानों पर से गुजरने वाली काल्पनिक देशान्तर रेखा को आधार मान कर किया जाता है, जोकि ग्रीनविच से पूर्व रेखांश ८२।३० के अन्तर पर है। एक देशान्तर रेखा बराबर ४ मिनट + के हिसाब से ८२।३०×४=५ घं० २० मिनट का अन्तर ही ग्रीनविच और भारतीय स्टैण्डर्ड समय का अन्तर सदैव धन रहता है।

वर्तमान समय में—८२।३० पूर्व देशान्तर रेखा से प्रसारित होने वाला भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समस्त भारत वर्ष में एक समान रहता है। इससे वायुयान, जलयान, रेलवे आदि के व्यवहारों में बहुत सुविधा रहती है। लेकिन अनभिज्ञ ज्योतिषी समय भेद का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के किसी भी आधार पर बने पंचांग का सूर्योदय चाहे जिस मान का लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से अपराध है। ज्योतिषियों को चाहिए कि पहले समय भेद को भली भांति समझकर तदन्तर जन्म पत्र आदि बनावें।

इस समय समस्त घड़ियां स्टैण्डर्ड टाईम से चल रही हैं। प्रायः धूप घड़ी का प्रचलन ही समाप्त हो चुका है। धूप घड़ी से बने पंचांग व उनमें छपी लग्न सारिणी, दिनार्ध से या दिनमानादि के द्वारा इष्ट बनाने की पुरानी विधि भी सर्वथा अनुचित है, क्योंकि धूप घड़ी के अनुसार कोई भी अपने बच्चे का जन्म टाईम नोट नहीं करता, फिर भी रेलवे टाईम को देशी (धूप घड़ी) टाईम में बदलने की विधि हम ऊपर लिख चुके हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

सूर्यबिम्ब प्रथमान्त बक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक)

उत्तर अक्षांश		अक्षांश ८				९				१०				११				१२				१३				१४			
		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
मा.	ता.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
जनवरी	१	६	१४	५	५४	६	१६	५	५२	६	१७	५	५०	६	१९	५	४९	६	२१	५	४७	६	२३	५	४५	६	२४	५	४३
	७		१६		५७		१८		५५		१९		५३		२१		५२		२३		५०		२५		४८		२६		४७
	१३		१८	६	०		२०		५८		२१		५७		२३		५५		२४		५३		२६		५१		२८		५०
	१९		१९		३		२१	६	१		२२	६	०		२४		५८		२५		५७		२७		५५		२८		५४
	२५		२०		५		२२		३		२३		२		२४	६	१		२६		५९		२७		५८		२८		५७
	३१		२०		७		२२		६		२३		५		२४		३		२५	६	२		२७	६	०		२८		५९
फरवरी	६		२०		९		२१		८		२२		७		२३		५		२४		४		२५		३		२७	६	२
	१२		१९		१०		२०		९		२१		८		२२		७		२३		६		२४		५		२५		४
	१८		१७		११		१८		१०		१९		९		२०		८		२१		८		२२		७		२२		६
	२४		१५		११		१६		१०		१७		१०		१७		९		१८		९		१९		८		१९		७
मार्च	२		१३		१२		१४		११		१४		११		१५		१०		१५		१०		१६		९		१६		९
	८		१०		१२		११		११		११		११		११		११		१२		१०		१२		१०		१२		१०
	१४		८		११		८		११		८		११		८		११		८		११		९		१०		९		१०
	२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११
	२६		१		१०		१		१०		१		११		१		११		१		११		१		११		०		१२
अप्रेल	२	५	५८		१०	५	५८		१०	५	५७		११	५	५७		११	५	५६		११	५	५६		११	५	५५		१२
	८		५५		९		५५		९		५४		१०		५३		११		५२		१२		५२		१२		५१		१३
	१४		५३		९		५१		९		५०		१०		५०		११		४९		१२		४९		१२		४८		१३
	२०		४९		९		४८		१०		४७		११		४७		१२		४६		१२		४५		१३		४४		१४
	२६		४७		९		४६		१०		४५		११		४४		१२		४३		१३		४२		१४		४१		१५
मई	१		४५		९		४४		१०		४३		१२		४२		१३		४१		१४		४०		१५		३८		१६
	७		४३		१०		४२		११		४१		१२		४०		१४		३८		१५		३७		१६		३६		१८
	१३		४२		११		४१		१२		३९		१३		३८		१५		३७		१६		३६		१७		३४		१९
	१९		४१		१२		४०		१३		३८		१५		३७		१६		३५		१८		३४		१९		३२		२१
	२५		४१		१३		४०		१४		३८		१६		३६		१८		३५		१९		३३		२१		३१		२३
	३१		४१		१४		४०		१६		३८		१८		३६		१९		३४		२१		३३		२२		३१		२४
जून	६		४१		१६		४०		१७		३८		१९		३६		२१		३४		२३		३३		२४		३१		२६
	१२		४२		१७		४१		१९		३९		२१		३७		२३		३५		२४		३३		२६		३१		२८
	१८		४३		१९		४२		२०		४०		२२		३८		२४		३६		२६		३४		२८		३२		३०
	२४		४५		२०		४३		२२		४१		२४		३९		२५		३८		२७		३६		२९		३४		३१
	३०		४६		२१		४५		२३		४३		२५		४१		२६		३९		२८		३७		३०		३५		३२
जुलाई	६		४८		२२		४६		२३		४४		२५		४२		२७		४१		२९		३९		३०		३७		३२
	१२		४९		२२		४८		२४		४६		२६		४४		२७		४२		२९		४१		३०		३९		३२
	१८		५०		२२		४९		२३		४७		२५		४५		२७		४४		२९		४२		३०		४०		३२
	२४		५१		२२		५०		२३		४८		२५		४७		२६		४५		२८		४४		२९		४२		३१
	३०		५२		२१		५१		२२		४९		२३		४८		२५		४६		२६		४५		२७		४४		२९
अगस्त	५		५३		१९		५२		२०		५०		२२		४९		२३		४८		२४		४७		२५		४५		२७
	११		५३		१७		५२		१८		५१		२०		५०		२१		४८		२२		४७		२३		४६		२४
	१७		५३		१५		५२		१६		५१		१७		५०		१८		४९		१९		४८		२०		४७		२१
	२३		५३		१२		५२		१३		५१		१४		५०		१५		४९		१६		४९		१७		४८		१८
	२९		५२		१०		५२		१०		५१		११		५०		१२		४९		१२		४९		१३		४८		१४
सितम्बर	४		५२		९		५२		९		५१		७		५०		८		४९		८		४९		९		४८		१०
	१०		५१		३		५१		३		५०		४		५०		४		४९		५		४९		५		४९		५
	१६		५०		०		५०		०		५०		०		५०		०		४९		०		४९		०		४९		१
	२२		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६
	२८		४९		५३		४९		५३		४९		५३		४९		५२		४९		५२		४९		५२		४९		५२
अक्तूबर	३		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४९		४९		४९		४९		५०		४८		५०		४८
	९		४८		४७		४८		४६		४८		४६		४९		४६		४९		४५		५०		४४		५०		४४
	१५		४७		४४		४८		४३		४९		४३		४९		४३		५०		४२		५१		४१		५१		४१
	२१		४७		४२		४८		४१		४९		४०		५०		४०		५०		३९		५१		३८		५२		३७
	२७		४८		४०		४९		३९		५०		३८		५१		३७		५१		३६		५२		३५		५३		३४
नवम्बर	२		४९		३९		५०		३७		५१		३६		५२		३५		५३		३४		५४		३३		५५		३२
	८		५०		३८		५१		३६		५२		३५		५४		३४		५५		३३		५६		३१		५७		३०
	१४		५१		३७		५३		३६		५४		३५		५६		३३		५७		३२		५९		३०	६	०		२८
	२०		५४		३८		५५		३६		५६		३५		५८		३३		५९		३२	६	१		३०		२		२६
	२६		५६		३९		५८		३७		५९		३६	६	१		३४	६	२		३२		४		३०		५		२६
दिसम्बर	२		५९		४०	६	१		३८	६	२		३७		४		३५		५		३४		७		३२		९		३०
	८	६	२		४२		४		४०		५		३९		७		३७		९		३५		११		३३		१२		३२
	१४		५		४५		७		४३		८		४१		१०		३९		१२		३८		१४		३६		१५		३४
	२०		८		४७		१०		४५		११		४४		१३		४२		१५		४०		१७		३८		१८		३७
	२६		११		५०		१३		४८		१४		४७		१६		४५		१८		४३		२०		४१		२१		४०

इस सारणी से ८ अक्षांश से १४ अक्षांश तक भारत के सभी नगरों की सूर्योदय-सूर्यास्त आ जाते हैं। जिस नगर का जो अक्षांश हो उसके अनुसार इसमें देखकर स्थानीय समय जाना जा सकता है। भा. स्टैं. टा. का जो अन्तर उस स्थान से है उसको ८२।३० से कम रेखांश में जमा करने और ८२।३० से अधिक रेखांश में कम करने से भा. स्टैं. टा. में सूर्योदयास्त का समय आ जाता है।

…स्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M. और सूर्यास्त P.M. स्थानिक समय में

अस्त क. मि.	१४ उदय क. मि.	१४ अस्त क. मि.	१५ उदय क. मि.	१५ अस्त क. मि.	१६ उदय क. मि.	१६ अस्त क. मि.	१७ उदय क. मि.	१७ अस्त क. मि.	१८ उदय क. मि.	१८ अस्त क. मि.	१९ उदय क. मि.	१९ अस्त क. मि.	ता.	मा.	दक्षिण अक्षांश मि.
५ ४५	६ २४	५ ४३	६ २६	५ ४१	६ २८	५ ४०	६ ३०	५ ३८	६ ३१	५ ३६	६ ३३	५ ३४	३	जुलाई	०
४८	२६	४७	२८	४५	३०	४३	३१	४१	३३	४०	३५	३८	९		१
५१	२८	५०	२९	४८	३१	४७	३३	४५	३४	४३	३६	४२	१५		३
५५	२८	५४	३०	५२	३१	५०	३३	४९	३५	४७	३६	४६	२२		४
५८	२८	५७	३०	५५	३१	५४	३३	५२	३४	५१	३६	४९	२८		६
६ ०	२८	५९	२९	५८	३१	५७	३२	५५	३३	५४	३५	५३	४		८
३	२७	६ २	२८	६ १	२९	६ ०	३०	५८	३१	५७	३३	५६	१०	अगस्त	९
५	२५	४	२६	३	२७	२	२८	६ १	२९	६ ०	३०	६ ५९	१६		१०
७	२२	६	२३	५	२४	४	२५	३	२६	२	२७	०	२२		११
८	१९	७	२०	७	२१	६	२२	५	२२	४	२३	४	२८		१२
९	१६	९	१७	८	१७	८	१८	७	१८	७	१९	६	४	सितम्बर	१३
१०	१२	१०	१३	९	१३	९	१४	९	१४	८	१४	८	१०		१४
१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	९	१६		१४
११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	२२		१५
११	०	१२	०	१२	०	१२	०	१२	०	१२	५ ५९	१३	२८		१५
११	५ ५५	१२	५ ५५	१३	५ ५५	१३	५ ५४	१३	५ ५४	१४	५३	१४	४	अक्टूबर	१५
१२	५१	१३	५१	१३	५०	१४	५०	१४	५०	१५	४६	१६	१०		१५
१२	४८	१३	४७	१४	४६	१५	४५	१६	४५	१६	४४	१७	१७		१५
१३	४४	१४	४३	१५	४२	१६	४१	१७	४०	१८	३६	१९	२३		१५
१४	४१	१५	४०	१६	३९	१७	३७	१८	३६	१९	३४	२१	२९		१४
१५	३८	१६	३७	१७	३६	१९	३५	२०	३३	२१	३०	२२	४	नवम्बर	१४
१६	३६	१८	३४	१९	३३	२०	३२	२१	३०	२२	२९	२३	९		१३
१७	३४	१९	३२	२१	३१	२२	२९	२३	२८	२५	२४	२७	१५		१२
१९	३२	२१	३१	२२	२९	२४	२८	२६	२६	२७	२४	२९	२१		११
२१	३१	२३	३०	२४	२८	२६	२६	२८	२४	३०	२३	३१	२७		१०
२२	३१	२४	२९	२६	२७	२८	२६	३०	२४	३२	२२	३३	३		८
२४	३१	२६	२९	२८	२७	३०	२५	३२	२४	३४	२२	३५	७	दिसम्बर	७
२६	३१	२८	३०	३०	२८	३२	२६	३४	२४	३६	२३	३८	१३		६
२८	३२	३०	३१	३२	२९	३३	२७	३५	२५	३७	२३	३९	१९		४
२९	३४	३१	३२	३३	३०	३५	२८	३७	२६	३९	२४	४१	२५		२
३०	३५	३२	३३	३४	३२	३६	३०	३८	२८	३९	२६	४१	३०		०
३०	३७	३४	३५	३६	३३	३९	३१	३८	३२	४०	२८	४१	४	जनवरी	२
३०	३९	३२	३७	३४	३५	३६	३३	३८	३२	३९	३०	४०	१०		३
३०	४०	३२	३९	३३	३७	३५	३५	३७	३५	३७	३४	३९	१५		५
२९	४२	३१	४०	३२	३९	३४	३७	३५	३८	३७	३६	३५	२१		६
२७	४४	२९	४२	३१	४१	३२	३९	३३	३८	३५	३७	३५	२७		७
२५	४५	२७	४४	२८	४२	३०	४१	३३	४०	३२	३८	३४	२	फरवरी	८
२३	४६	२४	४५	२५	४४	२७	४२	२८	४१	२९	४०	३०	७		९
२०	४७	२१	४६	२२	४५	२३	४४	२४	४३	२५	४२	२६	१३		१०
१७	४८	१८	४७	१८	४६	१९	४५	२०	४४	२१	४४	२२	१८		११
१३	४८	१४	४७	१६	४७	१५	४६	१६	४५	१७	४५	१७	२४		१२
९	४८	१०	४८	१०	४७	११	४७	११	४७	११	४७	१२	२	मार्च	१३
५	४९	५	४८	६	४८	६	४७	६	४७	७	४७	७	८		१४
०	४९	१	४९	१	४८	१	४८	२	४८	२	४८	३	१४		१४
५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	२०		१५
५२	४९	५२	४९	५२	५०	५२	५०	५२	५०	५३	५०	५३	२६		१५
४८	५०	४८	५०	४८	५०	४८	५०	४८	५१	४९	५१	४९	१	अप्रैल	१५
४४	५०	४४	५१	४४	५१	४३	५२	४४	५२	४४	५२	४५	७		१५
४१	५१	४१	५२	४०	५२	३९	५३	३९	५३	३८	५४	३८	१२		१५
३८	५२	३७	५३	३६	५४	३६	५४	३५	५५	३४	५६	३३	१८		१५
३५	५३	३४	५४	३३	५५	३२	५६	३१	५७	३०	५८	२८	२४		१४
३३	५५	३२	५६	३१	५७	३०	५८	२९	६ ०	२८	६ १	२६	०	मई	१३
३१	५७	३०	५८	२९	६ ०	२८	०	२७	२	२५	४	२४	६		१२
३०	६ ०	२८	६ १	२८	२	२६	४	२५	५	२३	६	२२	१२		११
३०	२	२९	४	२७	५	२६	७	२४	९	२३	१०	२१	१८		१०
३०	५	२९	७	२७	८	२६	१०	२४	१२	२३	१४	२१	२४		[illegible]
३२	९	३०	१०	२८	१२	२७	१४	२५	१५	२४	१७	२२	३१	जून	८
३३	१२	३२	१४	३०	१६	२८	१७	२७	१९	२५	२१	२५	७		७
३६	१५	३४	१७	३२	१९	३०	२१	२८	२३	२७	२५	२६	१३		६
३८	१८	३७	२०	३५	२२	३३	२४	३१	२६	२९	२८	२७	१९		४
४१	२१	४०	२३	३८	२५	३६	२७	३४	२९	३२	३२	३०	२५		२

ऊपर दिये हुये सूर्योदयास्त अक्षांश के मुताबिक स्थानिक (लोकल) समय में स्पष्ट वक्री भवन वृत्त (अर्ध बिंब—१६'—वक्री भवन संस्कार—३४=५०'. पूर्व रेखांश '०°३०' ई. सन् १९६६ के गणित के हिसाब से) उदय-अस्त के घंटे और उनके सामने मिनिट दी हुई हैं। स्पष्ट गणित से सूर्योदय और सूर्यास्त में २ से ५ मिनिट का फर्क आयेगा. दिनमान में ७ से ९ मिनिट का फर्क पड़ेगा

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक)

उत्तर अक्षांश		अक्षांश ८		९		१०		११		१२		१३		१४	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
मा.	ता.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.
जनवरी	१	६ १४	५ ५४	६ १६	५ ५२	६ १७	५ ५०	६ १९	५ ४९	६ २१	५ ४७	६ २३	५ ४५	६ २४	५ ४३
	७	१६	५७	१८	५५	१९	५३	२१	५२	२३	५०	२५	४८	२६	४७
	१३	१८	६ ०	२०	५८	२१	५७	२३	५५	२४	५३	२६	५१	२८	५०
	१९	१९	३	२१	६ १	२२	६ ०	२४	५८	२५	५७	२७	५५	२८	५४
	२५	२०	५	२२	३	२३	२	२४	६ १	२६	५९	२७	५८	२८	५७
	३१	२०	७	२२	६	२३	५	२४	३	२५	६ २	२७	६ ०	२८	५९
फरवरी	६	२०	९	२१	८	२२	७	२३	५	२४	४	२६	३	२७	६ २
	१२	१९	१०	२०	९	२१	८	२२	७	२३	६	२४	५	२५	४
	१८	१७	११	१८	१०	१९	९	२०	८	२१	८	२२	७	२२	६
	२४	१५	११	१६	१०	१७	१०	१७	९	१८	९	१९	८	१९	७
मार्च	२	१३	१२	१४	११	१४	११	१५	१०	१५	१०	१६	९	१६	९
	८	१०	१२	११	११	११	११	११	११	१२	१०	१२	१०	१२	१०
	१४	८	११	८	११	८	११	८	११	८	११	९	१०	९	१०
	२०	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११
	२६	१	१०	१	१०	१	११	१	११	१	११	१	११	०	१२
अप्रैल	२	५ ५८	१०	५ ५८	१०	५ ५७	११	५ ५७	११	५ ५६	११	५ ५६	११	५ ५५	१२
	८	५५	९	५५	९	५४	१०	५३	११	५२	१२	५२	१२	५१	१३
	१४	५२	९	५१	९	५०	१०	५०	११	४९	१२	४९	१२	४८	१३
	२०	४९	९	४८	१०	४७	११	४७	१२	४६	१२	४५	१३	४४	१४
	२६	४७	९	४६	१०	४५	११	४४	१२	४३	१३	४२	१४	४१	१५
मई	१	४५	९	४४	१०	४३	१२	४२	१३	४१	१४	४०	१५	३८	१६
	७	४३	१०	४२	११	४१	१२	४०	१४	३८	१५	३७	१६	३६	१८
	१३	४२	११	४१	१२	३९	१३	३८	१५	३७	१६	३६	१७	३४	१९
	१९	४१	१२	४०	१३	३८	१५	३७	१६	३५	१८	३४	१९	३२	२१
	२५	४१	१३	४०	१४	३८	१६	३६	१८	३५	१९	३३	२१	३१	२३
	३१	४१	१४	४०	१६	३८	१८	३६	१९	३४	२१	३३	२२	३१	२४
जून	६	४१	१६	४०	१७	३८	१९	३६	२१	३४	२३	३३	२४	३१	२६
	१२	४२	१७	४१	१९	३९	२१	३७	२३	३५	२४	३३	२६	३१	२८
	१८	४३	१९	४२	२०	४०	२२	३८	२४	३६	२६	३४	२८	३२	३०
	२४	४५	२०	४३	२२	४१	२४	३९	२५	३८	२७	३६	२९	३४	३१
	३०	४६	२१	४५	२३	४३	२५	४१	२६	३९	२८	३७	३०	३५	३२
जुलाई	६	४८	२२	४६	२३	४४	२५	४२	२७	४१	२९	३९	३०	३७	३२
	१२	४९	२२	४८	२४	४६	२६	४४	२७	४२	२९	४१	३०	३९	३२
	१८	५०	२२	४९	२३	४७	२५	४५	२७	४४	२९	४२	३०	४०	३२
	२४	५१	२२	५०	२३	४८	२५	४७	२६	४५	२८	४४	२९	४२	३१
	३०	५२	२१	५१	२२	४९	२३	४८	२५	४६	२६	४५	२७	४४	२९
अगस्त	५	५३	१९	५२	२०	५०	२२	४९	२३	४८	२५	४७	२५	४५	२७
	११	५३	१७	५२	१८	५१	२०	५०	२१	४८	२२	४७	२३	४६	२४
	१७	५३	१५	५२	१६	५१	१७	५०	१८	४९	१९	४८	२०	४७	२१
	२३	५३	१२	५०	१३	५१	१४	५०	१५	४९	१६	४९	१७	४८	१८
	२९	५२	१०	५०	१०	५१	११	५०	१२	४९	१२	४९	१३	४८	१४
सितम्बर	४	५२	६	५२	६	५१	७	५०	८	४९	८	४९	९	४८	१०
	१०	५१	३	५१	३	५०	४	५०	४	४९	५	४९	५	४९	५
	१६	५०	०	५०	०	५०	०	५०	०	४९	०	४९	०	४९	१
	२२	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६
	२८	४९	५३	४९	५३	४९	५३	४९	५२	४९	५२	४९	५२	४९	५२
अक्तूबर	३	४८	५०	४८	५०	४८	५०	४९	४९	४९	४९	५०	४८	५०	४८
	९	४८	४७	४८	४६	४८	४६	४९	४६	४९	४५	५०	४४	५०	४४
	१५	४७	४४	४८	४३	४९	४३	४९	४३	५०	४२	५१	४१	५१	४१
	२१	४७	४२	४८	४१	४९	४०	५०	४०	५०	३९	५१	३८	५२	३७
	२७	४८	४०	४९	३९	५०	३८	५१	३७	५१	३६	५२	३५	५३	३४
नवम्बर	२	४९	३९	५०	३७	५१	३६	५२	३५	५३	३४	५४	३३	५५	३२
	८	५०	३८	५१	३६	५२	३५	५४	३४	५५	३३	५६	३१	५७	३०
	१४	५१	३७	५३	३६	५४	३५	५६	३३	५७	३२	५८	३०	६ ०	२८
	२०	५४	३८	५५	३६	५६	३५	५८	३३	५९	३२	६ १	३०	२	२६
	२६	५६	३९	५८	३७	५९	३६	६ १	३४	६ २	३२	४	३०	५	२६
दिसम्बर	२	५९	४०	६ १	३८	६ २	३७	४	३५	५	३४	७	३२	९	३०
	८	६ २	४२	४	४०	५	३९	७	३७	९	३५	११	३३	१२	३२
	१४	५	४५	७	४३	८	४१	१०	३९	१२	३८	१४	३६	१५	३४
	२०	८	४७	१०	४५	११	४४	१३	४२	१५	४०	१७	३८	१८	३७
	२६	११	५०	१३	४८	१४	४७	१६	४५	१८	४३	२०	४१	२१	४०

इस सारणी से ८ अक्षांश से १४ अक्षांश तक भारत के सभी नगरों की सूर्योदय-सूर्यास्त आ जाते हैं। जिस नगर का जो अक्षांश हो उसके अनुसार इसमें देखकर स्थानीय समय जाना जा सकता है। भा. स्टै. टा. का जो अन्तर उस स्थान से है उसको ८२।३० से कम रेखांश में जमा करने और ८२।३० से अधिक रेखांश में कम करने से भा. स्टै. टा. में सूर्योदयास्त का समय आ जाता है।

(अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M. और सूर्यास्त P.M. स्थानिक समय में

		१४				१५				१६				१७				१८				१९				दक्षिण		
अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		अक्षांश		
क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	ता.	मा.	मि.
५	४५	६	२४	५	४३	६	२६	५	४१	६	२८	५	४०	६	३०	५	३८	६	३१	५	३६	६	३३	५	३४	३	जुलाई	०
	४८		२६		४७		२८		४५		३०		४३		३१		४१		३३		४०		३५		३८	९		१
	५१		२८		५०		२९		४८		३१		४७		३३		४५		३४		४३		३६		४२	१५		३
	५५		२८		५४		३०		५२		३१		५०		३३		४९		३५		४७		३६		४६	२२		४
	५८		२८		५७		३०		५५		३१		५४		३३		५२		३४		५१		३६		४९	२८		६
६	०		२८		५९		२९		५८		३१		५७		३२		५५		३३		५४		३५		५३	४		८
	३		२७	६	२		२८	६	१		२९	६	०		३०		५८		३१		५७		३३		५६	१०	अगस्त	९
	५		२५		४		२६		३		२७		२		२८	६	१		२९	६	०		३०	६	५९	१६		१०
	७		२२		६		२३		५		२४		४		२५		३		२६		२		२७		०	२२		११
	८		१९		७		२०		७		२१		६		२२		५		२२		५		२३		४	२८		१२
	९		१६		९		१७		८		१७		८		१८		७		१८		७		१९		६	४	सितम्बर	१३
	१०		१२		१०		१३		९		१३		९		१४		९		१४		८		१४		८	१०		१४
	१०		६		१०		६		१०		६		१०		६		१०		६		१०		६		९	१६		१४
	११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११	२२		१५
	११		०		१२		०		१२		०		१२		०		१२		०		१२	५	५१		१३	२८		१५
	११	५	५५		१२	५	५५		१३	५	५५		१३	५	५४		१३	५	५४		१४		५३		१४	४	अक्टूबर	१५
	१२		५१		१३		५१		१३		५०		१४		५०		१५		५०		१५		४६		१६	११		१५
	१२		४८		१३		४७		१४		४६		१५		४५		१६		४४		१६		४४		१७	१७		१५
	१३		४४		१४		४३		१५		४२		१६		४१		१७		४०		१८		३९		१९	२३		१५
	१४		४१		१५		४०		१६		३९		१७		३०		१८		३६		१९		३५		२०	२९		१६
	१५		३८		१६		३७		१७		३६		१९		३५		२०		३३		२१		३२		२२	३	नवम्बर	१६
	१६		३६		१८		३४		१९		३३		२०		३२		२२		३०		२३		२९		२४	९		१३
	१७		३४		१९		३२		२१		३१		२२		२९		२३		२८		२५		२६		२७	१५		१२
	१९		३२		२१		३१		२२		२९		२४		२८		२६		२६		२७		२४		२९	२०		११
	२१		३१		२३		३०		२४		२८		२६		२६		२८		२५		२९		२३		३१	२६		१०
	२२		३१		२४		२९		२६		२७		२८		२६		३०		२४		३२		२२		३३	२		८
	२४		३१		२६		२९		२८		२७		३०		२५		३२		२३		३४		२२		३६	७	दिसम्बर	७
	२६		३१		२८		३०		३०		२८		३२		२६		३४		२४		३६		२२		३८	१३		५
	२८		३२		३०		३१		३२		२९		३३		२७		३५		२५		३७		२३		३९	१९		४
	२९		३४		३१		३२		३३		३०		३५		२८		३७		२६		३९		२४		४१	२५		३
	३०		३५		३२		३३		३४		३२		३६		३०		३८		२८		३९		२६		४२	३०		१
	३०		३७		३२		३५		३४		३३		३६		३१		३८		३२		३६		३०		४१	१०	जनवरी	२
	३०		३९		३२		३७		३४		३५		३६		३३		३८		३२		३९		३२		४१	१५		३
	३०		४०		३२		३९		३३		३७		३५		३५		३७		३४		३९		३४		४०	२१		५
	२९		४२		३१		४०		३२		३९		३४		३७		३५		३५		३७		३६		३९	२७		६
	२७		४४		२९		४२		३१		४१		३२		३९		३३		३८		३५		३७		३६	[illegible]		[illegible]
	२५		४५		२७		४४		२८		४२		३०		४१		३२		४०		३२		३८		३४	१	फरवरी	८
	२३		४६		२४		४५		२५		४४		२७		४२		२८		४१		३०		४०		३०	७		९
	२०		४७		२१		४६		२२		४५		२३		४४		२५		४३		२६		४२		२७	१३		१०
	१७		४८		१८		४७		१८		४६		१९		४५		२०		४४		२१		४२		२२	१८		११
	१३		४८		१४		४७		१५		४७		१५		४६		१६		४५		१७		४५		१७	२४		१२
	९		४८		१०		४८		१०		४७		[illegible]		४७		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]	[illegible]	मार्च	[illegible]
	५		४९		५		४८		६		४८		६		४८		६		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]	[illegible]		[illegible]
	०		४९		१		४९		१		४८		१		४९		२		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]	[illegible]		[illegible]
५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		५०	५	५६		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]	[illegible]		[illegible]
	५२		४९		५२		४९		५२		५०		५२		५०		५२		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]	[illegible]		[illegible]
	४८		५०		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४८		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]	[illegible]	अप्रैल	[illegible]
	४४		५०		४४		५१		४४		५१		४३		५२		४२		५३		३८		५४		३७	[illegible]		[illegible]
	४१		५१		४१		५२		४०		५२		३९		५३		३९		५४		३४		५५		३३	[illegible]		[illegible]
	३८		५२		३७		५३		३६		५४		३६		५४		३५		५५		३१		५८		३०	[illegible]		[illegible]
	३५		५३		३४		५४		३३		५५		३२		५६		३१		५७		२८		[illegible]		[illegible]	[illegible]		[illegible]
	३३		५५		३२		५६		३१		५७		३०		५८		२९	६	०		२८	६	१		२७	[illegible]	मई	[illegible]
	३१		५७		३०		५८		२९	६	०		२८		०		२७		२		२५		४		२४	[illegible]		[illegible]
	३०	६	०		२८	६	१		२८		२		२६		४		२५		६		२३		७		२२	[illegible]		[illegible]
	३०		२		२६		४		२७		५		२६		७		२४		९		२३		१०		२१	[illegible]		[illegible]
	३०		५		२६		७		२८		९		२६		१०		२५		१२		२३		१४		२२	[illegible]		[illegible]
	३२		६		३०		१०		२८		१२		२७		१४		२५		१६		२४		१७		२२	[illegible]	जून	[illegible]
	३३		१२		३२		१४		३०		१६		२८		१७		२६		१९		२५		२१		२३	[illegible]		[illegible]
	३६		१५		३४		१७		३२		१९		३०		२१		२९		२३		२७		२५		२६	[illegible]		[illegible]
	३८		१८		३७		२०		३५		२२		३३		२४		३१		२६		३०		२८		२९	[illegible]		[illegible]
	४१		२१		४०		२३		३८		२५		३६		२७		३४		२९		३३		३१		३२	[illegible]		[illegible]

ऊपर दिये हुये सूर्योदयास्त अक्षांश के मुताबिक स्थानिक (लोकल) समय में दृश्य वक्री भवन युक्त (अर्ध बिंब—१६'—वक्री भवन संस्कार—३४=५०'. पूर्व रेखांश '०'३०' ई. सन् १९९९ के गणित के हिसाब से) उदय-अस्त के घंटे और उसके सामने मिनिट दी हुई है। स्पष्ट गणित से सूर्योदय और सूर्यास्त में ३ से ४ मिनिट का फर्क आयेगा. दिनमान में ७ से ९ मिनिट का फर्क पड़ेगा

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान बक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुता...

उत्तर अक्षांश		अक्षांश २०				२१				२२				२३				२४				२५				२६				२७	
		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय	
मा	ता	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.
जनवरी	१	६	३५	५	३८	६	३७	५	३०	६	३९	५	२८	६	४१	५	२६	६	४३	५	२४	६	४५	५	२२	६	४७	५	२०	६	४९
	७		३७		३९		३९		३४		४१		३२		४३		३०		४५		२८		४७		२६		४९		२४		५१
	१३		३८		४०		४०		३८		४१		३६		४३		३४		४५		३३		४७		३१		४९		२९		५१
	१९		३८		४४		४०		४२		४१		४१		४३		३९		४५		३७		४७		३५		४८		३३		५०
	२५		३७		४८		३९		४६		४०		४५		४२		४३		४४		४१		४५		४०		४७		३८		४९
	३१		३६		५१		३७		५०		३९		४९		४०		४७		४२		४६		४३		४४		४५		४३		४६
फरवरी	६		३४		५५		३५		५४		३६		५३		३८		५१		३९		५०		४०		४८		४२		४७		४३
	१२		३१		५८		३२		५७		३३		५६		३४		५५		३६		५४		३७		५२		३८		५१		३९
	१८		२८	६	१		२९	६	०		३०		५९		३०		५८		३१		५७		३२		५६		३३		५५		३४
	२४		२४		३		२४		३		२५	६	२		२६	६	१		२७	६	०		२८	६	०		२८		५९		२९
मार्च	२		१९		५		२०		५		२०		४		२१		४		२२		३		२२		३		२३	६	२		२३
	८		१५		७		१५		७		१५		७		१६		६		१६		६		१७		६		१७		५		१७
	१४		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		११		८		११		८		११
	२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४
	२६	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५८		१४	५	५८		१४	५	५८		१४	५	५८
अप्रैल	१		५३		१५		५३		१५		५२		१५		५२		१६		५१		१६		५१		१७		५१		१७		५०
	८		४८		१६		४७		१७		४७		१७		४६		१८		४६		१९		४५		१९		४४		२०		४४
	१४		४३		१८		४२		१९		४२		१९		४१		२०		४०		२१		३९		२२		३८		२३		३७
	२०		३८		२०		३८		२१		३७		२२		३६		२३		३५		२४		३४		२५		३३		२६		३१
	२६		३४		२२		३३		२३		३२		२४		३१		२५		३०		२६		२८		२८		२७		२९		२६
मई	१		३१		२३		३०		२५		२९		२६		२७		२७		२६		२९		२५		३०		२३		३१		२२
	७		२८		२६		२६		२७		२५		२९		२४		३०		२२		३२		२०		३३		१९		३५		१७
	१३		२५		२८		२४		३०		२२		३१		२०		३३		१९		३४		१७		३६		१५		३८		१३
	१९		२३		३०		२१		३२		१९		३४		१८		३६		१६		३७		१४		३९		१२		४१		१०
	२५		२१		३३		१९		३५		१७		३६		१६		३८		१४		४०		१२		४२		१०		४४		८
	३१		२०		३५		१८		३७		१६		३९		१४		४१		१२		४३		१०		४५		८		४७		६
जून	६		२०		३८		१८		४०		१६		४२		१४		४४		१२		४६		१०		४८		७		५०		५
	१२		२०		४०		१८		४२		१६		४४		१४		४६		१२		४८		१०		५०		७		५२		५
	१८		२१		४१		१९		४३		१७		४५		१५		४७		१३		५०		१०		५२		८		५४		६
	२४		२२		४२		२०		४४		१८		४७		१६		४९		१४		५१		१२		५३		९		५५		७
	३०		२४		४३		२२		४५		२०		४७		१८		५०		१६		५२		१३		५४		११		५६		९
जुलाई	६		२६		४४		२४		४६		२२		४८		२०		५०		१८		५२		१६		५४		१३		५६		११
	१२		२८		४३		२६		४५		२४		४७		२२		४९		२०		५१		१८		५३		१६		५५		१४
	१८		३०		४२		२८		४४		२६		४६		२५		४८		२३		४९		२१		५१		१९		५३		१७
	२४		३२		४०		३१		४२		२९		४४		२७		४६		२५		४७		२४		४९		२२		५१		२०
	३०		३४		३८		३३		४०		३१		४१		३०		४३		२८		४४		२७		४६		२५		४८		२३
अगस्त	५		३७		३५		३५		३६		३४		३८		३३		३९		३१		४१		२९		४२		२८		४४		२६
	११		३९		३२		३७		३३		३६		३४		३५		३५		३३		३७		३२		३८		३१		३९		२९
	१७		४०		२८		३९		२९		३८		३०		३७		३१		३६		३२		३५		३३		३३		३४		३२
	२३		४२		२३		४१		२४		४०		२५		३९		२६		३८		२७		३७		२८		३६		२९		३५
	२९		४४		१८		४३		१९		४२		२०		४१		२०		४०		२१		४०		२२		३९		२३		३८
सितम्बर	४		४५		१३		४४		१३		४४		१४		४३		१५		४२		१५		४२		१६		४१		१७		४०
	१०		४६		८		४६		८		४५		८		४५		९		४५		९		४४		१०		४४		१०		४३
	१६		४८		२		४७		२		४७		२		४७		३		४७		३		४७		३		४६		४		४६
	२२		४९	५	५७		४९	५	५७		४९	५	५७		४९	५	५७		४९	५	५७		४९	५	५७		४८	५	५७		४८
	२८		५०		५१		५०		५१		५०		५१		५१		५१		५१		५१		५१		५०		५१		५०		५१
अक्टूबर	३		५२		४७		५२		४६		५२		४६		५२		४५		५२		४४		५२		४३		५०		४२		५१
	९		५२		४२		५३		४१		५४		४१		५४		४०		५४		३९		५४		३८		५३		३८		५३
	१५		५५		३७		५५		३६		५६		३५		५७		३५		५५		३४		५७		३३		५६		३३		५६
	२१		५७		३२		५८		३१		५८		३१		५९		३०		५७		२९		५८		२८		५९		२७	६	०
	२७		५९		२६	६	०		२६	६	१		२६	६	२		२५	६	०		२४	६	१		२४	६	२		२२		३
नवम्बर	२	६	२		२५		३		२४		४		२३		५		२२		४		२०		४		१९		५		२२		७
	८		५		२३		६		२१		८		२०		९		१८		७		१७		८		१६		९		१८		१०
	१४		८		२१		१०		१९		११		१८		१३		१६		१०		१५		१२		१४		१३		१४		१५
	२०		१२		२०		१३		१८		१५		१६		१७		१५		१४		१४		१५		१३		१७		११		१९
	२६		१५		१९		१७		१७		१९		१६		२१		१४		१८		१३		२०		१२		२२		९		२३
दिसम्बर	२		१९		२०		२१		१८		२३		१७		२५		१४		२७		१३		२९		११		३१		८		[illegible]
	८		२३		२१		२५		१९		२७		१७		२९		१५		३१		१४		३३		१०		३५		९		[illegible]
	१४		२७		२३		२८		२१		३०		१९		३२		१७		३५		१५		३७		११		३९		११		[illegible]
	२०		३०		२५		३२		२३		३४		२१		३६		१९		३८		१७		४०		१३		४२		१३		[illegible]
	२६		३३		२८		३५		२६		३७		२४		३९		२२		४१		२०		४३		१५		४५		१६		[illegible]

दक्षिण अक्षांश के सूर्योदयास्त निकालने के लिए इसी कोष्ठक में दिये हुये (दाहिनी तरफ की) महीने और तारीख जो कि 'दक्षिण अक्षांश' के नीचे दिये हुए। यह संस्कार जनवरी से जून तक (+) जोड़ है और जुलाई से दिसम्बर तक (—) बाकी है।

...के मुताबिक) सूर्योदय A.M. और सूर्यास्त P.M. स्थानिक समय में

२७			२८				२९				३०				३१				३२				३३				३४				दक्षिण अक्षांश	
उदय	अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त			
मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	ता.	मा.
४९	५	१८	६	५२	५	१६	६	५४	५	१४	६	५६	५	११	६	५८	५	९	७	१	५	७	७	३	५	४	७	६	५	२	१	जुलाई
५१		२२		५३		२०		५५		१८		५७		१६		५९		१४		२		११		४		९		६		७	७	
५१		२७		५३		२५		५५		२३		५७		२१		५९		१९		१		१६		४		१४		६		१२	१५	
५०		३२		५२		३०		५४		२८		५६		२६		५८		२४		०		२२		२		२०		४		१८	२२	
४९		३६		५०		३५		५२		३३		५४		३१		५६		२९	६	५८		२७		०		२५		२		२३	२८	
४६		४१		४८		३९		५०		३८		५१		३६		५३		३५		५५		३३	६	५६		३१	६	५८		२९	४	
४३		४६		४४		४४		४५		४३		४७		४१		४९		४०		५०		३८		५२		३७		५३		३५	१०	अगस्त
३९		५०		४०		४९		४२		४८		४३		४६		४४		४५		४५		४४		४७		४२		४८		४१	१६	
३४		५४		३५		५३		३६		५२		३८		५१		३९		५०		४०		४९		४१		४८		४२		४७	२२	
२९		५८		३०		५७		३१		५६		३२		५५		३२		५५		३३		५४		३४		५३		३५		५२	२९	
२३	६	२		२४	६	१		२५	६	०		२५	६	०		२६		५९		२७		५८		२७		५८		२८		५७	४	सितम्बर
१७		५		१८		५		१८		४		१९		४		१९	६	३		१९	६	३		२०	६	२		२०	६	२	१०	
११		८		११		८		११		८		१२		८		१२		७		१२		७		१२		७		१३		७	१६	
४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		१२	२२	
५८		१४	५	५८		१५	५	५७		१५	५	५७		१५	५	५७		१५	५	५७		१६	५	५६		१६	५	५६		१६	२८	
५०		१८		५०		१८		४९		१९		४९		१९		४८		२०		४८		२०		४७		२१		४७		२१	५	अक्टूबर
४४		२१		४३		२१		४२		२२		४२		२३		४१		२४		४०		२४		३९		२५		३९		२६	११	
३७		२४		३७		२५		३६		२५		३५		२६		३४		२७		३३		२८		३२		२९		३१		३०	१७	
३१		२७		३०		२८		२९		२९		२८		३०		२७		३१		२६		३३		२५		३४		२३		३५	२३	
२६		३०		२५		३१		२३		३३		२२		३४		२१		३५		१९		३७		१८		३८		१७		४०	२९	
२२		३३		२०		३४		१९		३६		१७		३७		१६		३९		१४		४०		१३		४२		११		४३	३	नवम्बर
१७		३६		१६		३८		१४		३९		१२		४१		११		४३		९		४५		७		४६		५		४८	९	
१३		४०		१२		४१		१०		४३		८		४५		६		४७		५		४९		२		५१		०		५३	१५	
१०		४३		८		४५		६		४७		४		४९		२		५१		[illegible]		५३	४	५८		५५	४	५६		५७	२०	
८		४६		६		४८		४		५०		२		५२	४	५९		५५	४	५७		५७		५५		५९		५३	७	२	२६	
६		४९		४		५१		२		५४		०		५६		५७		५८		५५	७	०		५३	७	३		५०		५	२	
५		५२		३		५४		१		५७	४	५६		५९		५५	७	२		५४		४		५१		६		४९		९	७	दिसम्बर
५		५४		३		५७		१		५९		५८	७	१		५६		४		५३		६		५१		९		४८		१२	१३	
६		५६		३		५९		१	७	१		५९		३		५६		६		५४		८		५१		११		४८		१४	१९	
७		५८		५	७	०		२		२	५	०		५		५७		७		५५		१०		५२		१२		५०		१५	२४	
९		५८		७		०		४		३		८		५		५९		८		५७		१०		५४		१३		५२		१५	३०	
११		५८		६		०		७		३		४		५	५	२		७	५	०		१०		५७		१२		५४		१५	४	जनवरी
१४		५७		१२	६	५९		१०		१		७		४		५		६		३		८	५	०		११		५८		१३	१०	
१७		५५		१५		५७		१३	६	५९		१०		२		८		४		६		६		४		८	५	१		११	१५	
२०		५३		१८		५५		१६		५७		१४	६	५९		१२		१		१०		३		८		५		५		७	२१	
२३		४९		२१		५१		१९		५३		१८		५५		१६	६	५७		१४	६	५९		१२		१		१०		३	२७	
२६		४५		२५		४७		२३		४९		२१		५०		१९		५२		१८		५४		१६	६	५६		१४	६	५७	१	फरवरी
२९		४१		२८		४२		२६		४४		२५		४५		२३		४७		२२		४८		२०		५०		१८		५२	७	
३२		३६		३१		३७		३०		३८		२८		३९		२७		४१		२६		४२		२४		४४		२३		४५	१३	
३५		३०		३४		३१		३३		३२		३२		३३		३१		३४		२९		३५		२८		३७		२७		३८	१८	
३८		२४		३७		२५		३६		२५		३५		२६		३४		२७		३३		२८		३२		२९		३१		३०	२४	
४०		१७		४०		१८		३९		१९		३८		१९		३८		२०		३७		२१		३६		२१		३५		२२	२	मार्च
४३		११		४३		११		४२		११		४२		१२		४१		१२		४१		१३		४०		१३		४०		१४	८	
४६		४		४५		४		४५		४		४५		५		४५		५		४४		५		४४		५		४४		६	१४	
४८	५	५७		४८	५	५७		४८	५	५७		४८	५	५७		४८	५	५७		४८	५	५७		४८	५	५७		४८	५	५७	२०	
५१		५०		५१		५०		५१		५०		५१		५०		५२		४९		५२		४९		५२		४९		५२		४९	२६	
५३		४४		५४		४३		५४		४३		५५		४३		५५		४३		५५		४३		५५		४२		५६		४२	३०	अप्रैल
५६		३८		५७		३७		५७		३७		५८		३६		५८		३६		५९		३५	६	०		३५	६	०		३४	५	
०		३२	६	०		३१	६	१		३०	६	२		३०	६	२		२९	६	३		२८		४		२७		५		२६	१२	
३		२६		४		२५		५		२४		६		२३		७		२२		८		२१		९		२०		१०		१९	१८	
७		२१		८		२०		९		१९		१०		१८		११		१६		१२		१५		१४		१४		१५		१३	२४	
१०		१७		१२		१५		१३		१४		१४		१२		१६		११		१७		१०		१९		८		२०		७	३०	मई
१५		१३		१६		११		१८		१०		१९		८		२१		७		२२		५		२४		३		२६		२	६	
१९		१०		२१		८		२२		६		२४		५		२६		३		२८		१		२९	४	५९		३१	४	५७	१२	
२४		८		२५		६		२७		४		२९		२		३१		०		३३	४	५८		३५		५६		३७		५४	१९	
२८		६		३०		४		३२		२		३४		०		३६	४	५८		३८		५६		४०		५४		४३		५२	२५	
३३		६		३५		४		३७		२		३९		०		४१		५८		४३		५५		४६		५३		४८		५१	३१	जून
३७		७		३९		५		४१		३		४३		०		४६		५८		४८		५६		५०		५३		५३		५१	७	
४१		८		४३		६		४५		४		४८		२		५०		५९		५२		५७		५५		५५		५७		५२	१३	
४४		११		४७		९		४९		६		५१		४		५३	५	२		५६		५९		५८		५७		०		५४	१९	
४७		१४		४९		१५		५२		१०		५४		७		५६		५		५९	५	२	७	१	५	०	७	४		५७	२५	

...र हुये हैं, वह लेने चाहिए और उनमें पेज नम्बर ... पर दक्षिण अक्षांश के लिए दिया गया, संस्कार का (+) जोड़ या (—) बाकी (मिनट में) करना चाहिये।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पंचांग परिवर्तन पद्धति

इस पंचांग से अन्यान्य नगरों का पंचांग (सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान) बनाने का उदाहरण—

जिस नगर का सूर्योदय जानना हो तो उस नगर के आगे की अक्षांशादि सारणी से देशान्तर मिनट लो। यदि मिनट + पूर्व के हों तो इस पंचांग के सूर्योदय में ऋण करें और मिनट — पश्चिम के हों तो धन करें, ऋण करें, ऋण चिह्न हो तो धन करें, यह इष्ट नगर का मध्यम सूर्योदय होगा। इसके बाद का इष्ट दिन (तारीख) की रविक्रान्ति-सारणी से रविक्रान्ति लो। रविक्रान्ति और इष्ट नगर के अक्षांश इन दो उपकरणों से चरान्तर सारणी से चरान्तर मिनट लो। यदि धन हों तो ऊपर से आये हुए मध्यम सूर्योदय में जोड़ें, ऋण हों तो हीन करें। तो वह इष्ट दिन का इष्ट नगर का स्टैं. टा. से स्पष्ट सूर्योदय होगा। निकले हुए चरान्तर मिनट को पाँच से गुणा करें तो वह पल होंगे। ऊपर के उदाहरण में चरान्तर मिनट सूर्योदय में धन किये हों तो यह पल दिनमान में ऋण करें, ऋण किये हों तो धन करें, यदि अपने इष्ट दिन का इष्ट नगर का घटी-पलात्मक दिनमान होगा। इस दिनमान के घण्टा-मिनट बनाकर आए हुए सूर्योदय में मिला देने से सूर्यास्त होगा।

इस पंचांग में तिथ्यादि के घटी-पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय समय से हैं। इष्ट दिन और इष्ट नगर का लाया हुआ स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से पहले हो तो वह जितने मिनट पहले है, उसके पल बनाकर (१ मि.=२॥ पल) वह इस पंचांग के तिथ्यादि से मिला दें तथा बाद में मिनट हों तो उनके जितने पल हों—इस पंचांग के तिथ्यादि में से घटा दें तो अपने-अपने इष्ट दिन के इष्ट नगर में स्पष्ट सूर्योदय से तिथ्यादि पंचांग होगा।

उदाहरण—दिनांक १० नवम्बर को जयपुर नगरी का इस पंचांग से सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान और पंचांग बनाना है। इस पंचांग में इस दिन दिल्ली का सूर्योदय स्टै. टा. घं. ६ मि. ४३ है। जयपुर दिल्ली से ५।२२ पश्चिम में है (अक्षांशादि सारणी में देखें)। अतः यह ५।२२ इस पंचांग के सूर्योदय घं. ६ मि. ४३ में घटा दिये तो घं. ६ मि. ४८।२२ हुए। यह जयपुर का इस पंचांग से मध्यम सूर्योदय हुआ। अब रविक्रान्ति सारणी से ता. १० नवम्बर की रविक्रान्ति १७।१ दक्षिण है। जयपुर का अक्षांश २६।५५ है तो आगे चरान्तर सारणी से २७ अक्षांश और १७ क्रान्ति अंश के कोष्ठक में २ मिनट हैं। यह दक्षिण क्रान्ति होने के कारण ऋण किये जावेंगे। ऊपर के मध्यम सूर्योदय ६।४८।२२ में २ मिनट कम किये तो जयपुर का स्पष्ट सूर्योदय ६।४६।२३ आया। आये हुए चरान्तर मिनट २ को ५ से गुणा किया तो १० पल प्राप्त हुए। चरान्तर ऋण होने के कारण इस पंचांग के दिनमान २६।४७ में १० पल जोड़ने से जयपुर का दिनमान २६।५७ हुआ। यदि चरान्तर मिनट धन होते तो पलों को ऋण करना पड़ता। जयपुर का सूर्यास्त निकालने के लिए दिनमान २६।५७ के घडी-पलों के घण्टा-मिनट १०।४७ हुए। इनको जयपुर के सूर्योदय ६।४८ में जोड़ा तो सूर्यास्त १७।३५ हुआ। जयपुर और दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय में ३।२२ मिनट अथवा ८ पलों का ऋण अन्तर है। तिथि, योग, नक्षत्र, करण, भद्रा, यह चाल आदि में सर्वत्र ३ मिनट या ८ पल कम करने से जयपुर का मान आ जाता है।

चरान्तर मिनट लाने का उदाहरण

मान लो १५ फरवरी को जोधपुर का चरान्तर निकालना है। दैनिक रविक्रान्त सारणी से इस दिन की रविक्रान्ति १२।५६ दक्षिण है। जोधपुर का अक्षांश २६।१८ है। चरान्तर सारणी में खड़ी बायें हाथ की लाईन क्रान्तायांश की है और आड़ी ऊपर की लाईन अक्षांश की है तो क्रान्तायांश १२।५६ लगभग १३ के बराबर है। १३ क्रान्तायांश के सामने २६ अक्षांश के कोष्ठक में ३ चरान्तर मिनट दिये हैं। यह क्रान्ति दक्षिण होने के कारण ऋण चरान्तर मिनट हुए।

उत्तराक्षांश: चरान्तर मिनट — चरान्तर सारणी

क्रान्त्यंश	यह मिनट क्रान्ति दक्षिण हो तो ऋण और क्रान्ति उत्तर हो तो धन																					क्रान्ति दक्षिण हो तो धन उत्तर हो तो ऋण							
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
१	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
२	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२
३	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
४	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३
५	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	४
६	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	५
७	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	७	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	४	६
८	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	३	५	५	६
९	१४	१४	१३	१२	१२	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	४	३	२	२	०	०	१	२	३	४	५	६	७
१०	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	२	०	१	२	२	४	४	६	६	८
११	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८
१२	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	३	३	२	०	१	२	३	४	५	७	८	९
१३	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१६	१५	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	७	८	१०
१४	२२	२२	२१	२०	१८	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११
१५	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	५	३	२	०	१	२	४	५	७	८	१०	१२
१६	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	२	१	१	२	४	६	७	९	११	१३
१७	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४
१८	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१३	१४
१९	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१४	१५
२०	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	१२	१५	१६
२१	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	१	१	३	५	८	१०	१२	१५	१७
२२	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	६	५	३	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८
२३	३९	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	७	५	३	१	१	४	६	९	११	१४	१६	१९
२४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	६	४	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०
अक्षांशाः	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
	यह मिनट क्रांति तुल्य धन या ऋण करें																					क्रांति के विपरीत समझें							

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जननाशौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भस्रावादि अशौच व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवे और छटे मास में 'गर्भपात' और इस के उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पांचवें और छटे महीने में गर्भपात हो तो क्रम से ५ और ६ दिन का गर्भिणी को अशौच रहता है, पितादि सपिण्ड को ३ दिन का 'सूतक' होता है। गर्भस्राव और गर्भपात में चारों वर्णों को एकसा ही होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हो तो २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से १ मास तक धर्म कार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल-छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

जननाशौच दान भोजन निर्णय

जननाशौच में पहले तथा छटे-दसवें दिन दान, पति ग्रह का दोष नहीं है। केवल अन्न भोजन का ही निषेध है।

मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-२ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाय तो माता को १० दिन का सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों को पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं रहता।

मृताशौच व्यवस्था

नामकरण अर्थात् १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दांत आने से पहले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक अर्थात् चूड़ाकरण संस्कार न होने पर बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है, और ३ वर्ष तक मुण्डन-संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या अशौच व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ७ पुरुषों तक ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाये व प्रसूता हो तो माता पिता और सहोदर भाइयों को ३ दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का आशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है। विवाहित कन्या को १० दिन के भीतर माता पिता की मृत्यु की खबर मिले तो ३ दिन का पातक, १० दिन के बाद सुने तो १ दिन का।

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १॥ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना को ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

सास-ससुर तथा जामातृ-मरण पर आशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जायें तो जामातृ पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जमाई के मरने से १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय-विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को पितृ-बांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो ३ दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १॥ दिन का पातक होता है, और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का।

अशौच-संपात पर निर्णय

१० दिन के अशौच में यदि ५ दिन के भीतर दूसरा १० दिन का अशौच हो जावे तो पहले के साथ शुद्धि हो जाती है। ५ दिन के बाद ६ दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ शुद्धि हो जाती है। यदि १०वें दिन की रात्रि में दूसरा अशौच हो जाय तो दो दिन अशौच और बढ़ जाता है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृतशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

प्रथमाब्दे निषिद्ध कार्याणि

प्रथमाब्दे निषिद्धानि महातीर्थस्य गमनमुपवासव्रतानि च अब्दमध्ये न कुर्वीत महागुरुनिपातने। 'प्रभोतौ पितरौ यस्य दहस्तस्याशुचिर्भवेत्। नदेयंनापिवेपिच्यं पूर्णो न वत्सरः। प्रथमाब्दे गयाश्रद्धनिषेध उक्तः—तीर्थ श्राद्धं गयाश्राद्ध श्राद्धमञ्च पैत्रिकम्। अब्दमध्ये न कुर्वीतमहा गुरु विपत्तिषु। गयाश्राद्धं मृतानां तु पूर्णे त्वब्दे प्रशास्यते शुक्रस्यास्तमने चैव देवेज्यस्य तथैव च। प्रेतकार्यं न दुष्येत प्रथम वत्सरं बिना॥ गयायां सर्वकालेषुपिंडंदद्याद्विचक्षण अधिमासे जन्मदिने, अस्ते च गुरुशुक्रयोः। गोदावर्योगयायां च श्री शैले ग्रहणाद्ये। सुरासुरगुरूणां च मौढ्यदोषो न विद्यते॥

गंगायामस्थिनिक्षेपने विचार

अस्तगते गुरौ शुक्रे तथैव चाधिमास के। गंगायास्थि-निक्षेप न कुर्यादिति गौतमः॥ दशाहाभ्यन्तरे न दोषः।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर्षफल बनाने की विधि

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	६०	००
वर्ष	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	०४	०५	६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०३	०४	०५
घड़ी	०१	१६	३१	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
वर्ष	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०७	०१
घड़ी	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१२	२८	४४	५९	१५	३०	४६	०१	१७
पल	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३९	०९	४०	१२	४३	१५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	०२	३०	००	३०	००	६०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्षफल बनाने की रीति

जिस वर्ष का वर्षफल बनाना हो उस वर्ष से जन्म सम्वत् को कम करे जो शेष रहे उन अंकों के ऊपर सारणी से देखकर उसमें जन्म के वार इष्ट घड़ी पल में जोड़ देने से उस वर्ष का वार इष्ट घड़ी पल बन जाएगा फिर लग्न सारणी से लग्न देख लेवें।

मुन्था :—गत वर्षों में जन्म लग्न को युक्त करके १२ से भाग देवें जो शेष रहे उस राशी में मुन्था लगा देवें।

फलम् :—मुंथा यदि लग्न से ५, १०, ११वें स्थान में हो तो वह वर्ष फलदायक हो यदि २, ३, ५वें स्थान में हो तो मध्यम और यदि ४।६।७।८ या १२वें स्थान में पड़ें तो वह वर्ष अति अशुभ जानना चाहिए, इसके अतिरिक्त यदि मुन्था शुभ ग्रह के साथ हो या शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो शुभ और यदि इससे विपरीत हो तो अशुभ फल देता है।

वर्ष त्रिप्ताकि चक्रम:—तीन सीधी और तीन तिरछी रेखाएं खींचकर तीनों को परस्पर मिला देवें और फिर मध्य रेखा के ऊपर वाले कोने पर वर्ष लग्न लगाकर शेष राशिएं नम्बर वार दर्ज कर देवें ग्रह स्थापन करने की विधि यह है कि गत वर्षों को नौ का भाग दे जो शेष बचे जन्म राशि से उतने घर में चन्द्रमा लगा देवें शेष ग्रहों को ४ पर भाग देवें जो शेष रहे जन्म ग्रहों से उतनी संख्या पर शेष ग्रहों को लगा देवें परन्तु राहु वा केतु का संस्कार इसके विपरीत करे। यदि जन्म लग्न वर्ष लग्न से आठवें स्थान में आवे तो वर्ष कष्टदायक हो। जिस स्थान में जो कोई ग्रह होगा उसी के अनुसार अपना प्रभाव डालेगा।

फलम्:—यदि शुभ ग्रह का राहु से वेध हो तो उस वर्ष शरीर में रोग, सूर्य से हो कफवायु रोग, मंगल से हो तो रक्त विकार और शरीर में पीड़ा और यदि शनि से हो तो वह वर्ष अतिकष्टकारी और धनादि का खर्च अधिक होता है।

दशा:—जन्म नक्षत्र को अश्विनी नक्षत्र से गिन कर लब्ध को गत वर्षों में जमा करके २ घटा देवें जो शेष बचे उसको ९ पर भाग देवें यदि शेष १ बचे तो सूर्य दो रहे तो चन्द्रमा ३ रहे तो मंगल ४ रहे तो राहु ५ रहे तो बृहस्पति ६ रहे तो शनि ७ रहे तो बुध ८ रहे हों तो केतु और यदि शून्य (९) शेष बचे तो शुक्र की दशा शुरू में होगी।

अथ दशा दिनानी:—सूर्य १८ दिन, चन्द्रमा ३० दिन, मंगल २१ दिन, राहु ५४ दिन, बृहस्पति ४८ दिन, शनि ५७ दिन बुध ५१ दिन, केतु २१ दिन और शुक्र की दशा के ६० दिन होते हैं। इस प्रकार से दशा लगा लिया करें।

फलम्:—सूर्य मंगल राहु केतु ३, ६, १०, ११वें स्थान में जन्म या वर्ष लग्न में पड़े तो हों शुभ फल देते हैं और शुभ ग्रह चन्द्रमा बुध, गुरु, शुक्र ४, ५, ७, ९. १०, ११वें स्थान में शुभ फल देते हैं। ८, १२वें स्थान में सब ग्रह नेष्ट फल देते हैं।

वर्ष कुण्डली में अरिष्ट योग

जन्म लग्न ही वर्ष लग्न हो तो दो जन्मा वर्ष होता है जो शुभदायक नहीं है। यदि दो जन्मा लग्न में गुरु और चन्द्रमा शुभ स्थान में बैठे हों तो वह वर्ष अशुभ फलदायक नहीं होता यदि छटे गुरु और चन्द्रमा हों तो वह वर्ष अरिष्ट फलदायक होता है यदि जन्म लग्न वर्ष लग्न एक हो और गुरु आठवें हों और चन्द्रमा छटे हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

सन्तान योग

वर्ष कुंडली में लग्नेश पांचवें या सातवें में पड़ा हो और पंचमेश वा सप्तमेश लग्न में पड़ा हो तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। शुभ ग्रह पांचवें हों और पंचमेश देखता हो तो गर्भ होता है गुरु की राशि में चन्द्रमा हो मंगल शुभ राशि में हो या शुक्र की राशि में बैठा हो तो गर्भ योग होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नवीन वर्ष मानानुसार वर्ष-प्रवेश सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०
गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३२	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

आधुनिक विज्ञान वेत्ताओं ने वेधशालाओं में सूक्ष्म यन्त्रों की सहायता से वर्ष का मान ३६५ दिन १५ घड़ी २२ पल ५७ विपल निर्धारित किया है। प्राचीन मान ३६५।१५।३१।३० है। प्राचीन मान तथा नवीन मान में ८ पल ३३ विपल का अन्तर है जो ३ मिनट २५ सैकिण्ड के बराबर बनता है। प्रति वर्ष ३½ मिनट के लगभग का अन्तर कालान्तर में काफी अधिक हो जाता है और वर्ष प्रवेश लग्न में भिन्नता आ जाती है। आजकल पूना, बम्बई, मद्रास, उत्तर भारत के सभी अच्छे ज्योतिषी नवीन मान से ही वर्षफल बनाकर फलादेश कहते हैं। जिस वर्ष का वर्षफल बनाना हो उसके सम्वत् में से जन्म सम्वत् को घटाने से गत वर्ष आते हैं। गतवर्ष की संख्या के कोष्ठक में जो अंक मिलें उनमें जन्म समय के वारादि जोड़ने से वर्ष प्रवेश के वारादि आ जाते हैं। मान लो आपने २०४५ सम्वत् का वर्षफल बनाना है। जन्म सोमवार सम्वत् २०१४ इष्ट ५८।५० पर हुआ था। गतवर्ष ३१ हुये जिसकी संख्या उपरोक्त सारणी से ३-५६-५१-२७ मिली।

इसमें जन्म समय के वारादि जमा किये— २-५८-५०-००

जो जोड़ आया वह वर्ष प्रवेश का इष्ट हुआ। ६-५५-४१-२७

वार गणना रविवार-१, चन्द्रवार-२ इस प्रकार होती है। ३२वें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार—इष्ट ५५ घड़ी, ४१ पल, २७ विपल पर होगा। तिथि मास जानने के लिये सूर्य के उतने ही राशि अंश वर्ष प्रवेश पर होते हैं जितने कि जन्म समय पर थे। वर्ष प्रवेश की ईसवी तारीख जन्म तारीख के आस-पास ही आती है।

चालन कोष्ठक

ग्रह स्पष्ट करने के लिये ज्योतिषियों को जो गणित करना पड़ता है उसमें इस चालन कोष्ठक (पृष्ठ) से बहुत सहायता मिलती है। पंचांग में प्रतिदिन के ग्रहस्पष्ट दिये रहते हैं। उससे एक दिन की अर्थात् २४ घन्टे की चाल (गति) का पता चल जाता है। ग्रहस्पष्ट प्रायः ५-३० प्रातः के होते हैं। इस समय से जन्म समय तक की अवधि को चालन समझ लीजिये। ग्रहों की चाल तो भिन्न-२ होती है परन्तु चालन सब के लिये एक ही रहता है। त्रैराशिक गणित से ग्रहस्पष्ट इस प्रकार करते हैं—

मान लो किसी का जन्म रात के ९-३० पर हुआ है तो ५-३० प्रातः से ९-३० रात्रि तक १६ घन्टे अर्थात् ९६० मिनट हुये। सूर्य की एक दिन की गति ५९ कला २५ विकला है जिसके विकला ३५६५ हुये। २४ घन्टे अर्थात् १४४० मिनट में सूर्य चला ३५६५ विकला

१ मिनट में सूर्य चला ३५६५ ÷ १४४०

$$९६० \text{ मिनट में सूर्य चला } \frac{३५६५ \times ९६०}{१४४०}$$

यह भिन्न बनी। इसमें ३५६५ का ९६० से गुणा करके १४४० से भाग किया जायेगा। अब चालन की सहायता से गणित किया तो १६ घन्टे का चालन ६६७ आया।

२४ घन्टे अर्थात् १००० चालन पर गति है ३५६५

$$\text{तो } १६ \text{ घन्टे अर्थात् } ६६७ \text{ चालन पर गति होगी } \frac{३५६५ \times ६६७}{१०००}$$

इसमें ३५६५ का ६६७ से गुणा करके १००० के भाग के लिये दशमलव लगाकर उत्तर प्राप्त हो जायेगा। भाग नहीं देना पड़ेगा। प्रत्येक ग्रह की गति को चालन से गुणा करके दशमलव प्रणाली से ग्रह स्पष्ट करते जाइये।

यथा ३५६५ × ६६७ = २३७७८५५ इसमें हज़ार का भाग दिया तो हुये २३७७.८५५ अर्थात् २३७८ विकला अर्थात् ३९ कला ३८ विकला। इसको गत दिवस के सूर्य स्पष्ट में जोड़ने से अभीष्ट सूर्य स्पष्ट आ जायेगा।

सप्तधान्य

सप्तधान्य अर्थात् सतनजा केतु आदि क्रूर ग्रहों की शान्ति के लिये दान पदार्थों में सम्मिलित किया जाता है। इसमें निम्न सात धान्य बराबर मात्रा में लेकर मिलाये जाते हैं। १. उड़द काले साबुत, २. मूंग हरी साबुत, ३. कणक (गेहूं या गन्धम), ४. चने (छोले), ५. जौ, ६. तन्दुल (चावल), ७. कंगनी (माल कंगनी) या बाजरा।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये स्नानौषधि

नवग्रहों के अशुभ फलों की शान्ति के लिये जप दान यज्ञ हवन के अतिरिक्त प्रत्येक ग्रह के लिये दान पदार्थ तथा स्नान औषधियां अलग-२ लिख कर बताई गई हैं। नीचे लिखी औषधियां सभी ग्रहों के लिये समान रूप से प्रयोग की जा सकती हैं।

१. लाजवन्ती (छुईमुई), २. कूट, ३. खिल्ला, ४. कांगनी, ५. जौ, ६. सरसों लाल, ७. देवदार की लकड़ी का बुरादा, ८. पिसी हल्दी, ९. लौंग, १०. सर्वोषधि। यह सब पदार्थ पन्सारी से या वैद्यक की दवा बेचने वालों से मिल जाते हैं। इनको २४ घन्टे गंगाजल या शुद्ध जल में भिगोकर रख दिया जाता है। फिर उस जल को छानकर उससे स्नान किया जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रवि क्रान्ति सारिणी

तारीख	जनवरी दक्षिण अं. क.	फरवरी दक्षिण अं. क.	मार्च दक्षिण अं. क.	अप्रैल उत्तर अं. क.	मई उत्तर अं. क.	जून उत्तर अं. क.	जुलाई उत्तर अं. क.	अगस्त उत्तर अं. क.	सितंबर उत्तर अं. क.	अक्टूबर दक्षिण अं. क.	नवम्बर दक्षिण अं. क.	दिसंबर दक्षिण अं. क.
१	२३ ४	१७ १८	७ ५२	४ १४	१४ ५६	२१ ५९	२३ ९	१८ ९	८ २८	२ ५९	१४ १६	२१ ४३
२	२२ ५९	१७ १	७ २९	४ ३८	१५ १४	२२ ७	२३ ५	१७ ५४	८ ७	३ २२	१४ ३५	२१ ५२
३	२२ ५४	१६ ४४	७ ६	५ १	१५ ३२	२२ १५	२३ १	१७ ३९	७ ४५	३ ४६	१४ ५४	२२ १
४	२२ ४८	१६ २७	६ ४३	५ २५	१५ ४९	२२ २२	२२ ५६	१७ २३	७ २३	४ ९	१५ १३	२२ १०
५	२२ ४२	१६ ९	६ २०	५ ४९	१६ ७	२२ २९	२२ ५१	१७ ७	७ १	४ ३२	१५ ३२	२२ १८
६	२२ ३५	१५ ५१	५ ५७	६ १२	१६ २४	२२ ३६	२२ ४५	१६ ५१	६ ३९	४ ५५	१५ ५०	२२ २६
७	२२ २८	१५ ३२	५ ३५	६ ३५	१६ ४१	२२ ४२	२२ ३९	१६ ३५	६ १६	५ १८	१६ ८	२२ ३३
८	२२ २१	१५ १३	५ १२	६ ५८	१६ ५७	२२ ४८	२२ ३३	१६ १८	५ ५४	५ ४१	१६ २६	२२ ४०
९	२२ १३	१४ ५४	४ ४९	७ २१	१७ १३	२२ ५३	२२ २६	१६ १	५ ३१	६ ४	१६ ४४	२२ ४६
१०	२२ ५	१४ ३५	४ २६	७ ४३	१७ २९	२२ ५८	२२ १९	१५ ४३	५ ९	६ २७	१७ १	२२ ५२
११	२१ ५६	१४ १५	४ ३	८ ६	१७ ४५	२३ ३	२२ ११	१५ २६	४ ४६	६ ५०	१७ १८	२२ ५८
१२	२१ ४७	१३ ५६	३ ४०	८ २९	१८ १	२३ ७	२२ ३	१५ ८	४ २४	७ १२	१७ ३४	२३ ३
१३	२१ ३७	१३ ३६	३ १७	८ ५१	१८ १६	२३ ११	२१ ५५	१४ ५०	४ १	७ ३५	१७ ५०	२३ ८
१४	२१ २७	१३ १६	२ ५४	९ १४	१८ ३०	२३ १४	२१ ४६	१४ ३२	३ ३८	७ ५७	१८ ६	२३ १२
१५	२१ १६	१२ ५६	२ ३१	९ ३६	१८ ४४	२३ १७	२१ ३७	१४ १३	३ १५	८ २०	१८ २२	२३ १५
१६	२१ ५	१२ ३५	२ ७	९ ५७	१८ ५८	२३ २०	२१ २८	१३ ५४	२ ५२	८ ४२	१८ ३७	२३ १८
१७	२० ५४	१२ १४	१ ४४	१० १८	१९ १२	२३ २२	२१ १८	१३ ३५	२ २९	९ ४	१८ ५२	२३ २१
१८	२० ४२	११ ५३	१ २१	१० ३९	१९ २६	२३ २४	२१ ८	१३ १६	२ ६	९ २५	१९ ७	२३ २३
१९	२० ३०	११ ३२	० ५७	११ ०	१९ ३९	२३ २५	२० ५८	१२ ५७	१ ४२	९ ४७	१९ २१	२३ २४
२०	२० १८	११ ११	० ३४	११ २१	१९ ५२	२३ २६	२० ४७	१२ ३७	१ १९	१० ९	१९ ३५	२३ २५
२१	२० ५	१० ४९	० १०	११ ४१	२० ४	२३ २७	२० ३६	१२ १८	० ५६	१० ३०	१९ ४८	२३ २६
२२	१९ ५२	१० २८	उ० १४	१२ २	२० १७	२३ २७	२० २४	११ ५८	० ३२	१० ५२	२० १	२३ २७
२३	१९ ३८	१० ६	० ३८	१२ २२	२० २९	२३ २७	२० १२	११ ३८	० ९	११ १३	२० १४	२३ २७
२४	१९ २४	९ ४४	१ २	१२ ४२	२० ४०	२३ २६	२० ०	११ १८	द० १५	११ ३५	२० २७	२३ २६
२५	१९ ९	९ २२	१ २६	१३ २	२० ५१	२३ २५	१९ ४७	१० ५७	० ३९	११ ५६	२० ३९	२३ २५
२६	१८ ५४	९ ०	१ ५०	१३ २१	२१ २	२३ २३	१९ ३४	१० ३६	१ २	१२ १७	२० ५१	२३ २३
२७	१८ ३९	८ ३८	२ १४	१३ ४१	२१ १२	२३ २१	१९ २०	१० १५	१ २६	१२ ३८	२१ २	२३ २१
२८	१८ २३	८ १६	२ ३८	१४ ०	२१ २२	२३ १९	१९ ६	९ ५४	१ ४९	१२ ५८	२१ १३	२३ १९
२९	१८ ७	८ ४	३ २	१४ १९	२१ ३२	२३ १६	१८ ५२	९ ३३	२ १२	१३ १८	२१ २४	२३ १६
३०	१७ ५१	० ०	३ २६	१४ ३७	२१ ४१	२३ १३	१८ ३८	९ १२	२ ३६	१३ ३८	२१ ३४	२३ १३
३१	१७ ३५	० ०	३ ५०	० ०	२१ ५०	० ०	१८ २४	८ ५	० ०	१३ ५७	० ०	२३ ९

वेलान्तर कोष्ठक (मिनटों में)

तारीख	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
१	+४	+१४	+१२	+३	−३	−३	+३	+६	०	−९	१६	−११
२	४	१४	१२	३	३	३	४	६	०	१०	१६	११
३	४	१४	१२	२	४	२	४	६	०	१०	१६	११
४	५	१४	१२	२	४	२	४	६	−१	१०	१६	१०
५	५	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
६	६	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
७	६	१४	११	१	४	२	४	६	२	११	१६	९
८	७	१५	१०	१	४	१	४	६	२	१२	१६	९
९	७	१५	१०	१	४	१	४	५	२	१२	१६	८
१०	८	१५	१०	१	४	१	५	५	३	१२	१६	८
११	८	१५	१०	+१	४	१	५	५	३	१२	१६	७
१२	८	१५	१०	०	४	−१	५	५	३	१३	१६	६
१३	९	१५	९	०	४	०	५	५	४	१३	१६	६
१४	९	१४	९	०	४	०	५	४	४	१३	१६	६
१५	१०	१४	९	०	४	०	५	४	४	१४	१६	५
१६	१०	१४	८	०	४	०	६	४	५	१४	१६	५
१७	१०	१४	८	−१	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१८	११	१४	८	१	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१९	११	१४	७	१	५	+१	६	४	६	१४	१५	३
२०	११	१४	७	२	४	१	६	३	६	१४	१५	३
२१	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१४	१४	२
२२	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१५	१४	२
२३	१२	१४	६	२	४	१	६	३	७	१५	१४	१
२४	१२	१४	५	२	४	२	६	३	७	१५	१४	−१
२५	१२	१३	५	२	४	२	६	२	७	१६	१४	०
२६	१३	१३	५	२	३	२	६	२	८	१६	१३	+१
२७	१३	१३	४	३	३	२	६	२	८	१६	१३	१
२८	१३	१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
२९	१३	+१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
३०	१४		४	−३	३	+३	६	१	−९	१६	१२	३
३१	१४		+४		−३		+६	+१		−१६	−१२	+३

वेलान्तर कोष्ठक (समय समीकरण)

भारतीय स्टैंडर्ड समय से स्थानीय स्पष्ट समय निकालते समय वेलान्तर संस्कार किया जाता है। भा. स्टॅं. स. में अक्षांशादि सारिणी के अनुसार किसी स्थान विशेष का जो अन्तर दिया हो वह ऋण या धन करके स्थानीय मध्यम समय आ जाता है। इसमें तारीख के अनुसार वेलान्तर संस्कार करने से स्थानीय स्पष्ट समय आता है। इसी स्पष्ट समय से आगे गणित किया जाता है। जब दिनमान से इष्टकाल निकालते है तब वेलान्तर संस्कार करते है। वेलान्तर ऋण हो तो जोड़कर और वेलान्तर धन हो तो घटाकर स्पष्ट स्थानीय समय निकाला जाता है। सूर्योदय से इष्टकाल बनाते समय जब सूर्योदय तथा जन्म समय दोनों ही भा.स्टॅं.स. में होते हैं यह वेलान्तर संस्कार नही किया जाता। इसी पंचांग के पृष्ठ १६१ पर सूर्योदय गणित में वेलान्तर प्रयोग पर सामग्री दी गई है। स्पष्ट स्थानीय मध्याह्न समय निकालने में वेलान्तर का प्रयोग किया जाता है। मध्याह्न गणित में वेलान्तर ...

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

दशमलग्न सारणीयम् (सर्वत्रोपयोगी)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष ०	३ ३४	३ ४३	३ ५२	४ २	४ ११	४ २०	४ २९	४ ३८	४ ४८	४ ५८	५ ८	५ १८	५ २८	५ ३८	५ ४८
बृषभ १	८ २७	८ ३७	८ ४७	८ ५७	९ ७	९ १७	९ २७	९ ३७	९ ४८	९ ५९	१० ९	१० २०	१० ३१	१० ४२	१० ५२
मिथुन २	१३ ४५	१३ ५५	१४ ६	१४ १७	१४ २८	१४ ३८	१४ ४९	१५ ०	१५ ११	१५ २२	१५ ३२	१५ ४३	१५ ५४	१६ ५	१६ १५
कर्क ३	१९ ८	१९ १८	१९ २९	१९ ४०	१९ ५१	२० १	२० १२	२० २३	२० ३३	२० ४३	२० ५३	२१ ३	२१ १३	२१ २३	२१ ३३
सिंह ४	२४ १२	२४ २२	२४ ३२	२४ ४२	२४ ५२	२५ २	२५ १२	२५ २२	२५ ३१	२५ ४१	२५ ५०	२५ ५९	२६ ८	२६ १८	२६ २७
कन्या ५	२८ ५५	२९ ४	२९ १४	२९ २३	२९ ३२	२९ ४१	२९ ५१	३० ०	३० ९	३० १९	३० २८	३० ३७	३० ४६	३० ५६	३१ ५
तुला ६	३३ ३३	३३ ४२	३३ ५२	३४ १	३४ १०	३४ १९	३४ २९	३४ ३८	३४ ४८	३४ ५८	३५ ८	३५ १८	३५ २८	३५ ३८	३५ ४८
वृश्चि. ७	३८ २७	३८ ३७	३८ ४७	३८ ५७	३९ ७	३९ १७	३९ २७	३९ ३७	३९ ४७	३९ ५८	४० ९	४० २०	४० ३१	४० ४२	४० ५२
धनुः ८	४३ ४५	४३ ५५	४४ ६	४४ १७	४४ २८	४४ ३८	४४ ४९	४५ ०	४५ ११	४५ २२	४५ ३२	४५ ४३	४५ ५४	४६ ५	४६ १५
मकर ९	४९ ८	४९ १८	४९ २९	४९ ४०	४९ ५१	५० १	५० १२	५० २३	५० ३३	५० ४३	५० ५३	५१ ३	५१ १३	५१ २३	५१ ३३
कुम्भ १०	५४ १२	५४ २२	५४ ३२	५४ ४२	५४ ५२	५५ २	५५ १२	५५ २२	५५ ३१	५५ ४१	५५ ५०	५५ ५९	५६ ८	५६ १८	५६ २७
मीन ११	५८ ५५	५९ ४	५९ १४	५९ २३	५९ ३२	५९ ४१	५९ ५१	० ०	० ९	० १९	० २८	० ३७	० ४६	० ५६	१ ५

अंशाः	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	५ ५८	६ ८	६ १८	६ २८	६ ३८	६ ४८	६ ५८	७ ७	७ १७	७ २७	७ ३७	७ ४७	७ ५७	८ ७	८ १७
बृषभ १	११ ३	११ १४	११ २५	११ ३५	११ ४६	११ ५७	१२ ८	१२ १८	१२ २९	१२ ४०	१२ ५१	१३ २	१३ १२	१३ २३	१३ ३४
मिथुन २	१६ २६	१६ ३७	१६ ४८	१६ ५८	१७ ९	१७ १९	१७ ३०	१७ ४१	१७ ५२	१८ ३	१८ १४	१८ २५	१८ ३५	१८ ४६	१८ ५७
कर्क ३	२१ ४३	२१ ५३	२२ ३	२२ १३	२२ २३	२२ ३३	२२ ४३	२२ ५२	२३ २	२३ १२	२३ २२	२३ ३२	२३ ४२	२३ ५२	२४ २
सिंह ४	२६ ३६	२६ ४५	२६ ५५	२७ ४	२७ १३	२७ २२	२७ ३२	२७ ४१	२७ ५०	२७ ५९	२८ ९	२८ १८	२८ २७	२८ ३७	२८ ४६
कन्या ५	३१ १४	३१ २३	३१ ३३	३१ ४२	३१ ५१	३२ ०	३२ १०	३२ १९	३२ २८	३२ ३८	३२ ४७	३२ ५६	३३ ५	३३ १५	३३ २४
तुला ६	३५ ५८	३६ ८	३६ १८	३६ २८	३६ ३८	३६ ४८	३६ ५८	३७ ७	३७ १७	३७ २७	३७ ३७	३७ ४७	३७ ५७	३८ ७	३८ १७
वृश्चि. ७	४१ ३	४१ १४	४१ २५	४१ ३५	४१ ४६	४१ ५७	४२ ८	४२ १८	४२ २९	४२ ४०	४२ ५१	४३ २	४३ १२	४३ २३	४३ ३४
धनुः ८	४६ २६	४६ ३७	४६ ४८	४६ ५८	४७ ९	४७ २०	४७ ३१	४७ ४१	४७ ५२	४८ ३	४८ १४	४८ २५	४८ ३५	४८ ४६	४८ ५७
मकर ९	५१ ४३	५१ ५३	५२ ३	५२ १३	५२ २३	५२ ३३	५२ ४३	५२ ५३	५३ २	५३ १२	५३ २२	५३ ३२	५३ ४२	५३ ५२	५४ २
कुम्भ १०	५६ ३६	५६ ४५	५६ ५५	५७ ४	५७ १३	५७ २२	५७ ३२	५७ ४१	५७ ५०	५८ ०	५८ ९	५८ १८	५८ २७	५८ ३७	५८ ४७
मीन ११	१ १४	१ २३	१ ३३	१ ४२	१ ५१	२ ०	२ १०	२ १९	२ २८	२ ३८	२ ४७	२ ५६	३ ५	३ १५	३ २५

इन्द्रप्रस्थ नगरे लग्न सारणी पलभा ६।३२ बर्षादौ कृतो अयनांश २३

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष ०	२ ४४	२ ५१	२ ५८	३ ५	३ १३	३ २०	३ २७	३ ३४	३ ४२	३ ५०	३ ५९	४ ७	४ १५	४ २३	४ ३२
बृषभ १	६ ४३	६ ५२	७ ०	७ ८	७ १६	७ २५	७ ३३	७ ४१	७ ५१	८ १	८ ११	८ २१	८ ३१	८ ४१	८ ५१
मिथुन २	११ ३१	११ ४१	११ ५१	१२ १	१२ ११	१२ २१	१२ ३१	१२ ४१	१२ ५२	१३ ४	१३ १५	१३ २७	१३ ३८	१३ ५०	१४ १
कर्क ३	१७ ५	१७ १६	१७ २८	१७ ३९	१७ ५१	१८ २	१८ १४	१८ २५	१८ ३७	१८ ४८	१९ ०	१९ १२	१९ २३	१९ ३५	१९ ४७
सिंह ४	२२ ५४	२३ ६	२३ १७	२३ २९	२३ ४१	२३ ५३	२४ ४	२४ १६	२४ २७	२४ ३९	२४ ५०	२५ २	२५ १३	२५ २५	२५ ३६
कन्या ५	२८ ४०	२८ ५१	२९ ३	२९ १४	२९ २६	२९ ३७	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २३	३० ३४	३० ४६	३० ५७	३१ ९	३१ २०
तुला ६	३४ २४	३४ ३५	३४ ४७	३४ ५८	३५ १०	३५ २१	३५ ३३	३५ ४४	३५ ५६	३६ ७	३६ १९	३६ ३१	३६ ४२	३६ ५३	३७ ६
वृश्चि. ७	४० १३	४० २५	४० ३६	४० ४८	४१ ०	४१ १२	४१ २३	४१ ३५	४१ ४६	४१ ५८	४२ ९	४२ २१	४२ ३२	४२ ४४	४२ ५५
धनुः ८	४५ ५९	४६ १०	४६ २२	४६ ३३	४६ ४५	४६ ५६	४७ ८	४७ १९	४७ २९	४७ ३९	४७ ४९	४७ ५९	४८ ९	४८ १९	४८ २९
मकर ९	५१ ९	५१ १९	५१ २९	५१ ३९	५१ ४९	५१ ५९	५२ ९	५२ १९	५२ २७	५२ ३५	५२ ४४	५२ ५२	५३ ०	५३ ८	५३ १७
कुम्भ १०	५५ २८	५५ ३७	५५ ४५	५५ ५३	५६ १	५६ १०	५६ १८	५६ २६	५६ ३३	५६ ४०	५६ ४७	५६ ५५	५७ २	५७ ९	५७ १६
मीन ११	५९ १०	५९ १७	५९ २४	५९ ३१	५९ ३९	५९ ४६	५९ ५३	० ०	० ७	० १४	० २१	० २९	० ३६	० ४३	० ५०

अंशाः	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	४ ४०	४ ४८	४ ५६	५ ५	५ १३	५ २१	५ २९	५ ३७	५ ४६	५ ५४	६ २	६ १०	६ १९	६ २७	६ ३५
बृषभ १	९ १	९ ११	९ २१	९ ३१	९ ४१	९ ५१	१० १	१० ११	१० २१	१० ३१	१० ४१	१० ५१	११ १	११ ११	११ २१
मिथुन २	१४ १३	१४ २४	१४ ३६	१४ ४७	१४ ५९	१५ १०	१५ २२	१५ ३३	१५ ४४	१५ ५६	१६ ७	१६ १९	१६ ३०	१६ ४२	१६ ५३
कर्क ३	१९ ५९	२० १०	२० २२	२० ३४	२० ४५	२० ५७	२१ ९	२१ २०	२१ ३२	२१ ४४	२१ ५६	२२ ७	२२ १९	२२ ३१	२२ ४२
सिंह ४	२५ ४८	२५ ५९	२६ ११	२६ २२	२६ ३४	२६ ४५	२६ ५७	२७ ८	२७ १९	२७ ३१	२७ ४२	२७ ५४	२८ ५	२८ १७	२८ २८
कन्या ५	३१ ३२	३१ ४३	३१ ५४	३२ ६	३२ १८	३२ २९	३२ ४१	३२ ५२	३३ ३	३३ १५	३३ २६	३३ ३८	३३ ४९	३४ १	३४ १२
तुला ६	३७ १८	३७ २९	३७ ४१	३७ ५३	३८ ४	३८ १६	३८ २८	३८ ३९	३८ ५१	३९ ३	३९ १५	३९ २६	३९ ३८	३९ ५०	४० १
वृश्चि. ७	४३ ७	४३ १८	४३ ३०	४३ ४१	४३ ५३	४४ ४	४४ १६	४४ २७	४४ ३८	४४ ३०	४५ १	४५ १३	४५ २४	४५ ३६	४५ ४७
धनुः ८	४८ ३९	४८ ४९	४८ ५९	४९ ९	४९ १९	४९ २९	४९ ३९	४९ ४९	४९ ५९	५० ९	५० १९	५० २९	५० ३९	५० ४९	५० ५९
मकर ९	५३ २५	५३ ३३	५३ ४१	५३ ५०	५३ ५८	५४ ६	५४ १४	५४ २२	५४ ३०	५४ ३९	५४ ४७	५४ ५५	५५ ४	५५ १२	५५ २०
कुम्भ १०	५७ २३	५७ ३०	५७ ३७	५७ ४४	५७ ५२	५७ ५९	५८ ६	५८ १३	५८ २०	५८ २७	५८ ३४	५८ ४२	५८ ४९	५८ ५६	५९ ३
मीन ११	० ५७	१ ४	१ ११	१ १८	१ २६	१ ३३	१ ४०	१ ४७	१ ५४	२ १	२ ८	२ १६	२ २३	२ ३०	२ ३७

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रवि क्रान्ति सारिणी

तारीख	जनवरी दक्षिण अं. क.	फरवरी दक्षिण अं. क.	मार्च दक्षिण अं. क.	अप्रैल उत्तर अं. क.	मई उत्तर अं. क.	जून उत्तर अं. क.	जुलाई उत्तर अं. क.	अगस्त उत्तर अं. क.	सितंबर उत्तर अं. क.	अक्टूबर दक्षिण अं. क.	नवम्बर दक्षिण अं. क.	दिसंबर दक्षिण अं. क.
१	२३ ४	१७ १८	७ ५२	४ १४	१४ ५६	२१ ५९	२३ ९	१८ ९	८ २८	२ ५९	१४ १६	२१ ४३
२	२२ ५९	१७ १	७ २९	४ ३८	१५ १४	२२ ७	२३ ५	१७ ५४	८ ७	३ २२	१४ ३५	२१ ५२
३	२२ ५४	१६ ४४	७ ६	५ १	१५ ३२	२२ १५	२३ १	१७ ३९	७ ४५	३ ४६	१४ ५४	२२ १
४	२२ ४८	१६ २७	६ ४३	५ २४	१५ ४९	२२ २२	२२ ५६	१७ २३	७ २३	४ ९	१५ १३	२२ १०
५	२२ ४२	१६ ९	६ २०	५ ४६	१६ ७	२२ २९	२२ ५१	१७ ७	७ १	४ ३२	१५ ३२	२२ १८
६	२२ ३५	१५ ५१	५ ५७	६ १२	१६ २४	२२ ३६	२२ ४५	१६ ५१	६ ३९	४ ५५	१५ ५०	२२ २६
७	२२ २८	१५ ३२	५ ३४	६ ३५	१६ ४१	२२ ४२	२२ ३९	१६ ३५	६ १६	५ १८	१६ ८	२२ ३३
८	२२ २१	१५ १३	५ १२	६ ५८	१६ ५७	२२ ४८	२२ ३३	१६ १८	५ ५४	५ ४१	१६ २६	२२ ४०
९	२२ १३	१४ ५४	४ ४९	७ २१	१७ १३	२२ ५३	२२ २६	१६ १	५ ३१	६ ४	१६ ४४	२२ ४६
१०	२२ ५	१४ ३५	४ २६	७ ४३	१७ २९	२२ ५८	२२ १९	१५ ४३	५ ९	६ २७	१७ १	२२ ५२
११	२१ ५६	१४ १५	४ ३	८ ६	१७ ४५	२३ ३	२२ ११	१५ २६	४ ४६	६ ५०	१७ १८	२२ ५८
१२	२१ ४७	१३ ५६	३ ४०	८ २९	१८ १	२३ ७	२२ ३	१५ ८	४ २४	७ १२	१७ ३४	२३ ३
१३	२१ ३७	१३ ३६	३ १७	८ ५१	१८ १६	२३ ११	२१ ५५	१४ ५०	४ १	७ ३५	१७ ५०	२३ ८
१४	२१ २७	१३ १६	२ ५४	९ १४	१८ ३०	२३ १४	२१ ४६	१४ ३२	३ ३८	७ ५७	१८ ६	२३ १२
१५	२१ १६	१२ ५६	२ ३१	९ ३६	१८ ४४	२३ १७	२१ ३७	१४ १३	३ १५	८ २०	१८ २२	२३ १५
१६	२१ ५	१२ ३५	२ ७	९ ५७	१८ ५८	२३ २०	२१ २८	१३ ५४	२ ५२	८ ४२	१८ ३७	२३ १८
१७	२० ५४	१२ १४	१ ४४	१० १८	१९ १२	२३ २२	२१ १८	१३ ३५	२ २९	९ ४	१८ ५२	२३ २१
१८	२० ४२	११ ५३	१ २१	१० ३९	१९ २६	२३ २४	२१ ८	१३ १६	२ ६	९ २५	१९ ७	२३ २३
१९	२० ३०	११ ३२	० ५७	११ ०	१९ ३९	२३ २५	२० ५८	१२ ५७	१ ४२	९ ४७	१९ २१	२३ २४
२०	२० १८	११ ११	० ३४	११ २१	१९ ५२	२३ २६	२० ४७	१२ ३७	१ १९	१० ९	१९ ३५	२३ २५
२१	२० ५	१० ४९	० १०	११ ४१	२० ४	२३ २७	२० ३६	१२ १८	० ५६	१० ३०	१९ ४८	२३ २६
२२	१९ ५२	१० २८	उ० १४	१२ २	२० १७	२३ २७	२० २४	११ ५८	० ३२	१० ५२	२० १	२३ २७
२३	१९ ३८	१० ६	० ३८	१२ २२	२० २९	२३ २७	२० १२	११ ३८	० ९	११ १३	२० १४	२३ २७
२४	१९ २४	९ ४४	१ २	१२ ४२	२० ४०	२३ २६	२० ०	११ १८	द० १५	११ ३५	२० २७	२३ २६
२५	१९ ९	९ २२	१ २६	१३ २	२० ५१	२३ २५	१९ ४७	१० ५७	० ३९	११ ५६	२० ३९	२३ २५
२६	१८ ५४	९ ०	१ ५०	१३ २१	२१ २	२३ २३	१९ ३४	१० ३६	१ २	१२ १७	२० ५१	२३ २३
२७	१८ ३९	८ ३८	२ १४	१३ ४१	२१ १२	२३ २१	१९ २०	१० १५	१ २६	१२ ३८	२१ २	२३ २१
२८	१८ २३	८ १६	२ ३८	१४ ०	२१ २२	२३ १९	१९ ६	९ ५४	१ ४९	१२ ५८	२१ १३	२३ १९
२९	१८ ७	८ ४	३ २	१४ १९	२१ ३२	२३ १६	१८ ५२	९ ३३	२ १२	१३ १८	२१ २४	२३ १६
३०	१७ ५१	० ०	३ २६	१४ ३७	२१ ४१	२३ १३	१८ ३८	९ १२	२ ३६	१३ ३८	२१ ३४	२३ १३
३१	१७ ३५	० ०	३ ५०	० ०	२१ ५०	० ०	१८ २४	८ ५	० ०	१३ ५७	० ०	२३ ९

वेलान्तर कोष्ठक (मिनटों में)

तारीख	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
१	+ ४	+ १४	+ १२	+ ३	− ३	− ३	+ ३	+ ६	०	− ९	१६	− ११
२	४	१४	१२	३	३	३	४	६	०	१०	१६	११
३	४	१४	१२	२	४	२	४	६	०	१०	१६	११
४	५	१४	१२	२	४	२	४	६	− १	१०	१६	१०
५	५	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
६	६	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
७	६	१४	११	१	४	२	४	६	२	११	१६	९
८	७	१५	१०	१	४	१	४	६	२	१२	१६	९
९	७	१५	१०	१	४	१	४	५	२	१२	१६	८
१०	८	१५	१०	१	४	१	५	५	३	१२	१६	८
११	८	१५	१०	+ १	४	१	५	५	३	१२	१६	७
१२	८	१५	१०	०	४	− १	५	५	३	१३	१६	६
१३	९	१५	९	०	४	०	५	५	४	१३	१६	६
१४	९	१४	९	०	४	०	५	४	४	१३	१६	६
१५	१०	१४	९	०	४	०	५	४	४	१४	१६	५
१६	१०	१४	८	०	४	०	६	४	५	१४	१६	५
१७	१०	१४	८	− १	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१८	११	१४	८	१	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१९	११	१४	७	१	५	+ १	६	४	६	१४	१५	३
२०	११	१४	७	२	४	१	६	३	६	१४	१५	३
२१	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१४	१४	२
२२	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१५	१४	२
२३	१२	१४	६	२	४	१	६	३	७	१५	१४	१
२४	१२	१४	५	२	४	२	६	३	७	१५	१४	− १
२५	१२	१३	५	२	४	२	६	२	७	१६	१४	०
२६	१३	१३	५	२	३	२	६	२	८	१६	१३	+ १
२७	१३	१३	४	३	३	२	६	२	८	१६	१३	१
२८	१३	१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
२९	१३	+ १२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
३०	१४		४	− ३	३	+ ३	६	१	− ९	१६	१२	३
३१	१४		+ ४		− ३		+ ६	+ १		− १६	− १२	+ ३

बेलान्तर कोष्ठक (समय समीकरण)

भारतीय स्टैंडर्ड समय से स्थानीय स्पष्ट समय निकालते समय बेलान्तर संस्कार किया जाता है। भा. स्टं. स. में अक्षांशादि सारिणी के अनुसार किसी स्थान विशेष का जो अन्तर दिया हो वह ऋण या धन करके स्थानीय मध्यम समय आ जाता है। इसमें तारीख के अनुसार बेलान्तर संस्कार करने से स्थानीय स्पष्ट समय आता है। इसी स्पष्ट समय से आगे गणित किया जाता है। जब दिनमान से इष्टकाल निकालते है तब बेलान्तर संस्कार करते है। बेलान्तर ऋण हो तो जोड़कर और बेलान्तर धन हो तो घटाकर स्पष्ट स्थानीय समय निकाला जाता है। सूर्योदय से इष्टकाल बनाते समय जब सूर्योदय तथा जन्म समय दोनों ही भा.स्टं.स. में होते हैं यह बेलान्तर संस्कार नहीं किया जाता। इसी पंचाग के पृष्ठ १६१ पर सूर्योदय गणित में बेलान्तर प्रयोग पर सामग्री दी गई है। स्पष्ट स्थानीय मध्याह्न समय निकालने में बेलान्तर का प्रयोग किया जाता है। मध्याह्न गणित में बेलान्तर ऋण हो तो ऋण किया जाता है और धन हो तो धन किया जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दशमलग्न सारणीयम् (सर्वत्रोपयोगी)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५
०	३४	४३	५२	२	११	२०	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८
वृषभ	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०
१	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६
२	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१
३	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६
४	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१
५	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५
६	३३	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८
वृश्चि.	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०
७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२
धनुः	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
८	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१
९	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६
१०	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१
११	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५

अंशाः	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८
०	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
वृषभ	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
१	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४
मिथुन	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
२	२६	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७
कर्क	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
सिंह	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८
४	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६
कन्या	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३
५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४
तुला	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
६	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
वृश्चि.	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
७	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४
धनुः	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
८	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७
मकर	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
९	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
कुम्भ	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८
१०	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४७
मीन	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
११	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२५

इन्द्रप्रस्थ नगरे लग्न सारणी पलभा ६।३२ वर्षादौ केतकी अयनांश २३

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४
०	४४	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
वृषभ	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८
१	४३	५२	०	८	१६	२५	३३	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१
मिथुन	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४
२	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१
कर्क	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९
३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७
सिंह	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५
४	५४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१
५	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७
६	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	६
वृश्चि.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२
७	१३	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५
धनुः	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८
८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३
९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७
कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७
१०	२८	३७	४५	५३	१	१०	१८	२६	३३	४०	४७	५५	२	९	१६
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०
११	१०	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०

अंशाः	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
०	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७	३५
वृषभ	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मिथुन	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३
कर्क	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
३	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२
सिंह	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
४	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८
कन्या	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
५	३२	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२
तुला	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२६	३८	५०	१
वृश्चि.	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
७	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	३०	१	१३	२५	३६	४७
धनुः	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
८	३९	४९	५९	१९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९
मकर	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
९	२५	३३	४१	५०	५८	६	१४	२२	३०	३९	४७	५५	४	१२	२०
कुम्भ	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१०	२३	३०	३७	४४	५२	१९	६	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	३
मीन	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
११	५७	४	११	१८	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१६	२३	३०	३७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कालहोरा ज्ञान चक्र और उसका फल

समय	रवि	चं	मं	बु	वृ	शु	श
घ. २॥	सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श
५	शु	श	सू	चं	मं	बु	वृ
७॥	बु	वृ	शु	श	सू	चं	मं
१०	चं	मं	बु	वृ	शु	श	सू
१२॥	श	सू	चं	मं	बु	वृ	शु
१५	वृ	शु	श	सू	चं	मं	बु
१७॥	मं	बु	वृ	शु	श	सू	चं
२०	सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श
२२॥	शु	श	सू	चं	मं	बु	वृ
२५	बु	वृ	शु	श	सू	चं	मं
२७॥	चं	मं	बु	वृ	शु	श	सू
३०	श	सू	चं	मं	बु	वृ	शु
३२॥	वृ	शु	श	सू	चं	मं	बु
३५	मं	बु	वृ	शु	श	सू	चं
३७॥	सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श
४०	शु	श	सू	चं	मं	बु	वृ
४२॥	बु	वृ	शु	श	सू	चं	मं
४५	चं	मं	बु	वृ	शु	श	सू
४७॥	श	सू	चं	मं	बु	वृ	शु
५०	वृ	शु	श	सू	चं	मं	बु
५२॥	मं	बु	वृ	शु	श	सू	चं
५५	सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श
५७॥	शु	श	सू	चं	मं	बु	वृ
६०	बु	वृ	सू	श	सू	चं	मं

जिस दिन और जिस समय की काल होरा देखनी हो तो काल होराज्ञान चक्र में देख लें। जैसे रविवार को पहली कालहोरा सूर्य का ढाई घडी तक होता है, उसके बाद ५ घडी तक शुक्र की कालहोरा होती है। इस प्रकार सब ग्रहों की कालहोरा जान लेनी चाहिए। ऋषियों ने होरा को क्षणवार कहा है। वार से भी क्षणवार में ही प्रधानता मानी गई है। इस लिए वार और क्षणवार दोनों अनुकूल हों तभी किसी कार्य को करना चाहिये। आवश्यक में यदि वार अनुकूल नही हो तो क्षण वार (होरा) की अनुकूलता देखकर कार्य करना चाहिए। जैसे पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इस लिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है।

होरा फल

सूर्य की होरा—टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने देने के लिए अच्छी होती है। **चंद्र की होरा**—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**—युद्ध, यात्रा, कर्ज देना, सभा सोसाईटी में जाना आना और मुकद्दमा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**—विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीनलेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा**—विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्यलेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**—यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा**—भूमि, मकान नीव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

अथ केरल प्रश्न चक्रम्

प्रातः काले वदेत्पुष्पं मध्यान्हे तु फलं वदेत् ॥ सायंकाले वदेन्नद्यः रात्रौतु देवतां वदेत् ॥१॥

ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष	ध्वजादि अष्टक वर्गाः
अ इ उ ए ओ	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह	उच्चारित प्रश्नाक्षराणि
अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	सत्यासत्य प्रश्न निर्णयः
धातु	धातु	मूल	जीव	जीव	जीव	मूल	जीव	धातुमूल जीव ज्ञान
कुशल	रोग	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	प्रवासी सुख दुःख
स्थिर	महाकष्ट	चंचल	चंचल	महाकष्ट	कष्ट	सुख	कष्ट	प्रवासी चर स्थिरादिज्ञानम्
समीप	समीप	दूरस्थ	पुनर्गत	मार्गस्थ	मार्गस्थ	दूरस्थ	पुनर्गत	प्रवासी गमागम ज्ञानम्
स्वल्प	सप्त	एकविंश	एकमास	४५ दिन	दो मास	दो मास	एक वर्ष	प्रवासी रदनावधि ज्ञानम्
पत्र	अस्ति	फल	काष्ठ	धान्य	तृण	जीव	पुष्प	मुष्ठि प्रश्ने द्रव्यं ज्ञानम्
गोधूम	तिल	पीतान्न	दाल	तण्डुल	चणक	गुड़	यव	गोधूमादि धान्य ज्ञानम्
कुसुम्भ	श्वेतांग	लोहित	पांडु	पीत	आकाश	श्याम	मिश्र	मुष्ठि प्रश्ने वर्ण ज्ञानम्
सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	रोगी प्रश्ने सुखादि ज्ञानम्
४५ दिन	दो मास	४५ दिन	१ मास	१५ दिन	६ मास	७ दिन	२ मास	कष्ट दिनादि ज्ञानम्
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	नष्ट लाभालाभ ज्ञानम्
पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	नष्ट वस्तुदिक ज्ञानम्
ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	धनिक	नौकर	नीच	नाई	चौर जाति प्रश्न ज्ञानम्
जल	अग्निगृहे	अरण्य	अन्तरिक्ष	भांडगते	काष्टगते	गृहे	भूमिस्थे	चोरित द्रव्य स्थानम्
भैरव	दुर्गा	सूर्य	हनुमन्त	रुद्रगण	सरस्वती	गणेश	पितर	देव पूजा उपासनादि
आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	शत्रु गमागम प्रश्न ज्ञानम्
जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय गति प्रश्न ज्ञानम्
न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	बन्दी मोक्ष मोक्ष ज्ञानम्
७ दिन	१ वर्ष	१५ दिन	६ मास	१ मास	६ मास	३ मास	१ वर्ष	बन्दी मोक्ष अवधि
स्थिर	न सिद्धि	कलह	दीर्घकाल	त्वरित	दीर्घकाल	स्थिर	न सिद्धि	कार्यसिद्धि भविष्यति नवा
शुभः	कलह	शुभः	कलह	शुभः	कलह	शुभः	कलह	विवाह प्रश्ने शुभाशुभम्
पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र व कन्या प्राप्ति ज्ञानम्
१०० वर्ष	१ वर्ष	१०० वर्ष	२० वर्ष	६० वर्ष	१२ वर्ष	४५ वर्ष	६ वर्ष	आयु प्रश्न आयु ज्ञानम्
लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	धन-लाभ प्रश्न लाभ
विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	वर्षा प्रश्न भविष्यति नवा
५ दिन	७ दिन	३० दिन	२० दिन	१० मास	२ मास	२ मास	२ मास	वर्षा वर्षण दिनादि

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिल्लां, कांगनी, जव, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधी, लोध इन सब औषधियों के जल से सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नाश होती है, तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शांति होती है। गुरु के वचन, देवता ब्राह्मणों की वन्दना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीडा नहीं करते (श्रीपतिः) ॥

सप्त धान्य—उड़द १, मूंगी २, कणक (गेहूं) ३, छोले (चने) ४, जौ ५, धान्य (तण्डुल) ६, कगनी ७॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

चन्द्र स्पष्ट सारणी

क्रमांक १

सर्वर्क्ष	५३ ०	५३ ६	५३ ९	५३ १३	५३ १६	५३ २०	५३ २३	५३ २७	५३ ३०	५३ ३४	५३ ३८	५३ ४१	५३ ४५	५३ ४८	५३ ५२	५३ ५६	५३ ५९	५४ ३	५४ ७	५४ १०
गति	१५ ५	१५ ४	१५ ३	१५ २	१५ १	१५ ०	१४ ५९	१४ ५८	१४ ५७	१४ ५६	१४ ५५	१४ ५४	१४ ५३	१४ ५२	१४ ५१	१४ ५०	१४ ४९	१४ ४८	१४ ४७	१४ ४६
सर्वर्क्ष	५४ १४	५४ १८	५४ २१	५४ २५	५४ २९	५४ ३२	५४ ३७	५४ ४०	५४ ४४	५४ ४८	५४ ५१	५४ ५५	५४ ५९	५५ ३	५५ ६	५५ ११	५५ १४	५५ १७	५५ २१	५५ २५
गति	१४ ४५	१४ ४४	१४ ४३	१४ ४२	१४ ४१	१४ ४०	१४ ३९	१४ ३८	१४ ३७	१४ ३६	१४ ३५	१४ ३४	१४ ३३	१४ ३२	१४ ३१	१४ ३०	१४ २९	१४ २८	१४ २७	१४ २६
सर्वर्क्ष	५५ २९	५५ ३३	५५ ३६	५५ ४०	५५ ४४	५५ ४८	५५ १२	५५ ५६	५६ ०	५६ ४	५६ ८	५६ १२	५६ १६	५६ २०	५६ २४	५६ २८	५६ ३२	५६ ३६	५६ ४०	५६ ४०
गति	१४ २५	१४ २४	१४ २३	१४ २२	१४ २१	१४ २०	१४ १९	१४ १८	१४ १७	१४ १६	१४ १५	१४ १४	१४ १३	१४ १२	१४ ११	१४ १०	१४ ९	१४ ८	१४ ७	१४ ६
सर्वर्क्ष	५६ ४८	५६ ५२	५६ ५६	५७ ०	५७ ४	५७ ८	५७ १२	५७ १६	५७ २०	५७ २४	५७ २८	५७ ३२	५७ ३६	५७ ४१	५७ ४५	५७ ५०	५७ ५४	५७ ५८	५८ २	५८ ६
गति	१४ ५	१४ ४	१४ ३	१४ २	१४ १	१४ ०	१३ ५९	१३ ५८	१३ ५७	१३ ५६	१३ ५५	१३ ५४	१३ ५३	१३ ५२	१३ ५१	१३ ५०	१३ ४९	१३ ४८	१३ ४७	१३ ४६
सर्वर्क्ष	५८ ११	५८ १५	५८ १९	५८ २३	५८ २८	५८ ३२	५८ ३६	५८ ४०	५८ ४५	५८ ४९	५८ ५४	५८ ५८	५९ ०	५९ ७	५९ ११	५९ १६	५९ २०	५९ २४	५९ २९	५९ ३३
गति	१३ ४५	१३ ४४	१३ ४३	१३ ४२	१३ ४१	१३ ४०	१३ ३९	१३ ३८	१३ ३७	१३ ३६	१३ ३५	१३ ३४	१३ ३३	१३ ३२	१३ ३१	१३ ३०	१३ २९	१३ २८	१३ २७	१३ २६
सर्वर्क्ष	५९ ३८	५९ ४२	५९ ४७	५९ ५१	५९ ५५	६० ०	६० ४	६० ९	६० १३	६० १८	६० २२	६० २७	६० ३१	६० ३६	६० ४१	६० ४६	६० ५०	६० ५५	६० ५९	६१ ४
गति	१३ २५	१३ २४	१३ २३	१३ २२	१३ २१	१३ २०	१३ १९	१३ १८	१३ १७	१३ १६	१३ १५	१३ १४	१३ १३	१३ १२	१३ ११	१३ १०	१३ ९	१३ ८	१३ ७	१३ ६
सर्वर्क्ष	६१ ८	६१ १३	६१ १७	६१ २२	६१ २७	६१ ३२	६१ ३७	६१ ४१	६१ ४६	६१ ५१	६१ ५६	६२ १	६२ ६	६२ १०	६२ १५	६२ २०	६२ २५	६२ ३०	६२ ३५	६२ ३९
गति	१३ ५	१३ ४	१३ ३	१३ २	१३ १	१३ ०	१२ ५९	१२ ५८	१२ ५७	१२ ५६	१२ ५५	१२ ५४	१२ ५३	१२ ५२	१२ ५१	१२ ५०	१२ ४९	१२ ४८	१२ ४७	१२ ४६
सर्वर्क्ष	६२ ४४	६२ ४९	६२ ५४	६२ ५९	६३ ४	६३ ९	६३ १४	६३ १९	६३ २४	६३ २९	६३ ३४	६३ ३९	६३ ४४	६३ ४९	६३ ५४	६४ ०	६४ ५	६४ १०	६४ १५	६४ २०
गति	१२ ४५	१२ ४४	१२ ४३	१२ ४२	१२ ४१	१२ ४०	१२ ३९	१२ ३८	१२ ३७	१२ ३६	१२ ३५	१२ ३४	१२ ३३	१२ ३२	१२ ३१	१२ ३०	१२ २९	१२ २८	१२ २७	१२ २६
सर्वर्क्ष	६४ २६	६४ ३१	६४ ३६	६४ ४१	६४ ४६	६४ ५२	६४ ५७	६५ ३	६५ ८	६५ १३	६५ १८	६५ २४	६५ २९	६५ ३४	६५ ४०	६५ ४५	६५ ५२	६५ ५६	६६ १	६६ ७
गति	१२ २५	१२ २४	१२ २३	१२ २२	१२ २१	१२ २०	१२ १९	१२ १८	१२ १७	१२ १६	१२ १५	१२ १४	१२ १३	१२ १२	१२ ११	१२ १०	१२ ९	१२ ८	१२ ७	१२ ६
सर्वर्क्ष	६६ १२	६६ १८	६६ २३	६६ २९	६६ ३४	६६ ४०	६६ ४६	६६ ५२	६६ ५९	६७ ५	६७ ११	६७ १८	६७ २३	६७ ३०	६७ ३७	६७ ४३	६७ ५०	६७ ५७	६८ ३	+ +
गति	१२ ५	१२ ४	१२ ३	१२ २	१२ १	१२ ०	११ ५९	११ ५८	११ ५७	११ ५६	११ ५५	११ ५४	११ ५३	११ ५२	११ ५१	११ ५०	११ ४९	११ ४८	११ ४७	+ +

क्रमांक २

चन्द्र स्पष्ट साधक सारणी

अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे
०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	०
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र स्पष्ट सारणी विधि—(१) भयात भभोगतंव्यता—६०।० में से गत नक्षत्र के घटी-पल घटा देवें तथा वर्तमान नक्षत्र के घटी-पल जोड़ देवें यह भभोग होगा, तथा ६०।० में से घटाये अंकों के घटी-पलों में इष्ट घटिका जोड़े तो भयात होगा। (२) भभोग के घटी-पल अंकों को चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ में देखें, उसमें भभोग घटी-पल अंक तुल्य या समक्ष अङ्क के नीचे जो गति दी है, उससे भयात घटी-पलों में गुणा करें, ६० के भाग से अंशात्मक ३ अंक लेवें, इनको गत नक्षत्र सारणी (चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम २) के अंकों में जोड़ देवें तो स्पष्ट चन्द्रमा होगा। (३) गति स्पष्ट विधि—चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ से प्राप्त जो गति है उसकी केवल कला को ६० से गुणा कर गुणनफल में गति के विकलांक जोड़ देवें यह चन्द्र स्पष्ट गति मध्यम मानेन स्पष्ट रहेगी।

उदाहरण यथा—भयात् १९।२ भभोग ६५।५२ समीपस्थ कोष्ठकांक ६५।५० के नीचे गति १२।९ को और भयात को गुणा किया और गुणनफल ६० से भाग देकर ३।५१।२७ मिले, इनको गत नक्षत्र विशाखा के कोष्ठकांक में जोड़ा ७।३।२०।० में युक्त किया तो ७।७।११।२७ स्पष्ट चन्द्र आया। गति १२-९ केवल कला १२ को ६० से गुणित कर ७२० हुआ विकला ९ युक्त किया तो ७२९ हेतु गति आगयी। गणितागत एवं सारणी सिद्ध में विशेष अंश कलादि अन्तरांश नहीं होने से जन्म-पत्रादि हेतु यह सामग्री बहुत उपयुक्त तथा शीघ्र ही कार्य करने में सक्षम है, अब चंद्र स्पष्टता हेतु श्रम विशेष की आवश्यकता नहीं। भवदीय—**वैद्य आनन्दस्वरूप शास्त्री, चौधरी पंचांगकर्त्ता, मु. पो. नीमच (म. प्र.)।**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

खट वर्ग सारणी चक्र

राशि	भांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
	अंशादि	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	रा.चक्र	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
०	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
मे.	द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
१	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	स.	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
वृ.	द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
२	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
मि.	द्वा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
३	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
क.	द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
४	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
सिं.	द्वा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
५	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
कं.	द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

राशि	भांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
६	द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	स.	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
तु.	द्वा.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
७	द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	स.	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
वृ.	द्वा.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
८	द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	स.	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
ध.	द्वा.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
९	द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	स.	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
म.	द्वा.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
१०	द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	स.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
कुं.	द्वा.	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
११	द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	स.	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
मी.	द्वा.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

चालन कोष्ठक

मिनट ↓	०घं.	१घं.	२घं.	३घं.	४घं.	५घं.	६घं.	७घं.	८घं.	९घं.	१०घं.	११घं.	१२घं.	१३घं.	१४घं.	१५घं.	१६घं.	१७घं.	१८घं.	१९घं.	२०घं.	२१घं.	२२घं.	२३घं.
०	०	४२	८३	१२५	१६७	२०८	२५०	२९२	३३३	३७५	४१७	४५८	५००	५४२	५८३	६२५	६६७	७०८	७५०	७९२	८३३	८७५	९१७	९५८
१	१	४३	८४	१२६	१६८	२०९	२५१	२९३	३३४	३७६	४१८	४५९	५०१	५४३	५८४	६२६	६६८	७०९	७५१	७९३	८३४	८७६	९१८	९५९
३	२	४४	८५	१२७	१६९	२१०	२५२	२९४	३३५	३७७	४१९	४६०	५०२	५४४	५८५	६२७	६६९	७१०	७५२	७९४	८३५	८७७	९१९	९६०
४	३	४५	८६	१२८	१७०	२११	२५३	२९५	३३६	३७८	४२०	४६१	५०३	५४५	५८६	६२८	६७०	७११	७५३	७९५	८३६	८७८	९२०	९६१
६	४	४६	८७	१२९	१७१	२१२	२५४	२९६	३३७	३७९	४२१	४६२	५०४	५४६	५८७	६२९	६७१	७१२	७५४	७९६	८३७	८७९	९२१	९६२
७	५	४७	८८	१३०	१७२	२१३	२५५	२९७	३३८	३८०	४२२	४६३	५०५	५४७	५८८	६३०	६७२	७१३	७५५	७९७	८३८	८८०	९२२	९६३
९	६	४८	८९	१३१	१७३	२१४	२५६	२९८	३३९	३८१	४२३	४६४	५०६	५४८	५८९	६३१	६७३	७१४	७५६	७९८	८३९	८८१	९२३	९६४
१०	७	४९	९०	१३२	१७४	२१५	२५७	२९९	३४०	३८२	४२४	४६५	५०७	५४९	५९०	६३२	६७४	७१५	७५७	७९९	८४०	८८२	९२४	९६५
१२	८	५०	९१	१३३	१७५	२१६	२५८	३००	३४१	३८३	४२५	४६६	५०८	५५०	५९१	६३३	६७५	७१६	७५८	८००	८४१	८८३	९२५	९६६
१३	९	५१	९२	१३४	१७६	२१७	२५९	३०१	३४२	३८४	४२६	४६७	५०९	५५१	५९२	६३४	६७६	७१७	७५९	८०१	८४२	८८४	९२६	९६७
१४	१०	५२	९३	१३५	१७७	२१८	२६०	३०२	३४३	३८५	४२७	४६८	५१०	५५२	५९३	६३५	६७७	७१८	७६०	८०२	८४३	८८५	९२७	९६८
१६	११	५३	९४	१३६	१७८	२१९	२६१	३०३	३४४	३८६	४२८	४६९	५११	५५३	५९४	६३६	६७८	७१९	७६१	८०३	८४४	८८६	९२८	९६९
१७	१२	५४	९५	१३७	१७९	२२०	२६२	३०४	३४५	३८७	४२९	४७०	५१२	५५४	५९५	६३७	६७९	७२०	७६२	८०४	८४५	८८७	९२९	९७०
१९	१३	५५	९६	१३८	१८०	२२१	२६३	३०५	३४६	३८८	४३०	४७१	५१३	५५५	५९६	६३८	६८०	७२१	७६३	८०५	८४६	८८८	९३०	९७१
२०	१४	५६	९७	१३९	१८१	२२२	२६४	३०६	३४७	३८९	४३१	४७२	५१४	५५६	५९७	६३९	६८१	७२२	७६४	८०६	८४७	८८९	९३१	९७२
२२	१५	५७	९८	१४०	१८२	२२३	२६५	३०७	३४८	३९०	४३२	४७३	५१५	५५७	५९८	६४०	६८२	७२३	७६५	८०७	८४८	८९०	९३२	९७३
२३	१६	५८	९९	१४१	१८३	२२४	२६६	३०८	३४९	३९१	४३३	४७४	५१६	५५८	५९९	६४१	६८३	७२४	७६६	८०८	८४९	८९१	९३३	९७४
२४	१७	५९	१००	१४२	१८४	२२५	२६७	३०९	३५०	३९२	४३४	४७५	५१७	५५९	६००	६४२	६८४	७२५	७६७	८०९	८५०	८९२	९३४	९७५
२६	१८	६०	१०१	१४३	१८५	२२६	२६८	३१०	३५१	३९३	४३५	४७६	५१८	५६०	६०१	६४३	६८५	७२६	७६८	८१०	८५१	८९३	९३५	९७६
२७	१९	६१	१०२	१४४	१८६	२२७	२६९	३११	३५२	३९४	४३६	४७७	५१९	५६१	६०२	६४४	६८६	७२७	७६९	८११	८५२	८९४	९३६	९७७
२९	२०	६२	१०३	१४५	१८७	२२८	२७०	३१२	३५३	३९५	४३७	४७८	५२०	५६२	६०३	६४५	६८७	७२८	७७०	८१२	८५३	८९५	९३७	९७८
३०	२१	६३	१०४	१४६	१८८	२२९	२७१	३१३	३५४	३९६	४३८	४७९	५२१	५६३	६०४	६४६	६८८	७२९	७७१	८१३	८५४	८९६	९३८	९७९
३२	२२	६४	१०५	१४७	१८९	२३०	२७२	३१४	३५५	३९७	४३९	४८०	५२२	५६४	६०५	६४७	६८९	७३०	७७२	८१४	८५५	८९७	९३९	९८०
३३	२३	६५	१०६	१४८	१९०	२३१	२७३	३१५	३५६	३९८	४४०	४८१	५२३	५६५	६०६	६४८	६९०	७३१	७७३	८१५	८५६	८९८	९४०	९८१
३५	२४	६६	१०७	१४९	१९१	२३२	२७४	३१६	३५७	३९९	४४१	४८२	५२४	५६६	६०७	६४९	६९१	७३२	७७४	८१६	८५७	८९९	९४१	९८२
३६	२५	६७	१०८	१५०	१९२	२३३	२७५	३१७	३५८	४००	४४२	४८३	५२५	५६७	६०८	६५०	६९२	७३३	७७५	८१७	८५८	९००	९४२	९८३
३७	२६	६८	१०९	१५१	१९३	२३४	२७६	३१८	३५९	४०१	४४३	४८४	५२६	५६८	६०९	६५१	६९३	७३४	७७६	८१८	८५९	९०१	९४३	९८४
३९	२७	६९	११०	१५२	१९४	२३५	२७७	३१९	३६०	४०२	४४४	४८५	५२७	५६९	६१०	६५२	६९४	७३५	७७७	८१९	८६०	९०२	९४४	९८५
४०	२८	७०	१११	१५३	१९५	२३६	२७८	३२०	३६१	४०३	४४५	४८६	५२८	५७०	६११	६५३	६९५	७३६	७७८	८२०	८६१	९०३	९४५	९८६
४२	२९	७१	११२	१५४	१९६	२३७	२७९	३२१	३६२	४०४	४४६	४८७	५२९	५७१	६१२	६५४	६९६	७३७	७७९	८२१	८६२	९०४	९४६	९८७
४३	३०	७२	११३	१५५	१९७	२३८	२८०	३२२	३६३	४०५	४४७	४८८	५३०	५७२	६१३	६५५	६९७	७३८	७८०	८२२	८६३	९०५	९४७	९८८
४५	३१	७३	११४	१५६	१९८	२३९	२८१	३२३	३६४	४०६	४४८	४८९	५३१	५७३	६१४	६५६	६९८	७३९	७८१	८२३	८६४	९०६	९४८	९८९
४६	३२	७४	११५	१५७	१९९	२४०	२८२	३२४	३६५	४०७	४४९	४९०	५३२	५७४	६१५	६५७	६९९	७४०	७८२	८२४	८६५	९०७	९४९	९९०
४८	३३	७५	११६	१५८	२००	२४१	२८३	३२५	३६६	४०८	४५०	४९१	५३३	५७५	६१६	६५८	७००	७४१	७८३	८२५	८६६	९०८	९५०	९९१
४९	३४	७६	११७	१५९	२०१	२४२	२८४	३२६	३६७	४०९	४५१	४९२	५३४	५७६	६१७	६५९	७०१	७४२	७८४	८२६	८६७	९०९	९५१	९९२
५०	३५	७७	११८	१६०	२०२	२४३	२८५	३२७	३६८	४१०	४५२	४९३	५३५	५७७	६१८	६६०	७०२	७४३	७८५	८२७	८६८	९१०	९५२	९९३
५२	३६	७८	११९	१६१	२०३	२४४	२८६	३२८	३६९	४११	४५३	४९४	५३६	५७८	६१९	६६१	७०३	७४४	७८६	८२८	८६९	९११	९५३	९९४
५३	३७	७९	१२०	१६२	२०४	२४५	२८७	६२९	३७०	४१२	४५४	४९५	५३७	५७९	६२०	६६२	७०४	७४५	७८७	८२९	८७०	९१२	९५४	९९५
५५	३८	८०	१२१	१६३	२०५	२४६	२८८	३३०	३७१	४१३	४५५	४९६	५३८	५८०	६२१	६६३	७०५	७४६	७८८	८३०	८७१	९१३	९५५	९९६
५६	३९	८१	१२२	१६४	२०६	२४७	२८९	३३१	३७२	४१४	४५६	४९७	५३९	५८१	६२२	६६४	७०६	७४७	७८९	८३१	८७२	९१४	९५६	९९७
५८	४०	८२	१२३	१६५	२०७	२४८	२९०	३३२	३७३	४१५	४५७	४९८	५४०	५८२	६२३	६६५	७०७	७४८	७९०	८३२	८७३	९१५	९५७	९९८
५९	४१	८३	१२४	१६६	२०८	२४९	२९१	३३३	३७४	४१६	४५८	४९९	५४१	५८३	६२४	६६६	७०८	७४९	७९१	८३३	८७४	९१६	९५८	९९९

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वर-वधू गुण मेलापक सारणी भाग-१

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम् ॥ संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत् ॥ १ ॥

		वर.	रा.	मे.	मे.	मे.	वृ.	वृ.	वृ.	मि.	मि.	मि.	क.	क.	क.	सिं.	सिं.	सिं.	क.	क.	क.	तु.	तु.	तु.	वृ.	वृ.	वृ.	ध.	ध.	ध.	म.	म.	म.	कुं.	कुं.	कुं.	मी.	मी.	मी.	रा.
			भा.	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१	भा.
वधू.	रा.	भा.	न.	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ	पु.	पु	पु.	आ	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.
१	मे.	१	अ.	२८ ३	३३ ०	२०॥	१८॥ ४	२३॥ ४-	२२॥ ४-	२१॥	१६॥ ३	१०॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० ५+	२४ ५+	१३॥ ३१	१४॥ ३६	३०॥ २३६	१२॥ ६	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ ६-	१३ ३६	१२॥ ३१	२४॥ +५	२३ +५	२५	२६	२०	१२॥	१७॥ ३	१७॥ ३	१३॥ ३४	२३॥ ४+	२६ ४+	अ.
२	मे.	१	भ.	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०११	२६॥ ४-	१४॥ ३४	१७॥ ३	२१॥	२१॥	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १	१२ -११	१७ ३१	२४ ५+	१२ ६	१८॥ ६	३॥ १३६	११ १३	२८	२१ १-	१८॥ -१६	१७॥ ३६	११॥ -१६	११॥ -११	१७॥ ३१	२५॥ ५+	२७॥	२६	१० १३२	९॥ १३२	११॥ -१	२३ -२	२२॥ २२+	१६॥ ३४	२५॥ ४+	भ.
३	मे.	।	कृ.	२६॥	२८ १	२८ ३	१८ ३४	१० १३००	१६॥ ४	११॥	११॥ १	११॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३	११॥ ३१	१२ ११	२० ११	११ १६	१४ ६	१०॥ ६	२०	१४ ३	११ ३	१६॥ ३६	११॥ ६-	२५॥ -६	२५ ५+	११॥ १२५	११॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२१	२६॥	२५॥	१८॥ १	१७॥ १४	११॥ १४	१०॥ ३४	कृ.
४	वृ.	॥।	कृ.	१२ ४	१२ १४	१२ ३४	२८ ३	१८॥ १३	२६॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२३	१२ ३	१२ ३	१ १	२२ १	२० ११	१८ ५+	२३ ५+	२२ ६-	९ ३६	१४ ३६	२१॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ६	११ १२६	७ १३६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ ५+	२९	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३	कृ.
५	वृ.	१	रो.	२३॥ -४	२३॥ ४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	२	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -११	१०॥ -१६	११ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१३॥ १	११॥ ६	११ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१२ -११	२४॥ -१	२४ -१	२९	२६	२७	१२ ३	रो.
६	वृ.	॥	मृ.	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ +	२६	१२ ३	२१	११॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३१	१०॥ ३६	२४॥ -६	१० ६-	२३॥	२१॥ ३	२४॥	१४॥ ६	१०॥ ३६	१६॥ २६	२१॥ २५+	२६ ५+	१२ ३१	१७॥ ३	२६॥	२८	२१	१८ ३	२७	मृ.
७	मि.	॥	मृ.	२६॥	१०॥ ३	२१॥	१२ +४	२६॥ ४+	११॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ -४	११॥ ४	१३॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२७॥	३५॥	३४	२० •३	१३ ३१	२७ +५	११॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१२ ३	२१ २+	११॥ -२६	२४ -६	१० ३६	१२ ५	२१ ५+	२२॥ ५+	२७	१७ ३	२६	मृ.
८	मि.	१	आ.	१८॥ ३	२६॥	२१॥ १	११ १+	२४ ४+	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२१ ३०	१२ ०३४	२०॥ ४-	१२॥ १४	२१॥ ४	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -११	२७ ५+	२० +३५	१३॥ ३६	११ ३६	५ १३६२	१४ १३	२८	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१७ -१६	११ ११+	१२ १३५	१७ ३४	१८॥ ३	२५	२६	आ.
९	मि.	॥।	पु.	१८॥ ३	२५॥	२१॥	११ ४+	२२ ४+	२३ ४+	३१॥	२४ ३	२८ ३	१४ -३२	२१ ५०	१५॥ -४	२१ +२	२५॥ २+	१२॥ ३	२३॥ ३	२३॥ ३	२६॥	११॥ ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ ६	६ ३६	१४ ३	२७	२७	२१॥ -६	२२॥ ६	१६॥ -६	१८॥ ५+	१३ ३१	१६ ३१	१७॥ ३	२४॥	२६	पु.
१०	क.	।	पु.	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२१	१७॥ ४	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥	१६॥ +२४	२०॥ २४	१४॥ ३४	१६॥ ३	१७॥ ३	११॥	१२	२६॥	२०॥	११ ५+	२१ ५+	१०॥ ३१	७॥ ३६	२०॥ -६	२०॥ -६	२६	२७	२१	१२ ६	५॥ ३६	९॥ ३६	१६ ३१	२१ ५+	२३॥ ५+	पु.
११	क.	१	पु.	२९॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२१	१८ ३	१०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२९ ०	१८॥ ४+	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	११॥ ३	११ ३	२१	२०॥	१२ -५	१७ ३१	२० -५	१०॥	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२७ -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१०॥ ६	२६ ५+	१८ ३१	२६ ५+	पु.
१२	क.	१	आ.	२१	२३ १	२१॥ ३	१८ ३	११ ३१	११	११॥ ४	११॥ १४	१३ ४	२७॥	२८	२८ ३	१४ ०३६२	११॥ ११२	१०॥ १४	११॥ १	११॥	२४॥	२४	११ ३	१६ ३	१४॥ ३१	११ -५	२१ -५	२२॥ ६	११॥ १६	७॥ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१०॥ ११	२० ११	१२ ३१	आ.
१३	सिं.	१	म.	१२ +५	१२ ११	१५॥ ३१	१६॥ ३	९॥ ३१	१०॥	२०॥	२०॥ १	११॥ -२	१६॥ +२४	१८॥ ४+	१६ ३६२	२८ ३	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १२	१४॥ ४+	११॥ ४	२३॥	१०॥ ३	११॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२	२४ +५	१२ ११	८॥ १३५	३॥ ३१६	३॥ ३६	१०॥ ६	२३॥	२४॥	१०॥ १	१०॥ -१६	१८॥ १६	१२ ३६	म.
१४	सिं.	१	पू.	२५ ५+	१७ ३१	११ -११	२० १	२३॥	११॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२५॥ -२	२२॥ + ४	१६॥ ३४	१६॥ १२४	३० -१	२८ ३	३॥ ०	२३ ०४	२०॥ ४+	९॥ १३२	९॥ १३	२४॥	१०॥ १	२३॥ -१	२२॥ ३	२४॥ -१	२० १५+	१० ३१	२४ ५+	१२ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	९॥ १३	१८॥ १	२३॥	२३॥ -६	१६॥ ३६	२४॥ ६-	पू.
१५	सिं.	।	उ.	११॥ ३१	२५ ५+	२० -११	२१ १	२६	२४॥	२७॥	११॥ ३	१०॥ ३	१४॥ ३४	२५॥ ४+	१८॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६ ३४	११ ०३२	१२॥ ११२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३०॥	१६॥ १३	९॥ १३५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	११॥ १६	१०॥ १	१०॥ १३	११॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२४॥ ६-	उ.
१६	क.	॥।	उ.	११ २३६	२१ ६	१६ १६	२०॥ +११	२५॥ ५+	२४ ५+	३१॥	२१॥ ३	२३॥ ३	१०॥ ३	२७॥	२०॥ १	११॥ १२	२३ ४+	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ १२+	१६॥ -१२॥	२५॥ ४+	१६॥ -१२४	१८ १२	२६	१२ १३	१४ १३	२१॥	२२॥	२४ ५+	२३ ५+	१५॥ +१५	१६॥ -१६	९॥ ३१६	११॥ ३६	१७ ३	२८	२६	उ.
१७	क.	१	ह.	११ ३६	१८॥ ६	१६ ६	२०॥ ५+	२३॥ ५+	२४॥ ५+	३२	१८॥ ३	२३॥ ३	१८॥ ३	२८॥	२१॥	१६ +४	२०॥ ४+	११ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ •	२७ ०४	२६॥ ४+	१८॥ ४+	२०	२६	१३॥ ३	११ ३	२७	२८॥	२३ ५+	२४ ५+	१८ ५+	१२ -६	१०॥ ३६२	१३॥ ३६	१६ ३	२६	२९	ह.
१८	क.	॥	चि.	१२॥ ६	६॥ १३६	१८॥ ६	२३ ५+	१८॥ ११	१०॥ ३१	१८ ३	२६ १	२४॥	११॥	११॥ ३	२१॥	२०॥ +४	६॥ १३४	१३॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	१२ ३४	११ ०४	२५॥ ४+	२७	११ ३	२१	२७	१३ १३	२१ १	१५॥ ११	१७ ५+	११ ३१	१२ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१२ १	१० १३२	१२	चि.
	रा.	भा.	न.	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ	पु.	पु.	पु.	आ	म.	पू.	उ	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.

इनमें मेलापक (वर्ण वश्य आदि)की गुणसारिणी हैं. ऊपरकी पंक्तिमें वरके नक्षत्र, तिरछी पंक्तिमें कन्याके नक्षत्र लिखे हैं, ऊपरी भागमें गुण नीचेके महादोषोंके चिन्ह दिये हैं. चिन्होंका काम यह है एक नाडीके दोषकी जगह (३) गणमहादोष (मनुष्यराक्षस)के स्थानमें १ भकूट महादोष (षडाष्टक)में (६) (नवपंचम)में (५) (द्विर्द्वादश)में (४) वैरयोनिमें (२) लिखे हैं. और जहां थोडा दोष समझा गया वहां (−) चिन्ह हैं. जहां (स्वामी मैत्री आदिके) दोषका पूरा निर्वाह है वहां (+) ऐसा चिन्ह बतादिया है, और जिस जगह भर्ताके नक्षत्रसे पूर्व वधूका नक्षत्र है (दसवानी महादोष) है वहां ० शून्यका चिन्ह हैं, और जहां कोईभी महादोष नहीं मिलता वहां केवलगुण ही लिखे हैं.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर-वधु गुण मेलापक सारणी भाग-२

			रा.	मे.	मे.	मे.	वृ.	वृ.	वृ.	मि.	मि.	मि.	क.	क.	क.	सिं.	सिं.	सिं.	क.	क.	क.	तु.	तु.	तु.	वृ.	वृ.	वृ.	ध.	ध.	ध.	म.	म.	म.	कुं.	कुं.	कुं.	मी.	मी.	मी.	रा.
			भा.	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१	भा.
	रा.	भा.	न.	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पु.	पु.	पु.	आ.	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अ.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.
१९	तु.	॥	चि.	२२	१४/१३	२८	२३/६+	१८॥/१६	१०॥/३६	१२/३१	२०/११	१८॥/५+	११	११/३	२१	२४॥	१०॥/१३	१०॥/१२	१०॥/१२४	२०/४+	२०/३४	२८/३	२७/०	३३॥	२२॥/४	६॥/३४	२०॥/४	२७	१३/१३	२१/१	२३॥/०१	-२१	२३/३	१८/३१	२६/५+	१८॥/११	१२/१६	३/१३६२	१२/६	चि.
२०	तु.	१	स्वा.	२१/२+	२८	१६/३	११/३६	१४/३६	२७/-६	२६/५+	२६/५+	२७/५+	२७॥	२१-	११/३	१२॥/३	२४	२१॥	२१॥/+४	२०॥/४+	२१/४+	२८	२८/३	२७/६०	९/३२०	२१॥/४	१६॥/४	२३	२७	१९/३	२१॥/३	२२॥/३	२६	२१/५+	२२/५२+	२५/५+	१८७/६	१९/६	११/३६	स्वा.
२१	तु.	॥।	वि.	२३	२२/१	२०/३	११/३६	९/१३६	१७/-६	१८॥/५+	२०/११	२०/५+	२०३	२०॥	१७/३	१६॥/३	१८॥/१	१०॥/१२	१०॥/१६२	१८॥/४+	२४/४+	३३॥	१९/३	२८/३	१६/३४	१६/०४	२३॥/४	२०	२१/१	१३/१३	११॥/१३	१४॥/३	२२॥	२४/५+	२६/५+	२०/११	१३॥/१६	३२॥/१६२	४/३६	वि.
२२	वृ.	।	वि.	१६॥/६+	१६॥/१६	१४॥/३६	१५॥/३	१३॥/१३	२१॥	११/६	१२॥/३६	१२॥/६	१८/-१	१८/५-	१४॥/५-	२४॥/३	२२॥/१	२१॥/१२	१७/१२	१८	२६	२३	७/३४	१५/३४	२८/३	२७/०	३१॥	२१॥/४+	१५॥/४१	७॥/१३४	११/१३	११/३	२१	२४	२५॥	१९॥/१	११/१४	१८/११	२४॥/३२४	वि.
२३	वृ.	१	अ.	२३॥/-६	१४॥/३६	१८॥/-६	२३॥	२७॥	२०॥/३	१०/३६	१५/२६	१२॥/६	२१/-१	१७/३१	२०/-१	२३॥	२०॥	२८॥	२४	२१	११/३	६॥/३४	२०॥/४	१६/४	२८	२८/३	३१/०	१४॥/२४+	१३॥/३४	२१॥/४+	२१	२६	१२/३	११/३	२०	२४॥	२४/५+	१७/३१	२६/५+	अ.
२४	वृ.	१	ज्ये.	१०/३६	१०॥/१६	२३॥/-६	२८॥	२२॥/१	२५॥	१२/६	२/३१६२	४/६३	१६/५३	११/५+	२१/५-	३१	२३॥/१	१४॥/१३	११/१३	११/३	२४	१९॥/४	१४॥/४	९/४	३१॥	३०	२८/३	१४/-२३४	१६॥/१४	१६॥/१४	२०/१	२०	२१	२४	१७/३	१०/१३	१४/१३५	२०/११	२०/५+	ज्ये.
२५	ध.	१	मू.	११६/३१	१२/११	२१/५+	१६॥/६	१२॥/१६	१२॥/६	२१	१४/१३	१२/३	७॥/३६	१०॥/६	२३/६	२४/५+	१८/११	११॥/११३	१३/३१	१३/३	२६	२६	२१	२६	२२॥/४+	१६॥/+२४	१६/३४२	२८/३	२८/०१	१५॥/१	१३॥/१४	१४॥/४	१२॥/४	२८॥	२१॥/३	१४॥/१३	१६॥/१३	२८॥/१	२६	मू.
२६	ध.	१	पू.	२१॥/५+	१०॥/३१	११॥/-११	१२/४२	१८॥/६	१०॥/३६	११/३	२६	२७	२२॥/६	१४॥/२३६	१६॥/१६	११/-११	१७/३१	२१/५+	२८॥	२७	११/१३	१२/१३	२७	२०/१	१६॥/-१४	१५॥/३४	१०॥/-१४	२७/१+	२८/३	३४/०	२२/०४	२२॥/४	५॥/१३४	१४॥/१३	२३॥/१	२८॥	२९॥	२२॥/३	३०॥	पू.
२७	ध.	।	उ.	२४/५+	२१॥/५+	१३॥/१३५	६/१३६	१०/२३६	१६॥/२६	२१/२+	२६	२७	२२॥/६	२२॥/६	८॥/१६३	८॥/१६३	२३/५+	२१/५+	२८॥	२८॥	२०/१	२०/१	११/३	१२/१३	८॥/१३४	२३॥/४+	१०॥/-१४	२१/-१	३४	२८/३	१६/३४	११/३४०	१३॥/१४	२२॥/१	२३॥/१	२८॥	२९॥	३०॥	२२॥/३	उ.
२८	म.	॥।	उ.	२७	२८॥	१४॥/१३	१२/१३५	१६/२३५	२२॥/२५+	१४॥/२६+	२४॥/-६	२१॥/-६	२८	२८	१४/१३	४॥/१३६	२०/६	२१/६	२३/५+	२४/१३	१५॥/११	२२॥/-१	२१॥/३	१४॥/१३	१२/३१	२७	२१/१	१४॥/१४	२४/४	१७/३४	२८/३	२०/३०	२५॥/१+	१५॥/१४+	९॥/१४+	२१॥/४+	२९॥	३०॥	२२॥/३	उ.
२९	म.	१	श्र.	२८	२७	१४॥/३२	१२/३४२	१७/३१	२६/५+	२३/-६	११॥/-६	२१॥/-६	२८	२८/२+	१४/३	५॥/३६	१८॥/६	२०/६	२३/५+	२४/५+	१७/१	२४	२१॥/३	१४॥/३	१२/३	२७	२१	१४/४	२२॥/४	११/३४	२६/३	२८/३	२७/०	१७/०४	१०॥/४+	२०॥/४+	२८॥	२२॥	२३॥/३	श्र.
३०	म.	॥	ध.	२७	११/१३२	२६	२३॥/५+	१९/११	११/३१	८/३६	१६/१६	१४॥/-६	२१	१३/३	२७	१८॥/६	४॥/१३६	१०॥/१६	१४॥/११	१७/१+	११/३१	२१/३	२४	२८॥	२६	१२/३	२६	२०॥/४	६॥/३४१	१४॥/४१	२५॥/१	२७	२८/३	१७/३४	२३/४०	१०॥/१४	२४॥/१	११/१३	२२॥/२+	ध.
३१	कुं.	॥	ध.	११४	१०॥/१३२	२१॥	३०	२१॥/१	१०॥/३	११/३१	१८/११	१७/५+	१२/६	४/३६	१८/६	२४॥	१०॥/१३	१८॥/१	१३॥/१६	११/६+	१७/३६	१८/३१	२०/-१	२४॥/-१	२१	११/३	२१	२२॥	१५॥/१३	२३॥/१	१६॥/१४	१८/४+	१८/३४	२८/३	३३/०	२०॥/१	१६॥/१४	६॥/१३४	१३॥/४२	ध.
३२	कुं.	१	श.	१४॥/३	२०॥/१	२६॥	३३	२१/१	२६॥	२७/५+	१२/१३५	१२/३१	६॥/३६	१३/६	११/६	२१॥	१२॥/१	११॥/१३	१०॥/१३६	१०॥/२३६	२१/६	२६/५+	२१/५+	२६/५+	२६॥	२०	१८/३	२२॥/३	२४॥/१	२४॥/१	१७/१४	१०॥/४+	२४/४+	३३	२८/३	२१/१३/०	८/१३४/०	१४॥/१४	१४॥/४	श.
३३	कुं.	॥।	पू.	१०॥/३	२४॥/२+	११॥/-१	२४/-१	३०	३०	२३॥/५+	१७/३१	१७/३१	११॥/३६	१४॥/६	१२/१६	१८॥/१	२४॥	१६॥/३	१४॥/३६	१४॥/३६+	१२॥/१६	१८॥/-११	२६/५+	२७/-११	२०॥/१	२६॥	११/१३	११/१३	२१॥	२२॥	२२॥/+४	२२॥/४+	१८॥/-१४	२७/-१	१९/१३	२८/३	१६/३४	२२/०४	१९॥/४२	पू.
३४	मी.	।	पू.	१०॥/३४	२१॥/४२+	१६॥/-१४	१२/१	२१	२१	२४	१०॥/३	१०॥/३	१७/३१	२१/१	१०॥/११	१६॥/-१६	२२॥/६+	१४॥/३६	१६/३	१६/३	१८/५+	११/१६	१८॥/६	१२॥/१६	११/-११	२५/५+	९॥/१३५	१४/१३	१८॥	२८॥	२८॥	२२॥	२४॥/१	१५॥/१४	७/१३४	११/३४	२८/३	३३/०	३०॥/२+	पू.
३५	मी.	१	उ.	२३॥/४+	१५॥/३४	१८॥/-१४	२१/१	२६	१८/३	१७/३	२१	२६॥	२६/१	११/३१	२०/११	१०॥/-१६	११/३६	२१॥/६+	२७	२६	९/१३४	२/१३६२	१२/६	१३॥/१६२	१८/११२	१८/३१	२०/-११	२३॥/-१	२१॥/३	२१॥	२१॥	२१॥	१४॥/१३	५॥/१३४	१२॥/१४	२१/४	३३	२८/३	३३/०	उ.
३६	मी.	१	रे.	२१/४+	२३॥/४+	१०॥/३४	१३/३	१७/३	२६	२१	२४	२१	२४॥/१	२६/१	१३/३१	१२/३६	२२॥/६+	२२८/६१	२४	२५	१४	१२/६	१७/३६	४/३६	१०॥/३१	२६/५+	२१/५+	२६	२८॥	२०॥/३	२३॥/३	२१॥/३	२२॥/-२	१३॥/४२	१४॥/४	१०॥/४२	२४॥/२+	३३	२६/१	रे.
			न.	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पु.	पु.	पु.	आ.	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अ.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कुण्डली मिलान

विवाह से पहले लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली मिलाना आवश्यक होता है। आम जनता इस कार्य के लिए मन्दिर के पुजारियों के पास जाती है। यह आवश्यक नहीं कि पूजा कार्य करने वाला या कर्म काण्ड करने वाला ज्योतिष भी जानता हो। खेद तो इस बात का है कि ज्योतिष न जानते हुए भी ये पुजारी लोग कुण्डली बनाना या कुण्डली मिलाने का काम भी ले लेते हैं और अर्थ का अनर्थ करने में नहीं हिचकिचाते। आम जनता से मेरा निवेदन है कि वे ज्योतिष का कार्य किसी जानकार विद्वान् ज्योतिषी से ही करायें और इन पुजारीनुमा ज्योतिषियों से अनुरोध है कि वे लोग हमारे पूर्वजों की इस विद्या को बदनाम न करें। किसी अच्छे पंचांग से कुण्डली मिलाने का ज्ञान प्राप्त करें, यह बहुत जिम्मेवारी का काम है। गलत मिलान से गृहस्थ सुख में अनेक बाधा, विघ्न आने की आशंका रहती है। आज जो पति-पत्नी में सम्बन्ध-विच्छेद, गृह कलह के समाचार अधिक मिल रहे हैं, उनका कारण कुण्डली न मिलाना या गलत मेलापक ही है।

वर-वधू गुण मेलापक सारणी प्रत्येक पंचांग में दी होती है और हम भी दे रहे हैं। परन्तु इस विषय पर विस्तार से निर्देश नहीं दिया जाता। मेलापक के पूरे नियम कुछ अच्छे पंचांगों को छोड़कर छोटे स्तर के पंचांगों में नहीं दिये जाते। लड़का-लड़की की जन्म कुण्डली हैं तो उनमें देखकर नक्षत्र का चरण ज्ञात करो। जन्म कुण्डली नहीं हैं और जन्म ता. व समय है तो जन्म कुण्डली बना लो। इसके लिए पुराने पंचांगों की आवश्यकता होती है। १९०० से २००० तक सौ वर्ष का पंचांग "शतक मार्तण्ड" इसीलिए निकाला गया है कि ज्योतिषियों को गत वर्षों की कुण्डली बनाना सुलभ हो सके। चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से नक्षत्र व उसका चरण ज्ञात हो जाता है। यह सारणी भी पंचांग में दी हुई है। जन्म की ता. व समय नहीं है तो नाम के प्रथम अक्षर से नक्षत्र चरण अवकहड़ा चक्र से देखकर मालुम किया जा सकता है। मान लीजिये वर यानी लड़के की राशि मिथुन, नक्षत्र पुनर्वसु, चरण तीसरा, जन्म नाम प्रथम अक्षर 'ह' है और कन्या की राशि धनु, नक्षत्र पू.षा., चरण दूसरा, जन्म नाम प्रथम अक्षर 'ध' है। मेलापक सारणी में वर के लिए आड़ी रेखा में और कन्या के लिए खड़ी रेखा में नक्षत्र, चरण व राशियां दी गई हैं। वर के खाने में मिथुन के अन्तर्गत पुनर्वसु ।3। नक्षत्र के ३ चरण वाली कोष्ठक में तथा कन्या के धनु राशि अन्तर्गत पू.षा. नक्षत्र के सामने १९ अंक दिए हैं। नीचे ३ की संख्या भी लिखी है। इसका अर्थ है कि वर-कन्या के मेलापक में १९ गुण मिलते हैं परन्तु एक दोष है। सारणी में ३ संख्या वाला दोष नाड़ी दोष है। शास्त्रकारों ने कम से कम १८ गुण मिलने पर विवाह की अनुमति दी है। इस प्रकार गुण तो इसमें १८ से अधिक मिलते हैं परन्तु नाड़ी दोष होने से सन्दिग्ध हो गया। मेलापक सारणी में प्रत्येक खाने में जो अंक लिखे हैं वह गुणों की संख्या है। यदि दो संख्या हैं तो ऊपर की गुणों की और नीचे की दोषों की है। सारणी के नीचे निर्देश है कि इन संख्याओं से कौन सा दोष समझा जाये। कुल ३६ गुण होते हैं। जिनमें कम से कम १८ अवश्य मिलने चाहिए। २० से अधिक गुण मध्यम और २६ से अधिक गुण उत्तम माने गये हैं। मेलापक दोष रहित हो तो उत्तम है। जहां दोष का निर्वाह हो जाता है वहां + चिह्न दिया गया है और जहां थोड़ा दोष है वहां — चिह्न है। ऐसे दोषों पर तो विचार नहीं करना चाहिये यानी निर्दोष शुद्ध ही समझना चाहिए। परन्तु दोषों के परिहार के लिए भी कतिपय नियम हैं उनका अध्ययन आवश्यक है।

संक्षेप में नाड़ी दोष का परिहार इन स्थितियों में हो जाता है :

१) वर एवं कन्या का जन्म एक ही नक्षत्र में हो परन्तु चरण भिन्न-भिन्न हों।
२) वर-कन्या की राशि एक हो परन्तु नक्षत्र अलग-अलग हों।
३) वर-कन्या के नक्षत्र एक हों परन्तु राशि भिन्न-भिन्न हों।
४) पादवेध न हों।

वर के जन्म नक्षत्र का प्रथम चरण कन्या के जन्म नक्षत्र के चतुर्थ चरण से और वर के जन्म नक्षत्र के द्वितीय चरण का कन्या के जन्म नक्षत्र के तीसरे चरण से पादवेध होता है। यह पादवेध न होता हो तो नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है अर्थात् वर का नक्षत्र चरण प्रथम हो तो कन्या का नक्षत्र चरण दूसरा या तीसरा हो। वर के नक्षत्र का चरण दूसरा हो तो कन्या प्रथम या चतुर्थ हो। वर के जन्म नक्षत्र का चरण तीसरा हो तो कन्या के जन्म नक्षत्र का चरण प्रथम या चतुर्थ हो और वर का नक्षत्र चरण चतुर्थ हो तो कन्या का नक्षत्र चरण दूसरा या तीसरा हो तो नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है। जैसा वर के नक्षत्र से बताया है इसी प्रकार कन्या के नक्षत्र के साथ पादवेध को समझना चाहिए। नाड़ी दोष परिहार होने पर ४ अंक गुणों में जोड़ देने चाहिए।

गण दोष परिहार—वर और कन्या के जन्म राशियों के स्वामी या नवांश कुण्डली की चन्द्र राशियों के स्वामी परस्पर मित्र हों तो गण दोष का परिहार हो जाता है। कोई-कोई आचार्य नाड़ी दोष को ब्राह्मण जाति व कर्म करने वालों को ही प्रधानता देते हैं। गण दोष क्षत्रिय जाति व कर्म करने वालों के लिए और योनि वैर वैश्य वर्ण के लिए मानते हैं। गण तीन होते हैं : मनुष्य, राक्षस, देवता। मनुष्य गण की राक्षस गण से और देवता की राक्षस से परस्पर शत्रुता है। यह वर-कन्या के स्वभाव के द्योतक होते हैं। यदि कन्या का नक्षत्र पुष्य है तो राशि कर्क होगी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। वर का नक्षत्र मघा है जिसकी राशि सिंह और राशि का स्वामी सूर्य है परन्तु सूर्य और चन्द्रमा आपस में मित्र हैं अतएव गण दोष का परिहार हो जाता है। परिहार हो जाने पर ३ अंक गुणों में जोड़ देना चाहिये।

भकूट महा दोष—वर-कन्या की राशियां परस्पर छठी, आठवीं पड़ती हों तो भकूट महा दोष हो जाता है। इसमें भी यदि राशियों के स्वामी परस्पर मित्र हों तो इस दोष का परिहार हो जाता है। सारणी में दिए अंकों में परिहार हो जाने पर $३\frac{१}{२}$ अंक जोड़ देने चाहिये।

मंगली दोष

वर या कन्या की कुण्डली में लग्न कुण्डली या चन्द्र कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें खानों में मंगल हो तो मंगली दोष होता है। शनि, राहु, केतु, सूर्य को भी समान भाव से क्रूर समझा गया है। इस प्रकार लग्न और चन्द्र कुण्डली के १२-१२ भावों अर्थात् कुल २४ खानों में से १, ४, ७, ८, १२=५×२=१० भावों में मंगल, शनि, राहु आदि कोई भी ग्रह हो तो मंगली दोष होता है। ध्यान से सोचें तो आप पायेंगे कि इस प्रकार का योग ५०-६० प्रतिशत जन्म पत्रियों में मिलना स्वाभाविक है। परन्तु जन साधारण में अकारण ही इस मंगली दोष का भय समाया हुआ है। यदि वर की कुण्डली में मंगल १, ४, ७, ८ या १२वें भाव में है तो कन्या की कुण्डली में भी इन्हीं खानों में लग्न या राशि से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में मंगल अथवा शनि या राहु होने से मंगल का मेलापक हो जाता है। कन्या की कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें भाव में मंगल है तो वर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

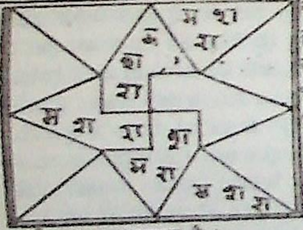

की कुण्डली में भी इन्हीं खानों में मंगल, शनि या राहु होने से मंगल दोष का परिहार होकर पत्री मिल जाती है। यह न हो तो केतु या सूर्य भी बराबर के ही क्रूर ग्रह माने जाते हैं। मंगली दोष परिहार के नियम विस्तार से इसी पंचांग में अन्यत्र दिये गये हैं। उनका भी भली-भांति अध्ययन करके मंगली पत्री का मेलापक करना चाहिये। जन-साधारण में मंगली दोष के प्रति जो भ्रामक विचार व्याप्त हो गये हैं, उनका निराकरण करना भी बहुत आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त वर-कन्या की कुण्डली में दाम्पत्य सुख, सन्तान सुख और धन-सम्पत्ति सुख सम्बन्धी विषयों पर भी दृष्टि डालकर वर-कन्या के माता-पिता को बता देना चाहिये। फलित का विषय काफी गहन है फिर भी कुछ योग तो प्रत्यक्ष ही दिखाई दे जाते हैं। जैसे उच्च-राशि के स्वक्षेत्री या मूल त्रिकोण के शुभ ग्रह हों, पाप ग्रह कुयोग न बनाते हों तो भाग्य शुभ रहेगा। पंचम स्थान से सन्तान का और सप्तम स्थान से सौभाग्य का सुख देखा जाता है। इन स्थानों में शुभ ग्रह हो, शुभ ग्रहों की दृष्टि इन पर हो, क्रूर ग्रहों की दृष्टि या योग न हो तो सन्तान सुख, सौभाग्य सुख उत्तम होगा। और पाप ग्रहों के योग से इन सुखों का अभाव होगा। वर-कन्या की कुण्डली में एक की पत्री भाग्यवान है तो उसके प्रभाव से दूसरे को भी लाभ होगा। फिर भी यदि कन्या के सप्तम भाव में अधिक बलवान् क्रूर ग्रह पड़े हों और वर के सप्तम भाव में कम हो अर्थात् वर का द्विभार्यायोग कम बलवान् हों और कन्या का वैधव्य योग अधिक प्रबल दिखाई दे तो पंडित लोग कभी-कभी कन्या का विवाह पहले शालिग्राम शिला, कुम्भ कलश, पीपल वृक्ष या अर्क पौधे (आक) से करा कर फिर वर से कराते हैं।

बहुधा जन्म-पत्री के स्थान पर जन्म की तारीख व समय लेकर ही लोग ज्योतिषी के पास आते हैं। आप "शतक मार्तण्ड" की सहायता से जन्म-कुण्डली बनाकर मेलापक करिये। वैसे भी बनी हुई पत्रियों को एक बार जांच जरूर लेना चाहिए कि ठीक बनी है या नहीं। पत्री ठीक नहीं होगी तो मेलापक भी शुद्ध नहीं होगा।

८९ पृष्ठ का शेष]

श्री गोरखनाथ के पूछने पर गुरु मत्स्येन्द्रनाथ ने कहा था कि इस चक्रोक्त यात्रा मुहूर्त के अनुसार यात्रा करेगा, वह कुशल पावेगा। यह मुहूर्तराज है। उसे चन्द्रदोष, भद्रा, दिशाशूल, योगिनी, काल, घातवार इत्यादि किसी कुयोग का दोष नहीं होगा, यह स्वयं सत्यसिद्धि भी है। मैंने स्वयं अपने १६ वर्ष के ज्योतिषअध्ययनकाल में इसी यात्रा मुहूर्त राज से अनेक मुहूर्त बनाए हैं। वे लगभग सभी शतप्रतिशत सत्यसिद्धि हुए हैं। पंचांग प्रेमी पाठकों की विशेष जानकारी हेतु पूरे विवरण सहित यह यहां प्रकाशित किया जाता है इसमें प्रत्येक माह की प्रत्येक तिथि और प्रत्येक प्रहर में हर एक दिशा की यात्रा का फल निर्दिष्ट किया गया है। हर मास के नीचे दी गई तिथियों को उस मास के कृष्ण व शुक्ल पक्ष दोनों की तिथियां समझनी चाहिए। इसमें ३।१४।१५ और ३० तिथियों का उल्लेख नहीं है। सो १३ तिथि का फल ३ तीज तिथि के समान, १४ का फल ४ तिथि के समान, १५ का फल ठीक ५ तिथि के समान समझना चाहिए। ३० (अमावस्या) वर्ज्य है। इसी तरह १ से ४ तक के प्रहरों को दिन और रात दोनों के लिए समान समझें। नोट :—दिनमान का चतुर्थांश दिन के एक प्रहर का मान तथा रात्रि मान का चतुर्थांश रात्रि के एक प्रहर का मान होता है।

कुण्डली में मंगलीक योग विचार

लड़के या लड़की की जन्म कुंडली में यदि पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में मंगल पड़ जाए तो एक दूसरे के जीवन को अरिष्टकारी होते हैं। यदि वर और कन्या दोनों की कुंडलियां मंगलीक हों तो विवाह करने में कोई दोष नहीं। यद्यपि योनि, गुण नाड़ी गण इत्यादि का मिलान भी कर लेना चाहिए। कुछ अन्य दशाओं में भी मंगल दोष शान्त हो जाता है यदि—

(१) अन्य कुंडली में १, ४, ७, ८, १२ भाव में शनि हो तो उसका भौम दोष शान्त हो जाता है।

यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने व हिबुके तथा।
अष्टमे द्वादशे चैव भौम दोषो न विद्यते॥

(२) बली गुरु शुक्र-लग्न या ७ भाव में हो तो भी भौम दोष नहीं रहता।

(३) यदि कन्या की कुंडली में जहां मंगल हो, उसी स्थान पर वर की कुंडली में कोई प्रबल पाप ग्रह हो तो भौम दोष नहीं रहता—

शनि भौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौम दोष विनाशकृद्॥

(४) मेष राशि का मंगल लग्न में, या वृश्चिक राशि का मंगल ४ भाव में या मकर का सातवें या कर्क का आठवें या धनु राशि का मंगल १२वें हों तो भौम दोष नहीं रहता।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।
द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमं दोषो न विद्यते॥

(५) न मंगली चन्द्रे भृगुन मंगली पश्यति यस्य जीव।
न मंगली केन्द्र गते च राहुर्न द्वितीये न मंगली मंगल-राहु योगो॥

अर्थात् यदि दूसरे भाव में चन्द्र-शुक्र हो, मंगल-गुरु की युति हो या गुरु पूर्ण दृष्टि से भौम को देखता है केन्द्र भाव में राहु अथवा मंगल-राहु कहीं इकट्ठे हों। (मुहूर्त दीपक से)

(६) केन्द्र में चन्द्र या चन्द्र-मंगल की युति होने पर भी भौम दोष नहीं रहे।

(७) केन्द्र त्रिकोण में शुभ-ग्रह तथा ३, ६, ८, ११वें भाव में पाप ग्रह हों तो भी भौम दोष शान्त हो जाता है।

(८) षष्ठे च भवने भौमो राहुः सप्तम सम्भव।
अष्टमे च यदा सौरितस्य भार्या न जीवति॥

—अर्थात् वर की कुंडली में छठे भाव में मंगल, सातवें में राहु, आठवें शनि हो तो उसकी पत्नी जीवित नहीं रहती। अर्थात् मंगलीक जैसा प्रभाव होता है।

(९) राशि मैत्रं यदायाति गणैक्यं वा यदा भवेद्।
अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥

—अर्थात् राशि मैत्री हो, गण भी एक हो या तीस से अधिक गुण मिलते हों तो भौम दोष का विचार नहीं करना चाहिए।

(१०) वक्री, नीच, अस्त अथवा शत्रु क्षेत्री मंगल १, ४, ७, ८, १२वें भाव में हो तो भी भौम-दोष नहीं रहता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विवाह सम्बन्धी ज्ञातव्य

ज्येष्ठ पुत्र या ज्येष्ठ कन्या सबसे प्रथम जीवित सन्तान का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं किया जाता । बहुत आवश्यक हो तो कृत्तिका नक्षत्र से सूर्य के निकल जाने पर करना चाहिये । २५ मई तक सूर्य कृत्तिका से निकल जाता है । इसी प्रकार कातिक मास में भी वृश्चिक के सूर्य में पूजा, दानादि करके विवाह कर सकते हैं । वृश्चिक का सूर्य लगभग १७ नवम्बर से १६ दिसम्बर तक रहता है । गुरु चौथा, आठवां, बारहवां कन्या की राशि से (४, ८, १२) हो तो नेष्ट होता है और नेष्ट गुरु में विवाह वर्जित होता है । गुरु नेष्ट हो तो पूरे एक वर्ष तक नेष्ट होता है और इतनी अवधि तक प्रतीक्षा करना युक्तिसंगत नहीं है । पहले तो बहुत छोटी उमर में कन्याओं का विवाह कर दिया जाता था तब एक वर्ष प्रतीक्षा कठिन नहीं होती थी, अब कन्याओं का विवाह काफी बड़ी उमर में होता है । इसलिये गुरु की दुगुनी, तिगुनी पूजा करके विवाह की अनुमति दे दी गई है ।

विवाह लग्न के दिन घर में मण्डप स्थापित किया जाता है । जिसे मडवा भी कहते हैं । आजकल सब कुछ बहुत जल्दी-२ किया जाता है और बहुत से रीतिरिवाज समाप्त होते जा रहे हैं । परन्तु जहां सम्भव हो अथवा जो लोग कर सकें उनको ज्योतिषी को सब बातें विस्तार से बताना चाहिये, विवाह के दिन या उससे एक-दो दिन पहले मडवा (मण्डप) स्थापित किया जाता है । जहां भांवरें पड़नी हों उस स्थान पर मण्डप बनाया जाता है । टैन्ट लगाने वाले को वह स्थान बता देना चाहिये । सूर्य ५।६।७ राशियों में हो तो ईशान कोण में, ८।९।१० राशियों में हो तो वायव्य कोण में, ११।१२।१ राशियों में हो तो नैऋत्य कोण में और २।३।४ राशि में हो तो अग्नि कोण में विवाह कार्य के लिए मण्डप की स्थापना करनी चाहिये । ईशान कोण पूर्व व उत्तर के मध्य, वायव्य उत्तर-पश्चिम मध्य में, नैऋत्य कोण पश्चिम-दक्षिण मध्य तथा आग्नेय कोण दक्षिण-पूर्व मध्य में होता है ।

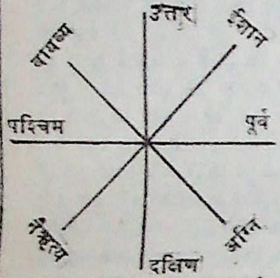

विवाह से पहले वर-वधू दोनों को ही तेल उबटन आदि लगाने, हल्दी चढ़ाने की प्रथा है । कन्या तथा वर की राशि के अनुसार तेल लेपन की संख्या बताई जाती है । इसको तेल चढ़ाना या तेल लेपन कहते हैं । मेष राशि ७, वृष १०, मिथुन ५, कर्क १०, सिंह ५, कन्या ७, तुला ७, वृश्चिक ५, धनु ५, मकर ५, कुम्भ ५ और मीन राशि के वर-कन्या को ७ बार तेल लेपन कराना चाहिये । पंचांग शुद्धि देख कर विवाह के दिन से १, २, ४, ५, ७, ८ दिन पहले जब शुभ दिन हो तब विवाह कार्य आरम्भ करना चाहिये । गणेश पूजन, नांदी श्राद्ध, हल्दी के हाथ लगाना, कलश स्थापन, घर की सफाई सजावट, भूषण वस्त्र बनवाना आदि कार्य करना शुभ होता है । जिन स्त्री के हाथ से कार्य कराना हो उसका चन्द्रमा नाम से या जन्म राशि से ४, ८ या १२ वां न हो अथवा जिस स्त्री का चन्द्रबल उस दिन उत्तम हो उसके हाथ से विवाह कार्य आरम्भ कराना चाहिये । सबसे पहले गणेश जी का पूजन करना चाहिये उनको प्रथम निमन्त्रण-पत्र समर्पित करना चाहिये । मन्दिर में जाकर गणेश जी की मूर्ति के सामने अथवा घर पर गणेश जी के चित्र के सामने सुपारी आदि के साथ निमन्त्रण-पत्र रख कर प्रार्थना करने से सब कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होते हैं ।

मेलापक में वर-कन्या का नाम बदलने की आवश्यकता पड़े तो कन्या का ही नाम बदलने की प्रथा है । परन्तु आज-कल बहुत सी लड़कियां नौकरी करती हैं इस कारण केवल घर में बुलाने के लिये ही नाम बदला जा सकता है । मेलापक सारणी में वर के नक्षत्र वाली कोष्ठक में जहां-जहां अधिक गुण संख्या हो, दोष नहीं हो उन सभी नक्षत्रों के नाम अक्षर लिख लो और उन में से ही किसी पर रुचि अनुसार नाम रखने को बता दो । मेलापक लड़के-लड़की दोनों की जन्म राशि से या फिर दोनों की नाम राशि से करना चाहिये । यह नहीं कि एक की कुण्डली है तो उसकी जन्म राशि ले ली और दूसरे की नाम राशि ले ली । ऐसा मेलापक ठीक नहीं होता । वैसे तो जन्म समय की राशि ही लेनी चाहिये परन्तु ऐसी परिस्थितियों में जब जन्म समय, तारीख ज्ञात न हो तो फिर प्रसिद्ध नाम बोलते नाम से मेलापक करना उचित है । ऐसे अवसरों पर नाम वही लेना चाहिये जिसके बुलाने पर वह सोते से जाग जाय, रास्ते में जा रहा हो तो बुलाने पर ठहर जाय, इसे बोलता नाम कहते हैं ।

विवाह से पहले विवाह सम्बन्ध को पक्का करने के लिये सगाई, टीका, ठाका, मंगनी, कुडमाई की रसम की जाती है जिसे रोकना या विवाह पक्का करना भी कह सकते हैं । कहीं-२ यह रसम अलग-२ भी होती है, जैसे लड़के-लड़की के माता-पिता में बात तय हो गई तो कन्या पक्ष की ओर से लड़के के हाथ में कुछ रुपये सामर्थ्य अनुसार रख कर और सगे-सम्बन्धियों को नजरें देकर बात पक्की की जाती है । यह रसम शुभ वार शुभ दिन या शुभ होरा में चन्द्र बल नक्षत्र आदि देख कर देना चाहिये । यदि मुहूर्त निकालने का समय न हो तो शुभ होरा का ही विचार करके दिन के शुभ घण्टे बता देना चाहिये । दिन का चौघड़िया चक्र में यह बता दिया गया है । पंचांग में दिये सर्वार्थ सिद्धि योग आदि देखकर भद्रा, पंचक कुयोग रहित समय बता देना चाहिये । इसी प्रकार ठाका, सगाई, वर वरण का मुहूर्त भी निकाला जाता है । पंचांग शुद्धि देखकर कुयोग रहित दिन में शुभ तिथि, शुभवार, कृ. रो. पू. ३ उ. ३ नक्षत्रों में चन्द्र बल देख शुभ लग्न में या शुभ नवांश में कुल का पुरोहित या कन्या के भाई बन्धु वर के यहां जाकर पूर्व या उत्तर दिशा में बैठ कर कुंकुम, रोली, केसर से वर का तिलक कर पुष्प माला पहिनायें, यज्ञोपवीत, वस्त्र आदि वर को भेंट देकर वर का सत्कार माला, तिलक, ताम्बूल आदि से करें । सामर्थ्य अनुसार रुपया, मोहर, अशरफी, श्रीफल आदि वर को देकर गुड़, खजूर, बताशा या खोये की बनी मिठाई मुंह में देकर कन्या का भ्राता—"मैं अपनी अमुक नाम की बहन की सगाई या वाग्दान आपके साथ करता हूं" । पंडित हो तो गणेश पूजा नवग्रह पूजा स्वस्ति वाचन संकल्प आदि करा देना चाहिये ।

विवाह निश्चय करते समय ध्यान देने योग्य कुछ बातें हैं :—जैसे लड़की-लड़के के गोत्र व प्रवर शाखा की न हो, वर की माता की सात पीढ़ी में से न हो, दो सगी बहनों का विवाह दो सगे भाइयों से नहीं किया जाता । दो सगी बहनों का दो सगे भाइयों का या भाई-बहनों का विवाह छः मास का अन्तर देकर करना चाहिये । साथ-२ नहीं करना चाहिये । लड़की के विवाह के बाद लड़के का विवाह किया जा सकता है । अलग-२ माता से उत्पन्न भाई-बहिनों का विवाह अलग-२ मण्डपों में अलग-२ पंडितों द्वारा अलग-२ दरवाजे से किया जा सकता है । जुडवां भाई-बहिनों का विवाह एक ही मण्डप में किया जा सकता है । विवाह के बाद छः महीने तक वर-परिवार में मुण्डन, यज्ञोपवीत, केशान्त, चूड़ान्त, सीमान्तमुण्डन आदि संस्कार नहीं किये जाते । वैसे यदि संवत् बदल जाय तो कोई दोष भी नहीं है । संवत्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र में बदलता है। एक मंगल कार्य माघ, फाल्गुन में किया हो तो दूसरा चैत्र, बैशाख में संवत् बदलने पर कर सकते हैं। यह विधान केवल तीन पीढ़ी तक के परिवार पर लागू होता है। मंगल उत्सव के बीच में श्राद्धादि अमंगल कार्य नहीं करने चाहिये। वाग्दान यानी सगाई, ठाका की रसम के बाद वर या कन्या की तीन पीढ़ी में किसी की मृत्यु हो जाय तो १ मास के बाद सूतक निवृत्ति होने पर विवाह सम्पन्न किया जा सकता है। विवाह कार्य प्रारम्भ करके गणेश पूजन के बाद अर्थात् विवाह से कुछ दिन पहले परिवार में तीन पीढ़ी तक किसी की मृत्यु हो जाय तो वर-कन्या तथा उनके माता-पिता को सूतक अशौच नहीं लगता। विवाह-संस्कार को रोकना नहीं चाहिए, सम्पन्न करा देना चाहिये। निश्चित लगन समय पर ही पाणिग्रहण करा देना चाहिये।

हमारे शास्त्रकारों ने जन-साधारण को विभिन्न विभागों में स्वभाव प्रकृति प्रकृति आदि के अनुसार विभाजित किया है। ज्योतिष के नियमों के अन्तर्गत नक्षत्र भेद से मनुष्य, राक्षस, देवता तीन गण होते हैं। यह उसके स्वभाव के अनुसार विभाजन हुआ। राक्षस स्वभाव के व्यक्ति का देवता स्वभाव व्यक्ति के साथ मेल नहीं खायेगा। प्रत्येक नक्षत्र-राशि राशि-स्वामी ग्रह के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक स्थिति भिन्न होती है। उसका बल, पौरुष, काम शक्ति, पुरुष-स्त्री की परस्पर संभोग में संतुष्टि की क्षमता, यौनि बनावट, सन्तान उत्पादक क्षमता आदि विषयों के अनुसार वर्ग भेद किये गये हैं। मेलापक में कुल ३६ अंक होते हैं : वर्ण-१, वश्य-२, तारा-३, योनि-४, ग्रहमैत्री-५, भकूट-६, गण-७ और नाड़ी के ८ कुल मिला कर ३६ अंक होते हैं। विस्तार से बताने के लिये तो अधिक स्थान चाहिये, संक्षेप में इन सभी वर्ग भेदों से प्रत्येक स्त्री-पुरुष, लड़के-लड़की के उपरोक्त सभी गुण-दोष उसकी जन्म, राशि, नक्षत्र से ज्ञात हो जाते हैं और यह सब प्रक्रिया सम्पूर्ण रूप से नितान्त वैज्ञानिक है। इन सब का योग गणित से निकाल कर मेलापक सारणी बना दी गई है जो तुरन्त बता देती है कि किस नक्षत्र की लड़की का किस नक्षत्र के लड़के से मेलापक कितना प्रतिशत ठीक या गलत है।

विवाह लग्न निर्णय

ज्योतिषियों के पास लड़के या लड़की की ओर से विवाह की लगन (साहा) की तारीख समय निकलवाने के लिये यजमान (ग्राहक) लोग आते हैं। पंचांगों से विवाह मुहूर्त निकाल कर दे दिये जाते हैं। ज्योतिषियों को वर-कन्या की राशि के अनुसार त्रिबल-शुद्धि देख कर लगन निकालनी पड़ती है। इससे काफी समय लग जाता है। ज्योतिषियों के परिश्रम को कम करने और उनके गणित में सहयोग करने के लिए हम त्रिबल-शुद्धि करके प्रत्येक राशि की उपयुक्त लगनों की तारीखें दे रहे हैं। त्रिबल-शुद्धि में तीन बातें देखनी होती हैं :—

१. **चन्द्रमा :** लगन के दिन व समय पर चन्द्रमा वर व कन्या की राशि से ४, ८, १२वें स्थान पर नहीं होना चाहिये। इसमें प्रधानता तो जन्म राशि को ही दी जाती है परन्तु जन्म समय ज्ञात न हो अथवा जन्म राशि से विवाह न बनता हो तो नाम राशि से भी कभी-२ विशेष परिस्थितियों में लगन निकाल दिया जाता है। यदि कन्या के नाम बदलने से विवाह लगन ठीक बनता हो तो बहुत आवश्यक होने पर उपयुक्त नाम रख दिया जाता है।

२. **वर का सूर्य :** वर की राशि से सूर्य ३, ६, ११वें स्थानों पर ही श्रेष्ठ होता है। १, २, ५, ७, ९वां सूर्य पूज्य होता है और ४, ८, १२वां नेष्ट होता है। नेष्ट सूर्य त्याज्य है, अतएव त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक बनाते समय हमने नेष्ट सूर्य के विवाह लग्नों को स्थान नहीं दिया है। पूज्य सूर्य में सूर्य की पूजा करके विवाह सम्पन्न किया जा सकता है। यदि बिना पूजा का लग्न नहीं निकलता हो तो पूजा के सूर्य में विवाह लग्न विधि सम्मत है परन्तु यजमान को बता देना चाहिये कि विवाह समय सूर्य की पूजा अवश्य करा दें।

३. **कन्या का गुरु :** गुरु कन्या की राशि से २, ५, ७, ९ व ११वां श्रेष्ठ होता है, १, ३, ६ व १०वां पूज्य होता है और ४, ८, व १२वां नेष्ट होता है। गुरु यदि उच्च राशि स्वराशि या मित्र राशि का हो तो नेष्ट होते हुये भी पूज्य माना जाता है। यथा कर्क, धनु, मीन, सिंह, मेष व वृश्चिक राशियों में मित्र राशि का गुरु पूज्य होता है। गुरु क्योंकि एक राशि में लगभग एक वर्ष तक रहता है और आजकल लड़कियों की शादी छोटी उमर में नहीं होती इसलिये नेष्ट गुरु को भी पूज्य ही मानना उचित है। वैसे भी २ फरवरी १९८७ से गुरु मीन राशि में स्वराशि का होने से पूज्य ही होगा।

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक में विवाह लग्न देखने का एक उदाहरण देकर बताया जा रहा है। मान लीजिये सिंह राशि का लड़का और कन्या राशि की लड़की का विवाह लग्न निकालना है। वर या कन्या के अभिभावक मई मास में विवाह करना चाहते हैं। कन्या की लग्नों वाले कोष्ठक में मई १, ४, ५, १०, ११, १२, १७, १९, २०, २८, २९ तारीखें हैं परन्तु वर वाले कोष्ठक में मई की १७, १९, २०, २८, २९ ही तारीखें हैं। इस प्रकार दोनों के लिये १७, १९, २०, २८, २९ तारीखें ही ठीक हैं और इन्हीं में से जो लग्न उनको उचित लगे तय कर सकते हैं। विवाह मुहूर्त में देख कर दिन, लग्न, समय, ग्रहदान, वार और अधिक खड़ी रेखायें देख कर तारीख निश्चित की जा सकती है। लग्नों के साथ जिन ग्रहों का दान लिखा हो जैसे चं.दा. का अर्थ चन्द्रमा का दान वह बता देना चाहिये। ग्रहों के दान पदार्थ उसी पंचांग में अन्यत्र पृष्ठ पर दिये हुये हैं। यह सब ग्रहों के दान तथा पूजा आदि विवाह के समय कराई जाती है।

[शेष पृष्ठ ७६ का]

जन्म स्थान विचार

बच्चे का जन्म किस प्रकार के स्थान में हुआ है इस के नियम ज्योतिष फलित में बताये गये हैं जिनमें से मुख्य नियमों की जानकारी दी जा रही है। कर्क, मकर, मीन यह तीन जलचर राशियां हैं। लग्न या चन्द्रमा इन राशियों में है अथवा लग्न पर पूर्ण चन्द्रमा की दृष्टि हो अथवा चन्द्रमा जलचर राशि के प्रथम, चतुर्थ या दशम स्थान में हो तो जन्म जल के ऊपर या जल के पास होता है, जल से तात्पर्य नदी, तालाब, झील, समुद्र, झरना, कुआ, नहर आदि समझना। नौका, जहाज, पुल के ऊपर भी जल का सामीप्य होता है। चन्द्रमा कर्क राशि का हो, बुध लग्न में हो, गुरु चौथा अथवा लग्न में जलचर राशि हो, चन्द्रमा सप्तम हो तो भी जन्म जल पर या समीप में ही हुआ समझना चाहिये। लग्न या चन्द्र में शनि १२वां हो, लग्न या चन्द्र को पाप ग्रह देखते हों तो जन्म कारागार में या एकान्त में जंगल वियावान में समझिये। शनि कर्क या वृश्चिक लग्न में हो और चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि हो तो खाई खन्दक में जन्म होता है। पुरुष राशि की लग्न हो, लग्न में शनि हो, मंगल की दृष्टि हो तो शमशान या शमशान के पास जन्म। पुरुष लग्न में शनि को शुक्र व चन्द्रमा देखते हों तो सुन्दर दर्शनीय रमणीक घर में जन्म। लग्न में गुरु हो, शुक्र-चन्द्र की दृष्टि हो तो राज-महल या देवालय मन्दिर में जन्म, लग्नगत गुरु पर बुध की दृष्टि हो तो चित्रकारी किये हुये, मूर्तियां बने हुये सुन्दर घर में जन्म होता है। इस प्रकार ग्रहों के बलाबल पर विचार करके फल कथन करना चाहिये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

महाविद्या श्री बगलामुखी के मन्त्रादि

[लेखक :—लक्ष्मी नारायण शर्मा, बी०ए०, प्रभाकर, साहित्यरत्न, ज्योतिष वाचस्पति]

बगलामुखी देवी भगवती माँ के ही अनेक स्वरूपों में से एक हैं। जैसे महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती माँ के तीन मुख्य रूप हैं। फिर नवदुर्गायें शैल पुत्री ब्रह्मचारिणि, चन्द्रघण्टादेवी, कूष्माण्डा देवी, स्कन्दमाता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री हैं। विशेष प्रयोजन के लिए धारण किए गये भगवती के अनेक रूप हैं। जसे रक्तबीज राक्षस पैदा हो गया था। जब माँ का उससे युद्ध हुआ तो राक्षस के रक्त से अनेकों रक्तबीज पैदा हो गये। महामाया माँ ने उस समय अपने ही अंश से चामुन्डा काली का रूप धारण किया जो उस राक्षस के शरीर से रक्त की बूंदों को गिरने से पहले ही पी जाती थी और इस प्रकार माँ ने उन अनेकों रक्तबीजों को समाप्त किया। चामुण्डा काली की उपासना मांस मदिरा से ही की जाती है।

भगवती बगलामुखी देवी की उत्पत्ति के बारे में तन्त्र शास्त्रों में लिखा है कि एक समय सतयुग में भयंकर तूफान आया और समस्त चराचर सृष्टि नष्ट होने लगी तो शेषनाग की शैय्या पर लेटे हुए भगवान विष्णु को चिन्ता हुई। उन्होंने भगवती त्रिपुरसुन्दरी की आराधना (प्रार्थना) की। उस देवी ने प्रसन्न होकर बगलादेवी के रूप में अवतार लिया। सौराष्ट्र (काठियावाड़) देश में हरिद्रा नाम के पीले सरोवर में जलक्रीड़ा करती हुई प्रकट हुई और उनका अपूर्व तेज चारों ओर फैल गया। उस दिन मंगलवार था तथा चतुर्दशी तिथि थी। उस रात्रि का नाम वीररात्रि पड़ा। पंचमकार से सेवित देवी ने अर्धरात्रि के समय उस गहरे पीले सरोवर में निवास किया और त्रैलोक्य का स्तम्भन करके भयंकर तूफान बवडर से सृष्टि की रक्षा की। तान्त्रिक जन तभी से मगलवार को जब चतुर्दशी पड़ती है पंचमकार का सेवन करके भगवती बगलामुखी देवी की आराधना करते हैं। भगवती के विद्या जनित तेज से दूसरी त्रैलोक्य स्तम्भिनी ब्रह्मास्त्र विद्या उत्पन्न हुई। उस ब्रह्मास्त्र विद्या का तेज भगवान विष्णु के तेज में विलीन हुआ तथा वह तेज विद्या तथा अनुविद्याओं में लीन हुआ। अर्थात् उत्पात की शान्ति के पश्चात् देवी का तेज भगवान विष्णु में विलीन हो गया और उनकी ब्रह्मास्त्र स्तम्भिनी विद्या, अन्य विद्या अनुविद्याओं में मिल गई। संसार के कल्याण के लिये प्रचलित हो गई।

ॐजगद्धात्री नमः स्वाहा ओ३म् महामाई नमः स्वाहा ओ३म्मातेश्वरी नमः कहकर तीन बार आचमन करो। ओ३म् बगलामुखी पीताम्बरा देवी नमः

अपने शत्रु को, प्रतिद्वन्द्वी को, अपने विरुद्ध निरपराध सजा मिलने से रोकने के लिए, बन्धन मुक्ति के लिए किसी उच्च अधिकारी को अपने अनुकूल निर्णय की प्रेरणा देने के लिए, इस अनुष्ठान का आयोजन किया जाता है।

ओ३म् ह्लीं (हिलरीम्) बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं (हिलरीम्) ओ३म् स्वाहा।

इस मंत्र को भोजपत्र पर अनार की कलम से अष्टगन्ध से लिखकर देवी के सामने रखे और दीक्षा की प्रार्थना करके दीक्षा ले लो। किसी गुरु से लो तो भी देवी से विधिपूर्वक दीक्षा ले लो, मन्त्र का उच्चारण शुद्ध हो बीजमंत्र ह्लीं (हिलरीम्) है। बगलामुखी का यंत्र भी भोजपत्र पर उसी प्रकार से बनाकर भगवती बगलामुखी के सामने रखो। भोजपत्र या अष्टगंध का प्रबन्ध न हो सके तो पीले कागज पर हल्दी से मंत्र व यंत्र बनाकर रखो। इस प्रकार से लिखा मंत्र व यन्त्र आप हमसे मंगाना चाहें तो मंगा सकते हैं। यन्त्र का नमूना आपको बगला स्तोत्र की पुस्तक में भी मिल जायेगा। अब आप निम्न मंत्र से संकल्प लो। हाथ में द्रव्य अक्षत पुष्प जल लेकर संकल्प करो। संकल्प मंत्र पूरा पहले दिया जा चुका है। उसके अन्त में इस प्रकार जोड़ो :—मम समस्त सद अभीष्ट सिद्धयर्थं—यहाँ कार्य प्रयोजन को कहे। श्री भगवती पीताम्बराया श्री बगलामुखी देव्याः यथा लब्धोपचारेण पूजनमहं करिष्ये। कह कर जल आदि सामग्री छोड़ दें।

हाथ में पीला पुष्प लेकर पद्मासन से बैठकर माँ बगलामुखी का ध्यान करें। ध्यान मंत्र इस प्रकार है :—

मध्ये सुधाब्धि मणि मण्डप रत्न वेद्यां सिंहासनो परिगतां परि पीत वर्णाम्।
पीताम्बराभरण माल्यविभूषितांगी, देवीं स्मरामि धृत मुद्गर वैरि जिह्वाम्।
जिह्वाग्रमादाय करेण देवी वामेन शत्रुन परिपीड्यन्तीम्
गदाभि घातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्या द्विभुजां नमामि।

इस श्लोक का अर्थ यह है कि माँ बगलामुखी देवी मणि जड़ित पीत मण्डप में रत्न जडित सोने के पीत वर्ण सिंहासन पर विराजमान है। पीले रंग के वस्त्र आभूषण माला पहने है, सीधे हाथ में मुगद्र है, बाँये से वैरी की जिह्वा पकड़े हुए है। मुगदर से वैरी को मारने की मुद्रा है और जिह्वा को बाहर की ओर निकालकर शत्रुओं का उत्पीड़न करने वाली पीतपस्त्र धारण करने वाली मां को नमस्कार करता हूं।

श्री बगलामुखी मन्त्र

ॐ ह्लीं (हिलरीम्) बगलामुखी सर्वं दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं (हिलरीम्) ॐ स्वाहा॥

आवाहन :— ओ३म् हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजां। चन्द्रां हिरण्यमयी लक्ष्मीं जातवेदोम आवह। आगच्छेह महादेवि सर्वसिद्धि प्रदायिनि। यावद्व्रतं समाप्येत तावत्वं सन्निधा भव॥ इति बगलामुख्यै नमः आवाहनं समर्पयामि कह कर आवाहन करें।

आसन :—तां मआहव जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्य विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्। प्रसीद जगतां मातःसंसारार्णव तारिणीं। मया निवेदित भक्तया आसनं सफलं कुरु॥ इति बगलामुखी देव्यै समर्पयामि बोलकर आसन दे। यदि यह अथवा नीचे लिखे मंत्र पूरे न पढ़ सके तो केवल आवाहन आदि कर लेना चाहिए। जैसे श्री बगलामुख्यै नमः ध्यानं समर्पयामि श्री बगलामुख्यै नमः आवाहनं समर्पयामि नमः श्री बगलामुख्यै नमः आसनं समर्पयामि श्री बगलामुख्यै नमः पाद्य समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि आचमनं समर्पयामि स्नानं समर्पयामि पंचामृत स्नानं समर्पयामि उदवर्तन् (उबटन) शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि आचमनं समर्पयामि। वस्त्रादिकं समर्पयामि गन्धं समर्पयामि सौभाग्य सूत्रं समर्पयामि अक्षत हरिद्रा कुंकुम सिंदूर कज्जल पुष्प पुष्पमाला धूप दीप नेवैद्य फलताम्बुल पुंगीफल दक्षिणा पुष्पांजलि समर्पयामि कहकर षोडसोपचार पूजा कर देनी चाहिए। जो पूरा मंत्र पढ़कर संस्कार करना चाहें उनके लिए पूरे श्लोक लिखे जा रहे हैं।

पाद्य :—अश्वपूर्वा रथ मध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम्। श्रियं देवीमुपह्व्ये श्रीर्मा देवीं जुषतां॥ गंगादि सर्व तर्थेभ्यो मया प्रार्थनया हृतम्। तोयमेतत्मुखस्पर्श पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ इति पाद्यं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः। कहकर जल चढ़ाओ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अर्घ्य :—कांसोस्मितां हिरण्य प्रकारां माद्रीं ज्यलन्तीम् तृप्तां तर्पयन्तीम् पद्मेस्थितां पद्म वर्णा तामिहोपह्व्येश्रियम् ।। निधिनां सर्वदेवानां त्वमर्घ्यं गुणा ह्यसि सिंहो परिस्थिते देवि गृहण.र्घ्यं नमोस्तुते । इत्यर्घ्यं समर्पयामि बगलामुखै नमः कहकर अर्घ्य दो ।

आचमन :—चन्द्रां प्रभासां यशसां ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् । पद्म नेर्मि शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ।। कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभि स्वादु शीतलं । तोयमाचमनी यार्थं देवीदं प्रतिगृह्यतां । इत्याचमनीयं समर्पयामि बगलामुख्यै नमः कहकर आचमन कराओ ।

स्नान :—आदित्य वर्णे तपसोधिजाती वनस्पतिस्तव वृक्षोथ बिल्वः । तस्यः फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ।। मन्दाकिन्याः समानीतैः हेमाम्भोरुहवासितम् । स्नानं कुरुष्व देवेशि सलिलैश्च सुगन्धिभिः ।। इति स्नानं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः कहकर देवी को जल छिड़क कर स्नान कराओ ।

पंचामृत स्नान :—उपैतु मां देव सखः कीर्तिश्च मणिना सह, प्रादुर्भूतोस्मि राष्ट्रेस्मिन् कीर्तिमृद्धि ददातु मे । पयोदधि घृतं चैव मधुच शर्करायुतम्, पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।। इति पंचामृत स्नान समर्पयामि भगवती बगलायै नमः कहकर पंचामृत अर्पण करके स्नान कराओ । भगवती के चित्र को जल से पंचामृत से स्नान नहीं कराते अपितु जल या पंचामृत आदि को पंचपात्र में लेकर मन्त्र पढ़ने के बाद दूसरे पात्र में समपित कर दे : हैं ।

उद्वर्तन (उबटन) स्नान :—ओ३म् अदृशुना ते अदृशुपृच्यतां परुषा परु । गन्धस्ते सोमभवतु मदाय रसो अच्युतः ।। नाना सुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्, उद्वर्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् । इति उदवर्तनस्नानं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः कहकर भगवती को उबटन स्नान कराओ । उसके बाद शुद्ध जल से आचमन व स्नान कराओ । तदन्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि नमः वस्त्र उपवस्त्र मन्त्र क्षुत्पिपासामला ज्येष्ठामलक्ष्मी नाशयाम्यहम्-भूतिसमृद्धि च सर्वा निर्णुद मे गृहात् । पट्ट कूलयुगं देवि कचुकेन समन्वितम्- परिधेहि कृपां कृत्वा मातः श्री बगलामुखी ।। इति वस्त्रादिकं च समर्पयामि बगलामुख्यै नमः कहकर माता को वस्त्रादि अर्पण करो ।

गन्ध अर्पण :—गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीं, ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्व्येश्रियम् । श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् विलेपनं च देवेशि चंदनं प्रतिगृह्यताम् । इति गंधं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः कहकर भगवती को चंदन अर्पण करो । भगवती के चित्र की ओर चंदन और कपूर छिड़क कर गन्ध बनाये उसके छींटे छिड़क दो ।

सौभाग्य :—सौभाग्य सूत्रं वरदे सुवर्ण मणि संयुतं । कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्य देहि मे सदा ।। इति सौभाग्य सूत्र समर्पयामि महामाया बगलायै नमः कहकर सौभाग्य सूत्र पीला धागा रेशमी सूत्र अर्पण करो ।

अक्षत :—मनसः काममाकूति वाचः सत्यमशीमही पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्री श्रयतां यशः । अक्षतां निर्मलान् शुद्धान् मुक्ताफल समन्वितान्, गृहाणेमान महादेवि देहि मे निर्मलां धियम् ।। इति अक्षतान् समर्पयामि बगलामुखै नमः कहकर महामाया को अक्षत चढ़ाओ । अक्षत साबत बिना टूटे चावल के दानों को कहते हैं । वही अर्पण करो ।

हरिद्रा :—हरिद्रा रंजिता देवी सुख सौभाग्य दायिनि, तस्मात्वं पूजमाम्यत्र दुःख शान्ति प्रयच्छ मे । इति हरिद्रा समर्पयामि बगलामुख्यै नमः कहकर हल्दी का चूर्ण चढ़ाओ ।

कुंकुम :—कुंकुम कान्तिदं दिव्यं कामिनी काम संभवं कुंकुमेनार्चिते देवि प्रसीद बगलामुखि ।। इति कुंकुम समर्पयामि बगलामुख्यै नमः कहकर रोली चढ़ाओ ।

सिन्दूर :—सिंदूर मरुणाभासं जवाकुसुम संभवम्, पूजितासि मयादेवि प्रसीद बगलामुखी ।। इति सिंदूर समर्पयामि बगलामुख्यै नमः कहकर देवी को सिंदूर अर्पण करो ।

कज्जल :—चर्क्षुम्यं कज्जलं रम्य सुभगे शांति कारके, कर्पूर ज्योतिरुत्पन्नं गृहाण बगलामुखि ।। इति कज्जलं समर्पयामि बगलामुख्यै नमः कहकर देवी को काजल अर्पण करो ।

पुष्प :—मनसा काममाकूति वाचासत्यमशीमही, पशुनां रूपमन्नस्य मयि श्री श्रयतां यशः । मन्दार परिजातादि पाटल केताकानि च, जाति चम्पक पुष्पानि गृहाणेमानि शोभने ।। इति पुष्पं समर्पयामि बगलामुख्यै नमः कहकर पुष्प समर्पित करो ।

पुष्पमाला :—कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम । श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।। पद्मशंख पुष्पादि शत पत्रैर्विचित्रताम्, पुष्पमालां प्रयच्छामिते श्री पीताम्बरे शिवे ।। इति पुष्पमालां समर्पयामि कहकर देवी को फूल माला अर्पण करो ।

धूप :—आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे । नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले । वनस्पतिरसोद्भूतो गंधढ्यो गंध उत्तमः, आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम् ।। इति धूपं आघ्रापयामि बगलामुख्यै नमः कहकर धूप जलाकर उसका धूम्र देवी की ओर प्रवाहित करो ।

दीप :—सरसिजनिलये सरोज हस्ते धवलतारांशुक गंधमाल्य शोभे । भगवति हरि-बल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन भूतिकरे प्रसीद मह्यम् ।। आज्यं च वर्तिसंयुक्तं बन्हिना योजितं मया, दीपं गृहाण देवेशि त्रैलोक्यतिमिरापहम् ।। इति दीपं दर्शयामि बगलामुख्यै नमः कहकर देवी को दीपक दिखलाओ और दीपक की ओर अक्षत छिड़को ।

नैवेद्य तथा फल :—आर्द्रां पुष्ककरिणीं यष्टिं सुवर्णां हेम मालिनीम्, सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोम आवह ।। अन्नं चतुर्विधं स्वादुरसैः षडभिः समन्वितम्, नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ति मे ह्य चलां कुरु इति नैवेद्यं फलंसमर्पयामि-निवेदयामि बगलामुख्यै नमः कहकर देवी को नैवेद्य तथा फल अर्पण करो ।

ताम्बूल :—तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्, यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विदेयं पुरुषानहम् ।। एला लवंग कस्तूरी कर्पूरः पुष्पवासिताम् बीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि सुरेश्वरि ।। इति मुखवासार्थं ताम्बूलं समर्पयामि बगलामुख्यै नमः कहकर देवी को ताम्बुल का बीड़ा अर्पण करो ।

दक्षिणा :—यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यतन्वहम् सूक्तं पंचदशर्चं च श्री कामः सततं जपेत्, पूजा फल समृद्धयर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि, स्थापितं ते च प्रीत्यर्थं पूर्णान् कुरु मनोरथान् ।। इति द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि बगलायै नमः बोलकर देवी के समक्ष कुछ द्रव्य दक्षिणा अर्पित करो ।

इसके बाद पुष्पांजलि मंत्र बोलो और देवी के चरणों में पुष्पांजलि समर्पण करो ।

प्रदक्षिणा :—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च, तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे । बोलकर देवि की एक प्रदक्षिणा करें । देवी के चारों ओर प्रदक्षिणा करने की सुविधा न हो तो अपने स्थान पर ही घूम कर प्रदक्षिणा कर लो ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रार्थना :—आराध्ये जगदम्ब दिव्य कविभिः सामाजिकै स्तोतृभि माल्यैश्चन्दन कुंकुमैः परिमलैरर्म्यार्चिते सादरात् । सम्यग्न्यासि समस्त भूत निवहे सौभाग्य शोभाप्रदे । श्री मुग्धे बगले प्रसीद बिमले दुःखापहे पाहिमाम् ।। अनया पूजया महामाया बगलामुखी प्रीयतां नमः । बोलकर देवी को प्रणाम करो ।

इसके बाद कर सको तो बगलामुखी स्तोत्र का जिसमें केवल १७ श्लोक हैं पाठ करो और न्यास सहित बगलामुखी कवच का पाठ भी करो । यदि यह नित्य नहीं कर सको तो आरम्भ व अन्त के दिन ही कर लो । यह स्तोत्र तथा कवच बगलामुखी पाठ की पुस्तक में मिल जायेंगे । यदि संस्कृत न आती हो तो पाठ की पुस्तक के छापे को तथा अपने उच्चारण को किसी पंडित या शास्त्री की सहायता से शुद्ध कर लेना चाहिए । नहीं तो हिन्दी भाषा में ही षोडषोपचार पूजा करके मंत्र का जाप शुरू कर देना चाहिए । जप से पहले मंत्र का न्यास करो ।

अथ विनियोगः ह्लीं ॐ अस्य श्री बगलामुखी मन्त्रस्य नारद ऋषि वृहती छंदो बगलामुखी देवता सम्पूर्ण मनोरथ सिध्यर्थे जपे विनियोगः कहकर पंचपात्र से जल दूसरे पात्र में डालें ।।

ऋष्यादिन्यासः—नारद ऋषये नमः शिरसि । वृहती छन्दसे नमः मुखे । बगलामुख्ये देवतायै नमः हृदि । ह्लीं बीजाय नमःगुह्य । स्वाहा शक्तये नमः पादयो । न्यास करने की विधि पिछले पाठों में विस्तार से बताई जा चुकी है उसी के अनुसार सारे न्यास करो ।

करन्यास :—ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः । ओ३म् बगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा । ओ३म् सर्वदुष्टानांमध्यमाभ्यां वौषट । ओ३म् वाचं मुख पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम् । ओ३म् जिव्हांकीलय कनिष्ठिकाभ्यां बौषट् । ओ३म् बुद्धि विनाशय ह्लीं ओ३म् स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादिन्यासः—ओ३म् ह्लीं हृदयाय नमः । ओ३म् बगलामुखि शिरसे स्वाहा । ओ३म् सर्वदुष्टानां शिखायै वौषट् । ओ३म् वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम् । ओ३म् जिव्हां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट् । ओ३म् बुद्धि विनाशाय ह्लीं ओ३म् स्वाहा अस्त्राय फट् ।

अक्षरन्यासः—ओ३म् ह्लीं नमः शिखायाम् । ओ३म् बगलामुखी नमः दक्षिण नेत्रे । ओ३म् सर्वदुष्टानां नमः वामनेत्रे । ओ३म् वाचं नमः दक्षिण कर्णे । ओ३म् मुखनमः वामकर्णे । ओ३म् पदं नमः दक्षिण नास पुटे । ओ३म् स्तम्भय नमः वाम नासापुटे । ओ३म् जिव्हां कीलय नमः मुखे । ओ३म् बुद्धि विनाशय नमः गुह्ये ।

दिगन्यास—ओम ह्लीं प्राच्यै नमः । ओ३म् बगलामुखी आग्नेयै नमः । ओ३म् वाचं दक्षिणायै नमः । ओ३म् मुखं नैऋत्यै नमः । ओ३म् पदे प्रतीच्यै नमः । ॐ स्तम्भय वायव्यै नमः । ओ३म् जिव्हां उदीच्यै नमः । ओ३म् कीलय ऐशान्यै नमः । ओ३म् बुद्धिं ऊर्ध्वायै नमः ओ३म् विनाशय भूम्यै नमः ।

उपरोक्त न्यास करने के बाद निम्न मंत्र से देवी का ध्यान करो और उसके बाद हल्दी की माला से देवी के मंत्र का जाप आरम्भ कर दो ।

ध्यान मंत्र :—

सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं ।
हेमाभांगरुचिं शशांक मुकुटां सच्चम्पक स्रग्युताम् ।।
हस्तैर्मुद्गर पाशबद्ध रसनां संबिभ्रतीं भूषणै-
र्व्याप्तांगीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिंतये ।।

प्रथम दिन जितनी संख्या में जप करो उसी क्रम से प्रतिदिन करना चाहिए । बीच में कम ज्यादा करने से जप खण्डित हो जाता है । यदि किसी विशेष कार्य के लिए अनुष्ठान कर रहे हो या किसी दूसरे के लिए कर रहे हो तो इस नियम का पालन अवश्य करना चाहिए । यदि मंत्र को सिद्ध करने के लिए अनुष्ठान कर रहे हो तो ऐसी संख्या निर्धारित कर लो जिसे सुविधापूर्वक निबाह सको ।

जप का दशांश हवन नित्य या बाद मे इकट्ठा करने के लिए हल्दी की गांठों का जौ व अन्य सामग्री तिल श्वेत चावल बुरा पिसा हुआ, गुड़ का चूरा, देवदार की लकड़ी आदि पीत द्रव्यों से करना चाहिए । हवन का दशांश तर्पण किया जाता है । तर्पण के जल में हल्दी पीले पुष्प तिल हरताल, चावल, इलायची डाली जाती है । तर्पण का दसवां भाग मार्ज्जन करने का भी विधान है और उसका दसवां भाग ब्राह्मण भोजन करा देना चाहिए ।

जब मंत्र सिद्ध हो जाए और किसी शत्रु का स्तम्भन करना हो तो मंत्र में इस प्रकार से उस व्यक्ति का नाम जोड़कर जप किया जाता है । इस मंत्र के द्वारा बुद्धि का, शास्त्र का देव-दानव भूत प्रेत सर्प आदि का भी स्तम्भन किया जाता है ।

ओ३म् ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं..........नामक शत्रुं स्तम्भय स्तम्भय जिव्हां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ओ३म् स्वाहा ।

रिक्त स्थान में जिसका स्तम्भन करना हो उसका नाम लगा देने से और उसी प्रकार जप करने से कार्य सिद्ध होता है ।

आकर्षण वशीकरण के लिए ९ इंच चौड़ी नौ इंच लम्बी योनि की शकल की वेदी बनाओ यह ऊपर के भाग में ९ इंच चौड़ी होगी और नीचे के भाग में कम होती हुई ३ इंच रह जायेगी । इसके चारों ओर तीन घेरे हल्दी के चूर्ण के बनाओ । जंगल में पशुओं के गोबर के जो कण्डे अपने आप बन जाते हैं उन्हें आरने कण्डे कहते हैं । उन कण्डों से या गाय के गोबर से बनाये गए कण्डों से तिल शहद घी शक्कर मिली हुई हवन सामग्री से उसमें थोड़ा नमक मिलाकर पीली सरसों के साथ हवन करने से वशीकरण व आकर्षण होता है । वशीकरण करने के लिए मंत्र में शत्रु शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता व्यक्ति वश्य कहा जाता है ।

तेल में डूबी हुई नीम की पत्ती हवन सामग्री में विशेष मात्रा में डालने से दो व्यक्तियों में उच्चाटन कराया जा सकता है । हल्दी नमक हरताल मिलाकर हवन करने से शत्रु का स्तम्भन होता है । इसमें मंत्र में दोनों व्यक्तियों के नाम के साथ-साथ विनाशाय के बाद विद्वेषणं शब्द भी जोड़ा जाता है ।

हवन करते हुये यदि गीध व कौवे के पंख भी सरसों के तेल में भिगोकर बहेड़ा मिलाकर आहुति में डाल दिये जायं तो उच्चाटन तीव्र होता है । बहेड़ा त्रिफला का एक अंग होता है ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अनुभव सिद्ध मन्त्र-तन्त्र औषध प्रयोग

(लेखक—लक्ष्मी नारायण शर्मा)

सन्तान तन्त्र

इस तन्त्र को गर्मी के महीनों में नहीं करना चाहिये क्योंकि इसमें अजवायन का प्रयोग है जो कुछ गर्म तासीर की होती है। करें भी तो मात्रा कम रखें। सम्बन्धित व्यक्ति को आप १०० ग्राम अजवायन लाने के लिये कहिये। मासिक धर्म की समाप्ति के बाद से उसमें से २ ग्राम के करीब रोज रात्रि को सोने से पहले सन्तान की इच्छा रखने वाली स्त्री दूध के साथ ले। २५-३० दिन बाद यदि दूसरा मासिक धर्म न हो तो आगे लेना बन्द कर दे। मासिक धर्म हो जाये तो लेती रहे। यह प्रयोग ४० दिन तक करना होता है, आगे मासिक धर्म नहीं होगा और गर्भ रह जायेगा। परन्तु कभी-कभी दुबारा भी यही ४० दिन का प्रयोग करना पड़ता है। इस तन्त्र में प्रयुक्त की जाने वाली अजवायन को जिस मन्त्र से अभिषिक्त करना होता है वह प्रसिद्ध सन्तान गोपाल मन्त्र है। इसको विधि से सिद्ध किया हो तो अचूक फल देता है। नहीं तो महारात्रि मोहरात्रि कालरात्रि आदि के अवसर पर कुछ जप कर लेना चाहिये। जिस समय आप किसी को मन्त्र अभिषिक्त करके अजवायन दो उससे पहले ५१ बार इस मन्त्र को पढ़ो और उसमें फूंक मार कर अभिषिक्त कर दो। भगवती के सामने रखकर प्रार्थना करो भेंट, चढ़ावा दो, मनौती मनवा दो कि सन्तान होगी या पुत्र होगा तो यह चढ़ावा चढ़ायेंगे और अजवायन दे दो। रोज कितनी खानी है इसकी मात्रा बता दो। मात्रा अजवायन के १०० दानों के लगभग हो। गर्मी में ५० दाने की मात्रा काफी है।

सन्तान गोपाल मन्त्र : ॐ श्री ह्रीं क्लीं ग्लौं देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते, देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥

इस तन्त्र को देने से पहले यह पूछ लो कि पति-पत्नी दोनों ने डाक्टरी परीक्षा करा ली है और उनकी जननेन्द्रियां प्रजनन के योग्य हैं। कहीं कोई शारीरिक खराबी तो नहीं है शुक्राणु ठीक हैं। यह अनुभूत तन्त्र है। इसमें सन्तान गोपाल मन्त्र को सिद्ध करना आवश्यक है। ११००० आवृत्तियां करके पुरश्चरण किया हो। अथवा ग्रहण आदि के अवसर पर १०८ मालायें की हों तो फल देने वाला हो जाता है। यदि इस प्रकार से इसे सिद्ध नहीं किया जा सका है तो जो मन्त्र आप ने सिद्ध किया हुआ है उसके साथ इस सन्तान गोपाल मन्त्र को लिखकर स्त्री-पुरुष दोनों का नाम लिख कर सन्तान इच्छा या पुत्र इच्छा लिख कर जन्त्र भी दे दो जिसे सन्तान की इच्छुक महिला अपने शरीर पर धारण करें।

जब मासिक धर्म बन्द हो जाये तो अजवायन खाना बन्द कर देना चाहिये और गर्भ रक्षा के लिये शरीर पर रक्षा कवच गले में या बाहु पर बांधना चाहिये तथा कमर में अभिमन्त्रित करके गण्डा बांध देना चाहिये। इसका विचार नहीं करना चाहिये कि कमर में बांधने से गण्डा दूषित हो जायेगा। अन्य वैद्यक इलाज उपाय जब जैसे आवश्यक हों करते रहना चाहिये। मनौती सन्तान होने पर ही चढ़वानी चाहिये।

सरस्वती तन्त्र

विद्या प्राप्ति के लिये, विद्या की उन्नति के लिये, परीक्षा में उत्तम सफलता के लिये, वक्तृता में पटु होने के लिये, धारा प्रवाह भाषण देने के लिये, कविता, कहानी, साहित्य में धुरंधर होने के लिये तथा वाक् सिद्धि के लिये सरस्वती मन्त्र का जाप किया जाता है। सरस्वती देवी के मन्त्र-तन्त्र को सिद्ध करने से क्या और कैसे-कैसे लाभ मिलते हैं। मां सरस्वती का मुख्य मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ ह्रीं सरस्वत्यै मया दृष्ट्वा वीणा पुस्तक धारिणी।
हंस युक्त विमानूढ़ा विद्या दान ददातु मे ह्रीं नमः ॥

इस मन्त्र का ग्यारह हजार जाप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इसका पुरश्चरण पहले बताई विधि से ११०० हवन आहुतियां, ११० तर्पण ११ मार्जन तथा १ से, ११ ब्राह्मण भोजन के द्वारा किया जाता है। अंगन्यास करन्यास निवारण मन्त्र के अनुसार ही है जो पहले बताये गये हैं। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे मन्त्र के साथ, वही करना चाहिये। दुर्गा सप्तशती का प्रथम चरित महाकाली का, दूसरा महालक्ष्मी का तथा तीसरा चरित चौथे अध्याय से १३वें अध्याय तक महा सरस्वती के लिये है। उसका पाठ कर सको तो उत्तम है। नहीं तो केवल ग्यारहवें अध्याय का पाठ पुरश्चरण अवधि में नित्य कर लेना चाहिये। महासरस्वती का ध्यान मन्त्र इस प्रकार है:—

घण्टा शूल हलानि शंख मुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधती धनान्त विलसच्छीतांशु तुल्य प्रभाम्।
गौरी देह समुद्भवां त्रिजगता माधार भूतां महा
पूर्वा मंत्र सरस्वती मनु भजे शुम्भादि दैत्यार्दिनीम् ॥

यदि किसी को विद्या सम्बन्धी उपरोक्त कार्यों के लिये यन्त्र देना है तो १५ या २० का यन्त्र जो भी आप ने सिद्ध किया हो उसको उपरोक्त श्लोक के साथ लिख कर भोजपत्र पर या सफेद कागज पर श्वेत चन्दन की बहुलता वाले अष्टगंध से अनार की कलम से लिख कर दिया जाता है। यदि माता सरस्वती का यन्त्र सिद्ध करना चाहो तो वह नीचे दिया जा रहा है। यन्त्र सिद्ध करने की विधि बताई जा चुकी है। इसको माता सरस्वती की मूर्ति या चित्र के सम्मुख बैठ कर सिद्ध किया जाता है। महारात्रि, मोहरात्रि, कालरात्रि ग्रहण के समय अथवा बृहस्पतिवार के दिन पुष्य नक्षत्र में गुरु पूर्णिमा को शुभ मुहूर्तों में शुभ योगों में कर सकते हो। समय रात्रि का तीसरा प्रहर सर्वोत्तम होता है।

माता सरस्वती के हवन में चीनी, चावल, सफेद तिल विशेष होते हैं। श्वेत रंग के पुष्प, श्वेत वस्त्र, श्वेत मिष्ठान्न, प्रसाद नैवेद्य, श्वेत चन्दन की ही प्रधानता होती है। माला तुलसी की या मोती की या चांदी की होती है। आसन भी श्वेत रंग का लिया जाता है।

सरस्वती यन्त्र

यन्त्र सिद्ध करते समय पहले त्रिकोण बनाओ फिर बायें तरफ का अर्ध वृत्त फिर सीधी ओर का अर्ध वृत्त उसके बाद नीचे का अर्ध वृत्त बनाओ। पहले ॐ फिर श्री फिर ह्रीं फिर क्लीं और अन्त में नमः लिखो। इस प्रकार ११००० यंत्र लिखने पर यह यन्त्र सिद्ध हो जाता है। यथा विधि हवन आदि कराना चाहिये। पुरश्चरण की अवधि से ही

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मन्त्र के साथ यन्त्र भी सिद्ध कर सकते हो । अलग सिद्ध करो तो इसका हवन आदि अलग से करना चाहिये ।

सरस्वती यन्त्र

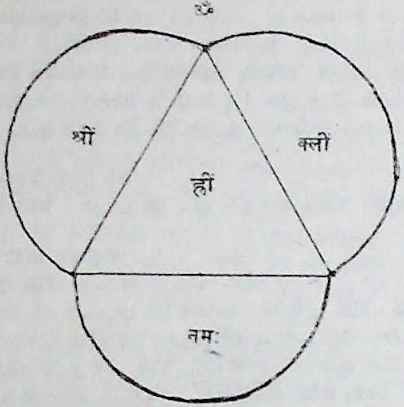

सरस्वती तन्त्र

बृहस्पतिवार के दिन इन सात वस्तुओं को उठा कर रख देने से (विद्यार्थी के हाथों से) मनौती मान कर बिना किसी को कहे-सुने बिना टोके रख देना चाहिये । परीक्षा साक्षात्कार में अवश्य सफलता प्राप्त होती है । जब सफल हो जाओ तो उसकी मनौती पूरी कर देनी चाहिये । (१) सफेद चावल साबुत दाने अक्षत-७ तोले, (२) सफेद फूल-७, (३) सफेद कपड़े का टुकडा-७० से.मी. (४) जनेऊ का जोड़ा-७, (५) कोई धार्मिक पुस्तक-७ (६) सफेद तिल-७ तोले, (७) सफेद चन्दन सात टुकड़े पतले-पतले, (८) छोटे-छोटे शंख-७, इन सात चीजों को सफेद कपड़े में बांध कर सरस्वती यन्त्र के साथ माता सरस्वती के चित्र के पीछे या किसी सुरक्षित स्थान में उठा कर रख दो । जब इच्छा पूरी हो जाय तो इन वस्तुओं को किसी विद्वान् ब्राह्मण को या मन्दिर में दान कर दो । यंत्र को वापस ले लो दूसरों के काम आ सकता है । साथ में कुछ द्रव्य रख दो । इसके साथ में जो सरस्वती मंत्र व यन्त्र भी लिख कर रखा हो तो सोने में सुहागे का काम करता है । जिस व्यक्ति के लिए करो उसका नाम उस यन्त्र में लिख देना चाहिये । अमुक व्यक्ति अमुक कामना प्राप्ति हेतु प्रार्थना करिष्ये । सिद्ध सरस्वती यन्त्र हमारे यहां से भी मंगाया जा सकता है ।

ग्रह शांति के लिये अनुष्ठान

गोचर में जौनसा ग्रह प्रतिकूल चलता है उस राशि से किस भाव में वह चल रहा है उसी के अनुसार उसी भाव सम्बन्धी चिन्ता, बाधा, पीड़ा आदि उत्पन्न करता है तथा उस ग्रह की शान्ति के उपाय करना जरूरी हो जाता है । हमारे जीवन पर सबसे अधिक प्रभाव शनि का पड़ता है और यह ग्रह बहुधा प्रतिकूल चलता है । जब इसकी साढ़े साती आती है तब कम-ज्यादा यह साढ़े सात वर्ष तक प्रतिकूल ही रहता है । इसके अतिरिक्त चौथा, सातवां, आठवां, दसवां भी कण्टक शनि के नाम से खराब ही होता है । यह ग्रह ३, ६, ११वें भाव में ही अच्छा फल देने वाला रहता है । इसकी शान्ति के उपायों में शनिवार के दिन तांबे के पैसे (अब तांबे के पैसे प्रचलित नहीं हैं अतः कोई भी छोटे सिक्के या तांबे का कोई टुकड़ा) सरसों के तेल में अपना मुख देखकर तेल दान करना चाहिये । इसके अलावा लोहे की बनी हुई कोई उपयोगी वस्तु जैसे चिमटा, संडासी, चाकू, छुरी आदि साबत उड़द, काला कपड़ा, काले या नीले फूल, पुराने उतरे हुये जूते, सतनजा भी शनिवार के दिन यथाशक्ति यदा-कदा देते रहना चाहिये । मंगलवार-शनिवार को हनुमानजी का पूजा प्रसाद चढ़ाते रहना चाहिये । सुन्दर काण्ड का या हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिये । हो सके तो मंगल का व्रत भी रख लेना चाहिये । शनि का मन्त्र : ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः है— इसका २३००० जाप है । जप समय सन्ध्या काल है शमी यानी छोंकर के वृक्ष की समिधा से २३०० आहुतियां देकर हवन करने से शनि का दोष निवारण हो जाता है । ऊपर बताये गये उपायों में से जितने भी कर सको उत्तम रहते हैं । जब शनि खराब होता है तब नीलम धारण करने से लाभ होता है परन्तु इस नग को धारण करने से पहले यह देखना पड़ता है कि आपको माफिक है या नहीं । नीलम के नग को पंचामृत में धो कर रात को सोते समय अपने सिरहाने तकिये के नीचे रखकर सो जाओ । वह स्वप्न में संकेत देगा और स्वप्न के अनुसार ही विचार करो या कराओ कि यह कैसा फल देगा शुभ या अशुभ । यह तीन घंटे में या तीन दिन में ही अपना कोई न कोई चमत्कार शुभ या अशुभ प्रभाव दिखा देता है । परन्तु रिस्क लेने से पहले अच्छा है कि इसके स्वप्न के संकेत समझ लिये जायें और यदि संकेत ठीक नहीं है तो दूसरा नग लेकर उसकी इसी प्रकार परीक्षा की जाय । इसके स्थान पर यदि सिद्ध रक्षा कवच पहना जाय या लोहे का कड़ा या अष्टधातु की अंगूठी पहनी जाय तो सुरक्षित रहती है । नीलम प्रायः ४ रत्ती का स्टील की अंगूठी में दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में (स्त्रियों के बांये हाथ में) सूर्यास्त से दो घंटे पूर्व शनिवार के दिन प्रथम बार धारण किया जाता है । धारण करने से पहले अंगूठी को पंचामृत से धोकर गंगाजल या शुद्ध जल से साफ करके पहनना चाहिये ।

राहु-केतु

शनि के बाद जो सबसे अधिक अनिष्टकारक ग्रह हैं वे राहु और केतु हैं । जो अपने इष्ट देव की पूजा-पाठ करते हैं उनके अनन्य शरणागति हैं, हनुमान जी या बटुक भैरव जी की, देवी की पूजा करते हैं उन पर ग्रहों का प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता । यह निश्चित बात है । अस्तु सभी ग्रहों के दुष्ट प्रभाव से बचने के लिये जरूरी है कि किसी बड़ी ताकत का सहारा लिया जाय । देवों के देव परम पिता परमात्मा या जगन्माता या इनके ही रूपों की शरण ली जाय ।

राहु का मन्त्र : ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः संख्या [illegible] हवन दूर्वा [illegible]
[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पदार्थ —सीसा (लैड), काले तिल, सरसों, सरसों का तेल, नीले फूल, नीला कपड़ा, चाकू, छुरी या लोहे का खड्ग या खिलौनेनुमा तलवार, कंबल या ऊनी बिछावनी का टुकड़ा, घोड़ा या घोड़े के प्रतीक लकड़ी या लोहे का बना घोड़े का खिलौना यह सब चीजें नीले कपड़े में बांध कर छाज या सूप में रखकर शनिवार के दिन जोशी को दान कर देनी चाहिये। सतनजा में यह सातधान्य होते है :—साबत उड़द, साबत मूंग, कणक (गेहूं), छोले (चने), जौ, चावल और कंगनी या बाजरा। सतनजे का भी दान कर देना चाहिये।

केतु मन्त्र : ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः संख्या १७००० जप समय राहू-केतु का रात्रि में है। हवन सामग्री में कुशा का विशेष मिश्रण किया जाता है। दान पदार्थ लोहा, काले तिल, सतनजा, सरसों का तेल, धूम्रवर्ण के वस्त्र का टुकड़ा व इसी रंग के पुष्प, नारियल, कम्बल, ऊनी कपड़ा, कोई हथियार या उसका प्रतीक, बकरा या उसका प्रतीक एक लकड़ी क खिलौना बकरा।

राहू का रत्न गोमेद है जिसको चाँदी की या अष्ट धातु की अंगूठी में पहना जाता है। सूर्यास्त के २ घंटे बाद दाहिने हाथ की मध्यमा में पहनना चाहिए। वजन ४ रत्ती। केतु के लिए लहसुनिया पहना जाता है। वजन ४ रत्ती। दाहिने हाथ की कनिष्ठिका या मध्यमा में अर्धरात्रि के समय पहनना चाहिए। शनि, राहु व केतु के रत्न शनिवार के दिन ही प्रथम बार पहनना आरम्भ करना चाहिए। आम तौर से इन रत्नों का जो वजन लिया जाता है वह दे दिया है। परन्तु राशि के हिसाब से प्रत्येक व्यक्ति के लिए इनकी कम या ज्यादा रत्ती भी बताई जाती है। राहू-केतु के बुरे प्रभाव को दूर करने के लिए हाथी दाँत पहनने से भी काम होता है।

बृहस्पति : महत्त्व की दृष्टि से अगला ग्रह बृहस्पति ही है।

गुरु एक शुभ ग्रह है। परन्तु गोचर में कभी-कभी यह भी खराब आ जाता है और विघ्न, बाधा, पीड़ा व्यर्थ व्यय आदि कराने वाला हो जाता है। इसकी शान्ति के लिये इसका मन्त्र है :—ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः इसकी संख्या १६००० है। हवन में पीपल के वृक्ष की समिधायें विशेष प्रयोग की जाती हैं। दान पदार्थों में कांसा, धातु का टुकड़ा, चने की दाल, खांड, चीनी, घी, पीला कपड़ा, पीला फूल, हल्दी, पुस्तक, पीले फल, केले, अमरूद आदि घोड़ा या घोड़े का प्रतीक खिलौना। बृहस्पति जब खराब हो या जन्मपत्री में गुरु नीच या शत्रु राशि का हो या बृहस्पति की दशा खराब चल रही हो अथवा जन्म सूर्य-गुरु की राशि का हो तो पुखराज धारण कराया जाता है। यह आम तौर से सवा पांच रत्ती का सोने की अंगूठी में दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली में पहना जाता है। सूर्यास्त से एक घण्टे पहले प्रथम बार गुरुवार के दिन पहनना आरम्भ करें।

सूर्य

सूर्य सब ग्रहों का राजा है। यदि जन्मपत्री में नीच राशि का पड़ जाय तो सब ग्रहों के शुभ फलों में न्यूनता ला देता है। इच्छा शक्ति कम कर देता है। क्योंकि एक राशि पर केवल एक मास तक रहता है, इस कारण गोचर में एक साथ बहुत दिन तक खराब नहीं चलता, परन्तु दशा अन्तरदशा अधिक दिन तक खराब आ सकती है। तब सूर्य का उपाय करना चाहिए। किसी जमाने में सूर्य की पूजा मुख्य देवता के रूप में प्रचलित थी। सूर्य भगवान् की नित्य प्रातः काल पूजा करने से बल-बुद्धि तेज की वृद्धि होती है। इनका जप मन्त्र ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः" है। जिसकी जप संख्या केवल सात हजार है। समय प्रातः काल है। अर्क-(अकौआ) या आक की समिधाओं से लाल चन्दन मिलाकर हवन किया जाता है। नित्य न कर सके तो रविवार के दिन ही करे। प्रातः सूर्य को जल चढ़ाने से भी बहुत लाभ होता है। स्नान करके पूर्व की ओर मुख करके खड़े हो जाओ और सूर्य को एक लोटा जल से अर्घ्य दो। सूर्य की किरणें जल के द्वारा तुम्हारे शरीर में प्रवेश करें फिर अपने स्थान पर ही एक बार घूम कर परिक्रमा दो और पृथ्वी पर गिरे हुए जल को अपने शरीर के मुख्य भागों से स्पर्श कराओ। मस्तक, हृदय, बाहुओं पर लगाओ। सूर्य भगवान् को नमस्कार करो। जन्मकुंडली में जिनका सूर्य नीचे का था और जिनके उत्तम ग्रहों का प्रभाव नहीं हो रहा था ऐसे कितने ही लोगों को मैंने सूर्य पूजा, जल चढ़ाना बताया और केवल रविवार को ही यह नियम करने से उनको अप्रत्याशित लाभ हुआ।

सूर्य के प्रभाव को ठीक करने के लिये माणिक पहना जाता है। इसे सोने की अंगूठी में दाहिने हाथ की तर्जनी में सूर्योदय के समय रविवार के दिन से पहनते हैं। वजन सवा रत्ती से लेकर तीन रत्ती तक होता है। सूर्य का दान ब्राह्मण को दिया जाता है। जिसमें तांबा, गेहूं, गुड़, घी, लाल कपड़ा, लाल फूल, केसर, मूंगा, लाल गाय सजीव न हो सके तो मिट्टी की बनी गाय, लाल चन्दन इन पदार्थों का दान किया जाता है।

चन्द्रमा

चन्द्रमा गोचर में एक राशि पर केवल ढाई दिन के लगभग रहता है। परन्तु जन्म-कुंडली में आठवाँ हो, घातक पीड़ादायक हो या नीच राशि में हो, इसी प्रकार के चन्द्रमा की दशा हो तो निम्न उपाय किये जाते हैं। बच्चों के गले में चांदी का चन्द्रमा बनवा कर पहनाया जाता है। चन्द्रमा की शान्ति के लिए उसके प्रभाव को शुभ करने के लिये चांदी में मोती पहना जाता है। दो सवा दो रत्ती का सच्चा मोती दाहिने हाथ की कनिष्ठिका उंगली में संध्या के समय सोमवार के दिन से पहनते है। यह चित्त को शांत करता है और चन्द्रमा सम्बन्धी रोगों पर भी शुभ प्रभाव डालता है।

चन्द्रमा का जप मन्त्र : —ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः चन्द्राय नमः" है। जप संख्या ११००० है। जप समय संध्याकाल हवन सामग्री में पलाश वृक्ष की समिधाओं का विशेष प्रयोग किया जाता है। सफेद चन्दन की लकड़ी भी मिलानी चाहिये। दान पदार्थों में :—चांदी, चावल, मिसरी, दही, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, शंख, कपूर, श्वेत बैल, श्वेत चन्दन ब्राह्मण को दान किया जाता है; सजीव बैल के स्थान पर मिट्टी का बना खिलौना सफेद बैल का दिया जा सकता है। चन्द्रमा मन तथा मस्तिष्क का स्वामी होने से जब विपरीत फल देने वाला हो जाता है तो विक्षिप्तता मिरगी हिस्टीरिया आदि के दौरे बुद्धिभ्रंश आदि उत्पन्न करता है। कफ के रोग, श्वास दमा आदि भी देता है। उपरोक्त उपाय करने से लाभ होता है।

मंगल [भौमः]

मंगल नीच राशि का पड़ा हो, नीच राशि का गोचर में अशुभ चल रहा हो, अथवा अशुभ मंगल की दशा अन्तरदशा आये तो उसमें यह ग्रह शरीर से रक्त निकालने वाली बीमारी बवासीर या चोट आदि से, ओपरेशन आदि से रक्त बहाने वाले कुयोग बनाता है। मामूली सी चोट से अधिक रक्त बहता है। इसके कुप्रभाव को कम करने के लिये या दूर करने के लिये हनुमानजी की पूजा प्रसाद उपासना बहुत लाभदायक होती है। इसके लिये बच्चों के गले में या बाहु पर मूंगा डाला जाता है। सच्चा न हो तो नकली मूंगा भी बच्चों को पहनाया जा सकता है। वयस्क लोग दाहिने हाथ की अनामिका उंगली में सोने में सवा पांच रत्ती का मूंगा मंगलवार के दिन से सूर्योदय के एक घण्टे बाद प्रथम प्रहर में धारण करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इसका जपमंत्र ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः है। जप संख्या १०००० है। जप समय प्रातः प्रथम प्रहर। हवन में खैर की लकड़ी व रक्त चंदन की समिधा विशेष रूप से प्रयोग में लाई जाती है। दान पदार्थों में :—तांबा, मलका मसूर की दाल, गुड़, घी, लाल कपड़ा, लाल कनेर के फूल, केसर, कस्तूरी, लाल बैल (या प्रतीक स्वरूप खिलौना बैल) लाल चन्दन आदि का मंगलवार के दिन ब्राह्मण को दान करना चाहिये। हनुमानजी को चोला भी चढ़ाया जाता है। घी, सिंदूर आदि लेपन कराया जाता है।

बुध

बुध का रत्न पन्ना है। तीन रत्ती वजन का पन्ना दाहिने हाथ की सबसे छोटी उंगली जिसे कनिष्ठिका कहते हैं पहना जाता है। सोने में या चांदी में दिन के प्रथम प्रहर में बुधवार के दिन से पहनें। चांदी-सोना मिश्रित या कांसा धातु में भी पहना जा सकता है। दान पदार्थ—कांसा धातु, मूंग साबत, खांड या चीनी, घी, हरा कपड़ा, चम्पा पुष्प या सब तरह के मिश्रित पुष्प, हाथी दांत का टुकड़ा, कपूर, ऋतुफल, कोई हथियार या उसका प्रतीक बुधवार के दिन दान करना चाहिये। यह दान ब्राह्मण या किसी विद्वान् को देना चाहिये। जप मन्त्र है—ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः जप संख्या ९०००। जप समय मध्यान्हकाल हवन में हरी गिलोय और वनस्पतियों की जड़ें मिलाई जाती हैं। चावल, गोरोचन, शहद भी मिलाया जाता है।

— एक राशि पर एक मास के लगभग रहता है। सूर्य के आसपास ही चलता है। गोचर में खराब हो, कुण्डली में पड़ा हो, नीच राशि में हो, दशा अन्तरदशा खराब हो तो बुध की शान्ति कराई जाती है। हाथी दांत पहनने से भी लाभ ग्रस्त होता है।

शुक्र : गोचर में अनिष्ठ कारक हो, कुण्डली में बुरे भावों में पड़ा हो नीच का हो, ग्रस्त हो दशा अन्तरदशा खराब हो तो शुक्र ग्रह की शान्ति करानी पड़ती है। यह ग्रह सूर्य के सबसे पास में है और एक राशि पर एक मास के लगभग ही रहता है। गोचर में तो ज्यादा देर तक खराब नहीं रहता परन्तु दशा अन्तरदशा लम्बी हो सकती है।

शुक्र का जप मन्त्र ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः शुक्राय नमः जप संख्या १६००० समय संध्याकाल हवन सामग्री में पीपल के वृक्ष की समिधायें, इलायची, केसर भी मिलाई जाती है। दान पदार्थ :—चांदी, चावल, मिसरी, दूध, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, खुशबूदार तेल या इतर की शीशी या फाया। दही, सफेद घोड़ा या उसका प्रतीक, सफेद चन्दन शुक्रवार के दिन किसी पंडित, ब्राह्मण को दान किया जाता है। इसका रत्न हीरा है जो चांदी या सोने में करीब सवा रत्ती का दाहिने हाथ की कनिष्ठा उंगली में शुक्रवार के दिन प्रातःकाल से पहनना चाहिये। वीर्यवान बनाता है, पुरुषत्व को बढ़ाता है। सन्तानोत्पत्ति की शक्ति देता है।

रोग औषधि

हमारे शरीर में जब किसी विटामिन की कमी हो जाती है अथवा जीवाणुओं का सन्तुलन बिगड़ जाता है तब रोग होते हैं। सभी ग्रहों की किरणों व रश्मियों का बुरा या अच्छा प्रभाव शरीर पर पड़ता है। जब भी किसी ग्रह की किरणों का बुरा प्रभाव पड़ता है तो तत्सम्बन्धी पोषक तत्त्व की कमी हो जाती है और शरीर रोगी हो जाता है। ज्योतिष के अनुसार ग्रहों की दशा अन्तरदशा को देखकर गोचर में ग्रहों की स्थिति देखकर तथा रोग के लक्षण देखकर यह निर्णय किया जाता है कि रोगी का रोग किस ग्रह की कुदृष्टि का फल है ! कब से है ? लम्बी बीमारियां, चर्म रोग आदि शनि के कुप्रभाव से होते हैं। दांत, हड्डी के रोग, पीलिया आदि गुरु के कुप्रभाव से, चोट, दुर्घटनायें, बवासीर आदि मंगल के कारण, दमा, श्वांस रोग, कफ आदि बुध या चन्द्रमा के कारण, नपुंसकता वीर्य की कमी, वीर्य संबंधी गुप्त रोग शुक्र के कारण होते हैं। वैसे ज्योतिष शास्त्र में रोगों के बारे में विस्तृत वर्णन है। शरीर के जिस अंग में हो वह किस ग्रह का किस भाव में है। उस पर किस ग्रह की दृष्टि है इस पर विचार करके यह निदान किया जाता है कि किस ग्रह के कारण यह रोग है। जब से आरम्भ हुआ है तब से ही वह ग्रह भी प्रतिकूल हुआ होगा और जब वह ग्रह अनुकूल होगा रोग भी दूर होगा। उसी ग्रह के अनुसार निम्न औषधियों का प्रयोग रोगी को करने के लिये बताओ।

नीचे जो ग्रहों के अनुसार औषधियां लिखी हैं उनको इकट्ठा करके कूट लेना चाहिये या कुचल लेना चाहिये। फिर उनको व डेढ़ दो लीटर पानी में २४ घण्टे तक भिगो कर रख देना चाहिये। जब इन औषधियों का सत पानी में आ जाय तो पानी को नितार कर या छान कर किसी बर्तन या बोतल में रख लेना चाहिये और फोक को बची हुई औषधियों को फेंक देना चाहिये। बोतल में रखे औषधियों के सत में से थोड़ा जल स्नान के पानी में मिला कर रोगी को स्नान कराने से रोग में लाभ होता है। एक बोतल, दो बोतल जितना सत आपने बनाया है वह समाप्त हो जाय तो उसी प्रकार से फिर बना लेना चाहिये। इस प्रयोग को कम से कम ४० दिन तक किया जाता है। यदि रोग बहुत दिन का है और औषधि स्नान से लाभ हो रहा है तो प्रयोग जारी रखना चाहिये। अनुभव से यह सिद्ध हो चुका है कि यदि निदान ठीक हुआ तो इस प्रयोग से लाभ अवश्य होता है। डाक्टरी, वैद्यक इलाज जो चल रहा हो उसको बन्द नहीं किया जाता और यदि डाक्टर ने स्नान करने को मना किया है तो सत के जल को शरीर पर लेपन करना या मालिश करना काफी होगा।

सूर्य की औषधि:—मैनसिल इलायची, देवदारु की लकड़ी का बुरादा, खस, केसर, मुलैठी, लाल पुष्प, लाल कनेर के पुष्प। मात्रा एक-एक तोला, देवदारु और लाल कनेर के पुष्प १० तोले।

चन्द्रमा : शंख, सीपी, सफेद चन्दन, संगमरमर का पिसा हुआ चूरा, गजमद, पंचगव्य, एक-एक तोला शंख, संगमरमर का पत्थर, सफेद चन्दन, सीपी को पानी में घिस कर लेप बनाया जाता है। गजमद हाथी के मद को कहते हैं जो मिल जाय तो ठीक है नहीं तो नहीं। पंचगव्य में गाय के घी, दूध, दही, गोबर व मूत्र इन पांच वस्तुओं को मिलाया जाता है।

मंगल : बेलपत्र के वृक्ष की छाल, लाल चन्दन का चूरा, लाल पुष्प, सिंगरफ, मौलसिरी के फूल, मालकंगनी सब १-१ तोला, लाल चन्दन ५ तोला।

बुध : गाय का गोबर, अक्षत चावल, अमरूद, गोरोचन(एक रत्ती), शहद, मोती, सोने का आभूषण। मोती व सोने को बाद में निकाल कर रख लेना फेंकना नहीं। सब चीजें बराबर भाग, अमरूद विशेष।

गुरु : मालती के फूल, सफेद सरसों जिसे पीली सरसों भी कहते हैं। मुलैठी, शहद, मालती पुष्प व मालती लता की डाली पत्ती विशेष।

शुक्र : इलायची, मैनसिल, केसर और किसी भी सुगन्ध देने वाले वृक्ष या लता की जड़।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शनि : काले तिल, सुरमा, अंजन, लोबान, पिसा हुआ सौंफ, छौंकर की लकड़ी का बुरादा। छौंकर शमी वृक्ष को कहते हैं।

राहु : लोबान तिल के पत्ते, कस्तूरी, हाथी दांत को घिस कर उसका कुछ अंश पिसे हुए लोबान में मिला लिया जाय।

केतु : लोबान, हाथी दांत, तिल के पत्ते, बकरी का मूत्र ३ माशे के लगभग।

उपरोक्त औषधियों में मात्रा की कोई विशेष बंदिश नहीं है। मंहगी वस्तुयें कम मात्रा में ली जा सकती हैं। केसर, कस्तूरी, गोरोचन आदि थोड़ा-थोड़ा ले लें। सख्त चीजों को घिस लें पीस लें इनमें से कोई चीज न मिले तो कोई बात नहीं है, जितनी मिले उतनी ही ले लें। इनके अतिरिक्त निम्न जड़ी, बूटियां सभी ग्रहों के लिए समान रूप से अलग से मिलाई जाती हैं—

लाजवन्ती (छुईमुई), कूट खिल्लां, कांगनी जौ, सरसों, हल्दी, पठानी लोध, गिलोय, मुलैठी, हरी दूब, तुलसी दल। यह पदार्थ या इनमें से जितनी हो सके मिला लेना चाहिये।

गायत्री मन्त्र

गायत्री मन्त्र भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, विद्या, बुद्धि, उत्तम विवेक के देने वाला, मोक्ष देने वाला है। इसको सकाम उपासना में प्रयोग करने के बारे में मेरा मत यह है कि नहीं करना चाहिये। हां विद्या, बुद्धि की उन्नति के लिए, लेखन, वाचन, भक्ति, संगीत, स्वर साधना आदि में प्रयोग किया जा सकता है। इसके जप का पूरा विधान सहज उपलब्ध है। केवल जप से या इस मन्त्र से नित्य ही अग्निहोत्र हवन करने से सब प्रकार का कल्याण होता है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यः धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

श्रीराम का पंचाक्षरी महामन्त्रः—ॐ रामरामाय नमः।

शिव जी का पंचाक्षरी मन्त्रः—ॐ नमः शिवाय।

श्रीकृष्ण भगवान का मन्त्रः—ॐ एं क्लीं कृष्णाय ह्रीं गोविंदाय श्रीं गोपीजनवल्लभाय स्वाहाः ॐ नमः

श्री गणेश जी का मन्त्रः—ऊं वक्रतुण्डेक दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं रींग गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा। यह त्रैलोक्य मोहन गणेश मन्त्र चमत्कारी सिद्ध मन्त्र है।

ऊं नमो भगवते वासुदेवाय। भगवान् विष्णु का द्वादश अक्षर वाला वह प्रसिद्ध मन्त्र है जिसे ध्रुवजी ने जप कर भगवान् का दर्शन प्राप्त किया था।

महा मृत्युंजय मन्त्र : ऊं ह्रौं जूं सः ऊं भूर्भुवः स्वः ऊं त्र्यम्बकं यजामहे ऊं तत्सवितुर्वरेण्यं ऊं सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ऊं भर्गोदेवस्य धीमहि ऊं उर्वारुकमिव बन्धनाद् ऊं धियो यो नः प्रचोदयात् ऊं मृत्योर्मुक्षीय मा मृतात् ऊं स्वः भुवः भूः ऊं सः जूं ह्रौं ऊं॥

असाध्य रोग से निवृत्ति पाने के लिए इस मन्त्र का स्वयं या विद्वान् आचार्य से जप कराने से तथा शिवलिंग पर मट्ठे से अभिषेक कराने से शीघ्र आरोग्य लाभ होता है।

कबीर साहब "ऊं नमः" मन्त्र का जाप करते थे। सनक सनंदन सनातन सनत्कुमार जी ऊं नमः हरिशरणं मन्त्र का जाप करते हैं।

उपरोक्त सिद्ध मन्त्रों का जाप करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है अब तक जितने मन्त्र अनुष्ठान आदि बताये गये हैं उनको स्वयं थोड़ा करके अनुभव करके देखा है। गुरु के बताये हुए हैं। इन मन्त्रों का अनुष्ठान कुछ पढ़ा लिखा व्यक्ति भी कर सकता है।

स्नान करके शुद्ध पवित्र वस्त्र पहनकर शांत एकान्त स्थान में इन शावर मंत्रों का पर्वकाल में जप करने से बहुत शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। केवल ग्रहण काल में जिस समय से ग्रास लगे तब से मुक्ति तक बराबर जप करते रहने से ही सिद्ध हो जाते हैं। कालरात्रि, मोहरात्रि, महारात्रि, जिन्हें होली, दिवाली, शिवरात्रि कहा जाता है, उन रात्रियों में रात के ११ बजे से दो-ढाई बजे तक के समय में जप करने से सिद्ध हो जाते हैं। वैसे किसी भी अमावस्या की रात्रि को इसी समय पर जाप करने से सिद्ध होते हैं। हाथ में माला, मन्त्र देवता का चित्र, दीपक, अग्निहोत्र और पुजा का सामान धूप, दीप नैवेद्य आदि देवता तथा मन्त्र के अनुसार रख लेने चाहिये। इनमें ऐसे किन्हीं-किन्हीं मन्त्रों में मद्य, मांस का भी प्रयोग किया जाता है और ऐसे मन्त्रों को श्मशान में जप करने से तत्काल सिद्धि प्राप्त होती है।

शावर मन्त्र

नेत्र पीड़ा

अक्सर बच्चों की आंख दुखने आ जाती है, लाल हो जाती है, दर्द होता है, रोये हो जाते हैं। नेत्र पीड़ा को निवारण करने का मन्त्र इस प्रकार है :—

"ओउम् नमो राम का धनुष लक्ष्मण का बाण।
आंख दर्द करे तो लक्ष्मण कुमार की आन।"

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात को अर्थात् रात में अमावस्या हो तो श्मशान में या श्मशान के निकट के किसी शिव भैरव या राम मन्दिर में उपरोक्त मन्त्र की १० माला जपने से ही यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। ग्रहण काल, होली, दिवाली के पर्व काल भी उत्तम होते हैं। मन्त्र सिद्ध करने के बाद किसी आंख दर्द के रोगी की दुखती आंख पर नीम के पत्तों के झौरे (डाली) से २१ बार झाड़ने से आंख ठीक हो जाती है। दो या तीन दिन तक झाड़ा कराना चाहिए।

प्रेत बाधा निवारण मंत्र

"ओउम् नमो दीप सोहे दीप जागे पवन चले पानी चले शाकिनी चले डाकिनी चले भूत चले प्रेत चले नौसौ निन्नानवे नदी चले हनुमान वीर की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।"

इस मन्त्र को हनुमान जी के मन्दिर में तेल का दीपक बालकर सवालाख जप करने से ऊपर बताये पर्वकालों में जप करने से सिद्ध होता है। फिर किसी भी भूत प्रेत बाधा ग्रस्त व्यक्ति पर मोर के पंख से १०८ बार झाड़ा देने से प्रेत बाधा दूर हो जाती है।

दूसरा मन्त्र :—ओउम् काला भैरव कपाली जटा रात दिन खेले चौपटा काला भस्म मुसाण जेहि मांगू तेहि पकड़ा आन डंकिनी शंखिनी पट्ट सिहारी जरख चढ़ंती गोरख मारी। छोड़ि-छोड़ि रे पापिन बालक पराया गोरखनाथ का परवाना आया।"

इस मन्त्र को ग्रहण के समय में जप करके सिद्ध किया जाना है। ग्रहणकाल में जितनी संख्या जप हो जाए उससे सिद्ध हो जाता है। २१ बार बोलकर तीर से या सूजे से झाड़ा देने से तथा २१ बार मन्त्र से अभिषिक्त करके पानी पिलाने से बालक पर आई हुई भूत प्रेत बाधा शान्त हो जाती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सिद्धि अनुभूत वशीकरण मन्त्र

[लेखक :—लक्ष्मी नारायण शर्मा, बी०ए०, प्रभाकर, साहित्यरत्न, ज्योतिष वाचस्पति]

वशीकरण एक मन्त्र है तज दे वचन कठोर। सबसे अच्छा वशीकरण मन्त्र तो यही है कि सबसे मीठा बोलो। संसार में रहते हुये अक्सर दूसरों को अपने अनुकूल बना कर अपना कार्य साधन करने की जरूरत पडती है ऐसे अवसरों पर आत्मिक शक्ति से बहुत काम निकाला जा सकता है। मन बहुत चंचल है। इसमें हजार हाथियों का बल है। जितने भी साधन अभ्यास हैं वे इसी को वश में करने के लिए हैं। जैसे आतशी शीशे द्वारा सूर्य की बिखरी हुई किरणों को एक जगह केन्द्रित करने से कपडे में आग लग जाती है उसी प्रकार मन की बिखरी हुई वृत्तियों को एकत्रित करने से बहुत बड़ी आत्मिकशक्ति अर्जित की जा सकती है। मन्त्रशास्त्र में कुछ शक्तिशाली बीजाक्षरों का चुनाव किया गया है। आपने बरगद का पेड देखा होगा कितना विशाल होता है। परन्तु उसका बीज कितना छोटा होता है। इसी प्रकार छोटे से बीजाक्षरों में तत्सम्बन्धी देवी देवताओं की अपार शक्ति का भंडार निहित होता है। मन्त्रों में यही बीजाक्षर होते हैं और इनका बार-बार उच्चारण करने से जो ध्वनि अन्दर और बाहर पैदा होती है उससे अपार आत्मिकशक्ति पैदा होती है। लाख सवा लाख जप के बाद मन्त्र में शक्ति पैदा हो जाती है और तब समझा जाता है कि मन्त्र सिद्ध हो गया। जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब उसको प्रयोग किया जा सकता है।

मन्त्र सिद्ध करने के लिए स्थान एकान्त हो और वातावरण शान्त हो। रात का समय इसके लिए सबसे अच्छा होता है। जब सब सो जायें तब घर में भी कर सकते हो। सूर्य या चन्द्र ग्रहण के समय, होली, दिवाली, शिवरात्रि की रात्रि में और कुछ विशेष योगों में जप करने से जल्दी सिद्धि प्राप्त होती है। अशोक, पीपल, बरगद के पेड़ के नीचे बैठकर, देवी या भैरव के मन्दिर में और डर न लगे तो श्मशान में (दिन में या रात में) बैठकर जप करने से भी जल्दी लाभ होता है। जप पहले जिव्हा से, फिर कण्ठ से उसके बाद प्राणों से, फिर सुरति से करने से शीघ्र सिद्धि मिलती है। नैनन की करि कोठरी पलकनि की चिक डारि। पुतली पलंग बिछाय के पीतम लेउ निसार॥ यह राजयोग का बहुत सरल प्राणायाम व सुरति का अभ्यास है। तन्त्र में श्रीकृष्ण व महाकाली को एक ही माना गया है और उनका एक ही बीजाक्षर है। भगवान श्रीकृष्ण जिस महामन्त्र को मुरली में बजाकर सारे चराचर विश्व को मोहित कर देते थे वह महामन्त्र इस प्रकार है :—

ॐ क्लीं क्लीं नमः

इसमें क्, ल्, ई, म् तथा अनुस्वार की मिली हुई ध्वनि है। इसका पुरश्चरण सवा-लाख जप का है जिसे ज्यादा से ज्यादा ४०-४१ दिन में पूरा कर लेना चाहिए। देवी देवता का ध्यान अंगन्यास करन्यास षोडसोपचार पूजन हवन तर्पण सहित पूरी पुरश्चरण विधि हमारी मन्त्र तन्त्र साधना पुस्तक में दी हुई है। यहां स्थानाभाव से पूरी विधि नहीं दी जा सकी है। इस मन्त्र का केवल जाप करने से ही दूसरों पर प्रभाव डालने वाली आकर्षण शक्ति प्राप्त होती है। बुद्धि निर्मल होती है, इन्टरव्यू साक्षात्कार में सफलता मिलती है, मुकद्मे, वाद-विवाद में, प्रतिस्पर्धा कम्पटीशन में विजय प्राप्त होती है। पति-पत्नी में, शत्रुओं में, दो व्यक्तियों में मेल कराया जा सकता है, हाकिम अफसर को अपने ऊपर कृपालु किया जा सकता है तथा अपना कार्य सिद्ध किया जा सकता है। मन्त्र सिद्ध करने के बाद जब इसका प्रयोग करो तो इसका स्वरूप इस प्रकार होगा। मान लो रूपकिशोर नाम के किसी व्यक्ति को आप अपने अनुकूल करना चाहते हैं तो इसका जप इस प्रकार किया जायेगा। ॐ क्लीं क्लीं रूपकिशोर मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा। यदि किसी दूसरे के लिए करो तो भिन्न प्रकार से होगा। मान लो रूपकिशोर को शान्तिबाई के प्रति अनुरक्त करना है तो मन्त्र जप इस प्रकार से होगा।...ॐ क्लीं क्लीं रूपकिशोर शान्तिबाई वश्यं कुरु कुरु स्वाहा; यदि शान्तिबाई को रूपकिशोर के प्रति अनुरक्त करना है तो "ॐ क्लीं क्लीं शान्तिबाई रूपकिशोर वश्य कुरु कुरु स्वाहा" मन्त्र जपते समय आप शान्तिबाई तथा रूपकिशोर के चित्र सामने रखकर त्राटक कर सकते हैं, ध्यान कर सकते हैं। यदि आपने दोनों को देखा है तो चित्र की जरूरत नहीं है वैसे ही ध्यान त्राटक किया जा सकता है। कोई बालक, युवा, स्त्री, पुरुष घर से भाग गया है तो उसके पहने हुए वस्त्र में इस मन्त्र को भोजपत्र या सफेद कागज पर लिखकर किसी भारी पदार्थ के नीचे दबा कर रख देने से वह व्यक्ति यदि स्वस्थ्य है, बंधन में नहीं है, मुक्त आजाद है तो तुरन्त वापिस आ जाता है। और भी अनेक अनुभूत प्रयोग इस महामन्त्र के द्वारा किए जा सकते हैं।

गोचर फल में ग्रहों का वेध

ग्रहों का गोचर (दैनिक गति का प्रभाव) फल देखने के लिए जन्म कुण्डली से चन्द्रमा की राशि को लग्न मानकर जिस दिन का भविष्य देखना हो उस दिन के ग्रह स्पष्ट से कुण्डली में ग्रहों को स्थित करने पर उस दिन की गोचर कुण्डली बन जाती है।

गोचर कुण्डली में कभी-कभी एक ग्रह अपनी विशिष्ट स्थिति से दूसरे ग्रह का वेध कर देता है। वेध होने पर ग्रह के शुभ या अशुभ फल का प्रभाव नहीं रहता।

ग्रहों के वेध स्थान इस प्रकार हैं—

सूर्य :	3 6 10 11	9 12 4 5
चन्द्र :	1 3 6 7 10 11	5 9 12 2 4 8
मंगल :	3 6 11	12 9 5
बृहस्पति :	2 5 7 9 11	12 4 3 10 8
शनि :	3 6 11	12 9 5
बुध :	2 4 6 8 10 11	5 3 9 1 7 12
शुक्र :	1 2 3 4 5 8 9 11 12	8 7 1 10 9 5 11 6 3

उपरोक्त पंक्तियों में प्रत्येक ग्रह के सामने दो पंक्तियां अंकों की हैं जो एक दूसरे के ऊपर नीचे दी गई हैं। इनमें प्रत्येक ऊपर के अंक के नीचे एक अंक है। इस प्रकार सभी ग्रहों के सामने कुछ अंको के जोड़े लिखे हैं। प्रत्येक जोड़ा एक वेध दर्शाता है। उदाहरण के लिए सूर्य के तीसरे भाव में होने पर नवें भाव में स्थिति ग्रह तथा सूर्य के नवें भाव में होने पर तीसरे भाव में स्थित ग्रह सूर्य का वेध कर देता है। सभी ग्रहों के विषय में इसी प्रकार देखा जाएगा।

नोट—इस विषय में ध्यान रहे कि सूर्य व शनि तथा बुध और चन्द्र आपस में एक दूसरे का वेध नहीं करते।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चमत्कारिक सिद्धि यन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः

तीर्थ-यात्रा

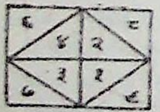

इस यन्त्र को भोज-पत्र के ऊपर अष्ट गंध द्वारा ५००० की संख्या में लिखकर धूप-दीप देने तथा बाद में उन यन्त्रों को किसी नदी अथवा समुद्र के जल में विसर्जित कर देने से तीर्थ यात्रा का सुयोग बनता है तथा यश की प्राप्ति होती है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः

मंदिर-निर्माण

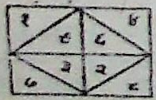

इस यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केशर द्वारा शुक्ल पक्ष के गुरुवार के दिन ७००० की संख्या में लिखकर उनका धूप-दीप आदि से पूजन करें, फिर उन यन्त्रों को किसी बहती हुई नदी के जल में प्रवाहित कर दें, तो मन्दिर-निर्माण की अभिलाषा पूरी होती है।

जलाशय-निर्माण

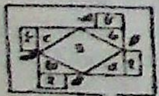

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष के रविवार के दिन भोजपत्र या सफेद कागज के ऊपर केशर द्वारा २१०० की संख्या में लिखकर धूप-दीप देकर नदी के बहते हुए जल में प्रवाहित कर देने से जलाशय, कुआँ, बावड़ी, तालाब आदि बनवाने का मनोरथ पूरा होता है।

गृह-निर्माण

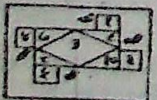

इस यन्त्र को किसी शुभ तिथि तथा शुभ दिन में प्रातः ५ बजे से लिखना आरम्भ करें। केशर द्वारा चमेली की कलम से भोजपत्र के ऊपर ११००० की संख्या में यन्त्र लिखने चाहिए, फिर उन्हें नदी में पानी में प्रवाहित कर देना चाहिए। इसके प्रभाव से गृह-निर्माण की इच्छा पूर्ण होती है।

सन्तान-प्राप्ति

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन प्रातः ४ बजे से अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरम्भ करें। लिखने की कलम चांदी की होनी चाहिए। यन्त्र ५००१ की संख्या में लिखने और बाद में नदी के जल में प्रवाहित कर देने चाहिये। इस यन्त्र के प्रभाव से सन्तान की प्राप्ति होती है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः

वाहन-प्राप्ति

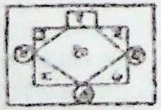

इस यन्त्र को मंगलवार के दिन केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर ५००१ की संख्या में लिखकर पूजनोपरान्त नदी के जल में प्रवाहित कर दें। इसके प्रभाव से इच्छित वाहन (मोटर, गाड़ी आदि) की प्राप्ति होती है। यह प्रयोग ३१ दिन तक निरंतर करना चाहिए।

ऋण-मुक्ति

इस यन्त्र को मंगलवार के दिन प्रातः ६ बजे से केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरम्भ करे। कुल ५००० यंत्र लिखकर, पूजनोपरान्त उन्हें नदी के जल में प्रवाहित कर दें। ४० दिन तक प्रतिदिन यही क्रिया करने से मनुष्य ऋण मुक्त हो जाता है।

रोग-मुक्ति

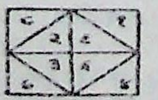

इस यन्त्र को रविवार के दिन केशर द्वारा भोज पत्र या कागज के ऊपर २५०० की संख्या में लिखकर, यथाविधि पूजनोपरान्त नदी के जल में प्रवाहित कर दें। इस क्रिया को एक सप्ताह तक निरन्तर करता रहे तो रोग से छुटकारा मिल जाता है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः

ईश्वर-भक्ति

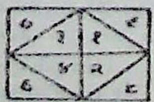

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन लिखना आरम्भ करें तथा आठ दिन में ५००० की संख्या में यन्त्र लिखकर अन्त में उन्हें नदी के जल में प्रवाहित कर दें तो ईश्वर की कृपा तथा भगवद्भक्ति की प्राप्ति होती है। यन्त्र लेखक को आध्यात्मिक ज्ञान मिलता है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः

पदोन्नति

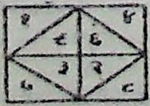

इस यन्त्र को मंगलवार अथवा गुरुवार के दिन लिखना आरम्भ करें। यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना चाहिए। प्रतिदिन १०० यत्र लिखकर नदी के जल में प्रवाहित कर देने चाहिए। इस प्रकार कुल ५००० यंत्र लिखकर जल में प्रवाहित कर देने पर पदोन्नति होती है।

मनोकामना सिद्धि प्रश्नावली

अ	च	इ
क	प	ट
उ	त	ग

प्रश्न करने वाला अपने इष्ट देव का ध्यान धर कर प्रश्नावली में अंगुली रखें। फल अ—उत्तम है। धन-प्राप्ति कार्य सिद्ध हो। च—कार्य पूरा होने में सन्देह है। इ—कार्य सिद्ध नहीं होगा। क—धन लाभ, कार्य सिद्ध हो। प—श्रेष्ठ फल है। धन लाभ, कार्य सिद्ध। ट—कार्य पूरा नहीं होगा। उ—सफलता प्राप्त होगी। त—अभी कार्य-सिद्ध में देरी है। ग—कार्य सिद्ध होगा। प्रश्न उत्तम है।

ग्रहपीड़ा (भूतप्रेतादि बाधा)-निवारण हेतु

नृसिंह मंत्र बीजन्तु सकृदुच्चरितं हरेत्। डाकिनी प्रेत भूतानि तमः सूर्योदयो यथाः। नृसिंह मंत्र—

मन्त्र—ॐ नमो नृसिंहाय हिरण्यकश्यपु वक्षस्थल विदारणाय त्रिभुवन व्यापकाय भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी कुलोन्मूलनाय स्तम्भोद्भवाय समस्त दोषान् हर-हर विसर-विसर पच पच हन हन कम्पय कम्पय मथ मथ ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट्-फट् ठः ठः एह्येहि रुद्र आज्ञा पयति स्वाहा ॥

उक्त मंत्र का जप अनुष्ठान तथा हवनादि करने से भूत-प्रेत-पिशाच, डाकिनी आदि बाहरी बाधा-दोष समाप्त होकर ग्रह जनित अशुभ फलों का शमन हो जाता है।

दाडिमस्य च बन्दाकं ज्येष्ठर्क्षेतु समुद्धरेत्।
द्वार बन्धे च बालानां सर्व ग्रह निवारणम् ॥

आर्द्रा या ज्येष्ठा नक्षत्र में दाड़िमी वृक्ष का बन्दा (बांदा) लाकर घर के मुख्य द्वार (दरवाजे) पर बाँध दें तो सभी प्रकार की ग्रह जनित बाधाएं पीड़ा आदि नष्ट होती हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बवासीर दूर करने का मन्त्र

ओउम् काका कर्ता किरोरी करता ओउम् करता से हो ययरसना दश हुंस प्रगटे खूनी बादी बवासीर न होय मंत्र जान के न बतावे द्वादस ब्रह्म हत्या का पाप होय लाख जप करे तो उसके वस में न होय शबद सांचा पिण्ड काचा हनुमान का मन्त्र सांचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

यह मन्त्र ग्रहण काल में जितना जप हो जाय उतना ही जप करने से सिद्ध हो जाता है। २१ बार पढ़कर पानी को मन्त्र से अभिमन्त्रित करके आबदस्त लेने से बवासीर दूर होती है।

दाढ़ में दर्द हो या कीड़ा पड़ गया हो तो निम्न मंत्र से झाड़ने से दर्द कष्ट, पीड़ा दूर हो जाती है।

ओउम् नमो आदेश गुरु को—वन में जाई अंजनी जिन जाया हनुमन्त। कीड़ा मकड़ा मसकड़ा यह तीनों भस्मन्त। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

यह मन्त्र भी ग्रहण के समय जितना जपा जा सके उतना ही जप करने से सिद्ध होता है। इसको २१ बार पढ़कर नीम की डाली से झाड़ने से दाढ़ का दर्द, पीड़ा आदि दूर होती है।

कखवाई :—कांख (बगल) में होने वाले फोड़े को कखवाई कहते हैं। इसको दूर करने का मन्त्र निम्न प्रकार से है :—

ओउम् नमो कखवाई भरी तलाई जहाँ बैठा हनुमन्ता आई पके न फूटे चले न पीड़ा रक्षा करें हनुमन्त वीर दुहाई गोरखनाथ की शब्द सांचा पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा सत्यनाम आदेश गुरु को।"

मन्त्र को ग्रहण समय में पर्वकालों में १०० माला जपकर सिद्ध करने के बाद २१ बार झाड़ने से और मोर पंख या नीम की डाली से जिस स्थान पर झाड़ा दे उस स्थान की मिट्टी बाँधने से तीन दिन में कखवाई की गाँठ बैठ जाती है।

कण्ठबेल दूर करने का मन्त्रः—ओउम् नमो कण्ठबेल तू द्रुमद्रु माली सिर पर जकड़ी वज्र की ताली गोरखनाथ जागता आया बढ़ती बेल को तुरन्त घटाया। जो कुछ बची ताहि मुरझाया। घट गई बेल बढ़त नहिं बैठी तहाँ उठत नहिं। पके फूटे पीड़ा करे तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई। ओउम् नमो आदेश गुरु को मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

ग्रहण काल में अथवा पूर्वकाल में १०० माला जपकर इस मन्त्र को सिद्ध करने के बाद कण्ठबेल के रोगी को सात दिन तक चाकू की नोक से झाड़कर जमीन पर २१ बार लकीरें खीचें तो रोग दूर हो। कण्ठबेल गले पर गरदन का एक दुसाध्य चर्मरोग होता है। झाड़ने से दूर हो जाता है।

बिच्छू झाड़ने का मन्त्र

बिच्छु काटने के बाद उसका जहर जहाँ तक चढ़ा हो वहाँ से पकड़कर झाड़ से झाड़ें। जैसे-जैसे जहर उतरता जाए वहीं पर पकड़ता रहे और झाड़ते हुए उतारता जाए। डंक की जगह तक आने पर झाड़ना बंद कर दें और डंक से ऊपर तेलिया मोहरा जहर मोहरा पानी में घिसकर लगाएं। जहर मोहरा बाजार में मिल जाता है। शिलाजीत बेचने वालों के पास भी मिल जाता है। मन्त्र को पहले बताए तरीके से सिद्ध किया जाता है। ग्रहण के समय या पर्वकाल में १०० माला जप करके प्रयोग करने से पहले सिद्ध कर लेना चाहिए।

पहला मन्त्र :—ओउम् नमो आदेश गुरु को। लो बिच्छू कांकर वालो उतर बिच्छू न कर टालो उतरे तो उतारूं चढ़े तो मारूं गरुड़ मोर पंख हकालूं। शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

दूसरा मन्त्र : (काला बिच्छू उतारने का)

ओउम् काला बिच्छू कांकरवालो हरी पूंछ मैराला। सोना का नाडू रूपे का पतनाला। आठ गाँठ नौ कोर नीचे बिच्छू ऊपर मोर कौन मोरा रेतो भकभकाकर बिच्छू रहे तो बावन वीर नीड निकोर के कौन वैद मानुष पर गया खाते जाते लागी वार। उतर रे बिच्छू तोहे मैरो बाबा की आन।

पागल कुत्ते का विष झाड़ने का मंत्र

ओउम् कामरूप देश कामाक्षी देवी जहां बसे मछन्दर जोगी। मछन्दर जोगी का झामरा कुत्ता सोने की डाढ रुपे का कुंडा। बन्दर नाचे रीछ बजाये चीता बैठा औषध बांटे कूकर का विष भागे। शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

१०० माला जपकर मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर समय पड़ने पर काटे हुए स्थान को चाकू की नोक से झाड़े। जमीन पर २१ लकीरें खींचे। इस प्रकार सात दिन तक झाड़ने से पागल कुत्ते का विष दूर हो जाता है। आजकल पागल कुत्ते के काटे के लिये शर्तिया इलाज इंजेक्शन हैं और उनको जरूर लगवाना चाहिए। अगर कुत्ता पागल होगा तो काटने के बाद २-३ दिन में मर जायेगा और ठीक इलाज न हो तो काटा हुआ व्यक्ति भी ४० दिन बाद कुत्ते की तरह भौंकता हुआ मर जाता है। इसलिये रिस्क नहीं लेना चाहिये इलाज पूरा कराना चाहिये। मन्त्र में शक्ति जरूर होती है यदि ऐसा कोई मन्त्रवेला हो जिसे मन्त्र सिद्ध हो और इस प्रकार के प्रयोग सफलतापूर्वक कर चुका हो तभी उस पर निर्भर करें नहीं तो इलाज इंजेक्शन जरूर करावें साथ में झाड़-फूंक भी कराने से कोई हानि नहीं होती।

पीलिया रोग में शरीर पीला पड़ जाता है, आंखें पीली हो जाती हैं, सारा कुछ पीला ही दिखाई देता है। यह पित्ताशय में पित्त की अधिकता हो जाने पर होता है। आजकल तो चिकित्सा विज्ञान में इस रोग के लिए बहुत औषधियां उपलब्ध हैं। परन्तु पहले जमाने में गांवों में इन बीमारियों का इलाज मन्त्रों के ही द्वारा होता था। १०० माला जप कर मन्त्र को सिद्ध करके रोगी के सिर पर कांसे की कटोरी में तिल का तेल भर कर रखे और डाभ यानी कुशा से उस तेल को चलाते हुए निम्न मन्त्र को सात बार पढ़े। तीन दिन तक ऐसा करते रहने पर तेल पीला पड़ जायेगा और पीलिया रोग दूर हो जायेगा।

ओउम् नमो वीर बैताल असराल नार कहे तू देव खादी तू बादी पीलिया कूं भिदाती कारै झारै पीलिया रहे न एक निशान जो कहीं रह जाय तो हनुमंत वीर की आन। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

यात्रा

यात्रा पर प्रस्थान करने से पहले चीनी मिला हुआ मीठा दही खाकर चलना चाहिये और निम्न मन्त्र का सात बार जप करके चले तो यात्रा निर्विघ्न समाप्त होगी तथा कार्य सिद्ध होगा।

पंथानं सुपथा रक्षे मार्गं क्षेमकारी तथा। राजद्वारे महालक्ष्मीविजया सर्वतः स्थिताः।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दरिद्रता नाशक अंगूठी

शुक्ल पक्ष में रविवार को या शुक्रवार को जब पुष्य नक्षत्र आवे तो उस समय इस अंगूठी को बनवावे। तांबा तीन माशे, चांदी ४ माशे, सोना ढाई माशे लेकर इन तीनों के अलग-अलग तार बनवावे ओर तीनों तारों को बट कर अंगूठी अपने नार की उसी दिन पुष्य नक्षत्र में बनवा लें तथा उसी दिन पूजन करके दाहिने हाथ की अनामिका उंगली में धारण कर लें तो रोजगार धन्धे में लाभ उन्नति होगी, नरिद्रता का नाप होगा। शरीर भी आरोग्य रहेगा। निश्चित है। भगवती, लक्ष्मी देवी की आराधना प्रार्थना अवश्य करनी चाहिए। धर्मार्थ दान भी करना चाहिए।

खोये हुए व्यक्ति को वापसी के लिए तन्त्र

जब किसी का कोई प्रियजन कहीं चला जाए और पता न लगे तो उसकी वापसी के लिए यह तन्त्र करें। उसके पहने हुए वस्त्र पर निम्न मंत्र को लिख कर उस वस्त्र को चरखे की माल के साथ लपेट दो और चरखे को उल्टा घुमाओ, उस व्यक्ति का ही कोई प्रियजन सम्बन्धी उस चरखे को प्रतिदिन एक-आध घण्टा उल्टा घुमावे और यह मन्त्र पढ़ता जावे। तीन दिन के अन्दर वह व्यक्ति लौट आता है। या उसका कोई समाचार आ जाता है। मन्त्र यह है और इसको ग्रहण काल में १०० माला जप कर सिद्ध करके ही कपड़े पर लिखना चाहिए।

ओउम् वर्ती कार्तवीयार्जुनों नाल राजाबाहु सहस्रवान। यस्य स्मरण मात्रेण गतं नष्ट व्यक्तिं च लभ्यते। व्यक्ति के स्थान पर उसका नाम लिख देना चाहिए।

संतान तन्त्र

रविवार के दिन या गुरुवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब सफेद फूल वाली कटेरी की जड़ उखाड़ कर लावे। इस प्रकार की कटेरी कहां लगी है यह पहले से देख ले। जब स्त्री मासिक धर्म से हो और ऋतु स्नान कर ले तो चौथे-पांचवे दिन इस जड़ को बछड़े वाली गाय के दूध में पीसकर पिलावे। छठे दिन पति के पास जाय तो पुत्र सन्तान होगी। कटेरी एक जड़ी-बूटी होती है और इसमें कांटे होते हैं। पीले फूल वाली भी होती है।

वशीकरण साबरी मंत्र

ओउम् मोहिनी माता भूत पिता भूम सिर बेताल उड़ ऐ काली नागिन (यहां प्रेमिका या कोई रूठी स्त्री का नाम लें) को लग जाये। ऐसी जा के लगे कि (यहां उसका नाम लो) को लग जाये हमारी मुहब्बत की आग। न खड़े सुख न लेटे सुख न सोते सुख, सिंदूर चढ़ाऊं मंगलवार कभी न छोड़े हमारा ख्याल। जब तक न देखे हमारा मुख काया तड़प-तड़प मर जाय चलो मन्त्र फुरो वाचा। दिखाओ रे शब्द अपने गुरु के इलम का तमाशा। यह वशीकरण साबरी मन्त्र है।

शुक्ल पक्ष में अष्टमी से पूर्णमासी तक एकांत शांत कमरे में रात को दस-ग्यारह बजे के बाद बैठकर शुद्ध वस्त्रों में ऊन के आसन पर बैठकर जल का पात्र अपने पास रख ले, धूपबत्ती जला ले और उपरोक्त मन्त्र का जाप करे। रूठी स्त्री या विमुख प्रेमिका का ध्यान करता रहे, उसका फोटो हो तो पास सामने रख ले। इस प्रमार दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ दो घण्टे रोज जप करने से नौ दिन में या ११ दिन में अभीष्ट सिद्धि होती है। ११ हजार जप कर मंत्र सिद्ध हो जाता है। दशांश हवन कर सको तो कर दो नहीं तो इन सावरी मन्त्रों में जरूरी नहीं होता।

जमीन में गढ़ी सम्पत्ति का ज्ञान करना

जमीन में जहां धन होता है वहां सर्प, भूत आदि भी होते हैं। बरसात में पानी भर जाता है। उस समय अन्य स्थानों का पानी तो मटमैला होगा परन्तु जहां धन गढ़ा होगा उस स्थान पर पानी साफ होगा। जाड़ों में जहां का पानी गर्म और गर्मियों में ठण्डा रहता हो वहां भी धन होता है। अगर किसी तलाब में कमल या कमलिनी लगी हो तो वहां पर धन वाले स्थान के फूल धुयें के रंग के समान होंगे। पृथ्वी पर जहां धुन्ध सी दिखाई दे, सब जगह पौधे बनस्पति हों पर कुछ स्थान पर न हों तो उस स्थान पर धन हो सकता है। आस-पास की जमीन की वनस्पति किसी स्थान पर प्रकाश विशेष हो, रात में भी जगह चमकती हो, जहां घी के धुयें जैसी गंध आती हो, जहां बिना ऋतु के भी वृक्षों में पुष्प आते हों, कांटेदार पौधों में कांटे न हों, प्रकृति के बिपरीत कोई चमत्कारिक बात दिखाई देती हो तो समझ लो कि वहां पर धन है। पत्थर पर कहीं बिरोधी जाति के प्राणियों के चित्र अंकित हों जैसे शेर, बकरी, चूहा, बिल्ली, सांप, नेवला आदि तो वहां धन होने की सम्भावना होती है।

किसी पर्वत के शिखर पर किसी देवता की मूर्ति हो और उस मूर्ति पर कहीं चिह्न हो तो उसके नीचे उस चिह्न के प्रमाण में गहराई पर धन होगा। यदि दो मूर्तियां आमने-सामने हों, गणेश जी की मूर्ति उत्तर की ओर मुख करके रखी हो, पेट बड़ा हो, दृष्टि नीचे की ओर हो, मुख का भाव शोकाकुल सा हो, मिट्टी की मूर्ति हो, हाथ में सात दल का कमल हो, मस्तक में कील लगी हुई हो या कोई विचित्र आकार बना हुआ हो तो वहां पर धन गढ़ा होना चाहिये।

ऐसे स्थानों में जहां इस प्रकार के संकेत हों या जहां धन होने का शक हो चमेली के फूलों को दही में भिगो कर ५-६ जगह रख देना चाहिए अथवा हल्दी और दूध मिला कर छिड़क देना चाहिए। दूसरे दिन प्रातः काल यदि दही या दूध का रंग पीला, काला या लाल हो जाय तो समझना चाहिए कि वहां धन है।

पारा, शहद, कपूर, पीलू के पुष्प और सूरजमुखी के बीजों को बराबर भाग ले उन्हें मिला ले पीस ले, तेल में रुई की बत्ती में इन चीजों को लपेट कर अंजन बनावे। उसको लगा कर निम्न मंत्र पढ़ो "सत्यं दर्शयं भौमिय दिव्यं सत्यम दर्वय।" यदि भूमिगतं द्रव्य-मात्मानं दर्शय स्वयम्। ॐ ॐ गं गं क्षं अं लोकिनि निधिनि लेकिनि स्वाहा। अमावस्या की रात्रि को उस स्थान पर दीपक जलाकर बैठे और उपरोक्त मंत्र का जाप करे वहां पर कोई छाया, पुरुष या पक्षी रूप में या चूहा, बिल्ली आदि के जन्तु रूप में किसी स्थान में जाकर निकल कर संकेत देगा कि धन यहां पर है। उस स्थान को शुभ मुहूर्त में विश्वासी जनों के साथ खोदें। आक की जड़ व कनेर की जड़ और पलाश की जड़ का लेप पैरों में लगा कर नीचे उतरें। खैर की लकड़ी के सात अंगुल के कीले बनाकर उनकी धूप, दीप, अक्षत पुष्प से पूजा करके आठों दिशाओं में उस खोदे हुए स्थान पर धन निकालने से पहले गाड़ दें। दही चावल सरसों की बलि दें तब धन को हाथ लगायें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्वप्न देखने का शुभ-अशुभ फल, दैनिक उपयोग की विविध ज्ञातव्य बातें

स्वप्न समय फल:—रात्रि के चार पहर होते हैं, जिनमें प्राय: प्रथम पहर में स्वप्न कम दीखते हैं, फिर भी रात्रि के प्रत्येक पहर का देखा हुआ स्वप्न इस प्रकार है—यदि रात्रि के पहले पहर में स्वप्न दीखे तो उसका फल एक साल के अन्दर मिलेगा। यदि दूसरे पहर में दीखे तो ६ मास में फल प्राप्त हो; इसी प्रकार तीसरे पहर का फल है। चौथे पहर में दीखे हुए स्वप्न का फल एक माह में मिलेगा। अरुणोदय के काल में देखे हुए स्वप्न का फल १० दिन में और सूर्योदय के समय में देखे हुए स्वप्न का फल शीघ्र ही मिलेगा—ऐसा जानना चाहिए। खोटा स्वप्न देखने पर उसकी शान्ति के लिए महामृत्युञ्जय जाप, हवन, सोना तथा जौ का दान और विष्णु सहस्रनाम, गोपाल सहस्रनाम आदि शुभ कार्य कराने चाहिए।

★ यदि स्वप्न में कोई कुमारी स्त्री स्वयं को ढोलक बजाती हुई देखे तो उसका विवाह शीघ्र हो जाता है।

★ स्वप्न में देवी का दिखाई देना प्रयोग में सफलता का सूचक होता है।

★ यदि स्वप्न में पंचिंग मशीन दिखाई दे तो द्रष्टा को कोई उच्चपद प्राप्त होता है।

★ विद्यालय में भाग आने का दिखाई देना अच्छा तथा द्रष्टा की सर्वतोमुखी सफलता का सूचक होता है।

स्वप्न	स्वप्न का फल	स्वप्न	स्वप्न का फल	स्वप्न	स्वप्न का फल	स्वप्न	स्वप्न का फल
कुएं का पानी देखना	विविध लाभ, विजय	जानवर पकड़ना	नया काम करना	पानी में डूबना	शुभ कार्य; लाभ हो	मुर्गी के अण्डे खाना	लड़का हो
रत्न या नगीना देखना	दु:ख-भय, व्यय हो	चन्द्रमा देखना	प्रतिष्ठा प्राप्त हो	तैरना	धन मिले	सफेद बाल देखना	आयु बढ़े
धूप देखना	पदोन्नति एवं लाभ हो	चांद टूटा देखना	तकलीफ हो	अंगूठी पहनना	सुन्दर स्त्री मिले	बिच्छू देखना	इज्जत प्राप्त हो
अग्नि उठाना	अवैध धन-प्राप्ति, अवैध व्यय	चन्द्र-ग्रहण देखना	हाकिम पर आफत	आकाश की ओर उड़ान	यात्रा करनी पड़े	पहाड़ पर चढ़ना	तरक्की मिले
आग जलाकर पकड़ना	कष्ट का सामना हो व्यर्थ व्यय	चीच देखना	रंज पैदा हो	आकाश से गिरना	खराबी व कष्ट	पहाड़ हिलते देखना	बीमारी फैलना
बादल आकाश में देखना	राज्य से लाभ हो	कसीदा काढ़ना	पति से झगड़ा	आम खना	धन मिले	शरीर में पाखाना	दौलत प्राप्त हो
बादल पूर्ण आकाशमें देखना	विपत्ति, दु:ख व परेशानी	चींटी देखना	मुसीबत पेश हो	अनार खना	धन काफी मिले	तख्त पर चढ़ना	इज्जत मिले
आंधी और बिजली गिरना	मुसीबत में फंसे	चक्की देखना	मुसीबत में फंसे	ऊंट का देखना	धन लाभ	थूक देखना	परेशानी हो
सूखा अन्न खाना	विविध कष्ट, व्यर्थ परेशानी हो	चांद देखना	माल मिले	ऊंठ पर चढ़ना	रोगी होवे	थूकना	व्यय बढ़ेगा
अंगूठी पहनना	धन-लाभ तथा प्रसन्नता बढ़े	चावल देखना	रंज दूर हो	सूर्य को देखना	बड़े आदमी के दर्शन	तीतर देखना	खुशी मिले
ऊंट देखना	अपार धन प्राप्त हो	तालाब में नहाना	धन प्राप्त हो	सुरमा लगाना	बीमारी से कष्ट	हंसता देखे	रंज प्राप्त हो
वर्षा अपने घर पर देखना	घर में कलह एवं रोग बढ़े	पानी स्पर्श	साधारण लाभ	बादल देखना	तरक्की होवे	रोते देखना	खुशी मिले
वर्षा पूरे नगर में देखना	सुख एवं प्रसन्नता प्राप्त हो	जहाज देखना	दूर का सफर हो	घनघोर घटा	राजा के दर्शन से लाभ	तार खींचना	परेशानी मिले
हरी फुलवारी देखना	धन-जन की वृद्धि हो	झण्डा देखना	धर्म की वृद्धि हो	आग उठा लेना	हराम का माल मिले	ताबीज देखना	आपत्ति में फंसे
सूखा बाग देखना	विपत्ति में फंसे	हरा जंगल देखना	खुशी मिले	घोड़े पर चढ़ना	व्यापार में उन्नति	तरबूज खाना	रंज प्राप्त होवे
सर के बाल कटे देखना	ऋण-मुक्त हो, स्त्री को पुत्र हो	सूखा जंगल देखना	परेशानी हो	घोड़े से गिरना	हानि होवे	पानी देखना	दूसरे की धरोहर मिले
बाल देखना	धन-लाभ हो	जंगल में उड़ना	मुसीबत दूर हो	आंधी देखना	सफर में कष्ट हो	मोटा बैल देखना	अनाज मंदा हो
घोड़ा देखना	संकट दूर हो	मुरदा देखना	बीमारी से आराम	शीशे में मुंह देखना	स्त्री से प्रेम	पतला बैल देखना	अनाज महंगा हो
घोड़े पर सवार होना	सरदारी या ओहदा मिले	जोड़ा तंग पहनना	स्त्री से झगड़ा हो	जलती आग देखना	स्त्री से प्रेम	बाल बिखरे देखना	धन की हानि हो
लोहा देखना	किसी धनवान् से लाभ हो	जवाहरात देखना	आशाएं पूर्ण हों	ऊंचे से गिरना	परेशानी व हानि हो	सुअर देखना	उम्र कम हो
लोमड़ी देखना	किसी सम्बन्धी से धोखा मिले	स्त्री-प्रसंग करना	धन प्राप्त हो	बाजू कटा देखना	भाई की मृत्यु हो	बिस्तर बिछाना	दीर्घायु हो
मोती देखना	लड़की पैदा हो	लड़ाई करना	खुशी हो	बाग फुलवारी देखना	खुशी प्राप्त हो	गाखाना खाना	मालामाल हो
मुर्दे का पुकारना	विपत्ति एवं दुःख प्राप्त हो	लड़ाई में मारे जाना	हुकूमत मिले	सूखा बाग देखना	रंज-दुःख मिले	पंखा कटा देखना	परेशानी हो
मुर्दे से बात करना	मुराद पूरी हो	फल पाना	पुत्र हो	बारात देखना	रंज हो, स्त्री देखें तो	पाखाना फिरना	धन व्यय हो
बाजार देखना	दरिद्रता दूर हो	फूल देखना	प्रेमी मिले		उसको खुशी हो	खून का पेशाब	स्त्री देखे तो सुख
बड़ी दीवार देखना	सम्मान मिले	पिंजड़ा देखना	कैद में कष्ट हो	पानी बरसता देखना	अनाज महंगा हो		पुरुष देखे तो दुःख
दीवाल में कील ठोंकना	वृद्ध से लाभ हो	छाती देखना	स्त्री मिले, खुशी हो	हंस देखना	प्रतिष्ठा होगी	सिर के कटे बाल	कर्ज से छुट्टी मिले
दंतुवन करना	पाप का प्रायश्चित हो, सुख हो	प्यास लगना	लोभ अधिक हो	भैंस देखना	मुसीबत पेश हो	बर्फ देखना	मौसम खराब हो
खूटा देखना	धर्म की ओर अभिरुचि बढ़े	पूड़ी खाना	प्रसन्नता प्राप्त हो	फंड़िया देखना	हाकिम से भय हो	बांसुरी बजाना	परेशानी होना
जामुन खाना	तकलीफ दूर हो	पुल पर चढ़ना	नेक काम करे	बादाम खाना	धन प्राप्त हो	अपने को बीमार	कष्ट मिले
बाल बनवाना	उम्र कम हो	पान खाना	सुन्दर स्त्री मिले	बादशाह मरण	देश में खराबी		शेष पृष्ठ ६५ पर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अंक-विद्या [Numerology] और आपका भाग्य

आजकल पाश्चात्य में तथा भारत में भी अंक विद्या की लोक-प्रियता बहुत बढ़ रही है। यद्यपि भारत में इस का प्रचलन अति प्राचीन काल से रहा है किन्तु भारतीय पद्धति वर्णमाला पर आधारित होने के कारण शीघ्र-बोधगम्य नहीं। अंकों के आधार पर हम मनुष्य-स्वभाव की चारित्रिक विशेषताओं का आश्चर्य जनक रूप से विवेचन कर सकते हैं। हमारे मतानुसार भविष्यवाणी करना कठिन है। यहां पर पाश्चात्य मतानुसार अंग्रेजी मास की जन्म तारीख का आधार मानकर ९ तक की तारीख में मूल अंकों की कल्पना की गई है तथा सूर्यादि नव ग्रहों को इन मूल अंकों का प्रतिनिधि माना गया है। ९ के बाद की तारीखों को मूल अंक बनाने की विधि इस प्रकार है—

१०=१+०=१	॥	१३=१+३=४
११=१+१=२	॥	१४=१+४=५
१२=१+२=३	॥	१५=१+५=६

क्रमशः इसी प्रकार तारीख के दोनों अंकों की इकाइयों को जोड़ कर मूल अंक बनाएं अथवा किसी भी अभीष्ट संख्या को ९ से भाग देकर जो शेष बचे, वही मूल अंक होगा।

मूल अंक १ वाले व्यक्ति—ऐसे व्यक्ति स्थिर प्रकृति वाले क्रियात्मक स्वतन्त्र विचार धारा वाले तथा स्वाभिमानी होते हैं। अधिकार प्रदर्शन की भावना भी रहती है। किसी अन्य व्यक्ति का प्रभाव व अनुशासन सहन नहीं करते। अंक १ वालों को रविवार तथा सोमवार शुभ होते हैं। पीला व सुनहरी रंग विशेष अनुकूल होता है। जीवन के १३, १९, २२, २८, ३१, ४६, ५८, वर्ष विशेष महत्त्वपूर्ण होते हैं। इस अंक का प्रतीक सूर्यग्रह है। ऐसे व्यक्तियों को नेत्र, कण्ठ, रक्त, पित्त विकारादि का भय रहता है। माणिक्य धारण करना शुभ है।

मूल अंक २ वाले व्यक्ति—इस अंक का प्रतीक चन्द्रग्रह है। ये १ अंक वाले व्यक्तियों की अपेक्षा शान्त स्वभाव के होते हैं। कल्पना, साहित्य प्रेम, चंचल प्रवृत्ति, कला व सौंदर्य प्रेमी, लेखन कार्य करने में रुचि इनके स्वाभाविक गुण हैं। सोमवार, शुक्रवार तथा रविवार शुभ हैं। ये निश्चयी कम होते हैं। जीवन के १५, ३१, ३४, ३७, ४३वें वर्ष विशेष महत्त्व पूर्ण। श्वेत रंग अनुकूल है।

अंक ३ वाले व्यक्ति—अनुशासन प्रिय, महत्त्वाकांक्षी, विद्या- अध्ययनी तथा परिश्रमी होते हैं। नेतृत्व करने में कुशल हैं। बृहस्पति प्रतिनिधि ग्रह है। इनके लिए मंगलवार, शुक्रवार तथा वीरवार और पीला रंग शुभ हैं। जीवन के ९, १२, ३०, ३८, ३५, वर्ष भाग्योन्नति कारक होते हैं। त्वचा रोगों से बचना चाहिए।

अंक ४ वाले व्यक्ति—प्रतिनिधि ग्रह मंगल है। ये व्यक्ति नवीन खोज करने में दक्ष, प्रगतिशील कठिन परिश्रमी, उग्रस्वभाव वाले तथा संघर्षप्रिय होते हैं, तीव्र स्वभाव वाले तथा गम्भीर होते हैं। धन-संग्रह अधिक नहीं कर पाते। ४, १३, २२, ४०, ५६, ५८वां वर्ष भाग्योन्नति कारक रहेगा। शनिवार, रविवार तथा सोमवार शुभ दिन तथा नीलमणि विशेष अनुकूल है। मूंगा धारण करना शुभ।

अंक ५ वाले व्यक्ति—का अधिष्ठाता बुध ग्रह है। ये फुर्ती से काम करने वाले, जल्दबाज शीघ्र निर्णय लेने वाले व्यापारादि व्यवसाय में उन्नति करने तथा चंचल वृत्ति के होते हैं। प्रत्येक प्रकार की स्थिति में ढल जाते हैं। महत्वपूर्ण वर्ष १५, २५, ३२, ४१, ५१ ५७वां वर्ष होते हैं। बुधवार, शुक्रवार तथा श्वेत व हरित रंग विशेष शुभ है। पन्ना धारण करना शुभ है।

मूल अंक ६ वाले व्यक्ति—संगीत फोटोग्राफी, चित्रकला व सौंदर्य प्रेमी आदर्शवादी तथा कल्पनाशील होते हैं। किसी अन्य की अधीनता इन्हें कभी स्वीकार नहीं होती ; मंगल, वीर और शुक्रवार के दिन तथा नीला व गुलाबी रंग शुभ हैं। अपनी योग्यता से धनोपार्जन करना पसन्द करते हैं। जीवन के १५, २४, ३३, ४२, ५१वें वर्ष भाग्योन्नति कारक होंगे।

मूल अंक ७ वाले व्यक्ति के प्रतिनिधि—ग्रह चन्द्रमा तथा नेप्च्यून हैं। ऐसे व्यक्ति भावुक, परिवर्तनशील तथा नए-नए स्थानों पर भ्रमण करने में रुचि रखते हैं। तन्त्र विद्या, स्वतन्त्र विचार, स्वाभिमानी व सौंदर्य प्रिय होते हैं। प्रायः आर्थिक संकट बना रहता है। सोमवार, रविवार तथा हरा रंग शुभ है। १६. २६, ५४, ५२, ५१, ६१वें वर्ष भाग्योन्नति कारक है। श्वेत गोमेद धारण करें।

मूल अंक ८ वाले व्यक्ति—का प्रतिनिधि ग्रह शनि है। ऐसे व्यक्ति अन्तर्मुखी, कठिन परिश्रमी तथा दृढ़ निश्चयी होते हैं। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रत्येक सम्भव साधन (उचित व अनुचित का ध्यान किए बिना अपनाते) हैं। संघर्षमय दूरदर्शी तथा गूढ़ विद्याओं में रुचि रखने वाले होते हैं। वायु रोग से पीड़ित रहते हैं चन्द्रवार शनिवार रविवार तथा गहरा नीला व स्लेटी रंग विशेष अनुकूल होता है। जीवन के २६, ३३, ३५, ४४, ५३ वर्ष भाग्योन्नति कारक होते है। नीलम धारण करना शुभ रहेगा।

मूल अंक ९ वाले व्यक्ति—का प्रतिनिधि ग्रह मंगल है। ये लोग स्पष्टवादी स्वाभिमानी, कठिन परिश्रमी उग्र-प्रकृति किन्तु दयालु स्वभाव के होते हैं। समस्त जीवन संघर्षों में व्यतीत होता है। रक्त विकार का भय रहता है। शुक्रवार मंगलवार व वीरवार तथा लाल एवं गुलाबी रंग विशेष अनुकूल तांत्रिक विद्या में भी रुचि रखते हैं। जीवन के १८, २७, ३१, ३६, ४५, ५४, ३३वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रमल प्रश्नावली

इस प्रश्नावली का यह तरीका है कि चंदन की लकड़ी का चौकोर पासा बना कर उस पर १, २, ३, ४, और खुदवा लें, फिर अपने कार्य का चिंतन करते हुए तीन बार पासा छोड़ें उसका जो नम्बर बने, उसी नम्बर पर फल देखें यदि किसी के पास पासा नहीं हो, तो अगले पृष्ठ के कोष्ठों में अनामिका रखवा कर उसका फल देखें।

१११	१३१	२११	२३१	३११	३३१	४११	४३१
११२	१३२	२१२	२३२	३१२	३३२	४१२	४३२
११३	१३३	२१३	२३३	३१३	३३३	४१३	४३३
११४	१३४	२१४	२३४	३१४	३३४	४१४	४३४
१२१	१४१	२२१	२४१	३२१	३४१	४२१	४४१
१२२	१४२	२२२	२४२	३२२	३४२	४२२	४४२
१२३	१४३	२२३	२४३	३२३	३४३	४२३	४४३
१२४	१४४	२२४	२४४	३२४	३४४	४२४	४४४

१११ मंगल भवन अमंगल हारी, होगी मनो कामना थारी ।
११२ इष्ट देव का ध्यान धरोगे, मन इच्छा सब काम करोगे ।
११३ होत काम में हुआ अंधेरा, बैरी पहुंच गया है तेरा ।
११४ झटपट करो देर नहि लाओ, यह अवसर फेर नहि पाओ।
१२१ जो तुम मन में नहीं उपाई, होगा काम ढील से भाई ।
१२२ आगे विघन है बड़ा भारी, ईश्वर राखे लाज तुम्हारी ।
१२३ संकट हटे सर्व सुख आयर, दिन-दिन दुगुनी बढ़ माया ।
१२४ वा शुभ काम करो दिन राती, पांच जिमादे गोती नाती ।
१३१ कपट भेद है मन में उसके, करि विश्वास जाय तू जिसके ।
१३२ होगी फतह देर नहि लाओ, सूरज से तुम विनय सुनाओ।
१३३ दुविधा हटे सर्व सुख पाओ, गुरु गोविंद से ध्यान लगाओं।
१३४ बार-बार समझाऊं थाने, आज भला दीसे नहि म्हाने ।
१४१ विपत्तियां बीत गयीं सब पाछे, अब तो दिन आवेंगे आछे।
१४२ अब सुनता ना कोई तेरी, घर में पैठि रहा है बैरी ।
१४३ धन परिवार सदा सुखदाई, कर्म विपाक देख ले जाई ।
१४४ रात दिना की चिंता भारी, कुछ दिन में मिट जाये थारी।
२११ जर जमीन होवे फिर होवे, चिंता करि तन को क्यों खोवै।
२१२ यह तो काम बड़ा दुखदाई, कर्म-विपाक देख लो भाई ।
२१३ सत्य बात तुम सुन लो म्हारी, तिगरी लाग रही है थारी ।
२१४ हिम्मत बड़ी भरोसा खोटा, कर्म विपाक देख दुख मोटा।
२२१ कितना ही गुणकर मनमाहीं, यश तुमको मिलने का नाहीं।
२२२ होगी फतह देर नहि लाओ, रविवार को व्रत बनाओ ।
२२३ संकट देखि डरे क्यों भाई, ईश्वर थारी करे सहाई ।
२२४ धर्म हार धन कोई खाओ, मन अपने में क्यों घबराओ ।

२३१ सोच समझ के करना भाई, बिन सोचे होता दुखदाई ।
२३२ रस्ते में जो भूखा टोहवो, भोजन के देके निर्भय सोवो ।
२३३ भली बुरी उसके ही हाथ, निर्धनी धनी बना वही नाथ ।
२३४ यह अवसर करने का नाहीं, चुप बैठि रहो घर माहीं ।
२४१ वह तुमसे लेने को डोले, इस कारण मुख मीठा बोले ।
२४२ धीरज धरि रहो उर माही, गई वस्तु घर आवे नाहीं ।
२४३ किया कबूल भूलि गया भाई, वो ही थारी करे सहाई ।
२४४ उदय पाप हो गये अब सारे, कर्म विपाक देखिल्यो थारे।
३११ तीन बार ऊकी है तेरी, पीछे लाग रही है बैरी ।
३१२ करि कुछ यतन देर नहीं करना, करले जाप नहीं दुख भरना।
३१३ जो तुम मन में नई उपाई, होगा काम ढाल से भाई ।
३१४ करि कुछ दान वचन सुन मेरा संकट दूर हो गया तेरा ।
३२१ यह तो बात नयी बनि आई, कर्म विपाक देख ले जाई ।
३२२ करि विश्वास सत्य सुनि भाई, संकट मिटे होय सुखदाई ।
३२३ करना हो सो जल्दी करिए, ध्यान गुरु का हृदय धरिए।
३२४ तुम तो सबकी करो भलाई, ईश्वर राखै लाज सदाई ।
३३१ जस तुमको मिलना नहि भाई, चाहे जितनी करो भलाई ।
३३२ कर ले काम देर नहीं करना, ईश्वर ध्यान हिये में धरना।
३३३ देखि चंद्रमा काम करोगे, नित नये मंगल मोद भरोगे ।
३३४ जिस नर की तुम करते आशा, उसका कौन करे विश्वासा।
३४१ तुम जानो अपना सा मन की, बुद्धि बदलि रही उस तन की ।

३४२ अब तो समझि देखि मनमाहीं, बात ग्रह बिन होता नाहीं।
३४३ करिले यतन काम है तीका, अब तो फिकर मिटेगा जीका।
३४४ दुर्गा पठित कराना भाई, तो यह संकट वेग नशाई ।
४११ चुपका बैठि रहो घर माहीं, यह अवसर करने का नाहीं।
४१२ करि विश्वास जाय जो कोई, उसकी हानि कबे नहीं होई।
४१३ यह सब दोष कर्म का भाई, कर्म विपाक देख लो जाई ।
४१४ मन अपने को डाटो भाई, मन के डटे सर्व सुखदाई ।
४२१ शुभ आचरण बने रहे भाई, तो सुख संपत्ति रहे सदाई ।
४२२ अपना मन में तुम्हीं विचारो, भूलि गये सो बेगि संभारो।
४२३ ये हैं दोष कर्म के भाई, करि कुछ जाय लेय छुटवाई ।
४२४ मनि अपने को राखि जचाया, अब तो दिन अच्छे अनआया ।
४३१ करिले यतन देर नहीं करना, इष्ट देव का ले ले सरना।
४३२ वो तेरी सब भली करेगा, उस ही से सब काम सरेगा ।
४३३ अब तो फिकर तजो तुम भाई, कुछ दिन गये होये सुखदाई ।
४३४ धीरज धरो फिकर तजि डारो, है ईश्वर को बड़ो सहारो।
४४१ नीच निचाई नहीं तजेंगे, फिर भी सज्जन राम भजेंगे ।
४४२ मन अपने करो विचारा, इस तन को देखो रखवारा ।
४४३ रोस देव का तुम पर भारी, पहिले उसकीं करो मनुहारी।
४४४ ठहर-ठहर कर जागें जोती, कुछ दिन गये सिद्ध सब होती।

॥ चौघड़िया मुहूर्त ॥

उद्वेगश्चामृतौ रोगो लाभः शुभचरौ मृतिः । सूर्य शुक्रो बुधश्चन्द्रो मंदोजीवी धरासुतः ॥
सूर्यादौ क्रमतो ज्ञेयो रात्रौ पञ्चमगोऽह्लषट् । सूर्यो बृहस्पतिश्चन्द्रः शुक्रो भौमः शनि बुधः ॥

दिन की चौघड़िया

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
पहली चौघ.	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
दूसरी चौघ.	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
तीसरी चौघ.	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
चौथी चौघ.	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
पांचवीं चौघ.	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
छठवी चौघ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
सातवी चौघ.	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
आठवी चौघ.	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात की चौघड़िया

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
पहली चौघ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
दूसरी चौघ.	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
तीसरी चौघ.	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
चौथी चौघ.	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
पांचवी चौघ.	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
छठवीं चौघ.	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
सातवी चौघ.	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
आठवी चौघ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मानव जीवन पर रत्नों का प्रभाव

नवरत्न की अंगूठी इस ढङ्ग से बनानी चाहिए—

ईशान पन्ना	पूर्व हीरा	अग्नि मोती
उत्तर पुखराज	माणिक	दक्षिण मूंगा
वायव्य लहसुनिया	नीलम पश्चिम	नैर्ऋत्य गोमेद

शनिस्तोत्र

पिप्पलाद उवाच—नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोस्तुते । नमस्ते विष्णुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तुते । नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते कालकायजे । नमस्ते यमसंज्ञाय शनैश्चर नमास्तु ते । प्रसाद कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च इस स्तोत्र का नित्य सबेरे पाठ करने से शनि का अनिष्ट नहीं होता ।

यज्ञोपवीत धारण कैसे करना चाहिये

शास्त्रीय ग्रंथों में वर्णित

यज्ञोपवीत को दाहिने हाथ से ही धारण करना चाहिये । लघुशंका के समय दाहिने-कर्ण पर, मलत्याग के समय वाम-कर्ण पर रहना चाहिये । यज्ञोपवीत वाम कन्धे पर दाहिनी भुजा की ओर लटकना चाहिये ।

शनि का वास्तविक विचार

शनि जिस नक्षत्र पर हो उससे अपने नक्षत्र तक गिनये । यदि वही नक्षत्र हो तो ३ मास १० दिन तक अनेक प्रकार की हानियां होंगी । दूसरे से पांचवें नक्षत्र तक १३⅓ मास की अवधि में युद्ध में विजय होगी । ततः ६ से ११वें नक्षत्र तक १ वर्ष ८ मास का समय वायु-रोग, देशान्तर में भ्रमण करायेगा । ततः १२ से १५वें नक्षत्र तक १३ मास १० दिन तक कष्टकारक समय बीतेगा । ततः १६ से १८ नक्षत्र तक १० मास का समय उत्तम राज-यश कारक होगा । ततः १९-२०वां नक्षत्र समय ६⅔ मास सुखदायक रहेगा । ततः २१-२२वां नक्षत्र ६ मास २० दिन महाकष्ट, वायु-विकार होगा । ततः २३ से २७वां नक्षत्र १६ मास २० दिन तक अनुचित ढ़ंग से धन-धान्य का लाभ होगा ।

चक्र

शनि नक्षत्र	समय	फल
१	३ मास १० दिन	अनेक हानियां
४	१३ मास १० दिन	विजय, साफल्य
६	२० मास	व्यर्थ भ्रमण
४	१३ मास १० दिन	कष्ट, भुजा-व्यथा
३	१० मास	सम्मान, यश, सुख
२	६ मास २० दिन	उन्नति, सुख
२	६ मास २० दिन	महादुःख, वायु-विकार, आमाशय
५	१६ मास २० दिन	धन-धान्य का लाभ

अन्य प्रकार

जिस दिन शनि राशि-संक्रमण करे, उस दिन का चन्द्र नक्षत्र की राशि बनावें । यदि वह राशि अपनी राशि से १-६-११वीं पड़े तो लाभ, शुभ, २-५-९वीं पड़े तो साधारण लाभ, शुभ, ३-७-१०वीं पड़े तो साधारण; ४-८-१२वीं पड़े तो अनिष्ट समझें । परन्तु पंचांगों में भेद के कारण यह फल नहीं मिलता शनि के नक्षत्र-संक्रमण में भी इसका विचार किया जा सकता है ।

मुख्य बातें

शनि एक राशि में २॥ वर्ष रहता है । जन्मराशि से बारहवें, जन्मराशि का तथा दूसरे; इन तीन राशियों को मिलाकर ७॥ वर्ष हुआ । इसी को साढ़े साती शनि कहते हैं । जन्मराशि से जब शनि चौथे या आठवें हों तो अढ़ैया कहा जाता है जो कष्टप्रद है । जब शनि जन्मराशि से बारहवें आता है, तो व्ययाधिक्य अवश्य होता है । जन्मराशि का होने पर यात्रा, चर्म-वायुरोग अवश्य होता है, दूसरे होने पर परिवार में किसी की मृत्यु तथा धन-हानि होती ही है । चौथे शनि में मित्रों से सम्बन्ध-विच्छेद, विवाद, मुकद्दमा, आठवें, में व्यय, हानि, रोग होता है ।

इसकी शान्ति

नीलम धारण करना चाहिए । छायादान करना चाहिये । शनैश्चर का जप करना चाहिए । काले घोड़े के नाल की अंगूठी बिना कटी हुई, बिना जोड़ी हुई धारण करनी चाहिए । शनिवार को भुना हुआ चना खाना चाहिये । काला वस्त्र धारण, काले तिल का तेल लगाना चाहिए ।

नीलम किन-किन राशि वालों को लाभप्रद होता है ।

तुला, कुम्भ—को अत्यन्त लाभप्रद

मकर, वृष—को साधारण लाभप्रद

मिथुन, कन्या—को साधारण शुभ

धनु, मीन—को कभी अच्छा कभी साधारण बुरा

मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक को कभी भी अच्छा नहीं होता जब तक कुण्डली में शनि बहुत अच्छा न हो ।

शनि के स्तोत्र का पाठ करना चाहिए । हनुमान बाहुक या हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए ।

जहां पर हनुमानजी की मूर्ति दक्षिण मुख की हो वहां पर हनुमान बाहुक, बजरंग बाण या और किसी हनुमान के मंत्र या स्तोत्र से ४० बार परिक्रमा करनी चाहिए । ततः पीपल में जल देकर ७ परिक्रमा करनी चाहिए ।

इस प्रकार शनि की बाधा दूर हो जायगी । जीवन में प्रायः साढ़ेसाती शनि ३ बार या किसी-किसी को ४ बार आता है । पहली बार तो कोई प्रभाव नहीं रहता है । दूसरी बार जीवन भवन की नींव हिला देता है । तीसरी बार उस भवन को उखाड़ फेंकता है और चौथी बार जला देता है ।

आयु-विचार

१—जन्म कुण्डली में लग्न चतुर्थ सप्तम और दशम भाव के अंकों में प्रत्येक को ३ से गुणा करके जोड़िये उसमें से (यदि उक्त स्थानों में राहु और भौम पड़े हों) राहु और भौम की राशि-संख्या को निकाल देना चाहिये जो शेष बचे उतने वर्ष आयु समझिये ।

२—लग्न चतुर्थ सप्तम और दशम की राशि संख्या एकत्र करना यदि इन स्थानों में राहु, केतु, मंगल और शनि हों तो उक्त संख्याओं को जोड़कर पूर्वोक्त संख्या में घटाकर शेष को तिगुना करना; वही आयु की वर्ष संख्या होगी ।

३—अष्टमेश (१) यदि बलहीन होकर लग्न से षष्ठ या बारहवें हों (२) अष्टमेष लग्नेश के साथ होकर उक्त स्थानों में दुर्बल रहे (३) लग्नेश, चन्द्रमा और सूर्य या पापग्रह के साथ दुर्बल रहें (४) लग्न या लग्नेश पर कर्तरी हो तो बालक हीनायु होता है ।

४—लग्नेश अष्ठमेश और कर्मेश ये तीनों बली हों, शुभ स्थान में बैठे हों तो दीर्घायु, दो बली हों, शुभ स्थान में बैठे हों तो मध्यायु, एक बली हो, शुभ स्थान में बैठा हो तो हीनायु होती है । अष्टमेश शनि अष्टम में; लग्नेश लग्न में हों तो दीर्घायु होता है । [शेष पृष्ठ ८६ पर]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

षट्वर्ग फलादेश

षट्वर्ग सारिणी प्रवेश रीति

'लग्न' या सूर्यादि स्पष्ट ग्रह' की जो वर्तमान राशि के सामने और उसके अंशादि के आसन्न जो कोष्टक है उसके नीचे लिखे हुए होरादि षट्वर्गों के सामने की राशि अपने अपने वर्ग को लग्न व ग्रहों की राशि होती है अर्थात् उन अंकों के समान संख्या वाली राशियों में लग्न व ग्रह को गृहादि वर्ग में लिखना चाहिए।

उदाहरण — जैसे स्पष्ट लग्न १।१५।१५।५७ है यहां लग्न की वर्तमान वृष राशि है। इसलिए वृष राशि के सामने और १५।१५।५७ से आसन्न-न्यून अंशादि १५।०।० है। इस के नीचे ४।६।११।२।७।१२ गृहादि वर्गों की वर्तमान राशि है इसलिए होरा में कर्क, द्रेष्काण में कन्या, सप्तमांश में कुंभ, नवांश में वृष, द्वादशांश में मीन लग्न हुआ। स्पष्ट सूर्य ०।३।४३।१२ की वर्तमान मेष राशि के सामने और ३।२०।० आसन्न-न्यून कोष्टक के नीचे ५।१।१।१।२।१ वर्गों की राशियां हैं। अतः सूर्य होरा में सिंह राशि में रहेगा। द्रेष्काण में मेष का सूर्य, सप्तमांश में मेष का सूर्य एवं नवांश में मेष का सूर्य, द्वादशांश में वृष का सूर्य और त्रिंशांश में मेष का सूर्य रहेगा।

होरा फल

होरा कुण्डली बना कर देख लेना चाहिए कि होरा लग्न सूर्य राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक रजोगुणी, उच्चपदाभिलाषी, गुरु और शुक्र होरा लग्न में सूर्य के साथ हों तो सम्पत्तिवान्, सुखी, मान्य, उच्चपदारूढ़, शासक, नेता, शीलवान, राजमान्य तथा होरेश लग्न में पाप ग्रह से युक्त हो तो नीच प्रकृति वाला, दुश्शील, सम्पत्तिरहित, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाला और नीच कर्मरत जातक होता है यदि चन्द्रमा की राशि होरा लग्न में हो और चन्द्रमा उस में स्थित हो तो जातक शान्त स्वभाव वाला, मातृभक्त, लज्जालु, व्यवसायी, कृषिकर्म में रुचि रखने वाला, अल्पलाभ में सन्तोष करने वाला तथा शुभ ग्रह गुरु शुक्र आदि भी होरा लग्न में चन्द्रमा के साथ हों जातक भक्ति, श्रद्धा, सदाचारयुक्त आचरण करने वाला शीलवान्, धनिक, सन्तानवान्, सुखी और चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो विपरीत आचरण वाला, निर्धन, दुःखी तथा नीच कार्यों से प्रेम करने वाला होता है।

सप्तमांश चक्र का फल विचार

सप्तमांश लग्न से केवल सन्तान का विचार करना चाहिए। सप्तमांश लग्न का स्वामी पुरुषग्रह हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होते हैं। और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होती हैं। सप्तमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो सन्तान नीच कर्म करने वाली होती है। और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्वराशि का शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या शुभ ग्रह की राशि में स्थित हो तो सन्तान शुभाचरण करने वाली, सुन्दर, सुशील और गुणी होती है। सप्तमांश लग्न का स्वामी सप्तमांश लग्न से ७ या ८वें स्थान में पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक सन्तानहीन होता है।

नवमांश कुण्डली के फल का विचार

नवमांश लग्न से स्त्री भाव का विचार किया जाता है। इसी से स्त्री का आचरण, स्वभाव, चेष्टा प्रभृति को को देखना चाहिए। नवमांश लग्न का स्वामी मंगल हो तो स्त्री क्रूर स्वभाव की कुलटा, लड़ाकू, सूर्य हो तो पतिव्रता, उग्रस्वभाव की, चन्द्रमा हो तो शीतल-स्वभाव, गौरवर्ण और मिलनसार प्रकृति की, बुध हो तो चतुर, चित्रकार, सुन्दर आकृति, शिल्प विद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, ज्ञानवती, शुभाचरण वाली, पतिव्रता, सौम्य स्वभाव, व्रत, तीर्थ करने वाली, शुक्र हो तो चतुर, शृंगार प्रिय, विलासी, कामक्रीड़ा प्रवीण, गौर वर्ण, व्यभिचारिणी, शनि हो तो क्रूर स्वभाव वाली, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाली, श्याम वर्ण, नीच संगति में रत, पति से विरोध करने वाली होती है। नवमांश लग्न का स्वामी राहु, केतु के साथ हो तो दुराचारिणी कुल्टा, दुष्टा, नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और स्वराशिस्थ केन्द्र त्रिकोण में हो तो बालक को स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है तथा नवमांश लग्न का स्वामी भाग्येश के साथ २।११वें भाव में उच्च का होकर स्थित हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल के धन का स्वामी होता है। नवमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट ८।१२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री का सुख नहीं होता है। यह जितने पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो उतनी ही स्त्रियों को नाश करने वाला होता है।

द्वादशांश कुण्डली के फल का विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुःख का विचार किया जाता है। यदि द्वादशांश लग्न का स्वामी शुभ-ग्रह हो तो जातक के माता-पिता का शुभाचरण और पाप ग्रह हो तो पापाचार युक्त आचरण होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह अपनी राशि, मित्र की राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१०वें स्थानों में स्थित हो तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि, शत्रु राशि या पाप ग्रह की राशि में स्थित हो या ६।८।१२वें भाव में बैठा हो तो पिता का अल्प सुख होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह सौम्य हो और स्वराशि, मित्रराशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१० भावों में स्थित हो तो जातक को माता का सुख होता है। यदि यही स्त्री ग्रह पाप युक्त या पाप दृष्ट होकर ६।८।१२वें भाव में हो तो माता का सुख नहीं होता।

सर्वाङ्कसिद्धियोगः — शुक्लादि तिथि वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमशः ७।८।३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धन क्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य, जय, लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैऋत को मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावें क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बारह लग्नों वा राशियों का फल

मेष लग्न फलम्—जिसका जन्मलग्न मेष हो उस पुरुष के भीतरी और बाहरी भाव सदा एक जैसे रहते हैं, शूरवीर, हर एक बात में फैसले के तौर पर अपनी राय देने में झट तैयार हो जाता है, इसके भाग्य में कई प्रकार की तबदीली होती है, जायदाद, जमीन के कामों की उन्नति के लिए अपने विचार बढ़ाता रहता है, जायदाद सम्बन्धी कई प्रकार के झगड़े पेश आते रहते हैं और इन्हीं कामों के सम्बन्ध द्वारा लाभ भी होता रहता है, भाई-बहिन ज्यादा नहीं होते, हों भी तो मर जाते हैं, पिता का सुख विशेष नहीं होता, रिश्तेदारों का भी सुख कम होता है, बहुत देर तक एक जगह पर रहना मुश्किल होता है, सन्तान की तरफ से पूर्ण सुख नहीं होता वह पुरुष चुस्त, चालाक तथा चंचल स्वभाव का होता है, स्वतन्त्र रहना पसन्द करता है, जब कभी कष्ट हो तो गुरदा दर्द, सोजश, हाथ, पांव, आंख पर चोट, रक्त विकार हो। ३-११-१५-२१-२७-४५ वर्ष में कष्ट।

वृष लग्नम्—यदि लग्न वृष राशि का हो तो वह पुरुष अपने हठ पर दृढ़ रहता है, दूसरे की बात को नहीं मानता जो काम करे देरी से करता है, दिल बहुत मजबूत होता है, आराम पसंद रहना इसका स्वाभाविक धर्म है, छोटे-छोटे कामों पर भी लम्बे-२ विचार करता रहता है, हर एक काम में झगड़े का कारण आप ही हो जाता है, बीमार हो तो बहुत कठिनाई और देरी से अच्छा होता है, झगड़ा और मुकद्दमा के कामों में बड़ी दिक्कतें उठानी पड़ती हैं, माता-पिता का सुख अच्छा, यदि पहली सन्तान में लड़की हो तो मर जाती है, जिन्दगी का पिछला हिस्सा आराम से बीतता है, शत्रु इसके अधिक बने रहते हैं, कई तरह के मामलों का सामना करना पड़ता है, इसकी मृत्यु विदेश में अथवा पानी के कारण होती है। ५-२६-३७-४७ वर्ष में कष्ट हो।

मिथुन लग्नम्—जिसका जन्मलग्न मिथुन राशि का हो उसका स्वभाव नरम होता है, जिस काम को करने के लिए तत्पर हो जाए उसको सच्चाई से करता है, हरेक बात में अदरूनी भाव सदा गुप्त रखता है, नये-२ विचार पैदा करता रहता है, कानूनी काम, व्यापार व लेखा संबंधी कामों को बड़ी गम्भीरता से करता दिल का बहुत मजबूत होता है परन्तु नरम स्वभाव होने के कारण कमजोर समझा जाता है, विद्या द्वारा मान प्राप्त करता है, प्रायः इसको यात्रा बहुत करनी पड़ती है, दुःख और सुख में सदा एक भाव में रहता है, घरेलू झगड़ों में सदा चिंतातुर रहता है, इसका एक भाई मानी और प्रतिष्ठित होता है, पिता से इसका मन सदा उदासीन, संतान उत्पन्न तो बहुत होती है परन्तु मर कर थोड़ी रह जाती है, सन्तान की तरफ से चिंता ही रहती है, मित्रों से प्रीति तो बहुत करें परन्तु मित्रों से कुछ लाभ नहीं होता, स्त्री प्रेम से भी क्लेश रहता है, इसका सम्बन्ध दो जगह होता है अथवा दो स्त्रियों से संयोग होता है, औरतों के झगड़ों से तंग रहता है, गुप्त इसके शत्रु बने रहते हैं, कई मामलों का समना करना पड़ता है, पर परिणाम अच्छा ही होता है, लिखने पढ़ने के कार्यों में प्रवृत्ति अधिक होती है, पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होती है। ३-५-८-११-१८-२०-२८-४५ वर्ष में कष्ट हो।

कर्क लग्नम्—जिसका जन्मलग्न कर्क राशि का हो तो वह दिल से जिस काम को चाहे कर ही लेता है, इसकी जिंदगी अक्सर उथल-पुथल होती है, चंचल प्रकृति और शान्त स्वभाव होता है, विचार शक्ति इसकी बहुत प्रबल होती है, टालमटोल करना बहुत जानता है, कभी-२ क्रोधित भी हो जाता है और हर एक से मेल मिलाप रखने वाला होता है, यह पुरुष हर एक बात के भाव को पहले से ही झट समझ लेता है, दूसरे के विचारों को अपने विचार में प्रकट करने वाला होता है, क्षणभर क्रोध में आकर झट शांत हो जाता है, धन इकट्ठा करने में कष्टता रहे, पैतृक सम्पत्ति थोड़ी प्राप्त हो, आयु के पहले हिस्से में अमन और सुख रहे, इसक कोई भाई-बहिन पूर्णायु न भोग कर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, स्त्री से क्लेश, शत्रु इसके गुप्त रूप से बने रहते हैं, इसकी जीत रहती है, जिंदगी इसकी ३५ वर्ष तक डांवांडोल रहे, यह पुरुष नाजुक मिजाज होता है। ५-१६-१८-२०-२४ वर्ष में कष्ट हो।

सिंह लग्नम्—जन्म लग्न यदि सिंह राशि का हो तो वह पुरुष अपने गुणों से पुरुषार्थ द्वारा हर काम में उन्नति प्राप्त कर लेता है, मजबूत दिल वाला होता है। धर्मात्मा, दानी और भरोसे पर काम करने वाला होता है, पुरुषार्थी और अहंकार से युक्त होता है, मामुली बातों को नफरत की निगाह से देखने वाला होता है, बड़े-२ कामों के करने में तत्पर हो जाता है और उनको पूरे तौर पर कर लेता है, हर तरह के काम में अपनी सम्पत्ति झट कायम कर लेता है, नौकर और खानदानी कामों, झगड़ों में परेशानी रहा करेगी, पहनने और खाने वाली चीजों के व्यापार से लाभ होगा, संतान बहुत हो परन्तु सुख कम होगा, पहली सन्तान जीवित न रहे, दो सम्बन्ध अथवा दो स्त्रियों से संयोग हो। ५-१०-२७-३० वर्षों में कष्ट हो।

कन्या लग्नम्—यदि कन्या जन्म लग्न हो तो वह पुरुष ज्ञानी और पवित्रात्मा होता है, बुरी-भली बात को पहचानने वाला होता है, परिश्रमी शांत स्वभाव और अपने गुणों द्वारा संसार में मान प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेता है, शुद्ध चित्त, धैर्यवान और दूसरों में निर्मोह का बर्ताव करने वाला होता है, जिस से प्रेम करे तो दिलोजान से करता है, अपने छोटों के साथ सख्ती से बर्ताव करता है, यह पुरुष जिस काम को करना चाहे कर लेता है और जिस बात पर बिगड़ जावे उस बात को कभी नहीं छोड़ता, इतिहास, नाटक, चित्रकारी और बाग बगीचा संबंधी काम करने वाला होता है, सभा में चतुर और अच्छा बोलने वाला अति परिश्रम करने पर भी बहुत धन इकट्ठा नहीं होता, निर्वाह मात्र प्राप्त होता है, अचूक सम्पत्ति भी कुछ प्राप्त होती है, बाल्यावस्था में बीमारी से कष्ट रहे, पिछली अवस्था सुखी रहे, व्यापार व बैंकादि के कामों से धन प्राप्ति हो, परदेश में भाग्योदय रहे, संबन्धियों व पड़ौसियों में द्वेष रहे, पहली संतान युवावस्था में ही नष्ट हो जाए, दो संबंध या स्त्रियों से ताल्लुक हो। ३-५-१०-१८-३२-४० वर्ष में कष्ट हो।

तुला लग्नम्—इस लग्न वाला नरम स्वभाव मीठा बोलने वाला नीति करने में निपुण, हर बात में हर तरह से सहायक और नीति के अनुकूल काम करने वाला होता है, संगति का असर इसको बहुत जल्दी होता है, क्षण में क्रोधयुक्त और क्षण में शांत हो किसी नई बात को जानने और बनाने में तथा जहाज सम्बन्धी कामों में निपुण होता है, मानसिक शक्ति प्रबल रहती है परन्तु बहुत देर तक नहीं रहती, जब तक किसी कामको करने में लगा रहता है तब तक दिलोजान और मजबूत दिल होकर करता है परन्तु अपने विचार बदलने में भी झट तैयार हो जाता है, इसके भाई-बहिन और संबन्धी बहुत होते हैं, सुख किसी का नहीं होता, इसका पिता ऊंचे दरजे से नीचे के दरजे को प्राप्त हो जाता है और

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बारह लग्नों वा राशियों का फल

इसका पिता ही इसकी मुसीबत का कारण बने, जितनी संतान रहे खुशहाल रहे। ८-१५-१८-२३ वर्ष में कष्ट पाये यदि बच जाए तो ६८ वर्ष ७ महीने तक आयु भोगे।

वृश्चिक लग्नम्—इस लग्न वाला अत्यन्त ज्ञानी या अत्यन्त मूर्ख होता है, ईर्षा, द्वेष और अहंकार युक्त अथवा बड़े-२ कामों के करने में देवता के समान होता है, शूरवीर, दिलावर, लड़ाई में तत्पर और हर एक काम अत्यंतता करने से इसकी बीमारी का कारण हो जाता है, आत्मिक शक्ति बलवान् और स्थाई होती है, यह पुरुष हर एक काम के रहस्य को जानकर उसकी कमजोरियों को दूर कर लेता है, अग्नि के समान प्रचंड प्रकृति वाला गंवारों जैसे व्यवहार वाला, सत्यवक्ता और भय रहित होता है, इस लग्न वाला धन संबन्धी कामों में घबराहट से युक्त प्रथम अवस्था में भाग्योदय न हो मध्य अवस्था में भाग्योदय होता है, दूसरे देशों की यात्रा करता है, ससुराल के रिश्तेदारोंऔर कानूनी कामों से फायदा होता है, अचानक धन मिलने की सम्भावना होती है, भाई-बहिन इसके कम होते हैं, बल्कि पिता की एक ही संतान रह जाती है, संतान बहुत होने पर भी सुख नहीं होता, संबन्धियों को चाहने वाला होता है, एक से अधिक विवाह होंगे गुप्त रोगों से कष्ट उठाये। २-५-१०-१२-१८-२० और ३० वर्ष की आयु में कष्ट उठाये यदि बच जाये तो फिर ८५ वर्ष तक आयु भोगे।

धन लग्नम्—इस लग्न वालों की दो प्रकार की प्रकृति होती है। नियमों को पालन करने में तत्पर अथवा नियमों का उल्लंघन करने में तत्पर होते हैं, भविष्यवाणी करने में और दूसरों मन के गुप्त रहस्यों के जानने वाले होते हैं, विश्वास पात्र, दानी-सत्यवक्ता और निष्काम काम करने वाले, कई प्रकार की विद्या को जानने वाले, स्वतन्त्र रुचि वाले, किसी के ऊपर विश्वास न करने वाले और शांत स्वभाव, बिना कहे किसी बात में न बोलने वाले ईश्वर संबन्धी विषयों में तत्पर और दिमागी काम करने वाले होते हैं, पहली अवस्था में पिता को सुख कम, पिता की विपत्ति के कारण इसका भाग्योदय नहीं होता, अपने परिश्रम द्वारा धन कमाता है, इसके भाई कम हों, संबंधियों से प्रेम रहे, संतान कम होती है, दुश्मन बने रहते हैं, देवताओं और ब्राह्मणों का सेवक हो, यात्रा आदि बहुत करे। ८-१२-१५-२६-३८-४० वर्ष में कष्ट भोगे और यदि बच जाए तो ७५ वर्ष की आयु भोगे।

मकर लग्नम्—इस लग्न वालों का प्रायः सेवा करना धर्म है, जिस काम को करने की रुचि हो उसको दृढ़ता और शांति से करते हैं, परिश्रमी अधिक होते हैं, कभी मलीनचित्त और ईर्ष्या द्वेष से युक्त भी हो जाते हैं, किसी समय शूरवीरता और दृढ़ता से बड़े भारी काम को भी कर लेते हैं। चलना-फिरना कुछ अजीब व चतुर हो, परन्तु बोलते-२ वाणी में कुछ रुकावट सी हो जाती है, संशयात्मक बुद्धि और उदासीनता में रहते हैं, इनका जीवन हर्ष से व्यतीत नहीं होता, मित्रों में स्वतन्त्रता और दूसरे पुरुषों से लज्जा युक्त रहना, शत्रु को क्षमा करना, शत्रुता न भूलना, मित्रों से युक्त व्यवहार करते हैं, हरेक बात को सोच-समझकर करते हैं, काम में लगे रहना, व्यापार द्वारा धन अधिक प्राप्त करते हैं, भाई-बहिन बहुत होते हैं, सम्बन्धियों व भाई-बहिनों से सुख नहीं, पिता का सुख भी विशेष नहीं होता, कई विवाह होते हैं परन्तु विवाह होने के समय बहुत अड़चनें होती हैं। स्त्री प्रसन्न रहे, संतान थोड़ी होती है, खांसी और वायु रोग से दुःखी हो। ३-१८-२०-२४-३०-४२ वर्ष में कष्ट भोगे, बचे तो ५६ वर्ष की आयु भोगे।

कुम्भ लग्नम्—इस लग्न वाले को साहित्यकला, कौशल और दर्शनों के गुप्त रहस्यों का शौक होता है, लेखक और वक्ता भी अच्छा होता है, प्रेम करने की चाहना भी होती है, खासकर वृद्धावस्था तक अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, एकांत सेवी होता है, अन्य लोगों से मेल-जोल बहुत कम रखता है, अच्छे-२ मित्र होते हैं, इच्छा शक्ति प्रबल होती है, बड़ी-२ मुश्किलों का सामना करके अपने काम को कर लेता है, प्रसन्नात्मा होता है, दौलत और मरतब हासिल करने में बहुत परिश्रम करने पर भी कामयाब नहीं होता, क्योंकि इसके कई गुप्त दुश्मन और गुप्त साजिशें बनी रहती हैं। कुटुम्ब के मनुष्यों से जायदाद व धन संबंधी सहायता और मित्रों द्वारा अपने मरतबे की सहायता इसके दुःख का कारण होती है। मकान के रुपये की खातिर लम्बी-२ यात्रा होती है, कभी-२ इसके संबंधी खासतौर पर इसका भाई कारोबार में कष्ट का कारण होता है, इसकी आमदनी कई कारणों से गुप्त रूप में होती है। सरकारी फौज की तरफ से गुप्तचर होता है, भाई-बहिन इसके कम होते हैं, अगर हों तो सलूक अच्छा नहीं होता, अक्सर कई बार भाई के साथ झगड़ा हो जाता है, पिता का देहान्त जल्दी हो जाता है। इसके संतान कम होती है, किसी समय जोड़े पैदा होते हैं, संतान से सुख कम, खासकर पहली संतान का दुःख होता है, इसकी शादी खानदानी रिश्ता या गवैया स्त्री से होती है, सम्बन्ध का लाभ हो, स्त्री विद्या को जानने वाली कन्या हो और वृश्चिक राशि वालों से दुःखी हो। ६-११-१६-२५-३६-४० वर्ष में दुःखी और कष्ट पाये, यदि बच जाए तो ४५ वर्ष उम्र होने की आयु भोगे।

मीन लग्नम्—इस लग्न वाले प्रायः देवता के समान प्रकृति वाले होते हैं और यह लग्न मनुष्य का बहुत कम होता है, अपने जीवन में मान और प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं, प्रायः विद्वता और कला कौशल इनके जीवन का आधार होता है। प्रसिद्ध लेखक नए विचारों से कई प्रकार की बातों को प्रकट करते हैं और उसका पूरा फल प्राप्त करते हैं, इसके विचारों का प्रभाव दूसरे के चित्त पर बहुत जल्दी पड़ जाता है, कई बार इसके विचार अपने ही दुःख का कारण बन जाते हैं, इस लग्न वाला ज्ञानहीन नहीं होता, साहित्य और संगीत विद्या में बहुत निपुण होते हैं, भोग में इनकी प्रवृत्ति अधिक होती है, संतान बहुत अधिक होती है और भाग्यवान होती है। दानी और पुण्यात्मा लोगों के साथ सहानुभूति रखते हैं। अपने स्वार्थ के लिए दूसरों पर अन्याय करना पसन्द नहीं करते, अधिकार को प्राप्त करने पर भी सदा न्याय करते हैं, क्रोध जल्दी नहीं करते और शांत भी जल्दी नहीं होते, धन प्राप्ति के लिए कई प्रकार का कारोबार करते हैं और उसमें कामयाब भी हो जाते हैं, इसके भाई-बहिन अधिक होते हैं और इसके सम्बन्धित सहायक होते हैं। भाई व बहिन किसी की अकाल मृत्यु हो जाती है, माता-पिता का सुख कम होता है, पिता अकाल मृत्यु से मरता है, अधिक प्रतापशाली, व्यापार में लाभ, कर्णपीड़ा, विदेश में दुःखी हो। ४-२५-२०-३२-३८ और ४० वर्ष में कष्ट से बचे तो ८० वर्ष की आयु भोगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्योतिष सम्बन्धी लाल किताब के कुछ अनुभूत योग

ज्योतिष की लाल किताब के अनुसार केवल एक ही ग्रह अथवा रेखा को देखकर किया हुआ निर्णय कोई सम्पूर्ण निर्णय नहीं होता बल्कि कई बार इससे संदेह उत्पन्न होने की सम्भावना भी बनी रहती है। प्राचीन प्रचलित ज्योतिष में लग्नगत एवं अन्य भाव राशियों के अनुसार ही ग्रहों की स्थापना की जाती है। जबकि लाल किताब में राशियों एवं ग्रहों के पक्के (स्थिर) घर निर्धारित किये गए हैं। अर्थात् लाल किताब में प्रथम द्वितीयादि भावों में स्थित ग्रहों की स्थिति एवं दृष्टि अनुसार ही फलादेश का वर्णन किया गया है। "संक्षिप्त लाल किताब" हेतु हमारे यहां से "भृगु ज्योतिष" नामक पुस्तक मंगवा लें जो चार भागों में उपलब्ध है जिनका मूल्य १००) रुपये।

शुभ एवं अशुभ ग्रह

लाल किताब में फलादेश और उपायों का आधार मुख्यत: शुभ एवं अशुभ ग्रहों को माना गया है। जो ग्रह सर्वोच्च, मूलत्रिकोण स्वराशि या मित्र राशि में शुभ ग्रहों से युक्त अथवा शुभ ग्रहों द्वारा (३, ५, ७वें) दृष्ट हों, वह ग्रह जन्म कुण्डली में शुभ माने जाते हैं। जो ग्रह कुण्डली में नीच या शत्रु राशि में स्थित हों अथवा अशुभ स्थानों (६, ८, १२वें) के स्वामी होकर पापी ग्रहों से युक्त अथवा पापी ग्रहों द्वारा (३ या ८वीं दृष्टि से) दृष्ट हों, तो वह अशुभ कहे जायेंगे।

जन्म कुण्डली में स्थित शुभ अथवा अशुभ ग्रह अपनी स्थिति भावेश एवं कारकत्व के अनुसार ही अपना शुभ-अशुभ फल प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त कुण्डली में स्थित ग्रहों की दशा अन्तर्दशा एवं गोचर ग्रहों के प्रभाव वश भी कुण्डली स्थित ग्रहों के शुभत्व एवं अशुभत्व में न्यूनाधिकता आती रहती है। जन्म कुण्डली या वर्ष कुण्डली में शुभ ग्रहों के फल में वृद्धि तथा अशुभ ग्रहों के सम्भावित अनिष्ट फल की निवृत्ति के लिए 'लाल किताब' में कुछ अपने ही ढंग के अपूर्व उपायों का उल्लेख किया है। आगे हम ग्रहों के प्रत्येक भाव में शुभाशुभ फल उपाय सहित वर्णन करते हैं। ध्यान रहे 'लाल पुस्तक' में वर्णित ज्योतिष की ग्रामर व फलादेश सम्बन्धी अन्य नियमों का सामूहिक रूप से अनुशीलन करने के पश्चात् ही फलादेश सम्बन्धी अन्तिम निर्णय पर पहुंचा जा सकता है।

बृहस्पति

प्रथम भाव—प्रथम भाव में यदि शुभ होकर स्थित हो, तो जातक का भाग्य अपनी बौद्धिक शक्ति के प्रयोग पर निर्भर या सरकारी अफसरों के सहयोग से उन्नति होगी। बृहस्पति के पदार्थों जैसे सोना, पीतल, पुखराज, चने, हल्दी, धार्मिक कार्य कुल पुरोहित (पिता आदि) के सम्बन्ध से भाग्य चमकेगा। सन्तान सुख केतु की स्थिति पर निर्भर करता है। स्त्री का सुख शुक्र की स्थिति एवं राज दरबार (सरकारी कार्य सम्बन्धी) से लाभ सूर्य की स्थिति पर निर्भर करेगा। इसके अतिरिक्त जातक स्वस्थ शरीर, बुद्धिमान, दूरदर्शी, सम्मानित, पिता के भाग्य में वृद्धि कारक, अच्छा वकील, अकाउन्टेंट, डाक्टर, सम्पादक, भूमि सुख युक्त एवं उच्च प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

अशुभ होने पर अधूरी शिक्षा वाला, पिता से मनमुटाव, ऋणी, रक्त विकारी, अल्प धनी होता हुआ भी मान-प्रतिष्ठा पाने वाला होता है।

उपाय—किसी से दान न लेना तथा पूर्णिमा के दिन कुरुक्षेत्र, हरिद्वार आदि पर स्नान करना।

२. द्वितीय भाव में शुभ बृहस्पति हो, तो जातक उच्च शिक्षित, विद्या संस्थान, बैंक, अध्यापन, धनी सुन्दर स्त्री युक्त सफल व्यापारी, स्वतन्त्र विचारक, धार्मिक, लाटरी द्वारा अकस्मात धन प्राप्त करने वाला होता है।

अशुभ स्थिति में होने से माता-पिता को कष्ट देने वाला, स्त्री (या पति) से परेशान, चिन्तित मन वाला, कृतघ्न, कुलनाशक, अल्पधनी और राजदण्ड भोगने वाला होता है।

उपाय—(क) अपने मकान में कोई कच्चा मिट्टी का हिस्सा बनवाना। (ख) स्वयं केसर या हल्दी का तिलक करना शुभ है।

३. तृतीय भाव में शुभ बृहस्पति दयालु, बहुत भाइयों वाला, बहन-भाइयों एवं सम्बन्धियों के लिए शुभ, दूरदर्शी, ससुराल के लिए भाग्य कारक, उत्तम सन्तान, लेखक या विज्ञापनादि से धन लाभ, यात्राओं से लाभ प्राप्त करने वाला एवं दीर्घायु होता है।

तृतीय भावस्थ अशुभ बृहस्पति की स्थिति में जातक अपने स्वार्थ हेतु हर प्रकार के नैतिक एवं अनैतिक साधन अपनाने वाला, सन्तान से दु:खी, बहन भाइयों को दु:खी करने वाला, मित्र से धोखा करने वाला एवं बूढ़ों का निरादर करने वाला होता है।

उपाय—(च) अशुभ प्रभाव के निवारण हेतु केसर या हल्दी का तिलक करना एवं (छ) श्री दुर्गा पूजन व कन्याओं को मीठा भोजन देकर आशीर्वाद ग्रहण करना।

४. चतुर्थ भाव में शुभ बृहस्पति हो तो जातक उच्च शिक्षित, मकान, भूमि, वाहनादि से युक्त, पालतु पशु रखने वाला, उत्तम व्यापारी, वकील, जज या नेतृत्व करने वाला, माता-पिता के लिए शुभ, लाटरी आदि से अचानक धन प्राप्त करने वाला होता है।

चतुर्थ भाव में अशुभ होने की स्थिति में जातक मांस, शराबादि का व्यसनी, बिगड़े कामों का खुद जिम्मेदार, परस्त्री गामी, वाहनादि से दुर्घटना का भय तथा इसे गृहस्थ सुख कम मिलता है।

उपाय—(अ) स्वयं लाल बनियान पहनना या बनियान पर लाल रंग के चिन्ह लगा लेना, अपना शरीर नंगा न रखना एवं किसी के सामने न नहाना। धर्म मन्दिर में पूजा-पाठ करना तथा कुल पुरोहित का आशीर्वाद लेना तथा पीपल के वृक्ष को पानी देना कल्याणकारी होगा।

५. पंचम भाव में शुभ बृहस्पति हो, तो जातक बुद्धिमान, सम्मानित, उत्तम सन्तान से युक्त, व्यापारी अथवा सेना में उच्चाधिकारी, धनी कुल में उत्पन्न, भाग्यवान, लाटरी आदि से अकस्मात धन प्राप्त करने वाला होता है।

यदि बृहस्पति अशुभ हो, तो जीवन में बड़े उतार-चढ़ाव देखे, सन्तान सम्बन्धी दु:खी कुटुम्ब में निन्दित, घर में किसी की अल्प मृत्यु हो तथा जीवन के अन्तिम समय भयंकर यंत्रणा भोगनी पड़े, सन्तान के कारण धन नाश तथा जुए सट्टे में हानि होती है।

उपाय—अशुभ बृहस्पति के अनिष्ट निवारण हेतु गुरुवार को किसी धर्मस्थान पर लड्डू या बूंदी का प्रसाद चढ़ाना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जन्मपत्री निर्माण

ज्योतिष विद्या द्वारा फलादेश कथन करने के लिए जन्म कुण्डली या प्रश्न कुण्डली बनाना प्राथमिक आवश्यकता है। खेद का विषय है कि हमारे अधिकांश ज्योतिषी इस प्राथमिक ज्ञान को भी ठीक से नहीं जानते। ज्योतिष विषय की विधिवत् शिक्षा कुछ गिने-चुने विद्यालयों में ही दी जाती है। ऐसे विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त ज्योतिषाचार्यों तथा उनके शिष्यों को छोड़कर अधिकांश ज्योतिष व्यवसायी अधकचरे ज्ञान के बल पर ही काम चलाते हैं। धर्म प्राण आम जनता अपने कर्मकाण्ड, पूजा-पाठ और ज्योतिष सम्बन्धी कार्यों के लिए अपने पास के मन्दिर के पुजारियों पर ही निर्भर करती है। अधिकांश पुजारी गण का ज्योतिष ज्ञान नगण्य होता है। बहुत से तो पंचांग में जो साप्ताहिक कुण्डलियां प्रातः काल की दी होती हैं, उनकी नकल कर देते हैं। कुछ ज्यादा समझदार हुए तो दैनिक लग्न सारिणी से लग्न निकाल लेते हैं। ऐसे ही एक महाशय सूर्योदयादिष्टम के खाने में सूर्योदय लिखते हैं, बहुतों को पता नहीं है कि इष्टकाल क्या होता है, किस काम आता है। प्रत्येक पंचांग किसी स्थान विशेष के अक्षांश पर बना होता है और उसमें दिए लग्नों के समय, तिथि, वार, नक्षत्र, योग आदि के घटी-पल उसी स्थान विशेष के लिए होते हैं। किसी अन्य स्थान पर जन्मे व्यक्तियों के लिए उनमें परिवर्तन करना होता है। प्रत्येक पंचांगकर्ता अपने-अपने ढंग से इन प्रक्रियाओं को सरल करके समझाने का प्रयत्न करते हैं, फिर भी इस क्षेत्र में ऐसे लोगों की संख्या बहुत अधिक है जिनको इन प्रारम्भिक विषयों की जानकारी नहीं के बराबर है। किसी ज्योतिषी से उनको पूछने में लज्जा लगती है। अतएव ऐसे व्यक्तियों को ध्यान में रखकर तथा ज्योतिष का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक जिज्ञासुओं के लिए विस्तार से बताया जा रहा है।

दैनिक लग्न सारिणी

सभी अच्छे प्रतिष्ठित पंचांगों में दैनिक लग्न सारिणी होती है, जिसमें प्रत्येक दिन की तारीख, वार, बारहों लग्नों का आरम्भ और समाप्ति काल दिया होता है। यह समय भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में होता है और उस स्थान के लिए होता है जहां के अक्षांश पर पंचांग बना होता है। आर्यभट्ट पंचांग में यह सारिणी पृष्ठ संख्या ६६ से ७१ तक दी गई है और इसमें लग्नों का समय दिल्ली के लिए लागू होता है। साल दर साल इसमें विशेष अन्तर नहीं आता। स्थूल गणित के लिए इसका प्रयोग किया जा सकता है। अंग्रेजी तारीख के हिसाब से प्रतिवर्ष किसी विशेष तारीख को किसी विशेष लग्न का समय दिल्ली में प्रायः वही होगा। मान लो किसी का जन्म दिल्ली में २१ दिस. को मध्याह्न २ बजकर १५ मिनट पर हुआ है अथवा किसी प्रश्नकर्ता ने ज्योतिषी से प्रश्न किया है। आपको इसकी जन्म कुण्डली अथवा प्रश्न कुण्डली बनानी है। आपने दैनिक लग्न सारिणी देखी तो पाया कि २१ दिसम्बर को १३।२७ से १५।२ तक, अर्थात् अपराह्न १-२७ से ३-२ तक मेष लग्न है। आप मेष लग्न मानकर कुण्डली बना सकते हैं। परन्तु यदि जन्म समय या प्रश्न समय लग्न के आरम्भ या समाप्ति काल के आसपास १-३० बजे या ३ बजे का है तो सूक्ष्म गणित से लग्न का निश्चय कर लेना चाहिए। दिल्ली के अतिरिक्त अन्य स्थानों के लिए लग्नों का आरम्भ और समाप्ति काल निकालने के लिए पंचांग परिवर्तन पद्धति से गणित किया जाता है। इस गणित को उदाहरण देकर पृष्ठ ६५ पर समझाया गया है। इसे एक और उदाहरण देकर यहां भी समझाते हैं।

दैनिक लग्न सारिणी परिवर्तन उदाहरण

(१) १५ जुलाई को दिल्ली की लग्न सारणी से बीकानेर में तुला लग्न का आरम्भ तथा समाप्ति काल निकालना है तो—

		आरम्भ			समाप्ति		
		घं.	मि.	सै.	घं.	मि.	सै.
(i) १५ जुलाई को दिल्ली में तुला लग्न का आरम्भ व समाप्ति काल (पृष्ठ ६८)		१२	३६	००	१४	५६	००
(ii) बीकानेर का देशान्तर ऋण १५-४० है, अतः जोड़ा जायेगा देखिए अक्षांश सारिणी पृ. १०३	+		१५	४०		१५	४०
		१२	५१	४०	१५	११	४०
(iii) १५ जुलाई की रवि क्रान्ति २१।३७ उत्तर क्रान्ति है (देखिए सारिणी पृ. सं. ११४)। बीकानेर का अक्षांश उत्तर २८।१ है। चरान्तर सारिणी में (पृ. ११०) पर २८ अक्षांश के नीचे तथा २१ व २२ क्रान्त्यंश के सामने क्रान्ति उत्तर होने पर धन चरान्तर मिनट	+	०	१	००	०	१	००
(iv) बीकानेर में तुला लग्न का समय		१२	५२	४०	१५	१२	४०

(२) २० जनवरी को दिल्ली की लग्न सारिणी से उज्जैन में कर्क लग्न का मान निकालना है।

उज्जैन का उत्तर अक्षांश २३।११ तथा देशान्तर ६ मिनट ऋण है। देशान्तर ऋण है इसलिए धन किया जायेगा। २० जनवरी की रविक्रान्ति २०-१८ दक्षिण है, चरान्तर सारिणी में २० क्रान्त्यंश के सामने २३ अक्षांश के कोष्ठक में चरान्तर मिनट १० दिये हैं जो दक्षिण क्रान्ति होने से ऋण किये जायेंगे।

		आरम्भ			समाप्ति		
		घं.	मि.	सै.	घं.	मि.	सै.
(i) २० जनवरी को दिल्ली में कर्क लग्न का मान		१७	१६	००	१९	३६	००
(ii) देशान्तर संस्कार	+	०	६	००	०	६	००
		१७	२२	००	१९	४२	००
(iii) चरान्तर संस्कार	—	०	१०	००	०	१०	००
(iv) उज्जैन में कर्क लग्न का मान	—	१७	१२	००	१९	३२	००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारिणी परिवर्तन पद्धति

उदाहरण (१)—मान लो १० मई को बम्बई में कर्क लग्न का मान दिल्ली की दैनिक लग्न सारिणी से निकालना है—

	आरम्भ	समाप्ति
(१) दिल्ली में कर्क लग्न का मान	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.
(दैनिक लग्न सारिणी पृष्ठ ६७)	६ ५७ ००	१२ १७ ००
(२) बम्बई का देशान्तर :—ऋण ३८।४० (देखिए सारिणी पृ. १०३, पूर्व रेखांश ७२।५०) ऋण देशान्तर होने से धन किया जायेगा।	+ ० ३८ ४०	+ ० ३८ ४०
(३) चरान्तर : १० मई की रवि क्रान्ति (पृ. ११४) १७।२६ उत्तर चरान्तर सारिणी पृ. ११० पर १७ क्रान्त्यंश के सामने अक्षांश १८ के नीचे देखा। बम्बई का उत्तर अक्षांश १७।५५ है, १८ के लगभग है (अक्षांश सारिणी पृ. १०३) चरान्तर मि. उत्तर क्रान्ति होने से धन है।	+ ० १५ ००	+ ० १५ ००
(४) बम्बई में कर्क लग्न का मान	१० ५० ४०	१३ १० ४०

उदाहरण (२)—मान लो ८ दिसम्बर को इलाहाबाद में वृष लग्न का मान निकालना है।

(१) इलाहबाद (पृष्ठ १०२ अक्षांशादि सारिणी से) उत्तर अक्षांश २५।२८ देशान्तर : १८-३२

(२) ८ दिसम्बर (पृ. ११० रवि क्रान्ति सारिणी से) रवि क्रान्ति २२।४० दक्षिण

(३) चरान्तर मिनट : २२।४० दक्षिण क्रान्ति है, २३ क्रान्त्यंश के सामने २५ अक्षांश के नीचे ८ मिनट है तथा २६ के नीचे ६ मिनट है। हमें २५।२८ के लिए दोनों के बीच के २५ व २६ के चरान्तर मिनट लेने है, अतः ७ मिनट लेंगे जो दक्षिण क्रान्ति होने से ऋण किए जाएंगे। .

	आरम्भ	समाप्ति
(१) दिल्ली में वृष लग्न का मान	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.
दैनिक लग्न सारिणी पृष्ठ ७० से	१५ ५५ ००	१७ ५० ००
(२) देशान्तर धन है ऋण किया जायेगा	— १८ ३२	— १८ ३२
(३) चरान्तर	— ७ ००	— ७ ००
(४) इलाहाबाद में लग्न का मान	१५ २९ २८	१७ २४ २८

इष्टकाल

आजकल समय जिन घड़ियों में देखा जाता है उनमें घण्टों की गिनती मध्याह्न १२ बजे के बाद तथा मध्यरात्रि के बाद १ से १२ तक होती है, दिन २४ घंटे का होता है। जन्म समय इसी के अनुसार घंटे-मिनटों में बताया जाता है। तारीख रात को १२ बजे के बाद बदल जाती है, जबकि वार सूर्योदय से आरम्भ होता है। अब यदि किसी का जन्म सायंकाल ५ बजकर ३५ मिनट पर हुआ है तो इसका अभिप्राय यह होता है कि मध्याह्न के बाद ५ घंटे ३५ मि. बीत गए हैं। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्योदय का समय जानने की आवश्यकता होती है, क्योंकि हमारा दिन सूर्योदय से आरम्भ होता है। सूर्योदय का समय हर स्थान का अलग-२ होता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर लगभग २४ घण्टे में एक बार घूम जाती है (२३ घण्टे ५६ मि. १५ सै.) और ३६५ दिन ६ घण्टे ९ सै. में सूर्य का एक चक्कर पूरा करती है। आकाशीय क्रान्ति वृत्त की बारहों राशियां २४ घण्टे में इसके सामने से निकलती है। बारह राशियों में से जो राशि पृथ्वी के उस भाग के क्षितिज पर होती है, वह उस समय की लग्न होती है। सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है, सूर्योदय के समय क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंशों पर उदय होती है और जैसे-२ सूर्य आकाश में चढ़ता जाता है क्षितिज पर आगे की राशियां उदय होती जाती है। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न कहलाती है। क्षितिज उस स्थान को कहते है जहां पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते है। सूर्य पूर्वी क्षितिज पर उदय होता है और पश्चिमी क्षितिज पर अस्त होता है। किसी समय की लग्न जानने के लिए उस स्थान का सूर्योदय जानना जरूरी होता है।

सूर्योदय से जन्म समय या प्रश्न समय अथवा इष्ट समय तक के काल को इष्टकाल कहते है। यह अवधि घंटे-मिनटों में नहीं बल्कि घड़ी-पलों में होती है। इस प्रकार इष्टकाल निकालना बहुत सरल है। जन्म समय में से सूर्योदय घटाकर ढाई गुना कर देने से इष्टकाल आ जाता है। इसके कुछ उदाहरण नीचे देखिए।

उदाहरण (१)—मानलो आपने २५ जून को प्रातः ११-३५ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल जानना है तो आर्यभट्ट पंचाग से २५ जून का सूर्योदय लिया। आर्यभट्ट पंचांग दिल्ली के अक्षांश पर बनाया गया है और इसमें दिया सूर्योदय दिल्ली का है। २५ जून का सूर्योदय ५-२८ है। ध्यान रहे कि सूर्योदय भी भारतीय स्टैण्डर्ड समय में दिया गया है और जन्म समय भी भा. स्टै. टा. में है। इसलिए इस गणित में दिल्ली का भा. स्टै. टा. से स्थानीय अन्तर २१ मि. ४ सै. घटाने की आवश्यकता नहीं होती। कुछ ज्योतिषी अकारण इस गणित में स्थानीय अन्तर घटा-बढ़ा कर अर्थ का अनर्थ कर देते है। स्थानीय अन्तर का ऋण धन संस्कार दिनमान में इष्टकाल निकालते समय किया जाता है।

	घं.	मि.	
(१) २५ जून को जन्म समय	११	३५	भा.स्टै.टा.
(२) २५ जून का सूर्योदय घटाया	—५	२८	,,
	६	०७	
६-०७ का ढाई गुना किया	६	०७	
	३	०३	३०
इष्टकाल घड़ी पल विपल में	१५	१७	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उदाहरण (२)—दिल्ली जन्म स्थान
१० सितम्बर को सायं ८-४५ का इष्टकाल निकालना
सायंकाल ८-४५ में १२ जोड़कर २०-४५ लिखा जाता है।

	घं. मि.	
(१) १० सितम्बर को जन्म समय मध्याह्न के बाद के समय में १२ जोड़कर लिखें	२० ४५	भा. स्टैं. टा.
(२) १० सितम्बर का दिल्ली का सूर्योदय घटाया	— ६ ०८	,,
१४-३७ को ढाई गुना किया	१४ ३७	
	१४ ३७	
	७ १८ ३०	
(३) इष्टकाल घड़ी पल विपल में	३६ ३२ ३०	

६० विपल का एक पल, ६० पल की एक घड़ी और ६० घड़ी का अहोरात्रि (पूरा दिन-रात) होता है।

उदाहरण (३)—१२ दिसम्बर को मध्यरात्रि के बाद १३ दिसम्बर में ५-२१ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल निकालना है। मध्यरात्रि के बाद के घण्टों में २४ जमा करके लिखा जाता है। जन्म समय से पहले का सूर्योदय १२ दिसम्बर का लिया जायेगा।

	घं. मि.	
जन्म समय मध्यरात्रि उपरान्त १३ दिसम्बर	५ २१	भा. स्टैं. टा.
२४ जमा करके लिखा	२९ २१	
सूर्योदय १२ दिसम्बर का घटाया	— ७ ०८	,,
२२ घण्टे १३ मिनट के घड़ी पल बनाये	२२ १३	
ढाई गुना किया	२२ १३	
	११ ०६ ३०	
इष्टकाल—घड़ीपल विपल में	५५ ३२ ३०	

सूर्योदय से एक मिनट पहले भी जन्म हुआ हो तो भी जन्म पिछले दिन में ही माना जायेगा। जैसे उपरोक्त उदाहरण में यदि जन्म ७ बजकर ७ मिनट पर हुआ होता तो भी इसमें २४ जोड़कर ३१-७ में से १२ दिसम्बर का सूर्योदय घटाकर ही इष्टकाल निकाला जाता। इष्टकाल कभी ६० घड़ी से अधिक नहीं आता, ६० से कम ही आता है। इसी प्रकार सूर्योदय पर या सूर्योदय के एक मिनट बाद भी जन्म हो तो उसी दिन का जन्म माना जाता है और जो सूर्योदय हो चुका है, वही घटाकर इष्टकाल निकाला जाता है। जैसे १३ दिसम्बर को जन्म समय ७-९ हो तो इष्टकाल २½ पल होगा। यदि समय का बहुत सूक्ष्म हिसाब रखा हो तो सूर्योदय से एक सैकिण्ड पहले तक पिछला दिन लिया जाता है और सूर्योदय के एक सैकिण्ड बाद वही दिन लिया जाता है। परन्तु ऐसे उदाहरणों में सूर्योदय भी सूक्ष्म गणित से सैकिण्डों तक निकालना पड़ता है।

सूर्योदय परिवर्तन पद्धति

उपरोक्त उदाहरणों में यह बताया गया है कि दिल्ली में जन्मे व्यक्तियों का दिल्ली अक्षांश पर आधारित श्री आर्यभट्ट पंचांग की सहायता से इष्टकाल कैसे निकाला जाता है। अब आपको यह बताया जायेगा कि दिल्ली के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर जन्मे व्यक्तियों का दिल्ली के पंचांग से इष्टकाल कैसे निकाला जाता है। दिल्ली के सूर्योदय की सहायता से जन्म स्थान का सूर्योदय निकालने की विधि बताई जा रही है, यह काफी सरल है। जैसे हमने दिल्ली में लग्नों के आरम्भ व समाप्तिकाल की सहायता से अन्य स्थानों के लग्न अवधि काल निकाले थे, वैसे ही सूर्योदय भी निकाला जाता है। इसको कुछ उदाहरण देकर बताते हैं।

उदाहरण (१)—मान लो किसी का जन्म १२ अक्टूबर को प्रातः १०-२५ पर चण्डीगढ़ में हुआ है। आपको इसकी पत्री बनाने के लिए इष्टकाल निकालना है, तो पहले चण्डीगढ़ में १२ अक्टू. का सूर्योदय निकालना पड़ेगा। अक्षांशादि सारिणी (पृष्ठ १०२) से चण्डीगढ़ का विवरण लिया। उत्तर अक्षांश ३०।४०, देशान्तर १-२८ है, १२ अक्टूबर की रवि क्रान्ति ७-१२ दक्षिण क्रान्ति है। चरान्तर सारिणी में ७ दक्षिण क्रान्ति तथा ३१ उत्तर अक्षांश के अन्तर्गत चरान्तर मिनट २ है जो दक्षिण क्रान्ति होने से धन मिनट है। चण्डीगढ़ का उत्तर अक्षांश ३०।४० है, क्योंकि ३०½ से अधिक है, इसलिए ३१ के कोष्ठक में देखना ठीक रहेगा।

		घं. मि. सै.	भा.स्टैं.टा.
(१) सूर्योदय दिल्ली १२ अक्टूबर		६ २४ ००	
(२) चण्डीगढ़ का देशान्तर ऋण है, अतः धन किया	+	० १ २८	
(३) चरान्तर मिनट	+	० २ ००	
(४) चण्डीगढ़ का सूर्योदय १२ अक्टूबर		६ २७ २८	,,

इष्टकाल का गणित उपरोक्त प्रकार से ही होगा—

जन्म समय प्रातः	१० २५ ००	,,
सूर्योदय चण्डीगढ़	६ २७ २८	
घड़ी पल बनाने के लिए ढाई गुना किया	३ ५७ ३२	
	३ ५७ ३२	
	१ ५८ ४६	
घड़ी पल विपल में इष्टकाल	९ ५३ ५०	

उदाहरण (२)—१५ मार्च को जयपुर में सायं ४-५० पर जन्म हुआ है। दिल्ली के पंचांग से जयपुर का सूर्योदय निकालना है। यहां एक बात बता देना आवश्यक है कि हम अपने उदाहरणों में साल का कोई जिक्र नहीं कर रहे हैं। तो कृपया ध्यान रखिए कि अंग्रेजी तारीख के अनुसार प्रत्येक वर्ष सूर्योदय किसी एक तारीख को किसी एक स्थान पर उसी समय पर होगा। जैसे इस उदाहरण में जयपुर में १५ मार्च को सूर्योदय प्रति वर्ष उसी समय पर होगा। इसलिए उदाहरणों में जन्म किसी वर्ष का हो कोई अन्तर नहीं पड़ता।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारिणी से जयपुर का विवरण इस प्रकार है—उत्तर अक्षांश २६।५५ देशान्तर —५।३६ है। १५ मार्च की रवि क्रान्ति २-३१ दक्षिण है। उत्तर अक्षांश २६।५५ को २७ मानकर देखा तो चरान्तर मिनट शून्य है।

		घं.	मि.	सै.	
(१) १५ मार्च को दिल्ली का सूर्योदय		६	३५	००	भा. स्टैं टा.
(२) देशान्तर दिल्ली-जयपुर ऋण है, अतः धन किया	+		५	३६	
(३) चरान्तर शून्य है			०	०	
(४) सूर्योदय जयपुर भा. स्टैं. टा. में		६	४०	३६	,,

रवि क्रान्ति—अक्षांश

पृथ्वी गोल है। इस पृथ्वी रूपी गोले को उत्तर-दक्षिण बराबर विभाजित करने वाली रेखा भूमध्य रेखा है, जिसका अक्षांश ० शून्य है। इसके उत्तर भाग को उत्तर गोल तथा दक्षिण भाग को दक्षिण गोल कहते है। पृथ्वी के उत्तर भाग में ९० और दक्षिण भाग में ९० अक्षांश है। उत्तर-दक्षिण अंशो को अक्षाश कहते हैं। जैसे दिल्ली २८।३८ उत्तर अक्षाश पर स्थित है। अर्थात् भूमध्य रेखा से उत्तर गोल में २८ व २९ अक्षांश के बीच में स्थित है, प्रत्येक अक्षाश को ६० भागों में विभाजित किया गया है, उसमें दिल्ली २९वें अक्षांश के ३८वें भाग पर है। एक अक्षाश की दूरी लगभग ७५ मील होती है, इसलिए एक अक्षाश को भी आगे ६० छोटे भागों में विभाजित किया जाता है। पृथ्वी पर किसी स्थान की भौगोलिक स्थिति बताने के लिए उस स्थान के अक्षांश व रेखांश बताकर जानकारी दी जाती है।

किसी भी गोले को या अंडाकार पदार्थ को लम्बाई में अर्थात् उत्तरी ध्रुव व दक्षिणी ध्रुव के मध्य स्थान में काटे तो उसका मध्य भाग एक ही निश्चित स्थान पर आयेगा। इसलिए भूमध्य रेखा एक ही स्थान पर हो सकती है। भूमध्य रेखा ० शून्य अक्षांश पर है, इसके दक्षिण ० से ९० अंश तक दक्षिण अक्षाश और उत्तर में उत्तरी ध्रुव तक ० से ९० अंश तक उत्तर अक्षांश है। आपने बचपन में लट्टू घुमाया होगा या घूमते हुए देखा होगा। लट्टू अपनी कीली पर तो घूमता ही है, साथ ही वह एक गोलाकार अंडाकार परिधि में भी चक्कर लगाता है। ऐसा करते समय वह अपने केन्द्रस्थान की तरफ थोड़ा झुका हुआ रहता है। पृथ्वी भी सूर्य के चारों ओर इसी प्रकार घूमती है और उसके इस बदलते झुकाव के कारण सूर्य उत्तरायण तथा दक्षिणायण होता रहता है। सूर्य के साथ पृथ्वी के इस झुकाव का जो कोण बनता है वह २३.५ अंश है। समझाने के लिए लट्टू का उदाहरण दिया है, परन्तु लट्टू तो पृथ्वी के धरातल पर घूमता है और पृथ्वी आकाश में अधर में घूमती है।

२१ मार्च का सायन सूर्य मेष राशि में अर्थात् पहली राशि में प्रवेश करता है। उस समय पृथ्वी का भूमध्य रेखा वाला भाग सूर्य के ठीक सामने होता है। रवि क्रान्ति शून्य होती है। दिन-रात उस समय पृथ्वी के मध्य भाग में बराबर होते हैं। उसके बाद सूर्य उत्तर गोल में ऊपर को बढ़ता जाता है और सूर्य की उत्तर क्रान्ति प्रतिदिन बढ़ती जाती है। २१ जून को सूर्य कर्क रेखा पर पहुंच जाता है। उस दिन सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करता है और उत्तर रवि क्रान्ति अपने चरम अंश २३ पर पहुंच जाती है। आकाशीय क्रान्ति पथ के साथ पृथ्वी का क्रान्ति पथ २३½° का कोण बनाता है। उस समय दिन सबसे अधिक और रात न्यूनतम होती है। दुनिया का कोई नक्शा उठाकर देखो, भूमध्य रेखा ० अक्षांश भारत के दक्षिण में काफी दूर समुद्र पर होकर गुजरती है। कर्क रेखा (Tropic of cancer) भारत में अहमदाबाद, भोपाल, रांची से कुछ उत्तर में होकर निकलती है। सूर्य जब कर्क रेखा पर होता है उस समय भारत के मध्य भाग उसके सीधे प्रभाव में होने से अधिकतम गर्मी की ऋतु का अनुभव करते हैं।

२१ जून के लगभग सूर्य उत्तरायण से दक्षिणायन होता है। २१ सितम्बर तक सूर्य भूमध्य रेखा पर ० अक्षांश पर पहुंच जाता है, तब उसकी उत्तर क्रान्ति भी कम होते-होते शून्य हो जाती है। इसके बाद भी सूर्य रहता तो दक्षिणायण ही है यानी दक्षिण की ओर ही जाने वाला, परन्तु २१ सितम्बर तक तो पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध मे था। इसके बाद वह दक्षिण गोलार्ध मे प्रवेश करता है। इस समय सूर्य भारत से काफी दूरी पर पहुंच जाता है। अतः भारत मे शरद् ऋतु आरम्भ हो जाती है। सूर्य निरन्तर दक्षिणायण रहते हुए दक्षिण गोल में अग्रसर होता रहता है और उसकी दक्षिण क्रान्ति २१ दिसम्बर तक चरम पर पहुंच जाती है। २१ सितम्बर को दिन-रात बराबर हो जाते है। २१-२२ दिसम्बर को दिन सबसे छोटा और रात सबसे बड़ी होती है। यहां से दिन बढ़ना शुरू होता है और इसी कारण २५ दिसम्बर को बड़े दिन का उत्सव मनाया जाता है। २१ दिसम्बर के लगभग सायन सूर्य मकर राशि मे प्रवेश करता है और अपनी दक्षिण यात्रा के चरम बिन्दु मकर रेखा पर पहुंच जाता है। मानचित्र में मकर रेखा (Tropic of Capricorn) हिन्द महासागर में भारत से बहुत दूर दक्षिण में है। यह रेखा दक्षिण अमरीका के मध्य भाग, दक्षिण अफ्रीका और आस्ट्रेलिया के मध्य से होकर गुजरती है। सूर्य जब मकर रेखा पर होता है उस समय इन देशों में ग्रीष्म ऋतु होती है। भारत से दूर होने के कारण यहां मौसम ठंडा होता है। २१ दिसम्बर के बाद सूर्य उत्तर की ओर आने लगता है, वैसे सूर्य तो आकाश में स्थिर है, परन्तु पृथ्वी की गति में क्रान्ति में परिवर्तन के कारण वह इस प्रकार स्थान परिवर्तन करता प्रतीत होता है और बोलचाल तथा लिखने की भाषा में यही कहा जाता है कि सूर्य चल रहा है।

२१ दिसम्बर के लगभग सूर्य उत्तरायण हो जाता है, परन्तु २१ मार्च तक वह दक्षिण गोलार्ध मे ही रहता है। २१ मार्च को सूर्य भूमध्य रेखा पर आ जाता है, २१ मार्च से २१ सितम्बर तक सूर्य उत्तर गोल मे रहता है और २१ सितम्बर से २१ मार्च तक दक्षिण गोल मे। २१ दिसम्बर से २१ जून तक सूर्य उत्तरायण रहता है और २१ जून से २१ दिसम्बर तक दक्षिणायण। सूर्य के इस परिवर्तन को आप अपने यहां के पूरब-पश्चिम क्षितिज में सूर्योदय व सूर्यास्त को देखकर अथवा ऊपर के आकाश में सूर्य के भ्रमण पर ध्यान देकर या अपने घर में आने वाली धूप तथा सूर्य की किरणों के बदलते कोणो को देखकर भी बड़ी आसानी से ज्ञात कर सकते हैं।

सूर्य के उपरोक्त उत्तरायण-दक्षिणायण होने से प्रत्येक स्थान पर सूर्योदय तथा दिनमान आदि में प्रतिदिन जो अन्तर आता है उसे चरान्तर द्वारा निकाला जाता है। इसमे सूर्य की उत्तर-दक्षिण क्रान्ति और प्रत्येक स्थान के उत्तर दक्षिण अक्षांश के अनुसार भिन्न-२ परिवर्तन होते हैं। पंचांग में दी हुई चरान्तर सारिणी उत्तर अक्षाश ८ से ३६ तक के लिए है और भारत के किसी भी भाग के लिए प्रयोग में लाई जा सकती है। चरान्तर तथा रवि क्रान्ति सारिणी इस पंचांग के पृ. ११० व ११४ पर दी हुई हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रेखांश

उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक १८० अक्षांश हैं, जिसमें ९० उत्तर अक्षांश हैं और ९० दक्षिण अक्षांश है, इनकी गिनती भूमध्य रेखा से आरम्भ होती है। भूमध्य रेखा ० अक्षांश पर है, जिस प्रकार पृथ्वी को उत्तर-दक्षिण १८० अंशों में विभाजित किया गया है उसी प्रकार इसको पूरब-पश्चिम ३६० अंशों में विभाजित किया गया है, इनको पूर्व रेखांश और पश्चिम रेखांश कहते है। उत्तर-दक्षिण विभाजित करने पर तो भूमध्य रेखा जहां है वही हो सकती है, परन्तु पूर्व-पश्चिम विभाजन में किसी भी रेखा को ० माना जा सकता है। आजकल इसे लन्दन के पास ग्रीनविच पर जो रेखा है उसे ० रेखांश मानकर इसके पूर्व के रेखांशों को पूर्व रेखांश तथा पश्चिम के रेखांशों को पश्चिम रेखांश माना जाता है। ग्रीनविच में ग्रहों का निरीक्षण करने के लिए अत्याधुनिक वेधशाला है, इस कारण इसे यह महत्त्व दिया गया है। कभी यह सम्मान भारत की उज्जैन नगरी को प्राप्त था। पृथ्वी की परिधि भूमध्य रेखा पर २६४०० मील है। अतएव भूमध्य रेखा पर एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील होती है, पृथ्वी की २६४०० मील की दूरी अर्थात् ३६० अंश २४ घंटे में सूर्य के सामने से गुजर जाते है। एक रेखांश पर यह अन्तर ४ मिनट का होता है। सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। मान लो कलकत्ता नगर में सूर्योदय ५-३० पर हुआ, कलकत्ता ८८-२३ पूर्व रेखांश पर है तो ८९-२३ पर स्थित नगर में सूर्योदय ४ मिनट बाद होगा और इस प्रकार प्रति रेखांश ४ मिनट का अन्तर कलकत्ते के समय से आता जाएगा।

कुछ समय पहले तक प्रत्येक नगर अपना-२ अलग समय निर्धारण अपनी धूपघड़ियों या अन्य प्रकार की रेत घड़ियों, जल घड़ियों की सहायता से मध्याह्न और सूर्योदय के आधार पर किया करते थे। सन् १९०६ से पूरे भारत के लिए एक ही स्टैंडर्ड टाईम रखने की व्यवस्था अंग्रेजी राज में रेलवे तथा डाक विभाग के लिए की गई। यह समय ग्रीनविच समय से ५½ घंटे आगे था और ८२½ पूर्व रेखांश पर आधारित था। समस्त भारत में यह स्टैंडर्ड समय १ सितम्बर १९१७ से लागू कर दिया गया। परन्तु बंगाल प्रान्त और आसपास के कुछ भागों में स्थानीय समय पूर्ववत् चलता रहा। इन प्रान्तों ने सितम्बर १९४१ में स्टैंडर्ड टाईम को व्यवहार में लाना आरम्भ किया। द्वितीय विश्व युद्ध के चलते १ सितम्बर १९४२ से १५ अक्टूबर १९४५ तक पूरे भारत वर्ष में जिसमें आज के पाकिस्तान तथा बंगला देश भी शामिल थे, समय एक घंटा बढ़ा दिया गया था, अर्थात् ग्रीनविच समय से ६ घ. ३० मि. आगे। अब समस्त भारत में एक ही स्टैंडर्ड समय चलता है जो ग्रीनविच समय से ५½ घंटा आगे है और ८२½ पूर्व रेखांश पर आधारित है।

यदि प्रत्येक नगर अपना अलग-२ स्थानीय समय रखे तो कामकाज में काफी गड़बड़ी पैदा हो सकती है। इसलिए अपने काम को सुचारु रूप से सम्पादन करने के लिए प्रत्येक देश अपने लिए एक स्टैंडर्ड समय निर्धारित करता है और उसकी सीमा में सर्वत्र वही समय काम में लाया जाता है। यह समय निर्धारण ग्रीनविच से उसकी दूरी पर निर्भर करता है। वह देश ग्रीनविच से जितने घण्टे की दूरी पर होता है उसका समय उतने ही अन्तर पर रखा जाता है। यह तो आपको बताया ही जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अन्तर होता है। अतएव १५ रेखांश पर १ घण्टे का अन्तर हुआ, जो देश ग्रीनविच से लगभग १५ रेखांश की दूरी पर हैं, उनका स्टैंडर्ड समय ग्रीनविच से एक घण्टे के अन्तर पर निर्धारित है। हालैंड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, बेल्जियम, हंगरी, युगोस्लाविया, डेन्मार्क, स्विटजरलैन्ड, स्पेन, पोर्तगाल, नार्वे, स्वीडन आदि देशों का स्टैंडर्ड समय ग्रीनविच से एक घण्टा आगे है। मिश्र, तुर्की, यूनान, रोमानिया, फिनलैन्ड, सीरिया, इजराइल, सूडान, बल्गेरिया आदि देशों का समय दो घंटे आगे है। यह देश २ घंटे के समय क्षेत्र में हैं। ईराक, कुवैत, लेनिनग्राद, यमन, इथोपिया, मास्को, सऊदी अरब, ईरान आदि देश ३ घंटे के क्षेत्र में हैं। अफगानिस्तान ४½ घंटे तथा पाकिस्तान ५ घंटे के समय क्षेत्र में आता है। बंगला देश का समय ग्रीनविच से ६ घंटे तथा बर्मा ६½ घंटे आगे है। थाईलैंड, इन्डोनेशिया, वियतनाम, कम्बोडिया, ७ घंटे के क्षेत्र है। चीन, हाँगकांग, फिलीपीन्स ८ घंटे तथा कोरिया व जापान ९ घंटे के अन्तर पर हैं। आस्ट्रेलिया १० घंटे और न्यूजीलैण्ड १२ घंटे के अन्तर पर हैं। जिस प्रकार ग्रीनविच से पूर्व के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार ग्रीनविच समय से आगे रहता है उसी प्रकार ग्रीनविच से पश्चिम के देशों का समय ग्रीनविच से उनके रेखांशों के अनुसार कम रहता है। समस्त इंग्लैण्ड तथा स्काटलैण्ड में ग्रीनविच समय माना जाता है। ग्रीनविच से न्यूयार्क, वाशिंगटन, टोरन्टो, ओटावा, बोस्टन आदि नगर ५ घंटे कम, शिकागो, मैक्सिको ७ घंटे कम के समय क्षेत्र में पड़ते हैं। लासऐंजिल्स का समय ग्रीनविच से ८ घंटे कम है। किसी भी एटलस में दुनिया का नक्शा देखकर आप उपरोक्त जानकारी की पुष्टि कर सकते हैं।

इस प्रकार देशों के स्टैंडर्ड समय निर्धारण में किन-२ बातों का ध्यान रखा जाता है यह आपको ज्ञात हुआ।

भारत वर्ष की सीमायें लगभग ६८ पूर्व रेखांश से ९३ पूर्व रेखांश के मध्य में आती है। पश्चिम की ओर के पड़ोसी देश पाकिस्तान को ५ घंटे के समय क्षेत्र में रखा गया है और पूर्व की ओर के पड़ोसी बंगलादेश को ६ घंटे का समय क्षेत्र ग्रीनविच से निर्धारित हुआ है। अतएव बीच के देश भारत के लिए ५½ घंटे का समय क्षेत्र ही युक्ति संगत था। यह तो आपको बताया जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अन्तर आता है तो ५½ घंटे का अन्तर ८२-३० रेखांश पर आता है (८२-३० × ४ = ३३० मि. = ५½ घं.)। भारत में ८२-३० अक्षांश इलाहाबाद अयोध्या के आसपास उत्तर से दक्षिण काकीनाडा मछलीपट्टम आदि नगरों के समीप होकर स्थित है। सारे भारत में एक जैसा स्टैंडर्ड समय रहता है, परन्तु ज्योतिष गणित के लिए जब किसी स्थान का स्थानीय सूर्योदय निकालना होता है या लग्नादि का गणित करना होता है तब हमें उस स्थान का स्थानीय समय निकालना पड़ता है। जिस स्थान का स्थानीय समय निकालना हो उसके रेखांश तथा अक्षांश अक्षांशादि सारिणी से ज्ञात कर लिए जाते हैं और तत्पश्चात उनकी सहायता से स्थानीय समय निकाल लिया जाता है।

जैसे दिल्ली का पूर्व रेखांश ७७।१३ है। (कुछ आचार्य ७७।१२ कुछ ७७।१४ भी मानते हैं)। यह रेखांश ८२-३० से ५।१७ कम है। प्रति रेखांश ४ मिनट के हिसाब से ५-१७ × ४ = २१-०८ अर्थात् २१ मिनट ८ सैकिण्ड। दिल्ली का स्थानीय समय स्टैंडर्ड समय से २१ मिनट ८ सैकिण्ड कम होगा। यदि किसी स्थान का रेखांश ८२-३० से अधिक है तो वहां का स्थानीय समय अधिक होगा। जैसे पटना का पूर्व रेखांश ८५-१३ है, जो ८२-३० से २-४३ अधिक है तो वहां का स्थानीय समय (२-४३ × ४ = १०-५२) १० मिनट ५२ सैकिण्ड स्टैंडर्ड समय से अधिक होगा।

अक्षांशादि सारिणी इस पंचांग में पृष्ठ १०२ पर दी गई है। इसमें मुख्य-२ नगरों के अक्षांश-रेखांश स्टैंडर्ड समय से उनका अन्तर तथा दिल्ली के समय से देशान्तर समय दिया हुआ है। यदि किसी छोटे नगर का नाम आपको इसमें न मिले तो उसके पास के बड़े

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नगर के विवरण की सहायता से आप इष्ट नगर या स्थान के अक्षांश-रेखांश आदि ज्ञात कर सकते हैं। मान लो आपको करौली के बारे में उपरोक्त विवरण प्राप्त करना है। अक्षांशादि सारिणी में यह नाम नहीं है। नक्शे में यह धौलपुर तथा ग्वालियर के बीच में कुछ पश्चिम की ओर है अथवा आपको भिण्ड के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है। यह स्थान नक्शे में धौलपुर, ग्वालियर के मध्य कुछ पूर्व की ओर है। स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों के पास एटलस होती है। आप चाहें तो एक एटलस अपने पास रख सकते हैं। नक्शे में उसका स्केल दिया रहता है कि एक इंच या एक सेंटीमीटर में कितने मील या किलोमीटर को लिया गया है। उसकी सहायता से आप उपरोक्त स्थानों की पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण दूरी नापकर उनके अक्षांश-रेखांश का पता कर सकते हैं। एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील या ११० किलोमीटर होती है। करौली तथा भिण्ड का अक्षांश-रेखांश जो उपरोक्त विधि से ज्ञात हुआ, वह इस प्रकार है—

	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टै. अन्तर	देशान्तर
धौलपुर	२६-४२	७७।५३	−१८-२८	+२-३६
करौली	२६-३८	७७।०५	−२१-४०	−०-३६
ग्वालियर	२६-१४	७८-१०	−१७-२०	+३-४४
भिण्ड	२६-४०	७८-५०	−१८-४०	+२-२४

लग्न

पृथ्वी २४ घंटे में अपनी धुरी पर (अक्ष पर) एक बार पूरी घूम जाती है। यह समय ठीक-२ तो २३ घंटे ५६ मिनट १५ सैकिण्ड है। इस २४ घंटे के समय में बारहों राशियां इसके सामने से गुजर जाती हैं। राशियां आकाश में स्थित तारागणों के समूह से बनती हैं। पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती हुई सूर्य की एक प्रदक्षिणा ३६५ दिन ६ घंटे ९ सै. में पूरी करती है। पृथ्वी वासियों को सूर्य आकाश स्थित जिस राशि में दिखाई देता है, हम लोग यही कहते है कि सूर्य इस राशि में है और इतने अंश पर है। निरयन सूर्य प्रायः १३ अप्रैल को मेष राशि के ० शून्य अंश पर होता है। प्रतिदिन लगभग एक अंश आगे बढ़ता रहता है। सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में जाने को संक्रान्ति कहते हैं। सूर्योदय के समय सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है पूर्व क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंश पर उदित होती है। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न होती है।

२४ मई को दिल्ली में सूर्योदय भारतीय स्टैंडर्ड समय के अनुसार ५-३० बजे होता है। पंचांग में दिए गए सूर्यस्पष्ट भी ५-३० प्रातः के ही हैं। सूर्य उस दिन सूर्योदय के समय वृष राशि के ९ अंश पर है तो सूर्योदय के समय दिल्ली में ५-३० प्रातः पर लग्न भी वृष के ९ अंश पर ही लगेगी। सूर्य आकाश में ऊपर चढ़ता रहता है और पूर्वी क्षितिज पर राशियां भी आगे बढ़ती रहती हैं। स्थूल गणित से यदि प्रत्येक लग्न को दो घंटे का मानें तो ७.३० बजे मिथुन के ९ अंश, ९.३० बजे कर्क के ९ अंश, ११.३० बजे सिंह के ९ अंश, इस प्रकार लग्न क्षितिज पर आगे बढ़ती रहती है। इस प्रकार मध्याह्न के समय लग्न सिंह होती है और सूर्य दशम भाव में अर्थात् लग्न से दसवीं राशि में होता है। दूसरे शब्दों में मध्याह्न के समय लग्न सूर्य से चौथी राशि, सूर्यास्त के समय सातवीं राशि और मध्यरात्रि के समय दसवीं होता है। यानी मध्यरात्रि के समय की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न से चौथे भाव में आयेगा। मध्याह्न को दशम भाव में तथा सूर्यास्त के समय सप्तम भाव में आएगा। यदि जन्म समय ज्ञात नहीं है तो कुण्डली में सूर्य की स्थिति से जन्म का लगभग समय जाना जा सकता है।

२४ घंटे में १२ लग्नें होती हैं तो प्रत्येक लग्न २ घंटे की होनी चाहिए, पर ऐसा नहीं है। पृथ्वी सूर्य के चारो ओर चक्कर लगाती है, परन्तु उसका यह पथ पूरा गोलाकार नहीं है, अंडाकार है। इसीलिए कुछ राशियां दो घंटे में निकल जाती हैं, कुछ को २ घंटे से ज्यादा और कुछ को दो घंटे से कम समय लगता है। अब आपको लग्न निकालने की एक सरल प्रक्रिया बताते हैं, जिसकी सहायता से भारत के किसी भी स्थान की लग्न निकाली जा सकती है।

किसी भी स्थान की लग्न निकालने के लिए निम्न बातों की जानकारी आवश्यक होती है :—

(१) उस स्थान का सूर्योदय का समय
(२) इष्टकाल या जन्म समय (घड़ी पलों में)
(३) जन्म समय या इष्ट समय का सूर्य स्पष्ट
(४) जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी

(१) **सूर्योदय**—इस पंचांग में दिए दिल्ली के सूर्योदय की सहायता से भारत के किसी भी स्थान का सूर्योदय निकालने की विधि इस लेख में उदाहरण देकर समझा दी गई है। इस पंचांग में पृष्ठ १०७-१०८ पर ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक के १२ महीने के सूर्योदय व सूर्यास्त ६-६ दिन के अन्तर पर दिए गए हैं। इसमें भारत के सभी नगर आ जाते हैं। यह सूर्योदय व सूर्यास्त स्थानीय समय बताते हैं, स्टैंडर्ड समय जानने के लिए इनमें स्थान विशेष का स्टैंडर्ड अन्तर जोड़-घटा लेना चाहिए, इसको कुछ उदाहरण देकर स्पष्ट करते हैं।

उदाहरण (१)—पृष्ठ १०८-९ पर दी गई सूर्योदय सारिणी से चण्डीगढ़ का १२ अक्टूबर का सूर्योदय निकालो : चण्डीगढ़ का उत्तर अक्षांश ३०।४० है।

उपरोक्त सारिणी में ३० अक्षांश तथा ३१ अक्षांश दोनों में ही

९ अक्टूबर का सूर्योदय	५-५८ तथा
१५ ,, ,, ,,	६-०२ दिया गया है

९ से १५ तक ६ दिन में ४ मिनट का (६-०२-५-५८) अन्तर है तो ३ दिन (१२-९)

{ में २ मिनट का अन्तर होगा, अतएव १२ अक्टूबर का सूर्योदय हुआ (५.५८+०.०२) }	६ ०० ००
स्थानीय समय के अनुसार सूर्योदय	६ ०० ००
भा. स्टै. समय के लिए चण्डीगढ़ का स्टैंडर्ड अन्तर ०-२२-३२ जोड़ा	० २२ ३२
दृश्य वक्री भवन संस्कार	० ५ ००
चण्डीगढ़ का सूर्योदय भा. स्टै. समय अनुसार	६ २७ ३२

उदाहरण (२)—जयपुर का १५ मार्च का सूर्योदय पृष्ठ १०८-९ पर दी गई सूर्योदय सारिणी के अनुसार निकालिये। जयपुर का उत्तर अक्षांश २६।५५ है जो लगभग २७ ही है। पृष्ठ १०८ पर २७ अक्षांश के कोष्ठक में १४ मार्च का सूर्योदय ६-११ दिया है और २० मार्च का ६-०४ है। १४ मार्च से २० मार्च=६ दिन में सूर्योदय में अन्तर होता है ६-११—६-०४ = ७ मिनट का।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अतएव—१२ मार्च का सूर्योदय स्थानीय समयानुसार आया	६ १० ००
जयपुर का स्टैंडर्ड अन्तर धन किया	० २६ ४०
दृश्य वक्री भवन संस्कार	० ४ ००
भा. स्टै. टा में जयपुर का सूर्योदय	६ ४० ४०

जैसा कि उपरोक्त सारिणी के नीचे विवरण में बताया गया है। ३ से ५ मिनट का वक्री भवन संस्कार करना होता है।

यह दृश्य वक्री भवन संस्कार क्या है, इसके बारे में थोड़ी जानकारी दे दी जाए। पूर्वी क्षितिज पर सूर्य के पूरे गोले को निकलने में कुछ समय लगता है। पहले सूर्य के गोले का ऊपरी भाग दिखाई देता है फिर धीरे-२ पूरा सूर्य क्षितिज के ऊपर आता है। प्रकाश किरणो के कुछ नियमो के अनुसार बिम्ब के दृश्यमान होने और वास्तविक उदय होने मे कुछ मिनटों का अन्तर रहता है। यह ३ से ५ मिनट का होता है। आप यदि सदा ४ मिनट धन करें तो अधिक से अधिक १ मिनट का अन्तर इस गणित में आ सकता है।

(२) **इष्टकाल**—सूर्योदय ज्ञात होने पर इष्टकाल निकालने की विधि तो आपको बताई जा चुकी है।

(३) **सूर्य स्पष्ट**—पंचाग में दैनिक ग्रहस्पष्ट दिये रहते है, उसमें इष्ट दिन का सूर्य स्पष्ट अर्थात् सूर्य किस राशि के कितने अंश पर है, सरलता से जाना जा सकता है।

(४) **लग्न सारिणी**—अब आपको जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी की आवश्यकता होगी। आर्यभट्ट पंचाग मे पृष्ठ ११५ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की २८।३८ अक्षांश की सारिणी दी गई है, इसकी सहायता से दिल्ली के आसपास के नगरों की लग्न ज्ञात की जा सकती है। २८ व २९ अक्षांशों के लिए इसी सारिणी को प्रयोग मे लाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त हम अन्य अक्षांशो की सारिणियां भी प्रकाशित कर रहे हैं।

इष्टकाल से लग्न निकालने की विधि यह है कि जिस दिन का लग्न जानना हो उस दिन का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करो। जैसे २५ जून का ११-५५ मध्याह्न का दिल्ली में लग्न ज्ञात करना है तो २५ जून का सूर्य स्पष्ट प्रातः ५-३० का २-९-४२ है। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्य के राशि-अंशों की आवश्यकता होती है। सूर्य मिथुन राशि के ९ अंश ४२ कला पर है। जन्म समय ११-५५ तक ९ अंश ५७ कला तक पहुंच चुका है। अतएव सूर्य को हम मिथुन के १० अंश मानकर चलेंगे। पंचाग में पृष्ठ ११५ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की लग्न सारिणी में मिथुन राशि के १० अंश वाला कोष्ठक देखा। उसमें मिथुन २ के सामने तथा १० अंश के नीचे १३/१५ अथवा १३।१५ अंक प्राप्त होंगे। लग्न सारिणी में खड़े कोष्ठक १२ राशियों के है तथा आड़े कोष्ठक ० से २९ तक अंशों के हैं।

२५ जून को ११-५५ का इष्टकाल निकाला	घ. मि. सै.
दिल्ली में जन्म समय भा. स्टै. टा.	११ ५५ ००
२५ जून का सूर्योदय ,,	५ २८ ००
ढाई से गुणा करके घडी पल बनाए	६ २७ ००
	६ २७ ००
	३ १३ ३०
घडी पलों में इष्टकाल १६ घडी ८ पल	१६ ७ ३०

पृष्ठ ११५ पर ऊपर जो सारिणी है वह दशम भाव सारिणी है और नीचे लग्न सारिणी है। इसमें मिथुन के १० अंश के कोष्ठक में हमें १३।१५ अंक प्राप्त हुए, इनको इष्टकाल में जमा कर दिया— १३-१५ + १६-८ = २९-३३

उपरोक्त २९-३३ अंको को हमने उसी लग्न सारिणी में देखा तो कन्या लग्न के सामने ४ अंशों के कोष्ठक में २९-२६ तथा ५ अंश के कोष्ठक में २९-३७ अंक मिले। इसका अर्थ यह हुआ कि २५ जून को ११-५५ मध्याह्न के समय कन्या लग्न है तथा उसके ४ अंश बीत चुके हैं। पाचवें अंश की कुछ कलायें भी बीत चुकी है, अब यदि आपको केवल लग्न की राशि ज्ञात करनी है तो वह ज्ञात हो चुकी है। वैसे भी दैनिक लग्न सारिणी पृष्ठ ६७ से भी आपको ज्ञात हो सकता है कि ११-३७ से १३-५५ तक कन्या लग्न है। लग्न सारिणी से अंश भी ज्ञात हो गए है, ४ अंश बीत गए हैं। कला का ज्ञान करने के लिए गणित किया। २९-३७ में से २९-२६ घटाया = ११ अंकों में ६० कला तो इष्ट समय २९-३३ तक (२९-३३—२९-२६) ७ अंकों में = ६० × ७ = ४२० ÷ ११ = ३८।११ लग्न आई ५।४।३८।११ कन्या के ४ अंश ३८ कला ११ विकला। यह स्थूल लग्न स्पष्ट हुआ।

लग्न सारिणी

इस पचांग मे अक्षांश १९, २१, २३, २५, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२ की अलग-२ सारिणियां दी हुई है। उन पर यह भी संकेत दे दिये गये हैं कि वह किन-किन मुख्य-मुख्य नगरों के लिये प्रयोग मे लाई जा सकती हैं। आप जिस नगर का लग्न निकालना चाहें उसके अक्षांश के अनुसार उपयुक्त सारिणी का प्रयोग करें। यह सारिणियां २४ अयनांश पर गणित करके बनाई गई हैं। वर्तमान अयनांश २३।४४ चल रहा है जो २४ अयनांश के अधिक निकट है और २३ अयनांश पर बनी सारिणियों के स्थान पर २४ अयनांश की सारिणियां अधिक शुद्ध सूक्ष्म गणित फल उपलब्ध करा सकती है। उपरोक्त सारिणियों से उत्तर भारत के किसी भी स्थान की लग्न स्पष्ट की जा सकती है।

इस विषय का अधिक विवरण जानने के लिए पुस्तक "ज्योतिष शिक्षा मध्यमा गणित" में पढ़े। इसमें विश्व के किसी भी स्थान की सूक्ष्म शुद्ध लग्न स्पष्ट करने की विधियां विस्तार से समझाई गई हैं। अन्य अनेक विशेषतायें, गणित प्रक्रियायें भी दी गई हैं। ज्योतिष के विद्यार्थियों के लिए यह अनुपम पुस्तक है।

"ज्योतिष शिक्षा मध्यमा गणित"

लेखक :—

पं० लक्ष्मी नारायण शर्मा

मंगाने का पता :—

धर्मसन प्रकाशन

२५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विंशोत्तरी दशा गणित

ज्योतिषियों को फल कथन करने के लिए दशा गणित करने की आवश्यकता होती है। दशा तथा गोचर की सहायता से ही भविष्य कथन किया जाता है, इसके लिए जन्म समय पर किस ग्रह की कौन सी दशा चल रही है और उसकी कितनी अवधि समाप्त हो गई है तथा कितनी भोग्य रहती है। इसका यदि ठीक गणित नहीं किया गया तो भविष्य कथन भी अशुद्ध रहेगा, इसलिए यह आवश्यक है कि दशा का भोग्य ठीक निकाला जाए। परन्तु देखा यह गया है कि एक ही व्यक्ति की एक ही समय स्थान की एक से अधिक ज्योतिषियों द्वारा बनाई गई जन्मपत्री में दशा का भोग्य काल बहुधा एक जैसा नहीं मिलता। अधिकांश ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य काल भयात भभोग के द्वारा निकालते है। भयात भभोग अर्थात् नक्षत्र का मान और जन्म समय तक नक्षत्र का कितना अंश व्यतीत हो गया है, इसको भयात भभोग कहते हैं। पंचांगों में नक्षत्र का मान घड़ी पलों में दिया रहता है और पंचांग जिस स्थान विशेष के अक्षांश पर बना होता है, नक्षत्र का घड़ी पलों का मान भी उसी स्थान के लिए होता है। अब ज्योतिषी को चाहिए कि जन्मपत्री बनाते समय वह तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि सभी मानों को स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करें, परन्तु अधिकांश ज्योतिषी ऐसा नहीं करते। इस कारण गणित में अन्तर रहता है। भयात भभोग से चन्द्रस्पष्ट की विधि पृष्ठ ११७ पर दी गई है।

आजकल स्तरीय पंचांग चित्रा पक्षीय केतकी स्क् गणित पद्धति से बनाये जाते हैं। इनका गणित शुद्ध व सही माना जाता है, परन्तु अभी भी कुछ पंचांग पुरानी पद्धति से ही चिपके हुए है। पुरानी पद्धति से गणित करने पर काफी अन्तर आता है। २०-२५ वर्ष पहले के तो प्रायः सभी पंचांग पुरानी पद्धति पर ही बने हुए मिलते हैं। आजकल कुछ पंचांगो में तिथि नक्षत्र आदि का मान घंटे-मिनटो में भी दिया जाता है। यह घंटे-मिनटो का समय भारतीय स्टैंडर्ड समय में होने से भारत के सभी स्थानों के लिए एक सा होता है और भयात भभोग यदि घड़ी पलों के स्थान पर इन घंटे-मिनटों के आधार पर बनाया जाए तो दशा गणित भारत के सभी स्थानो के लिए एक जैसा तथा सही आयेगा। जहा नक्षत्रादि का मान घड़ी पलों में दिया हो वहा उसे स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करना चाहिए। पंचांग परिवर्तन पद्धति इस पचांग में पृष्ठ ११० पर दी हुई है। आर्यभट्ट पंचाग में तिथ्यादि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय वेधशाला ग्रीनविच से प्रतिदिन शून्य काल के ग्रहस्पष्ट प्रसारित किए जाते हैं। यही ५-३० प्रातःकाल के समय के ग्रहस्पष्ट भारत के लिए होते हैं। ग्रीनविच से भारत के समय का अन्तर साढ़े पांच घंटे का है। भारत के प्रायः सभी स्तरीय पंचांगों में यही ग्रहस्पष्ट दिये जाते हैं। आजकल कम्प्यूटरों से जन्मपत्री गणित भी इन्हीं पर आधारित होता है। प्रायः सभी प्रौढ़ ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य भयात भभोग के स्थान पर चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से निकालते है और कम्प्यूटर भी इसी पद्धति पर गणित करता है। इस प्रकार निकाली गई दशायें ठीक होती हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा का भोग्य निकालने में सहायता करने वाली एक विस्तृत सारिणी आर्यभट्ट पंचांग में सम्मिलित की गई है। इसकी सहायता से गणित शीघ्रता व सरलता से हो जाता है, इसको उदाहरण देकर समझाते हैं।

चन्द्र स्पष्ट

जन्मपत्री बनाते समय सभी ग्रहों का जन्म समय का स्पष्ट किया जाता है, दशा गणित के लिए चन्द्रमा का स्पष्ट करना आवश्यक होता है। पचांग में प्रतिदिन का प्रातः ५-३० का चन्द्रस्पष्ट दिया रहता है। प्रातः ५-३० से जन्म समय तक कितने घंटे-मिनट बीत चुके हैं, यह जानने के लिए जन्म समय में से ५-३० घटाना होता है। दोपहर बारह बजे के बाद के घंटो में १२ जोड़कर और रात के बारह बजे के बाद के घंटों में २४ जोड़कर लिखते है। फिर उसमें से ५-३० घटाने से ५-३० प्रातः से जन्म समय तक की अवधि घंटे-मिनटों में प्राप्त हो जाती है। मान लो जन्म समय किसी भी महीने की १५ तारीख को ९-४५ रात्रि का है तो २१-४५ में से ५-३० घटाने पर १६ घं. १५ मि. अर्थात् ९७५ मि. भुक्त अवधि हुई। अब चन्द्रमा की एक दिन अर्थात् २४ घंटे या १४४० मिनट की गति ज्ञात की। १६ तारीख को ५-३० प्रातः के चन्द्रस्पष्ट में से १५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट घटाने से चन्द्रमा की एक दिन की गति ज्ञात की जा सकती है।

	राशि	अंश	कला
१६ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रातः	६	२१	५४
१५ ,, ,, ,,	६	१०	०२
२४ घंटे की गति	०	११	५२

११ अंश ५२ कला अर्थात् ७१२ कला

१४४० मिनट में चन्द्रमा की गति— ७१२ कला

तो ९७५ ,, ,, ,, $\frac{७१२ \times ९७५}{१४४०}$

$= ६९४२०० \div १४४० =$ ४८२कला $=$ ८ अंश २ कला

	राशि	अंश	कला
१५ तारीख ५-३० प्रातः का चन्द्रस्पष्ट	६	१०	०२
प्रातः ५-३० से रात्रि ९-४५ तक की गति	०	८	०२
१५ तारीख ९-४५ जन्म समय पर चन्द्रस्पष्ट	६	१८	०४

चन्द्रस्पष्ट की एक और सरल विधि निम्न प्रकार से भी है—

२४ घण्टे की गति		०	११	५२
१२ ,, ,,	(२ से भाग किया)	०	५	५६
४ ,, ,,	(३ से भाग किया)	०	१	५९
०-१५ ,,	(१६ से भाग किया)	०	०	०७
१६-१५ ,,		०	८	०२
		+ ६	१०	०२
		६	१८	०४

चन्द्रमा की २४ घण्टे की गति जन्म समय पर चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि में लेना चाहिए। यदि प्रातः ५-३० और जन्म समय के मध्य चन्द्रमा ने राशि बदल दी हो तो चन्द्रमा की गति उसी राशि की लेनी चाहिए। चन्द्रमा की गति प्रत्येक राशि में भिन्न होती है। चन्द्रमा एक राशि में सवा दो दिन रहता है, जिस दिन आगे-पीछे की तारीखों में चन्द्रमा जन्म की राशि में हो उनका ही अन्तर लेकर दैनिक गति ज्ञात करनी चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आपका चन्द्र स्पष्ट ६-१८-४ है, इससे विंशोत्तरी दशा का ज्ञान किस प्रकार होगा, यह समझाते हैं। चन्द्रमा तुला राशि में है इसलिए सारिणी के तीसरे कोष्ठक में जिसके ऊपर मिथुन, तुला व कुम्भ लिखा है वह देखना होगा। चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि से सम्बन्धित कोष्ठक को देखना चाहिए। प्रथम कोष्ठक में अंश कला दिए गए हैं। इसमें १८ अंश के सामने तुला राशि वाले तीसरे कोष्ठक में राहु की महादशा के २ वर्ष ८ मास १२ दिन भोग्य रहते हैं। हमारे उदाहरण का चन्द्र स्पष्ट ६-१८-०४ है। अब ४ कला के लिए हमें पूरक सारिणी में राहु दशा के अन्तर्गत ४ कला के सामने देखने पर ज्ञात हुआ कि ४ कला पर ३२ दिन का अन्तर आता है। जैसे-२ चन्द्रमा के अंश कला बढ़ते जाते हैं, दशा का भुक्त काल बढ़ता जाता है और भोग्य काल कम होता जाता है, अतएव २-८-१२ में से ०-१-२ घटा दिया। तो ६-१८-०४ स्पष्ट चन्द्र पर राहु की भोग्य दशा २-७-१० अर्थात् २ वर्ष ७ मास-१० दिन निकली।

चन्द्रमा के राशि अंशों से विंशोत्तरी दशा का भोग्य बोधक सारिणी

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु				चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
०	०	केतु	७	—	—	सूर्य	४	६	—	मंगल	३	६	—	गुरु	४	—	—
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२९		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२६		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	—	२३		३	—	—
१	०		६	५	२१		४	—	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	४	२०		३	११	२१		२	१०	२०		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१७		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	—		२	७	१५		२	—	—
१	५०		६	—	१४		३	८	३		२	६	१४		१	९	१८
२	०		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	११		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	८		१	—	—
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		—	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	—	५		—	७	६
३	०		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		—	४	२४
३	१०		५	४	२		३	—	२७		१	१०	२		—	२	१२
३	२०		५	३	—		३	—	—		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२९		१८	९	४

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु				चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
३	४०	केतु	५	—	२७	सूर्य	२	१०	६	मंगल	१	६	२७	शनि	१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२६		१८	३	१३
४	०		४	१०	२४		२	८	१२		१	४	२४		१८	०	१८
४	१०		४	९	२३		२	७	१५		१	३	२३		१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	२०		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	—	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७			१०	१७		१६	१०	१०
५	०		४	४	१५		२	३	—		—	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३			९	१४		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६			८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	—	९			७	११		१५	१०	२८
५	४०		४	—	९		१	११	१२		—	६	९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		—	५	८		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		—	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		—	३	५		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		—	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७			१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	—		१	६	—	राहु	१८	—	—		१४	३	—
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	—	४
७	०		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	—	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	—	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		—	११	२१		१६	५	३		१२	७	१
८	०		२	९	१८		—	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०		२	८	१७		—	९	२७		१५	११	२१		१२	१	१०
८	२०		२	७	१५		—	९	—		१५	९	—		११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		—	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		—	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		—	६	९		१५	—	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		—	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		—	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७
९	२०		२	१	६		—	३	१८		१४	४	२४		१०	५	१२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु				चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
९	३०	केतु	२	—	५	सूर्य	—	२	२१	राहु	१४	२	३	शनि	१०	२	१६
९	४०		१	११	३		—	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		—	—	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	—	चन्द्र	१०	—	—		१३	६	—		९	६	—
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	—		१३	—	१८		९	—	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	—		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	०		१	२	२१		९	३	—		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	—	१८		९	—	—		११	८	१२		७	७	६
११	३०		—	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		—	१०	१५		८	९	—		११	३	—		७	१	१५
११	५०		—	९	१४		८	७	१५		११	—	९		६	१०	१९
१२	०		—	८	१२		८	६	—		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		—	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		—	६	९		८	३	—		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		—	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		—	४	६		८	—	—		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		—	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		—	२	३		७	९	—		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		—	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	—	—		७	६	—		९	—	—		४	९	—
१३	३०		१९	९	—		७	४	१५		८	१०	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	—		७	३	—		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	—		७	१	१५		८	३	२७		४	—	१३
१४	०		१९	—	—		७	—	—		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	—		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	—		६	९	—		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०		१८	३	—		६	७	१५		७	५	३		३	१	१
१४	४०		१८	—	—		६	६	—		७	२	१२		२	१०	६
१४	५०		१७	९	—		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	—		६	३	—		६	९	—		२	४	१५
१५	१०		१७	३	—		६	१	१५		६	६	९		२	१	१९

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु				चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
१५	२०	शुक्र	१७	—	—	चन्द्र	६	—	—	राहु	६	३	१८	शनि	१	१०	२४
१५	३०		१६	९	—		५	१०	१५		६	१	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	—		५	९	—		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	—		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	—	—		५	६	—		५	४	२४		—	११	१२
१६	१०		१५	९	—		५	४	१५		५	२	३		—	८	१६
१६	२०		१५	६	—		५	३	—		४	११	१२		—	५	२१
१६	३०		१५	३	—		५	१	१५		४	८	२१		—	२	२६
१६	४०		१५	—	—		५	—	—		४	६	—	बुध	१७	—	—
१६	५०		१४	९	—		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	—		४	९	—		४	—	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	—		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	—	—		४	६	—		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	—		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	—		४	३	—		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	—		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	—	—		४	—	—		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	—		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	—		३	९	—		२	३	—		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	—		३	७	१५		२	—	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	—	—		३	६	—		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	—		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	—		३	३	—		१	४	६		१४	—	९
१९	१०		११	३	—		३	१	१५		१	१	१५		१३	१०	२२
१९	२०		११	—	—		३	—	—		—	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	—		२	१०	१५		—	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	—		२	९	—		—	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	—		२	७	१५		—	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	—	—		२	६	—	गुरु	१६	—	—		१२	९	—
२०	१०		९	९	—		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	—		२	३	—		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	—		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	—	—		२	—	—		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०		८	९	—		१	१०	१५		१५	—	—		११	८	७
२१	०		८	६	—		१	९	—		१४	९	१८		११	५	२१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु				चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२१	१०	शुक्र	८	२	—	चन्द्र	१	७	१५	गुरु	१४	७	६	बुध	११	३	४
२१	२०		८	—	—		१	६	—		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	—		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	—		१	३	—		१४	—	—		१०	७	१५
२१	५०		७	३	—		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	—	—		१	—	—		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	—		—	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	—		—	९	—		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	—		—	७	१५		१३	—	—		९	६	२२
२२	४०		६	—	—		—	६	—		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	—		—	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	—		—	३	—		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	—		—	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	—	—	मंगल	७	—	—		१२	—	—		८	६	—
२३	३०		४	९	—		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	—		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	—		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	—	—		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	—		६	६	२३		११	—	—		७	५	७
२४	२०		३	६	—		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	—		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	—	—		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	—		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	—		६	१	१५		१०	—	—		६	४	१५
२५	१०		२	३	—		६	—	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	—	—		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	—		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	—		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	—		५	८	८		९	—	—		५	३	२२
२६	०		१	—	—		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		—	९	—		५	६	५		८	७	६		४	११	१९
२६	२०		—	६	—		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		—	३	—		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	—	—		५	३	—		८	—	—		४	३	—
२६	५०		५	११	३		५	१	२९		७	९	१८		४	—	१३

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु				चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२७	०	सूर्य	५	१०	६	मंगल	५	—	२७	गुरु	७	७	६	बुध	३	९	२७
२७	१०		५	९	९		४	११	२६		७	४	२४		३	७	१०
२७	२०		५	८	१२		४	१०	२४		७	२	१२		३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	—	—		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	—		४	४	१५		६	—	—		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	—	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	—	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	—	—		१	—	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		—	१०	६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		—	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		—	५	३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		—	२	१७
३०	०		४	६	—		३	६	—		४	—	—		—	—	—

चन्द्र स्पष्ट से विंशोत्तरी दशा भोग्य बोधक-पूरक सारिणी

कला	केतु ७ वर्ष		शुक्र २० वर्ष		सूर्य ६ वर्ष		चन्द्रमा १० वर्ष		मंगल ७ वर्ष		राहु १८ वर्ष		गुरु १६ वर्ष		शनि १९ वर्ष		बुध १७ वर्ष	
	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन
१	०	३	०	९	०	३	०	५	०	३	०	८	०	७	०	९	०	८
२	०	६	०	१८	०	५	०	९	०	६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५
३	०	९	०	२७	०	८	०	१४	०	९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३
४	०	१३	१	६	०	११	०	१८	०	१३	१	२	०	२९	१	४	१	१
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	६	१	१३	१	८
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६
७	०	२२	२	३	०	१९	१	२	०	२२	१	२७	१	२०	२	०	१	२४
८	०	२५	२	१२	०	२२	१	६	०	२५	२	५	१	२८	२	८	२	१
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	५	२	१७	२	९
१०	१	१	३	०	०	२७	१	१५	१	१	२	२१	२	१३	२	२६	२	१७

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विंशोत्तरी दशा पद्धति

ज्योतिष शास्त्र में भविष्य कथन के लिये अनेक प्रकार की दशाओं का वर्णन है। महर्षि पाराशर ने ही लगभग ४२ प्रकार की दशाओं का वर्णन किया है। इनमें केवल तीन प्रकार की दशायें ही आजकल प्रयोग में लाई जाती हैं। विंशोत्तरी दशा, अष्टोत्तरी दशा और योगिनी दशा। योगिनी दशा पद्धति में सभी ग्रहों की दशा की एक आवृत्ति ३६ वर्षों में होती है, अष्टोत्तरी में यह अवधि १०८ वर्ष है और विंशोत्तरी दशा पद्धति में १२० वर्ष। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत महाराष्ट्र आदि में, योगिनी दशा उत्तर भारत में विशेष रूप से प्रचलित है, विंशोत्तरी दशा पद्धति सर्वत्र सर्वाधिक प्रचलित है। मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर यह दशा पद्धति बनाई गई है, यह तर्क भी दिया जाता है। परन्तु सूर्यादि नव ग्रहों की दशा अवधि की वर्ष संख्या तथा उनका क्रम वैज्ञानिक आधार पर किया गया है। इसका विस्तार से विवेचन हमारी पुस्तक ज्योतिष शिक्षा मध्यमा फलित में किया गया है।

ग्रहों की महादशा की अवधि पूर्ण वर्षों में होती है। यथा सूर्य ६, चन्द्रमा १०, मंगल ७, राहु १८, गुरु १६, शनि १९, बुध १७, केतु ७ और शुक्र २० वर्ष। किसी ग्रह की महादशा में पूर्ण अवधि तक उस ग्रह का प्रभाव तो रहता ही है उस महादशा अवधि में सभी ग्रहों की अन्तर दशायें भी उसी क्रम से चलती हैं। यथा शुक्र की महादशा में प्रथम तीन वर्ष चार मास शुक्र की ही अन्तर दशा रहती है। अब यह ४० मास की अवधि में भी शुक्र का प्रभाव तो सर्वोपरि होता ही है अन्य सभी ग्रहों की प्रत्यन्तर दशायें भी चलती रहती हैं। इन्हीं प्रत्यन्तर दशाओं का ज्ञान कराने के लिये हम अपने पाठकों के लाभार्थ यह सारिणियां दे रहे हैं। इनका गणित कहीं-कहीं पलों तक भी जाता है। परन्तु हमने घड़ियों तक ही सीमित रखा है। शास्त्रों में प्रत्यन्तर दशा के भी सूक्ष्म दशा तथा प्राण दशा में भाग-विभाग किये गये हैं परन्तु व्यवहार में प्रत्यन्तर दशा तक का ही अधिक प्रचलन है। आजकल कम्प्यूटर से बनी जन्मपत्रियों में तो इस दिनों तारीखों तक ही सीमित रखा गया है। घण्टों मिनटों सेकिण्डों अर्थात् घटी-पलों तक का गणित विशेष परिस्थितियों में ही किया जाता है।

जन्म समय पर दशा का भुक्त भोग्य अर्थात् किस ग्रह की कितनी दशा भोग्य है, किस ग्रह की कौनसी अन्तर दशा का कौनसा प्रत्यन्तर कितना भोग्य है यह गणित चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से करना चाहिए। यह सारिणी इस पंचांग के पृष्ठ १५४ पर दी हुई है।

विंशोत्तरी महादशा चक्र

सू.	च	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०	वर्ष

सूर्य महादशा ६ वर्ष

सूर्य अन्तर दशा

सू.	च	म	रा	बृ	श	बु	के	शु	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	१	वर्ष
३	६	४	१०	९	११	१०	४	०	मास
१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०	दिन

सूर्य-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू	च	म	रा	बृ.	श.	बु.	के.	शु	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८	दिन
२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०	घ.

सूर्य-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म	रा	बृ	श	बु	के.	शु	सू	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	१	०	मास
१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९	दिन
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	घ.

सूर्य-भौम प्रत्यन्तर दशा

म	रा.	बृ.	श.	बु	के.	शु	सू.	च.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६	१०	दिन
२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०	घ.

सूर्य-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा	बृ	श.	बु.	के.	शु	सू.	च.	म.	ग्रह
१	१	१	१	०	१	०	०	०	मास
१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८	दिन
३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४	घ.

सूर्य-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ.	श.	बु.	के.	शु	सू.	च.	म.	रा.	ग्रह
१	१	१	०	१	०	०	०	१	मास
८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३	दिन
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	घ.

सूर्य-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के	शु	सू.	च.	म	रा.	बृ.	ग्रह
१	१	०	१	०	०	०	१	१	मास
२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५	दिन
६	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६	घ.

सूर्य-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के	शु	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
१	०	१	०	०	०	१	१	१	मास
१३	१७	२२	१५	२५	१७	१५	१०	१८	दिन
२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७	घ.

सूर्य-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु	सू	च	म	रा	[illegible]	[illegible]	बु.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	[illegible]	[illegible]	०	मास
७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	दिन
२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	घ.

सूर्य-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
२	०	१	०	१	१	१	१	०	मास
०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

चन्द्रमा महादशा १० वर्ष

चन्द्र अन्तर दशा

च.	म.	रा.	बृ.	श	बु	के.	शु	सू.	ग्रह
०	०	१	१	१	१	०	१	०	वर्ष
१०	७	६	४	७	५	७	८	६	मास
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन

चन्द्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च	म	रा.	बृ.	श	बु.	के.	शु	सू	ग्रह
०	०	१	१	१	१	०	१	०	मास
२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५	दिन
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	घ.

चन्द्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च	ग्रह
०	१	०	१	०	०	१	०	०	मास
१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१७	दिन
१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०	घ.

चन्द्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा	बृ.	श	बु.	के.	शु.	सू.	च	म	ग्रह
२	२	२	२	१	३	०	१	१	मास
२१	१२	२५	१५	१	०	२७	१५	१	दिन
०	०	३०	३०	३०	३०	०	०	०	घ.

चन्द्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ.	श	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	ग्रह
२	२	२	०	२	०	१	०	२	मास
४	१५	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

चन्द्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

श	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	ग्रह
३	२	१	३	०	१	१	२	२	मास
०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६	दिन
१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	घ.

चन्द्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
२	०	२	०	१	०	२	२	२	मास
१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०	दिन
४५	४५	०	०	३०	४५	३०	०	४५	घ.

चन्द्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्रह
०	१	०	०	०	१	०	१	०	मास
१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९	दिन
१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५	घ.

चन्द्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
३	१	१	१	३	२	३	२	१	मास
१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

चन्द्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	१	मास
९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	दिन
०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	घ.

भौम(मंगल) महादशा ७ वर्ष

भौम अन्तर दशा

म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु	सू.	च.	ग्रह
०	१	०	१	०	०	१	०	०	वर्ष
४	०	११	१	११	४	२	४	७	मास
२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०	दिन

भौम-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२	दिन
३४	४	३६	१६	५०	३४	३०	२१	१५	घ.

भौम-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बृ.	श.	बु	के.	शु	सू.	च.	म.	ग्रह
१	१	१	१	०	२	०	१	०	मास
२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२	दिन
४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	घ.

भौम-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ.	श.	बु.	के.	शु	सू.	च.	म.	रा.	ग्रह
१	१	१	०	१	०	०	०	१	मास
१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	घ.

भौम-शनि प्रत्यन्तर दशा

श	बु	के	शु	सू	च.	म	रा.	बृ.	ग्रह
२	१	०	२	०	१	०	१	१	मास
३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	दिन
१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२	घ.

भौम-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु	के	शु	सू.	च	म.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
१	०	१	०	०	०	१	१	१	मास
२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	दिन
३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	घ.

भौम-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०	दिन
३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	५०	घ.

भौम-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च	म.	रा	बृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
२	०	१	०	२	१	२	१	०	मास
१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घ.

भौम-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च	म.	रा	बृ.	श	बु.	के.	शु	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	दिन
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	घ.

भौम-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च	म.	रा	बृ.	श	बु.	के	शु.	सू.	ग्रह
०	०	१	०	१	०	०	१	०	मास
१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	घ.

राहु महादशा १८ वर्ष

राहु अन्तर दशा

रा	बृ.	श.	बु	के.	शु	सू.	च	म.	ग्रह
२	२	२	२	१	३	०	१	१	वर्ष
८	४	१०	६	०	०	१०	६	०	मास
१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८	दिन

राहु-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	ग्रह
४	४	५	४	१	५	१	२	१	मास
२५	६	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६	दिन
४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२	घ.

राहु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	ग्रह
३	४	[illegible]	१	४	१	२	१	४	मास
२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	६	दिन
१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६	घ.

राहु-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	ग्रह
५	४	१	५	१	२	१	५	४	मास
१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६	दिन
२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	घ.

राहु-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
४	१	५	१	२	१	४	४	४	मास
१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५	दिन
३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१	घ.

राहु-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्रह
०	२	०	१	०	१	१	१	१	मास
२२	३	१८	१	२२	२६	२०	२९	२३	दिन
३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	घ.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

राहु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
६	१	३	२	५	४	५	५	२	मास
०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

राहु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१६	२७	१८	१८	१२	२१	१५	१८	२४	दिन
१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०	प.

राहु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
१	१	२	२	२	२	१	३	०	मास
१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	दिन
०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	प.

राहु-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	१	१	१	१	०	२	०	१	मास
२२	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	दिन
३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	प.

गुरु(बृहस्पति) महादशा १६ वर्ष

गुरु अन्तर दशा

वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	ग्रह
२	२	२	०	२	०	१	०	२	वर्ष
१	६	३	११	८	९	४	११	४	मास
१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४	दिन

गुरु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	ग्रह
३	४	३	१	४	१	२	१	३	मास
१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५	दिन
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	प.

गुरु-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	ग्रह
४	४	१	५	१	२	१	४	४	मास
२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१	दिन
२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६	प.

गुरु-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	ग्रह
३	१	४	१	२	१	४	३	४	मास
२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	९	दिन
३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	प.

गुरु-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	ग्रह
०	१	०	०	०	१	१	१	१	मास
१९	२६	१६	२८	१९	२०	१४	२३	१७	दिन
३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६	प.

गुरु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
५	१	२	१	४	४	५	४	१	मास
१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

गुरु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८	दिन
२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०	प.

गुरु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
१	०	२	२	२	२	०	२	०	मास
१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

गुरु-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	१	१	१	१	०	१	०	०	मास
१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	दिन
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२	३६	३६	०	४८	०	प.

गुरु-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	ग्रह
४	३	४	४	१	४	१	२	१	मास
९	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	दिन
३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	प.

शनि महादशा १९ वर्ष

शनि अन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	ग्रह
३	२	१	३	०	१	१	२	२	वर्ष
०	[illegible]	१	२	११	७	१	१०	६	मास
३	९	९	०	१२	०	९	६	१२	दिन

शनि-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	ग्रह
५	५	२	६	१	३	२	५	४	मास
२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४	दिन
२८	२५	११	३०	९	१५	११	२७	२४	प.

शनि-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	ग्रह
४	१	५	१	२	१	४	४	५	मास
२७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	३	दिन
१६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२	२५	प.

शनि-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	ग्रह
०	२	०	१	०	१	१	२	१	मास
२३	६	१९	३	२३	२६	२३	३	२६	दिन
१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२	१०	३१	प.

शनि-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
६	१	३	२	५	५	६	५	२	मास
१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	प.

शनि-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७	दिन
६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०	प.

शनि-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
१	१	२	२	३	२	१	३	०	मास
१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२८	दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	प.

शनि-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	१	१	२	१	०	२	०	१	मास
२३	२६	२३	३	२६	२३	६	१९	३	दिन
१७	५१	१२	१०	३१	१७	३०	५७	१५	प.

शनि-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	ग्रह
५	४	५	४	१	५	१	२	१	मास
३	१६	१२	२५	२६	२१	२१	२५	२६	दिन
५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	प.

शनि-गुरु प्रत्यन्तर दशा

वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	ग्रह
४	४	४	१	५	१	२	१	४	मास
१	२४	६	२३	२	१५	१६	२३	१६	दिन
३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	प.

बुध महादशा १७ वर्ष

बुध अन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	ग्रह
२	०	२	०	१	०	२	२	२	वर्ष
४	११	१०	१०	५	११	६	३	८	मास
२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	दिन

बुध-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	ग्रह
४	१	४	१	२	१	४	३	४	मास
२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७	दिन
४९	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	प.

बुध-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	ग्रह
०	१	०	०	०	१	१	१	१	मास
२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०	दिन
५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	३४	प.

बुध-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
५	१	२	१	५	४	५	४	१	मास
२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२३	२९	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	२०	३०	प.

बुध-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१	दिन
१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०	प.

बुध-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
१	०	२	२	२	२	०	२	०	मास
१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५	दिन
३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०	प.

बुध-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	१	१	१	१	०	१	०	०	मास
२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९	दिन
५०	३३	३६	३१	३४	५०	३०	५१	४५	प.

बुध-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	ग्रह
४	४	४	४	१	५	१	२	१	मास
१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३	दिन
४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३	प.

बुध-गुरु प्रत्यन्तर दशा

वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	ग्रह
३	४	३	१	४	१	२	१	४	मास
१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	प.

बुध-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	ग्रह
५	४	१	५	१	२	१	४	४	मास
३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	दिन
२५	१६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२	प.

केतु महादशा ७ वर्ष

केतु अन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	ग्रह
०	१	०	०	०	१	०	१	०	वर्ष
४	२	४	७	४	०	११	१	११	मास
२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७	दिन

केतु-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०	दिन
३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९	प.

केतु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
२	०	१	०	२	१	२	१	०	मास
१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	प.

केतु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	दिन
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	प.

केतु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
०	०	१	०	१	०	०	१	०	मास
१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	प.

केतु-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२	दिन
३५	३	३६	१६	४९	३५	३०	२१	१५	प.

केतु-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	ग्रह
१	१	१	१	०	२	०	१	०	मास
२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२	दिन
४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	प.

केतु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	ग्रह
१	१	१	०	१	०	०	०	१	मास
१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	प.

केतु-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	ग्रह
२	१	०	२	०	१	०	१	१	मास
३	२६	२३	६	१९	३	२३	२६	२३	दिन
१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२	प.

केतु-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	ग्रह
१	०	१	०	०	०	१	१	१	मास
२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	दिन
३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	प.

शुक्र महादशा २० वर्ष

शुक्र अन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
३	१	१	१	३	२	३	२	१	वर्ष
४	०	८	२	०	८	२	१०	२	मास
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन

शुक्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
६	२	३	२	६	५	६	५	२	मास
२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शुक्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मास
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शुक्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
१	१	३	२	३	२	१	३	१	मास
२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शुक्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	२	१	२	१	०	२	०	१	मास
२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५	दिन
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	प.

शुक्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	ग्रह
५	४	५	५	२	६	१	३	२	मास
१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शुक्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	ग्रह
४	५	४	१	५	१	२	१	४	मास
८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शुक्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	ग्रह
६	५	२	६	१	३	२	५	५	मास
०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२	दिन
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	प.

शुक्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	ग्रह
४	१	५	१	२	१	५	४	५	मास
२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	दिन
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	प.

शुक्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	ग्रह
०	२	०	१	०	२	१	२	१	मास
२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	दिन
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	प.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नक्षत्र चार

कौन-सा ग्रह किस नक्षत्र के किस चरण में चल रहा है। यह जानने के लिए उसके स्पष्ट राशि अंशों को देखना होता है। साथ में एक सारिणी दी जा रही है इसमें चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से नक्षत्र तथा चरण का ज्ञान होता है। चन्द्रमा ०-०-० शून्य राशि अंश कला अर्थात् मेष राशि के शून्य अंश कला से आरम्भ होकर ३ अंश २० कला तक अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में होता है। ०-३-२० से एक विकला भी आगे चल गया तो दूसरे चरण में माना जायेगा। इसी प्रकार सभी स्थितियों में समझना।

जिस ग्रह का नक्षत्र चार देखना हो उसके स्पष्ट राशि अंश देखें। मान लो सूर्य सिंह के १६ अंश २६ कला पर है अर्थात् ४-१६-२६ है तो इस सारिणी से ज्ञात होगा कि पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र का प्रथम चरण ४-१३-२० से ४-१६-४० तक है। अर्थात् सूर्य पू.फा. १ में हुआ। इसी प्रकार अन्य सभी ग्रहों का नक्षत्र चार जाना जा सकता है।

आर्यभट्ट पंचांग में साप्ताहिक कुण्डलियों में साप्ताहिक नक्षत्र चार दिया जाता है। अन्य स्थितियों का नक्षत्र चार इस सारिणी से जाना जा सकता है।

चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से नक्षत्र तथा चरण बोधक सारिणी

नक्षत्र	चरण	आरम्भ चन्द्रमा के स्पष्ट (रा. अं. क.)	समाप्ति चन्द्रमा के स्पष्ट (रा. अं. क.)
अश्विनी	प्रथम	० ० ०	० ३ २०
	२	० ३ २०	० ६ ४०
	३	० ६ ४०	० १० ०
	४	० १० ०	० १३ २०
भरणी	१	० १३ २०	० १६ ४०
	२	० १६ ४०	० २० ०
	३	० २० ०	० २३ २०
	४	० २३ २०	० २६ ४०
कृत्तिका	१	० २६ ४०	१ ० ०
	२	१ ० ०	१ ३ २०
	३	१ ३ २०	१ ६ ४०
	४	१ ६ ४०	१ १० ०
रोहिणी	१	१ १० ०	१ १३ २०
	२	१ १३ २०	१ १६ ४०
	३	१ १६ ४०	१ २० ०
	४	१ २० ०	१ २३ २०
मृगशिर	१	१ २३ २०	१ २६ ४०
	२	१ २६ ४०	२ ० ०
	३	२ ० ०	२ ३ २०
	४	२ ३ २०	२ ६ ४०
आर्द्रा	१	२ ६ ४०	२ १० ०
	२	२ १० ०	२ १३ २०
	३	२ १३ २०	२ १६ ४०
	४	२ १६ ४०	२ २० ०
पुनर्वसु	१	२ २० ०	२ २३ २०
	२	२ २३ २०	२ २६ ४०
	३	२ २६ ४०	३ ० ०
	४	३ ० ०	३ ३ २०
पुष्य	१	३ ३ २०	३ ६ ४०
	२	३ ६ ४०	३ १० ०
	३	३ १० ०	३ १३ २०
	४	३ १३ २०	३ १६ ४०
अश्लेषा	१	३ १६ ४०	३ २० ०
	२	३ २० ०	३ २३ २०
	३	३ २३ २०	३ २६ ४०
	४	३ २६ ४०	४ ० ०
मघा	१	४ ० ०	४ ३ २०
	२	४ ३ २०	४ ६ ४०
	३	४ ६ ४०	४ १० ०
	४	४ १० ०	४ १३ २०
पू. फा.	१	४ १३ २०	४ १६ ४०
	२	४ १६ ४०	४ २० ०
	३	४ २० ०	४ २३ २०
	४	४ २३ २०	४ २६ ४०
उ. फा.	१	४ २६ ४०	५ ० ०
	२	५ ० ०	५ ३ २०
	३	५ ३ २०	५ ६ ४०
	४	५ ६ ४०	५ १० ०
हस्त	१	५ १० ०	५ १३ २०
	२	५ १३ २०	५ १६ ४०
	३	५ १६ ४०	५ २० ०
	४	५ २० ०	५ २३ २०
चित्रा	१	५ २३ २०	५ २६ ४०
	२	५ २६ ४०	६ ० ०
	३	६ ० ०	६ ३ २०
	४	६ ३ २०	६ ६ ४०
स्वाती	१	६ ६ ४०	६ १० ०
	२	६ १० ०	६ १३ २०
	३	६ १३ २०	६ १६ ४०
	४	६ १६ ४०	६ २० ०
विशाखा	१	६ २० ०	६ २३ २०
	२	६ २३ २०	६ २६ ४०
	३	६ २६ ४०	७ ० ०
	४	७ ० ०	७ ३ २०
अनुराधा	१	७ ३ २०	७ ६ ४०
	२	७ ६ ४०	७ १० ०
	३	७ १० ०	७ १३ २०
	४	७ १३ २०	७ १६ ४०
ज्येष्ठा	१	७ १६ ४०	७ २० ०
	२	७ २० ०	७ २३ २०
	३	७ २३ २०	७ २६ ४०
	४	७ २६ ४०	८ ० ०
मूल	१	८ ० ०	८ ३ २०
	२	८ ३ २०	८ ६ ४०
	३	८ ६ ४०	८ १० ०
	४	८ १० ०	८ १३ २०
पू. षा.	१	८ १३ २०	८ १६ ४०
	२	८ १६ ४०	८ २० ०
	३	८ २० ०	८ २३ २०
	४	८ २३ २०	८ २६ ४०
उ. षा.	१	८ २६ ४०	९ ० ०
	२	९ ० ०	९ ३ २०
	३	९ ३ २०	९ ६ ४०
	४	९ ६ ४०	९ १० ०
श्रवण	१	९ १० ०	९ १३ २०
	२	९ १३ २०	९ १६ ४०
	३	९ १६ ४०	९ २० ०
	४	९ २० ०	९ २३ २०
धनिष्ठा	१	९ २३ २०	९ २६ ४०
	२	९ २६ ४०	१० ० ०
	३	१० ० ०	१० ३ २०
	४	१० ३ २०	१० ६ ४०
शतभिषा	१	१० ६ ४०	१० १० ०
	२	१० १० ०	१० १३ २०
	३	१० १३ २०	१० १६ ४०
	४	१० १६ ४०	१० २० ०
पू. भा.	१	१० २० ०	१० २३ २०
	२	१० २३ २०	१० २६ ४०
	३	१० २६ ४०	११ ० ०
	४	११ ० ०	११ ३ २०
उ. भा.	१	११ ३ २०	११ ६ ४०
	२	११ ६ ४०	११ १० ०
	३	११ १० ०	११ १३ २०
	४	११ १३ २०	११ १६ ४०
रेवती	१	११ १६ ४०	११ २० ०
	२	११ २० ०	११ २३ २०
	३	११ २३ २०	११ २६ ४०
	४	११ २६ ४०	१२ ० ०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नक्षत्रों के भेद

(१) क्षिप्र नक्षत्र—अश्विनी, पुष्य, हस्त और अभिजित यह चार नक्षत्र क्षिप्र नक्षत्र हैं। इन नक्षत्रों में यात्रा, नृत्य, गीत, मंगल कार्य, नये वस्त्राभूषण धारण करना, वाणिज्य व्यवसाय तथा कला कौशल के कार्य शुभ फलदायक होते हैं।

(२) उग्र नक्षत्र—भरणी, मघा, पू.फा., पू.षा. तथा पू.भा. यह चार नक्षत्र उग्र नक्षत्र हैं। इनमें विष, अग्नि, शस्त्र घात मारण, आपरेशन, आक्रमण आदि उग्र कार्यों में ही सफलता मिलती है. शुभ कार्य नहीं करने चाहिए।

(३) मिश्र नक्षत्र—कृत्तिका तथा विशाखा यह दो नक्षत्र मिश्र हैं, इनमें अग्नि सम्बन्धी कार्यों में सफलता मिलती है। जैसे—बोइलर, भट्टी, वैल्डिंग, धातु गलाना इत्यादि। शुभ कार्य नहीं करने चाहिए।

(४) ध्रुव नक्षत्र—रोहि., उ.फा., उ.षा. और उ.भा. यह चार नक्षत्र ध्रुव संज्ञक हैं। इनमें सभी स्थिर कार्य जैसे—मकान बनाना, नींव रखना, उपनयन, कृषि, खेती, बाग बगीचा, नौकरी आरम्भ करना शुभ है।

(५) मृदु नक्षत्र—मृग., चित्रा, अनु., रेव. यह चार नक्षत्र मृदु संज्ञक हैं। इनमें सभी शुभ कार्य जैसे—यात्रा, नृत्य गीत, मंगल उत्सव, वस्त्र धारण, नौकरी, रोजगार आरम्भ करना शुभ रहता है।

(६) चर नक्षत्र—पुन., स्वा., श्रव., धनि. और शतभिषा यह पांच नक्षत्र चर संज्ञक हैं। इनमें [illegible] करना, कार, स्कूटर, सवारी, वाहन [illegible]ना, नृत्य, गीत आयोजन और थोड़े समय में समाप्त हो जाने वाले सभी अल्पकालिक कार्य सम्पन्न करना शुभ है।

(७) तीक्ष्ण नक्षत्र—आर्द्रा, अश्ले., ज्येष्ठा और मूल यह तीक्ष्ण नक्षत्र हैं। इनमें मारण, मोहन, उच्चाटन, भूतप्रेत, वैताल सिद्धि श्मशान साधना करने से शीघ्र सिद्धि होती है। शुभ कार्य नहीं करने चाहिए।

अवकहडा चक्र (नक्षत्र, राशि, स्वामी, वर्ण, वश्य, नाड़ी, योनि, गणबोधक चक्र)

नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा
नाड़ी	आद्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी
योनी	अश्व योनी	गज योनी	मेष योनी	सर्प योनी	सर्प योनी	श्वान योनी	मार्जार योनी	मेष योनी	मार्जार योनी
गण	देवगण	मनुष्य गण	राक्षस गण	मनुष्य गण	देवगण	मनुष्य गण	देवगण	देवगण	राक्षस गण
चरणाक १ २ ३ ४ / चरणाक्षर	चू चे चो ला	ली लू ले लो	अ इ उ ए	ओ वा वी वू	वे वो क की	कु घ ङ छ	के को हा ही	हू हे हो डा	डी डू डे डो

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
राश्याधिपति	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र
वर्ण	क्षत्रिय वर्ण	वैश्य वर्ण	शूद्र वर्ण	विप्र वर्ण
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	मानव	जलचर

नक्षत्र	मघा	पूर्वा फाल्गुनी	उत्तरा फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	आद्या नाड़ी
योनी	मूषक योनी	मूषक योनी	गो योनी	महिष योनी	व्याघ्र योनी	महिष योनी	व्याघ्र योनी	मृग योनी	मृग योनी
गण	राक्षस गण	मनुष्य गण	मनुष्य गण	देव गण	राक्षस गण	देव गण	राक्षस गण	देव गण	राक्षस गण
चरणाक १ २ ३ ४ / चरणाक्षर	मा मी मु मे	मो टा टी टू	टे टो पा पी	पू ष ण ठ	पे पो रा री	रू रे रो ता	ती तू ते तो	ना नी नू ने	नो या यी यू

राशि	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
राश्याधिपति	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल
वर्ण	क्षत्रिय वर्ण	वैश्य वर्ण	शूद्र वर्ण	विप्र वर्ण
वश्य	वनचर	मानव	मानव	कीटक

नक्षत्र	मूला	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शततारका	पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती
नाड़ी	आद्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी
योनी	श्वान योनी	वानर योनी	नकुल योनी	वानर योनी	सिंह योनी	अश्व योनी	सिंह योनी	गो योनी	गज योनी
गण	राक्षस गण	मनुष्य गण	मनुष्य गण	देव गण	राक्षस गण	राक्षस गण	मनुष्य गण	मनुष्य गण	देव गण
चरणाक १ २ ३ ४ / चरणाक्षर	ये यो भा भी	भू धा फा ढा	भे भो जा जी	खी खू खे खो	गा गी गू गे	गो सा सी सू	से सो दा दी	दू थ झ ञ	दे दो चा ची

राशि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
राश्याधिपति	गुरु	शनि	शनि	गुरु
वर्ण	क्षत्रिय वर्ण	वैश्य वर्ण	शूद्र वर्ण	विप्र वर्ण
वश्य	मानव	जलचर	मानव	जलचर

नोट—विस्तृत विवरण अवकहडा चक्र पृष्ठ ८२, ८३ पर देखें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्योदय गणित

अब हम आप को सूर्योदय निकालने का एक और आसान तरीका बताते हैं। इसकी सहायता से आप किसी भी स्थान का सूर्योदय सरलता से निकाल सकते हैं। इसके लिए आपको वेलान्तर सारिणी, रवि क्रान्ति सारिणी तथा चर सारिणी की आवश्यकता पड़ेगी। प्रथम दो सारिणियां पृष्ट ११४ पर तथा चर सारिणी पृष्ठ १६४ पर दी गई है। यह चर सारिणी पृष्ठ ११० पर दी गई चरान्तर सारिणी से भिन्न है।

इस विधि में पहले स्थानीय मध्याह्न निकाला जाता है। भारतीय स्टैंडर्ड समय के अनुसार दोपहर १२ बजे का समय मध्याह्न का होता है। परन्तु प्रत्येक स्थान पर यह ठीक १२ बजे नहीं होता। मध्याह्न के समय किसी भी वस्तु की छाया पृथ्वी पर सबसे छोटी हो जाती है किसी भी स्थान का ठीक मध्याह्न का समय निकालने के लिये १२ में वेलान्तर के मिनटों को धन या ऋण करना होता है।

उदाहरण (१)—मानलो आपको नागपुर में १२ अक्टूबर का सूर्योदय निकालना है। नागपुर का पूर्व रेखांश ७९।६ स्टैंडर्ड अन्तर ऋण १३।३६ तथा उत्तर अक्षांश २१।९ है। १२ अक्टूबर की रवि क्रान्ति ७।१२ दक्षिण है और वेलान्तर १३ मिनट ऋण है। २१।९ अक्षांश के लिए २१ अक्षांश के चर अंकों से गणित किया जा सकता है।

८	क्रान्त्यंश के चर	=	१२-२४
६	,,	=	९-१२
२	,, का अन्तर		३-१२
१	,, ,,		१-३६
०-१२	,,		०-१९
(९६×१२÷६०)			
१-१२	क्रान्त्यंश के चर		१-५५
६-००	,, ,,		९-१२
७-१२	,, ,,		११-०७

	घं.	मि.	सै.
मध्याह्न काल	१२	०	००
१२ अक्टूबर का वेलान्तर घटाया	०	१३	००
१२ ,, का स्पष्ट मध्याह्न	११	४७	००
दक्षिण क्रान्ति है अतएव ६-० में से चर अंक घटाये	६	०	००
	— ०	११	०७
	५	४८	५३

सूर्योदय गणित		सूर्यास्त गणित
११ ४७ ००		११ ४७ ००
— ५ ४८ ५३		+ ५ ४८ ५३
५ ५८ ०७	स्थानीय समय स्टैंडर्ड अन्तर	१७ ३५ ५३
+ ० १३ ३६	ऋण है अतः धन किया	+ ० १३ ३६
सूर्योदय ६ ११ ४३	भा. स्टै. टाइम	सूर्यास्त १७ ४९ २९

रवि क्रान्ति २२ मार्च से २३ सितम्बर तक उत्तरा होती है और शेष समय में २३ सितम्बर से २१ मार्च तक दक्षिण होती है। उत्तर क्रान्ति हो तो चर अंकों को ६ में धन करते हैं और दक्षिण क्रान्ति हो तो चर अंकों को ६ में से ऋण करते हैं। १२ अक्टूबर को क्रान्ति दक्षिण है अतएव चर अंकों को ६ में से घटाया गया है। इस गणित में वेलान्तर धन हो तो धन किया जाता है और ऋण हो तो ऋण किया जाता है। स्टैंडर्ड अन्तर ऋण हो तो धन किया जाता है और धन हो तो ऋण किया जाता है।

सूर्योदय तथा सूर्यास्त निकालने के बाद आप दिनमान भी निकाल सकते हैं। सूर्यास्त में से सूर्योदय घटाकर ढाई गुना करने से घटी पल में दिनमान आ जाता है।

सूर्यास्त		१७ ४९ २९
सूर्योदय		—६ ११ ४३
		११ ३७ ४६
		११ ३७ ४६
		५ ४८ ३८
घटी पल	दिनमान	२९ ०४ १०
२९ ०४	रात्रिमान	३० ५५ ५०
३० ५६		६० ०० ००

उदाहरण (२)—२० जून को मद्रास का सूर्योदय निकालना है, मद्रास उत्तर अक्षांश १३।५ पूर्व रेखांश ८०।१७ पर स्थित है। स्टैंडर्ड अन्तर ८।५२ ऋण है। रविक्रांति २३।२६ उत्तरा है, वेलान्तर १ मिनट धन है। चर सारिणी में नीचे की पंक्तियों में १३।४ के चर दिये हुए हैं।

२४	क्रान्त्यंश के चर	२३ ४२
२२	,, ,,	२१ ३०
२	,, का अन्तर	२ १२
१	,, ,,	१ ०६
०-२६	,, ,,	० २९
१ २६	,, के चर	१ ३५
२२ ००	,, ,,	२१ ३०
२३ २६	,, ,,	२३ ०५

६ ० ००		मध्याह्न	१२ ० ००
+ ० २३ ०५	चर	वेलान्तर	+ ० १ ००
६ २३ ०५	(उत्तर क्रान्ति में धन किये)		१२ १ ००
+१२ १ ००			— ६ २३ ०५
१८ २४ ०५			५ ३७ ५५
+ ० ८ ५२		स्टैंडर्ड अन्तर धन	+ ८ ५२
१८ ३२ ५७	सूर्यास्त(भा.स्टै.टा.)	सूर्योदय(भा.स्टै.टा.)	५ ४६ ४७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नक्षत्रों के भेद

(१) क्षिप्र नक्षत्र—अश्विनी, पुष्य, हस्त और अभिजित यह चार नक्षत्र क्षिप्र नक्षत्र हैं। इन नक्षत्रों में यात्रा, नृत्य, गीत, मंगल कार्य, नये वस्त्राभूषण धारण करना, वाणिज्य व्यवसाय तथा कला कौशल के कार्य शुभ फलदायक होते हैं।

(२) उग्र नक्षत्र—भरणी, मघा, पू.फा., पू.षा. तथा पू.भा. यह चार नक्षत्र उग्र नक्षत्र हैं। इनमें विष, अग्नि, शस्त्र घात मारण, आपरेशन, आक्रमण आदि उग्र कार्यों में ही सफलता मिलती है, शुभ कार्य नही करने चाहिए।

(३) मिश्र नक्षत्र—कृत्तिका तथा विशाखा यह दो नक्षत्र मिश्र हैं, इनमें अग्नि सम्बन्धी कार्यों में सफलता मिलती है। जैसे—बोइलर, भट्टी, वैल्डिंग, धातु गलाना इत्यादि। शुभ कार्य नहीं करने चाहिए।

(४) ध्रुव नक्षत्र—रोहि., उ.फा., उ.षा. और उ.भा. यह चार नक्षत्र ध्रुव संज्ञक हैं। इनमें सभी स्थिर कार्य जैसे—मकान बनाना, नींव रखना, उपनयन, कृषि, खेती, बाग बगीचा, नौकरी आरम्भ करना शुभ है।

(५) मृदु नक्षत्र—मृग., चित्रा, अनु., रेव. यह चार नक्षत्र मृदु संज्ञक हैं। इनमें सभी शुभ कार्य जैसे—यात्रा, नृत्य गीत, मंगल उत्सव, वस्त्र धारण, नौकरी, रोजगार आरम्भ करना शुभ रहता है।

(६) चर नक्षत्र—पुन., स्वा., श्रव., धनि. और शतभिषा यह पांच नक्षत्र चर संज्ञक हैं। इनमें [illegible] करना, कार, स्कूटर, सवारी, वाहन [illegible]ना, नृत्य, गीत आयोजन और थोड़े समय [illegible] समाप्त हो जाने वाले सभी अल्पकालिक कार्य सम्पन्न करना शुभ है।

(७) तीक्ष्ण नक्षत्र—आर्द्रा, अश्ले., ज्येष्ठा और मूल यह तीक्ष्ण नक्षत्र हैं। इनमें मारण, मोहन, उच्चाटन, भूतप्रेत, वैताल सिद्धि श्मशान साधना करने से शीघ्र सिद्धि होती है। शुभ कार्य नहीं करने चाहिए।

अवकहड़ा चक्र (नक्षत्र, राशि, स्वामी, वर्ण, वश्य, नाड़ी, योनि, गणबोधक चक्र)

नक्षत्र / नाड़ी / योनी / गण	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा
नाड़ी	आद्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी
योनी	अश्व योनी	गज योनी	मेष योनी	सर्प योनी	सर्प योनी	श्वान योनी	मार्जार योनी	मेष योनी	मार्जार योनी
गण	देवगण	मनुष्य गण	राक्षसं गण	मनुष्य गण	देवगण	मनुष्य गण	देवगण	देवगण	रासक्ष गण
चरणांक / चरणाक्षर	१ चू, २ चे, ३ चो, ४ ला	१ ली, २ लु, ३ ले, ४ लो	१ अ, २ इ, ३ उ, ४ ए	१ ओ, २ वा, ३ वी, ४ वु	१ वे, २ वो, ३ क, ४ की	१ कु, २ घ, ३ ङ, ४ छ	१ के, २ को, ३ हा, ४ ही	१ हु, २ हे, ३ हो, ४ डा	१ डी, २ डु, ३ डे, ४ डो

राशि / राश्याधिपति / वर्ण / वश्य				
राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
राश्याधिपति	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र
वर्ण	क्षत्रिय वर्ण	वैश्य वर्ण	शूद्र वर्ण	विप्र वर्ण
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	मानव	जलचर

नक्षत्र / नाड़ी / योनी / गण	मघा	पूर्वा फाल्गुनी	उत्तरा फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	आद्या नाड़ी
योनी	मूषक योनी	मूषक योनी	गो योनी	महिष योनी	व्याघ्र योनी	महिष योनी	व्याघ्र योनी	मृग योनी	मृग योनी
गण	राक्षस गण	मनुष्य गण	मनुष्य गण	देव गण	राक्षस गण	देव गण	राक्षस गण	देव गण	राक्षस गण
चरणांक / चरणाक्षर	१ मा, २ मी, ३ मु, ४ मे	१ मो, २ टा, ३ टी, ४ टू	१ टे, २ टो, ३ पो, ४ पी	१ पू, २ ष, ३ ण, ४ ठ	१ पे, २ पो, ३ रा, ४ री	१ रू, २ रे, ३ रो, ४ ता	१ ती, २ तू, ३ ते, ४ तो	१ ना, २ नी, ३ नू, ४ ने	१ नो, २ या, ३ यी, ४ यु

राशि / राश्याधिपति / वर्ण / वश्य				
राशि	सिह	कन्या	तुला	वृश्चिक
राश्याधिपति	सूर्य	बुध	शुक्र	मगल
वर्ण	क्षत्रिय वर्ण	वैश्य वर्ण	शूद्र वर्ण	विप्र वर्ण
वश्य	वनचर	मानव	मानव	कीटक

नक्षत्र / नाड़ी / योनी / गण	मूला	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शततारका	पूर्वभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती
नाड़ी	आद्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी
योनी	श्वान योनी	वानर योनी	नकुल योनी	वानर योनी	सिह योनी	अश्व योनी	सिह योनी	गो योनी	गज योनी
गण	राक्षस गण	मनुष्य गण	मनुष्य गण	देव गण	राक्षस गण	राक्षस गण	मनुष्य गण	मनुष्य गण	देव गण
चरणांक / चरणाक्षर	१ ये, २ यो, ३ भा, ४ भी	१ भू, २ धा, ३ फा, ४ ढा	१ भे, २ भो, ३ जा, ४ जी	१ खी, २ खू, ३ खे, ४ खो	१ गा, २ गी, ३ गू, ४ गे	१ गो, २ सा, ३ सी, ४ सू	१ से, २ सो, ३ दा, ४ दी	१ दू, २ थ, ३ झ, ४ ञ	१ दे, २ दो, ३ चा, ४ ची

राशि / राश्याधिपति / वर्ण / वश्य				
राशि	धनु:	मकर	कुम्भ	मीन
राश्याधिपति	गुरु	शनि	शनि	गुरु
वर्ण	क्षत्रिय वर्ण	वैश्य वर्ण	शूद्र वर्ण	विप्र वर्ण
वश्य	मानव	जलचर	मानव	जलचर

नोट—विस्तृत विवरण अवकहड़ा चक्र पृष्ठ ८२, ८३ पर देखें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मन्त्रपुष्पम्

योऽपां पुष्पं वेद । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति । चन्द्रमा वा अपां पुष्पम् । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति । य एवं वेद ॥ १॥

योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । अग्निर्वा अपामायतनम् । आयतनवान् भवति । योऽग्नेरायतनं वेद । आयतनवान् भवति । आपो वा अग्नेरायतनम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद ॥ २॥

योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । वायुर्वा अपामायतनम् । आयतनवान् भवति । यो वायोरायतनं वेद । आयतनवान् भवति । आपो वै वायोरायतनम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद ॥ ३॥

योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । असौ वै तपन्नपामायतनम् । आयतनवान् भवति । योऽमुष्य तपत आयतनं वेद । आयतनवान् भवति । आपो वा अमुष्य तपत आयतनम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद ॥४।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

। योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । चन्द्रमा वा अपामायतनम् । आयतनवान् भवति । यश्चन्द्रमस आयतनं वेद । आयतनवान् भवति । आपो वै चन्द्रमस आयतनम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद ॥ ५॥

योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । नक्षत्राणि वा अपामायतनम् । आयतनवान् भवति । यो नक्षत्राणामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । आपो वै नक्षत्राणामायतनम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद ॥ ६ ॥

योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । पर्जन्यो वा अपामायतनम् । आयतनवान् भवति । यः पर्जन्यस्यायतनं वेद । आयतनवान् भवति । आपो वै पर्जन्यस्याऽऽयतनम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद ॥ ७॥

योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । संवत्सरो वा अपामायतनम् । आयतनवान् भवति । यस्संवत्सरस्यायतनं वेद । आयतनवान् भवति । आपो वै संवत्सरस्यायतनम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद । योऽप्सु नावं प्रतिष्ठितां वेद । प्रत्येव तिष्ठति ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्योदय गणित

अब हम आप को सूर्योदय निकालने का एक और आसान तरीका बताते हैं। इसकी सहायता से आप किसी भी स्थान का सूर्योदय सरलता से निकाल सकते हैं। इसके लिए आपको वेलान्तर सारिणी, रवि क्रान्ति सारिणी तथा चर सारिणी की आवश्यकता पड़ेगी। प्रथम दो सारिणियां पृष्ठ ११४ पर तथा चर सारिणी पृष्ठ १६४ पर दी गई है। यह चर सारिणी पृष्ठ ११० पर दी गई चरान्तर सारिणी से भिन्न है।

इस विधि में पहले स्थानीय मध्याह्न निकाला जाता है। भारतीय स्टैंडर्ड समय के अनुसार दोपहर १२ बजे का समय मध्याह्न का होता है। परन्तु प्रत्येक स्थान पर यह ठीक १२ बजे नहीं होता। मध्याह्न के समय किसी भी वस्तु की छाया पृथ्वी पर सबसे छोटी हो जाती है किसी भी स्थान का ठीक मध्याह्न का समय निकालने के लिये १२ में वेलान्तर के मिनटों को धन या ऋण करना होता है।

उदाहरण (१)—मानलो आपको नागपुर में १२ अक्टूबर का सूर्योदय निकालना है। नागपुर का पूर्व रेखांश ७९।६ स्टैंडर्ड अन्तर ऋण १३।३६ तथा उत्तर अक्षांश २१।९ है। १२ अक्टूबर की रवि क्रान्ति ७।१२ दक्षिण है और वेलान्तर १३ मिनट ऋण है। २१।९ अक्षांश के लिए २१ अक्षांश के चर अंकों से गणित किया जा सकता है।

८	क्रान्त्यंश के चर		=	१२-२४
६	,,		=	९-१२
२	,,	का अन्तर		३-१२
१	,,	,,		१-३६
०-१२		,,		०-१९
(९६ × १२ ÷ ६०)				
१-१२	क्रान्त्यंश के चर			१-५५
६-००	,,	,,		९-१२
७-१२	,,	,,		११-०७

	घं.	मि.	से.
मध्याह्न काल	१२	०	००
१२ अक्टूबर का वेलान्तर घटाया	०	१३	००
१२ ,, का स्पष्ट मध्याह्न	११	४७	००
दक्षिण क्रान्ति है अतएव ६-० में से चर अंक घटाये	६	०	००
	— ०	११	०७
	५	४८	५३

सूर्योदय गणित		सूर्यास्त गणित
११ ४७ ००		११ ४७ ००
— ५ ४८ ५३		+ ५ ४८ ५३
५ ५८ ०७	स्थानीय समय स्टैंडर्ड अन्तर	१७ ३५ ५३
+ ० १३ ३६	ऋण है अतः धन किया	+ ० १३ ३६
सूर्योदय ६ ११ ४३	भा. स्टैं. टाइम	सूर्यास्त १७ ४९ २९

रवि क्रान्ति २२ मार्च से २३ सितम्बर तक उत्तरा होती है और शेष समय में २३ सितम्बर से २१ मार्च तक दक्षिण होती है। उत्तर क्रान्ति हो तो चर अंकों को ६ में धन करते हैं और दक्षिण क्रान्ति हो तो चर अंकों को ६ में से ऋण करते हैं। १२ अक्टूबर को क्रान्ति दक्षिण है अतएव चर अंकों को ६ में से घटाया गया है। इस गणित में वेलान्तर धन हो तो धन किया जाता है और ऋण हो तो ऋण किया जाता है। स्टैंडर्ड अन्तर ऋण हो तो धन किया जाता है और धन हो तो ऋण किया जाता है।

सूर्योदय तथा सूर्यास्त निकालने के बाद आप दिनमान भी निकाल सकते हैं। सूर्यास्त में से सूर्योदय घटाकर ढाई गुना करने से घटी पल में दिनमान आ जाता है।

सूर्यास्त		१७ ४९ २९
सूर्योदय		—६ ११ ४३
		११ ३७ ४६
		११ ३७ ४६
		५ ४८ ३८
घटी पल	दिनमान	२९ ०४ १०
२९ ०४	रात्रिमान	३० ५५ ५०
३० ५६		६० ०० ००

उदाहरण (२)— २० जून को मद्रास का सूर्योदय निकालना है, मद्रास उत्तर अक्षांश १३।५ पूर्व रेखांश ८०।१७ पर स्थित है। स्टैंडर्ड अन्तर ८।५२ ऋण है। रविक्रांति २३।२६ उत्तरा है, वेलान्तर १ मिनट धन है। चर सारिणी में नीचे की पंक्तियों में १३।४ के चर दिये हुए हैं।

२४	क्रान्त्यंश के चर		२३ ४२
२२	,, ,,		२१ ३०
२	,, का अन्तर		२ १२
१	,, ,,		१ ०६
०-२६	,, ,,		० २९
१ २६	,, के चर		१ ३५
२२ ००	,, ,,		२१ ३०
२३ २६	,, ,,		२३ ०५

६ ० ००		मध्याह्न	१२ ० ००
+ ० २३ ०५	चर	वेलान्तर	+ ० १ ००
६ २३ ०५	(उत्तर क्रान्ति में धन किये)		१२ १ ००
+ १२ १ ००			— ६ २३ ०५
१८ २४ ०५			५ ३७ ५५
+ ० ८ ५२		स्टैंडर्ड अन्तर धन	+ ८ ५२
१८ ३२ ५७	सूर्यास्त (भा.स्टैं.टा.)	सूर्योदय (भा.स्टैं.टा.)	५ ४६ ४७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उदाहरण (३)—मानलो ... २२ नवम्बर का बम्बई का सूर्योदय निकालना है। बम्बई का उत्तर अक्षांश १८।५५ पूर्व रेखांश ७२।५० तथा स्टेंडर्ड अन्तर ३८।४० ऋण है। २२ नव. की रविक्रान्ति २०।१४ दक्षिण है तथा वेलान्तर १४ मिनट ऋण है। चर सारिणी में १८।५८ अक्षांश के क्रान्त्यंश नीचे की पंक्तियों में अलग से दिये हैं।

१८ ५८ उत्तर अक्षांश	२२	क्रान्त्यंश के चर	३१ ५४
,, ,,	२०	,, ,,	२८ ४२
,, ,,	२	,, का अन्तर	३ १२
	१	,, ,,	१ ३६
(९६ × १४ ÷ ६०)	० १४	,, ,,	० २२
	२० ०	,, के चर	२८ ४२
	२० १४	,, ,,	२९ ०४

६ ० ००
—० २९ ०४ चर घटाये
५ ३० ५६

	१२ ० ००
वेलान्तर घटाया	— ० १४ ००
	११ ४६ ००
	— ५ ३० ५६
	६ १५ ०४
स्टैंडर्ड अन्तर जोड़ा	+ ० ३८ ४०
सूर्योदय बम्बई भा. स्टै. टा. में	६ ५३ ४४

उदाहरण (४)—१६ सितम्बर का दिल्ली का सूर्योदय निकालते हैं और देखते हैं कि इस गणित से निकाला गया सूर्योदय पंचांग में दिये सूर्योदय से ठीक मिलता है या नहीं?

दिल्ली उत्तर अक्षांश २८।३८, पूर्व रेखांश ७७।१४, स्टैंडर्ड अन्तर ऋण २१ मिनट ४ सैकिण्ड, १६ सितम्बर की रवि क्रांति उत्तरा २-५२, वेलान्तर १६ सितम्बर ५ मिनट का ऋण है। चर सारिणी से २८।३८ उत्तर अक्षांश के चर निकाले। चर सारिणी में २८।३८ उत्तर अक्षांश के चर अलग से निकाले हुए हैं। सबसे नीचे की पंक्ति में देखा।

२८।३८ उत्तर अक्षांश	४	क्रान्त्यंश के चर	८ ४२
,, ,,	२	,,	४ २४
,,	२	,, का अन्तर	४ १८
,,	१	,, ,,	२ ०९
(१२९ × ५२ ÷ ६०) ५२		,, ,,	१ ५२
२		क्रान्त्यंश के चर	४ २४
०.५२		,, ,,	१ ५२
		चर अंक	६ १६

१६ सितम्बर का मध्याह्न	१२ ० ००
वेलान्तर	— ० ५ ००
१६ सितम्बर का स्पष्ट मध्याह्न	११ ५५ ००

उत्तरा क्रांति है, इसलिए ६ में चर अंकों को जोड़ा ६-०-० + ०-६-१६ = ६-६-१६

११ ५५ ०० में से
— ६ ६ १६ घटाया
५ ४८ ४४ सूर्योदय स्थानीय समय
+ २१ ०४ स्टैंडर्ड अन्तर घन किया
६ ९ ४८ सूर्योदय IST में दिल्ली का ६-१०

उदाहरण (५)—२४ दिसम्बर को कलकत्ता का सूर्योदय निकालो। कलकत्ता उत्तर अक्षांश २२।३५ पूर्व रेखांश ८८।२४ स्टैंडर्ड अन्तर +२३।३६, रविक्रांति २३।२६ (दक्षिण) वेलान्तर १ मिनट ऋण है। चर सारिणी से २२।३५ उत्तर अक्षांश तथा २३।२६ क्रान्त्यंश के चर निकाले।

हमें २३।२६ क्रान्त्यंश के चर चाहिए। २२ व २४ क्रान्त्यंश के साथ अनुपात किया तो २३।२६ के चर आए २२।३५ उत्तर अक्षांश के चर अलग से चर सारणी में नीचे दिये गये हैं।

२४ क्रान्त्यंश के चर		४२-४२
२२ ,, ,,		३८-४२
२ ,, में अन्तर		४- ०
१ ,, ,,		२- ०
०-२६		०-५२
१-२६		२-५२
२२-००		३८-४२
२३-२६	के चर	४१-३४

२४ दिसम्बर का मध्याह्न स्पष्ट किया	१२ ० ०
२४ ,, वेलान्तर धन किया	+ ० १ ०
२४ ,, स्पष्ट मध्याह्न	—१२ १ ०

सूर्योदय ६ ० ०
चर घटाया —० ४१ ३४
५ १८ २६

	१२ १ ०
	— ५ १८ २६
सूर्योदय स्थानीय समय	६ ४२ ३४
स्टैंडर्ड अन्तर ऋण	— २३ २६
कलकत्ता का सूर्योदय भा. स्टै. समय में	६ १९ १२

उदाहरण (६)—१२ अक्टू. को लन्दन का सूर्योदय ज्ञात करना है, लन्दन का उत्तर अक्षांश ५१।३२ तथा पश्चिम रेखांश ०।५ है, (देखें पृष्ठ १०५) स्टैंडर्ड अन्तर २० सेकिण्ड ऋण है। १२ अक्टूबर की रवि क्रांति ७।१२ दक्षिण तथा वेलान्तर १३ मिनट ऋण है। ५१।३२ उत्तर अक्षांश के चर निकाले। (देखें अगले पृष्ठ पर)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

		५० अक्षांश मि.	से.	५५ अक्षांश मि.	से.
८	क्रान्त्यंश के चर	३९	००	४६	००
६	,, ,,	२९	००	३५	००
२	,, का अन्तर	१०	००	११	००
१	,, ,,	५	००	५	३०
० १२	,, ,,	१	००	१	०६
१ १२	,, ,,	६	००	६	३६
६ ००	,, के चर	२९	००	३५	००
७ १२	,, ,,	३५	००	४१	३६

		मि.	से.
५५ अक्षांश	७ १२ क्रान्त्यंश के चर	४१	३६
५० ,,	७ १२ ,, ,,	३५	००
५ ,,	पर अन्तर	६	३६
१ ,,	,,	१	१९
० ३२	,, (७९ × ३२ ÷ ६०)	०	४२
१ ३२	के चर	२	०१
५० ००	,,	३५	००
५१ ३२ अक्षांश	७ १२ क्रान्त्यंश के चर	३७	०१

१२ अक्टूबर का मध्याह्न ज्ञात किया	१२	०	००
वेलान्तर घटाया	— ०	१३	००
मध्याह्न	११	४७	००
दक्षिण क्रान्ति है अतः चर अंक ६ में से घटाये जायेंगे	६	०	००
चर घटाये	— ०	३७	०१
	५	२२	५९
	११	४७	००
सूर्योदय ज्ञात करने के लिए मध्याह्न में से घटाया	— ५	२२	५९
सूर्योदय स्थानीय समय में	६	२४	०१
स्टैंडर्ड अन्तर जोड़ा	+		२०
	६	२४	२१
समर टाइम जोड़ा	१	०	००
सूर्योदय ग्रीनविच टाइम	— ७	२४	२१

इगलैंड मे मार्च के तीसरे शनिवार की रात्रि के २ बजे से अक्टूबर के चौथे रविवार २ बजे रात्रि तक ग्रीष्म काल एक घण्टा बढ़ाकर समय निर्धारण किया जाता है। ग्रीनविच टाईम के अनुसार सूर्योदय ७।२४ पर होगा। यदि किसी का जन्म लन्दन ग्रीष्मकाल में हुआ हो तो स्थानीय समय निकालने के लिए १ घण्टा समर टाईम (ग्रीष्म समय) कम होगा और २० सेकिण्ड ग्रीनविच से लन्दन का अन्तर कम होगा, तब इष्ट काल बना कर लग्न निकाला जायेगा। इसके लिए निरयण लग्न सारिणी में ५१ या ५२ उत्तर अक्षांश की लग्न सारिणी से लग्न देखी जायेगी। १२ अक्टू. को सूर्य सूर्योदय के समय कन्या के २५ अंश पर होता है। अतः लन्दन समय ६।२४ प्रातः पर कन्या लग्न के २५ अंश उदित होंगे। ग्रह स्पष्ट भारतीय पंचांग से भारतीय समय अनुसार जन्म समय में ५½ घण्टा जमा करके करना होगा।

उदाहरण (७)—न्यूयार्क नगर का २१ मई का सूर्योदय निकालना है। न्यूयार्क उत्तर अक्षांश ४०।४३ पश्चिम रेखांश ७४।०० स्टैंडर्ड अन्तर ४ मिनट है। २१ मई की उत्तरा क्रान्ति २०।४ वेलान्तर ४ मिनट ऋण है।

				मि. से.
४५	अक्षांश पर	२०	क्रान्त्यंश के चर	८५ ००
४०	,,	२०	,, ,,	७१ ००
५	,,	अन्तर		१४ ००
१	,,	,,		२ ४८
० ४३	,,	,,		२ ००
४० ००	,,	के चर		७१ ००
४० ४३	,,	,,		७३ ००

	१२ ० ००		६ ० ००
वेलान्तर ऋण	— ० ४ ००	चर जोड़े	+ १ १३ ००
	११ ५६ ००		७ १३ ००
	— ७ १३ ००		
सूर्योदय	= ४ ४३ ००	सूर्यास्त	११ ५६ ००
स्टैंडर्ड अन्तर ऋण	— ० ४ ००		+ ७ १३ ००
	४ ३९ ००		१९ ९ ००
ग्रीष्म समय	१ ० ००		— ० ४ ००
सूर्योदय क्षेत्रीय	५ ३९ ००		१९ ५ ००
स्टैंडर्ड समयानुसार			+ १ ० ००
		क्षे. स्टै. टाईम	२० ५ ००

ग्रीष्म समय अप्रैल के अन्तिम रविवार २ बजे रात्रि से अक्टूबर के अन्तिम रविवार २ बजे रात्रि तक एक घण्टा बढ़ा कर निर्धारित किया जाता है। इस अवधि में जन्म हो तो इष्ट काल बनाते समय ग्रीष्म समय का एक घण्टा कम करके स्टैंडर्ड अन्तर कम या ज्यादा करके स्थानीय समय निकालना चाहिए। २१ मई को सूर्य वृष राशि के ७ अंश के लगभग होता है। सूर्योदय के समय वृष लग्न ७ अंश पर उदित होगी। ग्रह स्पष्ट भारतीय पंचांग से स्थानीय समय में १०½ या ९½ घण्टा जोड़ कर भारतीय समय अनुसार किये जायेंगे।

न्यूयार्क की लग्न निकालने के लिये ४१ उत्तर अक्षांश की लग्न सारिणी से गणित करके लग्न निकाली जायेगी। ग्रह स्पष्ट ग्रीष्म काल में ग्रीष्म समय का एक घण्टा कम करके उसमें १०½ घण्टे जोड़कर जो समय आये भारतीय पंचांगों से उस समय के ग्रह स्पष्ट किये जायेंगे। न्यूयार्क भारत से १०½ घण्टे के अन्तर पर है। ग्रीष्म काल में यह बढ़े हुये समय से ९½ रह जाता है। इसी प्रकार लन्दन ५½ घण्टे के अन्तर पर है। ग्रीष्म काल में यह अन्तर ४½ घण्टे रह जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

—: चर सारिणी :--

क्रान्त्यंश→ अक्षांश ↓	२ मि. सै.	४ मि. सै.	६ मि. सै.	८ मि. सै.	१० मि. सै.	१२ मि. सै.	१४ मि. सै.	१६ मि. सै.	१८ मि. सै.	२० मि. सै.	२२ मि. सै.	२४ मि. सै.	←क्रान्त्यंश अक्षांश ↓
२	० १८	० ३०	० ५४	१ ६	१ २४	१ ४२	२ ०	२ १८	२ २४	२ ५४	३ १२	३ ३६	२
४	० ३०	१ ६	१ ४२	२ १२	२ ४८	३ २४	४ ०	४ २४	५ १२	५ ४८	६ ३०	७ ६	४
६	० ५४	१ ४२	२ ३०	३ २४	४ १२	५ ६	६ ०	६ ५४	७ ४८	८ ४८	९ २२	१० ४२	६
८	१ ६	२ १२	३ २४	४ ३०	५ ४२	६ ४८	८ ०	९ १२	१० ३०	११ ४२	१३ ००	१४ १८	८
९	१ १८	२ ३०	३ ४८	५ ६	६ २४	७ ४२	९ ०	१० २४	११ ४८	१३ १२	१४ ४२	१६ १२	९
१०	१ २४	२ ४८	४ १२	५ ४२	७ ६	८ ३६	१० ६	११ ३६	१३ ६	१४ ४२	१६ १८	१८ ००	१०
११	१ ३०	३ ६	४ ४२	६ १८	७ ४८	९ २४	११ ६	१२ ४८	१४ ३०	१६ १२	१८ ००	१९ ५४	११
१२	१ ४२	३ २४	५ ६	६ ४८	८ ३६	१० १८	१२ ६	१४ ००	१५ ४८	१७ ४२	१९ ४२	२१ ४२	१२
१३	१ ४८	३ ४२	५ ३६	७ २४	९ १८	११ १२	१३ १२	१५ १२	१७ १२	१९ १८	२१ २४	२३ ३६	१३
१४	२ ००	४ ००	६ ००	८ ००	१० ६	१२ ६	१४ १२	१६ २४	१८ ३६	२० ४८	२३ ६	२५ ३०	१४
१५	२ ६	४ १८	६ २४	८ ३६	१० ४८	१३ ६	१५ १८	१७ ३६	२० ००	२२ २४	२४ ५४	२७ २४	१५
१६	२ १८	४ ३६	६ ५४	९ १२	११ ३६	१४ ००	१६ २४	१८ ५४	२१ २४	२४ ००	२६ ३६	२९ १८	१६
१७	२ २४	४ ५४	७ १८	९ ४८	१२ २४	१४ ५४	१७ ३०	२० ६	२२ ४८	२५ ३०	२८ २४	३१ १८	१७
१८	२ ३६	५ १२	७ ४८	१० ३०	१३ ०६	१५ ४८	१८ ३६	२१ २४	२४ १२	२७ १२	३० १२	३३ १८	१८
१९	२ ४२	५ ३६	८ १८	११ ६	१३ ५४	१६ ४८	१९ ४२	२२ ४२	२५ ४२	२८ ४८	३२ ००	३५ १८	१९
२०	२ ५४	५ ४८	८ ४८	११ ४२	१४ ४२	१७ ४२	२० ४८	२४ ००	२७ १२	३० २४	३३ ४८	३७ १८	२०
२१	३ ०६	६ ०६	९ १२	१२ २४	१५ ३०	१८ ४२	२२ ००	२५ १८	२८ ४२	३२ ६	३५ ४२	३९ २४	२१
२२	३ १२	६ ३०	९ ४२	१३ ००	१६ १८	१९ ४२	२६ ६	२६ ३६	३० १२	३३ ४८	३७ ३६	४१ २४	२२
२३	३ २४	६ ४८	१० १२	१३ ४२	१७ १२	२० ४२	२४ १८	२८ ००	३१ ४२	३५ ३०	३९ ३०	४३ ३६	२३
२४	३ ३६	७ ०६	१० ४२	१४ १८	१८ ००	२१ ४२	२५ ३०	२९ १८	३३ १८	३७ १८	४१ २४	४५ ४२	२४
२५	३ ४२	७ ३०	११ १२	१५ ००	१८ ५४	२२ ४२	२६ ४२	३० ४२	३४ ४८	३९ ०६	४३ २४	४७ ५४	२५
२६	३ ५४	७ ४८	११ ४२	१५ ४२	१९ ४२	२३ ४८	२७ ५४	३२ ०६	३६ ३०	४० ५४	४५ ३०	५० १२	२६
२७	४ ६	८ १२	१२ १८	१६ ४८	२० ३६	२४ ५४	२९ १२	३३ ३६	३८ ०६	४२ ४२	४७ ३०	५२ २४	२७
२८	४ १८	८ ३०	१२ ४८	१७ ०५	२१ ३०	२५ ५४	३० ३०	३५ ०६	३९ ४८	४४ ५४	४९ ३६	५४ ४८	२८
२९	४ २४	८ ५४	१३ २४	१७ ५४	२२ २४	२७ ०६	३१ ४८	३६ ३६	४१ ३०	४६ ३०	५१ ४८	५७ ०६	२९
३०	४ ३६	९ १८	१३ ५४	१८ ३६	२३ २४	२८ १२	३३ ०६	३८ ०६	४३ १२	४८ ३०	५३ ५४	५९ ३६	३०
३१	४ ४८	९ ३६	१४ ३०	१९ २४	२४ १८	२९ १८	३४ ३०	३९ ४२	४५ ००	५० ३०	५६ १२	६२ ०६	३१
३३	५ १२	१० २४	१५ ३६	२० ५४	२६ १८	३१ ४२	३७ १८	४२ ५४	४८ ४२	५४ ४२	६० ४८	६७ १२	३३
३५	५ ३६	११ १२	१६ ५४	२२ ३६	२८ २४	३४ १२	४० १२	४६ १८	५२ ३६	५९ ०६	६५ ४२	७२ ३६	३५
४०	७ ००	१३ ००	२० ००	२७ ००	३४ ००	४१ ००	४८ ००	५६ ००	६३ ००	७१ ००	७९ ००	८८ ००	४०
४५	८ ००	१६ ००	२४ ००	३२ ००	४१ ००	४९ ००	५८ ००	६७ ००	७६ ००	८५ ००	९५ ००	१०६ ००	४५
५०	१० ००	१९ ००	२९ ००	३९ ००	४९ ००	५९ ००	६९ ००	८० ००	९१ ००	१०३ ००	११५ ००	१२८ ००	५०
५५	११ ००	२३ ००	३५ ००	४६ ००	५८ ००	७१ ००	८४ ००	९७ ००	१११ ००	१२५ ००	१४१ ००	१५९ ००	५५
१३°४'	१ ४८	३ ४२	५ ३६	७ ३०	९ २४	११ १८	१३ १८	१५ १८	१७ १८	१९ २४	२१ ३०	२३ ४२	१३°४'
१८°५८'	२ ४२	५ ३०	८ १८	११ ०६	१३ ५४	१६ ४२	१९ ४२	२२ ३६	२५ ३६	२८ ४२	३१ ५४	३५ १२	१८°५८'
२२°३५'	३ १८	६ ४२	१० ००	१३ २४	१६ ४८	२० १८	२३ ४८	२७ २४	३१ ०६	३४ ४८	३८ ४२	४२ ४२	२२°३५'
२८°३८'	४ २४	८ ४२	१३ १२	१७ ३६	२२ ०६	२६ ४२	३१ १८	३६ ००	४० ८४	४५ ५४	५१ ००	५६ १८	२८°३८'
क्रान्त्यंश→	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	←क्रान्त्यंश

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २१° अयनांश २४ (अक्षांश २०-३० से २१-३० तक स्थित)

(अजन्ता, अमरावती, छिन्दवाड़ा, कटक, नासिक, खण्डवा, जूनागढ़, धूलिया, नागपुर, पोरबन्दर, भुवनेश्वर, सूरत, सोमनाथ आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
मेष	६	१४	२२	३०	३८	४५	५३	२	१०	१९	२८	३६	४४	५२	१	१०	१८	२७	३६	४४	५३	२	१०	१९	२८	३६	४४	५३	३	१४
१	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	२३	३१	४०	४९	५७	६	१५	२४	३४	४४	५४	५	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	६	१६	२६	३६	४६	०	१०
२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
मिथुन	२०	३१	४१	५१	०	११	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४४	५५	७	१८	२९	४०
३	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
कर्क	५२	३	१४	२५	३६	४७	०	१२	२३	३४	४५	०	११	२३	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४१	५३	५	१६	२८
४	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
सिंह	३८	५०	०	१२	२३	३४	४५	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	०	११	२२	३३	४४	५५	६
५	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५	१६	२७	३८	४९	५९	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	०	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३	२४
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	२०	३१	४२	०	११	२२	३३	४४	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	०	११	२२	३३	४४	५५
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	५४	५	१६	२७	३८	५०	१	१२	२३	३४	४५	०	११	२२	३३	४४	०	११	२२	३३	४४	०	११	२२	३३	४४	०	११	२२	३३
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२०	३१	४२	५३	३	१४	२५	३६	४७	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	४३	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१३	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५५	४	१३	२२	३१	३९	४८	५६	५	१३
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९
कुम्भ	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१५	२३	३१	३९	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१३	२१	२९	३७	४५	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	५८

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश १९° अयनांश २४ (अक्षांश १८-३० से १९-३० तक स्थित)

(बम्बई, पूना, खण्डाला, इगत पुरी, अहमद नगर, औरंगाबाद, जगन्नाथ पुरी आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
मेष	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	७	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२०	२९	३८	४७	५५	४	१३	२२
१	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
वृष	३१	४०	४९	५७	६	१५	२४	३४	४४	५४	५	१४	२६	३६	४६	५६	७	१७	२८	३८	४८	५८	९	२०	३०	४०	५१	१	१२	२२
२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
मिथुन	३०	४१	५१	१	१२	२२	३३	४३	५४	४	१५	२६	३६	४६	५६	७	१७	२८	३८	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	१०	२०	३०
३	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
कर्क	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३	२४	३५	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५६	७	१७	२८	३८	४९	५९	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४७	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४४	५५	५
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	१६	२७	३८	४९	५९	११	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	५९	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४
७	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
वृश्चिक	४६	५६	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४८	०	११	२२	३३	४४	०	११	२२	३३	४४	०	११	२२	३३	४४	०	११	२१
८	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०
धनु	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०
९	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
मकर	३६	४६	५५	५	१५	२४	३४	४३	५३	२	११	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४१	०	९	१८	२७	३५	४४	५२	०	८
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	१०	१८	२६	३४	४४	५२	०	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३
मीन	१०	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २५° अयनांश २४ (अक्षांश २४-५० से २५-५० तक स्थित)

(आबूरोड, उदयपुर, मेवाड, बूंदी, कोटा, जालौर, सिरोही, चित्तोड़गढ़, नाथद्वारा, नीमच, प्रतापगढ़, भवानीमंडी, छोटीसादडी, छतरपुर, गया, मणिपुर, इलाहाबाद, ओरछा, काशी, गाजीपुर, अम्बाजी, झांसी, पटना, शिलांग, चित्रकूट आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
	५८	६	१३	२१	२८	३६	४३	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	५९	८	१६	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२४	३२	४१	४९	५८
१ वृष	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
	६	१५	२३	३२	४०	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६
२ मिथुन	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
	५६	६	१६	३०	४०	५०	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१
३ कर्क	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	३	१४	२६	३७	४९	१	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१८	३०	४२	५३	५
४ सिंह	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	१६	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	५	१७	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	८	१९	३१	४२
५ कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१७
६ तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९
	२८	३९	५०	१	१३	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९
७ वृश्चि.	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०
८ धनु	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	२	१२	२२	३२	४२	५२
९ मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१२	२०	२८	३७	४५	५४	२	११	१९	२८	३६	४५	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५२	०	९	१८
१० कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	२६	३५	४३	५२	०	८	१७	२४	३२	३९	४७	५४	२	१०	१७	२४	३१	३९	४६	५४	१	८	१६	२३	३१	३८	४६	५३	१	८
११ मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	१५	२३	३०	३७	४५	५३	०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२	०	७	१४	२२	२९	३७	४४	५१	५९	६	१४	२१	२९	३६	४४	५१

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २३° अयनांश २४ (अक्षांश २२-३० से २३-३० तक स्थित)

(उज्जैन, धार, इन्दौर, रतलाम, बांसवाड़ा, भोपाल, होशंगाबाद, इटारसी, कलकत्ता, जबलपुर, रांची, नाडियाद, जामनगर, बड़ौदा, अहमदाबाद आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७
	२	१०	१८	२५	३३	४०	४८	५६	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	६	१४	२३	३१	४०	४९	५७	६
१ वृष	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२
	१४	२३	३२	४०	४९	५७	६	१६	२६	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०
२ मिथुन	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
	१०	२०	३०	४०	५०	१	११	२२	३३	४४	५६	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१
३ कर्क	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४३	५५	६	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	५९	११
४ सिंह	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	२२	३३	४४	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३
५ कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३
६ तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१
७ वृश्चि.	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०
८ धनु	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४२	५२	२	१२	२२	३२	४३
९ मकर	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
	५३	३	१३	२३	३३	४४	५४	२	११	२०	२८	३७	४५	५४	३	११	२०	२८	३६	४६	५४	३	१२	२०	२९	३७	४६	५४	३	१२
१० कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
	२०	२८	३७	४६	५५	३	१२	१९	२७	३५	४२	५०	५७	५	१३	२०	२८	३५	४३	५१	५८	६	१३	२१	२८	३६	४४	५१	५८	६
११ मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
	१४	२२	२९	३७	४५	५२	०	७	१५	२३	३०	३८	४५	५३	१	८	१६	२३	३१	३८	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	३९	४७	५५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २७° अयनांश २४ (अक्षांश २६-३० से २७-३० तक स्थित)

(फैजाबाद, एटा, कासगंज, हाथरस, कन्नौज, आगरा, फर्रुखाबाद, अजमेर, जोधपुर, ग्वालियर, कानपुर, पटना, कूच बिहार, पूर्णिया, दरभंगा, शिलांग, मथुरा, धौलपुर, भरतपुर, जयपुर, इटावा, उन्नाव, अयोध्या, गोरखपुर, देवरिया, लखनऊ, सिलीगुड़ी, जैसलमेर, डिब्रूगढ़, हरदोई आदि के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२ ५४	३ २	३ ९	३ १६	३ २३	३ ३१	३ ३८	३ ४६	३ ५५	४ ३	४ ११	४ २०	४ २८	४ ३६	४ ४५	४ ५३	५ १	५ १०	५ १८	५ २६	५ ३५	५ ४३	५ ५१	६ ०	६ ८	६ १६	६ २५	६ ३३	६ ४१	६ ५०
१ वृष	६ ५८	७ ६	७ १५	७ २३	७ ३१	७ ४०	७ ४८	७ ५६	८ ५	८ १३	८ २२	८ ३०	८ ३८	८ ४७	८ ५५	९ ४	९ १२	९ २१	९ २९	९ ३७	९ ४६	९ ५४	१० ३	१० ११	१० २०	१० २८	१० ३७	१० ४५	१० ५४	११ २
२ मिथुन	११ ५०	१२ ०	१२ १०	१२ २०	१२ ३०	१२ ४०	१२ ५०	१३ १	१३ ११	१३ २१	१३ ३१	१३ ४२	१३ ५२	१४ २	१४ १३	१४ २३	१४ ३३	१४ ४४	१४ ५४	१५ ५	१५ १५	१५ २६	१५ ३६	१५ ४७	१५ ५७	१६ ८	१६ १८	१६ २९	१६ ३९	१६ ५०
३ कर्क	१७ २४	१७ ३५	१७ ४६	१७ ५८	१८ ९	१८ २१	१८ ३२	१८ ४४	१८ ५५	१९ ७	१९ १८	१९ ३०	१९ ४२	१९ ५३	२० ५	२० १७	२० २८	२० ४०	२० ५२	२१ ३	२१ १५	२१ २७	२१ ३९	२१ ५१	२२ २	२२ १४	२२ २६	२२ ३७	२२ ४९	२३ १
४ सिंह	२३ १०	२३ २२	२३ ३४	२३ ४५	२३ ५७	२४ ८	२४ २०	२४ ३१	२४ ४३	२४ ५५	२५ ७	२५ १९	२५ ३०	२५ ४२	२५ ५४	२६ ६	२६ १८	२६ २९	२६ ४१	२६ ५३	२७ ५	२७ १७	२७ २८	२७ ४०	२७ ५२	२८ ३	२८ १५	२८ २७	२८ ३९	२८ ५०
५ कन्या	२८ ५२	२९ ३	२९ १५	२९ २६	२९ ३७	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २३	३० ३४	३० ४५	३० ५७	३१ ८	३१ १९	३१ ३१	३१ ४२	३१ ५३	३२ ४	३२ १५	३२ २७	३२ ३८	३२ ४९	३३ ०	३३ ११	३३ २२	३३ ३३	३३ ४४	३३ ५५	३४ ६	३४ १७
६ तुला	३४ ३२	३४ ४३	३४ ५५	३५ ६	३५ १७	३५ २८	३५ ४०	३५ ५२	३६ ३	३६ १५	३६ २६	३६ ३८	३६ ५०	३७ १	३७ १३	३७ २४	३७ ३६	३७ ४८	३७ ५९	३८ ११	३८ २२	३८ ३४	३८ ४६	३८ ५७	३९ ९	३९ २०	३९ ३२	३९ ४४	३९ ५५	४० ७
७ वृश्चि.	४० १८	४० ३०	४० ४२	४० ५३	४१ ५	४१ १६	४१ २८	४१ ३९	४१ ५१	४२ २	४२ १४	४२ २५	४२ ३६	४२ ४८	४२ ५९	४३ ११	४३ २२	४३ ३३	४३ ४५	४३ ५६	४४ ८	४४ १९	४४ ३०	४४ ४२	४४ ५३	४५ ५	४५ १६	४५ २७	४५ ३९	४५ ५०
८ धनु	४६ २	४६ १३	४६ २४	४६ ३६	४६ ४७	४६ ५८	४७ १०	४७ २०	४७ ३०	४७ ४०	४७ ५०	४८ ०	४८ १०	४८ २०	४८ ३०	४८ ४०	४८ ५०	४९ ०	४९ १०	४९ २०	४९ ३०	४९ ४१	४९ ५१	५० १	५० ११	५० २१	५० ३१	५० ४१	५० ५१	५१ १
९ मकर	५१ १२	५१ २२	५१ ३२	५१ ४२	५१ ५२	५२ २	५२ १२	५२ २०	५२ २९	५२ ३७	५२ ४५	५२ ५४	५३ २	५३ १०	५३ १९	५३ २७	५३ ३५	५३ ४४	५३ ५२	५४ ०	५४ ८	५४ १७	५४ २५	५४ ३३	५४ ४२	५४ ५०	५४ ५८	५५ ७	५५ १५	५५ २४
१० कुम्भ	५५ ३२	५५ ४०	५५ ४९	५५ ५७	५६ ५	५६ १४	५६ २२	५६ ३१	५६ ३९	५६ ४७	५६ ५६	५७ ४	५७ १३	५७ २१	५७ २९	५७ ३८	५७ ४६	५७ ५५	५८ ३	५८ १२	५८ २०	५८ २९	५८ ३७	५८ ४६	५८ ५४	५९ ३	५९ १२	५९ २०	५९ २९	५९ ३७
११ मीन	५९ १६	५९ २४	५९ ३१	५९ ३८	५९ ४५	५९ ५३	० ०	० ७	० १४	० २२	० २९	० ३६	० ४३	० ५१	० ५८	१ ५	१ १३	१ २०	१ २७	१ ३४	१ ४२	१ ४९	१ ५६	२ ४	२ ११	२ १८	२ २५	२ ३३	२ ४०	२ ४७

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २८° अयनांश २४ (अक्षांश २७-३० से २८-३० तक स्थित)

(हाथरस, अलीगढ़, अनूपशहर, काठमाण्डू, अलवर, किशनगढ़, भूटान, नवलगढ़, खुर्जा, बरेली, बुलन्दशहर, बीकानेर, बदायूं, चन्दौसी, नारनौल, सीकर, पटौदी, झुंझुनू, महेन्द्रगढ़, रिवाड़ी आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२ ५२	२ ५९	३ ६	३ १३	३ २१	३ २८	३ ३५	३ ४३	३ ५२	४ ०	४ ८	४ १६	४ २४	४ ३३	४ ४१	४ ४९	४ ५८	५ ६	५ १४	५ २२	५ ३१	५ ३९	५ ४८	५ ५६	६ ५	६ १३	६ २२	६ ३०	६ ३८	६ ४५
१ वृष	६ ५३	७ २	७ १०	७ १८	७ २६	७ ३५	७ ४३	७ ५१	८ ३	८ १३	८ २३	८ ३३	८ ४३	८ ५३	९ ३	९ १३	९ २३	९ ३३	९ ४३	९ ५३	१० ३	१० १४	१० २४	१० ३४	१० ४४	१० ५४	११ ४	११ १४	११ २४	११ ३४
२ मिथुन	११ ४४	११ ५४	१२ ४	१२ १४	१२ २४	१२ ३४	१२ ४४	१२ ५५	१३ ५	१३ १८	१३ ३०	१३ ४१	१३ ५३	१४ ४	१४ १५	१४ २७	१४ ३८	१४ ५०	१५ १	१५ १२	१५ २४	१५ ३५	१५ ४७	१५ ५८	१६ १०	१६ २१	१६ ३३	१६ ४४	१६ ५६	१७ ७
३ कर्क	१७ १८	१७ ३०	१७ ४१	१७ ५३	१८ ४	१८ १५	१८ २७	१८ ३८	१८ ५०	१९ २	१९ १४	१९ २५	१९ ३७	१९ ४९	२० ०	२० १२	२० २४	२० ३५	२० ४७	२० ५९	२१ १०	२१ २२	२१ ३४	२१ ४५	२१ ५७	२२ ९	२२ २०	२२ ३२	२२ ४४	२२ ५५
४ सिंह	२३ ७	२३ १९	२३ ३०	२३ ४२	२३ ५४	२४ ५	२४ १७	२४ २९	२४ ४०	२४ ५२	२५ ३	२५ १५	२५ २६	२५ ३८	२५ ५०	२६ १	२६ १३	२६ २५	२६ ३६	२६ ४८	२७ ०	२७ ११	२७ २३	२७ ३४	२७ ४६	२७ ५८	२८ ९	२८ २१	२८ ३३	२८ ४४
५ कन्या	२८ ५१	२९ ३	२९ १४	२९ २६	२९ ३७	२९ ४८	३० ०	३० ११	३० २३	३० ३४	३० ४६	३० ५७	३१ ८	३१ २०	३१ ३१	३१ ४३	३१ ५४	३२ ६	३२ १७	३२ २८	३२ ४०	३२ ५१	३३ ३	३३ १४	३३ २६	३३ ३७	३३ ४९	३४ ०	३४ ११	३४ २३
६ तुला	३४ ३४	३४ ४६	३४ ५७	३५ ८	३५ २०	३५ ३१	३५ ४३	३५ ५४	३६ ६	३६ १८	३६ ३०	३६ ४१	३६ ५३	३७ ४	३७ १६	३७ २८	३७ ४०	३७ ५१	३८ ३	३८ १५	३८ २६	३८ ३८	३८ ५०	३९ १	३९ १३	३९ २४	३९ ३६	३९ ४८	४० ०	४० ११
७ वृश्चि.	४० २३	४० ३४	४० ४६	४० ५८	४१ १०	४१ २१	४१ ३३	४१ ४४	४१ ५६	४२ ७	४२ १९	४२ ३०	४२ ४२	४२ ५३	४३ ४	४३ १६	४३ २७	४३ ३९	४३ ५०	४४ १	४४ १३	४४ २४	४४ ३६	४४ ४७	४४ ५९	४५ १०	४५ २२	४५ ३३	४५ ४४	४५ ५६
८ धनु	४६ ७	४६ १९	४६ ३०	४६ ४२	४६ ५३	४७ ५	४७ १६	४७ २८	४७ ३९	४७ ५०	४८ २	४८ १३	४८ २४	४८ ३६	४८ ४६	४८ ५६	४९ ६	४९ १६	४९ २६	४९ ३६	४९ ४६	४९ ५६	५० ६	५० १६	५० २६	५० ३६	५० ४६	५० ५६	५१ ६	५१ १६
९ मकर	५१ १७	५१ २७	५१ ३७	५१ ४७	५१ ५७	५२ ७	५२ १७	५२ २७	५२ ३७	५२ ४७	५२ ५८	५३ ९	५३ १९	५३ २९	५३ ३९	५३ ५०	५४ ०	५४ १०	५४ २०	५४ ३०	५४ ४१	५४ ५१	५५ २	५५ १२	५५ २२	५५ ३३	५५ ४३	५५ ५४	५६ ४	५६ १५
१० कुम्भ	५५ ३५	५५ ४३	५५ ५२	५६ ०	५६ ८	५६ १६	५६ २५	५६ ३३	५६ ४२	५६ ५०	५६ ५९	५७ ८	५७ १६	५७ २५	५७ ३३	५७ ४२	५७ ५१	५७ ५९	५८ ८	५८ १६	५८ २५	५८ ३४	५८ ४२	५८ ५१	५८ ५९	५९ ८	५९ १६	५९ २५	५९ ३३	५९ ४२
११ मीन	५९ १७	५९ २४	५९ ३१	५९ ३८	५९ ४५	५९ ५३	० ०	० ७	० १४	० २१	० २९	० ३६	० ४३	० ५०	० ५७	१ ४	१ १२	१ १९	१ २६	१ ३३	१ ४०	१ ४७	१ ५४	२ १	२ ८	२ १५	२ २३	२ ३०	२ ३८	२ ४५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २९° अयनांश २४ (अक्षांश २८-३० से २९-३० तक स्थित)

(हापुड़, मुरादाबाद, अमरोहा, जीन्द, नैनीताल, मेरठ, पानीपत, हिसार, अनूपगढ़, बिजनौर, भिवानी, रामपुर, रोहतक, मुजफ्फरनगर आदि नगरों के लिए)

ग. अ.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३	४१
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चि.	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	२९	३७	४५	५४	२	१०	१८	२६	३५	४३	५१	५९	७	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१३	२१	२९
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३८	४६	५४	२	१०	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	५०	५७	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३०° अयनांश २४ (अक्षांश २९-३० से ३०-३० तक स्थित)

(सहारनपुर, हरिद्वार, पटियाला, फाजिल्का, भटिण्डा, शाहाबाद, मुल्तान, अल्मोड़ा, करनाल, कुरुक्षेत्र, अम्बाला, देहरादून, नाभा, फरीदकोट आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	४५	५३	१	१०	१८	२६	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७
३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	५०
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५०	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४०	५२	४	१५	२७
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३८	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चि.	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७
८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३४	४२	५०	५८	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	११
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	१८	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३१° अयनांश २४ (अक्षांश ३०-३० से ३१-३० तक स्थित)

(फगवाड़ा, अमृतसर, चण्डीगढ़, कपूरथला, होशियारपुर, फिरोजपुर, लुधियाना, शिमला, कालका, सोलन, कुराली, खन्ना आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	४६	५३	५९	६	१३	२०	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२
१ वृष	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११
	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१७	२६	३५	४४	५३	२	११	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	१
२ मिथुन	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६
	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	७	१७	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७
३ कर्क	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२
	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२४	३६	४८	०	११	२३	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२२	३४	४६	५८	१०	२२	३४	४६
४ सिंह	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	५८	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३८
५ कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९
६ तुला	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६	३८	५१	२	१४	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०	३	१५	२७	३९	५१	४	१६	२८
७ वृश्चि.	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६
	३७	४९	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२५	३७	४९	६	२०	३२	४५	५७	९	२२	३४	४७	५९	११	२४	३६	४९	५९	२	१४	२६
८ धनु	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१
	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२८	३९	५१	५३	३	१४	२६	३७	५१
९ मकर	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४६	५६	६	१६	२६	३५	४५	५५	४	१४	२३	३३	४२	५२	१	११	२०	३०	३९	४९	५८	८	१७
१० कुम्भ	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४०	४७	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१०	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२
११ मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	१८	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४३	५०	५७	४	११	१८	२५	३२	३९

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३२° अयनांश २४ (अक्षांश ३१-३० से ३२-३० तक स्थित)

(कांगड़ा, चम्बा, डलहौजी, धरमशाला, पठानकोट, जालन्धर, मण्डी, गुरदासपुर आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६
	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	४०	४८	५६	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५५	३	११	१९
१ वृष	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	१	११
२ मिथुन	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६
	२०	३०	४०	५०	५९	१०	२०	३१	४२	५३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३६	४८	०	११	२३	३४
३ कर्क	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२
४ सिंह	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२७	३९	५१	३	१४	२६	३८	५०	२	१४	२५	३७
५ कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
	४९	१	१३	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१
६ तुला	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९
७ वृश्चि.	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८
८ धनु	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१
	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१८	३०	४१	५३	५५	४	१६	२७	३८	५०
९ मकर	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४६	५६	६	१६	२५	३५	४५	५४	४	१४	२३	३३	४२	५२	१	११	२०	३०	३९	४९	५८	८	१७
१० कुम्भ	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	५९	५	१२
११ मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१३	२०	२७	३४	४१	४७	५४	१	८	१४	२१	२८	३५	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	२९	३६

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बालक के जन्म-समय अरिष्ट योग व कुछ अन्य प्रमुख योग

बालक के जन्म से १२ वर्ष की आयु तक जो अनिष्ट ग्रह योग हैं, उन्हें अरिष्ट योग कहते हैं। नीचे कुछ प्रमुख अरिष्ट योगों का वर्णन किया गया है। अरिष्ट योगों का विचार करते समय 'अरिष्ट नाशक' योगों पर भी विचार करना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा फलादेश ठीक नहीं बैठता।

यदि पाप ग्रह युक्त क्षीण चन्द्रमा लग्न ५, ७, ८, ९ अथवा ११वें भाव में स्थित हो और वह किसी शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो बालक की आयु को अरिष्टकर एवं मृ—मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

छठें, आठवें एवं १२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उनको बलवान् वक्री पापी ग्रह देखते हों तो एक मास तक आयु को अरिष्टकारी होगा।

यदि चन्द्रमा जन्म लग्न से छठे या आठवें भाव में स्थित हो और वह पापी ग्रह से दृष्ट हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है, यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आठ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है।

यदि जन्म के समय चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के मध्य में हो तथा अन्य सब ग्रह ४, ७ एवं अष्टम भाव में स्थित हों, तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो माता की मृत्यु नहीं होती है। चन्द्र क्रूर ग्रह से दृष्ट होने पर माता को भी अरिष्टकर होगा।

यदि मंगल अथवा शनि लग्न में हों, सूर्य सप्तम भाव में हो अथवा चन्द्रमा मंगल या शनि से युक्त हो तो बालक की आयु को अरिष्ट योग होता है।

यदि शनि, मंगल तथा सूर्य तीनों ग्रह छठे, सातवें या बारहवें भाव में हों तो १ मास या १ वर्ष में अरिष्टकारक होते हैं।

द्वादश भाव में क्षीण चन्द्रमा हो तथा लग्न एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह हों तो बालक को अरिष्ट योग होता है।

यदि जन्म राशीश पाप ग्रह से प्रयुक्त अष्टम भाव में हो तो एक मास में ही अरिष्ट होता है।

जिस नक्षत्र में धूम्रकेतु, उल्कापात, ग्रहणादि का उदय हो तो उस नक्षत्र में उत्पन्न जातक को दो मास तक अरिष्ट रहता है।

लग्न में चन्द्रमा और ७वें भाव में २–३ पाप ग्रह स्थित हों तो शीघ्र अरिष्ट योग होता है।

यदि लग्न का स्वामी पाप ग्रह से युक्त होकर ७वें अथवा ८वें भाव में स्थित हों तो १ मास तक अरिष्ट होगा।

लग्न में राहु और छठे अथवा आठवें भाव में चन्द्रमा स्थित हो तो अरिष्ट योग होगा।

जन्म लग्न जिस राशि के नवांश में हो उसका स्वामी छठे या आठवें स्थान में जो राशि पड़े, उतने दिन पर्यन्त विशेष अरिष्ट योग रहेगा।

माता-पिता को अरिष्ट योग

माता के लिए चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से और पिता के लिए सूर्य तथा दशम स्थान से विचार करना चाहिए, यदि चन्द्रमा एवं चतुर्थ भाव शनि, मंगल एवं सूर्यादि क्रूर ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक माता को अत्यन्त कष्टकारी होता है। यदि चन्द्रमा से ४, ६ या आठवें स्थान पर पापी ग्रह हों तो भी माता को अरिष्टकर होता है। इसी भांति यदि बालक की कुण्डली में सूर्य अथवा दशम भाव में पापी ग्रह हों या देखते हों अथवा सूर्य पाप ग्रहों के मध्य स्थित हों तो पिता को कष्ट जानें। सूर्य से ४, ६ ८वें क्रूर होने पर भी पिता को कष्टकारी है।

अरिष्ट भंग योग

यदि जन्म लग्नेश बलवान् शुभ ग्रह हो तथा वह शुभ मित्र ग्रहों से वीक्षित हो अथवा लग्न में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट योग नष्ट हो जाता है।

यदि शुभ राशिस्थ गुरु जन्म लग्न में स्थित हो तो अनेक प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं।

यदि सभी ग्रह शीर्षोदय राशियों में हो तो अरिष्ट भंग होता है।

यदि क्षीण चन्द्रमा भी अपनी उच्च राशि(वृष) में हों और वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट भंग हो जाता है।

यदि शुक्ल पक्ष में रात्रि के समय तथा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और चन्द्रमा आठवें भाव में स्थित होने पर भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो भी अरिष्ट का नाश हो जाता है।

कुछ अन्य प्रमुख योग पुष्कल योग

यदि लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान् होकर केन्द्र अथवा चतुर्थ भाव में हो तो 'पुष्कल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक मधुर भाषी, सुप्रसिद्ध तथा धनवान होता है। उसे सब प्रकार के सुख प्राप्त हो जाते हैं।

वीणा योग

यदि सात राशियों में सात ग्रहों की स्थिति हो तो 'वीणा' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक संगीतज्ञ, गायन विद्या में प्रीति रखने वाला, सब कार्यों में कुशल धनी तथा अनेक लोगों का पालन-पोषण करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति राजनीति क्षेत्र में भी सफल रहता है।

विदेश में भाग्योदय योग

चर राशि का लग्न और लग्नेश हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो विदेश में भाग्य उदय होगा।

विवाह के बाद भाग्योदय

सप्तमेश ग्रह अथवा शुक्र ग्रह सातवें भाव में अथवा उपचय स्थान (३, ६, १०, ११) में गया हो तो विवाह के पश्चात्—भाग्योदय होगा।

काल सर्प योग

यदि कुण्डली में सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य हों तो 'काल सर्प' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक प्रायः उलझनों में घिरा रहता है। जीवन पर्यन्त संघर्षमय जीवन रहता है। कुछ धन होते हुए भी सुखानुभव नहीं होता।

काहल योग

यदि नवम भाव तथा चतुर्थ भाव के स्वामी एक-दूसरे से केन्द्र भाव में स्थित हों और लग्नाधिपति बली हो, 'काहल योग' बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक राजनीति और शासन प्रशस्त कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

गढ़ा धन प्राप्ति योग

लाभेश लग्न में, लग्नेश धन स्थान में एवं धनेश लाभ स्थान में गए हों तो गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है।

लग्नेश शुभ ग्रह होकर द्वितीय भाव में स्थित हो अथवा धन स्थान का स्वामी आठवें भाव में स्थित हो तो भी गढ़ा हुआ धन मिलता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति आलसी और भाग्यवादी होता है।

वाहन—सुख योग

१. नवमेश, लाभेश और दशमेश—ये तीनों ग्रह चतुर्थ भाव में गये हों अथवा

२. चन्द्रमा से शुक्र तीसरे किंवा ग्याहरवें भाव में गया हो तो वाहन युक्त जातक होगा।

३. गुरु द्वारा दृष्ट चतुर्थ भावेश लाभ में गया हो तो बहुत वाहनों वाला जातक होगा।

४. अपनी उच्चराशि में गया हुआ व्ययेश धनेश से युत होकर नवम भाव को देखता हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्त्रियों के तिलादि एवं हस्त रेखा का विचार

भारतीय सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानों ने स्त्री शरीर पर पाये जाने वाले तिलों के सम्बन्ध में अनेक तथ्यों का विश्लेषण किया है। इनमें कुछ मुख्य बातों का उल्लेख करते हैं—

यदि किसी स्त्री के भौहों के मध्य भाग में तिल चिन्ह हो तो उसे राज्य प्राप्ति का लक्षण समझना चाहिए। यदि स्त्री के बायें कपोल पर लाल रंग का तिल हो तो वह मिष्ठान्न भोजन प्राप्त करने वाली होती है।

यदि किसी स्त्री के हृदय स्थान पर तिल हो तो उसे सौभाग्य सूचक समझना चाहिये। यदि दायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो ऐसी स्त्री तीन कन्या तथा दो पुत्रों को जन्म देती है। यदि बायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो स्त्री पहले बच्चे को जन्म देने के बाद विधवा हो जाती है।

यदि किसी स्त्री की नाभि के निचले भाग में तिल का चिन्ह हो तो उसे शुभ समझना चाहिये। यदि गुप्त स्थान में तिल हो तो वह दारिद्रय कारक होता है। हाथ, कान, कपोल, कंठ अथवा बाईं ओर के किसी अंग में तिल हो तो ऐसी स्त्री अपने प्रथम गर्भ से पुत्र को जन्म देती है।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का तिल हो तो, वह सदैव समधुर श्रेष्ठ भोजन प्राप्त करती है।

जिस स्त्री के ललाट पर काले रंग का चमकीला तिल हो तो वह पांच पुत्रों की माता तथा सौभाग्यवती होती है। ऐसी स्त्री स्वभाव से धार्मिक तथा दयालु प्रकृति की होती है।

मस्सा विचार

जिस स्त्री के कण्ठ, होंठ, दायें हाथ अथवा बायें कान पर मस्सा हो तो उसके पुत्र उच्च पद प्राप्त करते हैं।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का मस्सा हो, तो वह सदैव विभिन्न प्रकार के भोजन प्राप्त करती है। जिस स्त्री के दोनों भौहों के मध्य भाग में मस्सा हो तो वह स्वयं सर्विस में किसी ऊंचे पद को प्राप्त करती है।

नख विचार

बन्धूक पुष्प के समान लाल रंग के तथा ऊंचे उठे हुए नखों वाली स्त्री, ऐश्वर्य शालिनी होती है। टेढ़े, खुरदरे विवर्ण, श्वेत तथा चमकतेदार नाखून होने से स्त्री दरिद्रा होती है। जिन स्त्रियों के नखों पर श्वेत रंग के बिन्दु होते हैं, वे प्रायः व्याभिचारिणी होती हैं। चिकने सुन्दर रंग के अरुणाभायुक्त, वैडूर्य अथवा मोती के समान चमकदार तथा श्वेत बिन्दु युक्त चिन्ह सुख देने वाले होते हैं।

चपटी, मोटी, रूखी तथा जिनके पृष्ट भाग पर रोम हों, ऐसी अंगुलियां अशुभ होती हैं। अत्यन्त छोटी, पतली, गहरे लाल रंग की तथा विरल अंगुलियां रोग देने वाली होती हैं। यदि अंगुलियों में तीन से अधिक पर्व हों तो उस स्त्री को दुःख प्राप्त होता है।

यदि अंगुलियां गोलाई लिए हुए हों, उनके पर्व बराबर हों वे आगे से पतली कोमल त्वचा युक्त तथा गांठ रहित हों तो ऐसी स्त्री सुख भोगने वाली होती है।

यदि अगुलियां बहुत छोटी हों तथा दोनों हाथों से अंजुलि बनाने पर उनके बीच में छेद रहें तो ऐसी स्त्री अपने पति के घर को खाली कर देती है। अर्थात् वह धन का संचय करने वाली नहीं होती, खर्चीली होती है।

स्त्रियों के हाथ में गोल, सीधा तथा गोल नाखून वाला कोमल अंगूठा शुभ होता है। जिस स्त्री के अंगूठे अथवा अंगुलियों में यव का चिन्ह हो तथा उस यव (जौ) चिन्ह के ऊपर तथा नीचे की रेखा बराबर हो तो ऐसी स्त्री धन-धान्य से अत्यधिक सम्पन्न तथा सुख भोगने वाली होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा चौड़ा फैला हुआ हो तो वह विधवा होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा लंबा हो तो वह भाग्य हीना होती है।

स्त्रियों की हस्त रेखा विचार

यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध क्षेत्र पर छोटी-छोटी कई खड़ी रेखायें हों तो वह बहुत बातूनी होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध का पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो उसे वैधव्य का कष्ट भोगना पड़ता है। उसका पति दुराचारी तथा व्यसनी होता है।

यदि किसी स्त्री के दायें हाथ में भाग्य रेखा के दाईं ओर अथवा बायें हाथ में भाग्य रेखा के बाईं ओर चतुष्कोण में नक्षत्र चिन्ह हो तथा हृदय रेखा टूटी हुई हो तो उसका किसी पुरुष अथवा अपने पति से अत्यधिक प्रेम होता है।

यदि किसी स्त्री के हाथ की तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व पर नक्षत्र चिन्ह हो तथा उसके दोनों ओर एक-एक खड़ी रेखा भी हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता होती है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के बाद अपने पति के अधीन रहती है। यदि स्त्री के दायें हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायता प्राप्त होती है।

यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उत्पन्न होकर गुरु पर्वत पर गई हो तो वह धनी पुरुष की पत्नी होती है तथा उसे सुख, यश एवं विदेश गमन आदि से लाभ प्राप्त होते रहते हैं।

यदि विवाह रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय रेखा से मिली न हो तो ऐसी स्त्री का पति शराबी होता है और उसके नशे में अपनी पत्नी को दुःख देता है। स्त्री के हाथ और पांव की उंगलियां यदि टेढ़ी-बांकी हों तो वैधव्य अथवा हीनता का लक्षण समझना चाहिए। हृदय-रेखा शृंखलाकार होकर बीच में शनि क्षेत्र की ओर झुकी हुई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्रियों को पुरुषों की परवाह नहीं रहती।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवार व्रत विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रह की स्थिति हो अथवा अशुभ ग्रह की दशा अन्तर्दशा चल रही हो तो निम्नलिखित विधि अनुसार अनिष्ट ग्रह की शान्ति हेतु व्रत रखने से कल्याण होगा

रविवार के व्रत की विधि—समस्त कामनाओं की सिद्धि नेत्र रोग और कुष्टादि चर्म व्याधियों के नाश एवं आयु व सौभाग्य की वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से प्रारम्भ करके एक वर्ष पर्यन्त अथवा कम से कम बारह व्रत करें। व्रत के दिन केवल गेहूं की रोटी अथवा गुड़ से बना दलिया घी शक्कर के साथ भक्षण करें। भोजन से पूर्व स्नानान्तर शुद्ध वस्त्र धारण करके ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः बीजमंत्र का पाठ पांच माला करें। फिर रविवार कथा पढ़ें। तत्पश्चात् सूर्य को गन्धाक्षत, लाल फूल, दूर्वायुक्त जल से निम्न मंत्र पढ़ते हुए अर्घ्य दें। नमः सहस्त्रकिरण सर्वव्याधि विनाशन। गृहाणार्घ्यं मया दत्त संज्ञया सहितो रवे॥ फिर प्रदक्षिणा करके लाल चन्दन का तिलक लगाएं अन्तिम रविवार हवन के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन कराकर यथाशक्ति लाल वस्त्र फल पुष्पादि एवं दक्षिणा से प्रसन्न करें।

सोमवार के व्रत की विधि—यह व्रत श्रावण, चैत्र, वैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष, चौदह वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक धारण करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि आर्द्रा नक्षत्र सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष माहात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानानन्तर "ॐ नमः शिवाय"—आदि शिव मंत्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, पंचामृत अक्षत, सुपारी, फल, गंगाजल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमकरहित होना चाहिये। व्रत का उद्यापन भी उपरोक्त महीनों में करना श्रेयकर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद पदार्थ, दूध, दही, क्षीर, चांदी सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति, धन, पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है। सर्व प्रकार के कष्टों की निवृत्ति होती है।

मंगलवार के व्रत की विधि—सर्वप्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रुदमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथा शक्ति जीवन पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शान्त हो जाते है। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फलों, ताम्र बर्तन व नारियल द्वारा पूजा व दान करना चाहिए तथा श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए 'ॐ क्रां क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः, की ५ मालाएं करनी चाहिए और गुड़, पीले लड्डुओं व लाल वस्त्र का दान करना चाहिए।

बुधवार के व्रत की विधि—बुधवार का व्रत बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि होती है। यह व्रत विशाखा नक्षत्र कालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार का करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए बीजमंत्र ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः का पाठ करना चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित भोजन घी मूंग अथवा मूंग की दाल से बने मिष्ठान्न का दान करें तथा स्वयं भी इन्हीं वस्तुओं का भक्षण करें अन्तिम बुधवार मधुसर्पी, दधि और घृत के साथ हवन करें और हरे वस्त्र दो फल और मूंग का दान करें। गाय को हरा घास डालें।

बृहस्पति (गुरु वार) के व्रत की विधि—यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा वैवाहिक सुखों, विद्या, पुत्र संतान एवं धन प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम वीरवार का अनुराधा नक्षत्र हो तो और भी अच्छा है। यह व्रत १३ मास अथवा सात मास तक रख सकते हैं। व्रत के दिन स्नानोपरान्त पीले वस्त्र, पीला यज्ञोपवीत धारण करके बृहस्पति की पूजा स्वयं अथवा श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। पादुका, उपानह, छाता, कमण्डलु रखे, पीले रंग के पुष्प, चने की दाल, पीले कपड़े, पीला चन्दन, हल्दी व पीले चावल, लड्डू आदि का भोग लगाना चाहिए। दान करके ही स्वयं एक समय खावें। नमक का प्रयोग न करें। इस दिन केले के वृक्ष का पूजन शुभ होता है। गुरु शांति के लिए ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः मंत्र की ५ माला का जाप करें। उद्यापन में दशमांश भाग का २८ समिधा व मधु सर्पी, घृत, दधि के साथ हवन करना चाहिए।

शुक्रवार के व्रत की विधि—यह व्रत धन विवाह संतानादि भौतिक सुखों को देने वाला है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत चन्दन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बांट दें। ग्रह शान्ति के लिए ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः की तीन माला का पाठ करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक न प्रयोग करें। उद्यापनोपरान्त हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण बालकों को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चांदी, फलादि सफेद पदार्थों का दान करें।

शनिवार के व्रत की विधि—यह व्रत शनिग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण रोगों, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है और धन धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर धूप गंध, नीले पुष्प, फल और नैवेद्य आदि से पूजन करें और ॐ शं शनैश्चराय नमः मंत्र की तीन माला का जाप करें, व्रत के दिन नीले वस्त्र धारण करें। एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, नीले पुष्प, लौंग, तेल, गंगाजल दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दे। तत्पश्चात् शिवोपासना करें। १६ शनिवार करने के बाद उद्यापन के समय शनि स्तोत्र का पाठ जूते, जुराब, नीले रंग का वस्त्र, काले माश, चाकू और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को दें और स्वयं भी उड़दादि तथा तैल निर्मित पदार्थों का सेवन करें। राहु की शान्ति के लिए भी शनिवार का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करें और दान में नारियल भूरा कम्बल या वस्त्र दें तथा पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। राहु के बीज मंत्र का पाठ करना श्रेयकर होता है। **केतु ग्रह की शान्ति हेतु**—केतु के बीज मंत्र ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

सप्तधान्य(सतनजा)—१. काले माश(उड़द), २. मूंग, गेहूं, चने, जौ, चावल, कंगनी।

अष्ट गंध—अगर, तगर, कस्तूरी, कुंकुम, कपूर, चन्दन, लौंग और गोरोचन।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गृह-भूमि विचार

शुभाशुभ भूमि विचार—जिस भूमि पर मकान बनाना है, उस भूमि में सूर्यास्त समय एक हाथ चौकोर और एक हाथ गहरा गड्ढा खोद कर जल से भर दें। प्रातः यदि जल रहे तो शुभ, नहीं रहे तो मध्यम, गड्ढा फट जाय तो अशुभ भूमि समझें।

नींव खोदने में पत्थर आदि मिलने का फल—नींव खोदने में पहले पत्थर, ईंट, धन, तांबा आदि मिलने से सुख लाभ। कपाल, हड्डी, कोयला, केशादि मिलने से कष्ट होता है।

मण्डलेश का निर्णय—गृह-स्वामी के हाथ से लम्बाई-चौड़ाई नाप कर दोनों के योग को दूना करके ८ से भाग देने पर शेष १ में इन्द्र, २ में विष्णु, ३ में यम, ४ में वायु, ५ में कुबेर, ६ में शिव, ७ में ब्रह्मा, ८ शेष में गणेश मण्डलेश होते हैं।

दूसरा प्रकार— लम्बाई-चौड़ाई के योग में ९ से भाग देने पर शेष १ में दाता, २ में भूपति, ३ में नपुंसक, ४ में चोर, ५ में विलक्षण, ६ में भोगी, ७ में धनाढ्य, ८ में दरिद्र एवं ९ में कुबेर मण्डलेश होता है।

चन्द्र-सूर्य-वेध-विचार—चन्द्रवेधी ग्रह होना चाहिए और सूर्यवेधी जलाशय होना चाहिए। हृद या वाटिका सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों शुभ मानी जाती हैं। पूर्व-पश्चिम लम्बा मकान सूर्यवेधी होता है और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है। मकान चन्द्रवेधी शुभ होता है। चन्द्रवेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि होती है। सूर्यवेधी मकान धन, कुल का नाशक होता है। बाग-बगीचा सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों प्रशस्त माना गया है। देवालय मन्दिर के लिए सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी का विचार नहीं होता।

शिलान्यास—पहले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अन्दर पूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिए, बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिए।

राशि-द्वार का निर्णय—ब्राह्मण वर्ण (कर्क, वृश्चिक, मीन राशि वालों) को पूर्व दिशा का, क्षत्रिय वर्ण (मेष, सिंह, धनु राशि वालों) को उत्तर दिशा का, वैश्य वर्ण (वृष, कन्या, मकर राशि वालों) को दक्षिण दिशा का और शूद्र वर्ण (मिथुन, तुला, कुम्भ राशि वालों) को उत्तर दिशा का द्वार शुभ होता है।

गृह-द्वार का निर्णय—मकान के जिस भाग में द्वार करना हो, उस भाग के ९ भाग करके पाँच भाग दक्षिण और तीन भाग उत्तर में छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिए। वाम, दक्षिण का अर्थ मकान से निकलते समय का लेना चाहिए।

देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का निषेध—ब्रह्मा के मन्दिर के बगल में तथा विष्णु, सूर्य, शिव-मन्दिर के सामने, जैन मन्दिर के पीछे, देवी-मन्दिर के किसी भी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

दरवाजों (किवाड़ों) का फल—कपाट (दरवाजा) स्वयं खुलता है तो उन्माद, स्वयं बन्द हो तो कुल नाश, प्रमाण से अधिक हो तो राज-भय, प्रमाण से कम चोर-भय, कष्ट हो। द्वार के ऊपर द्वार नहीं रखना। किवाड़ पतले अशुभ, विशेष मोटे होने से क्षुधा-भय, टेढ़े होने से गृह-स्वामी को कष्ट, अन्दर की तरफ टेढ़े से स्वामी को मृत्युकारक, बाहर की तरफ टेढ़े होने से विदेश-वास, दूसरी दिशा में चोर-भय करता है।

लड़का होगा या लड़की

गर्भिणी के नाम के अक्षरों को तिगुना करें। उसमें घोड़ा के अक्षर, देश के अक्षर, वर्तमान तिथि जोड़ें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ८ का भाग दें। यदि विषम अंक बचे तो लड़का, यदि सम अंक बचे तो लड़की होगी। ऐसा जानना चाहिए।

जन्म-कुण्डली जीवित की है या मृत की

जन्म-लग्न के अंक, प्रश्न-लग्न के अंक और जन्म-लग्न से आठवें भाव के अंक, इन तीनों का जोड़ करें। जो संख्या आवे उसमें जन्म-लग्नेश को गुणा करें। गुणनफल में अष्टमेश का भाग दें। यदि सम बचे तो मृत की और विषम अंक बचे तो जीवित की जाननी चाहिए।

अथ पक्षी शकुन-विचार

प्रश्नकर्ता अपने मन में विचार करके इस चिड़िया पर जो 'श्री' लिखी हैं उनमें से किसी एक पर उंगली धरे। उसका फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चोंच दुःख पंखे मरण, कंठे मिलन समाज।
उदर सुभोजन पूंछ धन, मस्तक पावें राज॥
शुभ लक्षण पांवन परें, घर में मङ्गलचार।
प्रश्नोत्तर के समय यह, बुधजन करें विचार॥

लड़कियों की कुण्डलियों में आवश्यक विचार

योग नं० (१) अश्लेषा नक्षत्र तिथि २, शनिवार। नं. (२) तिथि ७ शतभिषा नक्षत्र, मंगलवार। (३) तिथि १२ कृत्तिका नक्षत्र, रविवार—इन योगों में पैदा हुई कन्या विषकन्या कहलाती है।

ग्रह-गति से वैधव्य (विषकन्या) योग

(१) जिस कन्या की जन्म-कुण्डली में ९ मंगल १ शनि ५ सूर्य हों।

स्त्री के बाँझ होने के योग

१—जिस स्त्री के जन्म-लग्न से आठवें सूर्य-चन्द्रमा अपनी राशि के हों।

२—जिस स्त्री की कुण्डली में १, ८, १०, ११ राशियों में चन्द्रमा शुक्र के साथ हो और पाप ग्रहों से देखा गया हो।

३—जिस स्त्री के सातवें सूर्य व राहु हों और शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो बालक पैदा होकर मर जाते हैं।

४—जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें चन्द्रमा और बुध अपनी राशि के हों तो स्त्री के एक ही प्रसव होता है।

पुरुष की मृत्यु पहले होगी या स्त्री की

पुरुष और स्त्री के नाम के अक्षर गिनकर दुगने करें और दोनों के नाम में जो मात्रा हों उसको चौगुनी करें। फिर अक्षरों की दुगनी की हुई संख्या तथा मात्राओं की चौगुनी की हुई संख्या, दोनों का जोड़ करें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ३ का भाग दें। यदि शेष ०, १ रहे तो पुरुष की, यदि शेष २ रहे तो स्त्री की मृत्यु पहले होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मृत्यु सूचक चिन्ह

पुष्पं यथापूर्वं रूपं फलस्येह भविष्यतः ।
तथालिंगमरिष्टाख्यं पूर्वं रूपमरिष्यतः ॥

नत्वरिष्टस्य जातस्य नाशोस्ति मरणादृते ।
'मरणं चापि तन्नास्ति यत्रारिष्टपुरःसरम् ॥

अर्थात् जिस तरह फल लगने वाले वृक्ष पर पहले फूल आता है, पश्चात् फल । इसी प्रकार मरण से पूर्व अरिष्टों द्वारा मरण काल, मृत्युकाल का परिचय मिलता है । शास्त्रों में वर्णित बहुशः मरण चिह्नों में से कुछ अरिष्टों का उल्लेख नीचे सप्रमाण दिया जाता है ।

(१) निजस्य प्रतिबिम्बस्य निश्चलेषूदकादिषु ।
उत्तमांगं न पश्येत् यःषण्मासेन विनश्यति ॥

अर्थात् स्थिर जल में जो व्यक्ति अपनी छाया मस्तक हीन देखे, वह छः महीने में मृत्यु को प्राप्त होगा ।

(२) करावरुद्ध श्रवणः संशृणोति न च ध्वनिम् ।
स्थूलः कृशः कृशः स्थूलस्तदामासात्प्रवर्त्तते ॥

हाथों के द्वारा दोनों कान बन्द कर लेने से बाहर का शब्द सुनाई नहीं पड़ता है, किन्तु कानों में वायु का एक प्रकार अस्पष्ट अव्यक्त शब्द सुनाई पड़ता है । यही स्वाभाविक नियम है, पर यदि यह स्वाभाविक शब्द भी जिसे न सुनाई पड़े, और यदि मोटा आदमी अकस्मात् दुबला और दुबला मोटा हो जाए तो एक महीने में वह मृत्यु को प्राप्त होगा ।

(३) विधाय कर्णनिर्घोषं न शृणोत्यात्मसम्भवम् ।
चक्षुषोर्नश्यतिज्योतिर्यस्य सोऽपि न जीवति ॥

ऊपर कहे दूसरे नियमानुसार हाथों से कानों के बंद करने पर बाहर का कोई शब्द स्पष्ट नहीं सुन पड़ता पर अपने मुख से कहा हुआ शब्द स्पष्ट सुनाई देता है । यदि किसी को कान बंद करने पर अपने मुख में कहा हुआ शब्द भी सुनाई नहीं देता हो और नेत्रों की ज्योति: अकस्मात् नष्ट हो जाए तो वह मनुष्य भी न बचेगा ।

(४) नासिका वक्रतामेति कर्णोयातोर्नतिपुनः ।
नेत्रं वाष्पं क्षरेद्र यस्य सगच्छेद् यममन्दिरम् ॥

नाक टेढ़ी हो गई हो, कान नीचे की ओर ढल पड़े हों और नेत्रों से जल बहता हो, चाहे एक से और चाहे दोनों से, ऐसा मनुष्य शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होगा ।

(५) सुस्नातस्यापियस्याशु हृदयं परिशुष्यति ।
चरणौच करौवापि त्रिमासं तस्य जीवितम् ॥

स्नान करते ही जिसकी छाती का जल और हाथ पैर तुरन्त सूख जायें वह तीन महीने जीवित रहेगा ।

(६) भाद्रेऽन्हिवासरे सूर्यच्छाया सूर्यस्यनिर्मलाम् ।
निश्चलाप्सुन पश्येत् यःषण्मासेन समृत्युभाक् ॥

भाद्रपद महीने के रविवार को दिन में जो मनुष्य जल में सूर्य की छाया न देख पावे, तो छः महीने में उसकी मृत्यु हो ।

(७) घृतेतैले तथादर्शे तोयेच तनुमात्मनः ।
अशिरस्कञ्चयः पश्येद् मासादूर्ध्वं न जीवति ॥

जिस मनुष्य को तये घी, तेल, दर्पण और जल में अपनी देह मस्तक रहित दिखाई पड़े, वह एक महीने से अधिक जीवित नहीं रहेगा ।

(८) यस्य वीर्यं मलं मूत्रं क्षुत्त नूनंनिरन्तरं ।
इहैकदा भवेद्वापि अब्दं तस्यायुरुच्यते ॥

जिस मनुष्य को वीर्य, मल, मूत्र और क्षुत एक साथ निकले तो समझ लो उसकी आयु एक वर्ष शेष है ।

(९) मूत्रं पुरीषं वायुश्च समकालं प्रजायते ।
तदासौचलितो ज्ञेयो दशाहे म्रियते ध्रुवम् ॥

जिस मनुष्य का मूत्र, मल, वायु (पाद) एक साथ चलते हों तो उसकी दस दिन में निश्चय ही मृत्यु होगी ।

(१०) मैथुने सप्रवृत्ते यो मध्येवान्ते क्षछिक्कति ।
निश्चितं पञ्चमेमासि धर्मराजातिथिर्भवेत् ॥

जिस मनुष्य को स्त्री समर्ग में प्रवृत्त होकर, बीच में और अंत में छींक आये तो वह पांचवें महीने अवश्य धर्मराज का अतिथि होगा, अर्थात् उसकी पांचवें महीने मृत्यु होना निश्चित समझना चाहिए ।

(११) यस्यावेस्नातगात्रस्य कपोलमाशु शुष्यति ।
पीतञ्चापि जलं पश्येत् दशाहं तस्य जीवनम् ॥

जिस मनुष्य के स्नान करते ही गाल तुरन्त सूख जायें और जो जल को पीले रंग का देखे, वह दस दिन मात्र ही जीवित रहेगा ।

(१२) यस्य वस्त्रेशवगन्धो गात्रे दसनयोरपि ।
तस्यायु मासमेकं स्यात् योगिनामपिनोऽधिकम् ॥

जिस मनुष्य के मुख, शरीर और वस्त्रो में मुरदे की सी गंध आती हो, वह चाहे योगी भी क्यों न हो, तो भी वह एक महीने भर ही जी सकेगा, अर्थात् एक महीने पश्चात् मर जाएगा ।

(१३) यस्यवं भुक्तमात्रस्य हृदयं बाध्यते क्षुधा ।
जायते दन्तहर्षश्च सगतायुर्न संशय ॥

जिस मनुष्य को भरपेट खा लेने के बाद भी भूख मालूम पड़े और दन्त हर्ष उत्पन्न हो तो उसकी आयु समाप्त हुई समझो ।

(१४) अहोरात्रं यदैकत्र वहते यस्य मारुतः ।
तदातस्य भवेदायुः सम्पूर्णं वत्सरत्रयं ॥

जिसके दोनों नासिका छिद्रों से एक साथ एक रात-दिन श्वास वायु प्रवाहित हो उसकी आयु तीन वर्ष में पूर्ण होगी ।

(१५) अहोरात्रं द्वयं यस्य पिङ्गलायां सदागतिः ।
तस्य वर्षद्वयं ज्ञेयं जीवितं तत्ववेदिभिः ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जिस मनुष्य के दक्षिण नासिका छिद्र से ही दो रात-दिन लगातार श्वास चलता रहे, उसको दो वर्ष तक जीवित समझो अर्थात् दो वर्ष के बाद मर जाएगा।

(१६) त्रिरात्रं बहते यस्य वायु रेकपुरे स्थितः।
सम्वत्सरं यावदायुः स्यात् वदन्ति मनीषिणः ॥

यदि किसी मनुष्य के किसी* एक नासिका छिद्र से तीन दिन-रात श्वास वायु बहती रहे तो उसकी आयु एक वर्ष मनीषियों ने बताई है।

(१७) एकादिषोडशाहेषु यदि भानुर्निरन्तरम्।
वहेत् यस्य च व मृत्युः शेषाहेन च मासिकैः ॥

यदि किसी मनुष्य का एकादि क्रम से १६ दिन दक्षिण नासिका छिद्र से श्वास वायु प्रवाहित हो तो उसकी मृत्यु एक महीने में होगी।

(१८) सम्पूर्णं बहते सूर्यश्चन्द्रमानैव दृश्यते।
पक्षेण जायते मृत्युः कालज्ञानेन भाषितम् ॥

यदि किसी के दक्षिण नासिका छिद्र से पूरे दिन श्वास वायु बहती रहे और एक बार भी वाम नासिका से न बहे तो पक्ष या १५ दिन में उसकी मृत्यु होगी, ऐसा कालज्ञानी महात्मा कहते है।

(१९) सम्पूर्णं बहते चन्द्रः सूर्यो नैव च दृश्यते।
मासेन दृश्यते मृत्युः कालज्ञानेन भाषितम् ॥

यदि किसी मनुष्य के वाम नासिका छिद्र से पूरे दिन श्वास वायु बहता रहे और एक बार भी दक्षिण नासिका से बहता न दीखे तो एक महीने में उसकी मृत्यु होगी, ऐसा कालज्ञानी महात्मा कहते है।

(२०) रात्रौचन्द्रोदिवासूर्यो वहेत् यस्यनिरन्तरम्।
विजानीयात्तस्य मृत्युः षण्मासाभ्यन्तरेध्रुवम् ॥

जिस मनुष्य के वाम नासिका से रात्रि मे और दक्षिण नासिका से दिन मे बराबर श्वास चलता रहे, उसकी मृत्यु छः महीने के भीतर निश्चय जानो।

(२१) अरुन्धतीं ध्रुवञ्चैव विष्णोस्त्रीणिपदानि च।
आयुर्हीना न पश्यन्ति चतुर्थं मातृमण्डलम् ॥

जिस मनुष्य की आयु हीन अर्थात् समाप्त हो जाती है, उसे अरुन्धती, ध्रुव तारा, विष्णु के तीन पद और चौथा मातृमण्डल दिखाई नही पड़ते।

सूचना—यह तारागण आकाश मे सदैव उदय होते हैं, पुराने आदमी बहुधा इन्हें जानते हैं, जो न जानते हों वे किसी से पूछकर जान सकते है।

*सब लोग यही जानते है कि दोनों नासिका छिद्रों मे एक साथ ही समान श्वास वायु चला करती है, पर यह लोगों का भ्रम है। एक-एक घण्टे एक नासिका छिद्र से प्रबल रूप से और दूसरे एक छिद्र से बहुत ही निर्बल अथवा नही के समान श्वास वायु बहता है। पर दोनों से समान वायु कभी-कभी ही बहा करती है, जो भी परमायुनाशक और विपद् आदि का पूर्व रूप होता है। इस विषय को विस्तार रूप से जिन्हें देखना हो वह हमारी "मनोकामना सिद्धि" और "अनौषधि चिकित्सा" नामक ग्रन्थ मे देखें।

दूसरी बात इन सबको मनुष्य देह मे भी स्थित बताया है यथाहि

(२२) अरुन्धती भवेज्जिह्वा ध्रुवो नासाग्रमुच्यते।
भ्रुवोर्मध्ये विष्णु पदं तारके मातृमण्डलम् ॥

अर्थात् जीभ को अरुन्धती, नासिका का अग्रभाग ध्रुव, दोनो भौंहो के बीच का भाग विष्णु पद, और आंखों का तारा मातृमण्डल कहलाते है।

जो मनुष्य इन सबको अपनी आंखों से बिना दर्पण आदि के नहीं देख सकता उसकी मृत्यु समीप अर्थात् आयु समाप्त समझनी चाहिए।

आवश्यक वक्तव्य

ऊपर कहे हुए पदार्थों मे से आंख का तारा बिना बताये अपने नेत्रों से नही देखा जा सकता। अतः इसके लिये महापुरुषो ने एक सहज उपाय बताया है और वह यह कि नेत्र बन्द करके नेत्र के कोने व कोरो को किसी भी अगुली से किञ्चत् दबाओ, तो जिस कोने को दबाओगे उसके सम्मुख विपरीत दिशा मे आंखो के मध्यवर्ती तारा की आकृति एक गोल ज्योति मण्डल दीख पड़ेगा। इसे मातृ-मण्डल कहते है, यद्यपि यह सदैव ऐसा करने पर दिखाई दिया करता है, पर जिसकी मृत्यु सन्निकट होती है उसे नही दिखाई देता।

(२३) दन्ताश्चवृषणौ यस्य न किञ्चिदपि पीड्यते।
तृतीये मासिचावश्यं कालपाशो भवेन्नर ॥

जिस मनुष्य के दांत और अण्डकोश को जोर से दबाने पर कुछ भी वेदना नही होती वह ३ महीने में अवश्य मृत्यु को प्राप्त होगा।

(२४) मध्यमांगुलिनां त्रितयं वक्रंयातिरुजम्बिना।
षण्मासैतस्यमृत्युः स्याद्यस्यकण्ठोऽपिशुष्यति ॥

जिस मनुष्य के हाथ की बीच की तीन अंगुलिया तर्जनी, मध्यमा और अनामिका बिना किसी कारण के टेढी हो जाये, और बिना किसी रोग के जिसका गला सूखता हो तो उसकी छः महीने मे निश्चय मृत्यु होगी।

(२५) वाच्यं पुरीष मूत्राणिपश्येद्रूप्यसुवर्णवत्।
प्रत्यक्षमथवा स्वप्ने दशमासोऽत्र जीवति ॥

जो मनुष्य जाग्रत वा निद्रितावस्था वा स्वप्न मे मलमूत्र, सुवर्ण तथा चांदी के समान देखे, वह १० महीने मे मरेगा।

(२६) मर्त्यैर्लक्षितलक्षणैर्हिसलिले भानुर्यदादृश्यते।
क्षीणोदक्षिणपश्चिमोत्तरपुर षट्त्रिद्विमासैकतः ॥
मध्यं छिद्रमिदंभवेत् दशदिनं धूमाकुलंतद्दिने।
सर्वज्ञैरपि भाषितं मुनिवरैरायुः प्रमाणं स्फुटम् ॥

सर्वज्ञ मुनिवर कहते है कि जिस मनुष्य को जल मे सूर्य की छाया दक्षिण की ओर कटी दीखे तो वह छः महीने, पश्चिम की ओर कटी दीखे तो तीन महीने और उत्तर की ओर कटी दीखे तो दो महीने मे और पूर्व की ओर कटी दीखे तो एक महीने मे, छाया के बीच मे छिद्र दीखे तो दस दिन मे और छाया को धुए के रंग देखे तो उसी दिन मृत्यु होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(२७) जो मनुष्य दीपक बुझने पर उसकी गंध नहीं अनुभव करता और रात्रि में अग्नि देखकर भय मानता है वह छः महीने से अधिक जीवित नहीं रह सकता।

(२८) जिसके शरीर से अग्नि की गन्ध आती हो वह एक महीने के बाद मर जायेगा।

(२९) दक्षिण की मुट्ठी बन्द करके नाक की सीध में और भौंहो के बीच में नेत्र के सम्मुख रखकर हाथ की कलाई को देखा जाता है तो वह बहुत ही पतली दिखाई पड़ती है यही स्वाभाविक नियम है। परन्तु मृत्यु के छः महीने पहले से कलाई पतली मिली हुई नहीं दिखाई देती किन्तु अलग सी दिखाई देने लगती है।

(३०) जिस मनुष्य के स्तन का चर्म असाद हो वह पांच महीने में यमालय में पहुंच जायेगा अर्थात् पांच महीने में मर जायगा।

(३१) जिस मनुष्य की छाती स्नान करते ही तुरन्त सूख जाय उसकी मृत्यु छः महीने में अवश्य होगी।

स्वप्न फल विचार

मृत्यु से पूर्व जिस प्रकार शारीरिक विकार के पीछे कहे हुए लक्षण प्रकट होते हैं, उसी प्रकार अरिष्टजनक स्वप्न भी दिखाई पड़ते हैं। स्वप्नों का वर्णन वेद तक में पाया जाता है। मनुष्य जागृत अवस्था में जिन-जिन विषयों का चिन्तन करता और जिन वस्तुओं को इस जन्म में देखता व सुनता है अथवा पूर्व किसी जन्म में देखा वा सुना वा चिन्तन किया हो उन्हीं विषयों के सम्बन्धी अविकल अथवा भिन्न-भिन्न संयोग जनित अनेक प्रकार स्वप्न में देखता है अतः कैसा भी असम्बन्ध असामञ्जस्य भिन्न-भिन्न स्थान, भिन्न-भिन्न लोक आदि असम्भव से असम्भव स्वप्न भी क्यों न देखे जायें सब ठीक है। यद्यपि सम्पूर्ण स्वप्न सफल नहीं होते हैं। अतः यह भलीभांति स्मरण रखने योग्य है कि कौन-कौन से स्वप्न ठीक नहीं होते और कौन-कौन से ठीक होते हैं। इनका संक्षिप्त वर्णन शास्त्रों से यहां उद्धृत कर देते हैं।

चिन्ताव्याधिसमायुक्तोनरः स्वप्नञ्चपश्यति।
तत्सर्वं निष्फलं तात प्रयात्यवे न संशयः॥
जड़ोमूत्र पुरीषण पीड़ितश्च भयाकुलः।
दिगम्बरो मुक्तकेशो न लमते स्वप्नजं फलं॥

अर्थात् चिन्ता और व्याधि (रोग) समायुत मनुष्य जो स्वप्न देखता है वह सब हे तात! निष्फल हैं इसमें संशय न करो।

मूत्र, पुरीष दुःखित, भयाकुल चित्त, बाल खुले और सोते में पहने हुए वस्त्र खुल जाने से अथवा नंगे होकर सोने वाले को जो स्वप्न दिखाई पड़ते हैं उनका फल कुछ नहीं होता।

दृष्ट्वास्वप्नञ्च निद्रा:सुर्यदि निद्रां प्रयान्तिच।
..................नलमेत स्वप्नजं फलं॥
उक्त्वाकाश्यपगोत्र.य विपत्तिं लमते ध्रुवं।
प्रकाशयेन्न सुस्वप्नः पण्डिते क.श्यपान्वये॥

अर्थात् स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाने से तथा काश्यपगोत्रज मनुष्य से स्वप्न का वर्णन कर देने से फिर उसका फल नहीं मिलता।

धातु विकार की दशा में कभी भी देखा स्वप्न दिखाई पड़े तो वह ठीक नहीं होता।

मृत्यु सूचक स्वप्न

१—जो मनुष्य लाल, श्वेत रस अथवा विष्ठा मूत्र की वमन होते देखे, उसकी केवल १० महीने आयु समझनी चाहिए।

२—जो कोई आदमी स्त्री को काले अथवा लाल वस्त्र पहने हुए हंसते, अपनी दाहिनी ओर जाते हुए देखे तो उसकी मृत्यु निकट समझनी चाहिए।

३—जो आदमी भयानक काले रंग के आदमी को हथियार लिये वा पत्थर से मारने को देखे तो उसकी उसी दिन मृत्यु होगी।

४—जो आदमी नंग धड़ंग फकीर को नाचते, हंसते और क्रूर दृष्टि से अपनी ओर देखते देखे तो समझलो कि शीघ्र ही मृत्यु होगी।

५—काले रंग का काले वस्त्र पहने और लोहे का डंडा हाथ में लिये सम्मुख खड़ा दीखे तो ३ महीने में मृत्यु होगी।

६—जो मनुष्य काले रंग की स्त्री दोनों बाहुओं से पकड़े वह छः महीने पश्चात् मृत्यु को प्राप्त होगा।

७—अपने शरीर को गन्ध पुष्प आदि से भूषित देखे तो समझ लो ८ महीने से अधिक नहीं बचेगा।

८—राख के ढेर अथवा दीपक के ऊपर अपने को खड़े हुये देख पड़े तो ८ महीने मात्र जीवित रहना चाहिए।

९—अपने मस्तक वा शरीर पर सूखी लकड़ी अथवा तृण रखा हुआ देखने से ६ महीने जीवित रहना चाहिए।

१०—शृगाल, कुक्कुर, शूकर, शकुनि, राक्षस, असुर, पिशाच, भूत, प्रेत, पतङ्ग, कुरङ्ग अथवा श्येन पक्षी में से किसी का दर्शन हो अथवा इन्हें खाते हुए देखे तो एक वर्ष में निश्चय यमलोक को जाना होगा।

११—अपने मुख से सब दांत गिर पड़े हुए देख पड़ें तो शीघ्र मृत्यु होगी।

१२—बन्दर की पीठ पर चढ़कर पूर्व की ओर जाता हुआ दिखाई पड़े तो पांच दिन में मरण होगा।

१३—गधा व भैंस की पीठ पर चढ़ दक्षिण की ओर जाता देख पड़े तो उसकी मृत्यु सन्निकट समझो।

विशेष ध्यान देने योग्य

१४—उक्त मृत्यु सूचक स्वप्नों में सब ही एक आमी को दिखाई नहीं पड़ते हैं। इनमें से कोई-कोई स्वप्न किसी-किसी को एक अथवा अधिक दिखाई पड़ते हैं। पर २१ और २७ नम्बर पर लिखित चिन्ह प्रत्येक को देख पड़ते हैं। यह जब देख पड़ें तब से नित्य प्रायः तारामण्डल को देखते रहना चाहिए। जिस दिन तारामण्डल न दिखाई दे उस दिन से दशवें दिन मृत्यु होना निश्चय जान लें। और संसार से मोह छोड़ पुण्य काम कर परमेश्वर का स्मरण करते हुए मृत्यु के लिये प्रस्तुत रहना चाहिए। और "अन्तेयादशीमतिर्गतिर्भवति तादृशी" के लिये मन को स्थिर करना चाहिए। यदि स्थिरता न हो सके क्योंकि "मनश्चञ्चलमस्थिरम्" तो उत्तम भावना रखनी चाहिए कि जिससे आगामी जन्म उत्तम कुल में प्राप्त हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मंगलीदोष

सभी प्रकार के ज्ञान एवं भारतीय शास्त्रों की उत्पत्ति भारतीय दर्शन से मानी गई है। भारतीय दर्शन जीवन और जगत् के रहस्यों का अनुसंधान और सन्तोष जनक सिद्धान्तों के आधार पर उनकी व्याख्या करता आया है। ज्ञान, दर्शन का स्वरूप और उस की सीमा है। मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु प्राणी है और अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण किंवा अदम्य जिज्ञासा की प्रेरणा से, वह सदैव दार्शनिक समस्याओं का समाधान खोजने में लगा रहता है। भारतीय दर्शन आत्मा को अजर-अमर मानता है और कर्मानुसार (कर्मों के अनादि प्रवाह-प्रारब्ध के कारण) देह परिवर्तन को इसका स्वाभाविक गुण मानता है। प्राणी मात्र की देह में रहने वाला यह अविनाशी आत्मतत्व, स्वतंत्र, रूपहीन, नित्य एवं चैतन्य है। यह कर्म बन्धन के ही कारण विनाशशील और परतन्त्र दीख पड़ता है। संसार के इस निगूढ़ तत्व को समझने के लिए ज्योतिष एक दिव्य चक्षु है। इसी लिए इसे वेदांग में गिना जाता है। वेद के अंगों में यह छठा अंग है। ज्योतिष के तेजस् को देख कर ही इसे चाक्षुष प्रत्यक्ष कहा जाता है। ज्योतिष के तीन स्कन्ध हैं जिन में फलित भी एक है। फलित स्कन्ध से ही समान्य व्यक्ति अधिक प्रभावित होता है। फलित के कारण ही वह ज्योतिषी को सम्मान की दृष्टि से देखता है। वह नहीं जानता कि उस की जन्म पत्रिका में कहां गणितीय त्रुटि है, क्योंकि यह विषय उस की पकड़ से बाहर है। वह तो फलित के प्रति आसक्ति रखता है और उसी से प्रभावित होता है। लोक श्रद्धा ही इस विषय को जीवित रखे हुए है। आज की सब से बड़ी विडम्बना यह है कि ज्योतिषी को जीविका के लिए संघर्ष भी करना है और लोक श्रद्धा को अनुकण्ठ बनाये रखने के लिए अनुशीलन भी।

ज्योतिषशास्त्र और ज्योतिषी स्वतन्त्र भारत में इतनी दयनीय अवस्था में आ पहुंचे हैं कि सभी कुछ उन्हें स्वयं करना है और समाज में इस विद्या के प्रति आस्था को सजीव बनाये रखना है। सामन्त तो रहे नहीं, श्रेष्ठी भी नहीं रहे, धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र में यह विज्ञान प्रचार और प्रोपेगंडा में ही सिमट कर रह गया। सभी लोग जानते हैं कि ज्योतिषी होना तो दूर रहा नक्षत्रों की श्रेणी में भी जो नहीं आते वे अपने आप को विश्व विख्यात भविष्यवक्ता कहते नहीं अघाते। ऐसे लोगों द्वारा भविष्यवाणी करने से जो स्थिति बनती है वह ज्योतिष पर आक्षेप लगाती है। ऐसे व्यक्ति अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए अनेक नाटक रचते हैं। उनकी नाट्य कला से उन को भले ही लाभ हो लेकिन इस से ज्योतिष शास्त्र की अपकीर्ति होती है, वह अविश्वसनीय बनता है और लोगों को उसे अन्धविश्वास (सुपरस्टीशन) कहने का अवसर मिलता है।

ऐसे ही मंगली दोष के विषय में अनेक भ्रान्तियां समाज में प्रचलित हैं। प्राचीन काल से ही भारत में कुण्डली मिलान की प्रथा है। विवाह से पूर्व वर तथा कन्या से ग्रहों का मेलापक पर निर्णय लिया जाता है कि आगामी जीवन दोनों का सुखमय रहेगा या दुखमय। विवाह मेलापक के लिए यूं तो अनेकानेक बातों को ध्यान में रखा जाता है लेकिन जितना महत्व मंगली दोष को दिया जाता है इतना अन्य किसी दोष को नहीं।

मंगली दोष का निर्णय करने के लिए नर-कन्या के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम् एवं द्वादश भावों को लिया जाता है, दक्षिण भारत में द्वितीय भाव को और मिला लेते हैं। इन भावों में कोई भी क्रूर किंवा पापी ग्रह (मंगल, शनि, सूर्य, राहु, केतु) स्थित हो तो मंगली दोष मान लिया जाता है। चूंकि मंगल वैवाहिक सुख को बिगाड़ने में अपना विशिष्ट स्थान रखता है इसलिए इसी ग्रह के नाम पर इस दोष को मंगली दोष कहा जाता है। प्राय: सर्वत्र ही यह मत प्रचलित है। यहां हम मंगली दोष कब कितना हो सकता है इस पर विचार करते हैं। ग्रहों की ९ अवस्थाएं मानी जाती हैं, उच्च राशि, मूल त्रिकोण, स्वराशि, अधिमित्र राशि, मित्र राशि, सम राशि, शत्रु राशि, अधिशत्रु राशि और नीच राशि। अब शंका उठती है कि इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह क्या समान फल कर सकता है इसका उत्तर है नहीं। दूसरी बात क्या सभी ज्योतिर्विद इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह को समझकर मंगली दोष का निर्णय करते हैं इसका उत्तर भी नहीं ही है, क्योंकि उपरोक्त तथ्य को समझकर मंगली दोष का निर्णय किया जाता तो मंगली दोष को इतना भयंकर नहीं समझा जाता जितना कि आज माना जा रहा है। मंगली दोष का भयावह रूप दर्शाने के लिए किसने कब यह श्लोक रच डाला ज्ञात नहीं है-

लग्नेव्यये च पाताले, जामित्रे चाऽष्टमे कुजे। कन्याभर्तु-विनाशाय, भर्तु कन्या विनाशक:॥

अर्थात् कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२वें स्थान में मंगल हो तो क्या कन्या भर्ता का और भर्ता कन्या का नाश करते हैं। अगर हम इसकी शब्दावली पर ध्यान दें तो यह श्लोक किसी ऋषि प्रणीत प्रतीत नहीं होता। विवाह से पूर्व कन्या संज्ञा ठीक है लेकिन भर्ता शब्द यहां अनुचित है क्योंकि विवाह से पूर्व लड़के की संज्ञा वर है भर्ता तो विवाह पश्चात् बनेगा। दूसरे जब भर्ता हो गया तो भार्या आना चाहिए कन्या कहां से आया। अत: यह स्वत: प्रमाणित है कि यह श्लोक क्षेपक है आप्त वाक्य नहीं। कितने खेद का विषय है कि ऐसे अनार्ष श्लोकों को मान्यता देकर ज्योतिर्विद जहां अच्छे से अच्छे सम्बन्धों को अनादृत कर देते हैं वहीं ज्योतिष शास्त्र की प्रतिष्ठा को भी आघात पहुंचाते हैं। ज्योतिष जगत् में फैली इस विसंगतियों के कारण जन-साधारण की आस्था इस शास्त्र के प्रति लुप्त होती है और कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों की नकली कुण्डलियां बनवाकर विवाह सम्बन्ध कर देते हैं।

प्रथम भाव तन है, चतुर्थ सुख स्थान, सप्तम भाव कामोपयोग का बतलाने वाला है, अष्टम भाव जीवन साथी कुटुम्ब को बतलाता है और द्वादश भाव शय्या सुख का निर्देशक स्थान है। यहां स्थित होकर मंगल उस भाव को दूषित करता ही है साथ ही दृष्टि दोष से दूसरे स्थानों को भी बिगाड़ता है, जैसे लग्न में स्थित मंगल की चतुर्थ, सप्तम और अष्टम स्थान पर ही दृष्टि रखता है, द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाना है और उसका पाप प्रभाव में रहना जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना इस सुख में न्यूनता लाता है। इसलिए मंगलीक दोष का विचार बड़ी सूक्ष्मता से करना चाहिए। यदि हम सुदर्शन पद्धति का आश्रय लें तो अधिक सत्यता के निकट पहुंच सकते हैं। जैसे लग्न से मंगली दोष मानते हैं वैसे ही चन्द्र से भी देखें तथा शुक्र से भी। शुक्र चूंकि भोग कारक ग्रह है और इससे बना मंगली दोष अधिक बाधाकारक देखा गया है। कुछ लोगों की मान्यता है कि वर और कन्या दोनों मंगली हों तो वैवाहिक सुख नहीं बिगड़ता लेकिन मैंने कई ऐसे जोड़े देखें हैं जिनका दाम्पत्य सुख नगण्य सा ही है। कुछ लोग मानते हैं कि मंगल-शनि आदि ग्रह यदि कारक हों तो बुरा फल नहीं करते ऐसा भी अकाट्य सत्य नहीं है। वृष लग्न की कुण्डली में शनि सर्वाधिक कारक ग्रह है लेकिन दूसरे, आठवें और दसवें स्थान का शनि विवाह विच्छेद कराने में सक्षम होता है। अब तक हमने मंगली योग पर विचार किया अब उसके परिहार पर विचार करते हैं। अर्थात् मंगली दोष किन स्थितियों में अपना फल नहीं दे पाता।

१. सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो, मित्र राशिस्थ होकर स्वस्थान को देखता हो।
२. सप्तमेश पर बृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो तो मंगली दोष समाप्त हो जाता है।
३. सप्तम भाव को बली शुक्र या बृहस्पति देखते हों तो मंगली दोष का प्रभाव नगण्य सा ही रहता है।
४. नीचस्थ या त्रिकस्थ होकर भी सप्तमेश सप्तम भाव को देखें तो मंगली दोष क्षीण हो जाता है।

बेडा जातक में एक श्लोक आता है:

त्यक्तार्के विधवोऽत्र पापेक्ष्यार्को चिरा प्रिया। सौम्यैर्धन्या प्रियाऽस्तस्थै: क्रूरै: रण्डा च मिश्रितै:॥

अर्थात् स्त्री की कुण्डली में लग्न से सप्तम सूर्य हो तो पति द्वारा वह स्त्री त्याग दी जाती है या दाम्पत्य सुख से वंचित कर दी जाती है। मंगल हो तो विधवा होती है। शनि हो तो देर से विवाह हो तथा लम्बे समय बाद पति की प्रिया बने। शुभ ग्रह हो तो उत्तम भाग्य वाली, पापग्रह हो तो विधवा, पाप और शुभ दोनों हो तो मिश्रित फल मिलता है। कुण्डली के मात्र सप्तम स्थान में पापग्रह देखकर विधवा कह देना युक्ति-युक्त नहीं है। कुण्डली का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात् ही कोई निर्णय लेना चाहिए क्योंकि इस निर्णय पर ही दो प्राणियों के वैवाहिक सुख बनाना और बिगड़ना निर्भर करता है। अनुभव में आया है कि सप्तम और अष्टम स्थान का पापग्रह जितना पीड़ा कारक है इतना अन्य स्थान का नहीं। मैं स्वयं मंगली हूं मेरी पत्नी मंगली नहीं है इतने पर भी पिछले ३० वर्षों से हम सानन्द साथ रह रहे हैं। इससे मेरा यह आशय बिलकुल नहीं है कि कुण्डली में मंगली दोष को अनदेखा कर दिया जाये बल्कि इतना ही है कि जहां मंगली दोष देखें वहां उसके परिहार और अन्य शुभ योगों को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए। मंगल से अमंगल की कल्पना से समाज में जो भयावह प्रभाव उत्पन्न हो गया है उसी भय को समाप्त करने के लिए लघु लेख की रचना की गई है। आशा है जन-साधारण इससे लाभान्वित होंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

आईये जन्मपत्रिका बनायें

इष्टकाल-लग्न-समय एक अखंड एवं अविभाजित आयाम है, किन्तु हमने अपनी सुविधा के लिए तथा प्रकृति की स्थूल गति और परिमाणों को जानने के लिए उसे विभाजित कर लिया है। उन विभाजित खंडों का रात-दिन घण्टा- मिनट आदि नामकरण कर लिया है। दिन-रात के चौबीस भाग करके उन्हें घण्टा कहने लगे हैं और उन घण्टों की गिनती घड़ी द्वारा करने लगे हैं। प्रकृति के पास वैसी घड़ी नहीं है। वह समय नहीं देखती, बल्कि उन्मुक्त भाव से अपनी लीला में लीन है। हम यहां उस लोक की बात नहीं कर रहे, जहां समय का कोई माप नहीं है। हम यहां धरती की बात करेंगे, जहां समय को वर्ष- मास- सप्ताह- दिन- रात, घण्टा- मिनट एवं सैकिंडों में नापा जाता है। समय बलवान है, अजर है, अमर है, वह किसी के लिए रुकता नहीं है, निर्बाध गति से चलता ही रहता है। समय का व्यक्ति विशेष पर क्या प्रभाव पड़ेगा इस पर हम आगे विचार करेंगे जो कि ग्रहों द्वारा व्यक्ति विशेष के बारे में विशुद्ध जानकारी देता है।

जिस समय बालक जन्म लेता है तो हर व्यक्ति उसका जन्म समय घड़ी देखकर नोट कर लेता है। घड़ी के समय को स्टैंडर्ड टाइम कहते हैं। हमने अपनी सुविधा के लिए सारे देश के लिए एक समय निश्चित कर लिया है। असम में जब घड़ी में पांच बजते हैं तो सारे भारत की घड़ियों में भी पांच बजते हैं। भारत के पूर्वी भाग के सूर्योदय एवं पश्चिमी भाग के सूर्योदय में लगभग पौने दो घंटे का अंतर रहता है। घड़ियों में यदि यही अंतर रखा जाये तो बड़ी विसंगति प्रतीत होगी। प्रकृति सूर्य की घड़ी को ठीक मानती है। ग्रह भी सूर्य को केन्द्र मानकर चलते हैं, इसलिए जन्म लेने वाले बालक का जन्मपत्र बनाने के लिए स्थानीय सूर्योदय काल से ही बच्चे के जन्म समय का निर्धारण किया जाता है। सारे देश में सूर्योदय का समय भिन्न भिन्न रहने से भिन्न- भिन्न स्थानों में जन्मे बालकों के समय में अंतर रहना स्वाभाविक है। मान लें कि असम में एक बालक का जन्म पांच बजे होता है और दूसरा बालक भी पांच बजे दिल्ली में जन्म लेता है तो स्टैंडर्ड समय तो एक ही रहेगा, लेकिन सूर्योदय का समय भिन्न-भिन्न होने से इष्टकाल भिन्न-भिन्न ही होगा। हमने अपनी सुविधा के लिए सारी पृथ्वी के पिंड को पूर्व से पश्चिम तक एक रेखा कल्पित करके दो भागों में विभाजित कर लिया है। एक भाग को हम उत्तरी गोलार्ध एवं दूसरे भाग को दक्षिणी गोलार्ध कहते हैं। इसी प्रकार हमने सारे भूमंडल को पूर्व से पश्चिम एवं उत्तर से दक्षिण तक रेखायें कल्पित करके छोटे- छोटे भागों में बांट लिया है। जो रेखायें पूर्व से पश्चिम को मानी जाती हैं उन्हें अक्षांश कहते हैं तथा जो रेखायें उत्तर से दक्षिण को मानी जाती हैं, उन्हें देशान्तर कहते हैं। इन रेखाओं की सहायता से हम किसी भी प्रदेश की जलवायु का ज्ञान आसानी से कर सकते हैं। अक्षांश रेखाओं से हम किसी भी देश और स्थान की स्थिति का ज्ञान प्राप्त करते हैं। पृथ्वी के गोलक को हमने १८० अक्षांश मान लिया है। दूसरे शब्दों में मध्य रेखा के ऊपर ९० अक्षांश और नीचे ९० अक्षांश मान लिये हैं। यह रेखायें वास्तव में हमें किसी देश की कोणात्मक दूरी बताती हैं। देशान्तर रेखायें उत्तर से दक्षिण को चलती हैं और इन पर पड़ने वाले स्थानों की भौगोलिक स्थिति में काफी अन्तर रहता है, जबकि एक ही अक्षांश अर्थात् पूर्व से पश्चिम की ओर जाने वाली रेखा पर पड़ने वाले स्थानों की जलवायु में कोई अन्तर नहीं रहता।

एक वृत्त को हमने ३६० भागों में बांट रखा है। पृथ्वी को अपनी धुरी पर घूमकर पुनः उसी बिन्दु पर आने के लिए २४ घण्टे का समय लगता है। इस प्रकार हमने गणित करके यह जान लिया है कि एक देशान्तर रेखा की दूरी तय करने में ४ मिनट का अंतर आता है। विश्व का मानक समय ग्रीनविच नामक शहर- जो कि भूमध्य रेखा पर स्थित है- को केन्द्रक बिन्दु मानकर निर्धारित किया गया है। हमारे देश का मानक समय आई.एस.टी. वाराणसी से गुजरने वाली (८२ अक्षांश) अक्षांश रेखा के अनुसार ५ घण्टे और ३० मिनट आगे है। इसी गणित को मानकर चलें तो वाराणसी से पूर्व में पड़ने वाले प्रत्येक अक्षांश वाले शहर के स्थानीय समय में चार मिनट कम करने होंगे तथा पश्चिम में प्रत्येक अक्षांश पर पड़ने वाले शहर के स्थानीय समय में चार मिनट बढ़ाने होंगे।

मान लें कि वाराणसी में किसी दिन सूर्योदय प्रातः पांच बजकर ३० मिनट पर होता है तो पूर्व रेखांश (८२.३०) पर चार मिनट पहले अर्थात् पांच बजकर २६ मिनट पर होगा और पश्चिम में पड़ने रेखांश पर ४ मिनट बाद अर्थात् पांच बजकर ३४ मिनट पर होगा।

नक्षत्रमंडल के सारे ग्रह-पिंड प्रतिक्षण गतिशील हैं। इष्टकाल का अर्थ उन क्षणों से है जब बालक मां के गर्भ से बाहर धरती पर आ जाता है। मोटे तौर पर बनने वाली लग्न कुण्डली, जिसे टेवा या जन्माक्षर भी कहते हैं, पूरी राशि के उदयकाल से लेकर अस्तकाल तक अर्थात् दूसरी राशि के उदयकाल तक बनाई जाती है और यह स्थूल होती है, क्योंकि एक राशि में ३० अंश यानि १८०० कलायें होती हैं और आकाश में प्रतिक्षण परिवर्तन होते रहते हैं, अतः सूक्ष्म जानकारी के लिए इष्टकाल बनाकर और लग्नकाल के लघुतम समय तक पहुंचने के लिए नवांश से लेकर सप्तांश कुण्डली तक बनाई जाती है। भारत में जन्मे बालक का जन्म समय जोकि आई.एस.टी. होता है को स्थानीय समय बनाने के लिए संस्कार करने अनिवार्य होते हैं, पहला देशान्तर और दूसरा वेलान्तर। देशान्तर संस्कार इसलिए करना पड़ता है क्योंकि हर स्थान का सूर्योदय काल भिन्न होता है। उदाहरणार्थ २८ फरवरी के दिन दिल्ली में सूर्योदय ७ बजकर १७ मिनट पर था तो बंम्बई में ७ बजकर ३ मिनट, मद्रास में ६ बजकर २९ मिनट और जयपुर में ६ बजकर ५६ मिनट पर था। ऐसा सब देशान्तर रेखाओं के कारण होता है। सारणी में दिये गये अंतर को ऋण या धन करके (चिह्नानुसार) से स्थानीय समय आ जाता है। इसी प्रकार वेलान्तर संस्कार भी करना पड़ता है। चूंकि सूर्य और पृथ्वी की गति में समानता नहीं है, अतः इनकी गति में सामंजस्य बिठाने के लिए वेलान्तर संस्कार किया जाता है। ऊपर से नीचे दिनांक और बांये से दायें महीने दिये गये हैं। दिनांक के सामने और महीने के नीचे धन या ऋण के चिह्न के साथ मिनट सैकिण्ड दिये गये हैं। अभीष्ट तारीख के स्थानीय टाईम में चिह्नानुसार ऋण तथा धन करने से वेलान्तर संस्कार हो जाता है। जन्म कुण्डली बनाने के लिए हमें निम्नलिखित तथ्यों की आवश्यकता पड़ती है:

१. बच्चे का जन्म समय, २. जन्म की तारीखादि. ३. जन्म स्थान, ४. सूर्योदय-सूर्यास्त

सर्व प्रथम लग्न सारिणी की सहायता से सूर्योदय एवं सूर्यास्त की विधि पर विचार करते हैं। एक बच्चे ने १५ अप्रैल १९९५ को बम्बई में सांय ४ बजे (आई.एस.टी.) जन्म लिया, हमारे पास दिल्ली के अक्षांश पर बना आर्यभट्ट पंचांग है, इसी पञ्चांग से बम्बई में जन्मे बच्चे की जन्म पत्रिका बनाते हैं। बम्बई का अक्षांश १८/५८ रेखांश ७२/५० है यहां का सूर्योदय एवं सूर्यास्त ज्ञात करते हैं। आर्यभट्ट पंचाग में १९° अक्षांश की लग्न सारिणी दे रखी है। दैनिक ग्रह स्पष्ट दे रखे हैं। १५ अप्रैल १९९५ का प्रातः ५.३० आई.एस.टी. का सूर्य स्पष्ट है ०.०° ४६'.२१" अर्थात् मेष राशि शून्य अंश ४६ कला और २१ विकला।

सर्वप्रथम हम बम्बई का दिनमान निकालते हैं-

हमने १९° अक्षांश की सारिणी में प्रातः सूर्य स्पष्ट का फल देखा ० राशि ० अंश के नीचे संख्या मिली = ३/१०

अब प्रातः सूर्यस्पष्ट से सातवीं राशि का फल सारिणी में देखा तो संख्या मिली = ३४/१५

दूसरी संख्या में से प्रथम संख्या घटाई = ३४.१५- ३.१० = ३०.५। ३० घटी ५ पल १५ अप्रैल १९९५ का बम्बई का दिनमान आया।

सूर्यास्त = दिनमान (घड़ी- पल) / ५ = ३०.५ / ५ = ६.१ घं. मि.

सूर्योदय = १२ सूर्यास्त = ५.५९ घं.मि.

दिनमान = सूर्यास्त - सूर्योदय = १८.१ - ५.५९ = १२.२×२.५ = ३०.५

यह सूर्योदय बम्बई का स्थानीय समय एल.टी. है इसे स्थानीय मध्यम काल एल.एम.टी. बनाने के लिए इसमें देशान्तर जोड़ना या घटाना पड़ेगा और मानक समय आई.एस.टी. बनाने के लिए वेलान्तर जोड़ना या घटाना होगा।

एल.एम.टी.= एल.टी.+देशान्तर = ५.५९ + ०३८.४० = घं. ६ मि. ३७ सैं. ४०

आई.एस.टी.=एल.एम.टी.+वेलान्तर = ६.३७.४० + ०.०.० = ६.३७.४० आई.एस.टी.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

शाबर मन्त्र

शाबर मन्त्र तन्त्र की ग्राम्य शाखा के मन्त्र हैं। तन्त्र मार्ग के प्रवर्तक भगवान् शंकर माने गये हैं किन्तु शाबर मन्त्रों के प्रवर्तक भगवान् शंकर प्रत्यक्ष रूप में नहीं हैं, लेकिन जिन सिद्ध पुरुषों ने इनको आविर्भूत किया वे सभी तन्त्र मार्ग के साधक और शिवानुरागी अवश्य थे। इन मन्त्रों का भले ही कोई शास्त्रीय आधार नहीं है किन्तु लाभकारिता की दृष्टि से या उपयोगिता में ये अशास्त्रीय प्रयोग भी किसी प्रकार कम नहीं है।

कुछ विद्वानों का मत है कि साबरमती के तटीय क्षेत्रों पर बसी जाति के सिद्धों ने ये मन्त्र प्रचारित किये इसलिए इन्हें साबर या शाबर मन्त्र कहा जाता है। शाबर मंत्र की शुरूआत कब से हुई और कौन इनके प्रवर्तक थे इस बारे में कई मत हैं, किन्तु यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि इस मार्ग को प्रामाणिक स्वरूप प्रदान किया नाथ सम्प्रदाय के आदि गुरु मत्स्येन्द्र नाथ और गोरखनाथ ने। नाथ सम्प्रदाय के इन सिद्धों का यह समाज पर बहुत बड़ा अहसान है कि उन्होंने मन्त्र विज्ञान जैसे जटिल विषय के गूढ़ रहस्यों को साधारण जनों के लिए उपयोगी बना दिया सर्व सुलभ कर दिया। साबर का अर्थ होता है अपरिष्कृत, यह तो माना जा सकता है कि साबर तन्त्र से न तो हमें अच्छा ज्ञान प्राप्त होता है न ही इनके द्वारा हम मुक्ति मार्ग को पा सकते हैं, किन्तु इस विद्या में जितने भी प्रयोग हैं वे सब काम्य प्रयोग हैं। आज हमें यह विदित नहीं है कि इनमें कुछ तथ्य है या हम प्रमादवश इनको उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं, किन्तु इस विद्या में अचूक मन्त्र और तन्त्र प्रयोग हैं जो हमारे जीवन में आये विघ्न बाधाओं को समूल नष्ट करने, सामान्य आकांक्षाओं को पूर्ण करने और एक सीमा तक रोगों से छुटकारा दिलाने के लिए ग्राम्य अंचलों में आज भी प्रयोग किये जा रहे हैं। जहां इस विद्या के जानकार सर्वसाधारण को लाभ पहुंचाते हैं वहीं उनमें से कुछ अल्पज्ञानी अपने अहं और लोभ से प्रेरित होकर जनता को हानि भी पहुंचाते हैं। कई बार ऐसे लोग प्राकृत रोग-दोषों को भी झाड़ फूंक से दूर करने का ढोंग रचा कर रोगी का अहित कर डालते हैं। इसमें मुख्य कारण है ऐसे लोगों का विद्याव्यसनी न होना और निरक्षर व्यक्ति अहं और भ्रान्ति का शिकार हो जाये तो क्या आश्चर्य, दूसरे इनका जीवन जिस विश्वास और वातावरण में चलता है वहां सुविधा और सम्पर्क की बात थोड़ी रहती है। शाबर मंत्रों में आम बोल चाल की भाषा रहती है। इसमें न्यास, ध्यान, तर्पण हवन मार्जन आदि शास्त्रीय मर्यादाओं को पालने का बन्धन नहीं है। जहां शास्त्रीय मन्त्र तुरन्त कोई विलक्षण कार्य नहीं कर सकते वहां साबर मन्त्र पूर्णतया लाभप्रद रहते हैं। रोग, भूत बाधा से मुक्ति दिलाने एवं चौकी बैठाने (अभिचार कर्म) में इनसे चमत्कारिक रूप में कार्य सम्पन्न हो जाते हैं। शाबर मन्त्रों में आन, शाप, श्रद्धा और धमकी का प्रयोग ही किया जाता है, और साधक का कार्य सम्पन्न हो जाता है। साबर मंत्रों का रूप विचित्रता और विविधता लिए हुए मिलता है। शुद्ध बीज मंत्रों को लेकर ग्रामीण भाषा की शब्दावली को वाक्य रूप दे दिया जाता है जिससे इन मन्त्रों में विचित्रता का आभास होता है, एक ही मंत्र में कई शैलियों के सम्मिश्रण के कारण इनमें विविधता आ जाती है। शाबर मंत्रों में कुछ मंत्र तो ऐसे हैं जिन्हें देखकर आश्चर्य होता है क्योंकि उनका वाक्यगत कोई अर्थ नहीं निकलता जैसे सिर दर्द दूर करने का मन्त्र है:

''हजार घर घाले एक घर खाय, आगे चले तो पीछे जाय, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।''

प्रत्यक्ष में इस शब्दावली को निरर्थक कहा जा सकता है किन्तु इसका प्रभाव असाधारण रूप से पड़ता ही है। शाबर मन्त्र प्राय: संस्कृत, प्राकृत और क्षेत्रीय भाषाओं में रचे गये हैं। कुछ एक मंत्रों में कई भाषाओं का समावेश कर दिया गया है। तो कई एक मंत्रों में ठेठ क्षेत्रीय भाषा तथा ग्राम्य लहजा, शैली और कल्पना भी। अधिक मन्त्र हिन्दी भाषा में मिलते हैं चूंकि हिन्दी एक बड़े भू-भाग की बोलचाल की भाषा प्राचीन काल से रही है। एक बात और भी है कि जहां शास्त्रीय मन्त्रों में षडांग (ऋषि, देवता, बीज, शक्ति-छन्द-कीलक) की आवश्यकता रहती है वहां साबर मंत्रों में इनकी कोई आवश्यकता नहीं है मन्त्र ही अपने आप में पूर्ण है। शाबर मन्त्रों में श्रद्धा ही प्राण है, इसी के दृढ़ और विस्तार हो जाने पर शाबर मन्त्र अपना प्रभाव और फल दे देते हैं। साबर मन्त्रों में दूसरा प्रभाव सौगन्ध के रूप में देखने को मिलता है। यह सौगन्ध आन के रूप में दिलाई जाती है जिसमें गाली, शाप जैसी स्थितियों का उल्लेख होता है जैसे:-

''हे अमुक देव ! तू मेरा कार्य कर अगर मेरा कहा नहीं करेगा तो अपनी माता की शैय्या पर पग धरे, चमार के कुंड में गिर, धोबी की नांद में कंकर बनकर पड़े इत्यादि।''

इस प्रकार का व्यवहार समाज के दृष्टिकोण से उचित नहीं कहा जा सकता, किन्तु शाबर मन्त्र के साधक का व्यवहार वैसे ही क्षम्य है जैसे किसी अबोध बच्चे कि की गई अभद्रता को माता-पिता अपने वात्सल्य और बच्चे की अवस्था के कारण क्षमा कर देते हैं। बच्चा चूंकि छल-कपट से दूर होता है उसे अपनी जिद के आगे कुछ सूझता नहीं और वह कहनी-अनकहनी कह जाता है, ठीक यही हाल शाबर मन्त्र साधक का होता है, वह भी बाल सुलभ सरलता के कारण और श्रद्धा और विश्वास के बल पर मन्त्र साधना का अधिकार और सिद्धी प्राप्त कर लेता है।

शाबर मन्त्रों में सबसे बड़ी खूबी यह है कि इनमें अधिक झंझट नहीं है ये सरलता से सिद्ध हो जाते हैं। साबर मंत्रों में गुरु की भी इतनी आवश्यकता इसलिए नहीं रहती क्योंकि इस विद्या के प्रवर्तक स्वयं सिद्ध गुरु गोरखनाथ हैं। इतने पर भी किसी निष्ठावान साधक को गुरु बना लेना लाभ ही देगा क्योंकि साधना में आने वाले विघ्नों में वह बचा लेगा शाबर मन्त्रों की साधना करते समय ब्रह्मचर्य और व्रतोपवास का पालन किया जा सके तो अधिक अच्छा रहे अन्यथा साधना करते समय शुद्ध होकर बैठना चाहिये। परोपकार पुण्य है और पर-पीड़न पाप। यदि हम इस दृष्टिकोण से सोचें तो दैहिक, मानसिक रोगों को शमन करने वाले मन्त्रों को सिद्ध करना चाहिये। इससे हमें दोहरा लाभ मिलेगा, एक तो हम परोपकार का पुण्य अर्जित करेंगे दूसरे अपने पूर्वजों की धरोहर को सहेजेंगे भी।

नीचे कुछ शाबर मन्त्र दिये जा रहे हैं। मन्त्र व्यवहारिक विषय है। धैर्य और विश्वास से अपना लेने पर सिद्धि मिलेगी ही। असफलताएं और विघ्न हर क्षेत्र में आते हैं, परन्तु इनसे घबराने से काम नहीं चलेगा। साधना करते समय गलती को प्रतिपल उखाड़ कर देखने की (कि उगी या नहीं) बाल सुलभ चंचलता मत रखिये, आतुर मत होईये। एक निष्ठ होकर करते रहिये।

प्रेत बाधा निवारण के लिए:- ''ॐ नमो दीप खोहे दीप जागे पवन चले पानी चले शाकिनी चले डाकिनी चले, भूत चले, प्रेत चले, नो सौ निन्दानवे नदी चले हनुमान वीर की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।'' किसी मंगलवार से किसी हनुमान मन्दिर में तैल का दीपक जलाकर इस मन्त्र का एक लाख पच्चीस हजार जप करें तो यह सिद्ध हो जाता है। सिद्ध मन्त्र से रोगी को सामने बिठाकर मोर पंख से १०८ बार मन्त्र बोलकर झाड़ा देना चाहिये।

पीलिया निवारण के लिए:- ''ॐ नमो वीर बेताल असराल, नार करे तू देव खादी तू बादी पीलिया कूं भिदानी करे झारे पीलिया रहे न एक निशान, जो कहीं रह जाय तो हनुमन्त की आन, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।'' ग्रहण काल में इस मन्त्र को जप कर सिद्ध कर लें। पीलिया के रोगी को सामने बिठा कर उसके सिर पर कांसे के बरतन में तिल्ली का तेल डालकर रखें और मन्त्र का जप करते हुए उसे कुशा (डाभ) से चलाते रहें ऐसा तीन दिन करें तो तेल पीला पड़ जायेगा और रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।

घर की रक्षा के लिए:- ''या अल्लाह पाक इस आंगन को मैं करता हूं आज बन्द, हजरत सुलेमान की बरकत से बन्द, हजरत मूसा के हुकुम से बन्द, हजरत अली की शमशीर से बन्द, हजरत अहमद के कलाम से बन्द, या रहमान की रहमत से बन्द, या करीम के करम से बन्द या खालिक की बरकत से बन्द या मालिक की रहमत से बन्द या अल्लाह पाक मालिक रब्बुलगफूर, हमारी इस दुआ को तू करले कबूल, ला इलाहाइल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलल्लाह।'' नौचन्दी की जुमेरात को इस मन्त्र को जाप कर सिद्ध कर लेने के पश्चात सोते समय वजु कर के मन्त्र का उच्चारण कर लोटे के पानी में फूंक मारे यह क्रिया पांच बार करें, पानी को घर में छिड़क दें और ताली बजा कर सो रहें।

गणपति सिद्धि मन्त्र:- ॐ गणपति गणपति बसे मसान, जो फल मांगूं देते आन। पंजे लड्डू सेर सन्दूर भर आन आन आनन्दपूर। न द्वैतीभान फूल फलन्त जाने भरत्खवे तो एक फूले हाथी जो तू मोहन रह मुजा बाल साथ करी जाऊ तो मुट्ठी करो।

भाद्रपद की गणेश चतुर्थी से इस मन्त्र को नित्य १०८ बार जपें यह क्रम १०८ दिन तक चलना चाहिये। इस से गणपति प्रसन्न हो कर मन की इच्छा पूर्ण करते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मुखाकृति से भविष्य ज्ञान

वर्गाकार मुखाकृति-वर्गाकार मुखाकृति वाले व्यक्ति पृथ्वी तत्त्व प्रधान व्यक्ति होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की मुखाकृति की तस्वीर लेकर अगर चारों ओर लाइन लगा कर चतुष्कोण खींचा जाए तो इनका चेहरा चतुष्कोण में पूरा फिट आ जाएगा। यह जातक स्वस्थ सुडौल एवं शक्तिसम्पन्न होते हैं। इनमें उद्योगशीलता, व्यावहारिकता तथा संचय करने की प्रवृत्ति एवं गुण पाए जाते हैं। यह लोग भौतिक साधनों से सम्पन्न सुखी समृद्ध होते हैं। यह लोग सिद्धान्तों पर चलने वाले होते हैं और दूसरे के प्रभाव में आकर आसानी से अपने सिद्धान्त नहीं बदलते। अगर इनके चेहरे में पृथ्वी तत्त्व की अत्यधिक मात्रा हो तो यह व्यक्ति हठी, अदूरदर्शी, आलसी, विलासी होते हैं तथा अपनी अकर्मण्यता के कारण बाद में दुखी होते हैं। वर्गाकार मुखाकृति वाली स्त्रियों का शरीर स्थूल होता है। इनकी चाल धीमी तथा मतवाली होती है। ऐसी स्त्रियां कर्मठ, व्यवहारकुशल तथा मनमौजी होती हैं। अगर इनकी मुखाकृति में पृथ्वी तत्त्व अत्यधिक मात्रा में हो तो यह स्वभाव तथा चरित्र की दृष्टि से दुर्बल होती हैं।

वृत्ताकार मुखाकृति-वृत्ताकार मुखाकृति वाले जल तत्त्व प्रधान होते हैं। यदि इनके चेहरे का चित्र लेकर एक गोले में फिट किया जाए तो उनमें यह लगभग फिट हो जाता है। ऐसे जातक के गाल भरे हुए मांसल एवं स्निग्ध होते हैं। इनका शरीर स्थूल तथा उदर लम्बा होता है। यह लोग भावुक, कल्पनाशील, प्रसन्नचित, सहृदय, स्वप्नदर्शी, मिलनसार एवं संवेदनशील होते हैं। यह लोग आराम पसंद जीवन बिताना पसन्द करते हैं तथा संघर्ष से दूर भागते हैं जिनके चेहरे पर जल तत्त्व का अत्यधिक प्रभाव हो वह निराशावादी और अकर्मण्य होते हैं। गोल चेहरे वाली औरतें शृंगारप्रिय हावभाव वाली, बुद्धिमती तथा पतिव्रता, उदार हृदय, स्नेही तथा चंचल होती हैं। अगर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो तो यह दुर्बल, निराश एवं रोगग्रस्त होती हैं।

सूच्याकार मुखाकृति-सूच्याकार मुखाकृति वाले व्यक्ति अग्नि तत्त्व प्रधान होते हैं। अगर इनके चेहरे की तस्वीर चतुष्कोण में फिट की जाए तो ललाट वाला ऊपर का भाग चौड़ा होगा और नीचे का ठोड़ी वाला भाग संकरा होगा अथवा यूं कहा जा सकता है कि इनके चेहरे की आकृति बाल्टी की आकृति जैसी होगी। कोनों में गोलाई नहीं होगी। ऊपर का भाग विस्तृत होने के कारण यह लोग बुद्धिमान, चिंतक, दूरदर्शी, साहसी, स्वस्थ एवं समृद्ध, स्पष्टवक्ता, अभिमानी, नेतृत्वप्रिय एवं हठी होते हैं। यह लोग शक्ति में विश्वास करते हैं और अगर कहीं वाद-विवाद में उलझ जाएं तो पीछे नहीं हटते। यह लोग रचनात्मक एवं ध्वंसात्मक दोनों प्रकार के कार्य करते हैं। अगर चेहरे पर अग्नि तत्त्व का अधिक प्रभाव हो तो जातक में अत्यन्त क्रोधी हिंसात्मक एवं पाशविक वृति वाला होगा। सूच्याकार मुखाकृत्ति वाली स्त्रियां स्वाधीनताप्रिय, असहिष्णु एवं वाचाल होती हैं। गृहस्थ जीवन में यह औरतें सफल नहीं होती क्योंकि जरा-सी बात पर इनको क्रोध आ जाता है। हां, नौकरी राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में यह स्त्रियां उन्नति कर सकती हैं।

अंडाकार मुखाकृति-अंडाकार मुखाकृति वायु तत्त्व प्रधान मुखाकृति होती है। इनका ललाट विशाल एवं उन्नत तथा हनु और कपोल एक विशेष प्रकार मूढ़ी उतार होते हैं। जातक सामान्य कद के पुष्ट शरीर एवं उभरे स्निग्ध गालों वाले, आकर्षक और लुभावने होते हैं। यह व्यक्ति आशावादी, स्वछन्द, साहसी होते हैं तथा हर बात तर्क से करते हैं। यह हमेशा ज्ञान की जिज्ञासा, आनन्द की खोज, शान्ति की चाह रखते हुए प्रगति की राह पर चलते हैं। अगर चेहरे का नीचे का भाग पुष्ट हो तो यह व्यक्ति प्रेम और सौन्दर्य की इच्छा, काम पिपासा तथा व्यर्थ आचरण की कामना रखते हैं। यदि इन व्यक्तियों का चेहरा उल्टे अण्डे की तरह हो अर्थात् इनका ललाट का भाग संकुचित हो और नीचे का भाग विस्तृत हो तो ऐसे व्यक्तियों की बुद्धि इतनी विकसित नहीं होती। यह लोग हास्य एवं व्यंग्य प्रिय, मनमौजी, उथले स्वभाव के होते हैं। चेहरे के नीचे के भाग में वायु तत्व की प्रधानता जातक को असत्यवादी, अस्वस्थ एवं चिड़चिड़ा बनाती है। अंडाकार मुखाकृति वाली स्त्रियां सामान्य होती हैं परन्तु थोड़े प्रयत्न से अच्छा जीवन साथी सिद्ध हो सकती हैं।

उल्टे घड़े समान मुखाकृति-ऐसे जातक को देख कर ऐसा लगता है जैसे शरीर पर गर्दन सहित उल्टा घड़ा रखा हो। इनमें आकाश तत्त्व की प्रधानता होती है। इनके चेहरे पर अद्भुत कान्ति तथा आंखों में विशेष तेज होता है। यह लोग उदार हृदय, महत्वाकांक्षी स्वाभिमानी एवं आदर्शयुक्त, एकान्तप्रिय, सौम्य, तेजस्वी आध्यात्मवादी, आत्मबली एवं असाधारण प्रकृति के व्यक्ति होते हैं। यह अपने क्षेत्र में उच्च पद पर होते हैं तथा लोगों का तथा समाज का जिसमें भला हो, ऐसा कार्य करते हैं। अध्ययन के लिए चेहरे को तीन भागों में बांटा जाता है:

(१) ललाट क्षेत्र (२) नासिका क्षेत्र तथा (३) मुख क्षेत्र।

ललाट क्षेत्र का विकास व्यक्ति की मानसिक, बौद्धिक एवं सात्विक शक्ति का सूचक है। नासिका क्षेत्र मनुष्य की भौतिक, व्यावहारिक एवं राजसी प्रवृत्तियों का सूचक है। मुख क्षेत्र जातक की जैविक, वासनात्मक एवं मानसिक इच्छाओं का सूचक है। जिस जातक का ललाट एवं नासिका क्षेत्र उन्नत, विकसित तथा विस्तृत होता है वह बुद्धिमान, ज्ञानवान, विचारशील, व्यावहारिक, चतुर तथा साहसी होता है तथा जीवन में सफल होता है। यश, धन, सुख तीनों को प्राप्त करके जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। जिस जातक के ललाट एवं मुख क्षेत्र विकसित, उन्नत एवं विस्तृत हों वह गम्भीर, धीमा, चतुर, चालाक, धूर्त, कामी, दम्भी, विचारवान, समय और स्थिति को पहचानने वाला होता है। यह व्यक्ति अधिक स्वार्थी होता है और जरूरत पड़ने पर असत्य एवं अन्याय का भी सहारा लेता है। जिस जातक के नासिका क्षेत्र एवं मुख क्षेत्र विस्तृत, उन्नत, विकसित हों, विशेषकर मुख क्षेत्र नासिका क्षेत्र से अधिक विकसित एवं उन्नत हो ऐसा व्यक्ति कामी वासनायुक्त, असभ्य, मंदबुद्धि, हिंसक होगा। यदि नासिका क्षेत्र, मुख क्षेत्र से अधिक विकसित हो तो जातक उत्तेजित, आक्रामक, द्रुतगामी, स्पष्टवक्ता, मनमौजी, संरक्षक एवं न्यायप्रिय होगा।

प्रश्न विचार

जिस भाव सम्बन्धी विषय का विचार करना हो उस भाव का स्वामी कार्येश कहलाता है और लग्न का स्वामी लग्नेश कहलाता है। अगर प्रश्न लग्न में निम्न लिखित योग हों तो कार्यसिद्धि होती है- (१) लग्न का स्वामी कार्यभाव में हो और कार्येश लग्न में हो। (२) लग्न का स्वामी लग्न में हो और कार्यभाव का स्वामी कार्यभाव में हो। (३) यदि लग्न का स्वामी और कार्यभाव का स्वामी दोनों ही लग्न में हों। (४) लग्नेश और कार्येश दोनों कार्यभाव में हों।

इन चारों योगों के लग्नेश और कार्येश इन दोनों पर चन्द्रमा की दृष्टि हो और चन्द्रमा को भी लग्नेश कार्येश देखें तो कार्य की सिद्धि जाननी चाहिए। यदि चन्द्रमा मित्रक्षेत्री हो तो और भी अधिक शुभ जानना चाहिए। यदि लग्नेश कार्येश के ऊपर चन्द्रमा की दृष्टि न हो तथा अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो प्रश्न सम्बन्धी कार्य से भिन्न कोई नवीन शुभ प्रयोजन उत्पन्न हो। लग्नेश लग्न को और कार्येश कार्य भाव को देखते हैं तो कार्यसिद्धि होगी। यह कार्यसिद्धि तब होगी जब चन्द्रमा कार्यभाव पर आएगा।

धन लाभ कब होगा?- (१) लग्न का स्वामी लेने वाला होता है और ग्यारहवें स्थान का स्वामी देने वाला होता है। जब लग्नेश और एकादशेश का योग होता है और चन्द्रमा लाभ भाव को देखता है तो लाभ होता है। (२) यदि लग्नेश छठे, आठवें, बारहवें घर में हो तो धन का नाश होता है।

गर्भ सम्बन्धी प्रश्न:- (१) यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को न देखता हो और पाप ग्रह पंचम भाव में स्थित हो या पंचम भाव को देखता हो तो गर्भपात हो जाएगा। (२) यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को देखता हो तो प्रसव होता है। (३) यदि प्रश्नकाल में जिस किसी चार स्थानों में दो-दो ग्रह हों, तो एक साथ दो सन्तानों का प्रसव होता है। (४) प्रश्न लग्न से शुक्र जितने संख्यक स्थान में स्थित हो उतने महीने पर्यन्त गर्भ की स्थिति कहना और शुक्र यदि दसवें, ग्यारहवें, बारहवें भाव में हो तो पंचम भाव से लेकर शुक्र के स्थान तक गिनकर मास संख्या जानी जाती है।

गर्भ सम्बन्धी प्रश्न:-यदि गर्भिणी स्त्री पिता के घर में हो तो पिता से धारित नाम और पति के घर में हो, ससुराल का नाम ग्रहण करके जो अक्षर संख्या हो उसमें पति की नामाक्षर संख्या मिलाने फिर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर पूछने के दिन तक जो तिथि हो यहां तक गिनकर जोड़ दें, योगांक में तीन का भाग दें, एक शेष बचे तो पुत्र, दो बचें तो कन्या, शून्य बचे तो गर्भ नहीं है या गर्भ गिर जाएगा अथवा उत्पन्न होने पर भी उस गर्भ की सन्तति का नाश होगा ऐसा कहना चाहिए।

सन्तान सम्बन्धी प्रश्न:--पंचम भाव में बुध या शुक्र हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति सम्भव है। ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति होगी। लग्नेश की पंचम भाव में स्थिति और पंचमेश

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तथा बृहस्पति का बलवान होना भी सन्तति कारक योग बनता है। शुभ ग्रह दृष्ट लग्नेश और पंचमेश का केन्द्रस्थ होना सन्तान योग बनाता है। यदि पांचवें भाव में सूर्य, मंगल और राहु तीनों ही हों तो सन्तान देर से होगी। यदि पांचवें भाव में केतु हो तो सन्तान की प्राप्ति में देर होगी। यदि प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव में पाप ग्रह और पांचवें भाव में वृहस्पति हो तो सन्तानाभाव का योग है। यदि तीसरे और आठवें भाव में शनि हो तो सन्तान नहीं होगी। यदि दूसरे, पाचवें या दशम भाव में मंगल हो तो पुत्रहीन योग बनता है। यदि पांचवें भाव में शनि और राहु के साथ सूर्य हो तो सन्तान उत्पन्न होते ही नष्ट हो जाती है।

भूमि, मकान सम्बन्धी प्रश्न:-(१) यदि चतुर्थ भाव में शनि द्वारा दृष्ट राहु स्थित हो तो बंटवारे में भूमि मकान आदि की प्राप्ति होती है। (२) यदि चतुर्थेश द्वितीय अथवा ग्यारहवें भाव में हो तो भूमि आदि का प्रचुर लाभ होता है। (३) यदि चतुर्थ भाव शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक को घर भूमि की प्राप्ति होती है। (४) यदि वृहस्पति और शुक्र से दृष्ट चतुर्थेश त्रिकोण अथवा केन्द्र में हो तो जातक अपने परिश्रम से भूमि मकान खेत आदि प्राप्त करता है। (५) यदि चतुर्थेश और दशमेश में राशि परिवर्तन योग हो तो जातक को घर, भूमि, खेती बगीचा आदि की प्राप्ति शीघ्र होती है।

मुकद्दमें में जीत हार:- (१) यदि प्रश्न में पाप ग्रह लग्न में बैठा है तो वादी जीते और यदि वही पाप ग्रह नीच राशि में, सूर्य के सानिध्य से अस्त या शत्रुग्रह के राशि में हो तो वादी नहीं जीतेगा अर्थात उसकी हार होगी। (२) यदि सप्तम भाव में बाल पापग्रह हो तो शत्रु की विजय हो। (३) यदि लग्न और सप्तम भाव में बराबर पापग्रह हों और वह बराबर बली हों तो मुकद्दमा अथवा लड़ाई देर तक चले और अन्त में दोनों पक्षों में जो ग्रह अधिक बली होगा उस भाव वाला जीतेगा- प्रश्न लग्न वाला पापग्रह अधिक बली होगा तो वादी की जीत होगी। अगर सप्तम भाव स्थित पाप ग्रह अधिक बली होगा तो प्रतिवादी की जीत होगी। विवाह में, शत्रु को मारने में, युद्ध में, संकट (आवश्यक विवाद यात्रादि) में भी पापग्रह लग्न में हों तो विजय होती है और प्रश्न लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो पराजय होती है।

प्रवासी सम्बन्धी प्रश्न:-अगर कोई प्रश्न करे कि अमुक पुरुष विदेश गया है, घर नहीं पहुंचा, बंधा हुआ है या मर गया है? (१) यदि प्रश्न लग्न में पापग्रह हो तो वह मारा नहीं गया है और बन्धन में भी नहीं है अर्थात् कुशल से है, ऐसा कहना। (२) प्रश्न लग्न से सप्तम या अष्टम भाव में यदि पापग्रह, अथवा लग्न और सप्तम इन दोनों में पापग्रह हों तो मरण व बन्धन कहना। यदि प्रश्न काल में चर राशि अर्थात् मेष, कर्क, तुला और मकर इनमें से कोई राशि लग्न में हो तथा चर राशि का नवांश भी लग्न में हो और लग्न से चौथे भाव में चन्द्रमा हो तो विदेशी अपने घर पहुंच गया ऐसा कहना।

प्रवासी का आगमन:-(१) प्रश्नकाल में केन्द्र से द्वितीय स्थानों (दूसरे, पांचवें, आठवें, ग्यारहवें) में ग्रह प्राप्त हो तो विदेश गए व्यक्ति का आगमन कहना। अगर दूसरे, पांचवें, आठवें और ग्यारहवें भाव में ग्रह न हों तो गोचर में जब इन भावों में ग्रह आने की सम्भावना हो तो प्रवासी तब लौट कर आएगा ऐसा कहना। (२) सातवें केन्द्र को छोड़कर अन्य केन्द्र भाव (१, ४, १०) से द्वितीय भाव (२, ५, ११) में चन्द्रमा हो तो विशेष रूप से आगमन कहना।

रोगी के जीवन मरण का विचार:-(१) यदि प्रश्न लग्न से सप्तम, द्वादश और दूसरे भाव में पापग्रह हों और लग्न छठे, आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो शीघ्र मृत्यु करने वाला योग होता है अथवा चन्द्रमा के दोनों तरफ यदि पाप ग्रह हों तो भी शीघ्र मृत्यु कारक योग होता है। (२) लग्न में सूर्य और सातवें भाव में चन्द्रमा हो तो भी मृत्यु योग होता है। अगर जीवन-मरण प्रश्न का न होकर अन्य विषय सम्बन्धी हो तो मृत्यु योग नहीं कहना, खाली कठिनाईयां आएंगी ऐसा कहना।

बन्धन एवं दण्ड विषयक प्रश्न विचार:-(१) दूसरे बारहवें अथवा पांचवें-नवें भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को कारावास दण्ड भोगना पड़ेगा। (२) चौथे भाव में मंगल और दसवें भाव में शनि हो तो लम्बे कारावास या मृत्यु दण्ड का सूचक है। (३) यदि नवम भाव में शुक्र, शनि और सूर्य तीनों एक साथ बैठे हों तो किसी घृणित अपराध में दण्ड भुगतना होगा। (४) यदि लग्नेश और षष्ठेश राहु, केतु से युक्त या दृष्ट होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठे हों तो कठोर कारावास का दण्ड मिलेगा।

अमुक वस्तु खरीदने में लाभ रहेगा? (१) प्रश्न लग्न का स्वामी खरीदने वाला और ग्यारहवें भाव का स्वामी बेचने वाला होता है। यदि लग्न का स्वामी लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो उस वस्तु को खरीदने से प्रश्नकर्ता को लाभ होता है। लग्न का स्वामी उदित, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, वर्गोत्तम आदि में स्थित होकर लग्न को जितनी दृष्टि से देखता हो, उतना ही लाभ होता। अर्थात् एक चरण दृष्टि से देखता हो तो सवाया लाभ, दो चरण दृष्टि से देखता हो तो ड्योढ़ा लाभ, ऐसा जानना।

अमुक वस्तु बेचने में लाभ रहेगी?-प्रश्न काल में प्रश्न लग्न से एकादश भाव बलवान् हो तो खरीदी हुई वस्तु बेचने से लाभ होगा, अर्थात् एकादश भाव का स्वामी एकादश भाव में हो या एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो लाभ होगा, ऐसा कहना।

अमुक वस्तु सस्ती रहेगी या महंगी:-(१) ऐसे प्रश्न में जिस ग्रह से लग्न बलयुक्त होता है वह ग्रह जितने मास तक उस प्रश्न लग्न से अशुभदायक नहीं होता तब तक वह वस्तु सस्ती रहती है। (२) यदि लग्न में पापग्रह हो अथवा लग्न पर एवं लग्नेश पापग्रहों से युक्त एवं दृष्ट हो तो वस्तु महंगी होती है। परन्तु कब तक महंगी रहेगी? जितने दिन में वह प्रश्न लग्न गोचर में शुभत्व को प्राप्त हो तब तक महंगी उसके बाद सस्ती होगी जब लग्न शुभयुक्त और शुभदृष्ट होगा। (३) क्रय-विक्रय के प्रश्न लग्न बलवान् हो तो वस्तु सस्ती और लग्न निर्बल हो तो वस्तु महंगी होती है। लग्न शुभ ग्रह और स्वामी से देखा जाता हो तथा केन्द्र (१, ४, ७, १०) में शुभ ग्रह स्थित हो तो लग्न बलवान् होती है। इसके विपरीत अर्थात् पाप ग्रह से दृष्ट, केन्द्र में पाप ग्रह हों तो निर्बल कहलाता है।

अमुक स्थान में गड़ा धन है या नहीं?-(१) प्रश्न कुण्डली में चतुर्थ भाव का स्वामी चौथे स्थान को देखता हो तो धन है ऐसा कहना। यदि चतुर्थ स्थान पर पापग्रह की भी दृष्टि हो तो धन है परन्तु प्राप्ति नहीं होगी। (२) चौथे भाव में कोई भी ग्रह हो तो धन उत्तम पात्र में है ऐसा जानना। यदि चौथा यानि चतुर्थ भाव पर चतुर्थेश की दृष्टि न हो तो भी यदि चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में हो तो धन है, ऐसा कहना।

नष्ट वस्तु प्रश्न-प्रश्न, तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न तीनों एकत्र कर उनको पांच से भाग देने से शेष १ रहे तो वस्तु पृथ्वी में है। २ बचे तो जल में है मिलेगी नहीं। ३ बचे तो आकाश में है मिलेगी नहीं। ४ बचे तो राजा ले गया। ५ बचे तो वायु गत हुई शोक जानो।

नष्ट वस्तु परिज्ञान

नक्षत्री की संज्ञा	नक्षत्र	दिशा	अवधि प्राप्ति या नहीं
अन्धलोचन	रो., पु., उ. फा., वि.,पू. षा., ध., रे.	पूर्व	शीघ्र मिले प्रयत्न से
मंदलोचन	मृ., अश्वि., ह., अनु., उषा., श., अ.	दक्षिण	३ दिन में मिले प्रयत्न से
मध्यलोचन	आ., म., चि., ज्ये., अभि., पुष्य., भ.	पश्चिम	६४ दिन में मिले प्रयत्न से
सुलोचन	पुन., पूफा., स्वा., मू., श्र., उभा., कृ.	उत्तर	नहीं मिले

चोर ज्ञानम्-प्रश्न लग्न की कुण्डली बनाकर देखिए, सप्तम स्थान में स्त्री राशि है या पुरुष राशि। स्त्री राशि हो तो स्त्री चोर, पुरुष राशि हो तो पुरुष चोर है, ऐसा जानो।

सर्पदंश सम्बन्धी प्रश्न-मूल, कृतिका, मघा, विशाखा, आश्लेषा, रेवती आर्द्रा नक्षत्रों में सर्प ने काटा है तो यदि गरुड़ भी रक्षा करें तो भी प्राण नहीं बच सकते।

ऋणी-धनी प्रश्न-अपने वर्ग को दूनाकर दूसरे का वर्ग जोड़ना फिर आठ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके अपना वर्ग जोड़ना उपरान्त आठ का भाग देना। जिसका अधिक शेषांक बचे तो ऋणी तथा कम बचने वाले को धनी जाना।

पशु विषयक प्रश्न-सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र नवम तक हो तो पशु वन में है आगे से छः नक्षत्र में हो तो पशु घर को शीघ्र आएगा। आगे के दो नक्षत्र में मिलेगा नहीं, आगे की तीन नक्षत्र में मृत्यु को प्राप्त हुआ ऐसा जानें।

आयु निर्णय चक्र:

दीर्घायु	मध्यायु	अल्पायु
चर में लग्नेश/चर में अष्टमेश	चर में लग्नेश/स्थिर में अष्टमेश	चर में लग्नेश/द्विस्व. अष्टमेश
स्थिर में लग्नेश/द्विस्व. अष्टमेश	स्थिर में लग्नेश/चर में अष्टमेश	स्थिर में लग्नेश/स्थिर में अष्टमेश
द्विस्व. लग्नेश/स्थिर में अष्टमेश	द्विस्व. लग्नेश/द्विस्व. अष्टमेश	द्विस्व. लग्नेश/चर में अष्टमेश

आयु निर्णय-(१) जन्म कुण्डली में देखें लग्नेश एवं अष्टमेश-चर, स्थिर, द्विस्वभाव किस राशि में पड़ा है। पश्चात् ऊपर दिये गये चक्र से जातक की दीर्घायु मध्यायु एवं अल्पायु निश्चित करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न विचार

मेष लग्न:- मेष लग्न में पैदा हुए व्यक्ति का गेहुंआ रंग, लम्बा कद, दुबला किन्तु बलिष्ट शरीर, रक्त गोल नेत्र, मुख पर चिन्ह, कठोर किन्तु घुंघराले केश, क्रोधी एवं उपद्रवी स्वभाव, अत्यन्त साहसी उधमी, उग्र-प्रकृति वाला होता है। यह जातक स्वतन्त्र विचार वाला प्रगतिशील, महत्वाकांक्षी, सदैव नेतृत्व की चाह करने वाला, प्रभावशाली स्वच्छन्द विचरण करने की लालसा करने वाला होता है। मेष लग्न वाले व्यक्ति नई योजनाओं की सृष्टि करते हैं। तथा अद्भुत विचारों के अन्वेषक होते हैं। बड़े होकर योग्य प्रशासक, इंजीनियर (मकेनिकल), सर्जन, सेनापति, सफल व्यापारी बन सकते हैं। इनके लिए गुरु शुभ होता है। शनि बुध शुक्र अशुभ होते हैं। इनके लिए प्राय: शनि अथवा बुध ही मारकेश बनते हैं। जातक को मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों की सम्भावना होती है तथा ज्वर, अग्नि अथवा शस्त्र भय रहता है। इनका भाग्योदय १६, २२, २८, ३२, ३६ वें वर्ष में होता है।

वृष लग्न:- जातक का ठिगना कद, पुष्ट एवं स्थूल शरीर होता है। यह लोग कामी, चतुर, ईर्षालु, शान्त स्वभाव वाले, इच्छानुसार काम करने वाले तथा सभी कार्यों को गुप्त रखने वाले, सांसारिक द्रव्य एवं धन सम्पत्ति एकत्रित करने वाले तथा अधिकार सुख की कामना करने वाले होते हैं। इनकी स्मरणशक्ति प्रबल होती है। यह लोग बैंकिंग, कास्टमैटिक्स, भवन निर्माण, जवाहरात विज्ञापन एवं प्रचार इत्यादि व्यवसायों में सफल होते हैं। इनको कन्ठ सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना होती है। इनके लिए सूर्य, बुध शुभ तथा शुक्र, बृहस्पति एवं चन्द्र अशुभ होते है। इनका भाग्योदय २५, २८ ३६ एवं ४२ वें वर्ष में होता है।

मिथुन लग्न:- जातक का कद लम्बा किन्तु दुबला, सुन्दर नेत्र, छोटी नाक होती है। यह व्यक्ति प्रसन्नचित, चपल, तीक्षण बुद्धि, मधुर एवं स्पष्टवक्ता, शीघ्र गतिवान, दूरदर्शी, मेधावी, यात्रा एवं परिवर्तन प्रेमी, खेलों का शौकीन, साहित्य-कला सौन्दर्य में रूचि रखने वाला होता है। मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों में बुद्धि तथा भाव तत्व दोनों ही प्रबल रूप में होते हैं। बड़े होकर पत्र-व्यवहार, सम्पादन, लेखन, प्रचार-प्रसार, अध्यापन, एकाउन्टस, संगीत, यात्रा, क्रय-विक्रय सम्बन्धी व्यवसाय में सफल होते हैं। इनको फेफड़े तथा स्नायु-सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनकी भाग्योन्नति २२, ३२, ३४, ३६, ४२ वें वर्ष में होती है। इनके शुक्र शुभ चन्द्रमा अशुभ मंगल, सूर्य अरिष्टकारक होते हैं।

कर्क लग्न:- जातक का मध्यम कद, गौर वर्ण, सुन्दर मुख, सगठित शरीर होता है। इस लग्न के व्यक्ति बुद्धिमान, गतिशील, अस्थिर स्वभाव वाले, उदार, विशाल हृदय कल्पनाशील, परिश्रमी भावुक मन वाले, विलासी, सम्पन्निवान, समयानुसार काम करने वाले होते हैं। बड़े होकर यह राज्याधिकारी, डाक्टर, नेता, मन्त्री, प्राध्यापक, नाविक तथा जलोत्पन्न वस्तुओं के व्यवसायी बनते हैं। इनको उदर हृदय, मूत्राशय-सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए मंगल शुभ, शुक्र एवं बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २५, २८ एवं ३२ वें वर्ष में होता है।

सिंह लग्न:- जातक की चौड़ी छाती, बली भुजाएं एवं दृढ़ हड्डी तथा पुष्ट शरीर प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग नेतृत्व की चाह करने वाले प्रससनिक अधिकारों का पूर्ण सदुपयोग करने में सफल होते हैं। इनका रहन-सहन आडम्बरपूर्ण तथा रईस मिजाज होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति अभिनेता, प्रशासक, सैनिक, वकील, व्यापारी, वन-सम्बन्धी व्यवसाय करते हैं। इनको ज्वर एवं मस्तिष्क पीड़ा आदि रोग हो सकते हैं। इनके लिए सूर्य एवं मंगल शुभ, बुध एवं शुक्र अशुभ राहु-केतु मारक स्थान में स्थित होने से मृत्युकारक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २६, २८, ३२ वें वर्ष में होता है।

कन्या लग्न:- जातक का छोटा कद, कोमल शरीर तथा छोटे बाजू होते हैं। इनका स्त्री स्वभाव होता है तथा यह लज्जाशील, मधुरभाषी विचारशील, धैर्यवान, बुद्धिवादि, गणितज्ञ, तार्किक एवं साहित्य प्रेमी होते हैं। कन्या लग्न वाले व्यक्तियों की स्मरणशक्ति तीव्र होती है तथा यह सभी कार्य गुप्त रखते हैं। इनमें आत्म विश्वास की कमी रहती है। बड़े होकर यह व्यक्ति गणितज्ञ, पुस्तक विक्रेता, सचिव, दलाल, साहित्यक, अध्यापक, ज्योतिषी अथवा मनोवैज्ञानिक बन सकते हैं। व्यापार की अपेक्षा इनको नौकरी में अधिक लाभ हो सकता है। इनको पेट की बीमारियां लग सकती हैं। इनके लिए बुध, शुक्र शुभ, चन्द्रमा, मंगल बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २५, ३२, ३३, ३५, ३६वें वर्ष में होता है।

तुला लग्न:- जातक दुबला किन्तु लम्बा, सुन्दर प्रसन्नचित तथा तीक्षण बुद्धि वाला होता है। यह न्याय एवं शान्तिप्रिय, मध्यस्थता का कार्य करने में निपुण, सत्यवक्ता, धार्मिक, सुधारवादी, दार्शनिक, साधु स्वभाव, लोकप्रिय, बच्चों का विशेष स्नेही, स्त्री-कला-नृत्य संगीत प्रेमी, प्रतिष्ठित होता है। इस लग्न के व्यक्ति न्यायाधीश, वकील, परामर्शदाता, साहित्य प्रेमी, कवि, नीतिज्ञ तथा व्यापारी बनते हैं। इनको गुर्दा, मूत्रस्थली एवं कमर सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है। इनके लिए शनि योगकारक, बुध, शुक्र, शुभ, सूर्य मंगल बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २४, २५, ३२, ३३, ३५ वर्ष में होता है।

वृश्चिक लग्न:- जातक सुन्दर, परिश्रमी, आत्मविश्वासी, साहसी, शंकालु, स्वेच्छाचारी, आतंककारी, नीतिज्ञ गूढ़ विद्याओं का ज्ञाता होता है। ऐसे व्यक्ति मितव्ययी एंव संग्रह करने में चतुर होते हैं। यदि लग्न पाप दृष्ट हो तो जातक झगड़ालु, असंयमी, कुतिचारी, निर्दयी अपराधी तथा गुप्त रूप से दुष्कर्म करने वाला होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति पुलिस अधिकारी, राजनीतिज्ञ, ठग, इंजीनियर, खनिज विशेषज्ञ, दन्त विशेषज्ञ बनते हैं। इनको छाती, कण्ठ अथवा गर्मी या वायु सम्बन्धी एवं बवासीर आदि गुप्त रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए सूर्य चन्द्रमा मंगल बृहस्पति शुभ, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २२, २४, २८, ३२ वें वर्ष मे, होता है।

धनु लग्न:- बड़े कान, लम्बी गर्दन,बली तथा स्थूल शरीर धनु लग्न की विशेषता है। यह व्यक्ति स्वाभिमानी, निस्वार्थी, साधु स्वभाव न्यायप्रिय, मेधावी, धनवान्, उदार, गम्भीर, विवेकशील, तार्किक, कुलभूषण, संवेदनशील, विश्वासपात्र, उत्तेजित अवस्था में अत्यन्त क्रुद्ध एवं स्पष्टवक्ता, निष्कपट, त्यागी, आदर्शवादी, अवसर का लाभ उठाने वाले होते हैं। इन्हें केवल प्रेम और शान्ति से वशीभूत किया जा सकता है। यदि लग्न पाप पीड़ित हो तो जातक दंभी, आडम्बरपूर्ण एवं कठोर स्वभाव का होता है। इस लग्न के व्यक्ति बड़े होकर प्रोफेसर, अध्यापक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, परामर्शदाता, उपदेशक, वकील, बैंकर तथा सफल व्यवसायी बनते हैं। इनको फेफड़े तथा वायु सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए सूर्य बुध, बृहस्पति शुभ तथा चन्द्रमा शनि अशुभ फलदायक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, ३२ वें वर्ष में होता है।

मकर लग्न:- जातक का लम्बा कद, सुन्दर नेत्र, सेवाभावी, धैर्यवान, गम्भीर, मननशील, महत्वाकांक्षी, उद्योगी, संयमी, परिश्रमी एवं कार्यशील उदासीन, दार्शनिक, आस्तिक, गृहस्थ जीवन से असंतुष्ट, आत्मप्रशंसा में विश्वास न करने वाला होता है। यह व्यक्ति बड़े होकर अधिकारी, कृषि अथवा भूमि से उत्पन्न वस्तुओं सम्बन्धी व्यवसाय अथवा कार्यालयों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको जोड़ों का दर्द तथा अन्य वायु जनित रोग होने की संभावना रहती है। इनका भाग्योदय २५, ३३, ३५, ३६, ४२ वें वर्ष में होता है।

कुम्भ लग्न:- जातक का मध्यम कद, मांसल होंठ, आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग तीव्र बुद्धि, दयालु, मिलनसार, प्रभावशाली, अनेक मित्रों से युक्त, स्वच्छहृदय तथा विशाल दृष्टिकोण वाले, क्रान्तिकारी विचारक, रोचकवक्ता एवलं साहित्य में रुचि रखने वाले होते हैं। अगर शनि शत्रु राशिस्थ अथवा नीच हो तो जातक दम्भी, कामी, लांछन प्राप्त करने वाला, उद्दण्ड एवं निर्लज्ज होता है। बड़े होकर यह लोग प्राध्यापक, सुधारक, इंजीनियर, मुद्रण, रेडियो, बिजली, यात्रा, वायुयान एवं तकनीकी कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको सिर अथवा पेट दर्द, वायुरोग, उदर पीड़ा एवं कोष्ठ बद्धता इत्यादि रोग हो सकते हैं। इनके लिए शुक्र शुभ तथा गुरु एवं चन्द्र अशुभ फलदायक हैं। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

मीन लग्न:- जातक का छोटा कद, स्थूल शरीर, शान्त एवं विनम्र स्वभाव होता है। यह लोग धर्मपरायण, रूढ़िवादी, आस्तिक, परोपकारी, लज्जाशील, महत्वाकांक्षी, सुनिश्चित एवं सुसंस्कृत, बहुकुटुम्बी, सदगृहस्थी होते हैं। बड़े होकर यह लोग समाज सुधारक, आध्यात्मवादी, चलचित्र व्यवसाय, पुरातत्व वस्तुओं के व्यापारी, काव्य एवं हास्य व्यंग्य लेखक, कलाकार, औषधी विषयक, जल परिवहन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। इन्हें छूतछात की बीमारियां होने का डर रहता है। इनके लिए मंगल शुभ, सूर्य शुक्र शनि बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, १२, २८, ३३ वें वर्ष में होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हथेली से भविष्य ज्ञान

आई.ए.एस. अधिकारी:-यदि बुध की उंगली अर्थात् कनिष्ठिका लम्बी हो और उसका सिरा अनामिका के प्रथम पौर के आधे हिस्से को भी पार कर चुका हो और सूर्य रेखा उच्चकोटि की हो तो जातक आई.ए.एस. अधिकारी अथवा उच्च पदाधिकारी बनता है।

न्यायाधीश होने का योग:-यदि गुरु पर्वत अधिक विकसित हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो, तर्जनी अंगुली अनामिका से बड़ी हो, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के प्रथम पौर के मध्य भाग तक पहुंच गया हो तो जातक न्यायाधीश होता है।

व्यवसायी होने का योग:-यदि बुद्ध पर्वत उभरा हुआ हो और निर्दोष हो, मस्तिष्क रेखा सीधी हो और बुद्ध पर्वत तक जाती हो तो जातक सफल व्यापारी होता है।

पुलिस अधिकारी:-मंगल पर्वत उभरा हुआ हो तथा उस पर उज्ज्वल तारे का चिन्ह हो और शरीर हृष्ट-पुष्ट हो तथा भाग्य रेखा निर्दोष हो तो जातक सफल पुलिस अधिकारी बनता है।

इंजीनियर होने का योग:-यदि शनि पर्वत विकसित हो और निर्दोष भाग्य रेखा शनि पर्वत पर आती हो, बुध पर्वत पर तीन चार खड़ी रेखा हों और सभी उंगलियां लम्बाई लिए हुए हों तो जातक इंजीनियर होता है।

डाक्टर होने का योग:-यदि बुध पर्वत और मंगल पर्वत पूर्ण रूप से विकसित हों, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के ऊपरी पौर के मध्य तक जाता हो, बुध पर्वत पर तीन खड़ी रेखाएं हों तो जातक डाक्टर होता है। अगर मंगल की बजाय बृहस्पति पर्वत विकसित हो तो जातक सफल वैद्य होता है।

शिक्षक होने का योग:-बृहस्पति पर्वत उभरा हुआ हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो तथा इसके साथ ही सूर्य रेखा, भाग्य रेखा, निर्दोष हो तथा तर्जनी उंगली अनामिका से बड़ी हो।

अभिनेता-अभिनेत्री योग:-अनामिका उंगली विशेष लम्बी हो और ऊपर से नोकदार हो, सूर्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो, सभी उंगलियां कोमल और ढलवी हों, भाग्य रेखा पूरी लम्बाई लिए हुए हो तो जातक सफल अभिनेता या अभिनेत्री होती है।

साहित्यकार:-हथेली में चन्द्र पर्वत और गुरु पर्वत उभरे हुए हों, अनामिका तर्जनी से लम्बी हो, सूर्य रेखा तथा बुध पर्वत निर्दोष हों तो जातक सफल साहित्यकार बनता है। अगर चन्द्र पर्वत से धनुषाकार रेखा बुध पर्वत की ओर आती हो तो जातक श्रेष्ठ कवि बनता है।

विवाह में अड़चन:-(१) यदि विवाह रेखा कई स्थानों पर कटती हों, (२) चन्द्र पर्वत पर आड़ी तिरछी रेखाएं बनी हों।

अनमेल विवाह का योग:-(१) यदि विवाह रेखा सूर्य रेखा को काटती हो तो अनमेल विवाह होता है। (२) यदि शुक्र पर्वत अधिक विकसित हो।

सुखहीन विवाह का योग:-(१) यदि भाग्य रेखा पर क्रास हो, (२) विवाह रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो, (३) शुक्र पर्वत का कम उभरा हुआ होना।

तलाक होने के योग:-(१) विवाह रेखा के अन्त में रेखाओं का गुच्छा हो, (२) यदि मंगल क्षेत्र से रेखा चल कर विवाह रेखा को काटे तो पति-पत्नी पृथक रहते हैं, (३) यदि विवाह रेखा से निकल कर एक शाखा मस्तिष्क रेखा से मिलती हो, (४) शुक्र पर्वत से प्रभाव रेखा जीवन रेखा को काटती हुई विवाह रेखा से मिलती है अथवा विवाह रेखा को काटती है तो तलाक होता है, (५) अविवाहित रहने का योग-विवाह रेखा ऊपर अर्थात् कनिष्ठा उंगली की ओर झुकी हो तो विवाह नहीं होता।

हस्त रेखा और रोग

(१) यदि चन्द्र पर्वत अत्याधिक उठा हुआ हो तो जातक को नजला जुकाम रहता है। (२) यदि चन्द्र पर्वत जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ हो और उस पर एक से अधिक क्रास अथवा बिन्दु हो तो जलोदर रोग होता है। (३) यदि मस्तिष्क रेखा कई जगह से टूटी हुई हो तो जातक की स्मरण शक्ति कम होती है। (४) यदि मस्तिष्क रेखा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो तथा उस पर काला धब्बा हो तो जातक को मस्तिष्क रोग होता है। (५) यदि जीवन रेखा अंत में कई शाखाओं में बंट जाती हो तो वायु रोग होता है। (६) यदि दोनों हाथों में मंगल रेखा पर शाखाएं निकली हों अथवा जीवन रेखा के प्रारम्भ में तारे का चिन्ह हो तो जातक को कैंसर रोग होने का भय होता है। (७) यदि मंगल पर्वत पर तीन या तीन से अधिक बारीक-बारीक रेखाएं दिखाई दें तो जातक को गुप्तांगों के रोग रहते हैं। (८) अगर स्वास्थ्य रेखा दूषित हो और हृदय रेखा जंजीरदार हो तो जातक को हृदय रोग होने का भय है।

अन्य योग:-

बाल्यावस्था में माता-पिता की मृत्यु:-भाग्य रेखा के शुरू में त्रिकोण या द्वीप हो तो माता या पिता में से किसी एक की मृत्यु होती है।

हत्यारा होने का योग:-मंगल का पर्वत उठा हो, उस पर तारे का चिन्ह हो। शनि के नीचे मस्तक रेखा पर नीले रंग की रेखा हो।

विदेश में मृत्यु:-जीवन रेखा अंत में दो शाखाओं में बंट जाए और उसमें से एक शाखा चन्द्र स्थान पर जाए तो विदेश में मृत्यु होती है।

मुकद्दमे बाजी में जायदाद और धन नाश होना:-दोनों हाथों में मंगल पर्वत का काला धब्बा, तिल या अन्य चिन्ह हो तो मुकद्दमेबाजी में जायदाद बर्बाद होती है।

शराबी होने का योग:-(१) चन्द्र पर्वत अधिक उठा हो तो प्राणी मद्य सेवी होता है।

अकाल मृत्यु का योग:-जीवन रेखा कटी हुई हो, हृदय रेखा शनि पर्वत को स्पर्श करती हो तो जातक की अकाल मृत्यु होने का भय होता है, (२) जीवन रेखा दोनों हाथों में छोटी हो अथवा टूटी हुई हो, मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे आपस में मिली हो तो अकाल मृत्यु होती है।

हथेली पर तिल:-(१) यदि लाल रंग का तिल मस्तिष्क रेखा के ऊपर हो तो जातक के लिए सिर पर चोट लगने का खतरा रहता है। (२) शनि पर्वत पर काला तिल जातक के प्रणय सम्बन्धों में निराशा लाता है। पति-पत्नी में आपसी झगड़े के कारण उनमें से एक को आत्महत्या करनी पड़ती है। (३) चन्द्र पर्वत पर काला तिल पानी में डूबने से मृत्यु का होना। जातक को प्रेमी अथवा प्रेमिका धोखा देती है। (४) हृदय रेखा पर गहरे काले रंग का तिल हो तो जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है। (५) जिस व्यक्ति के बुध पर्वत पर काला तिल हो, वह व्यक्ति ठग, कपटी तथा धूर्त होता है। ऐसे व्यक्ति से व्यापार में भागीदारी नहीं करनी चाहिए। (६) बृहस्पति के पर्वत पर काला तिल हो तो विवाह में बाधा आती है। (७) शुक्र पर्वत पर काला तिल जातक को अत्याधिक भोगी बनाता है जिससे वीर्य दूषित हो जाता है। (८) जीवन रेखा पर काला तिल हो तो दिमाग पर चोट लगने का डर रहता है तथा शत्रु द्वारा आघात लगने का भी खतरा रहता है। (९) भाग्य रेखा पर काला तिल भाग्योदय में विलम्ब तथा संघर्ष का सूचक है। (१०) यदि सूर्य रेखा पर काला तिल हो तो जातक को असफलता का सामना करना पड़ता है तथा धनहानि होती है। (११) यदि अंगूठे के मूल में काला तिल हो तो जातक के प्रथम सन्तान की मृत्यु हो अथवा गर्भ क्षय हो।

नव-रत्नों का चमत्कार

प्राचीन ज्योतिष शास्त्रों के अनुसार नौ ग्रहों सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु का विभिन्न रत्नों से सम्बन्ध है। इन रत्नों के क्रमश: नाम इस प्रकार है:- माणिक्य, मोती, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद, वैडूर्य अथवा लहसुनिया। इन रत्नों को जब मनुष्य अपने शरीर पर धारण करता है तब वे अपने माध्यम से ग्रहों की रश्मियों को मानव शरीर में प्रविष्ट कर देते हैं जिसके फलस्वरूप रत्न धारण करने वाला मनुष्य उससे सम्बन्धित ग्रह के शुभ प्रभाव का पर्याप्त लाभ उठाने लगता है।

माणिक्य-यह सूर्य का रत्न माना जाता है तथा लाल रंग का होता है। इसके पहनने से शत्रुओं का नाश होता है तथा जीवन में भाग्योदय होता है, नौकरी वालों को पदोन्नति में सहायक होता है तथा मन्त्रियों अथवा सरकारी विभागों में सहयोग मिलता है। मन्त्रियों को यह पहनना लाभदायक है। इसके धारण करने से

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

धारणकर्त्ता साहसवान आत्मबली, धैर्यवान तथा निर्भीक बनता है। समाज में उच्च और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करता है। अगर जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य नीच का हो अथवा छठे आठवें और बारहवें घर में बैठा हो तो माणिक्य नहीं धारण करना चाहिए। श्रेष्ठ माणिक्य खरीद कर, उस पर सूर्य का बीजमन्त्र "ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः" का विधिवत ७००० जप करके कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में सोने अथवा तांबे की अंगूठी में जड़वाकर धारण करें।

मोती:-यह चन्द्रमा का रत्न माना जाता है तथा इसके पहनने से मन की बेचैनी दूर हो जाती है, जिन व्यक्तियों को बहुत क्रोध आता है अथवा जिनका ब्लड प्रैशर अधिक होता है उनके लिए यह रत्न लाभकारी है। स्त्रियों के लिए मोती पहनना आवश्यक है क्योंकि उनको यह रत्न सौभाग्यशाली बनाता है। स्वच्छ और दोषरहित मोती पहनने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा यश मिलता है। उच्चकोटि का मोती खरीद कर सोमवार के दिन अथवा रोहिणी, हस्त, श्रवण नक्षत्रों अथवा पूर्णिमा को चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, चन्द्र के बीच मन्त्र "ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रम से नमः" का विधिवत जप करके अनामिका में धारण करें।

मूंगाः-लाल रंग का यह रत्न मंगल का रत्न माना जाता है। मूंगा धारण करने वाले का साहस बढ़ता है और उसके शत्रुओं का नाश होता है। पुलिस तथा सैनिक सेवाओं में काम करने वालों को विशेष लाभदायक है। यदि भयानक स्वप्न आते हों तो इसके पहनने से ऐसे स्वप्न आने बन्द हो जाते हैं। भूत-प्रेत बाधा से मुक्ति प्राप्त होती है। स्त्रियों को मूंगा सौभाग्य प्रदान करता है। जिसका ब्लड प्रैशर कम हो उनके लिए लाभकारी है। उच्चकोटि का दोष रहित मूंगा खरीद कर मंगलवार के दिन मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा नक्षत्रों में सोने अथवा तांबे की अंगूठी में जड़वा कर "ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भमाय नमः" मन्त्र का विधिवत १०,००० जप करके धारण करें। याद रहे मूंगे के साथ कभी नीलम, गोमेद और लहसूनिया नहीं धारण करना चाहिए। अगर जन्म कुण्डली में मंगल छठे, आठवें तथा बारहवें घर में पड़ा हो तो भी मूंगा धारण नहीं करना चाहिए।

पन्नाः-हरे रंग का यह रत्न बुध का रत्न माना जाता है। यह रत्न बुद्धि बल देता है तथा इसके पहनने से शरीर पुष्ट होता है। धन, धान्य तथा सम्पत्ति की वृद्धि होती है। इसके धारण करने से जादू, टोने नजर आदि से रक्षा होती है। मिर्गी और पागलपन से बचाता है। नेत्रों में तरावट लाता है। स्वप्नदोष दूर करता है। स्त्री के प्रसव के समय पर बांधने से शीघ्र प्रसव हो जाता है। यह रत्न लेखकों, अध्यापकों, राजनीतिज्ञों, व्यापारियों को अधिक लाभकारी है। उच्चकोटि का दोष रहित पन्ना खरीद कर बुधवार के दिन अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती नक्षत्रों में सोने अथवा चांदी की अंगूठी में जड़वा कर "ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः" मन्त्र का विधिवत् ८००० जप करके कनिष्ठिका उंगली में धारण करें।

पुखराजः-चिकना, चमकदार, पानीदार पीले रंग का पुखराज बृहस्पति का रत्न माना जाता है। यह धन, धान्य, विद्या, बुद्धि, बल, ज्ञान, सम्पत्ति, आयु और यश प्रदान करता है। इसके धारण करने से वंश की वृद्धि होती है। यह भूत-प्रेत की बाधा से रक्षा भी करता है। जिस कन्या के विवाह में बाधा पड़ रही हो तो पुखराज पहनने से शीघ्र उपयुक्त वर प्राप्त हो जाता है। जिसके घर में क्लेश रहता है वहां पति अथवा पत्नी को पुखराज धारण करना अत्यन्त लाभकारी है। यह रत्न मन में धार्मिक विचारों का संचार करता है तथा इससे शराब जैसे बुरे व्यसन छूट जाते हैं। उच्चकोटि का पुखराज खरीद कर बृहस्पतिवार के दिन पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वा भादप्रद नक्षत्रों में सोने की अंगूठी में जड़वाकर "ॐ बृं बृहस्पतये नमः" मन्त्र का विधिवत १९००० जप करके पहनना चाहिए। मगर लग्न वालों के लिए पुखराज इतना लाभकारी नहीं है।

हीराः-हीरा शुक्र का रत्न माना जाता है। इसके पहने से धन प्राप्ति, दाम्पत्य सुख, विवाह सुख तथा वाहन सुख प्राप्त होता है। इसको शुक्रवार के दिन भरणी, पूर्वा फाल्गुनी या पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में प्लेटीनम अथवा चांदी की अंगूठी में जड़वाकर "ॐ शुं शुक्राय नमः" मन्त्र का विधिवत् १६००० जप करके धारण करें। मेष, वृश्चिक तथा मीन लग्न वालों के लिए यह रत्न लाभकारी नहीं है।

नीलमः-यह शनि का रत्न माना जाता है। इसको पहनने से पहले इसकी परीक्षा करना आवश्यक है क्योंकि जहां यह अत्यन्त अशुभ फलदायक भी है, और अपना फल दो/तीन दिन में ही दे देता है। इसे शनिवार के दिन खरीद कर पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्र पद नक्षत्रों में चांदी की अंगूठी में जड़वाकर "ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः" मन्त्र का विधिवत् २३००० हजार जप करके धारण करें। यदि यह लाभदायक सिद्ध हो तो कारोबार में आकस्मिक धन लाभ तरक्की देता है तथा गैस रोग व अन्य बीमारियों में लाभदायक होता है। यदि थोड़ा सा भी हानिप्रद साबित हो तो फौरन उतार देना चाहिए। यदि जन्म कुण्डली में शनि छठे, आठवें, द्वादश स्थान में बैठा हो तो नीलम कदापि धारण नहीं करना चाहिए।

उपरत्नों का प्रभाव

मुख्य रत्नों का जातक पर क्या प्रभाव पड़ता है। वह ग्रहों के अनुसार ऊपर दिया गया है। परन्तु रत्न मंहगे होने के कारण साधारण व्यक्ति इन्हें कम खरीदते हैं। अतः ज्योतिषी कई बार उन्हें उपरत्न पहनने की सलाह देते हैं। इन उपरत्नों को पहनने में क्या प्रभाव पड़ता है नीचे दिया गया है:-

अकीकः-यह पत्थर प्रायः कई रंगों में मिलता है। कुण्डली में जो ग्रह कमजोर हो उस ग्रह से सम्बन्धित रंग का पत्थर पहना जाता है। अच्छी सेहत, धन सम्पत्ति और हर कार्य में सफलता हासिल करने के लिए यह पहना जाता है। इसे आप चांदी में जड़वा कर किसी भी शुभ दिन को पहन सकते हैं।

फिरोजाः-फिरोजी रंग का यह पत्थर जातक को विषम परिस्थितियों का सामना करने में सहायता करता है। तथा दुर्घटना एवं चोट से बचाता है। विष से जातक की रक्षा करता है। स्त्रियों की प्रजनन शक्ति को बढ़ाता है। फिरोजा बुध और शनि का मिश्रित प्रभाव देता है। इसे चांदी और तांबे की मिश्रित धातु से बनी अंगूठी में जड़वा कर पहनें।

कटैलाः-जामुनी रंग का यह पत्थर नेत्र रोग, अधरंग से पीड़ित व्यक्तियों को लाभकारी है। इसके पहले शराबियों की शराब छूट सकती है। और किसी प्रकार के नशे से भी छुटकारा मिल सकता है। माहवारी रोग से पीड़ित स्त्रियों को स्वास्थ्य लाभ हो सकता है। मुकदमेबाजी में सफलता प्राप्त होती है।

ब्लड स्टोनः-हरे रंग के इस पत्थर पर लाल रंग के धब्बे होते हैं। जिन स्त्रियों को मासिक धर्म में अत्यधिक खून आता है उनके लिए यह रत्न बहुत उपयोगी है। बावासीर से पीड़ित व्यक्ति इसे पहन कर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

अक्वामैरिनः-इस पत्थर को प्रेमी अपनी प्रेमिका को अथवा प्रेमिका अपने प्रेमी को पहनाए तो दोनों में प्रेम बना रहता है, ऐसी धारणा है। पति और पत्नि के बीच सम्बन्धों को मधुर बनाता है।

केन्द्र, त्रिकोण तथा तीसरे, छठे और एकादश स्थान में बैठा हो तो राहू की महादशा में गोमेद धारण करना लाभकारी है। अगर राहु द्वितीय, सप्तम, अष्टम, द्वादश भाव में स्थित हो तो गोमेद नहीं धारण करना चाहिए। बुधवार के दिन स्वाती, शतभिषा और आर्द्रा नक्षत्रों में चांदी की अंगूठी में जड़वाकर "ॐ रां राहवे नमः" मन्त्र का विधिवत् १८००० जप करके धारण करें। तो रोग व शत्रुओं के नाश के लिए यह लाभकारी है। आकस्मिक धन लाभ भी कराता है।

वैडूर्य अथवा लहसूनियाः-यह केतु का रत्न माना जाता है। जब केतु लग्न, केन्द्र त्रिकोण अथवा तृतीय, षष्ट तथा एकादश भाव में स्थित हो तो केतु की महादशा में लहसूनिया धारण करना लाभकारी होता है। यदि केतु द्वितीय, सप्तम, अष्टम और द्वादश भाव में हो तो यह रत्न नहीं धारण करना चाहिए। बृहस्पतिवार के दिन अथवा अश्विनी, मघा, मूल नक्षत्रों में चांदी की अंगूठी में जड़वाकर इस रत्न पर "ॐ के केतवे नमः" मन्त्र का १७००० जप करके धारण करना चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक शुभाशुभ देखने का चन्द्रकालानल चक्र

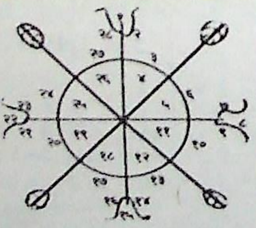

दिये हुए चित्र के समान एक चंद्र कालानल चक्र बनावें। फिर जिस दिन का शुभाशुभ विचार करना हो उस दिन का नक्षत्र देखें कि पंचांग में चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। प्रात:काल जिस नक्षत्र पर चंद्रमा हो उसको चित्र में १ अंक पर रखकर फिर आगे के २८ नक्षत्रों को अंकों के क्रमानुसार लिखें। इसमें अभिजित का समावेश भी है। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र कहां पड़ रहा है। उसी के अनुसार फल समझें। यदि त्रिशूल में नाम नक्षत्र पड़े तो अशुभ, वादविवाद, रोग, धनहानि आदि। वृत्त के अन्दर पड़े तो आयवृद्धि, धनलाभ, हर्ष, मित्रों का मिलन आदि शुभ फल हो। यदि वृत्त के बाहर (३,६,१०,१३,१७,२०,२४,२७ अंको पर) पड़े तो कुछ प्रसन्नता और कुछ दु:ख। आधा दिन अच्छा और आधा क्लेश, चिन्ता, धन हानि से बीतेगा। इस प्रकार आप रोज देख सकते हैं कि "आज का दिन कैसा बीतेगा।"

शनि पीड़ा नाशक यंत्र

यदि किसी व्यक्ति को शनि की ढैया या साढ़ेमाती के कारण बहुत परेशानी आ रही है हो तो चित्र में दिये हुए यंत्र को एक पत्थर की स्लेट के टुकड़े पर लकड़ी के कोयले से शनिवार को व्रत रख कर लिखें। तथा उस शनि से परेशान व्यक्ति के ऊपर सिर से पैरों की ओर सात बार उतार कर उस व्यक्ति के द्वारा ही किसी ऐसे कुएं (या पानी के तालाब) में फिकवादें जिसका पानी वह स्वयं कभी न पियें। उसके बाद वह पीछे मुड़कर न देखें। यह कार्य सांय काल को अधिक प्रभावशाली रहता है। ऐसा करने से उसको शनि की पीड़ा से मुक्ति मिल जाएगी यह अनुभूत है।

यंत्र

१०	३	८
५	७	९
६	११	४

सर्वरोग नाशक यंत्र

मंगलवार के दिन भोजपत्र पर अनार की कलम और केशर की स्याही से लिखें। देवदत्त के स्थान पर रोगी का नाम लिखें। फिर उस भोजपत्र को लपेट कर तावीज के रूप में लाल कपड़े में लपेटकर सिल लें। और धूपदेकर तथा घी के दीपक के ऊपर ७ बार फिराकर अपने दाहिने बाजू में बांध लें। यह क्रिया करते समय कोई देखे या टोके नहीं इसलिए एकान्त में करना चाहिये। इसके बांधने से प्राय: सभी रोग नष्ट हो जाते हैं और सुख मिलता है।

यंत्र

ह्रीं	श्रीं	श्रीं	श्रीं
ह्रीं	देवदत्त		ह्रीं
श्रीं			श्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

व्यापार में वृद्धिकारक लक्ष्मी यंत्र

दीपावली की रात्रि में भोजपत्र पर अनार की कलम और अष्टगंध की स्याही से लिखकर गुग्गुल की धूप तथा दीप से यंत्र की पूजा करें। और उसी समय "ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नम:" मंत्र की २१ माला (१०८ दानेवाली) जपकर प्रत्येक माला के बाद यंत्र पर फूंक मारें। फिर इस यंत्र को दुकान की गद्दी के नीचे लाल कपड़े में लपेट कर रख दें तथा नित्य प्रात: स्नान करके गद्दी पर बैठने से पहले धूप दीप से पूजा करके तब गद्दी पर बैठें। ऐसा करने से कुछ ही दिनों में व्यापार में आश्चर्य जनक तरक्की होगी।

यंत्र

१०	१८	१	१४	२२
११	२४	७	२०	३
१७	५	१३	२१	९
२३	६	१९	२	१५
४	१२	२५	८	१६

शत्रु दमन कारक यंत्र

इस यंत्र को चिता की भस्म की पानी में स्याही बनाकर आक (मदार) की लकड़ी की कलम से भोजपत्र पर लिखकर मंगल वार के दिन श्मशान की अग्नि में शत्रु का नाम लेकर डालने से शत्रु पूरी तरह से परास्त होकर वशीभूत हो जाता है और हमेशा के लिए दास बन जाता है।

यंत्र

६	७	२
१	५	९
८	३	४

मुकदमा जीतने का यंत्र

मंगलवार के दिन भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से लिखकर किसी तांबे के तावीज में भरकर, गुग्गुल की धूप देकर तथा घी के दीपक से पूजा करके अपने गले या दाईं भुजा में बांधें जब तक अंतिम फैसला न हो जाय बांधे रखें। मुकदमें में विजय होगी।

यंत्र

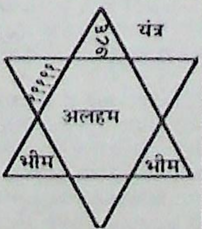

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारक मंत्र, यंत्र

सूर्य:- यदि सूर्य गोचर में ४, ८, १२वें हो तो कष्ट, रोग, धनहानि, असफलता प्रदान करता है। यही फल विंशोत्तरी दशा आने पर भी करता है। इसके निवारण के लिए सूर्य के बीज मंत्र "ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं स: सूर्याय नम:" का ७००० जप उपयुक्त रहता है। किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से आरंभ करें। लाल कपड़ा, गुड़, ताम्र पात्र, गेहूं का दान करें। रक्त पुष्पों से सूर्य की पूजा करें। सूर्य यंत्र को अष्टगंध की स्याही व अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर धूप दीप देकर ताबीज की भांति दाहिनी भुजा में रविवार प्रात: को ही धारण करें तो अरिष्ट निवारण होता है, सुखशान्ति मिलती है। ये सभी यंत्र सर्वार्थसिद्धि मुहूर्त में धारण किये जायें तो उत्तम है।

सूर्य यंत्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

चंद्रमा :- यदि चंद्रमा के कारण अरिष्ट हो रहा है तो इसके निवारण के लिए किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से "ॐ श्रां श्रीं श्रौं स: चन्द्रमसेनम:" मंत्र का चन्द्रोदय समय में ११००० जप करें। जप एक सी संख्या में करें। कभी ज्यादा कभी कम, ऐसा न करें। श्वेत फूलों से चंद्रमा की पूजा करें। चांदी, चावल, चीनी, दही, श्वेत वस्त्र, श्वेत चंदन का दान करें। चन्द्र यंत्र को चांदी के तावीज या श्वेत वस्त्र के ताबीज में (भोजपत्र पर अष्टगंध से अनार की कलम से लिखकर) दायीं भुजापर धारण करें। सुख-शान्ति होगी।

चन्द्र यंत्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

मंगल: मंगल एक पापी ग्रह है। गोचर में ४, ८, १२वें स्थान में आने पर या विंशोत्तरी दशा आने पर या जन्म कुण्डली में अशुभ होने पर बहुत हानिकरता है। इसकी शान्ति के लिए बीज मंत्र "ॐ क्रां क्रीं क्रौं स: भौमायनम:" का शुक्लपक्ष के प्रथम मंगलवार से जप आरम्भ करें। लाल फूलों से मंगल की पूजा करें। सोना, ताम्रपात्र, गुड़, घी, लाल वस्त्र, मसूर, केसर, लालचंदन का दान करें। अष्टगंध, अनार की कलम से भोजपत्र पर भौमयंत्र लिखकर, धूप, दीप देकर दायीं भुजा में धारण करें। शांतिहोगी, दुख दूर होंगे।

मंगल यंत्र

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

बुध:- पापी या क्रूर ग्रहों के साथ जन्म कुण्डली में बुध के बैठ जाने से बुध भी अनिष्ट कारक फल देता है। इसके निवारण के लिए बुध के बीजमंत्र "ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं ब्रीं स: बुधायनम:" का शुक्ल पक्ष के ज्येष्ठ बुधवार से जप प्रारम्भ करें। सुवर्ण, कांसा, मूंग, खांड, घी, हरावस्त्र, फल का दान करें, जप ९००० हजार करें। केशर या अष्टगंध की स्याही तथा अनार की कलम से भोजपत्र पर बुधयंत्र लिखकर हरे वस्त्र के ताबीज में रखकर, धूपदीप देकर दांयी भुजा में बांधे तो अवश्य कष्ट निवारण होगा।

बुध यंत्र

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

बृहस्पति:- यद्यपि गुरु शुभ ग्रह है किन्तु यदि गोचर में ४, ८, १२ हो तो विवाहादि शुभ कार्यों में अड़चन डालता है। अन्य प्रकार से भी अनिष्टकारक हो सकता है। इसकी शांति के लिए बीजमंत्र "ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं स: गुरवे नम:" का १९००० जप करें। जप शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार से शुरू करें। सोना, चने की दाल, घी, पीला वस्त्र, केले के फल, हल्दी का

गुरु यंत्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दान करें। भोजपत्र पर केशर की स्याही व अनार की कलम से गुरु यंत्र लिखकर तथा सोने के या पीले वस्त्र के तावीज में रखकर दांये हाथ में धारण करें। जप के लिए पीली माला लें।

शुक्र :- शुक्र के अनिष्ट कारक प्रभाव को दूर करने के लिए शुक्र के बीज मंत्र "ॐ द्रां द्रीं द्रौं स: शुक्राय नम:।" का १६००० जप करें। श्वेत चंदन की माला प्रयोग करें। चांदी, चावल, चीनी, दूध, श्वेत वस्त्र, दही का दान करें। जप प्रात: सूर्योदय काल में करें। अष्टगंध तथा अनार की कलम से भोजपत्र पर शुक्र यंत्र लिखकर धूपदीप देकर श्वेत वस्त्र या चांदी के तावीज में रखकर दांयी भुजा में धारण करें। अवश्य सुख व शान्ति मिलेगी।

शुक्र यंत्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

शनि :- शनि एक क्रूर ग्रह है। बड़ा विनाशक ग्रह है। इसकी शांति के लिए बीजमंत्र "ॐ प्रां प्रीं प्रौं. स: शनये नम:" का कृष्णा पक्ष के प्रथम शनिवार से जप प्रारम्भ करें। जप संध्याकाल में करें। नीलम, लोहा, उड़द, तेल सरसों, कुलथी, काला, कम्बल व वस्त्र दान करें। जप संख्या २३००० है। भोज पत्र पर अनार की कलम व अष्टगंध की स्याही से शनि यंत्र लिखकर काले कपड़े या सोने के तावीज में मंढवा कर धारण करें। शनि का प्रभाव दूर होगा।

शनि यंत्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

राहु: शनि की भांति राहु भी एक क्रूर छाया ग्रह है। इसकी शांति के लिए कृष्ण पक्ष के प्रथम शनिवार से बीजमंत्र "ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं स: राहवेनम:" का जप रात्री के प्रथम प्रहर में कम्बल के आसन पर बैठ कर करें। जप संख्या १८००० है। तिल, सरसों, तेल, नीले वस्त्र, कम्बल (काले) का दान करें। भोजपत्र पर अनार की कलम तथा अष्टगंध की स्याही से राहुयंत्र को लिखकर, धूप दीप देकर, सोने के तावीज में रख कर धारण करें।

राहु यंत्र

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

केतु :- मंगल की भांति केतु भी अनिष्ट कारक छाया ग्रह है। इसकी शांति के लिए शुक्लपक्ष के प्रथम मंगलवार से बीजमंत्र "ॐ स्रां स्रीं स्रौं स: केतवे नम:" से १७००० जप करें। लहसुनियां, सुवर्ण, लोहा, तिल, सप्तधान्य, तेल, धूम्रवस्त्र, नारियल का दान करें। केतु के यंत्र को राहु की भांति धारण करें।

केतु यंत्र

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

कतिपय चमत्कारी मंत्र

(१) व्यापार वृद्धि के लिए :- "भंवर बीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहा कर मेरा, उठे तो डंडी बिकैजो माल, भंवरवीर सोखे नहिं जाय।" रविवार के दिन प्रात:काल स्नान करके १ माला जप करें। फिर ११ दाने उड़द के इसी मंत्र से ११ बार पढ़कर अपनी व्यापार की गद्दी पर फैंक दें। तीन रविवार लगातार ऐसा करने से व्यापार में अवश्य वृद्धि होती है।

(२) सर्व मनोकामना पूर्ति के लिए :- श्री दुर्गामाता की मूर्ति सामने रखकर उसका विधिवत पूजन करके, हाथ में जल लेकर अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए संकल्प करें। फिर निम्नमंत्र का सवालाख जप करें। तो निश्चित मनोकामना पूर्ति होती है। मंत्र "ॐ सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमस्तुते॥"

(३) विवाह सम्पन्न करने के लिए:- "ॐ गौरी आवे शिवजी ब्याहवै, अमुक को विवाह तुरंत सिद्ध करै, देर न करै, देर होय तो शिवजी का त्रिशूल पड़े, गुरू गोरखनाथ की दुहाई फिरै" इस मंत्र का ११ दिन तक लगातार एक माला रोज, जप करै, दीपक व धूप बालै। ग्यारहवें दिन रात को एक कोरे कुल्हड़ में सात डली नमक की, सात काली मिर्च लाल कपड़े में बांधकर रखदें। कुल्हड़ का मुंह भी लाल कपड़े से बांध दें। कुल्हड़ पर बाहर की ओर सात बिन्दी कुमकुम की लगाकर और ऊपर लिखे मन्त्र की पांच माला जप करके, चुपचाप कुल्हड़ को आधी रात को किसी चौराहे पर रख आवें, पीछे मुड़कर न देखें। सारी रुकावटें दूर होकर बहुत जल्द शादी हो जाती है।

(४) आधाशीशी दूर करने का मंत्र:- ॐ नमो बन में ब्याई बानरी, उछल वृक्ष पै जाय। कूद कूद शाखान पै कच्चे बन फल खाय। आधा तोड़े आधा फोड़े आधादेय गिराय, हंकारत हनुमान जी आधा शीशी जाय" इस मंत्र से नीम की डाल या राख से रोगी को दक्षिण को मुख करा कर झाड़ा दें तो तीन दिन में आधा शीशी बिल्कुल ठीक हो जाती है।

(५) पुत्रदायक मंत्र:- "ॐ देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते, देहिमे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गत:।" शुद्ध आसन पर पूर्व मुख होकर तुलसी या रुद्राक्ष की १०८ दाने की माला से सवा लाख जप करें। जप के बाद शहद, घी, शक्कर, तिल मिश्रित सामग्री से १०००० आहुतियों का हवन करें। १००० तर्पण, १०० मार्जन करें। भगवान कृष्ण का ध्यान करें, अभक्ष्य चीजों से दूर रहें। भगवान अवश्य कामना पूर्ति करेंगे।

(६) रोग नाश के लिए मंत्र :- "ॐ रोगान शेषानपहं सितुष्टा, रुष्टा तु कामान सकलान भीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिताह्याश्रयतां प्रयांति।" इस मंत्र का दुर्गा सप्तशती में दी हुई विधि से सवा लाख मंत्र जप करें तो माँ भगवती की कृपा से कठिन से कठिन रोग से भी मुक्ति मिलती है।

(७) धन प्राप्ति के हेतु महालक्ष्मी मंत्र:- श्री लक्ष्मी नारायण जी की मूर्ति के समक्ष, धूप, दीप, फल, मिष्ठान्न रखकर मंत्रजप करें। मूर्ति का मुख पूर्व दिशा में तथा जपकर्ता का मुख उत्तर को रहे जलकलश पर नारियल अवश्य रखें। मंत्र "ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं कमले कमला लये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नम:।" सवा लाख मंत्र जप, हवन करें।

(८) शत्रु विनाशक मंत्र:- शत्रु विनाश के लिए श्री बगलामुखी मंत्र से बढ़कर अन्य कोई मंत्र नहीं है। पीली धोती व दुपट्टा आदि कपड़े धारण करे। बगलामुखी का चित्र सामने रख कर उसकी विधिवत पूजा करें, पीले फूल चढ़ावें, पीले मिष्ठान्न से भोग लगावें, पीली माला (हल्दी की) प्रयोग करें। ५१००० जप करें। जप के बाद नीम के पत्ते, कौए के पंख तथा सरसों के तेल से हवन करें। तो शत्रु का विनाश होता है। मंत्र-"ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा॥"

(९) रोग निवारण तथा दीर्घायु प्राप्ति के लिए:- इसके लिए महामृत्युञ्जय मंत्र का शिव की मूर्ति के समक्ष बैठकर विधि पूर्वक जप करें। जप सवा लाख हो, बाद में हवन, तर्पण, मार्जन दशांश करें। मंत्र "ॐ ह्रौं जूं स:।ॐ भूर्भुव: स्व:।ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम् उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। ॐ स्व: भुव: भू:। ॐ स: जूं ह्रौं ॐ।

(१०) मृत संजीवनी मंत्र :- ॐ तत्सवितुर वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं भर्गो देवस्य धीमहि, उर्वारुक मिव बन्धनात् धियो योन: प्रचोदयात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॐ।। इस मंत्र के सविधि जप से अकालमृत्यु भी टल सकती है।

(११) बिच्छू का विष उतारने का मंत्र:- "ॐ नमो आदेश गुरू को। कालो बिच्छू कांकरवालो, उतर बिच्छू न कर टालो, उतरै तो उतारूं चढ़ै तो मारूं, गरुड़ मोर पंख हंकालूं। शब्द सांचा पिंड कांचा फुरोमंत्र ईश्वरो वाचा।" इस मंत्र को सूर्य ग्रहण में जितना जप संभव हो सके, जप करके सिद्ध करलें। फिर चिमटा, चाकू या झाडू से ७ बार मंत्र पढ़कर झाड़ा दे दें। विष उतर जायेगा।

(१२) पीलिया दूर करने का मंत्र:- "ॐ नम: आदेश गुरू को श्रीराम सर साधा लक्ष्मण साधा वाण, काला पीला रीता नीला थोथा पीलो पीला पीला चारों गिरि जहि तो श्री रामचन्द्र जी रहे नाम। हमारी भक्ति गुरू की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।" पहले इस मंत्र को सूर्यग्रहण या दिवाली की रात को अधिक से अधिक (१००००) जप करके सिद्ध कर लें। बाद में रोगी को पीतल के पात्र में शुद्ध जल देकर मंत्र का उच्चारण करते हुए सुई से सात बार शनिवार के दिन झाड़ें। सात शनिवार तक क्रिया करें। अवश्य लाभ होगा।

द्वादश राशियों के देवता औरजपनीय मंत्र:- स्तोत्र ग्रंथों के अनुसार यदि व्यक्ति अपनी जन्म या नाम राशि के देवता का नियमित रूप से एक माला का जप करता रहे तो उसकी आपदा, कष्ट, रोगादि का स्वत: ही निवारण होता रहता है। राशियों के मंत्र निम्न प्रकार हैं **(१) मेष**- "ॐ विष्णवे नम:" **(२) वृष**-"ॐ वासु देवाय नम: **(३) मिथुन** :- ॐ केशवाय नम: **(४) कर्क** :- "ॐ राधा कृष्णायनम:" या "ॐ हरिहराय नम:"। **(५) सिंह**- "ॐ बालमुकुन्दाय नम: **(६) कन्या**:- "ॐ ह्रीं पीतम्बराय परमात्मने नम: **(७) तुला** :-ॐ श्रीराम दाशरथये नम:। **(८) वृश्चिक**:- "ॐ नमो नारायणाय नम:" **(९) धनु**- ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं धरणी धराय नम: **(१०) मकर** :- ॐ श्री वत्साय उपेन्द्राय नम: **(११) कुम्भ राशि**- के देवता गोविन्द गोपाल हैं। "ॐ गोपाल गोविन्दाय नम:।" **(१२) मीन**- ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं रथाङ्गचक्राय नम:।"

॥ चमत्कारी यंत्रों द्वारा सिद्धि ॥

(१) शत्रु को वश में करने का यंत्र :- इस यंत्र को कागज पर हाथी दांत से लिखकर मरघट में गाड़ दें तो शत्रु वश में हो जाय।

५८	३७	५	८
७८	९	२	५२
५४	५	८४	९९
७	८७	६८	५८

यंत्र-१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(२) परदेशी को वापिस बुलाने का यंत्र:- इस यंत्र को तथा आने वाले का नाम तालाब की मिट्टी से बड़ के पत्ते पर लिखकर आगन्तुक की दिशा में गाड़ दे वह शीघ्र आ जावेगा।

३८	६५	१	२१
१०	६३	६५	१६
४	५	८७	९१
३९	२८	२८	२८

यंत्र-२

(३) भूत प्रेत नाशक यंत्र:- यंत्र (३) को असगंध से भोजपत्र पर लिखकर घर में रखें तो भय नहीं रहता। या इस यंत्र को चांदी के वर्क पर या भोजपत्र पर श्मशान की मिट्टी से लिखकर भूत के सताये रोगी के सिर पर दो मिनट रखकर तालाब में फेंक आवें तो भूत भाग जाता है।

८५	५६	९	१२
१	६१	६२	१४
४६	४	१८	९१
८	६७	२८	५८

यंत्र-३

(४) बवासीरनाशक यंत्र:- रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में इस यंत्र को भोजपत्र पर नीबू के रस से लिखकर गले में बांध लें तो बवासीर से मुक्ति मिलती है।

९	३	८	१३
६५	४	१०	७७
७	६	१५	८०
१२	८२	११	१४

यंत्र-४

(५) पुरुष वशीकरणमंत्र:- इस यंत्र (५) को भोजपत्र पर पान के रस या केशर से लिखें। अनार की कलम बनावें। फिर स्त्री उसे अपनी साड़ी में या भुजा में बांध ले तो उसका पुरुष उसके वश में रहता है।

१	६५	२	९२
७५	९	२	५२
९७	२८	८३	९१
६	७	३९	४५

यंत्र-५

(६) सर्व कार्य सिद्धि यंत्र :- इस यंत्र (६) को भोजपत्र पर अष्टगंध से अनार की कलम से लिखें। गुग्गुल, असगंध की धूप दे कर तांबे के तावीज में भुजा में बांध लें तो मनचाहा कार्य सिद्ध हो।

५७	५८	९	११
३३	५७	४८	३७
८६	६	४४	६८
२५	५५	६५	९

यंत्र-६

(७) नजर (दीठि) दूर करने का यंत्र :- यंत्र (७) को भोजपत्र पर अनार की कलम तथा केसर की स्याही से लिखकर तांबे के तावीज में मढ़कर इतवार या मंगलवार के दिन बच्चे के गले में बांध दें तो बच्चे को कभी नजर न लगे।

४६	६	८५	८५
९	८	४२	२५
७८	७२	८	५
७	५	३५	८

यंत्र-७

(८) सर्व बाधानाशक यंत्र:- पैंसठिया यंत्र यह यंत्र सब प्रकार की बाधाओं को नाश करता है। इस यंत्र को भोजपत्र पर, अनार की कलम तथा अष्टगंध की स्याही से लिखें। इस यंत्र के चारों ओर ' ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नम:' लिखें। दीपावली की रात को यह यंत्र बनावें। गूगुल की धूप दें। महालक्ष्मी मंत्र का १००८ बार जप कर चांदी के तावीज में मंढवाकर दाहिनी भुजा में बांध लें। तो धन सम्बंधी सारी परेशानियां दूर हो जाती हैं। महालक्ष्मी मंत्र " ॐ श्रीं ह्रीं श्री कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्ये नम: ॥"

यंत्र-८

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

(९) मुकद्दमा जीतने का यंत्र :- दीपावली की रात को या चंद्र ग्रहण या सूर्य ग्रहण में इस यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से लिखकर गूगुल, असगंध की धूप देकर चांदी के तावीज में मंढवाकर गले या दांये बाजू में जब तक मुकदमा चले तब तक बांधे रहें। मुकदमे में अवश्य विजय होगी। शराब, मांस का परहेज रखें।

यंत्र-९

५९२	५९९	२	७
६	३	५९६	५९५
५९८	५९३	८	१
४	५	५९४	५९७

(१०) गर्भधारण यंत्र:- जिस स्त्री के गर्भ धारण में असुविधा हो रही हो उस की बांयी भुजा में इस यंत्र को जिस दिन रविवार को मूल नक्षत्र हो उस दिन भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से लिखकर धूपदीप देकर चांदी के तावीज में रखकर बांध दें। अवश्य सिद्धि होगी।

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

यंत्र-१०

॥ अंग्रेजी जन्म दिनांक के अनुसार महत्वपूर्ण वर्ष ॥

जनवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के लिए १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६वें वर्ष भी महत्वपूर्ण होते हैं। इनका १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। जन. २, ११, २०, २९ को जन्मे व्यक्तियों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका २, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से स्नेह होता है। जन. ३, १२, २१, ३० को जन्मे लोगों के ३, ८, १२, १७, २१, २६, ३०, ३५, ३९, ४४, ४८, ५३, ५७, ६२, ६६वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। जन. ४, १३, २२, ३१ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होगा। जन. ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ तथा १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ५, १४, २३, तिथि को जन्मे व्यक्तियों से आकर्षण होता है। जन. ६, १५, २४ को जन्मे व्यक्तियों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ विशिष्ट होते हैं तथा ६, १५, २४ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। जन. ७, १६, २५ में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्व के होते हैं। २, ७, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। जन. ८, १७, २६ को जन्मे व्यक्तियों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२वेंवर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीखें जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। जन. ९, १८, २७ में जन्मे लोगों के लिए ९, ८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१, ९० वें वर्ष उत्कर्ष के होते हैं। तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २७, ३० तारीख में जन्मे लोगों सें आकर्षण होता है।

फर. १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से इन का लगाव होता है। फर. २, ११, २०, २९ में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१ वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति आकर्षण अनुभव करते हैं। फर. ३, १२, २१ को जन्मे व्यक्तियों के ३, १२, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ वें वर्ष उत्कृष्ट होते हैं। ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लागों के प्रति इनका लगाव होता है। फर. ४, १३, २२ को जन्मे लोगों के मुख्य वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९ ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ और ७६ हैं। १, ४, ८ ,१०, १३, १७, १९, २२, २६, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों से गहरा आकर्षण होगा। फर. ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण हैं। दिनांक ५, १४, २३ को जन्मे व्यकित्यों से गहरा लगाव होगा। फर. ६, १५, २४ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६८, ८७वें महत्वपूर्ण होते हैं। तथा ६, १५, २४ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। फर. ७, १६, २५ को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५ तथा ७० वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। इनके लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ में उत्पन्न लोग विशेष आकर्षण का कार ' होते हैं। फर. ८, १७, २६ इनके लिए

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से इनका गहरा लगाव होता है। फर ९, १८, २७ इनके जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं तथा ९, १८ तारीख को जन्मे लोगों का ८, ९, १७, १८, २६, २७ तारीख वालों की ओर तथा २७ को जन्मे लोगों का ३, ९, १२, १८, २१, २७ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

मार्च १, १०, १९, २८ में जन्मे लोगों के जीवन के १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१, ३७, ३९, ४०, ४८, ४९, ५०, ५७, ५८, ६४, ६६, ६७, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च २, ११, २०, २९** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ था ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७० हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च में ३, १२, २१, ३०** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ होते हैं तथा तारीख ३, ६, ९, १२, १५, २१, २४, २७, ३० में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ४, १३, २२, ३१** [illegible] जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्पूर्ण वर्ष, १, ४, १०, १३, १९, २३, २८, ३१, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ हैं। और १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में पैदा हुए लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ होते हैं और ३, १२, २१, ३० तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६० तथा ७८ होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **मार्च ८, १७, २६** में जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६७, ७१, ७६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ४, ८, १२, १३, १७, २१, २२, २६, ३०, ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मार्च ९, १८, २७** में जन्मे लोगों के जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तथा १, १०, १९, २८ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

अप्रैल १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ३७, ४५, ४६, ५४, ६४, ७२, ७३ होते हैं। तथा १, ४, ८, ९, १०, १३, १७, १८, १९, २२, २६, २७, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ९, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ५२, ५४, ६१, ६३, ७०, ७२, ८१ वर्ष महत्पूर्ण होते हैं। **अप्रैल ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९ होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ४, १३, २२** में जन्मे लोगों को जीवन के ४, ८, १३, १९, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६९ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं तथा ४, ८, १३, २२, २६ तथा ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अप्रैल ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ हैं। इनका ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ७, १६, २५** जन्मदिन वाले लोगों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्पूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ८, १७, २६** जन्म तिथि वाले लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ८, १३, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७६ होते हैं। ये ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **अप्रैल ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ होते हैं। १, १०, १९, २८, ९, १८, २७ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है।

मई १, १०, १९, २८ जन्म तिथि वालों के लिए १, २, १०, ११, १५, १९, २१, २४, २८, २९, ३३, ३७, ३८, ४२, ४६, ४७, ५१, ५५, ५६, ६०, ६४, ६५, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। इनका १, २, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **मई २, ११, २०, २९** जन्म तिथि वाले लोगों के भाग्यशाली वर्ष २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९ होते हैं। तारीख १, २, ६, ७, १०, ११, १५, १६, १९, २०, २४, २५, २८, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६, ६९ वर्ष उत्कर्ष वाले होते हैं। ये ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **मई ४, १३, २२, ३१** जन्म दिन वालों के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ६, १३, २२, १५, २४, ३१, ४०, ४२, ४९, ५१, ५८, ६०, ६७, ६९ होते हैं। किसी भी माह की ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१ ता. को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए भाग्यशाली वर्ष ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ६९, ७७ होते हैं। तारीख ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति खास लगाव होता है। **मई ६, १५, २४** इनके भाग्यशाली वर्ष २, ६, १५, २०, २४, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५६, ६०, ६५, ६९, ७८ होते हैं। २, ३, ६, मूलांक वाली तारीखों को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मई ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५६, ६१, ६९वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। किसी माह की २, ७, ११, १६, २०, २८, २५, १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **मई ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं, और ४, ८, १३, १७, २२, २६ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **मई ९, १८, २७** को जन्मे व्यक्तियों के विशेष महत्वपूर्ण वर्ष ६, ९, १५, १८, २४, २७, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६९, ७२ होते हैं और ६, ९, १५, १८, २४, २७ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है।

जून १, १०, १९, २८ जन्मतिथि के लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१, ३२, ३७, ४०, ४१, ४६, ५०, ५५, ५८, ५९, ६४, ६८, ७३ होते हैं तथा १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **जून २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के २, ४, ५, ११, १३, १४, २०, २२, २३, २९, ३१, ३२, ३८, ४०, ४१, ४७, ४९, ५०, ५६, ५८, ५९, ६६, ६७, ६८ वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। **जून ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३०, ३२, ३९, ४१, ४८, ५०, ५७, ५९, ६६, ६८, ७५ होते हैं। ये ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण रखते हैं। **जून ४, १३, २२** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१, ३२, ४०, ४९, ५०, ५९, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६९, ६८९ तथा ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **जून ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ७८ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **जून ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ६२, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **जून ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८ विशेष महत्व के होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं।

जुलाई १, १०, १९, २८ जन्म तिथि वालों को १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१, ३४, ३७, ३८, ४०, ४३, ४७, ४९, ५२, ५५, ५६, ५८, ६१, ६४ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के जीवन के वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० अच्छे होते हैं। दि. १, २, ७, १०, ११, १६, १९, २०, २५, २८, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जु. ३, १२, २१, ३०** जन्मतिथि वालों को ३, १२, १६, २०, २१, २५, ३०, ३४, ३९, ४३, ४८, ५२, ५७, ६१ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ३, ७, ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे व्यक्तियों के प्रति तीव्र आकर्षण रखते हैं। **जुलाई ४, [illegible], २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों को ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों को ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्व के होते हैं। तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जुलाई ६, १५, २४** लोगों के जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९, ७० वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. ६, १५, २४, ३, ९, १२, १८, २१, २७, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **जुला. ७, १६, २५** वाले जन्म दिन के लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० तथा ७९वें वर्ष विशेष महत्व के होते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। जु ८, १७, २६ को जन्मे लोगों के लिये ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **जुलाई ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए १, ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ४५, ४६, ५४, ५५, ६३, ६४, ७२वें वर्ष अति महत्वपूर्ण होते हैं। तथा ९, ८, २७ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

अगस्त १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३, ७६ महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं। ये दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **अगस्त २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनके दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **अगस्त ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए १, ३, १०, १२, १९, २१, २८, ३०, ३७, ३९, ४६, ४८, ५५, ५७, ६४, ६६ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। **अगस्त ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३८, ४०, ४९, ५५, ५८, ६४, ७३ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. ४, १३, २२, ३१, ८, १७, २६ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष रूप से आकर्षित होते हैं। **अगस्त ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ६, १५, २४** वाले लोगों को १, ६, १०, १५, १९, २४, २८, ३३, ३७, ४२, ४६, ५१, ५५, ६०, ६४, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **अगस्त ७, १६, २३** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०, ७४ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ ता. में जन्म लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण का अनुभव करते हैं।

सितम्बर १, ९, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १, १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. २, ११, २०, २९** जन्मदिन वालों को २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. २, ७, ११, १६, २०, २५ और २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **सितं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, १२, २१, ३०, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष महत्व के होते हैं। ३, ५, ६ मूलांक वाली तिथियों में जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। सितं. ४, १३, २२ को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६ को जन्मे लोगों से आकर्षण रखते हैं। **सितं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, १४, २३ को जन्मे लोगों के प्रति आगकर्षण का अनुभव करते हैं। **सितं. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, ४, २३, ६, २४, २५ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **सितं. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण रहता है। **सितं. ८, १७, २६** तिथि को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं, तथा दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **सितं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९ के क्रम में जन्मे लोगों से इनका विशेष लगाव होता है।

अक्तू. १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के १, ६, ८, १०, १५, १७, १९, २४, २६, २८, ३३, ३५, ३७, ४२, ४४, ५१, ५३, ५५, ६०, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ४, ६, ८, १०, १३, १५, १७, १९, २२, २४, २६, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं। **अक्टू. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ६०, ६६, ६९ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ७६, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। तारीख ५, ६, ८, १४, १५, १७, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ६, १५, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अक्तू. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के उत्कर्ष वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अक्तूबर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के उत्कर्ष के ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष होते हैं। दिनांक ८, १७, २६ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ होते हैं। दि ६, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

नवम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ विशेष महत्व के होते हैं। दिनांक १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाब होता है। **नवं. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ७, ११, १६, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ९, १२, १८, २१, २७, ३०, ३६, ४८, ५४, ५७, ६३, ६६, ७२, ७५ वर्ष महत्पूर्ण होते हैं। दि. ३, १२, १८, २१, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवं. ४, १३, ३२** को जन्मे लोगों के जीवन के वर्ष ४, ८, ९, १३, १७, १८, २२, २६, २७, ३१, ३५, ३६, ४०, ४४, ४५, ४९, ५३, ५४, ५८, ६२, ६३, ६७ और ७१ महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, ९, १३, १७, १८, २२, २६, २७ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत ही लगाव होता है। **नव. ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५८, ६३, ६८, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **नवं. ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, ९, १५, १८, २४, २७, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६९ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ६, ९, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **नवं. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के २, ७, ९, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ४७, ५२, ५४, ५६, ६१, ६३, ६५, ७०, ७२ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। इन लोगों का दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवं. ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ७६ वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षित होते हैं। **नवं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। **दिनांक ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

दिसम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ७, १०, १६, १९, २४, २८, ३४, ३७, ४३, ४६, ५२, ५५, ६१, ६४, ७० होते हैं। तथा १, ३, १०, १२, १९, २१, २८, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ३, ७, ११, १२, १६, २१, २५, २९, ३०, ३४, ३८, ३९, ४३, ४७, ४८, ५२, ५७, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ३, ७, ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के जीवन के ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। दिसं. ४, १३, २२, ३१ को जन्मे लोगों के जीनव के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ३, ४, ८, १०, १२, १३, १७, १९, २१, २२, २६, २८, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ३, ६, १२, १४, २१, २३ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **दिसं. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसं. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं। दिसं. ७, १६, २५ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसं. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसं. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१** को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **दिसं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसं. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शनि का पाया विचार

जब शनि एक राशि को भोग कर दूसरी राशि में प्रवेश करे उस समय चंद्रमा जिस राशि में संचार कर रहा हो उसे ज्ञात करें। जिन पर शनि की साढ़ेसाती या ढैय्या आई हो वे अपनी जन्म (या नाम) राशि से चंद्रमा की राशि तक गिनें। यदि उन की राशि से चंद्रमा की राशि २, ५, ९वीं हो तो उन पर शनि चांदी के पाये से आया समझें। चांदी का पाया शुभ होता है। यदि शनि ढैय्या या साढ़ेसाती के कारण अनिष्ट फल करता है तो चांदी के पाये से आने के कारण उतना अशुभ नहीं करता अपितु कुछ शुभ ही करता है। यदि जन्म राशि (नाम राशि) से चंद्र राशि ३, ७, १०वीं हो तो शनि को तांबे के पाये से आया समझें। यदि चंद्र राशि १, ६, ११वीं हो तो सुवर्ण पाद से आया समझें। तांबे का पाया सामान्य शुभ होता है परन्तु सुवर्ण पाद से आने पर चिन्ता, क्लेश, रोग, परिवार में कलह, धन का अपव्यय होता है। यदि जन्म राशि से चंद्र राशि ४, ८, १२वीं हो तो लोहे के पाये से आया समझे जोकि बहुत अशुभ माना जाता है। धन हानि, क्लेश, रोग, बन्धन, मुकद्माबाजी, भ्रमण आदि फल होते हैं।

संक्रान्ति नक्षत्र से जन्म नक्षत्र (या नामनक्षत्र) फल

संक्रान्ति के समय जो नक्षत्र हो उससे प्रारंभ करके जन्म नक्षत्र (नाम नक्षत्र) तक गिनें। यदि प्रथम ३ नक्षत्रों में अपना जन्म या नाम नक्षत्र पड़े तो उसमास में यात्रा करनी पड़े, अगले ६ नक्षत्रों में सुख, उससे आगे के ३ नक्षत्रों में पड़ने से पीड़ा, उससे आगे के ६ नक्षत्रों में वस्त्र का लाभ, उसके बाद ३ नक्षत्रों में धन का नाश और उसके बाद ६ नक्षत्रों जन्म नक्षत्र पड़े तो उस मास में धन का लाभ हो। (मुहूर्त चिन्ता.) स्पष्टार्थ नीचे चक्र दिया है:-

नक्षत्रों में	३	६	३	६	३	६
फल	गमन (यात्रा)	सुख	पीड़ा, कष्ट	वस्त्र लाभ	धन हानि	धन लाभ

ग्रहों के स्वगृह, परमोच्च, परमनीच, मूलत्रिकोणादि विचार

स्वराशि

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सिंह २१से ३० अंश तक	कर्क	मेष १३ से ३० अंश तक वृश्चिक (पू.)	मिथुन (पू.) कन्या में २१ से ३० अंश तक	धनु में ११ से २० अंश तक मीन (पू.)	वृष (पूर्ण) तुला में १६ से ३० अंश तक	मकर (पू.) कुम्भ २१ से ३० अंश तक	कन्या	मीन
सिंह १ से २० अंश तक	वृष में ४ से ३० अंश तक	मेष में १ से १२ अंश तक	कन्या में १६ से २० अंश तक	धनु में १ से १० अंश तक	तुला में १ से १५ अंश तक	कुम्भ में १ से २० अंश तक	मीन	कन्या
मेष के १ से १० अंश तक	वृष के २ से ३ अंश तक	मकर के १ से २८ अंश तक	कन्या के १ से १५ अंश तक	कर्क के १ से ५ अंश तक	मीन के १ से २७ अंश तक	तुला के १ से २० अंश तक	मिथुन में १ से १५ अंश तक	धनु १ से १५ अंश तक
तुला के १ से १० अंश तक	वृश्चिक के १ से ३ अंश तक	कर्क के १ से २८ अंश तक	मीन के १ से १५ अंश तक	मकर के १ से ५ अंश तक	कन्या के १ से २७ अंश तक	मेष के १ से २० अंश तक	धनु के १ से १५ अंश तक	मिथुन के १ से १५ अंश तक

राशियों का शीर्षोदय, पृष्ठोदय, उभयोदय विचार

शीर्षोदय राशियां : मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ
पृष्ठोदय राशियां: मेष, वृष, धन, कर्क, मकर
उभयोदय: मीन
दिन बली राशियां: सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ।
रात्रि बली राशियां: मेष, वृष, मिथुन, धनु, कर्क, मकर
दिनरात्रि बली: मीन

नवग्रहों की समिधायें:-शुभ कार्यों में हवन में आम, ढाक की समिधा प्रयोग होती है परन्तु नवग्रहों के दोष शमनार्थ अथवा इष्ट कार्य की सिद्धि के लिए जब नवग्रहों की प्रसन्नता के लिए हवन किया जाता है तो उसमें प्रत्येक ग्रह के लिए विशिष्ट प्रकार की समिधा से हवन किया जाता है जैसाकि वाशिष्ठी हवन पद्धति में लिखा है-"अर्क: पलाश: खदिर: अपामार्गोऽथ पिप्पल:। औदुम्बर: शमी दूर्वा कुशाश्च समिध: क्रयात्" अर्थात् सूर्य के लिए आक (मदार), चंद्र के लिए पलाश (ढाक), मंगल के लिए खैर, बुध के लिए अपामार्ग (चिड़चिटा), गुरु के लिए पीपल, शुक्र के लिए गूलर, शनि के लिए शमी (छोंकर), राहु के लिए दूर्वा तथा केतु के लिए कुशा से हवन करें। ग्रहों की समिधा प्रादेश मात्र (१२ अंगुल की) दोष रहित हों। फटी हुई, दो शाखा वाली, छोटी, अधिक बड़ी, अधिक मोटी घूमी हुई, कीड़ा लगी (घुनी हुई), पतली न हो।

ग्रहों के लिए वैदिक हवन मंत्र

सूर्य- "ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्- ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय इदं न मम।"

चंद्र- "ॐ इमन्देवाऽसपत्न छ्वसुवद्ध्वम्महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्र स्येन्द्रियाय। इमम मुष्य पुत्रम मुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएषवोमीराजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना छ्व राजा- ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। इदं चन्द्रमसे इदन्न मम।"

मंगल- "ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिव: ककुत्पति: पृथिव्याऽयम्। अपाछ्वरेताछ्वसि जिन्वति- ॐ भौमाय स्वाहा। इदं भौमाय इदन्न मम"

बुध- "ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेप्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते स छ्वसृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थेऽध्युत्तर स्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत- ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय.।"

बृहस्पति-"ॐ बृहस्पतेऽति यदर्य्योऽअर्हाद्युम द्विभाति क्रतु मज्जनेषु। यद्दीदयच्छ वसऽऋत प्रजात दतस्मासुद् द्रविणन्धेहि चित्रम्- "ॐ बृहस्पतये स्वाहा। इदं बृहस्पतये।"

शुक्र- "ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसम्ब्रह्मणा व्यपिवत् क्षत्रम्पय: सोमम्प्रजापति:। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानछ्वशुक्र मन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु-"ॐ शुक्राय स्वाहा इदं शुक्राय इदन्नमम।"

शनि- "ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तुन:" ॐ शनये स्वाहा। इदं शनये इदन्न मम।"

राहु- "ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृध: सखा। कया शचिष्ठया वृता "ॐ राहवे स्वाहा। इदं राहवे इदन्न मम्।"

केतु- "ॐ केतु कृण्वन्न केतवे पेशोमर्य्याऽपेशसे। समुषद्भिर जायथा: "ॐ केतवे स्वाहा। इदं केतवे।"

वर वरण मुहूर्त

"धरणिदेवोऽथवा कन्यकासोदर: शुभदिने गीत वाद्यादिभि: संवृत:। वर वृत्तिं वस्त्र यज्ञोपवीतादिना ध्रुव युतैर्वह्नि पूर्वात्रयैराचरेत॥"

मुहूर्त चिन्तामणि में लिखा है कि शुभदिन (सोम, बुध, गुरु तथा शुक्रवार) में शुभ तिथियों (२, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३) में ध्रुव संज्ञक, कृतिका तथा तीनों पूर्वा नक्षत्रों और विवाह नक्षत्रों में भद्रादिदोष रहित शुभ मुहूर्त में कन्या पक्ष का पुरोहित अथवा कन्या का सोदर भाई गान-वाद्य आदि मांगलिक उपकरणों के साथ द्रव्य (शक्ति अनुसार), वस्त्र, यज्ञोपवीत, फल, फूल मालादि वस्तुओं के द्वारा वर का पूजन करके तिलक करें अर्थात् वरण करें।

कन्या वरण मुहूर्त

"विश्व स्वाती वैष्णव पूर्वात्रयमैत्रैर्वस्वाग्नेयैर्वा करपीडोचित ऋक्षै:।
वस्त्रालङ्कारादि समेतै: फल पुष्पै: सन्तोष्यादौ स्यादनु कन्यावरणंहि॥" (मुहूर्त. चि.)

उत्तराषाढ़ा, स्वाती, श्रवण तीनों पूर्वा, अनुराधा, धनिष्ठा, कृतिका और विवाहोक्त नक्षत्रों में पहले कन्या को वस्त्र, आभूषण (अलङ्करण) द्रव्य, रत्न, फल, मिष्ठान्न, फूल आदि सुन्दर पदार्थों से संतुष्ट करके तत्पश्चात् कन्या का वरण करें (इस रस्म को गोद भरना या चुन्नी चढ़ाना भी कहते हैं)।

यंत्र-मंत्र-तंत्र साधन मुहूर्त

सभी प्रकार के यंत्र, मंत्र तथा तंत्र साधनों के लिए विविध ग्रन्थों में वर्णित सूर्य ग्रहण ही श्रेष्ठतम मुहूर्त माना गया है। कतिपय यंत्र, मंत्र-तंत्र साधनों के लिए दीपावली तथा होली की रात्रि का समय भी उत्तम माना गया है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कुछ विद्वान इस प्रकार की साधनाओं के लिए "सायन संक्रान्ति पुण्यकाल", 'क्रान्तिसाम्य काल' "षडशीति मुख संक्रान्ति काल', 'अर्धोदय', महोदय, महामहावारुणी पर्व, महावारुणी पर्व, तथा वारुणी पर्व को भी सूर्य चंद्र ग्रहण के समान ही महत्वपूर्ण मानते हैं। सर्वार्थसिद्धि योग में भी कुछ लोग यंत्र तंत्र साधते हैं। परन्तु कुछ विद्वानों के अनुससार केवल शुभ तिथि, शुभवार (रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र), शुभ नक्षत्र (अश्वि., मृग, उ.फा., हस्त श्रवणादि) तथा त्रिषडाय में पापग्रह की उपस्थिति और त्रिक भावों की शुद्धि ही पर्याप्त मानी गई है।

जमीन या मकान खरीदने का मुहूर्त

दिन: बुध, गुरु, शुक्रवार, तिथि २, ५, ६, १०, ११, १५, नक्षत्र:मृग, पुनर्वसु, अश्ले, मघा, पू. फा. स्वाती, विशाखा, अनु. मूल, पू. षा., उ. भा., तथा मास-मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन (होलाष्टक त्यागकर), वैशाख तथा ज्येष्ठ मास शुभ हैं।

अथ घात चक्रम्

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
मास	कार्ति.	मार्ग.	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गु.
तिथि	१.६.११	५.१०.१५	२.७.१२	२.७.१२	३.८.१३	५.१०.१५	४.९.१४	१.६.११	३.८.१३	४.९.१४	३.८.१३	५.१०.१५
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाती	अनु.	मूल	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्ले.
योग	विष्कु.	शुक्ल	परिघ	व्या.	धृति	शूल	शूल	व्यति.	वरी.	वैधृति	गण्ड	वैधृति
करण	बव	शकुनि	चतुष्पद	नाग	बव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तु	चतुष्पद
लग्न	मेष	मिथुन	कन्या	मकर	वृष	सिंह	मीन	मिथुन	सिंह	वृश्चिक	मेष	कर्क
प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
चंद्र प.	मेष	कन्या	कुंभ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुंभ
चन्द्र स्त्री	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

नोट:-विवाह व उपनयनादि में यह घात चक्र वर्ज्य नहीं है। केवल द्यूत, प्रवास, राजदर्शन और यात्रा में वर्ज्य है।

त्रिज्येष्ठ विचार

"ज्येष्ठ द्वन्द्वं मध्यमं सम्प्रदिष्टं त्रिज्येष्ठं चेन्नैव युक्तं कदाऽपि।
केचित्सूर्यं वह्निगं प्रोज्झ्य चाऽऽहुर्नैवाऽन्योन्यं ज्येष्ठयोः स्याद्विवाहः॥" (मु. चि. म.)

किसी भी दम्पति की प्रथम सन्तान (प्रथम गर्भ से उत्पन्न सन्तान) को ज्येष्ठ संतान कहा जाता है। यदि वर ज्येष्ठ हो, कन्या भी ज्येष्ठ ही तो इनका विवाह ज्येष्ठ मास में कदापि नहीं करना चाहिये यह अत्यन्त अशुभ योग होता है। यदि कन्या और वर दोनों में से केवल एक (वर या कन्या) ज्येष्ठ हो तो उनका विवाह ज्येष्ठ मास में मध्यम माना गया है। यदि कन्या और वर दोनों ही ज्येष्ठ न हों तो उनका विवाह ज्येष्ठ मास में शुभ है। महर्षि भारद्वाज के मत से जब तक सूर्य कृत्तिका नक्षत्र में रहे तभी तक ज्येष्ठ में विवाह निन्दित है बाद में ज्येष्ठ में भी विवाह करने में कोई दोष नहीं।

त्रिखलजन्म

किसी दम्पति को यदि प्रथम तीन लगातार गर्भों से कन्या ही उत्पन्न हो और चतुर्थ गर्भ से पुत्र उत्पन्न हो अथवा प्रथम तीन लगातार गर्भों से पुत्रोत्पत्ति के पश्चात् चतुर्थ गर्भ से पुत्री उत्पन्न हो तो यह त्रिखल जन्म कहलाता है। इस का महान दोष है। इस दोष के कारण माता पिता को धन हानि, रोग, भय, कष्ट होते हैं अतः त्रिखल दोष की सविधि शान्ति करानी चाहिए।

विवाह में विशेष विषय (कुल तथा समयान्तर) का विचार

अपने कुल (तीन पुरुष के भीतर) के पुत्र के विवाहोपरान्त ६ मास तक पुत्री (कन्या) का विवाह नहीं करना चाहिये परन्तु पुत्री के विवाह के बाद पुत्र का विवाह हो सकता है एवं कन्या, पुत्र के विवाहोपरान्त ६ माह तक किसी का मुण्डन भी नहीं करना चाहिये। दो सोदर (सगे) भाइयों का विवाह दो सोदर (सगी) बहनों से नहीं करना चाहिये। दो सोदर भाइयों या दो सोदर बहनों का विवाह ६ मास के मध्य नहीं करना चाहिये। वर्ष (संवत) बदल जाने पर दोष नहीं होता। शुभकार्य के उपरान्त पितृक्रिया (श्राद्ध) ६ मास तक निषिद्ध है। दो भाई या दो बहन यमल (एक ही गर्भ से उत्पन्न) हों तो उन दोनों का उपनयन या मुंडन या विवाह (एक कर्म) 'वृद्ध मनुः' के मत से ६ मास के भीतर द्वार भेद, मंडप भेद, आचार्य भेद से हो सकता है। महर्षि पराशर जी की भी सम्मति है।

कुण्डली मिलान (ग्रह मेलापक) विचार

विवाह के समय वर कन्या की कुण्डली का मिलान किया जाता है। यदि दोनों कुण्डलियों के मिलाने पर कोई दोष उत्पन्न नहीं होता तभी विवाह सम्पन्न किया जाता है। इस सम्बन्ध में प्रथम तो देखना चाहिये कि कुण्डली मंगली तो नहीं है। यदि दोनों कुण्डली मंगली हों तो विवाह शुभ होता है। कुण्डली में मंगल यदि १, ४, ७, ८, १२वें भाव में हो तो कुण्डली मंगली मानी जाती है। केवल वर की कुण्डली हो, कन्या की न हो तो विवाहोपरान्त कन्या की मृत्यु की सम्भावना रहती है। इसी प्रकार यदि कन्या की कुण्डली मंगली हो, वर की न हो तो वर की मृत्यु का भय रहता है। अतः दोनों की ही कुण्डली मंगली होनी चाहिये। अथवा दोनों कुण्डली मंगली दोष मुक्त होनी चाहिये। विशेष परिस्थितियों में मंगली परिहार के द्वारा भी विवाह किया जा सकता है। जैसे कि एक की कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२ में से जिस भाव में मंगल पड़ा हो तो दूसरे की कुण्डली के उसी भाव में शनि या अन्य पापग्रह विद्यमान हो तो मंगली दोष का परिहार हो जाता है। "**भौमेन सदृशोभौमः पापो वा तादृशोभवेत्। विवाहः शुभदो प्रोक्तश्चिरायुः पुत्र पौत्रदः॥**" चन्द्र कुण्डली से भी इसी प्रकार विचार करके तभी विवाह करना चाहिये। इसके अतिरिक्त जैसाकि प्रचलित है, अष्टकूट परिहार भी करना आवश्यक है। यथा "वर्णोवश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रह मैत्रकम्। गणमैत्रं भकूटं च नाड़ी चैते गुणाधिकाः॥" अष्टकूट हैं। इनमें कन्या वर की राशियों के स्वामी एक ही हों अथवा दोनों में मैत्री हो तो वर्णादि प्रथम ७ भकूटों का दोष परिहार हो जाता है। परन्तु नाड़ी दोष के परिहार के लिए वर कन्या की एक राशि भिन्न नक्षत्र अथवा एक नक्षत्र भिन्न राशि होनी चाहिये। एक राशि व एक ही नक्षत्र होने पर विशेष परिस्थितियों में केवल चरणभेद से ही विवाह संभव है।

चन्द्र बल विचार

विवाहादि अनेक शुभ कर्मों में चंद्रबल का विचार अपेक्षित होता है। अतः जन्मराशि से चन्द्र राशि तक गिनने से यदि चंद्रमा १, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११वें स्थान पर पड़े तो शुभ है। ४, ८, १२वें स्थान का चंद्रमा अशुभ होता है जैसा कि निम्नश्लोक से स्पष्ट है "आद्यश्चन्द्र श्रियं कुर्यान्मनस्तोषं द्वितीयके। तृतीये धन संपत्तिश्चतुर्थे कलहागमः। पंचमें ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे संपत्तिरुत्तमा। सप्तमे राजसन्मानो मरणं चाष्टमे तथा। नवमे धर्म[illegible]श्च दशमे मनसेप्सितम्। एकादशे सर्वलाभो द्वादशे हानि रे व च॥ ताराबलः जन्म नक्षत्र से अभीष्ट समय के नक्षत्र तक गिनकर उस संख्या में ९ से भाग दें। शेष १, २, ४, ६, ८, ० बचे तो तारा शुभ होती उससे ताराबल प्राप्त होता है। यदि ३, ५, ७ बचे तो तारा अशुभ जाननी चाहिये, उससे बल नहीं मिलता। शुक्ल पक्ष में चंद्रबल तथा कृष्ण पक्ष में तारा बल का ग्रहण करना चाहिये।

पितृपरोक्ष ज्ञान

(१) जन्म काल में यदि लग्न को चन्द्रमा न देखता हो तो पिता के परोक्ष (उस जगह पर नहीं रहते) बालक का जन्म जानना, यथा बृहज्जातक में लिखा है "पितुर्जातः परोक्षस्य लग्न मिन्दाव पश्यति। विदेशस्थस्य चरभे मध्याद् भ्रष्टे दिवाकरे॥" (२) लग्न को चन्द्र मान देखता हो तथा सूर्य दशम स्थान से भ्रष्ट अर्थात् अष्टम, नवम, एकादश या द्वादश स्थान में चर राशि का हो तो पिता को विदेश में जानना। यदि इसी योग के रहते सूर्य स्थिर राशि में हो तो पिता को विदेश से समीप ही आया समझें। यदि सूर्य द्विस्वभाव राशि में हो तो पिता को बालक के जन्म समय मार्ग में समझें। (३) लग्न में शनैश्चर स्थित हो और लग्न को चन्द्रमा न देखता हो अथवा लग्न से सातवें मंगल हो अथवा बुध और शुक्र के बीच में चंद्रमा स्थित हो, चंद्र लग्न को न देखता हो तो इन तीनों योगों में पिता के विदेश में रहते बालक का जन्म जानें। ग्रहों के रो[illegible]:-अनिष्ट, निर्बल, नीच, शत्रुक्षेत्री ग्रह की महादशाऽन्तर्दशा में निम्नरोगों की सम्भावना रहती है:-

ग्रह:-	सम्भावित रोग
सूर्य:	सिरदर्द, ज्वर, महाज्वर, नेत्र विकार, हृदय रोग (हार्ट अटैक)
चन्द्र:	तिल्ली, पांडु, यकृत, कफ, उदर-विकार।
मंगल:	पित्त, वायु, कर्ण रोग, विषूचिका, रक्त विकार, चर्म रोग।
बुध:	खांसी, हृदय संबंधी कोई रोग, कुष्ठ, आंत।
गुरु:	कष्ठ रोग, गुल्मरोग, प्लीहा, फोड़ा, गुप्तांग रोग।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शुक्र: प्रमेह, मेदवृद्धि, कर्ण रोग, वीर्य विकार, नपुंसकता, वीर्य या इन्द्रिय संबंधी रोग।
शनि: उन्माद, वातरोग, भगन्दर, गठिया, स्नायुरोग, एक्सीडेंट।
राहु: अनिद्रा, उदर विकार, मस्तिष्क विकार, पागलपन।
केतु: चर्म रोग, मस्तिष्क रोग, क्षुधा जनित रोग।

ग्रहों के कारकत्व

ग्रहों के कारकत्व दो प्रकार के होते हैं (१) स्थिर कारकत्व (२) चर कारकत्व। ग्रहों के स्थिर कारकत्व तो सदा अपरिवर्तनीय हैं, परन्तु चर कारकत्व एक जन्म पत्री से दूसरी जन्म पत्री में प्राय: बदल जाते हैं।

स्थिर कारकत्व: सूर्य:-आत्मा, पिता, प्रताप, आरोग्यता, आसक्ति, लक्ष्मी, राजा शासन कार्य, नेत्र, पर्वत आदि का कारक है।
चंद्रमा: मन, बुद्धि, माता, स्त्री, चांदी, चावल, जल, राज-कृपा का कारक है।
मंगल: पराक्रम, रोग, भाई, भूमि, शत्रु, जाति, युद्ध, साहस, सेना, अग्नि, पुत्र का कारक है।
बुध: विद्या, बन्धु, विवेक, मामा, मित्र, वाणी, व्यापार, गणित, शिल्प आदि का कारक है।
गुरु: बुद्धि, विद्या, स्वास्थ्य, पुत्र, ज्ञान, शास्त्र अध्ययन, अग्रज, ब्राह्मण, दादा का कारक है।
शुक्र: स्त्री, वाहन, मकान, भूषण, काम, व्यापार, कला संगीतादि श्वेत वस्तु का कारक है।
शनि: आयु, मृत्यु का कारण, जीवन, विपत्, सम्पत्, सेवक, दु:ख, रोग का कारक है।
राहु: पितामह, गुप्तधन, प्रेत बाधा, तस्कर-व्यापार आदि का कारक है।
केतु: मातामह (नाना), गुप्तशक्ति, चर्मरोग, तंत्रविद्या, धूम्र वर्ण का कारक है।

चर कारक:-जन्मपत्री में पहले ग्रह स्पष्ट करें। उसके पश्चात ग्रहों की राशि को छोड़कर केवल उनके अंश, कला, विकलादि पर ध्यान दें। जिस ग्रह के सबसे अधिक अंश हों वह **आत्म कारक** ग्रह होता है। यदि दो ग्रहों के अधिकतम परन्तु समान अंश हों तो उनके कला विकलादिसे निर्णय करें। आत्मकारक से न्यून अंश वाला **अमात्य** कारक, उससे न्यून अंश वाला **भ्रातृकारक**, उससे कम अंश वाला **मातृकारक**, उससे कम अंश वाला **पुत्रकारक**, उससे कम अंश वाला जाति कारक तथा उससे कम अंश वाला **स्त्रीकारक** ग्रह होता है। कारकांश कुण्डली बनाने की प्रक्रिया यह है कि आत्मकारक ग्रह जिस राशि के नवांश में हो उसको कारकांश कुण्डली का लग्न मानकर सभी ग्रहों को यथास्थान रख देने से कारकांश कुण्डली बन जाती है।

अंगपीड़ा ज्ञान:-षष्ट भाव से मुख्यत: रोग, चोट, ऐक्सीडेंट, बीमारी आदि का ज्ञान होता है। छठे भाव की सूक्ष्मता को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि कौन-कौन सी राशियां किन-किन अंगों से सम्बन्धित है। इस प्रकार छठे भाव में जो राशि होती है उससे संबंधित जातक अंग ही विशेष रूप से प्रभावित होता है। यदि छठे भाव की राशि शुभ है या शुभ ग्रह युक्त है तो वह अंग ठीक रहता है। यदि पाप या क्रूर ग्रह युक्त है तो वह अंग दुर्बल या रोग युक्त हो जाता है। इसी प्रकार अकारक षष्ठेश जब जब जिन-जिन राशियों पर जायेगा तभी उन राशियों से अंग पीड़ित होंगे। अत: नीचे राशियां तथा उनसे संबंधित अंग दिये जा रहे हैं-

क्रम सं.	राशि	संबंधित मानव अंग
१	मेष	सिर, चेहरा, मस्तिष्क, कान, नाक, ओष्ठ।
२	वृष	गर्दन, गिल्टियां, कंठ, गले का भीतरी भाग।
३	मिथुन	कंधे, हाथ, फेफड़े, रक्त, मांस, भुजाएं, हड्डियां।
४	कर्क	सीना, छाती तथा पेट, हंसली।
५	सिंह	पीठ, कमर, हृदय, रीढ़ की हड्डी।
६	कन्या	लिवर, तिल्ली, गुर्दे, पीठ की हड्डियां।
७	तुला	त्वचा
८	वृश्चिक	जननेन्द्रिय, गुह्यस्थान, जंघाएं।
९	धनु	कमर, नाड़ियां।
१०	मकर	घुटने, हड्डियों के जोड़।
११	कुम्भ	पांव, टखने, पाचन संस्थान।
१२	मीन	एड़ी, पंजा, तलवे।

इसके अतिरिक्त जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों से शारीरिक अंगों का अध्ययन करना चाहिये। प्रथम भाव से-मस्तक, मस्तिष्क, चेहरा। द्वि भाव से-नेत्र, वाणी, जीभ। तृतीय भाव से-हाथ, कान, कन्धे, भुजाएं, चतु. भाव से-पेट, हृदय, गुर्दा। पंचम भाव से-हृदय, पीठ, कुक्षि, मूत्राशय, गर्भाशय। षष्ठ भाव से-कमर, उदर, आंते, नाभि, गुह्य स्थान। सप्तम से:-नाभि, कमर, गुह्यांग रोग। अष्टम भाव से-गुर्दा, जननेन्द्रिय। नवम भाव से-जांघ। दशम से-घुटने, पेट, पीठ, रीढ़। एकादश से-कान, पिण्डली, पांव, गर्दन, हाथ। द्वादश भाव से-पांव की अंगुली, तलवे के रोगों का अध्ययन करें।

द्वादश भावों के नाम तथा उन से संबंधित विचारणीय विषय

(१) प्रथम भाव के नाम:-आत्मा, शरीर, लग्न, होरा, देह, वयु, कल्प, मूर्ति, अंग, तनु, उदय, आद्य, केंद्र, प्रथम, कष्टक, चतुष्टय।
विचारणीय विषय:-रूप, चिह्न, जाति, आयु, सुख, दु:ख, विवेक, शील, मस्तिष्क, स्वभाव, आकृति, आकार, माता-पिता की देहादि का विचार।

(२) द्वितीय भाव के नाम:- धन, स्व, वित्त, कोष, अर्थ, कुटुम्ब, पणफर, द्रव्य, मारक आदि।
विचारणीय विषय:- कुल, मित्र, आंख, कान, नाक, स्वर, सौंदर्य, गान, प्रेम, सुखभोग, क्रय-विक्रय, संचित पूंजी आदि।

(३) तृतीय भाव के नाम:- उपचय, पराक्रम, सहज, भ्रातृ, दुश्चिक्य, आपेक्लिम आदि।
विषय:-नौकर, चाकर, भाई, पराक्रम, आभूषण, दासकर्म, आयु, शौर्य, दमा, योगभ्यास आदि।

(४) चतुर्थ भाव के नाम:-केन्द्र, कष्टक, सुख, पाताल, तुर्य, हिबुक, गृह, सुहृद, वाहन, यान, अम्बु।
विषय:-मातृ पितृ सुख, मकान, गृह, ग्राम, चतुष्पद, वाहन, शान्ति, अन्त:करण, पेट के रोगादि।

(५) पंचम भाव के नाम:-पंचम, सुत, तनुज, पणफर, त्रिकोण, बुद्धि, विद्या, वाणी, आत्मज आदि।
विषय:-बुद्धि, विद्या, सन्तान, नीति, व्यवस्था, मातुल सुख, नौकरी छूटना, जठराग्नि, गर्भाशय, हाथ का यश, मूत्र पिण्ड, वस्ति, गर्भ, मंत्र साधना, हृदय, पीठ, कोख, आकस्मिक धन लाभ, पूर्व जन्म, प्रेम सम्बन्ध, मनोरंजन कार्य आदि।

(६) षष्ठ भाव के नाम:-रिपु, शत्रु, आपेक्लिम, उपचय, त्रिक, रोग, नष्ट आदि।
विषय:-मामा की स्थिति, शत्रु, रोग, चिन्ता, जमींदारी, गुदास्थान, ऋण, मौसी, पशु, अपयश, सौतेली मां, युद्ध, विश्वासघात, कमर, उदर, आतें, नाभि आदि।

(७) सप्तम भाव के नाम:-केन्द्र, मदन, सौभाग्य, जाया, जामित्र, काम, कलत्र, स्त्री आदि।
विषय:-पत्नी, पत्नी सुख, साझेदारी, विवाह समय, प्रवास, न्यायालय विवाद, मैथुन आदि।

(८) अष्टम भाव के नाम:-पणफर, चतुरस्र, त्रिक, आयु, रंध्र, मृत्यु, गुदारोग, युद्ध, सजा, दुर्घटना, बंधन, वियोग, जननेन्द्रिय, गुप्तधन, स्त्री से धन प्राप्ति आदि।

(९) नवम भाव के नाम:-भाग्य, धर्म, पुण्य, त्रिकोण।
विषय:-भाग्य, अधिकार, आदेश, पौत्र, धर्म, तीर्थ यात्रा, नेतृत्व, विदेश यात्रा, भाग्योदयकाल, भाग्योदय स्थान, पिता का सुख, साला, भावज, जांघ आदि।

(१०) दशम भाव के नाम:-कर्म, व्योम, गगन, केन्द्र, स्व, नभ, आस्पद।
विषय:-व्यवसाय, पिता का सुख, कर्म क्षेत्र, उद्योग धन्धा, नौकरी, विदेश गमन, घुटने, व्यापार आदि।

(११) एकादश भाव के नाम:-लाभ, आय, उत्तम, पणफर, उपचय आदि।
चिन्तन के विषय:-बड़े भाई, बड़ी बहिन, मित्र, लाभ, सम्पत्ति, विद्या, द्वितीय पत्नी, दामाद, कान, पिण्डली, पांव, भाइयों से आर्थिक सहायता आदि।

(१२) द्वादश भाव के नाम:-रिष्फ, व्यय, त्रिक, अंतिम, प्रान्त्य आदि।
चिन्तनीय विषय:-मोक्ष, प्रवास, व्यय, अपव्यय, घाटा, अन्तर्जातीय विवाह, तलाक, आत्म हत्या, गुप्त विद्या, षड्यन्त्र, जेल, राजदंड, बांया नेत्र (पुरुषों का), दांया नेत्र स्त्रियों का। व्यसन, रोग, शत्रु, पैर की अंगुलियां, तलवे आदि।

मनुष्य के शरीर में नक्षत्रों की स्थिति

मनुष्य शरीर के विभिन्न भागों में २७ नक्षत्रों की प्रथक-प्रथक स्थिति ज्योतिषियों ने बताई है जो निम्न प्रकार से है:- (१) अश्विनी पांव के ऊपरी भाग में (२) भरणी पैर के तलवे में (३) कृत्तिका-शिरोभाग में (४) रोहिणी:-मस्तक में (५) मृगशिर-दोनों भौंहो में (६) आर्द्रा-दोनों आंखो में (७) पुनर्वसु: दोनों नथनों में (८) पुष्य: मुख में (९) आश्लेषा कानों में (१०) मघा-ठोडी या होठों पर (११) पूर्वा फाल्गुनी: दायें हाथ में (१२) उत्तराफाल्गुनी-बायें हाथ में (१३) हस्त-अंगुलियों में (१४) चित्रा: ग्रीवा में (१५) स्वाती-वक्षस्थल में (१६) विशाखा-हृदय में (१७) अनुराधा-पेट पर (१८) ज्येष्ठा-आमाशय में (१९) मूल:-बाईं कुक्षि में (२०) पूर्वाषाढ़ा-पीठ में (२१) उत्तराषाढ़ा-रीढ़ की हड्डी में (२२) श्रवण-कमर में (२३) धनिष्ठा-गुदा में (२४) शतभिषा-दाईं जांघ में (२५) पूर्वाभाद्र-बाईं जांघ में (२६) उत्तराभा.-पिंडलियों में (२७) रेवती: टखनों में निवास करता है। जन्मकालीन या गोचरवश जब कोई क्रूर या पापी ग्रह सम्बद्ध नक्षत्र को पीड़ित करता है तब तत् सम्बन्धी शरीरांग में उस ग्रह संबंधी रोग या कष्ट उत्पन्न होता है। (भारतीय ज्योतिष)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली को सिद्ध यंत्र ३२ (बत्तीसा) के आधार पर तैयार किया गया है। निम्नांकित किसी भी इच्छित प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए इसे प्रयोग में लाया जा सकता है। इस प्रश्नावली में मुख्य-मुख्य बत्तीस प्रश्न दिये गये हैं। कोई भी पाठक साधारण (धन अथवा ऋण) गणित द्वारा अपने प्रश्न का उत्तर पा सकता है। व्यर्थ में किंवा सत्यता की परख करने में प्रश्नावली का उत्तर सही नहीं आयेगा। तीन प्रश्न (एक बार में) से अधिक प्रश्नों के उत्तर भी संदेह पूर्ण होंगे, अत: उपर्युक्त बातों का ध्यान रखना आवश्यक ही नहीं परमावश्यक है।

प्रश्नावली में उत्तर जानने की विधि यह है कि दिये बत्तीसा यंत्र के किसी भी कोष्ठक में प्रच्छक (प्रश्न पूछने वाला) अपने दाहिने (दक्षिण) हाथ की मध्यमा अंगुली रखने से पूर्व "ॐ नमो भैरवाय" मन्त्र की तीन बार जप लें। आगे प्रश्न क्रम संख्या दोनों का योग कर ले तथा इस योग में से १ घटा दें, शेष जो संख्या बचे उसे संख्या वाले प्रश्न के सामने देवता का नाम देख लें। जिस देवता का नाम लिखा है उसके नीचे यन्त्र कोष्ठक संख्या के आगे उत्तर देख लें-

मान लो कोई प्रश्न पूछना चाहता है कि मेरा विवाह होगा या नहीं तो यह प्रश्न संख्या हुई १२ (बारह), यन्त्र के कोष्ठक की संख्या है १५ (पन्द्रह), दोनों का योग आया २७ (सत्ताईस)। इस में से १ (एक) घटाया तो शेष रहे २६ (छब्बीस) २६वीं संख्या का देवता है केतु, अत: केतु के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर आया अर्थात् विवाह उपाय से होगा।

जब प्रश्न संख्या और यंत्र संख्या कोष्ठक संख्या का योग एक घटाने से भी ३२ से अधिक आये तो इसमें से ३२ घटा कर तब उपर्युक्त विधि से उत्तर देखना चाहिये जैसे प्रच्छक का प्रश्न है मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी। प्रश्न संख्या है २९ यन्त्र के कोष्ठक (जिसमें अंगुली रखी है) की संख्या है १५ इन को योग किया तो आया ४४ इसमें १ ऋण किया शेष रहा ४३ वह बत्तीस की संख्या से अधिक है अत: इसमें से ३२ की संख्या घटाई शेष रहे ११ अब पूर्व विधि से ११ की संख्या का देवता देखा तो ज्ञात हुआ "इन्द्र" और देवता इन्द्र के नीचे १० वीं संख्या का उत्तर मिला "पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी" इसी प्रकार सभी प्रश्नों के उत्तर ज्ञात करलें।

३२ बत्तीसा यंत्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

प्र. सं.	प्रश्न	अधिपति देवता
१.	मुझे सन्तान सुख मिलेगा या नहीं?	श्री भैरव
२.	मेरी मुकद्में में हार होगी अथवा जीत?	शिव
३.	मेरा भाग्योदय कब होगा?	कृष्ण
४.	मुझे नौकरी मिलेगी या नहीं?	राम
५.	मुझे उन्नति के अवसर मिलेंगे या नहीं?	सीता
६.	खेती से मुझे लाभ मिलेगा या हानि?	राधा
७.	मैं अपना मकान बना सकूंगा या नहीं?	लक्ष्मी
८.	क्या मुझे परीक्षा में सफलता मिलेगी?	विष्णु
९.	मेरे लिए विद्या प्राप्ति के योग हैं अथवा नहीं?	नारायण
१०.	मैं इस जीवन में सफलता पा सकूंगा या नहीं?	दामोदर
११.	क्या मुझे भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव है?	इन्द्र
१२.	मेरा विवाह होगा अथवा नहीं?	गणेश
१३.	अमुक रोगी रोग मुक्त होगा या नहीं?	अग्नि
१४.	मेरे स्वप्न का फल कैसा?	वायु
१५.	क्या मेरा स्थानान्तरण हो जायेगा?	वरुण
१६.	मुझे व्यापार में लाभ मिलेगा अथवा हानि?	यम
१७.	क्या मेरी चिन्ता दूर हो जायेगी?	कुबेर
१८.	मित्र के साथ मित्रता कैसी रहेगी?	सूर्य
१९.	मुझे कर्ज मिलेगा या नहीं?	चन्द्र
२०.	मेरी खोई हुई वस्तु मिलेगी अथवा नहीं?	मंगल
२१.	प्रवासी (परदेश गया हुआ) कब लौटेगा?	बुध
२२.	क्या मुझे यात्रा से लाभ मिलेगा?	बृहस्पति
२३.	मेरे भाईयों से कैसे निभेगी?	शुक्र
२४.	क्या मैं कुंआ बनवा सकूंगा?	शनि
२५.	मेरे लिए यह वर्ष कैसा है?	राहु
२६.	मेरा आज का दिन कैसा बीतेगा?	केतु
२७.	अमुक स्त्री को पुत्रोत्पन्न होगा या पुत्री?	मित्र
२८.	क्या मेरी इच्छा पूर्ण होगी?	पृथ्वी
२९.	मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी?	काल
३०.	क्या मेरा सम्बन्धी धोखा देगा?	शेष
३१.	प्रेमिका/प्रेमी का प्रेम शुद्ध है या नहीं?	यक्ष
३२.	मैं तीर्थ यात्रा करूंगा अथवा नहीं?	तक्षक

(१) श्री भैरव

१. सन्तान सुख मिलेगा।
२. तीर्थ यात्रा में विघ्न पड़ेगा।
३. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
४. सम्बन्धी धोखा दे सकता है होशियार!
५. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
६. इच्छा पूरी होने में अभी देर है।
७. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
८. यह दिन शुभ नहीं है।
९. वर्तमान वर्ष मध्यम रहेगा।
१०. कुआं बनना अभी सम्भव नहीं है।
११. भाईयों से प्रेम बना रहेगा।
१२. यात्रा में हानि होने की आशंका अधिक है।
१३. प्रवासी शीघ्र लौटेगा।
१४. खोई वस्तु शीघ्र मिल जायेगी।
१५. कर्ज मिलने में कठिनाई झेलनी पड़ेगी।

(२) शिव

१. मुकद्मे में जीत होगी।
२. सन्तान सुख गृह देवता की पूजा से मिलेगा।
३. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूर्ण हो जायेगी।
४. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम नहीं करता/करती।
५. सम्बन्धी धोखा देगा, सावधान!
६. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
७. अभी इच्छा पूरी नहीं होगी।
८. कन्या सन्तान उत्पन्न होगी।
९. आज का दिन शुभ रहेगा।
१०. यह साल उत्तम नहीं है।
११. कुआं बनवाने की इच्छा पूर्ण होगी।
१२. भाईयों में अनबन रहेगी।
१३. यात्रा लाभकारी रहेगी।
१४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का इच्छुक नहीं है।
१५. नष्ट वस्तु (खोई) नहीं मिलेगी।

(३) कृष्ण

१. आप का भाग्योदय शीघ्र होगा।
२. आप मुकद्मे में जीतें इसमें संदेह है।
३. सन्तान सुख मिलेगा किन्तु उपाय से।
४. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
६. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
७. पत्नी उत्तम स्वभाव की मिलेगी।
८. निकट भविष्य में इच्छा पूर्ण नहीं होगी।
९. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१०. आज का दिन मानसिक परेशानी वाला रहेगा।
११. वर्ष अत्याधिक लाभप्रद रहेगा।
१२. कुआं नहीं बनवा सकोगे।
१३. भाईयों से तकरार होने का भय है।
१४. यात्रा से लाभ मिलना कठिन है।
१५. चिन्ता न करें, प्रवासी कुछ दिनों में लौट आयेगा।

(४) राम

१. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
२. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
३. आप मुकद्मा हार जायेंगे।
४. सन्तान प्राप्ति की इच्छा पूरी हो जायेगी।
५. तीर्थ यात्रा होने में संदेह है।
६. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम करता/करती है।
७. सम्बन्धी धोखा दे सकता है सावधान रहें।
८. पत्नी के स्वभाव से मेल खा जायेगा।
९. इच्छा अवश्य पूरी होगी।
१०. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
११. यह दिन शुभ ही बीतेगा।
१२. यह वर्ष कष्टमय बीतेगा।
१३. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी हो जायेगी।
१४. भाईयों से अनबन रहेगी।
१५. यात्रा करना लाभप्रद रहेगा।

(५) सीता

१. उन्नति (प्रमोशन) मिलने का समय आ गया है।
२. नौकरी मिल जायेगी किन्तु अत्याधिक प्रयत्न से।
३. भाग्योदय होने में अभी देरी है।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४. चिन्ता न करें मुकद्दमा जीत जाओगे।
५. सन्तान सुख के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ करायें।
६. तीर्थ यात्रा पर अवश्य जाओगे।
७. प्रेमी/प्रेमिका का दिखावटी प्रेम है।
८. सम्बन्धी गुप्त चाल चलेगा सावधानी से रहें।
९. पत्नी उत्तम स्वभाव वाली मिलेगी।
१०. इच्छा पूरी हो इसमें संदेह है।
११. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१२. आज का दिन विशेष शुभ नहीं है।
१३. यह वर्ष आप के लिए चुनौतियों से भरा होगा।
१४. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी होने में देरी है।
१५. भाईयों से मेल मिलाप रहेगा।

(६) राधा

१. खेती से लाभ मिलेगा।
२. उन्नति में अभी देरी है धैर्य रखें।
३. नौकरी नहीं मिलेगी।
४. भाग्योदय शीघ्र होगा।
५. मुकद्दमा जीत लो ऐसी सम्भावना कम ही है।
६. सन्तान सुख अभी देर में मिलेगा।
७. तीर्थ यात्रा पर आना सम्भव नहीं हो सकेगा।
८. प्रेमी/प्रेमिका मात्र प्रेम का दिखावा करता/करती है।
९. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
१०. पत्नी का स्वभाव अच्छा नहीं होगा।
११. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१२. पुत्र सन्तान जन्म लेगी।
१३. यह दिन उत्तम प्रकार से व्यतीत होगा।
१४. यह वर्ष श्रेष्ठतम रहेगा।
१५. कुआं बन जायेगा।

(७) लक्ष्मी

१. मकान की इच्छा पूरी हो जायेगी।
२. खेती से लाभ कम मिलेगा।
३. प्रमोशन हो जाये ऐसा सम्भव नहीं दिखता।
४. नौकरी अथक प्रयत्न करने पर मिलेगी।
५. निकट भविष्य में ही भाग्योदय होने वाला है।
६. मुकदमे में जीतना कठिन है।
७. सन्तान सुख मिल जायेगा।
८. तीर्थ यात्रा पर जाने में विघ्न बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
९. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध नहीं है।
१०. सम्बन्धी धोखा देने से नहीं चूकेगा।
११. पत्नी चिड़चिड़े स्वभाव की मिलेगी।
१२. इच्छा पूरी हो जायेगी।
१३. कन्या रत्न उत्पन्न होने की सम्भावना प्रबल है।
१४. आज का दिन अच्छा नहीं है।
१५. यह वर्ष मध्यम फलप्रद रहेगा।

(८) विष्णु

१. परीक्षा में सफलता मिलेगी।
२. मकान निकट भविष्य में नहीं बना पाओगे।
३. खेती मत करो लाभ की आशा कम है।
४. प्रमोशन शीघ्र ही मिलने वाला है।
५. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
६. भाग्योदय होगा किन्तु थोड़ा समय धैर्य रखें।
७. मुकदमे में जीत जाओगे।
८. सन्तान सुख के लिए सन्तान गोपाल का अनुष्ठान करें।
९. तीर्थ यात्रा सकुशल होगी।
१०. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम छल है।
११. सम्बन्धी धोखा दे ऐसा नहीं दिख रहा।
१२. पत्नी का स्वभाव अच्छा होगा।
१३. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१४. पुत्र सन्तान जन्म ले ऐसे योग हैं।
१५. यह दिन शुभ रहेगा।

(९) नारायण

१. विद्या प्राप्त कर लोगे, विश्वास करो।
२. परीक्षा में पास हो जाओ इसमें सन्देह है।
३. मकान नहीं बन सकेगा।
४. खेती करने से लाभ मिलेगा।
५. प्रमोशन अभी मिलना सम्भव नहीं है।
६. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
७. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
८. मुकद्दमा जीतने में संदेह है।
९. सन्तान सुख अभी देरी से मिलेगा धैर्य रखें।
१०. तीर्थ यात्रा पर जाने का अवसर नहीं मिलेगा।
११. प्रेम का चक्कर हानिकारक है। सावधान रहें!
१२. सम्बन्धी धोखा अवश्य देगा सावधान!
१३. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं मिलेगी।
१४. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१५. कन्या सन्तान का जन्म होगा।

(१०) दामोदर

१. जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।
२. अल्प विद्या प्राप्ति के योग हैं।
३. परीक्षा में असफलता हाथ लगेगी।
४. मकान बनाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. खेती से अल्प लाभ की आशा रखें।
६. प्रमोशन के योग बन रहे हैं।
७. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
८. भाग्योदय निकट भविष्य में हो जायेगा।
९. मुकदमे में जीत निश्चित है।
१०. सन्तान सुख थोड़ा देरी से मिलेगा।
११. तीर्थ यात्रा पर जाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
१२. प्रेमी/प्रेमिका मन से प्रेम करता/करती है।
१३. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
१४. पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी।
१५. इच्छा पूर्ण हो जावेगी।

(११) इन्द्र

१. भूमिगत धन की प्राप्ति हो जायेगी।
२. जीवन में सफलता प्राप्त कर लो ऐसे योग हैं।
३. विद्या पूर्णतया प्राप्त कर लो इसमें संदेह है।
४. परीक्षा उत्तीर्ण कर लोगे।
५. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
६. खेती से लाभ नहीं होगा।
७. प्रमोशन हो इसमें संदेह है।
८. नौकरी अभी नहीं मिलेगी।
९. भाग्योदय शीघ्र हो जायेगा।
१०. मुकदमे में जीत जाने का अवसर क्षीण है।
११. सन्तान सुख मिलेगा। लेकिन उपाय से।
१२. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
१३. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम झूठा है, बच कर रहें।
१४. सम्बन्धी धोखा देने की योजना बना रहा है।
१५. पत्नी अति नम्र और स्नेहशील होगी।

(१२) गणेश

१. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
२. भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव नहीं है।
३. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
४. विद्या प्राप्त कर लोगे।
५. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के चांस नहीं हैं।
६. मकान अभी देर से बनेगा।
७. खेती से लाभ मिलेगा।
८. उन्नति (प्रमोशन) अभी नहीं होगी, देर है।
९. नौकरी मिल जायेगी।
१०. भाग्य का सितारा चमकने वाला है।
११. ऐसे आसार हैं कि मुकद्दमा हार जाओगे।
१२. सन्तान सुख मिल जायेगा।
१३. तीर्थ यात्रा को नहीं जा सकोगे।
१४. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम नहीं है।
१५. सम्बन्धी गुप्त रूप से सहायता करेगा।

(१३) अग्नि

१. बीमार अच्छा हो जायेगा।
२. विवाह होने के आसार नहीं हैं।
३. गड़ा धन मिलेगा, गृह देवता की पूजा करें।
४. जीवन में सफलता मिलेगी।
५. विद्या प्राप्त कर लोगे।
६. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
७. मकान शीघ्र ही बन जायेगा।
८. खेती से लाभ मिलेगा।
९. फिलहाल तरक्की मिलना कठिन है।
१०. नौकरी मिलने के आसार नहीं हैं।
११. भाग्योदय शीघ्र होगा।
१२. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१३. सन्तान सुख मिल जायेगा।
१४. तीर्थयात्रा करने की इच्छा पूर्ण होगी।
१५. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम है।

(१४) वायु

१. स्वप्न का फल उत्तम फलप्रद है।
२. रोगी के रोगमुक्त होने में अभी देरी है।
३. विवाह सम्बन्ध के लिए उपाय करना।
४. भूमिगत धन मिलने की सम्भावना है।
५. जीवन में सफलता मिलने में संदेह है।
६. विद्या प्राप्त हो जायेगी शिवार्चन करें।
७. परीक्षा में उत्तीर्ण होना कठिन है।
८. मकान बनाने में कठिनाइयां आयेंगी।
९. खेती से लाभ होने की आशा है।
१०. प्रमोशन होने में अभी समय लगेगा।
११. नौकरी निकट भविष्य में नहीं मिलेगी।
१२. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
१३. मुकदमे में जीत निश्चित मिलेगी।
१४. सन्तान सुख पाने के लिए सन्तान गोपाल का अनुष्ठान करें।
१५. तीर्थयात्रा नहीं हो सकेगी।

(१५) वरुण

१. तबादला शीघ्र ही हो जायेगा।
२. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
३. बीमार के ठीक होने के आसार नहीं हैं।
४. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
५. गड़ा धन मिल जायेगा लेकिन उपाय से।
६. जीवन में अधिक सफलता मिले आशा कम है।
७. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए शिवार्चन करें।
९. मकान बन जायेगा।
१०. खेती से विशेष लाभ की आशा रखना निर्मूल है।
११. उन्नति शीघ्र मिल जायेगी।
१२. नौकरी निकट भविष्य में मिल जायेगी।
१३. भाग्योदय अभी नहीं हो रहा देर लगेगी।
१४. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१५. सन्तान सुख भाग्य में नहीं है।

(१६) यम

१. व्यापार में लाभ मिलेगा परन्तु सावधानी आवश्यक है।
२. तबादले के योग बन रहे हैं।
३. स्वप्न का फल अच्छा है।
४. बीमार अच्छा हो जायेगा।
५. विवाह के लिए कुमार मन्त्र का सवा लाख जप करें।
६. गड़ा धन मिल जायेगा।
७. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
८. उच्चशिक्षा प्राप्ति के लिए गणपति मन्त्र जपें।
९. परीक्षा में पास हो जाओगे।
१०. मकान बनाने में देर लगेगी।
११. खेती से लाभ हो इसमें संदेह है।
१२. प्रमोशन कठिनाई से मिलेगा।
१३. नौकरी मिलने में संदेह है।
१४. भाग्योदय शीघ्र होने वाला है।
१५. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।

(१७) कुबेर

१. चिन्ता अभी देर से मिटेगी।
२. व्यापार में लाभ मिलेगा।
३. स्थानांतरण अभी नहीं होगा।
४. स्वप्न शुभ फलप्रद है।
५. बीमार के अच्छा होने की संभावना कम है।
६. विवाह होने की संभावना नहीं है।
७. गड़े धन प्राप्ति के लिए आसुरी सिद्धि करें।
८. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
९. विद्या से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. उत्तीर्ण होने के लिए हनुमत उपासना करें।
११. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१२. खेती से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तरक्की मिल जाये ऐसे योग नहीं हैं।
१४. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
१५. भाग्योदय होने के लिए स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र का जप करें।

(१८) सूर्य

१. मित्र धोखा दे सकता है सावधान रहें।
२. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।
३. व्यापार से लाभ नहीं रहेगा।
४. तबादला हो जायेगा।
५. स्वप्न का फल उत्तम नहीं है।
६. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
७. विवाह शीघ्र हो जायेगा।
८. गड़ा धन भाग्य में नहीं है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

९. जीवन में सफलता प्राप्त करने की सम्भावना नहीं है।
१०. विद्या प्राप्ति नहीं हो सकेगी।
११. परीक्षा में पास होने में संदेह है, मन लगा कर पढ़ो।
१२. मकान शीघ्र बन जायेगा।
१३. खेती से लाभ मिलेगा।
१४. प्रमोशन के योग प्रयत्न साध्य हैं।
१५. नौकरी देर से मिलेगी।

(१९) चन्द्र

१. कर्जा मिलने में विघ्न-बाधाएं आयेंगी।
२. मित्र कपट करेगा सावधानी अपेक्षित है।
३. चिन्ता मिट जायेगी, ईश्वराधना करें।
४. व्यापार से लाभ रहेगा।
५. तबादला होकर रुक जायेगा।
६. स्वप्न का फल विशेष अच्छा नहीं है।
७. रोगी स्वास्थ्य लाभ कर लेगा।
८. विवाह के लिए स्वयंवर मन्त्र का अनुष्ठान करें।
९. गड़ा धन पितृ पूजन करने से मिलेगा।
१०. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
११. विद्या प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा।
१२. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
१३. मकान बन जाये इसमें सन्देह है।
१४. खेती से अधिक लाभ नहीं मिलेगा।
१५. उन्नति होने के योग क्षीण हैं।

(२०) मंगल

१. खोई वस्तु मिल जायेगी प्रयत्न करें।
२. कर्जा मिल जायेगा।
३. मित्र के साथ निभ जाये ऐसा नहीं लगता।
४. चिन्ता शीघ्र दूर हो जायेगी।
५. व्यापार में हानि होने के योग हैं।
६. ट्रांसफर नहीं हो सकेगा।
७. स्वप्न का फल उत्तम है।
८. बीमार के अच्छे होने की सम्भावना नहीं है।
९. विवाह अभी देर से होगा।
१०. गड़ा धन मिलने में सन्देह है।
११. जीवन में सफलता कष्ट से मिलेगी।
१२. विद्या प्राप्त कर लोगे।
१३. पास होना कठिन है।
१४. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१५. खेती में लाभ रहेगा।

(२१) बुध

१. प्रवासी लौट कर आ रहा है।
२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
३. कर्जा इस समय नहीं मिलेगा।
४. मित्र के साथ मित्रता बनी रहेगी।
५. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
६. व्यापार से लाभ रहेगा।
७. तबादला हो जायेगा।
८. स्वप्न का फल मध्यम है।
९. बीमार अच्छा हो जायेगा।
१०. विवाह हो जायेगा।
११. गड़ा धन मिल जायेगा।
१२. जीवन में सफलता प्राप्त करना असम्भव है।
१३. विद्या प्राप्ति का योग नहीं है।
१४. उत्तीर्ण होने के लिए परिश्रम एवं हनुमतमन्त्र जपें।
१५. मकान नहीं बन सकेगा।

(२२) बृहस्पति

१. यात्रा लाभदायक रहेगी।
२. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
३. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
४. कर्जा विलम्ब से मिलेगा।
५. मित्र के साथ नहीं निभ सकेगी।
६. चिन्ता दूर हो जायेगी।
७. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
८. तबादला हो जायेगा आश्वस्त रहें।
९. स्वप्न का फल अशुभ है।
१०. बीमार अच्छा नहीं होगा।
११. गड़ा धन मिलना सम्भव नहीं है।
१२. विवाह होना सम्भव नहीं है।
१३. जीवन में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त कर लोगे।
१४. विद्या प्राप्ति के योग नहीं है।
१५. परीक्षा में पास हो जाओगे चिन्ता न करो।

(२३) शुक्र

१. भाईयों से अनबन रहेगी।
२. यात्रा से लाभ कम मिलेगा।
३. परदेशी (बाहर गया हुआ) शीघ्र लौट आयेगा।
४. खोई हुई वस्तु बहुत जल्दी मिल जायेगी।
५. कर्जा नहीं मिलेगा।
६. मित्र के साथ अच्छा मेल-मिलाप रहेगा।
७. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
८. व्यापार से लाभ मिलेगा।
९. तबादला के योग बन रहे हैं।
१०. स्वप्न का फल शुभ है।
११. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१२. विवाह के लिए उपाय करें।
१३. भूमिगत धन शीघ्र मिलेगा।
१४. जीवन में सफलता पाना कठिन है।
१५. विद्या प्राप्ति के लिए गायत्री उपासना करें।

(२४) शनि

१. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी होगी।
२. भाइयों से बन जाएगी।
३. यात्रा लाभकारी रहेगी।
४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का विचार नहीं कर रहा।
५. खोई वस्तु प्रयत्न करने पर मिल सकती है।
६. कर्ज मिल जाएगा।
७. मित्र से अनबन होने की सम्भावना है।
८. चिन्ता मिट जाएगी, श्री बटुक भैरवार्चन करें।
९. व्यापार में लाभ मिलने की आशा क्षीण है।
१०. तबादला प्रयत्न करने पर हो सकता है।
११. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
१२. बीमार का स्वास्थ्य लाभ लेना असम्भव ही है।
१३. विवाह हो जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
१४. गड़ा धन नहीं मिलेगा।
१५. जीवन में अच्छी सफलता मिलेगी।

(२५) राहु

१. यह वर्ष मध्यम रहेगा।
२. कुआं बन जाएगा।
३. भाईयों से नहीं बनेगी।
४. यात्रा से लाभ मिलेगा।
५. परदेशी शीघ्र ही लौट आएगा।
६. नष्ट वस्तु मिल जाएगी।
७. कर्ज मिल जाएगा।
८. मित्र धोखा देगा सावधान।
९. चिन्ता मिट जाएगी।
१०. व्यापार में लाभ होगा।
११. तबादला हो जाएगा।
१२. स्वप्न का फल शुभ है।
१३. बीमार के अच्छा होने में संदेह है।
१४. विवाह हो जाएगा लेकिन उपाय से।
१५. गड़ा धन इष्ट देव के पूजन से मिलेगा।

(२६) केतु

१. यह दिन शुभ नहीं है।
२. यह वर्ष अच्छा रहेगा।
३. कुंआं नहीं बन सकेगा।
४. भाईयों के साथ प्रेम रहेगा।
५. यात्रा से कोई लाभ नहीं मिलेगा।
६. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा बीमार है।
७. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
८. कर्ज देरी से मिलेगा।
९. मित्र कपटी है अतः उसका त्याग करें।
१०. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
११. व्यापार से लाभ की सम्भावना नहीं है।
१२. तबादला नहीं होगा।
१३. स्वप्न का फल शुभ नहीं है।
१४. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१५. विवाह उपाय से होना सम्भव है।

(२७) मित्र

१. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
२. यह दिन शुभ है।
३. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
४. कुंआं बन जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
५. भाईयों से बिगाड़ रहेगा।
६. यात्रा से लाभ मध्यम रहेगा।
७. प्रवासी आने के लिए चल चुका है।
८. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
९. कर्ज कठिनाई से मिलेगा।
१०. मित्र के साथ अच्छी पट जायेगी।
११. चिन्ता मिट जाएगी।
१२. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तबादला हो जाएगा।
१४. स्वप्न का फल उत्तम है।
१५. रोगी के स्वस्थ होने में संदेह है।

(२८) पृथ्वी

१. इच्छा पूरी होने में देरी है।
२. कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
३. यह दिन मध्यम रहेगा।
४. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
५. कुंआं बनने में बाधाएं हैं।
६. भाइयों से मिलाप रहेगा।
७. यात्रा में लाभ मिलेगा।
८. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
९. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
१०. कर्ज नहीं मिलेगा।
११. मित्र के साथ बनने की संभावना नहीं है।
१२. चिन्ता बढ़ सकती है।
१३. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
१४. तबादले की सम्भावना क्षीण है।
१५. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।

(२९) काल

१. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
२. इच्छा पूरी होगी।
३. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
४. यह दिन शुभ है।
५. यह वर्ष अधम रहेगा।
६. कुंआ बन जाएगा।
७. भाईयों से अनबन रहेगी।
८. यात्रा में लाभ प्राप्त करना असम्भव है।
९. परदेशी निकट भविष्य में नहीं लौट रहा है।
१०. खोई वस्तु शीघ्र नहीं मिलेगी।
११. कर्ज देर से मिलेगा।
१२. मित्र के साथ नहीं बनेगी।
१३. चिन्ता शीघ्र दूर होगी।
१४. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१५. तबादला हो जाएगा।

(३०) शेष

१. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
२. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
३. इच्छा पूरी होने में देरी है।
४. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
५. यह दिन मध्यम रहेगा।
६. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
७. कुंआं बनने में आकस्मिक बाधा आएगी।
८. भाइयों से बनना मुश्किल है।
९. यात्रा से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. परदेशी शीघ्र लौट कर आने वाला है।
११. खोई वस्तु मिलना कठिन है।
१२. कर्ज अभी नहीं मिलेगा।
१३. मित्र के साथ मेल-जोल रहेगा।
१४. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
१५. व्यापार से लाभ मिलेगा।

(३१) यक्ष

१. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
२. सम्बन्धी से धोखे की आशा नहीं है।
३. पत्नी का स्वभाव सरल होगा।
४. इच्छा देरी से पूरी होगी।
५. पुत्रोत्पत्ति होगी।
६. दिन शुभ रहेगा।
७. यह वर्ष मध्यम शुभप्रद है।
८. गृह निर्माण की इच्छा पूरी होगी।
९. भाइयों से साधारण मेल रहेगा।
१०. यात्रा से लाभ मिलेगा।
११. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा।
१२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
१३. कर्ज मिल जायेगा।
१४. मित्र के साथ नहीं निभेगी।
१५. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।

(३२) तक्षक

१. तीर्थ-यात्रा अभी नहीं हो सकेगी।
२. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
३. सम्बन्धी धोखा दे सकता है।
४. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं होगी।
५. इच्छा पूरी होने में देरी है।
६. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
७. दिन शुभ रहेगा।
८. यह वर्ष अरिष्टप्रद होगा।
९. कुंआ देर से बनेगा।
१०. भाईयों से मेल कम रहेगा।
११. यात्रा से लाभ नहीं होगा।
१२. प्रवासी नहीं लौटेगा।
१३. खोई वस्तु मिलना सम्भव नहीं है।
१४. कर्ज मिलने में सन्देह है।
१५. मित्र का साथ कम रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूक्ष्म दशा सारिणी

सूक्ष्म दशा सारिणी की पूर्ण तालिका इस वर्ष हमारे शतक मार्तण्ड में प्रकाशित की गई है। जो सज्जन इसका प्रयोग करना चाहे वह शतक मार्तण्ड खरीदकर इससे लाभ उठा सकते है

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	००	००	००	००	००	००
घटि	१६	२०	१८	४८	४३	५१	४५	१८	५४
पल	१२	००	५४	३६	१२	१८	५४	५४	००

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	००	००	१	१	१	१	००	१	००
घटि	४५	३१	२१	१२	२५	१६	३१	३०	२७
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	००	००	००	००	००	१	००	००
घटि	२२	५६	५०	५९	५३	२२	३	१८	३१
पल	३	४२	२४	३१	३३	३	००	५४	३०

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	२	२	२	२	००	२	००	१	००
घटि	२५	९	३३	१७	५६	४२	४८	२१	५६
पल	४८	३६	५४	४२	४२	००	३६	००	४२

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	१	२	२	००	२	००	१	००	२
घटि	५५	१६	२	५०	२४	४३	१२	५०	९
पल	१२	४८	२४	२४	००	१२	००	२४	३६

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	२	२	००	२	००	१	००	२	२
घटि	४२	२५	५९	५१	५१	२५	५९	३३	१६
पल	२७	२१	५१	००	१८	३०	५१	५४	४८

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	२	००	२	००	१	००	२	२	२
घटि	१०	५३	३३	४५	१६	५३	१७	२	२५
पल	३	३३	००	५४	३०	३३	४२	२४	२१

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	००	००	००	००
घटि	२२	३	१८	३१	२२	५६	५०	५९	५३
पल	३	००	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	३	००	१	१	२	२	२	२	१
घटि	००	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	००	२	२	२	२	००	२	००
घटि	१५	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	१	०	००
घटि	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५	३१	५२
पल	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०	३०

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	४	३	४	३	१	४	१	२	१
घटि	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५	३४
पल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	३	३	३	१	४	१	२	१	३
घटि	१२	४८	२४	२४	००	१२	००	२४	३६

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	४	४	१	४	१	२	१	४	३
घटि	३०	२	३९	४५	२५	२२	३९	१६	४८
पल	४५	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	३	१	४	१	२	१	३	३	४
घटि	३६	२९	१५	१६	७	२९	४९	२४	२
पल	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सु	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	१	१	१
घटि	३६	४५	३१	५२	३६	३४	२४	३९	२९
पल	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	५	१	२	१	४	४	४	४	१
घटि	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	१	१	१	००	१
घटि	२७	४५	३१	२१	१२	२५	१६	३१	३०
पल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा मंगल की प्रत्यन्तर दशा में मंगलादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	००	१	१	००	१	००	००
घटि	२५	६	५८	९	२	२५	१३	२२	३६
पल	४३	९	४८	४९	२८	४३	३०	३	४५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	२	२	२	२	१	३	००	१	१
घटि	५०	३१	५९	४०	६	९	५६	३४	६
पल	६	१२	३३	३९	९	००	४२	३०	९

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	२	२	२	००	२	००	१	००	२
घटि	१४	३९	२२	५८	४८	५०	२४	५८	३१
पल	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१२

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	३	२	१	३	००	१	१	२	२
घटि	९	४९	९	१९	५९	३९	९	५९	३९
पल	३१	३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	२	१	२	००	१	१	२	२	२
घटि	३१	२	५८	५३	२९	२	४०	२२	४९
पल	४३	२८	३०	३३	१५	२८	३९	४८	३४
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	००	१	१
घटि	२५	१३	२२	३६	२५	६	५८	९	२
पल	४३	३०	३	४५	४३	९	४८	४९	२८
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	३	१	१	१	३	२	३	२	१
घटि	३०	३	४५	१३	९	४८	१९	५८	१३
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	००	००	००	००	००	१
घटि	१८	३१	२२	५६	५०	५९	५३	२२	३
पल	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३	००

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	००	००	१	१	१	१	००	१	००
घटि	५२	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५	३१
पल	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	७	६	७	६	२	८	२	४	२
घटि	१७	२८	४१	५३	५०	६	२५	३	५०
पल	२४	४८	४२	६	६	००	४८	००	६

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	५	६	६	२	७	२	३	२	६
घटि	४५	५०	७	३१	१२	९	३६	३१	२८
पल	३६	२४	१२	१२	००	३६	००	१२	४८

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	८	७	२	८	२	४	२	७	६
घटि	७	१६	५९	३३	३३	१६	५९	४१	५०
पल	२१	३	३३	००	५४	३०	३३	४२	-२४

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	६	२	७	२	३	२	६	६	७
घटि	३०	४	३९	१७	४९	४०	५३	७	१६
पल	९	३९	००	४२	३०	३९	६	१२	३

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	३	००	१	१	२	२	२	२
घटि	६	९	५६	३४	६	५०	३१	५९	४०
पल	९	००	४२	३०	९	६	१२	३३	३९

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	९	२	४	३	८	७	८	७	३
घटि	००	४२	३०	९	६	१२	३३	३९	९
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	२	२	२	००	२
घटि	४८	२१	५६	२५	९	३३	१७	५६	४२
पल	३६	००	४२	४८	३६	५४	४२	४२	००

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	४	३	४	३	१	४	१
घटि	१५	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	२	२	२	२	१	३	००	१
घटि	६	५०	३१	५९	४०	६	९	५६	३४
पल	९	६	१२	३३	३९	९	००	४२	३०

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुर्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	५	६	५	२	६	१	३	२	५
घटि	७	४	२६	१४	२४	५५	१२	१४	४५
पल	१२	४८	२४	२४	००	१२	००	२४	३६

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	७	६	२	७	२	३	२	६	६
घटि	१३	२०	३९	३६	२६	४८	३९	५०	४
पल	१२	३६	३६	००	४८	००	३६	२४	४८

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	५	२	६	२	३	२	६	५	६
घटि	४६	२२	४८	२	२४	२२	७	२६	५७
पल	४८	४८	००	२४	००	४८	१२	२४	३६

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	२	००	१	००	२	२	२	२
घटि	५८	४८	५०	२४	५८	३१	१४	३९	२२
पल	४८	००	२४	००	४८	१२	२४	३६	४८

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	८	२	४	२	७	६	७	६	२
घटि	००	२४	००	४८	२२	२४	३६	४८	४८
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	१	२	२	००	२
घटि	४३	१२	५०	९	५५	१६	२	५०	२४
पल	१२	००	२४	३६	१२	४८	२४	२४	००

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	३	३	३	३	१	४	१
घटि	००	२४	३६	१२	४८	२४	२४	००	१२
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	२	२	२	२	००	२	००	१
घटि	५८	३१	१४	३९	२२	५८	४८	५०	२४
पल	४८	१२	२४	३६	४८	४८	००	२४	००

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	६	५	६	६	२	७	२	३	२
घटि	२८	४५	५०	७	३१	१२	९	३६	३१
पल	४८	३६	२४	१२	१२	००	३६	००	१२

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	८	७	३	९	२	४	३	८	७
घटि	३४	४०	९	१	४२	३०	९	७	१३
पल	२४	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	६	२	८	२	४	२	७	६	७
घटि	५१	४९	४	२५	२	४९	१६	२७	४०
पल	४९	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	३	००	१	१	२	२	३	२
घटि	९	१९	५९	३९	९	५९	३९	९	४९
पल	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	३४
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	९	२	४	३	८	७	९	८	३
घटि	३०	५१	४५	१९	३३	३६	१	४	१९
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	२	२	२	००	२
घटि	५१	२५	५९	३३	१६	४२	२५	५९	५१
पल	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	००

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	४	३	४	४	१	४	१
घटि	२२	३९	१६	४८	३०	२	३९	४५	२५
पल	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	२	२	३	२	१	३	००	१
घटि	९	५९	३९	९	४९	९	१९	५९	३९
पल	४९	३३	३६	३१	३४	४९	३०	५१	४५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	७	६	८	७	२	८	२	४	२
घटि	४३	५०	७	१६	५९	३३	३३	१६	५९
पल	४३	२४	२१	३	३३	००	५४	३०	३३

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुर्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	६	७	६	२	७	२	३	२	६
घटि	४	१३	२७	३९	३६	१६	४८	३९	५०
पल	४८	१२	३६	३६	००	४८	००	३६	२४

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	६	२	७	२	३	२	६	५	६
घटि	८	३१	१३	१०	३६	३१	३०	४६	५१
पल	२८	४३	३०	३	४५	४३	९	४८	४९
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	२	००	१	१	२	२	२	२
घटि	२	५८	५३	२९	२	४०	२२	४९	३१
पल	२८	३०	३३	१५	२८	३९	४८	३४	४३
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	८	२	४	२	७	६	८	७	२
घटि	३०	३३	१५	५८	३९	४८	४	१३	५८
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	२	२	२	००	२
घटि	४५	१६	५३	१७	२	२५	१०	५३	३३
पल	५८	३०	३३	४२	२४	२१	३	३३	००

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	३	३	४	३	१	४	१
घटि	७	२९	४९	२४	२	३६	२९	१५	१६
पल	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	२	२	२	२	१	२	००	१
घटि	२	४०	२२	४९	३१	२	५८	५३	२९
पल	२८	३९	४८	३४	४३	२८	३०	३३	१५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	६	६	७	६	२	७	२	३	२
घटि	५३	७	१६	३०	४०	३९	१७	४९	४०
पल	६	१२	३	९	३९	००	४२	३०	३९

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	५	६	५	२	६	२	३	२	६
घटि	२६	२७	४६	२२	४८	२	२४	२२	७
पल	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१२

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	७	६	२	८	२	४	२	७	६
घटि	४०	५१	४९	४	२५	२	४९	१६	२७
पल	१६	४९	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	बु	श
दिन	००	१	००	००	००	१	००	१	१
घटि	२५	१३	२२	३६	२५	६	५८	९	२
पल	४३	३०	३	४५	४३	९	४८	४९	२८
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	३	१	१	१	३	२	३	२	१
घटि	३०	३	४५	१३	९	४८	१९	५८	१३
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	००	००	००	००	००	१
घटि	१८	३१	२२	५६	५०	५९	५३	२२	३
पल	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	६	५	६	५	२	६	२
घटि	२२	२१	४	२४	२४	४४	२१	४५	१
पल	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	००	१	१	००	१	००	००
घटि	२५	६	५८	९	२	२५	१३	२२	३६
पल	४३	९	४८	४९	२८	४३	३०	३	४५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	२	२	२	२	१	३	००	१	१
घटि	५०	३१	५९	४०	६	९	५६	३४	६
पल	६	१२	३३	३९	९	००	४२	३०	९

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुर्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	२	२	२	००	२	००	१	००	२
घटि	१४	३९	२२	५८	४८	५०	२४	५८	३१
पल	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१२

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शन्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	३	२	१	३	००	१	१	२	२
घटि	९	४९	९	१९	५९	३९	९	५९	३९
पल	३१	३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	२	१	२	००	१	१	२	२	२
घटि	३१	२	५८	५३	२९	२	४०	२२	४९
पल	४३	२८	३०	३३	१५	२८	३९	४८	३४
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१०	३	५	३	९	८	९	८	३
घटि	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	१	२	२	२	२	१	३
घटि	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३	००

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	४	४	४	४	१	५	१
घटि	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	३	२	३	२	१	३	१	१
घटि	१३	९	४८	१९	५८	१३	३०	३	४५
पल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	८	७	८	७	३	९	२	४	३
घटि	६	१२	३३	३९	९	००	४२	३०	९

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुर्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	६	७	६	२	८	२	४	२	७
घटि	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१२

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शन्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	९	८	३	९	२	४	३	८	७
घटि	१	४	१९	३०	५१	४५	१९	३३	३६
पल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	७	२	८	२	४	२	७	६	८
घटि	१३	५८	३०	३३	१५	५८	३९	४८	४
पल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	३	१	१	१	३	२	३	२
घटि	१३	३०	३	४५	१३	९	४८	१९	५८
पल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	३	३	३	३	१	४	१
घटि	५	२७	४५	२०	५७	३२	२७	१०	१५
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	२	२	२	२	१	२	००	१
घटि	१	३७	२०	४६	२८	१	५५	५२	२७
पल	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	६	६	७	६	२	७	२	३	२
घटि	४५	००	७	२२	३७	३०	१५	४५	३७
पल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	५	६	५	२	६	२	३	२	६
घटि	२०	२०	४०	२०	४०	००	२०	२०	००
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	७	६	२	७	२	३	२	७	६
घटि	३१	४३	४६	५५	२२	५७	४६	७	२०
पल	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	६	२	७	२	३	२	६	५	६
घटि	१	२८	५	७	३२	२८	२२	४०	४३
पल	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	२	००	१	१	२	२	२	२
घटि	१	५५	५२	२७	१	३७	२०	४६	२८
पल	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५	४५

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शुक्ल की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	८	२	४	२	७	६	७	७	२
घटि	२०	३०	१०	५५	३०	४०	५५	५	५५
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	२	२	२	००	२
घटि	४५	१५	५२	१५	००	२२	७	५२	३०
पल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा मंगल की प्रत्यन्तर दशा में मंगलादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	२	००	१
घटि	४२	५०	३८	५६	४४	४२	२	३६	१
पल	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५	१५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	४	४	४	४	१	५	१	२	१
घटि	४३	१२	५९	२७	५०	१५	३४	३७	५०
पल	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	३	४	३	१	४	१	२	१	४
घटि	४४	२६	५८	३८	४०	२४	२०	३८	१२
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शान्ति आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	५	४	१	५	१	२	१	४	४
घटि	१५	४२	५६	३२	३९	४६	५६	५९	२६
पल	५२	३७	२२	३०	४५	१५	२२	१५	००
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	४	१	४	१	२	१	४	३	४
घटि	१२	४४	५७	२९	२८	४४	२७	५८	४२
पल	५२	७	३०	१५	४५	७	४५	००	३७
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	२	००	१	००	१	१	१	१
घटि	४२	२	३६	१	४२	५०	३८	५६	४४
विपल	५२	३०	४५	१५	५२	१५	००	२२	७
पल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	५	१	२	२	५	४	५	४	२
घटि	५०	४५	५५	२	१५	४०	३२	५७	२
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सुर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	१	१	१	००	१
घटि	३१	५२	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५
पल	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	१	२	२	२	२	१	२	००
घटि	२७	१	३७	२०	४६	२८	१	५५	५२
पल	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	१२	१०	१२	११	४	१३	४	६	४
घटि	९	४८	४९	२८	४३	३०	३	४५	४३
पल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	९	११	१०	४	१२	३	६	४	१०
घटि	३६	२४	१२	१२	००	३६	००	१२	४८
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	१३	१२	४	१४	४	७	४	१२	११
घटि	३२	६	५९	१५	१६	७	५९	४९	२४
पल	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	१०	४	१२	३	६	४	११	१०	१२
घटि	५०	२७	४५	४९	२२	२७	२८	१२	६
पल	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	५	१	२	१	४	४	४	४
घटि	५०	१५	३४	३७	५०	४३	१२	५९	२७
पल	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५	४५

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१५	४	७	५	१३	१२	१४	१२	५
घटि	००	३०	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	४	३	४	३	१	४
घटि	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०
पल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	६	६	७	६	२	७	२
घटि	४५	३७	४५	००	७	२२	३७	३०	१५
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	४	४	४	४	१	५	१	१
घटि	५०	४३	१२	५९	२७	५०	१५	३४	३७
पल	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	८	१०	९	३	१०	३	५	३	९
घटि	३२	८	४	४४	४०	१२	२०	४४	३६

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शन्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	१२	१०	४	१२	३	६	४	११	१०
घटि	२	४६	२६	४०	४८	२०	२६	२४	८

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	९	३	११	३	५	३	१०	९	१०
घटि	३८	५८	२०	२४	४०	५८	१२	४	४६

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	४	१	२	१	४	३	४	३
घटि	३८	४०	२४	२०	३८	१२	४४	२६	५८

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१३	४	६	४	१२	१०	१२	११	४
घटि	२०	००	४०	४०	००	४०	४०	२०	४०

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	३	३	३	३	१	४
घटि	१२	००	२४	३६	१२	४८	२४	२४	००

चन्द्र की दशा में गुरु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	६	५	६	५	२	६	२
घटि	२०	२०	००	२०	२०	४०	२०	४०	००

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	४	३	४	३	१	४	१	२
घटि	३८	१२	४४	२६	५८	३८	४०	२४	२०

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	१०	९	११	१०	४	१२	३	६	४
घटि	४८	३६	२४	१२	१२	००	३६	००	१२

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	१४	१२	५	१५	४	७	५	१३	१२
घटि	१७	४७	१५	२	३०	३२	१५	३२	२
पल	२२	७	५२	३०	४५	१५	५२	१५	००
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	११	४	१३	४	६	४	१२	१०	१२
घटि	२६	४२	२७	२	४३	४२	६	४६	४७
पल	२२	३७	३०	३५	४५	३७	[illegible]	००	७
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	५	१	२	१	४	४	५	४
घटि	५६	३२	३९	४६	५६	५९	२६	१५	४२
पल	२२	३०	४५	१५	२२	१५	००	५२	३७
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१५	४	७	५	१४	१२	१५	१३	५
घटि	५०	४५	५५	३२	१५	४०	२	२७	३२
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	४	३	४	४	१	४
घटि	२५	२२	३९	१६	४८	३०	२	३९	४५
पल	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	७	६	७	६	२	७	२
घटि	५७	४६	७	२०	३१	४३	४६	५५	२२
पल	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	४	४	५	४	१	५	१	२
घटि	५६	५९	२६	१५	४२	५६	३२	३९	४६
पल	२२	१५	००	५२	३७	२२	३०	४५	१५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	१२	११	१३	१२	४	१४	४	७	४
घटि	४९	२४	३२	६	५९	१५	१६	७	५९
पल	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	१०	१२	१०	४	१२	३	६	४	११
घटि	८	२	४६	२६	४०	४८	२०	२६	२४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	१०	४	१२	३	६	४	१०	९	११
घटि	१४	१२	२	३६	१	१२	५०	३८	२६
पल	७	५२	३०	४५	१५	५२	१५	००	२२
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	४	१	२	१	४	३	४	४
घटि	४४	५७	२९	२८	४४	२७	५८	४२	१२
पल	७	३०	१५	४५	७	४५	००	३७	५२
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१४	४	७	४	१२	११	१३	१२	४
घटि	१०	१५	५	५७	४५	२०	२७	२	५७
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	३	३	४	३	१	४
घटि	१६	७	२९	४५	२४	२	३६	२९	१५
पल	३०	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	६	५	६	६	२	७	२
घटि	३२	२८	२२	४०	४५	१	२८	५	७
पल	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	४	३	४	४	१	४	१	२
घटि	४४	२७	५८	४२	१२	४४	५७	२९	२८
पल	७	४५	००	३७	५२	७	३०	१५	४५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	११	१०	१२	१०	४	१२	३	६	४
घटि	३८	२२	६	५०	२७	४५	४९	२२	२७
पल	३०	००	४५	१५	४५	००	३०	३०	४५

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	९	१०	९	३	११	३	५	३	१०
घटि	४	४५	३८	५८	२०	१६	४०	५८	१२

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	१२	११	४	१३	४	६	४	१२	१०
घटि	४७	२६	४२	२७	२	४३	४२	६	४६
पल	७	२२	३०	३०	१५	४५	३०	४५	००
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	२	००	१	००	१	१	१	१
घटि	४२	२	३६	१	४२	५०	३८	५६	४४
पल	५२	३०	४५	१५	५२	१५	००	२२	७
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	५	१	२	२	५	४	५	४	२
घटि	५०	४५	५५	२	१५	४०	३२	५७	२
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	१	१	१	००	१
घटि	३१	५२	३६	३४	२८	३९	२९	३६	४५
पल	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	१	२	२	२	२	१	२	००
घटि	२७	१	३७	२०	४५	२८	१	५५	५२
पल	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	२	००	१
घटि	४२	५०	३८	५६	४४	४२	२	३६	१
पल	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५	१५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	४	४	४	४	१	५	१	२	१
घटि	४३	१२	५९	२७	५०	१५	३४	३७	५०
पल	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	३	४	३	१	४	१	२	१	४
घटि	४६	२६	५८	३८	४०	२४	२०	३८	१२

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	५	४	१	५	१	२	१	४	४
घटि	१५	४२	५६	३२	३९	४५	५६	५९	२६
पल	५२	३७	२२	३०	४५	१५	२२	१५	००
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	४	१	४	१	२	१	४	३	४
घटि	१२	४४	५७	२९	२८	४४	२७	५८	४२
पल	५२	७	३०	१५	४५	७	४५	००	३७
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१६	५	८	५	१५	१३	१५	१४	५
घटि	४०	००	२०	५०	००	२०	५०	१०	५०

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	४	४	४	४	१	५
घटि	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	४	२	७	६	७	७	२	८	२
घटि	१०	५५	३०	४०	५५	५	५५	२०	३०

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	२	५	४	५	४	२	५	१	२
घटि	२	१५	४०	३२	५७	२	५०	४५	५५
पल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	१३	१२	१४	१२	५	१५	४	७	५
घटि	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	१०	१२	११	४	१३	४	६	४	१२
घटि	४०	४०	२०	४०	२०	००	४०	४०	००

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	१५	१३	५	१५	४	७	५	१४	१२
घटि	२	२७	३२	५०	४५	५५	३२	१५	४०
पल	३०	३०	३०	००	००	३०	३०	००	००

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	१२	४	१४	४	७	४	१२	११	१३
घटि	३	५७	१०	१५	५	५७	४५	२०	२७
पल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	२	५	१	२	२	५	४	५	४
घटि	२	५०	४५	५५	२	१५	४०	३२	५७
पल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा,

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	१	१	१	००	१
घटि	२७	४५	३१	२१	१२	२५	१६	३१	३०
पल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	००	२	२	२	२	००	२	००
घटि	१५	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा.

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	१	००	००
घटि	३६	३४	२८	३९	२९	३६	४५	३१	५२
पल	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०	३०

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	४	३	४	३	१	४	१	२	१
घटि	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५	३४
पल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा.

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	३	३	३	१	४	१	२	१	३
घटि	१२	४८	२४	२४	००	१२	००	२४	३६

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	४	४	१	४	१	२	१	४	३
घटि	३०	२	३९	४५	२५	२२	३९	१६	४८
पल	४५	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	३	१	४	१	२	१	३	३	४
घटि	३६	२९	१५	१६	७	२९	४९	२४	२
पल	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	१	१	१
घटि	३६	४५	३१	५२	३६	३४	२८	३९	२९
पल	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	५	१	२	१	४	४	४	४	१
घटि	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा मंगल की प्रत्यन्तर दशा में मंगलादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	१	००	००
घटि	३०	१७	८	२१	१२	३०	२५	२५	४२
पल	००	१०	३६	२७	५३	००	४५	४३	५२
विपल	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०	३०

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	३	२	३	३	१	३	१	१	१
घटि	१८	५६	२९	७	१७	४०	६	५०	१७
पल	२७	२४	२८	२५	१०	३०	९	१५	१०
विपल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	२	३	२	१	३	००	१	१	२
घटि	३६	६	४६	८	१६	५८	२८	८	५६
पल	४८	१२	३६	३६	००	४८	००	३६	२४

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म द शा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	३	३	१	३	१	१	१	३	३
घटि	४१	१७	२१	५२	९	५४	२१	२९	६
पल	६	५०	२७	४५	४९	२२	२७	२८	१२
विपल	४५	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	२	१	३	१	१	१	३	२	३
घटि	५७	१२	२८	२	४४	१२	७	४६	१७
पल	००	५३	१५	२८	७	५३	२५	३६	५०
विपल	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	१	१	१
घटि	३०	२५	२५	४२	३०	१७	८	२१	१२
पल	००	४५	४३	५२	००	१०	३६	२७	५३
विपल	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	४	१	२	१	३	३	३	३	१
घटि	५	१३	२	२५	४०	१६	५२	२८	२५
पल	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	००	१	१	००	१
घटि	२२	३६	२५	६	५८	९	२	२५	१३
पल	३	४५	४३	९	४८	४९	२८	४३	३०
विपल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	००	१	१	१	१	००	२	००
घटि	१	४२	५०	३८	५६	४४	४२	२	३६
पल	१५	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५
विपल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली 110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वास्तुशास्त्र और गृहसज्जा (पिरामिड, फैंग शुई के चमत्कार)

महर्षि गोपाल शर्मा (बी.ई.)बी.सी.-4, मियांवाली नगर, पश्चिम विहार, दिल्ली-110087 दूरभाष : 5687077, 5670033 तथा बड़ोदरा के प्रोफेसर डॉ. जितेन भट्ट

श्री आर्यभट्ट पंचांग के पाठक वास्तुशास्त्र की महत्ता व मूल सिद्धांतों से भलीभांति परिचित हैं और जानते हैं कि यदि भवन निर्माण के समय ही वास्तु नियमों का पालन किया जाए तो सर्वोत्तम है। इसका अर्थ यह नहीं है कि जो भवन बने हुए हैं इनमें तोड़-फोड़ की नहीं जा सकती, ऐसे भवन वास्तु नियमों का लाभ लेकर सुख-समृद्धि दायक बन सकते हैं। ऐसी स्थिति में दक्षिण-पूर्वी देशों में विकसित फैंग-शुई नामक उपचार पद्धति व मिस्र में उपजी पिरामिड शक्ति से बिना तोड़-फोड़ के मामूली परिवर्तन द्वारा भवन के वास्तु दोष-निवारण किये जा सकते हैं।

यह एक वैज्ञानिक सत्य है कि भवन निर्माण में वास्तु-शास्त्र का पालन करने या विभिन्न तकनीकों द्वारा वास्तु-दोष निवारण से विभिन्न दैवीय शक्तियां उन सब व्यक्तियों के सोच-विचार एवं कार्यशैली में मदद करती हैं जो इन निर्माण स्थलों से जुड़े होते हैं। स्थान के मालिक, किरायेदार, भवन बनाने वाले ठेकेदार तथा मजदूरों पर भी इसका प्रभाव देखा गया है। उन सरल अनुभूत प्रयोगों से हर घर, दुकान, कार्यालय अथवा व्यावसायिक परिसर में ब्रह्मांड के प्रत्येक अणु में व्याप्त असीम ऊर्जा द्वारा सभी रुके कार्य अल्प प्रयास से थोड़े ही समय में पूर्ण किये जा सकते हैं। सर्वव्यापी मान्यता के अनुसार प्रकृति के विभिन्न तत्वों का स्थानन अथवा वर्गीकरण आठ मुख्य दिशाओं में किया जाता है।

आंतरिक भवन-सज्जा

घर, दुकान या कारखाने को वास्तु अनुरूप बनाने के लिये निर्माण के साथ-साथ उस जगह की आंतरिक सुव्यवस्था एवं साज-सज्जा अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। वास्तु, फैंग-शुई, पिरामिड शक्ति प्रयोग तंत्र में बिना तोड़-फोड़ किये निम्नलिखित उपाय प्रचलित हैं-

दर्पण-यह घर की सुख शांति तथा व्यापार में धन की वृद्धि करता है। इसी कारण होटलों, जलपान ग्रहों तथा बड़े ज्वैलर्स के यहां दर्पण का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। दक्षिण, पश्चिम, दक्षिण-पश्चिम के मुख्य द्वार वाले भवनों, कोने कटे मकानों, संकरे गलियारों या व्यावसायिक स्थानों पर भी दर्पण के उचित प्रयोग से काफ़ी हद तक वास्तु दोष दूर किया जा सकता है।

यथासंभव दर्पण का प्रयोग पूर्व, उत्तर या उत्तर-पूर्व में ही होना चाहिए। एक चीनी मान्यता के अनुसार शयनकक्ष में सोते समय शरीर का जो हिस्सा दर्पण में नज़र आता है उस हिस्से में दर्द-बीमारी का वास हो जाता है। रात को ठीक से नींद नहीं आती है तथा सुबह शरीर थका-थका सा रहता है।

पौधे-प्रवेश द्वार के दोनों और पौधे रखने से मनुष्य की शक्ति, धन, वैभव में वृद्धि होती है। घर एवं स्कूल में बच्चों के अध्ययन कक्ष व व्यापारिक स्थल की उत्तरी दीवार के पास पौधे या बौन साई रखने से चमत्कारिक प्रभाव देखे जा सकते हैं। प्राकृतिक पौधों के अभाव में कागज तथा प्लास्टिक के फूल पत्ती तथा पेड़ों का प्रयोग भी किया जा सकता है।

प्रकाश-घर व्यवसाय में असमताओं को ठीक करने का अचूक साधन है। स्फटिक निर्मित शेन्डलियर से भी भवन की पारंपरिक सुंदरता बढ़ाने के अलावा वातावरण में समरसता व संतुलन लाया जा सकता है। प्रकाश का प्रयोग एल के आकार के समान भवन का दोष दूर करने में किया जा सकता है।

फव्वारे-झरने-पानी वैभव, धन तथा अधिकाधिक समृद्धि का प्रतीक है। फव्वारे एवं एक्वेरियम लगाने से परिवार में खुशी, धन, समृद्धि तथा आपस में प्रेम बढ़ता है। इनका प्रयोग भी पूर्व, उत्तर-पूर्व, उत्तर में ही अच्छा है।

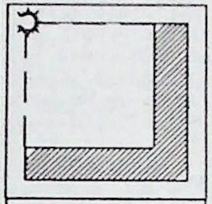

(फ्लड लाइट द्वारा एल की आकृति वाले भवन का सुधार

वायु की झंकार-(घंटियां) आपसी संबंधों को नई दिशा, काम के नये आयाम, विभिन्न आकार व आवाज़ वाली घंटियां प्रोफेशनल जानकारी तथा व्यापार में नई उपलब्धियां प्रस्तुत करती हैं। द्वार, खिड़की के समीप या उत्तर-पश्चिम कोने में इनका प्रयोग सर्वोत्तम है।

पिरामिड शक्ति-भारत के प्राचीन ऋषि-मुनियों व तत्व वेत्ताओं तथा मिस्र के प्राचीन विद्वानों के अनुसार पिरामिड आकार एक अपरिचित शक्ति स्रोत है।

उचित प्रयोगों से अनगिनत स्वास्थ्य समस्याएं तथा भवनों में वास्तु दोष दूर किये जा सकते हैं। ई.एस.पी. प्रयोग शाला लॉसएंजिल्स (अमरीका) के निर्देशक एल. मेनिंग ने असंख्य परीक्षणों के बाद ये माना है कि पिरामिड संरचना में वास्तव में एक अबूझ विस्मयकारी व अचूक शक्ति है जो मानव कल्याण के लिए प्रयोग की जानी चाहिए। इस अमेरिकन संस्था के वैज्ञानिकों ने लिखा है कि अपनी राशि के अनुसार छोटे रंगीन पिरामिडों में अपनी फोटो तथा तिकोने कागज पर एक इच्छा लिखकर लगभग ३९ दिनों मं पूरी की जा सकती है। प्लास्टिक के पिरामिड का कुछ समय प्रतिदिन सिर पर तथा छोटी पिरामिड शक्ति का कुर्सी या बिस्तर पर तकिये के नीचे प्रयोग करने से भी अनेकों अभिभावकों को बच्चों की पढ़ाई में ध्यान न देने या शीघ्र न समझ आने की शिकायतें दूर हुई हैं।

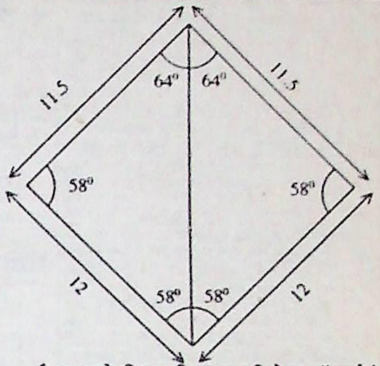

हैदराबाद के विश्व प्रसिद्ध वास्तु विशेषज्ञ डॉ. पूर्णचंद राव के अनुसार ९×९ अधिक शक्ति युक्त पिरामिड को दफ्तर, अध्ययन कक्ष, गोष्ठी कक्ष में रखने मात्र से सारा कमरा दैवी शक्ति से ओत-प्रोत हो जाता है। बहुत से लोगों के पत्र आये हैं कि यह उपकरण लगाने पर-

❖ कचहरियों के फैसले कंपनी के हक में हुए हैं। ❖ अधिक संस्थाओं में कर्ज के पुराने अनिर्णित प्रार्थनापत्रों के कर्ज मिल गये। ❖ अप्रत्याशित बिक्री के लक्ष्य प्राप्त हुए। ❖ मार्ग की सब रुकावटें समाप्त हुईं। ❖ गंभीर बीमारियां ठीक हुई हैं। ❖ मन पसंद रिश्ते हुए। ❖ घर, कारखाने, व्यावसायिक स्थलों पर गंभीर वास्तु दोष दूर किये गये।

आवश्यकतानुसार एक या उससे अधिक पिरामिड शक्ति युक्त यंत्र लगाकर वे लोग उस दोष का निवारण करके सैकड़ों लोगों को २१ से ९० दिन में ही लाभान्वित कर चुके हैं।

अपने तीस साल के आध्यात्मिक जीवन के देश-विदेश के विभिन्न भागों में हुए पिछले ९ वर्ष के प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर मैं यह पूर्ण विश्वास से कह सकता हूं कि वास्तुशास्त्र, फैंग-शुई व पिरामिड शक्ति के उचित प्रयोग द्वारा घर-घर में व्याप्त चिंता व तनाव बहुत हद तक कम किया जा सकता है। हमारी इस प्राचीन अनमोल विरासत का आधुनिक विज्ञान के साथ सुखद तालमेल हो तथा अधिक से अधिक लोग सुखी व समृद्ध हों, यही हम सब के हित में हैं। -गोपाल शर्मा

संकरे गलियारों एवं दुकानों का सुधार

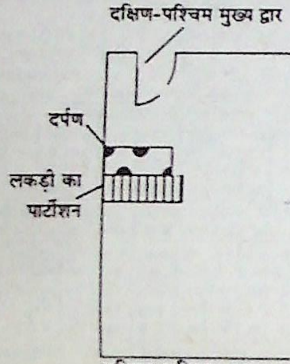

दक्षिण-पश्चिम मुख्य द्वार का सुधार

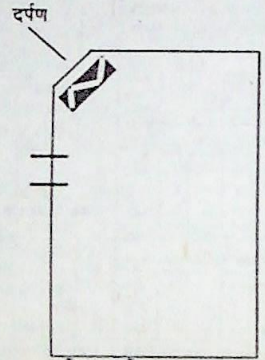

दक्षिण-पश्चिम मुख्य द्वार का सुधार

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वास्तु शास्त्र

लेखक-श्री सत्यवीर शास्त्री

विश्वकर्मा जी बोले — हे मुनि श्रेष्ठ! मैं गृहस्थ आश्रम में रहने वाले लोगों के कल्याण के लिए गृह आरम्भ और गृह प्रवेश के समय को विस्तारपूर्वक कहता हूँ। आप एकाग्रचित्त होकर सुनें। यह वही वास्तु शास्त्र है जिसे भगवान महादेव ने महर्षि पराशर को और पराशर जी ने मुनि वेद को और मुनि वेद ने मुझसे कहा था। पूर्वकाल (त्रेतायुग) में एक महाभूत उत्पन्न हुआ जिसने अपनी विशाल देह से समस्त चराचर को आच्छादित कर लिया। उससे इन्द्र आदि सभी देवता विस्मय युक्त होकर और भयभीत होकर ब्रह्मा की शरण में जाकर बोले—हे भूत भावन! हे भूतेषु लोक पितामह! हमारे लिए महाभयंकारी एक संकट उत्पन्न हुआ है। आप उससे तृण पाने का उपाय हमें बतलायें। ब्रह्माजी बोले—हे देवगण! भय मत करो। जो बलशाली महाभूत उत्पन्न हुआ है उसको पकड़ो और भूमि पर गिराकर तुम सभी निर्भय हो जाओ। ब्रह्माजी के वचन सुनकर देव समूह क्रोध में संतप्त हो उस महाभूत को पकड़कर आधोमुख धरती पर पटक कर निर्भय हो वहीं स्थित हो गये। उसी को लोक पितामह ब्रह्माजी ने वास्तु पुरुष की संज्ञा दी है। यह वास्तु पुरुष भाद्रपद मास की कृष्ण तृतीया शनिवार, कृतिका नक्षत्र, व्यतिपात योग, विष्टिकरण, भद्रा के मध्य और कुलिक मुहूर्त्त में उत्पन्न हुआ था। उस समय यह वास्तु पुरुष भारी शब्द करता हुआ ब्रह्माजी के पास पहुंचा और ब्रह्माजी के सम्मुख जाकर दीन स्वर में बोला—हे प्रभु! आपने इस सम्पूर्ण चराचर जगत की रचना की है और आपने ही मुझे रचा है फिर बिना अपराध के यह देव समूह मुझे पीड़ा क्यों पहुंचा रहा है? वास्तु पुरुष के दीन वचन सुनकर लोक पितामह ब्रह्माजी ने उसे वरदान दिया कि हे वास्तु पुरुष! जो व्यक्ति ग्राम, नगर, द्वार, गृह, जलाशय, देव स्थान इत्यादि के आरंभ करने में मोह वश हमारा पूजन करेगा वह व्यक्ति दरिद्रता को तो प्राप्त होगा ही परन्तु जीवन रहते भी मृत्यु सम कष्ट भोगेगा, उसके हर कार्य में विघ्न उपस्थित होंगे और अन्ततः वह हमारा आहार बन जायेगा। ऐसा कहकर लोकपति ब्रह्माजी अन्तर्ध्यान हो गये। इसलिए विज्ञ पुरुषों को चाहिए कि गृह आरम्भ और गृह प्रवेश के समय वास्तु पूजा अवश्य करें। इसके अतिरिक्त भी द्वार बनने के समय तीन प्रकार के गृह प्रवेश (यात्रा से लौटने पर, नवीन गृह में प्रवेश के समय, यदि यात्रा से लौटकर आने पर नूतन गृह प्रवेश) के समय उस प्रत्येक वर्ष यज्ञ आदि में, संतान के जन्म के समय, यज्ञोपवीत के समय, विवाह के समय, मंगल्य उत्सवों के समय, गृह के जीर्णोद्धार तथा गृह में धान रखने के समय, बिजली से टूटे हुए मकान में, अग्नि में जल जाने पर, गृह में सर्प और चण्डाल के वास करने पर जिस गृह में उल्लू और कौआ एक सप्ताह वास करे उस घर में, जिस गृह में हिरण वास करे, बिड़ला शब्द करे, हाथी-घोड़े क्रूर शब्द करें, जिस गृह में स्त्रियां कलह करती हों, मधुमक्खियों का छत्ता रखा हो। जंगली कबूतरों का वास हो अथवा अन्य अप्राकृतिक उत्पाद होते हैं वहां वास्तु शांति अवश्य करनी चाहिए।

गृह निर्माण योग्य भूमि के लक्षण

प्राचीन मुनिपियों में भूमि को ब्राह्मादि वर्णनक्रम से श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण वर्ण भूमि को शुभ कहा है। जिस भूमि में फूलों की सी सुन्दर गंध आती हो वह भूमि ब्राह्मण वर्णी कहलाती हैं। जिसमें रक्त जैसी गंध आती हो वह क्षत्रिय वर्णी, जिसमें मधु जैसी गंध आती हो वह वैश्य वर्णी और जिसमें मदिरा जैसी गंध आती हो वह भूमि शूद्र वर्णी कहलाती हैं। जिस भूमि की मिट्टी का स्वाद मधुर हो वह ब्राह्मण वर्णी, जिसका स्वाद कसैला हो वह क्षत्रिय वर्णी, जो स्वाद में खट्टी हो वह वैश्य वर्णी और जिस भूमि की मिट्टी तिती हो वह शूद्र वर्णी कहलाती है। भवन निर्माण के लिए जो भूमि चौकोर हो, हाथी के आकार की हो, सिंह, बैल, घोड़े आदि के समान रूप वाली हो, त्रिशूल, भद्रपीठ, शिवलिंग के समान हो, प्रसाद के ध्वज और कुंभ आदि के समान हो वह भूमि देवताओं को भी दुर्लभ है। जिसकी आकृति त्रिकोनी गाड़ी के आकार की, सूर्प बीज के समान, मदृग के आकार की, सर्प अथवा मेढक के रूप वाली, गधा, अजगर के सादृश्य, सूकर, ऊंट, बकरी के समान, धनुष, कुल्हाड़ी के सादृश्य, गिरगिट और शव के रूप वाली, जहां जाना कष्ट साध्य हो ऐसी भूमियों को गृह निर्माण के लिए उपयोग में नहीं लाना चहिए। गृह निर्माण के लिए उसी भूमि की परीक्षा करनी चाहिए जो सुन्दर हो। जो भूमि उत्तर और पूर्व की ओर नीची, दक्षिण और पश्चिम की ओर ऊंची होती है वह दृढ़ कही जाती है। ब्राह्मणों के लिए गंभीर भूमि, क्षत्रियों के लिए ऊंची भूमि, वैश्यों के लिए समतल भूमि और शूद्रों के लिए विकट भूमि पर गृह निर्माण शुभ रहता है। अथवा समतल भूमि पर सभी वर्ण वाले गृह निर्माण करे तो शुभ फल मिलते हैं। जिस भूमि का वर्ण श्वेत हो वह सभी वर्णों के लिए शुभ रहती है। जिस भूमि पर कुशा उगी हो वह ब्राह्मणी भूमि कही जाती है और ब्राह्मणों को शुभद रहता है। क्षत्रियों के लिये दुवा से युक्त भूमि शुभद रहती है। जो भूमि फल-पुष्प से युक्त हो वह वैश्यों को सुखकर रहती है। जिस भूमि पर कण आदि उत्पन्न होते हैं वह भूमि शूद्रों के लिए शुभ फलकारी होती है। जिस भूमि पर नदी कटाव दे रही हो अथवा उसमें बड़े-बड़े पत्थर हों, पर्वतों के साथ मिली हुई गड्ढे से युक्त छत वाली, टेढ़ी-मेढ़ी, सूर्प के आकार की दण्ड के समान, निस्तेज भल और रीछ के सादृश्य, मध्य में विकट रूप कुत्ता और शयारों के सादृश्य रूखी, चैतय श्मशान वामी आदि के स्थान से युक्त चौराहा युक्त, जहाँ बड़े- बड़ें ऊँचे वृक्ष हों, जिस भूमि पर भूत आदि का निवास हो, जो नगर से दूर हो ऐसी भूमि को गृह निर्माण के लिये उपयोग में नही लाना चाहिए। जिस भूमि में अपने वर्ण की गंध आती हो, जो सुंदर स्वाद से युक्त हो उस पर गृह निर्माण करने से गृह स्वामी को धन-धान्य और सुख की प्राप्ति होती हैं। इसके विपरीत भूमि पर गृह निर्माण करने से विपरीत फल मिलता हैं। अतः भूमि की परीक्षा करना गृह निर्माण से पूर्व आवश्यक रहता हैं। जो भूमि चौकोर है उस पर गृह निमार्ण करने से धन- धान्य की वृद्धि होती है। जो भूमि हाथी के समान है उस पर गृह निर्माण करने से व्यवसाय में वृद्धि होती है। सिंह के समान भूमि पर गृह निर्माण करने से उत्तम संतान की प्राप्ति होती है। जो भूमि बैल के सादृश्य है उस पर गृह निर्माण करने से गृहस्वामी के पशु धन की वृद्धि होती है। जो भूमि गोल आकार की तथा भद्रपीठ के सादृश्य है उस भूमि पर वास करने से सुख की प्राप्ति और जो भूमि त्रिशूल के समान आकार वाली है उस पर वास करने से धन व सुख दोनों

CC-0. In Public Domain. Kirtan Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

मिलते हैं। जो भूमि शिवलिंग के आकार की हो उस पर शिवालय आदि का निर्माण और साधुओं का निवास शुभद रहता है। जो भूमि प्रस्तुत ध्वज के समान हो उस पर गृह निर्माण करने से गृहस्वामी को पदोन्नति मिलती है। कुंभ के सादृश्य भूमि पर गृह निर्माण कर गृहस्वामी अपनी धन-संपदा को बढ़ा लेता है। जो भूमि त्रिकोण के सादृश्य, गाड़ी के आकार वाली, सूर्प और बीज के सादृश्य हो उस पर गृह निर्माण करने से गृहस्वामी को क्रमश: पुत्र सुख, धन सुख में कमी और धर्म की हानि होती है। जो भूमि मृदंग के समान हो वह वंश की हानि करती है। सर्प और मेंढ़क के आकार वाली भूमि भय उत्पन्न करती है, गधे के आकार वाली भूमि निर्धनता को जन्म देती है। अजगर के सादृश्य भूमि मृत्यु सम कष्ट पहुंचाती है। चपटी और मुदगर के सादृश्य भूमि पुरुषार्थ की हानि करती है। उल्लू और कौए की सादृश्य भूमि दुःख, सुख और भय को जन्म देती है। सर्पाकार भूमि संतति आदि को नष्ट करती है। सूकर, ऊँट और बकरे के साध्य भूमि मलिन, मूर्ख पुत्रों को उत्पन्न करती है। जो भूमि गिरगिट और सर्प के समान हो वह मृत संतान को उत्पन्न करती है। मार्गश्री, फाल्गुन, वैशाख, माघ, आश्विन और कार्तिक में गृह आदि का निर्माण करने से गृहपति को पुत्र तथा स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। यह नारद का मत है। वैशाख, आश्विन, मार्ग., आषाढ़, माघ, फाल्गुन में यदि कन्या, मिथुन, धनु और मीन से अन्य राशि में सूर्य हो तो गृह निर्माण करना शुभ होता है। यह किसी आचार्य का मत है। चैत्र, ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक और माघ के महीनों में गृह आरम्भ नहीं करना चाहिए। यह योगेशाचार्य का मत है। मेष के सूर्य यदि वैशाख में गृह निर्माण करने से सुख, वृष के सूर्य अर्थात् ज्येष्ठ में धन वृद्धि, माघ के सूर्य अर्थात् आषाढ़ में मृत्यु, कर्क के सूर्य अर्थात् आश्विन में धन लाभ, सिंह सूर्य अर्थात् भाद्रपद में भद्रव्य वृद्धि, कन्या अर्थात् आश्विन में रोग से पीड़ा, तुला अर्थात् कार्तिक में धन वृद्धि, धनु के सूर्य अर्थात् पौष में हानि का भय, मकर के सूर्य अर्थात् माघ में धन का लाभ, कुंभ के सूर्य अर्थात् फाल्गुन में रत्नों का लाभ और मीन के सूर्य अर्थात् चैत्र में गृह निर्माण करना भयदायक होता है यह नारद का मत है।

फाल्गुन मास में कुंभ का सूर्य हो, आश्विन में सिंह अथवा कर्क के तथा पौष में मकर के तो पूर्व, पश्चिम द्वार का गृह निर्माण करना शुभ होता है। वैशाख में मेष और वृष मार्ग. दल में तुला और वृष के सूर्य हो तो दक्षिण-उत्तर द्वार का गृह निर्माण करना शुभ होता है। यह रामदेवाज्ञ का मत है। कर्क, मकर, सिंह, कुंभ के सूर्य में पूर्व, पश्चिम और द्वार में धर तुला, मेष, वृष, वृश्चिक के सूर्य में दक्षिण, उत्तर द्वार का गृह निर्माण करना शुभ होता है। मीन, धनु, कन्या के सूर्य में गृह निर्माण करना निषिद्ध है। जो अनभिज्ञ लोग इस काल में गृह निर्माण करते हैं वह सदैव ही दु:ख और शोक को भोगते हैं यह श्रीपति का मत है। किसी आचार्य का मत है कि मेष के सूर्य में चैत्र, वृष में ज्येष्ठ, कर्क में आषाढ़, सिंह में भाद्रपद, तुला में आश्विन, वृश्चिक में कार्तिक, मकर में पौष और कुम्भ में माघ मास में गृह आरम्भ शुभ होता है। कार्तिक में कन्या का सूर्य और माघ में धनु का सूर्य शुभ नहीं होता। घास-फूस अथवा लकड़ी के घर बनाने में मास शुद्धि की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि यह लंबे समय तक रहने योग्य नहीं होता। ईंट अथवा पत्थर द्वारा गृह निर्माण निन्दित मासों में नहीं करना चाहिए। ज्येष्ठ में पशु गृह, आश्विन में धान्य गृह, माघ में गौशाला और चैत्र में नदी के तटवर्ती भवन का निर्माण शुभ होता है। शुक्ल पक्ष में गृह आरम्भ करने से सरवीत शोक, कृष्ण पक्ष में चौरों का भय तथा शुक्र और गुरु दोनों ही उदिय हों तो शुक्ल पक्ष में दिन के समय गृह आरम्भ करना चाहिए।

शास्त्र का ज्ञाता होना एक बात है, उसके रहस्य को जानना नितान्त भिन्न बात है। जब तक किसी भी शास्त्र के मर्म को नहीं जाना जाता तब तक केवल जमीन की सतह की पैमाइश करने वाली बात ही रहती है। रहस्य उस विषय के मर्मज्ञ जनों की कृपा से अथवा पराम्बा केप्रसाद से उद्घाटित होता है। ज्योतिष एवं सामुद्रिक शास्त्र जैसे विषय का रहस्य तो गुरू-कृपा से ही ज्ञात हो सकता है। ज्योतिष को त्रिपाक्षिकी की विद्या कहते हैं अर्थात् छ: सप्ताह तक यदि ज्योतिष का प्रयोग ना किया जाए तो यह विस्मृत हो जाती है। किसी भी विद्या को चिरयुवा रखने का अमोघ आधार अभ्यास है इसलिए जो कोई भी इस विद्या में निपुणता प्राप्त करना चाहता है उसे निरन्तर अभ्यास से परिपुष्ट करते रहना चाहिए।

ज्योतिष को वेदांग के सुरूप में सम्मानित किया गया है और इस विषय की व्यापकता सूर्य की रश्मियों की तरह अपरिमेय है। भगवान् भास्कर हमें प्रकाश ही नहीं देते, सविता के रूप में विविध वस्तुओं को उत्पन्न भी करते हैं और सप्ताश्ववाही रथ पर अधिष्ठित होने के कारण हमारे जीवन और सृष्टि को तरंगी सतरंगी सुन्दरता से सजाते भी हैं। ये भुवनस्य गोप्ता हैं इसलिए इनकी प्रचण्ड किरणों के आवरण को भेदकर ब्रह्माण्डीय किरणें तथा अल्ट्रा वायलेट रेज जैसी घातक एवं शक्तिशाली तरंगे हमें क्षति नहीं पहुंचा सकतीं।

सूर्य की किरणें हमारे अन्तर्वाह्य को प्रभावित करती हैं, इसके निर्माण में भी इनका प्रमुख योगदान रहा है, हमारा ही नहीं समस्त संसार का इतिहास इस कालात्मा के विराट रूप में सुरक्षित है। ऐसे ही हमारा अज्ञात भविष्य भी इसके अलौकिक रूप में वर्तमान है अन्यथा हमारे सीमित पुरज्ञान में वर्तमान का अस्तित्व हस्तलभ्य होता ही कहां है। जो कुछ भी अतीत और व्राह्मता बहुत सीमित है इसलिए हमारी व्यावहारिकता में केवल विगत और आगमिष्यत् हैं जबकि कालात्म के रूप में सभी कुछ वर्तमान है। ज्योतिषी इसी कालात्म को साक्ष्य मानकर हमारे लिए कुतूहल का विषय बन भविष्यत् का कथन करते हैं।

भारत में "तमसो मा ज्योतिर्गमय" की उद्घोषणा करने वाले ऋषि प्रकाश के सत्य और उसकी व्यापकता से परिचित रहे थे इसलिए उन्होंने अविभाज्य काल को पहचान कर उसको अपने जीवन से अच्छिन्न रखने के लिए क्रिया के भेद किए। यह विषय व्याकरण का रहा पर शुद्ध रूप से ज्योतिष की मीमांसा करते समय वे प्रकाश के प्रभाव और परिणामों का सूक्ष्म निरीक्षण करते रहे परिणामत: जिस तरह वे व्यक्ति के बाह्य रूपाकार का आंकलन कर सके उसी तरह उसके आन्तरिक अतएव गुणात्मक स्वरूप का भी मूल्यांकन करने में समर्थ हो सके।

महर्षियों की यह साधना और निरीक्षण पद्धति केवल व्यक्ति तक ही सीमित नहीं रही, पर्यावरण, ऋतु, भूगर्भ और धरित्री की प्रकृति का अध्ययन भी उसकी सीमा में आया। लगध, वराह, पराशर, गर्ग, भृगु और रावण जैसे स्वनाम धन्य मनीषियों ने इस विषय को व्यापक और मानवोपयोगी बनाने में लोकोत्तर योगदान किया। धरती के नीचे कहां मीठे जल की धारा है, किस प्रकार की धरती मनुष्य के आवास के उपयुक्त है, धरती की गंध में जैव रासायनिक परिवर्तन किस तरह के होंगे, उनका हमारे पर अनुकूल प्रभाव होगा अथवा प्रतिकूल आदि विषय ज्योतिष शास्त्र से ही संबद्ध है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्योतिष की ही एक शाखा है, "सामुद्रिक।" सामुद्रिक शब्द व्यक्ति के रूप आकार में प्रसूत चिन्हों एवं संयोजनों को समझने का बोधक किस प्रकार बना — यह शब्द शास्त्र के विवेचन की बात है। हम इतना जानते हैं कि सामुद्रिक के नाम से जाना शास्त्र ज्योतिष की एक शाखा है और यह व्यक्ति की रूप रेखाओं की है को आधार बनाकर उसकी स्थिति एवं भविष्येत् का उपदेश करता है। इसमें मनुष्य के व्यक्तित्व, मुख मंडल, नासिका, ललाट आदि के संघटन को देखकर भविष्य ज्ञान किया जाता है।

हमारे काव्य शास्त्र में सुन्दर पुरुषों एवं स्त्रियों की सुन्दरता के लिए जो उपमायें दी गई हैं वे सामुद्रिक शास्त्र की मान्यताओं को सिद्ध करती हैं। कमल पत्र के समान आयत विशाल आंखें, लाल कमल के सदृश्य सुकोमल अरुण हाथ और पदतल व्यक्ति के सुन्दर स्वास्थ्य के ही सूचक नहीं हैं (क्योंकि लाल रंग सन्तुलित रक्त प्रवाह को ही संभव हुआ करता है) बल्कि उनकी कोमलता व्यक्ति के सम्पन्न स्तर की सूचना देता है। बिहारी की रचनाएं आँखें मुख मंडल को आकर्षक ही नहीं बनाती उसके कामी होने की सूचक भी हैं। क्योंकि ज्योतिष के अनुसार आंखों में भार मंगल की सुदृढ़ एवं नेत्र स्थान से सीधे संबंध के कारण होता है और उनमें रंग चंद्रमा के कारण होता है जहां इन दोनों ग्रहों का संयोजन हुआ। वही व्यक्ति आकृति से मोहक और व्यवहार में कामी हो गया। सामुद्रिक शास्त्र के ये बाह्य चिन्ह व्यक्ति की गृहस्थिति के जन्मकालिक सभी कारण को प्रकट करते हैं और उस स्थिति को जानने पर किसी के भविष्यत् को जान लेना कोई अगम्य बात नहीं रहती। अन्तर यही है कि सामुद्रिक शास्त्र ग्रहों की चर्चा नहीं करता वह संयोजना और संघटनों का फलित बतलाता है।

भारत में आकृति विज्ञान-सामुद्रिक शास्त्र का प्रचार बहुत पुराने समय से प्रचलित है। वाल्मीकि ने राम को आजानुबाहु और अरविन्द दलायताक्ष (घुटनों तक लंबे हाथ और कमल के पत्ते के समान विशाल आंख वाला) बतला कर सामुद्रिक शास्त्र के इस सिद्धान्त की पुष्टि की है कि घुटनों तक के लंबे हाथ वाला व्यक्ति सम्राट हुआ करता है। पैरों के तलवों की रेखाओं, लाल ललाट पर पड़ने वाली वलियां, नासिका आदि को देखकर व्यक्ति के स्तर एवं भावी जीवन को पढ़ने की परम्परा अति प्राचीन काल से है। हाथों की रेखा भी इस भविष्यत ज्ञान का एक माध्यम रहा है।

आज सामुद्रिक शास्त्र में हस्त सामुद्रिक का ही अधिक प्रचार है और निश्चय से इसका श्रेय कीरों को दिया जाना चाहिए। इस शताब्दी में वही एक चमत्कारी सामुद्रिक शास्त्री था जिसकी शुद्ध और चमत्कारी भविष्यवाणियों ने पश्चिम वासियों को इस विज्ञान पर विश्वास करने के लिए बाध्य कर दिया। यद्यपि कीरों की हस्त सामुद्रिक भी भारत की ही देन है (वह दक्षिणी भारत के धर्मपत्र पर लिखी हस्त सामुद्रिक की कोई पुस्तक ले गया था और वही उसके ज्ञान का आधार बनी थी), फिर भी उसने पामिस्ट्री को वैज्ञानिक आधार दिया। उसकी दृष्टि से हाथ की रचना में निर्मित कोई भी चिन्ह बचा नहीं। हाथ का आकार, अंगुलियों की बनावट, अंगूठा, चमड़ी, रेखाओं का रंग रूप आदि सारे अंग-उपांग उसके अध्ययन का विषय बने और इन सबकी उसने सम्यक् संगति करके अपने निष्कर्ष को प्रामाणिक एवं कारणवादी सिद्ध किया।

मेरा अपना विचार है कि कीरों को छोड़कर आज की प्रचलित हस्त रेखा की पुस्तकों को पढ़कर कोई भी उतनी सूक्ष्म और विस्तृत भविष्यवाणी नहीं कर सकता (कर भी सकता है तो मुझे ज्ञात नहीं) इसके साथ ही यह भी है कि ज्योतिष जितना विस्तृत आधार देता है उतना हस्त रेखा नहीं देती। हस्त रेखा वस्तुतः रेडी रालेज है, हस्तरेखा देखने वाले को किसी कुण्डली या समय की आवश्यकता नहीं रहती यह इस विद्या की विशेषता है या अपने सामने फैले हुए हाथ को देखकर व्यक्ति के चरित्र एवं भविष्यत् के गूढ़ रहस्यों को कह देने के खतरे से भी आमने-सामने होना पड़ता है।

इस विद्या से समय का दुरुपयोग अधिक होता है और लोग सच्ची भविष्यवाणियों पर इस विषय की प्रामाणिकता की प्रशंसा नहीं करते बल्कि एक गलत बात का उदाहरण देने लगते हैं। अन्ततः यह भी एक साइंस आफ एस्टीमेट है।

हस्त सामुद्रिक को सम्पूर्ण ज्योतिषीय आधार देने में कीरों ने अपनी तरफ से कोई कसर नहीं रखी। हाथ का रूप एवं आकार हमारे जन्म-लग्न की तरह भविष्य कथन का आधार बनता है अर्थात हाथ का सामान्य आकार व्यक्ति के चरित्र एवं प्रकृति का ज्ञान कराता है तो रेखायें दशा अन्तर्दशा घटने वाली घटनाओं का ज्ञान कराती हैं। अंगुलियों में क्रियात्मकता है और इनका लचीलापन मनुष्य की विकसित बुद्धि का साहचर्य पाकर संसार को मानववृत्त रूप सज्जा से संवारता है।

भारत का तत्वसिद्धांत अंगूठे में आकाश तत्व का मानता है और इन पांच अंगुलियों में यही एक पुल्लिंग है तथा आकाश तत्व का प्रतिनिधि होने के कारण शून्य प्रतीक है और शून्य क्रियाशीलता की प्रत्येक मुद्रा का आधार है। तंत्र में बनाई जाने वाली मुद्राएं और अनिवार्य रूप से किया जाने वाला कर न्यास हमारे हाथ के महत्व को सिद्ध करता है। "कराग्रे वसति लक्ष्मी: करमध्ये सरस्वती मूले तंत्र स्थितो ब्रह्मा" हाथ के अग्रभाग में लक्ष्मी, मध्य भाग में सरस्वती और मूल भाग में ब्रह्मा का निवास रहता है। इस रूप में सोचने वाले भारतीय प्रातःकाल सबसे पहले अपने हाथ को देखने की व्यवस्था करते हैं।

आज की पामिस्ट्री में और भारतीय सामुद्रिक शास्त्र में मूलभूत अंतर है। जिसे समुद्र शास्त्र माता व पिता की रेखा मानता है। उसे पामिस्ट्री मस्तिष्क या शिर और जीवन की रेखा बतलाता है, भारतीय दृष्टि की जीवन रेखा पामिस्ट्री के अनुसार हृदय रेखा होती है। रेखाओं के अन्य स्थानों पर होने वाले चिन्हों के संबंध में कोई मूलभूत अंतर नहीं है।

ग्रहों के स्थानों का नामकरण पामिस्ट्री की अपना स्थापना है। इस विषय में सामुद्रिक शास्त्र केवल इनके आकार का फलित बतलाता है, नामकरण नहीं करता। हमारे हाथ के नीचे भाग मणिबंध के पास चन्द्र और शुक्र के स्थान माने जाते हैं ये दोनों जलीय ग्रह हैं और इनसे व्यक्ति को कल्पनाशीलता और कामुकता का ज्ञान होना एक व्यवहारिक बात रहती है। इससे आगे मंगल का स्थान तेजस्तत्वीय ग्रह का स्थान है। अंगूठे और तर्जनी के बीच के स्थान का पुष्ट होना व्यक्ति की आक्रामक शक्ति को सूचित करता है तो इसके नीचे कनिष्ठा अंगुली की सीध में व्यक्ति की निरोधक शक्ति को। हमारी हथेली के तीन चौथाई भाग में इन तीन ग्रहों का आधिपत्य है अंगुलियों के आधारभूत स्थान शेष चार ग्रहों के।

वृष वास्तु चक्र

गृह निर्माण के पूर्व जिस नक्षत्र में सूर्य हो उस नक्षत्र को दिन नक्षत्र तक गिनें। प्रथम तीन नक्षत्र वृष के शरीर में रहते हैं। उनमें गृह आरम्भ किया हो तो घर में अग्नि काण्ड का भय रहता है। अगले चार नक्षत्र वृष के अगले पैर में होते हैं उनमें गृह आरंभ हो तो घर जनशून्य रहता है। इसके बाद चार नक्षत्र वृष के पिछले पैर में होते हैं

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इनमें किया गया गृह आरम्भ धन और शांतिदायक रहता है। उसके बाद तीन नक्षत्र वृष की पीठ पर स्थित होते हैं इनमें यदि गृह आरम्भ किया जाये तो गृह स्वामी के व्यवसाय में उन्नति होती है। उसके बाद के चार नक्षत्र वृष के दाहिनी कुक्षि में स्थित होते हैं उसमें गृह आरम्भ हो तो लाभ रहता है। इसके बाद के तीन नक्षत्र वृष की पूंछ में स्थित होते हैं। इनमें गृह आरंभ हो तो गृह स्वामी नाश को प्राप्त होता है। इसके बाद के चार नक्षत्र वृष की बायीं कुक्षि में स्थित होते हैं इनमें गृह आरम्भ करना दरिद्रपना देता है। इसके बाद के तीन नक्षत्र वृष के मुख में स्थित होते हैं इनमें गृह आरम्भ किया जाये तो गृह स्वामी को अनेक पीड़ाएं भोगनी पड़ती हैं। सारांश यह है कि जिस नक्षत्र में सूर्य हो उसके सात नक्षत्र अशुभ, उसके बाद ग्यारह नक्षत्र शुभ और पीछे के दस नक्षत्र अशुभ होते हैं। गृह निर्माण करने के लिए सूर्य किस राशि पर स्थित है इस पर विचार कर लेना भी श्रेष्ठकर रहता है। मेष के सूर्य में घर बनाना शुभ फलदायक होता है। वृष के सूर्य में घर बनाना धन-धान्य की वृद्धि करता है। मिथुन के सूर्य में घर बनाने वाले को मृत्यु सम कष्ट पहुंचाता है। कर्क के सूर्य में घर बनाना शुभ फलदाता रहता है। सिंह के सूर्य में घर बनाना दास-दासियों की वृद्धि करता है। कन्या के सूर्य में घर बनाना रोग उत्पन्न करता है। तुला के सूर्य में गृह निर्माण शुभकारी होता है। वृष के सूर्य में घर बनाना धन की वृद्धि करता है। धनु के सूर्य में घर बनाना हानिकारक रहता है। मकर के सूर्य में घर बनाना व्यवसाय में वृद्धि करता है। कुंभ के सूर्य में घर बनाना रत्नों का लाभ पहुंचाता है। मीन के सूर्य में घर बनाना भय उत्पन्न करता है। चैत्र मास में घर बनाने से गृहकर्त्ता को व्याधि का भय। वैशाख मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को धन-रत्न आदि का लाभ। जेठ मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को मरण तुल्य कष्ट। आषाढ़ मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को श्रेष्ठ एवं अधिक भद्र की प्राप्ति लेकिन पशुओं की हानि। इसलिए आषाढ़ मास में पशुओं के लिए घर न बनाना। सावन मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को मित्र से लाभ। भाद्रपद मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को हानि का भय। आश्विन मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता की स्त्री की मृत्यु। कार्तिक मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को धन-धान्य का लाभ। अगहन मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को धन का लाभ। पौष मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को चोरों से भय। माघ मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को विविध भोगों की प्राप्ति परन्तु अग्नि का भय। फाल्गुन मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को रत्न आदि की प्राप्ति। मुहूर्त मार्तण्ड में, पौष में (मकर के सूर्य में) गृह निर्माण करना विशेष फलदायी रहता है। पत्थर, ईंट आदि का घर निन्द मास में निर्माण नहीं करना चाहिए। तृण, काष्ठ आदि के गृह निर्माण के आरम्भ में मास दोष नहीं देखा जाता। यदि सूर्य कर्क, सिंह, मकर अथवा कुंभ राशि का है तो पूर्व या पश्चिम मुख के द्वार का गृह निर्माण करना शुभ रहता है। तुला, वृश्चिक और मेष में का सूर्य हो तो दक्षिण या उत्तर मुख का गृह बनाना। यदि मिथुन, कन्या, धनु और मीन का सूर्य हो तो गृह निर्माण नहीं करना चाहिए। शुक्ल पक्ष का गृह निर्माण करने से सुख मिलता है और कृष्ण पक्ष में गृह निर्माण करने से चोरों का भय रहता है। नारद आदि ऋषियों का मत है कि फाल्गुन, वैशाख, माघ, सावन, कार्तिक इन पाचों मासों में गृह निर्माण करना विशेष फलदायी रहता है। श्रीपति का मत है कि ब्राह्मण आदि वर्णों को क्रमशः पश्चिम, उत्तर, पूर्व, दक्षिण मुख का द्वार बनाना शुभ है। जैसे—ब्राह्मण को पश्चिम मुख, क्षत्रिय को उत्तर मुख, वैश्य को पूर्व मुख और शूद्र को दक्षिण मुख बनाना शुभ है। गृह निर्माण करते समय रवि, चन्द्रमा, वृहस्पति और शुक्र इन चारों ग्रहों में से कोई भी ग्रह निर्बल हो, अस्तगत हो अथवा नीचगस्त हो तो क्रमशः गृह स्वामी की स्त्री सुख और धन का नाश होता है। चन्द्रमा और ग्रह का नक्षत्र ये दोनों यदि आगे बढ़े तो उस ग्रह में गृह स्वामी की स्थिति नहीं होती। अगर उपरोक्त दोनों नक्षत्र पीछे पड़े तो चोरों का भय रहता है। जिस समय गृह बनाना प्रारम्भ करना हो उस समय की कुण्डली बनानी चाहिए। यदि उस कुण्डली के लग्न में सूर्य पड़े तो वज्रपात, चन्द्रमा पड़े तो कोष की हानि, मंगल पड़े तो मृत्यु का भय, शनि पड़े तो दरिद्रता, वृहस्पति पड़े तो धर्म अर्थ और काम की प्राप्ति, शुक्र पड़े तो सुत की उत्पत्ति, बुध पड़े तो बाहुबल और आयु की वृद्धि होती है। द्वितीय भाव में सूर्य पड़े तो हानि का भय, चन्द्रमा हो तो शत्रु का नाश, मंगल हो तो अनेक प्रकार के विघ्न, बुध हो तो अतुल संपत्ति, वृहस्पति हो तो धर्म का समागम, शुक्र हो तो काम सुख की प्राप्ति होती है। तीसरे भाव में शुभ ग्रह पड़े तो थोड़ा शुभ फल करते हैं, पाप ग्रह पड़े तो विशेष शुभफल करते हैं। चतुर्थ स्थान में वृहस्पति हो तो राजा को पूजित, बुध हो तो सर्वथा लाभ प्राप्ति करने वाला, शुक्र हो तो भूमि का लाभ, सूर्य हो तो मित्र से वियोग, मंगल हो तो मित्र से भेद, चन्द्रमा हो तो बुद्धि का नाश, शनि हो तो महा लाभ मिलता है। पंचम भाव में वृहस्पति हो तो वस्त्र और धन का लाभ, मित्र से समागम, शुक्र हो तो पुत्र और धन की प्राप्ति, बुध हो तो स्वर्ण आभूषण की प्राप्ति, सूर्य हो तो पुत्र को कष्ट, चंद्रमा हो तो कलह का आगमन, मंगल हो तो काम सुख में वृद्धि, शनि हो तो काम सुख का नाश करता है। छठे स्थान में सूर्य हो तो राजा को सम्मान, चंद्रमा हो तो पुष्टि, मंगल हो तो शत्रु का नाश, वृहस्पति हो तो धनागम, शुक्र हो तो विद्या का लाभ, बुध हो तो मान का ज्ञान प्राप्त होता है। सप्तम स्थान में वृहस्पति हो तो उच्च वाहन की प्राप्ति, बुध हो तो मध्यम वाहन की प्राप्ति, शुक्र हो तो भूमि और काम सुख की प्राप्ति, रवि हो तो यश का नाश, मंगल हो तो लड़ाई-झगड़े का भय, चंद्रमा हो तो मूर्खता से हानि और शनि हो तो शत्रु से भय रहता है। अष्टम भाव में सूर्य हो तो शत्रु से भय, अनेक विपत्तियों का आगमन, चंद्रमा हो तो सर्वस्व की हानि, मंगल-शनि हो तो महान भय की प्राप्ति, बुध हो तो महान धन की प्राप्ति, वृहस्पति हो तो शत्रु पर विजय का लाभ और शुक्र हो तो परिजनों से सुख मिलता है। नवम भाव में वृहस्पति हो तो बुद्धि और भाग्य की वृद्धि, बुध हो तो नाना प्रकार के भाग की प्राप्ति, शुक्र हो तो थोड़ा भाग उदय, चन्द्रमा हो तो धातु का श्रय, सूर्य हो तो धर्म की हानि, मंगल हो तो सामर्थ्य का नाश, शनि हो तो इच्छा पूर्ति में बाधा उत्पन्न करते हैं। दसम भाव में शुक्र हो तो उत्कृष्ट शयान, वृहस्पति हो तो बहुत सुख, बुध हो तो विजय की प्राप्ति, सूर्य हो तो धन की वृद्धि, चन्द्रमा हो तो कोष की वृद्धि, मंगल हो तो बाहुबल की वृद्धि, शनि हो तो यश का नाश होता है। एकादश स्थान में सभी ग्रह शुभ फलदायी होते हैं। बारहवें स्थान में बैठे हुए सभी ग्रह उदासी उत्पन्न करते हैं।

अगर वृहस्पति, सूर्य, बुध, शुक्र और शनि क्रमशः लग्न षष्ट, सप्तम, चतुर्थ और तृतीय भाव में हो तो ऐसे समय में घर बनाने से वह घर सौ वर्ष तक रहता है। यदि शुक्र, शनि, सूर्य, मंगल और बृहस्पति क्रमशः लग्न तृतीय, षष्ट और पंचम भाव में हो तो उस घर की आयु 200 वर्ष होती है। लग्न में शुक्र, दशम में बुध, एकादश में सूर्य और लग्न को छोड़कर बाकी किसी केन्द्र स्थान में बृहस्पति हो

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उस घर की आयु सौ वर्ष होती है। यदि चौथे स्थान में वृहस्पति, दशवें में चन्द्रमा, मंगल और एकादश स्थान में शनि हो तो उस घर की आयु 80 वर्ष होती है। यदि उच्च में शुक्र लग्न का हो अथवा उच्च का बृहस्पति चतुर्थ में हो अथवा उच्च का शनि एकादश में हो तो ऐसे घर में सदैव लक्ष्मी का निवास रहता है। एक भी गृह शत्रु के नवांश में स्थित होकर सातवें या दशवें स्थान में हो तो उस समय बना हुआ घर एक वर्ष के भीतर ही दूसरे के हाथ में चला जाता है। ध्यान रहे ब्राह्मण आदि वर्ण स्वामी यदि दुर्बल हो तो ऐसा होता है यदि बलि हो तो उपरोक्त फल नहीं मिलता। पुष्य, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़, रोहिणी, उत्तरा भाद्रपद, मृगशिरा, श्रवण, आश्लेषा, पूर्वाषाढ़ इन नक्षत्रों में से किसी एक पर बृहस्पति बैठा हो और उस समय में बृहस्पतिवार हो तो उस समय घर का प्रारम्भ करने से पुत्र-पौत्र आदि की प्राप्ति और राज्य के तुल्य सुख मिलता है। विशाखा, अश्विनी, चित्रा, धनिष्ठा, शतभिषा, आर्द्रा इन नक्षत्रों में से किसी एक में शुक्र बैठा हो और उस दिन शुक्रवार ही हो तो घर आरम्भ करने से धन-धान्य की वृद्धि होती है। रामदेवाज्ञ के मत से विशाखा, अश्विनी, चित्रा, धनिष्ठा, शतभिषा और आर्द्रा, नारद के मत से अश्विनी, शतभिषा, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, चित्रा, धनिष्ठा और पुनर्वसु वशिष्ट के मत से आर्द्रा विशेष रूप से, दूसरे के मत से पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और पुनर्वसु नक्षत्रों में घर आरंभ विशेष शुभ फलदायी होता है। मूल, रेवती, कृतिका, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त और मघा इन सात नक्षत्रों में से किसी एक में मंगल स्थित हो और उस दिन मंगलवार हो उस दिन घर आरंभ करने से वह घर अग्नि से जल जाता है और पुत्र-पौत्र आदि का नाश होता है। ये नारद का मत है। हस्त, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, अश्विनी और रोहिणी इनमें से किसी एक नक्षत्र में बुध स्थित हो और उस दिन बुधवार हो तो घर आरंभ करने से गृह स्वामी को धन, पुत्र और सुख मिलता है ये वशिष्ट का मत है। यदि पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, भरणी, अनुराधा, ज्येष्ठा, स्वाती इन नक्षत्रों में से किसी एक में शनि बैठा हो और उस दिन शनिवार ही हो तो उस घर में उस दिन घर आरम्भ करने से भूत-प्रेत का वास होता है और गृह में निवास करने वालों को भूत और राक्षस प्रताड़ित करते हैं। यह भी वशिष्ट का मत है। हस्त, पुष्य, रेवती, मघा, पूर्वाषाढ़ और मूल इनमें से किसी एक नक्षत्र में मंगल बैठा हो और उस दिन मंगलवार ही हो तो उस दिन घर आरम्भ करने से गृह स्वामी को अग्नि से पीड़ा और पुत्र शोक भोगना पड़ता है। ये रामदेवाज्ञ का मत है। रोहिणी, अश्विनी, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, हस्त इन नक्षत्रों में से किसी एक नक्षत्र में स्थित बुध बैठा हो और उस दिन बुधवार ही हो तो उस दिन गृह आरम्भ करने से गृह स्वामी को पुत्र सुख और धन सुख मिलता है। यह भी देवा रामदेवाज्ञ का मत है। सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र इनमें से कोई भी ग्रह यदि निर्बल हो तो, नीच स्थागत अथवा हस्तगत हो तो क्रमशः गृहपति, उसकी पत्नी, धन और सुख का नाश होता है। भृगु के मत से सप्त शलाका का चक्र बनाकर और उस पर कृतिका से सात-सात नक्षत्र पूर्व आदि दिशाओं में स्थापित करें यदि वास्तु चंद्रमा का नक्षत्र आगे या पीछे हो तो शुभ नहीं होता। कृतिका से अश्लेषा तक पूर्व दिशा की, मघा से विशाखा तक दक्षिण दिशा की, अनुराधा से श्रवण तक तथा पश्चिम दिशा और धनिष्ठा से भरणी तक उत्तर दिशा के नक्षत्र होते हैं। यदि वास्तु का नक्षत्र पूर्व दिशा के नक्षत्रों में हो तो पश्चिम दिशा के नक्षत्रों में गृहारम्भ अशुभ होता है। यदि पश्चिम दिशा के किसी नक्षत्र में वास्तु नक्षत्र है तो पूर्व दिशा के नक्षत्रों में गृह आरम्भ अशुभ होता है। इसके विपरीत पूर्व में हो तो उत्तर में और पश्चिम में हो तो दक्षिण में गृह आरम्भ शुभ होता है। वज्र, व्याघात, शूल, व्यतिपात, अतिगंड, विश्वकुंभ, गदय, परिघ इन योगों में गृह आरम्भ का निषेध किया गया। यदि गृह निर्माण के समय कर्क लग्न हो उसमें चंद्रमा स्थित हो, केन्द्र में वृहस्पति शेष ग्रह अपने मित्र अथवा उच्च अंश में हो तो ऐसे समय में बना हुआ गृह धन-धान्य से पूर्ण रहता है। यदि गृह आरम्भ के समय उपरोक्त ग्रह अन्य राशि में स्थित हो तो गृह स्वामी दिवालिया हो जाता है। यदि गृह निर्माण के समय एक भी ग्रह दशम या सप्तम में होकर शत्रु के भाव में हो तो वह ग्रह वर्ष भर में दूसरे के अधिकार में चला जाता है। वास्तु चक्र में सूर्य को यदि नक्षत्र तक गिनें पहले सात नक्षत्र अशुभ, अगले ग्यारह नक्षत्र शुभ और अंतिम दस नक्षत्र अशुभ होते हैं। सूर्य के नक्षत्र को चंद्रमा तक गिनें यदि पहले तीन नक्षत्रों में गृह आरम्भ का नक्षत्र हो तो अग्नि का भय, अगले चार नक्षत्रों में घर का विनाश, अगले चार नक्षत्रों में स्थिरता, अगले तीन नक्षत्रों में धन लाभ, अगले चार नक्षत्रों में लक्ष्मी की प्राप्ति, अगले तीन नक्षत्रों में शून्यता, अगले चार नक्षत्रों में गरीबी और अगले तीन नक्षत्रों में मृत्यु सम कष्ट मिलता है। यह रामदेवाज्ञ का मत है और वह वृष वास्तु चक्र के नाम से प्रसिद्ध है।

सम्पूर्ण अंगों वाले वृषभ के शरीर में सूर्य नक्षत्र से तीन नक्षत्र शीर्ष में रखें उनमें किया गया गृह आरम्भ अग्निकाण्ड में समाप्त हो जाता है। उसके अगले चार नक्षत्रों में गृह आरम्भ करने से शून्यता प्राप्त होती है। उसके अगले चार नक्षत्रों में गृह आरम्भ करने से स्थिरता, अगले तीन नक्षत्रों में लक्ष्मी प्राप्ति, अगले चार नक्षत्रों में लाभ, अगले तीन नक्षत्रों में गृह स्वामी का विनाश, अगले चार नक्षत्रों में निर्धनता और अगले चार नक्षत्रों में मृत्यु समय कष्ट मिलता है।

महाऋषि पराशर के मत से गृह आरम्भ करने वाली तिथि में चार मिलाकर उस संख्या को दुगुना कर उसमें गृहपति के नाम की अक्षरों की संख्या को जोड़कर तीन का भाग दें अतः एक शेष बचने पर स्वर्ग, दूसरे शेष में पाताल और शून्य शेष में मृत्यु लेकिन उस वास्तु पुरुष का वास समझें। वास्तु पुरुष के शरीर, पूंछ, दक्षिण, कुकक्षी और पृष्ठ भाग में लंबी आयु चाहने वाले पुरुष को गड्ढा नहीं खोदना चाहिए। वास्तु पुरुष को 28 भागों में बचे दस भाग शरीर की ओर और 17 भाग पूंछ की ओर छोड़ दें बाकी भाग में गड्ढा खोदें। ज्योति प्रकाश के मत से तिथि संख्या को पांच से गुणा करें और कृतिका आदि (शब्द शलाका चक्र के अनुसार) नक्षत्र संख्या को जोड़कर उनमें 12 और जोड़ें और इस योग को नौ से भाग दें यदि शेष 1, 4, 7 बचे तो जल में, 2, 5, 8 शेष बचे तो स्थल में, 3, 6, 0 शेष बचे तो आकाश में कुर्म का निवास होता है। इसका फल है जल में लाभ, स्थल में हानि और आकाश में मरण होता है। प्रसाद और गृह का आरम्भ और समाप्ति हरिप्रबोदनी एकादशी के बाद और हरिशयनि एकादशी से पूर्व ही कर लेना चाहिए। चैत्र मास में गृह आरम्भ करने से शोक, वैशाख में धन लाभ, ज्येष्ठ में मृत्यु, आषाढ़ में पशु हानि, सावन में पशु वृद्धि, भाद्रपद में शून्यता, आश्विन में कलह, कार्तिक में भ्रातृ नाश, मार्गशीर्ष और पौष में अन्य लाभ, माघ में अग्नि भय तथा फाल्गुन में श्री लाभ होता है।

जिस भूमि पर कठिनता से जाया जाये ऐसी भूमि गृह निर्माण के लिये त्याज्य होती है। मनोरम भूमि पुत्रों को देने वाली, दृढ़हा भूमि धन को देने वाली, उत्तर-पूर्व की ओर नीच भूमि पुत्र और धन दोनों को देती है। अपने वर्ण की भूमि अपने वर्ण को शुभद होती है,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अन्य वर्ण को अधोगति देती है। जिस भूमि पर पुष्प और कुशकासा उगती है उस भूमि पर ब्रह्म तेजस्वी पुत्र उत्पन्न होते हैं। दुवा युक्त भूमि पर धीर पुत्र और फल युक्त भूमि पर घाती पुत्र उत्पन्न होते हैं। नदी के कटाव की भूमि पर गृह निर्माण करने से मूर्ख संतान को जन्म देते हैं। जिस भूमि पर पत्थर अधिक हों वह दरिद्री संतान को उत्पन्न करते हैं। गड्ढे युक्त भूमि पर गृह निर्माण करना झूठे और मलीनवेशी पुत्रों को उत्पन्न करते हैं। जो भूमि छिद्र युक्त हो वे पशुओं की और सुख का नाश करती है तथा संपत्ति को दुःखदायी होती है। जो भूमि रेतीली और टेढ़ी हो वह विद्याहीन पुत्रों को जन्म देती है। सर्प, बिल्ली, लाकूट के समान भूमि भय को देने वाली और संतान को कष्टदायक होती है। मूसल के समान भूमि कुल घातक पुत्रों को जन्म देती है। रूखी भूमि दुर्गवैशनी पुत्रों को जन्म देती है। चैत्य भूमि गृह स्वामी को भय उत्पन्न करती है। जिस भूमि पर वामी हो वह विपत्ति को देती है। धूर्त के गृह के समीप गृह निर्माण करने से पुत्र-सुख नहीं मिलता। चौराहे पर गृह निर्माण करने से कीर्ति का नाश, देव मंदिर पर घर बनाने से उद्वेग, राजा के स्थान पर गृह बनाने से धन हानि, गड्ढे पर गृह बनाने से निकट अनेक विपत्ति और जिस भूमि पर अधिक गड्ढे हों उसमें गृह निर्माण करने से पिपासा और कछुए के सादृश्य भूमि पर गृह-निर्माण करने से धन का नाश होता है।

भूमि का परीक्षण

जिस भूमि पर गृह निर्माण करना हो उसमें कहीं पर भी एक हाथ लंबा, एक हाथ चौड़ा और एक हाथ गहरा गड्ढा खोदकर उसे पुनः उसी खोदी हुई मिट्टी से भरना चाहिए। यदि मिट्टी अधिक है तो श्रेष्ठ फल, पूरी हो जाये तो मध्यम फल और कम पड़ जाये तो अदम फल मिलता है। दूसरी विधि है कि उस गड्ढे को जल से भरकर सौ कदम आगे जाकर पुनः लौटकर देखना चाहिए कि गड्ढे का जल कम तो नहीं हो गया यदि जल कम हो गया हो तो भूमि शुभ फलदायक नहीं होती अथवा जिस भूमि पर गृह बनाना हो उसमें हल जुतवाकर उसमें सभी आनाजों को बो दें। यदि वे भी 3, 5, 7 नग में न उगे तो उस भूमि पर गृह निर्माण नहीं करना। यदि बोये हुए बीजों में 2-3 दिनों में अंकुर फूट आयें तो भूमि श्रेष्ठ होती है। पांच रात्रि में उगे तो मध्यम और सात दिन में उगे तो अधम होती है। विरीह, साटी, मूंग, गोदूम, सरसों, तिल, जौ ये सात औषधियां हैं और यही सर्प बीज कहे जाते हैं। उपयुक्त सर्प बीजों को बोने के बाद उनके फूलों को देखना चाहिए। इस भूमि के किसी गड्ढे पर स्वर्ण अथवा तांबे के रंग के पुष्प दिखाई दें तो उस भूमि-पर गृह निर्माण करना गृह स्वामी के लिये लाभप्रद रहता है। उस भूमि के धूल के कण को लेकर आकाश में फेंकें और देखें कि धूल अदम, मध्यम अथवा उद्धव इन तीनों में कहां जाती है। जहां जाये वही मति को भूमि पर गृह निर्माण कार्यकर्त्ता की होती है। भूमि में प्रवेश करते समय पुण्यावाचान, शंख और अध्ययन के शब्द, जल पूर्ण घड़ा, ब्राह्मण समुदाय, वीणाक शब्द, पुत्री युक्त स्त्री, माता-पिता अथवा गुरुजन आ जाये वह भूमि शुभ फल को देने वाली होती है। यदि प्रवेश करते समय स्वच्छ वस्त्र धारण किये हुए कन्या मिले, सुस्वादु और सुगंधित पुष्प, फल, सोना, चांदी, मृग, मोती अथवा अच्छे भोजन पदार्थों का दर्शन शुभ फलदायक रहता है। भूमि या गृह प्रवेश के समय मृग, सोरमा, चंदन बंधा हुआ पशु, पगड़ी अथवा भोज्य पदार्थों का दर्शन भी कल्याणप्रद होता है। भूमि या गृह प्रवेश करते समय मांस, दूध, दही, पालकी, छतर, मछलियां, स्त्री-पुरुष का जोड़ा दिखाई पड़े तो आयु और आरोग्यता बढ़ती है। भूमि अथवा गृह प्रवेश करते समय कमल का फूल, सफेद बैल, ब्राह्मण, मृग दिखलाई पड़े अथवा गीत गाने का शब्द सुनाई पड़े और हाथी, घोड़ा और सौभाग्यवती स्त्री दिखलाई पड़े तो धन सुख और अरोग्यता बढ़ती है। गृह आरम्भ अथवा प्रवेश के समय वेश्या, अंकुश, दीपक, पुष्प माला, आभूषण धारण किये कन्या दिखाई पड़े अथवा वर्षा हो तो उत्तम फल मिलता है।

यदि गृह आरम्भ अथवा गृह प्रवेश के समय श्रेष्ठ, वाणी, शत्रु, मदिरा, चमड़ा, हड्डी, तृण, भूसी, सर्प अथवा कोयला दिखाई दे तो अशुभ फल मिलता है। यदि गृह आरम्भ अथवा गृह प्रवेश के समय नमक, कीचड़, कपास, नापुंसक, तेल, औषधि, विष्टा, काले तिल, रोगी अथवा उपटन लगाये कोई व्यक्ति मिले तो अशुभ फल मिलता है। भूमि अथवा गृह प्रवेश के समय पापी, जटाधारी, पागल, मुण्डन कराया व्यक्ति, ईंधन, काला पक्षी दिखाई पड़े तो कल्याणप्रद नहीं होता। जलती हुई लकड़ी, धुएं से युक्त अथवा अधजली लकड़ी गृह आरम्भ अथवा प्रवेश के समय यदि मनुष्य देखे तो उसे मृत्यु सम कष्ट मिलता है। यदि उपयुक्त अपशकुन गृह आरम्भ के समय हो अथवा गृह प्रवेश के समय हो तो उस भूमि पर गृह कल्याण का विचार अथवा गृह प्रवेश का विचार त्याग देना चाहिए।

'नींव खोदने की विधि'

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार अच्छा लग्न व अच्छा मुहूर्त में स्नान आदि नित्य क्रिया से निवृत्त होकर पूर्वा अभियुक्त होकर कलश की स्थापना करें, कलश के ऊपर गणेश जी की और नव ग्रहों का पूजन करें, उस परिक्षित भूमि को गाय के गोबर से लीपें और उस भूमि पर ब्राह्मण और देवता का पूजन करे और उस भूमि की शुद्धि के लिये पांच गव्य सर्व औषधि पांचामृत और जल से उस भूमि के ऊपर छिड़काव कर उसे शुद्ध करें। स्थापित कलश में वरूण का आहवान करें उसी में पर्वत, वन, नदी, नाग से युक्त आनन्द से युक्त कमलों से विभूषित, सागरों से युक्त भूमि की पूजा करें, प्रार्थना करें। दिग्पालों और कुलदेवी तथा देवता और नागों का पूजन करें, उनकी बलि देकर सद् अष्ट अध्यायी का विधिप्रद पाठ करें और वास्तु पुरुष का पूजन करें। ऊं नमो भगवते वास्तु पुरुषये कपिलये चे, पृथ्वी धरये देवेय प्रधान पुरूषये चे, सकल गृह प्रसाद पुण्यकरोधान कर्मणि गृह आरम्भ प्रथमकाले सर्वासिद्धि प्रदायक सिद्ध देव मनुष्यैश्चे पूज्य नमो दिवा निशिय गृह स्थाने प्रजापति क्षेत्रे अस्मीन तिष्ठ साम प्रतम इहा गच्छ इमां पूजां गृहेण वर दो भव मंत्र से प्रार्थना करें, वास्तु पुरुष नमस्ते अस्तु-------- हे वास्तु पुरुष भू शय्यागत् हे प्रभु मुझे घर से सर्वथा धन-धान्य से पूर्ण रखना यह कहकर पुष्प चढ़ावें और प्रार्थना करने के पश्चात् चावल की पीढ़ी की नग के आकार का वास्तु पुरुष बनावें। वास्तु मंत्रो का आह्वान करें, अपनी शक्ति के अनुसार पूजन करें। आह्वान करते समय विशेष ध्यान रखें और मन में विचार करके उस भूमि पर अधोमुख लेटे हुये वास्तु पुरुष का आह्वान कर रहे हैं। विश्नोरण इत्यादि मंत्र से वास्तु के स्वर्ण वास्तु के प्राण और पूर्व दिशा में प्रथम स्थित सर्प के स्वर्ण का पूजन करें अथवा अपने सामर्थ्य के अनुसार नमोअस्तु सर्पेभ्यो----आदि मंत्र से वास्तु का पूजन करें, कुकशी प्रदेश में नाग मंत्र को पढ़ता हुआ पृथ्वी को खोदें। गृह कुपतहाग आदि आरंम्भ में वास्तु पुरुष की स्थिति '' भाद्रपद से तीन मासों में क्रम से पूर्व आदि दिशाओं में वास्तु पुरुष का मुख होता है। दूसरी दिशा के मुख वाले गृह को आरंभ करने से दुःख, शोक और भय उत्पन्न होते हैं। वृष से तीन-तीन राशि के क्रम को वेणी बनाने से तीन -तीन राशि के सूर्य गृह में और मीन को तीन-तीन राशि सूर्य देवालय और मकर आदि तीन-तीन राशि सूर्य तड़ाग लेना उत्तम है। युक्त तान-तीन राशियों के सूर्य में वास्तु पुरुष पूर्व आदि दिशाओ में शरीर करके सोता है।

''वास्तु पुरुष मुख ज्ञानार्थ चक्रमीदम''

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लक्ष्मी प्रवेश कैसे हो ?

लेखक: दैवज्ञ शिरोमणि, वास्तु इंजीयिर पंडित गोपाल शर्मा, मियांवाली नगर, रोहतक रोड, दिल्ली-41, दूरभाष : 5687077, 5688060 फैक्स : 5670033

हर आदमी को एक सफल जीवन जीने के लिए निरोगी काया, सरल और तनावरहित दिनचर्या, घर में सुख-सुविधा के सभी साधन उपलब्ध, निष्कंटक कारोबार या नौकरी की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त प्रकृति, विधाता, पितृपक्ष, मातृपक्ष व बन्धुपक्ष का सहयोग या किसी प्रकार की आपदा, विपदा, अस्वस्थता आदि का न होना परमेश्वर का वरदान माना जाता है। यह सुखी और सफल जीवन महालक्ष्मी की कृपा के बिना संभव नहीं है।

लक्ष्मी, धन, दौलत किसी की बपौती या अधिकार की वस्तु नहीं है। देखने में आता है कि कुछ लोग जीवन भर परिश्रम करते रहते हैं, परन्तु उनकी बुनियादी जरूरतें भी भली भांति पूरी नहीं हो पातीं, दूसरी तरफ कुछ लोग ऐसे भी हैं जो धन दौलत देखना भी पसंद नहीं करते, परन्तु लक्ष्मी उनका पीछा ही नहीं छोड़ती। इसके पीछे भाग्य, पुरुषार्थ के अतिरिक्त भी एक बड़ा कारण होता है — **वह मकान जिसमें वे रहते हैं।**

लक्ष्मी, धन-दौलत, कारोबार व्यक्ति के अलावा घर, दुकान, फैक्ट्री, गोदाम आदि की बनावट तथा उसके आस-पास के वातावरण पर भी निर्भर करता है। मकान तो हर व्यक्ति की आवश्यकता होती है जिसमें रहकर मनुष्य सारा सोच-विचार करता है। वहां आराम करके वह दिन भर की थकान मिटाता है तथा आगे के लिए योजनाएं बनाता है। जिस प्रकार मनुष्य के शरीर में दैवी शक्ति और हृदय में खुद विष्णु भगवान् निवास करते हैं उसी तरह हर घर में लक्ष्मी, कुबेर, ब्रह्मा, यमराज, इन्द्र, वरुण, वायु, गंगा तथा अग्नि आदि सभी कुछ रहता है। प्राचीन ग्रन्थों के अतिरिक्त तीस वर्षों के आध्यात्मिक जीवन का निचोड़ भी इसमें शामिल है। पुराने या किसी भी नये मकान में किया गया एक उचित परिवर्तन भी आपका सम्पूर्ण जीवन बदल सकता है। खुले प्लाट या मकान, दुकान व कारखाने का कोई एक सिस्टम जैसे द्वार, पानी का निवास आदि। केवल एक सिस्टम ठीक होने से जीवन रूपी पूरी मशीनरी वर्किंग हालत में आ सकती है।

ईश्वर ने मानव को अपार प्राकृतिक सम्पदा प्रदान की है। हमारी पृथ्वी धन-दौलत से भरी हुई है। यदि मनुष्य ईश्वर प्रदत्त प्राकृतिक सम्पदा का प्रयोग करे तो निश्चय ही सुखी, निरोग एवं सम्पन्न हो सकता है। सूर्य, वायु, जल, पृथ्वी, अग्नि, पेड़-पौधे आदि मनुष्य को दीर्घजीवी और निरोग बनाने के लिए हैं। सूर्य जीवनदाता है। सूर्य के अभाव में मानव जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। सूर्य के प्रकाश में रोगाणुओं को नष्ट करने की अपार क्षमता होती है। वह हमें प्रकाश एवं ऊष्मा प्रदान करता है। हमारा शरीर भी पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश नामक पंचतत्वों से बना है। अतः यह आवश्यक है कि पंच तत्वों से समन्वय बना रहे। जब तक यह समन्वय रहता है, हम निरोग एवं शक्ति सम्पन्न बने रहते हैं। जब इनमें संतुलन का अभाव हो जाता है, तब शारीरिक क्रियाओं में बाधा आ जाती है और हम बीमार हो जाते हैं। वास्तुशास्त्र हमें पांच भौतिक तत्वों में संतुलन बनाये रखने की शिक्षा देता है। वास्तुशास्त्र प्रकृति अनुसंधान पर आधारित उच्च कोटि का विज्ञान है।

वास्तुशास्त्र प्राकृतिक नियमों का पालन करता है। गुरुत्वाकर्षण बल चुम्बकीय बल, विद्युत तरंगों का प्रवाह वायु प्रवाह, जल प्रवाह, पर्यावरण का प्रभाव, सूर्य रश्मियों का प्रवाह, दिशाओं के महत्व आदि पर ही वास्तुशास्त्र के नियम आधारित हैं।

उगते सूर्य की किरणें हमारे स्वास्थ्य के लिए उपयोगी हैं। इसके पीछे पूर्व, ईशान कोण को अधिक खुला रखने का नियम कार्य करता है। जिससे सौर ऊर्जा अधिकतम रूप में भवन और उसके निवासी को मिल सके। मकान के पूर्वी भाग को अपेक्षाकृत नीचा रखने के पीछे रहस्य भी यही है, ताकि पूर्व दिशा में ज्यादा खिड़कियों और दरवाजों के लिए स्थान रह सके। ढलते हुए सूर्य से इन्फ्रा रेड किरणें निकलती हैं जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती हैं। इसलिए मकान के पश्चिम में खुली जगह कम छोड़ी जाती है।

विश्व का आधार स्रोत ऊर्जा है। यह ऊर्जा उत्तरी ध्रुव से दक्षिण ध्रुव की ओर चुम्बकीय लहरों के रूप में लगातार प्रवाहित होती रहती है। इस ऊर्जा को विद्युत-चुम्बकीय प्रवाह कहते हैं। यदि भवन का उत्तरी भाग नीचा और दक्षिणी भाग ऊंचा होगा तो यह ऊर्जा सहज ही भवन में प्रवेश कर निवासियों को शुभ लाभ देगी। यदि भवन का उत्तरी भाग अधिक ऊंचा होगा तो ऊर्जा का प्रवाह रुक जायेगा।

मानव शरीर में भी विद्युत तरंगें उसी रूप में प्रवाहित होती हैं, जिस रूप में भूमि पर प्रवाहित होती हैं। लेकिन यदि दोनों तरंगों का समन्वय नहीं होगा तो हमारा मस्तिष्क सही रूप से कार्य नहीं कर पायेगा। यही कारण है कि उत्तर की ओर सिर करके सोना वर्जित है। क्योंकि सिर की तरफ सकारात्मक और पैरों की तरफ नकारात्मक विद्युत तरंगें होती हैं। सिर के उत्तरी दिशा में होने से उत्तर की तरफ से आने वाली तरंगें मानव शरीर की सकारात्मक तरंगों से टकराती रहेंगी, जिससे मानव मस्तिष्क विचलित हो जाता है।

लक्ष्मी प्रवेश के लिए निम्नलिखित अहम बातों में से कोई एक ही काफी है।

१. उत्तर-पूर्व में या उत्तर में अन्डरग्राउंड टैंक, नल और पानी की व्यवस्था करें।

२. पूर्वमुखी मकान में हो सके तो द्वारा उत्तर-पूर्व या दक्षिण-पूर्व में बनाएं, द्वार न हो सके तो खिड़की या ऊपर का जाल या दर्पण लगवाना जरूरी है।

३. उत्तर व पूर्व का ज्यादा से ज्यादा भाग खुला रखें।

४. रसोई दक्षिण-पूर्व में हो।

५. छत व फर्श की ढलान उत्तर-पूर्व में हो।

६. मूर्तियां, फोटो आदि जितना हो सके पूर्व व पश्चिम की दीवार पर लगाएं। उत्तर की दीवार पर तो भूल कर भी कुछ न लटकायें।

७. हमेशा दक्षिण की ओर सिर करके सोयें। इससे स्वास्थ्य और आयु बढ़ेगी। अधिक कार्य के बाद थकान होने पर पूर्व की ओर सिर करके सोयें। इससे विरोधी पक्ष भी साथ देने लगता है। भारी से भारी संकट या समस्या का तुरन्त समाधान होता नजर आयेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जब हमारी घड़ियां १२ बजाती हैं

भिन्न-भिन्न देशों का समय

संसार के हर एक देश में दिन तो २४ घण्टे का माना जाता है परन्तु हर देश का स्टैंडर्ड टाईम अर्थात् समय भिन्न है। उदाहरण के रूप में जब भारत में दिन के १२ बजते हैं तो लन्दन में प्रात: के साढ़े छ: बजे होते हैं। भिन्न-भिन्न देशों की राजधानियों के समय और भारत के समय में अन्तर स्पष्ट किये जाते हैं:-

नगर	देश	समय
लन्दन	ब्रिटेन	६.३० प्रात:
बैंकाक	थाइलैंड	९.३० रात
मक्का	सऊदी अरब	९.३० प्रात:
कुआलाम्मपुर	मलेशिया	२.०० प्रात:
पेरिस	फ्रांस	७.३० प्रात:
नेरोबी	कीनिया	१०.०० प्रात:
तेहरान	ईरान	१०.०० प्रात:
काबुल	अफगान	११.०० प्रात:
बुडापेस्ट	हंगरी	७.३० प्रात:
कराची	पाकिस्तान	११.३० दोपहर
मास्को	रूस	९.३० प्रात:
पेइचिंग	चीन	२.३० दोपहर
बगदाद	इराक	९.३० प्रात:
न्यूयार्क	अमेरिका	२.३० प्रात:
टोकियो	जापान	३.३० सायं
बर्लिन	पू. जर्मनी	७.३० प्रात:
काहिरा	मिश्र	८.३० प्रात:
जेनैवा	स्वि. लैण्ड	७.३० प्रात:
कनाडा	कैनेडा	११.०० रात्रि

मन्त्रों को सिद्ध करने की विधि

कर्म छ: प्रकार के होते हैं। १. शान्ति कर्म। २. वशीकरण। ३. स्तम्भन। ४. वैर। ५. उच्चाटन। ६. मारण।

कर्मों के लक्षण

१. रोग और ग्रहादि के निवारण को शंत कर्म कहते हैं।
२. सब वस्तुओं को वश में करने को वशीकरण कहते हैं।
३. चलते हुओं को रोकने को स्तम्भन कहते हैं।
४. दो मित्रों में वैर कहते हैं।
५. स्वदेश से निकल कर दूसरे देश में चले जाने को उच्चाटन कहते हैं।
६. जीव को मार देना मारण कहते हैं।

कर्मों की दिशा

शान्ति कर्म ईशान दिशा में करना चाहिए, वशीकरण उत्तर दिशा में करना चाहिए, स्तम्भन पूर्व दिशा में करना चाहिए, विदेश नेऋत्य दिशा में, उच्चाटन वायव्य दिशा में और मारण अग्नि दिशा में करना चाहिए।

खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ?

१. अन्धाक्ष नक्षत्रों में खोई हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा को जाती है और उसकी पुन: प्राप्ति शीघ्र हो जाती है। २. सुलोचन नक्षत्रों में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है। ३. मध्याक्ष नक्षत्र में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। इस बात का पता भी चल जाता है परन्तु प्राप्त (हस्तगत) नहीं होती। ४. मन्दाक्ष नक्षत्र में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है।

अन्धादि नक्षत्र निम्नलिखित है:-

नक्षत्र संख्या	नाम नक्षत्र							मिलेगी या नहीं
१. अन्धाक्ष	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.	पू.फा.	विशा.	धनि.	रेव.	शीघ्र मिलेगी।
२. सुलोचन	कृकि.	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूला.	श्रव.	उभा.	नहीं मिलेगी।
३. मध्याक्ष	भर.	आर्द्रा	मघा	पू.भा.	चित्रा	ज्ये.	अभि.	पता लगने पर भी नहीं मिलेगी।
४. मन्दाक्ष	अश्वि.	मृग.	आश्ले	हस्त	अनु.	उ.षा.	शत.	बहुत यत्न करने पर मिलेगी।

कैलेण्डर १८०१-१९९९

(अ) वर्ष

१८०१-१९००				१९०१-१९९९			
०१	२९	५७	८५		२५	५३	८१
०२	३०	५८	८६		२६	५४	८२
०३	३१	५९	८७		२७	५५	८३
०४	३२	६०	८८		२८	५६	८४
०५	३३	६१	८९	०१	२९	५७	८५
०६	३४	६२	९०	०२	३०	५८	८६
०७	३५	६३	९१	०३	३१	५९	८७
०८	३६	६४	९२	०४	३२	६०	८८
०९	३७	६५	९३	०५	३३	६१	८९
१०	३८	६६	९४	०६	३४	६२	९०
११	३९	६७	९५	०७	३५	६३	९१
१२	४०	६८	९६	०८	३६	६४	९२
१३	४१	६९	९७	०९	३७	६५	९३
१४	४२	७०	९८	१०	३८	६६	९४
१५	४३	७१	९९	११	३९	६७	९५
१६	४४	७२		१२	४०	६८	९६
१७	४५	७३		१३	४१	६९	९७
१८	४६	७४		१४	४२	७०	९८
१९	४७	७५		१५	४३	७१	९९
२०	४८	७६		१६	४४	७२	
२१	४९	७७	००	१७	४५	७३	
२२	५०	७८		१८	४६	७४	
२३	५१	७९		१९	४७	७५	
२४	५२	८०		२०	४८	७६	
२५	५३	८१		२१	४९	७७	
२६	५४	८२		२२	५०	७८	
२७	५५	८३		२३	५१	७९	
२८	५६	८४		२४	५२	८०	

(ब) महीने

जन.	फर.	मार्च	अप्रै.	मई	जून	जुला.	अग.	सितं.	अक्टू.	नवं.	दिसं.
४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
५	१	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
०	३	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
३	६	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१
४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
५	१	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
३	६	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
५	१	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
१	४	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
३	६	२	६	४	०	२	५	१	३	६	१
४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
६	२	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
३	६	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१
४	०	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२	५	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१

(स) साप्ताहिक दिन

रवि	१	८	१५	२२	२९	३६
सोम	२	९	१६	२३	३०	३७
मंगल	३	१०	१७	२४	३१	
बुध	४	११	१८	२५	३२	
गुरु	५	१२	१९	२६	३३	
शुक्र	६	१३	२०	२७	३४	
शनि	७	१४	२१	२८	३५	

कलैण्डर को प्रयोग में लाने की विधि

अगर हमें मालूम करना है कि किस तारीख को कौन सा दिन पड़ता है। जैसे १ मई १८८६ को कौन सा दिन था।? पहले वर्ष वाले कॉलम (अ) में (१८०१ से १९०० तक) सन् १८८६ पर अंगुली रखें उसकी सीध में अंगुली महीने वाले कॉलम (ब) में मई मास पर लें जाएं। जो अंक प्राप्त हो (६) उसे उस तारीख में जोड़ दें (१) जिस तारीख का हमें वार मालूम करना है। (६+१=७) अब आप कॉलम (स) में ७ के सामने शनिवार पाएंगे तो पहली मई १८८६ को शनिवार था।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र शुक्ल पक्ष सं. २०५७ (५ से १८ अप्रैल)

अंग्रेजी	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
5	१	बु	२१	५२	रे	१४	२८	वै	२७	१३	मे. १४।२८	बसन्त नवरात्रारंभ, घटस्थापनं, गुड़ी पड़वा, पंचक A
6	२	गु	१९	४४	अ	१३	१०	वि	२४	१६	मेष	भरणी २ में गुरु प्र. २७।४८, चन्द्रदर्शन मु. १५, B
7	३	शु	१७	२२	भ	११	३६	प्री	२१	१३	वृ. १७।११	भद्रा २८।०८ से, गणगौर पूजन, मत्स्य ज., मुहर्रम मु. C
8	४	श	१४	५५	कृ	९	५५	आ	१८	०५	वृष	भद्रा १४।५५ तक, मीन में बुध २४।२३, वैनायक ४ व्रत
9	५	र	१२	३०	रो	८	१५	सौ	१४	५९	मि. १९।२६	कल्पादि ५, स्कन्द षष्ठी G कामदा एका. व्रत निम्बा.
10	६	चं	१०	१०	मृ	[illegible]	[illegible]	शो	११	५९	मिथुन	मेला माई सरखाना अमृतसर, जैन आयंबिल ओली प्रा.,
11	७	मं	८	००	पुन	२७	५५	अ	९	०७	क. २२।१४	भद्रा ८।०० से १९।०२ तक, उ.भा. में बुध प्रवेश ८।३०, D
0	८	मं	३०	०४	०	०	०	०	०	०	० ० ०	अष्टमी क्षय: A समा. १४।२८ B श्री झूलेलाल ज. उ.
12	९	बु	२८	१७	पु	२६	५४	सु	[illegible]	[illegible]	कर्क	श्री रामनवमी व्रत C मास १ हिजरी सन् १४२१ प्रा.,
13	१०	गु	२६	४३	श्ले	२६	०४	शु	२५	२९	सिं. २६।०४	अश्विनी मेष में सूर्य प्र. १७।२३, संक्रांति मु. १५, E
14	११	शु	२५	२४	म	२५	२७	गं	२३	१७	सिंह	भद्रा १४।०२ से २५।२४ तक, कामदा एका. व्रत स्मा.-F
15	१२	श	२४	२१	पू.फा	२५	०५	वृ	२१	१९	सिंह	रेव. में शुक्र प्र. १२।५३, भर. ४ में शनि प्र. १०।२०, G
16	१३	र	२३	३६	उ.फा	२५	०३	ध्रु	१९	३५	कं. ७।०४	प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी, श्री महाबीर ज., मुहर्रम H
17	१४	चं	२३	११	ह	२५	२०	व्या	१८	४८	कन्या	भद्रा २३।११ से, E वैशाखी सौर मास वैशा. प्रा. D श्री दुर्गा ८
18	१५	मं	२३	१०	चि	२६	०४	ह	१६	५९	तु. १३।४०	भद्रा ११।०८ तक, पूर्णिमा, सत्यव्रत H ताजिया (मु.),
												F वैष्ण., विशु-केरल, वैशाखादि-बंगाल, विगुविधु-आ

वैशाख कृष्ण पक्ष सं. २०५७ (१९ अप्रैल से ४ मई)

अंग्रेजी	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
19	१	बु	२३	४१	स्वा	२७	१६	वज्र	१६	१२	तुला	रेवती में बुध प्र. १९।१३, सायन वृष में सूर्य प्रवेश २४।०९,
20	२	गु	२४	४४	वि	२८	५८	सि	१५	४८	वृ. २२।३०	कृत्तिका में मंगल प्रवेश १५।१६, ग्रीष्म ऋतु प्रारंभ
21	३	शु	२६	१७	अनु	-	-	व्य	१५	५३	वृश्चिक	भद्रा १३।२६ से २६।१७ तक, भर. ३ में गुरु प्र. ११।२० A
22	४	श	२८	२०	अनु	७	१२	व	१६	१८	वृश्चिक	कृष्ण चतुर्थी व्रत A राष्ट्रीय वैशाख मासारंभ, गुडफ्राईडे
23	५	र	-	-	ज्ये	९	५३	प	१७	०३	ध. ९।५३	शनि पश्चि. में अ. ५।५८, इस्टर सण्डे C कालाष्टमी
24	५	चं	६	४३	मू	१२	५२	शि	१८	०४	धनु	गुरु तेग बहादुर जयंती D १०।०७, पंचक प्रा. १०।४० से
25	६	मं	९	३१	पू.षा	१५	५८	सि	१९	०५	म. २२।४५	भद्रा ९।२१ से २२।३५ तक, वृष में मंगल प्र. ७।४७, गुरु वृ. B
26	७	बु	११	५२	उ.षा	१८	५९	सा	२०	०४	मकर	अश्वि. मेष में शुक्र प्र. ८।३३, अश्वि. मेष में बुध प्र. २९।४४ C
27	८	गु	१४	०२	श्र	२१	३५	शुभ	२०	४०	मकर	भर. में सूर्य प्र. ९।१३, बुध पूर्व में अ. १०।३८, शीतला ८
28	९	शु	१५	४०	ध	२३	३८	शु	२०	५०	कुं. १०।४०	भद्रा २८।०७ से, गुरु पश्चिम में अ. १२।०५, धनि. में हर्षल प्र. D
29	१०	श	१६	३३	श	२४	५१	ब्र	२०	२५	कुम्भ	भद्रा १६।३३ तक B प्रा. १२।०५, अग. (तारा) अस्त १८।३८
30	११	र	१६	४०	पू.भा	२५	२२	ऐं	१९	२०	मी. १९।२०	वरूथिनी एका. व्रत (सबका), श्री बल्लभाचार्य जयंती
M1	१२	चं	१५	५५	उ.भा	२५	०१	वै	१७	३६	मीन	मंगल पश्चि. में अस्त १४।५०, सोम प्रदोष व्रत, मई दि.
2	१३	मं	१४	२६	रे	२४	००	वि	१५	१७	मे. २४।००	भद्रा १४।२६ से २५।२३ तक, पंचक समा. २४।००,
3	१४	बु	१२	१९	अ	२२	२६	प्री	१२	२६	मेष	भरणी में बुध प्रवेश २२।०६, पितृकार्याऽमावस्या
4	३०	गु	९	४२	भ	२०	२५	आ	९	१४	वृ. २५।५२	देवकार्याऽमावस्या, देव दामोदर तिथि आसाम

वैशाख शुक्ल पक्ष सं. २०५७ (५ से १८ मई)

अंग्रेजी	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
5	१	शु	६	४६	कृ	१८	१०	सौ	[illegible]	[illegible]	वृष	भर. ४ में गुरु प्र. १२।२८, चन्द्रदर्शन मु. ४५, शुक्र वृद्धत्व प्रा.
0	२	शु	२७	४०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	द्वितीया क्षय: A सफर मु. मा. २ प्रा.
6	३	श	२४	३४	रो	१५	५०	अति	२२	२६	मि. २६।४०	भर. में शुक्र प्र. २८।३०, अक्षय ३, शुक्र पूर्व में अस्त ८।३३ A
7	४	र	२१	३३	मृ	१३	३५	सु	१८	५३	मिथुन	भद्रा ११।०३ से २१।३३ तक, वैनायक ४ व्रत
8	५	चं	१८	५०	आ	११	३३	धृ	१५	३२	क. २८।१३	वक्री नेपच्यून २५।२५ B दुर्गाष्टमी, श्री बगलामुखी जयंती
9	६	मं	१६	२४	पुन	९	४७	शू	१२	२५	कर्क	रोहि. में मंगल प्र. १२।५८, कृत्तिका में बुध प्र. २७।५५
10	७	बु	१४	२१	पु	८	२५	गं	९	३८	कर्क	भद्रा १४।२१ से २५।२३ तक, कृत्ति. में सूर्य प्र. २७।२३
11	८	गु	१२	४५	श्ले	७	२७	वृ	[illegible]	[illegible]	सिं. ७।२७	वृष में बुध प्र. १६।४०, कृत्ति. १ में शनि प्र. १६।४०, श्री B
12	९	शु	११	३४	म	६	५२	व्या	२७	१५	सिंह	श्री सीता नवमी (जानकी नवमी)
13	१०	श	१०	४६	पू.फा	६	४६	ह	२५	४९	कं. १२।४६	भद्रा २२।३५ से, महावीर स्वामी केवल ज्ञान (जैन)
14	११	र	१०	२३	उ.फा	७	००	वज्र	२४	४२	कन्या	भद्रा १०।२३ तक, वृष में सूर्य प्र. १४।१५, संक्रा. मु. ३०, C
15	१२	चं	१०	२६	ह	७	४०	सि	२३	५३	तु. २०।१०	सोम प्रदोष व्रत C मोहि. एका. व्रत-स., सौर ज्ये. मास प्रा.
16	१३	मं	१०	५४	चि	८	४५	व्य	२३	२६	तुला	रोहिणी में बुध प्र. ७।५५
17	१४	बु	११	४५	स्वा	१०	१५	व	२३	१७	तुला	भद्रा ११।४५ से २४।२४ तक, कृत्ति. में शुक्र प्र. २४।४१, सत्यव्रत
18	१५	गु	१३	०४	वि	१२	०१	प	२३	२१	वृ. ५।३७	वैशाखी पूर्णिमा पुण्यं, बुद्ध पू., वैशाख स्नान समा.,

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष सं. २०५७ (१९ मई से २ जून)

अंग्रेजी	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
19	१	शु	१४	४६	अनु	१४	२७	शि	२३	५९	वृश्चिक	कृतिका १ में गुरु प्र. १३।०९ A मिथुन में सूर्य प्र. २३।१९
20	२	श	१६	५५	ज्ये	१७	०७	सि	२४	४६	ध. १७।०७	बुध पश्चिम में उ. १४।१०, वृष में शुक्र प्र. १७।४५, सायन A
21	३	र	१९	१८	मू	२०	०६	सा	२५	४६	धनु	भद्रा ६।०५ से १९।१८ तक, कृष्ण ४ व्रत B चेहलम (मु.)
22	४	चं	२१	५२	पू.षा	२३	१३	शुभ	२६	५२	धनु	मृगशिर में बुध प्रवेश २२।३५, राष्ट्रीय ज्येष्ठ मासारम्भ
23	५	मं	२४	२८	उ.षा	२६	२१	शु	२७	५४	म. ५।१९	C २१।०३, पुन. ४ में राहु. उ.षा. २ में केतु प्र. २३।४३, D
24	६	बु	२६	४७	श्र	२९	१२	ब्र	२८	४६	मकर	भद्रा २६।४७ से, रोहि. में सूर्य प्र. २३।३६, गुरु पूर्व में उ. ११।४३
25	७	गु	२८	४२	ध	-	-	ऐं	२९	२०	कुं. १८।२९	भद्रा १५।५० तक, वक्री हर्ष. १८।४५, पंचक प्रा. १८।२९ से, B
26	८	शु	-	-	ध	७	३८	वै	२९	२०	कुम्भ	मिथुन में बुध प्रवेश १५।१८, कालाष्टमी E व्रत (वै.)
27	८	श	५	५६	श	९	२७	वि	२८	४५	मी. २८।१५	अष्टमी वृद्धि, पं. जवाहरलाल नेहरू पुण्य तिथि
28	९	र	६	२३	पू.भा	१०	२६	प्री	२७	२१	मीन	भद्रा १८।१३ से, मृग. में मंगल प्र. २०।१४, रोहि. में शुक्र C
29	१०	चं	६	०३	उ.भा	१०	३८	आ	२५	३३	मीन	भद्रा ६।०३ तक, अपरा एका. व्रत (स्मार्त)
0	११	चं	२८	५०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	एकादशी क्षय: D शनि पूर्व में उ. २४।२३
30	१२	मं	२६	५३	रे	१०	०२	सौ	२३	०१	मे. १०।०२	आर्द्रा में बुध प्र. १८।१२, पंचक समा. १०।०२, अपरा ११ E
31	१३	बु	२४	१५	अ	८	३१	शो	१९	५२	मेष	भद्रा २४।१५ से, प्रदोष व्रत
J1	१४	गु	२१	०८	भ	[illegible]	[illegible]	अ	१६	२३	वृ. १२।०५	भद्रा १०।४५ तक, F कार्या अमावस्या
2	३०	शु.	१७	४५	रो	२५	३६	सु.	१२	३१	वृष	कृतिका २ वृष में गुरु प्रवेश १८।१५, देव पितृ F

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष सं. २०५७ (३ से १६ जून)

जून	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
3	१	श	१४	०८	मृ	२२	५०	धृ	८ / २६	३० / ३०	मि. १२।१२	चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ, शहादते इमाम हस.(मु.)
4	२	र	१०	३५	आ	२०	०९	गं	२४	३३	मिथुन	रवि-उल-अव्वल मु. मास ३ प्रा.
5	३	चं	७	११	पुन	१७	४१	वृ	२०	४९	क. १२।१५	भद्रा १७।३८ से २८।०५ तक. विनायक ४ व्रत
0	४	चं	२८	०५	०	०	०	०	०	०	० ० ०	चतुर्थी क्षय:
6	५	मं	२५	२०	पु	१५	३६	धु	१७	२६	कर्क	कृत्तिका २ वृष में शनि प्र. २४।४३
7	६	बु	२३	११	श्ले	१३	५७	व्या	१४	२६	सिं. १३।५७	मृग. में सूर्य प्र. २१।२८, मिथुन में मंगल प्र. १५।२३
8	७	गु	२१	३५	म	१२	५४	हर्ष	११	५२	सिंह	भद्रा २१।३५ से, मृगशिर में शुक्र प्र. १७।३२
9	८	शु	२०	३३	पूफा	१२	२५	वज्र	९	४९	क. १८।२२	भद्रा ९।०० तक, श्री दुर्गाष्टमी
10	९	श	२०	०८	उफा	१२	३०	सि	८	१४	कन्या	पुनर्वसु में बुध प्र. १६।००, श्री माहेश्वरी नवमी
11	१०	र	२०	१६	ह	१३	१२	व्य	७	०७	तु. २५।४५	श्री गंगा दशहरा
12	११	चं	२०	५९	चि	१४	२५	व	६	२७	तुला	भद्रा ८।३४ से २०।५९ तक, निर्जला एका. व्रत(सबका),
13	१२	मं	२२	०९	स्वा	१६	०५	प	६	११	तुला	मिथुन में शुक्र प्र. २७।४६ A सौर आषाढ़ मास प्रा.
14	१३	बु	२३	४५	वि	१८	१४	शि	६	१६	वृ. ११।४३	मिथुन में सूर्य २०।५१, संक्रांति मु. ३०, प्रदोष व्रत, A
15	१४	गु	२५	४२	अनु	२०	४२	सि	६	४०	वृश्चिक	भद्रा २५।४२ से. ईद-ए-मिलाद (बारावफात)
16	१५	शु	२७	५६	ज्ये	२३	३०	सा	७	२१	ध. २३।३०	भद्रा १४।४८ तक, पूर्णिमा, सत्यव्रत

आषाढ़ कृष्ण पक्ष सं. २०५७ (१७ जून से १ जुलाई)

जून	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
17	१	श	-	-	मू	२६	३१	शुभ	८	१२	धनु	आर्द्रा में मंगल प्र. १२।४८, कृत्तिका ३ में गुरु प्र. १२।०४,
18	१	र	६	२५	पूषा	-	-	शु	९	१५	धनु	A २५।२७, सायन कर्क में सूर्य प्र. ७।२८, रवि दक्षिणायन B
19	२	चं	८	५८	पूषा	५	३७	ब्र	१०	२१	म. १२।२४	भद्रा २३।५३ से. आर्द्रा में शुक्र प्रवेश १४।००
20	३	मं	११	३२	उषा	८	४६	ऐं	११	२६	मकर	भद्रा ११।३२ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत, ईद-ए-मौलाद मु.
21	४	बु	१३	५५	श्र	११	४५	वै	१२	२४	कुं. २५।०५	आर्द्रा में सूर्य प्र. २०।२८, धनि. १ में वक्री हर्षल प्रवेश A
22	५	गु	१५	५६	ध	१४	२४	वि	१३	०६	कुंभ	रा. आषा. मासारम्भ
23	६	शु	१७	२६	श	१६	३६	प्री	१३	२३	कुंभ	भद्रा १७।२६ से, वक्री बुध २२।५३
24	७	श	१८	२०	पूभा	१८	०८	आ	१३	१५	मी. ११।४९	भद्रा ६।०० तक, कालाष्टमी
25	८	र	१८	३०	उभा	१८	५७	सौ	१२	३०	मीन	B वर्षा ऋतु प्रा., पंचक प्रा. २५।०५ से
26	९	चं	१७	४८	रे	१९	००	शो	११	०९	मे. १९।००	भद्रा २९।१० से, पंचक समाप्त १९।००
27	१०	मं	१६	२२	अश्वि	१८	१५	अ	९	०९	मेष	भद्रा १६।२२ तक, बुध पश्चिम में अस्त ३२१।१०
28	११	बु	१४	१३	भ	१६	५१	सु	६ / २०	३५ / ३३	वृ. २२।२२	योगिनी एकादशी व्रत सबका
29	१२	गु	११	२५	कृ	१४	४६	शू	२३	४९	वृष	प्रदोष व्रत
30	१३	शु	८	१०	रो	१२	१७	गं	१९	५५	मि. २२।५५	भद्रा ८।१० से १८।२२ तक, पुनर्वसु में शुक्र प्र. १०।२५
0	१४	शु	२८	३५	०	०	०	०	०	०	० ० ०	चतुर्दशी क्षय:
J1	३०	श	२४	४९	मृ	९	३०	वृ	१५	४७	मिथुन	देवपितृकार्याऽमावस्या

आषाढ़ शुक्ल पक्ष सं. २०५७ (२ से १६ जुलाई)

जुला.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
2	१	र	२१	०५	आ	६ / २०	२२ / ४०	धु	११	३६	क. २२।२२	कृत्तिका ४ में गुरु प्रवेश २५।४७
3	२	चं	१७	२९	पु	२५	००	व्या	७ / २०	३० / ३५	कर्क	चन्द्रदर्शन मु. ३०, श्री जगदीश रथयात्रा जगन्नाथपुरी (उड़ी.)
4	३	मं	१४	०९	श्ले	२२	४०	वज्र	२३	५८	सि. २२।४०	भद्रा २४।५४ से, रवि उस्सानी मु. मास ४ प्रारम्भ
5	४	बु	११	२०	म	२०	५१	सि	२०	४८	सिंह	भद्रा ११।२० तक, पुनर्वसु में सूर्य प्र. २०।०३, विनायक ४ व्रत
6	५	गु	९	०२	पू.फा	१९	४०	व्य	१८	०८	कं. २५।२७	कृत्तिका ३ में शनि प्रवेश १२।१६
7	६	शु	७	२६	उ.फा	१९	०९	व	१६	०१	कन्या	पुनर्वसु में मंगल प्र. १४।०१, आर्द्रा में वक्री बुध प्रवेश २५।१३
8	७	श	६	३४	ह	१९	२२	प	१४	३०	कन्या	भद्रा ६।३४ से १८।२९ तक, कर्क में शुक्र प्रवेश १३।४१
9	८	र	६	२४	चि	२०	१८	शि	१३	३६	तु. ७।०६	श्री दुर्गाष्टमी
10	९	चं	६	५४	स्वा	२१	५३	सि	१३	११	तुला	भड्डुली नवमी
11	१०	मं	८	०६	वि	२४	०३	सा	१३	१८	वृ. १७।२६	भद्रा २०।५७ से, पुष्य में शुक्र प्रवेश ६।४६
12	११	बु	९	४९	अनु	२६	३५	शुभ	१३	४५	वृश्चिक	भद्रा ९।४९ तक, देवशयनी एकादशी व्रत(सबका)
13	१२	गु	११	५६	ज्ये	२९	३२	शु	१४	३१	ध. २९।३२	अनुराधा ४ में वक्री प्लूटो प्रवेश २२।२६, प्रदोष व्रत
14	१३	शु	१४	११	मू	-	-	ब्र	१५	३१	धनु	A सत्यव्रत, गुरु पूर्णिमा, चन्द्रग्रहण, सौर श्रावण मासारम्भ
15	१४	श	१६	५३	मू	८	३५	ऐं	१६	३५	धनु	भद्रा १६।५३ से, बुध पूर्व में उदय २३।२०
16	१५	र	१९	२३	पू.षा	११	४२	वै	१७	४०	म. १८।२८	भद्रा ६।०८ तक, कर्क में सूर्य प्र. ७।४३, संक्रांति मु. ३०, A

श्रावण कृष्ण पक्ष सं. २०५७ (१७ से ३१ जुलाई)

जुला.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
17	१	चं	२१	५२	उषा	१४	४७	वि	१८	४०	मकर	मार्गी बुध २८।००, शुक्र पश्चिम में उ. २२।१०
18	२	मं	२४	०५	श्र	१७	४०	प्री	१९	३५	मकर	A रोहिणी १ में गुरु प्र. २७।५६, शुक्र बाल्यत्व समा. B
19	३	बु	२६	०३	ध	२०	१६	आ	२०	१२	कुं. ७।००	भद्रा १३।०७ से २६।०३ तक, पुष्य में सूर्य प्र. १९।३४ A
20	४	गु	२७	३६	श	२२	३२	सौ	२०	३४	कुंभ	कृष्ण चतुर्थी व्रत B १३।५०, पंचक प्रारंभ ७।०० से
21	५	शु	२८	३७	पूभा	२४	१७	शो	२०	३३	मी. १७।५५	अश्ले. में शुक्र प्र. २७।०३ C सिंह में सूर्य प्रवेश १८।१३
22	६	श	२९	०४	उभा	२५	३०	अ	२०	०७	मीन	भद्रा २९।०४ से, कर्क में मंगल प्रवेश २०।०६, सायन C
23	७	र	२८	५४	रे	२६	०७	सु	१९	१०	मे. २६।०७	भद्रा १७।०३ तक. रा. श्रावण प्रा., पंचक समा. २६।०७
24	८	चं	२८	०२	अ	२६	०४	धृ	१७	४१	मेष	कालाष्टमी, श्रावण सोमवार व्रत
25	९	मं	२६	३०	भ	२५	२०	शू	१५	४२	मेष	मंगला गौरी पू.
26	१०	बु	२४	२१	कृ	२४	००	गं	१३	१०	वृ. ७।०३	भद्रा १३।३० से २४।२१ तक, पुनर्वसु में बुध प्रवेश ८।४२
27	११	गु	२१	४२	रो	२२	०९	वृ	१०	०९	वृष	पुष्य में मंगल प्र. २३।०३, कामदा एका. व्रत (सबका)
28	१२	शु	१८	३६	मृ	१९	५०	ध्रु	६ / २६	४५ / ५२	मि. ९।०२	प्रदोष व्रत D पितृकार्याऽमावस्या
29	१३	श	१५	०८	आ	१७	१२	हर्ष	२३	०१	मिथुन	भद्रा १५।०८ से २५।२० तक
30	१४	र	११	३३	पुन	१४	२६	वज्र	१८	५८	क. ९।०७	पुन: ३ मिथुन में राहु, उ.षा. १ धनु में केतु प्रवेश २१।२७ D
31	३०	चं	७	५६	पु	११	४०	सि	१४	५४	कर्क	हरियाली अमा., देवकार्या अमावस्या, सोमवती अमा.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रावण शुक्ल पक्ष सं. २०५७ (१ से १५ अग.)

अंग्र.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
0	१	चं	२८	२६	०	०	०	०	०	०	०००	प्रतिपदा क्षयः A उल-अव्वल, मु.मा. ५ प्रा.
A1	२	मं	२५	११	श्ले	१	०२	व्य	११	०१	सिं. ९।०२	मघा सिंह में शुक्र प्र. २३।१८, चन्द्रदर्शन मु. ३०, सिंधारा
2	३	बु	२२	२७	म	[illegible]	[illegible]	व	[illegible]	[illegible]	सिंह	अश्ले. में सूर्य प्र. १८।२८, हरियाली तीज, जमादि-A
3	४	गु	२०	१५	उ.फा	२७	४२	शि	२५	३२	क. १०।३०	भद्रा ९।१६ से २०।१५ तक, कर्क मे बुध प्र. १८।३२. B
4	५	शु	१८	४५	ह	२७	१३	मि	२३	२७	कन्या	नागपंचमी देशाचारे B विनायक ४ व्रत
5	६	श	१८	०४	चि	२७	३३	सा	२२	००	तु. १५।१८	पुष्य में बुध प्र. २०।०८ से
6	७	र	१८	१२	स्वा	२८	३७	शुभ	२१	१०	तुला	भद्रा १८।१२ से, भानु सप्तमी
7	८	चं	१९	०४	वि	-	-	शु	२०	५६	वृ. २२।१९	भद्रा ६।३० तक, श्री दुर्गाष्टमी, श्रावण सोमवार व्रत
8	९	मं	२०	३६	वि	६	२८	ब्र	२१	१८	वृश्चिक	C शनि प्रदोष व्रत
9	१०	बु	२२	४४	अ	८	५३	ऐं	२१	५६	वृश्चिक	रोहिणी २ में गुरु प्रवेश ८।०७, बुध पूर्व में अस्त १८।१८
10	११	गु	२५	०२	ज्ये	११	४८	वै	२२	५४	ध. ११।४८	भद्रा ११।५५ से २५।१९ तक, पुत्रदा एका. व्रत (सबका)
11	१२	शु	२७	४३	मू	१४	५०	वि	२३	५७	धनु	
12	१३	श	-	-	पू.षा	१८	००	प्री	२५	०३	म. २४।०६	अश्ले. में बुध २४।०६, पू.फा. में शुक्र प्रवे. १९।३४,C
13	१३	र	६	१९	उ.षा	२१	०१	आ	२६	०१	मकर	त्रयोदशी वृद्धि D पंचक प्रारंभ १३।०१ से
14	१४	चं	८	४१	श्र	२३	४७	सौ	२६	४४	मकर	भद्रा ८।४१ से २१।४२ तक, सत्यव्रत
15	१५	मं	१०	४२	ध	२६	१२	शो	२७	१५	कुं. १३।०१	पूर्णिमा पुण्य, रक्षाबन्धन, भा. स्वतन्त्रता दिवस, D

भाद्रपद कृष्ण पक्ष सं. २०५७ (१६ से २९ अग.)

अंग्र.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
16	१	बु	१२	२३	श्र	२८	१५	अति	२७	२२	कुंभ	मघा सिंह में सूर्य प्रवेश १६।०९; संक्रान्ति मु. १५, A
17	२	गु	१३	४०	पू.भा	२९	५५	सु	२७	१२	मी. २३।३०	भद्रा २६।०५ से, आश्ले. में मंगल १५।०२, कज्जली ३ व्रत
18	३	शु	१४	३१	उ.भा	-	-	धृ	२६	४०	मीन	भद्रा १४।३१ तक, सातूड़ी तीज, कृष्ण चतुर्थी व्रत
19	४	श	१४	५१	उ.भा	७	०४	शू	२५	४६	मीन	मघा सिंह में बुध प्र. १४।१३ A सौर भाद्रपद मासारंभ
20	५	र	१४	४३	रे	७	४६	गं	२४	२८	मे. ७।४६	कृतिका ४ में शनि प्र. २९।००, पंचक समाप्त ७।४६
21	६	चं	१४	०८	अ	८	०२	वृ	२२	४७	मेष	भद्रा १४।०८ से २५।३६ तक, मार्गी प्लूटो १९।५०
22	७	मं	१३	०४	भ	७	४८	धु	२०	४४	वृ. १३।४०	सा. कन्या में सूर्य २५।१८, श्री कृष्णजन्माष्टमी व्रत स्मा.,+
23	८	बु	११	३०	कृ	[illegible]	[illegible]	व्या	१८	१८	वृष	उ.फा. में शुक्र १६।००, श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत वै.,B
24	९	गु	९	३०	मृ	२८	२३	हर्ष	१५	३०	मि. १७।१२	भद्रा २०।१७ से, गोकुलाष्टमी, गोगा नवमी
25	१०	शु	७	०५	आ	२६	२६	वज्र	१२	२२	मिथुन	भद्रा ७।०५ तक, मंगल पूर्व में उ. २६।५४, अजा C
0	११	शु	२८	२०	०	०	०	०	०	०	०००	एकादशी क्षयः B रा. भाद्रपद प्रा. C एका. व्रत (स्मार्त)
26	१२	श	२५	१७	पुन	२४	१४	सि	[illegible]	[illegible]	क. १८।४८	पू.फा. में बुध ८।००, कन्या में शुक्र ९।०८. अजा ११ व्रत-वै.
27	१३	र	२२	०७	पु	२१	५२	व	२५	२९	कर्क	भद्रा २२।०७ से, प्रदोष व्रत D (तारा) उदय ८।४९
28	१४	चं	१८	५५	श्ले	१९	२७	प	२१	५६	सिं. १९।२७	भद्रा ८।३१ तक, अघोरा १४ व्रत +कालाष्टमी
29	३०	मं	१५	४९	म	१७	१०	शि	१८	१९	सिंह	देवपितृकार्या अमा., कुशोत्पाटनी ३०, अगस्त्य D

भाद्रपद शुक्ल पक्ष सं. २०५७ (३० अग. से १३ सितं.)

अंग्र.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
30	१	बु	१३	०१	पू.फा	१५	१०	सि	१४	५७	कं. २०।४४	पू.फा. में सूर्य प्रवेश १२।०६, चन्द्रदर्शन मु. ४५
31	२	गु	१०	३८	उ.फा	१३	३६	सा	११	५८	कन्या	जमादि उस्सानी मु. मा. ६ प्रा. A पंचक प्रा. २०।०० से
S1	३	शु	८	४७	ह	१२	३६	शुभ	९	२५	तु. २४।१५	भद्रा २०।१३ से, श्री गणेश चतुर्थी
2	४	श	७	४०	चि	१२	२३	शु	७	२७	तुला	भद्रा ७।४० तक, उ.फा. में बुध प्रवेश १४।२९
3	५	र	७	१७	स्वा	१२	५३	ब्र	[illegible]	[illegible]	तुला	हस्त में शुक्र प्रवेश १२।४१ B १३।३०, अनन्त १४ व्रत
4	६	चं	७	४८	वि	१४	१४	वै	२९	२१	वृ. ७।४८	कन्या में बुध प्रवेश १२।३७, सूर्य षष्ठी C पूर्णिमा श्राद्ध
5	७	मं	९	०४	अनु	१६	१५	वि	२९	४८	वृश्चिक	भद्रा ९।०४ से २२।०० तक, बुध पश्चिम में उदय २७।१८
6	८	बु	१०	५८	ज्ये	१८	५२	प्री	-	-	ध. १८।५२	श्री दुर्गाष्टमी, बुधाष्टमी, श्री राधाष्टमी
7	९	गु	१३	२१	मू	२१	५२	प्री	६	३६	धनु	मघा सिंह में मंगल प्रवेश १३।०३, श्री चन्दनवमी
8	१०	शु	१५	५७	पू.षा	२५	००	आ	७	३७	धनु	भद्रा २९।१४ से, रोहि. ३ में गुरु प्र. २६।१२
9	११	श	१८	३१	उ.षा	२८	०२	सौ	८	४०	म. ७।०६	भद्रा १८।३१ तक, पद्मा एकादशी व्रत सबका
10	१२	र	२०	४९	श्र	-	-	शो	९	३८	मकर	हस्त में बुध प्रवेश १२।४५, विजया महाद्वादशी व्रत
11	१३	चं	२२	४५	श्र	६	४७	अ	१०	१८	कुं. २०।००	सोम प्रदोष व्रत, गौत्रि रात्रि व्रतारंभ, भूदान ज.. A
12	१४	मं	२४	११	ध	९	०५	सु	१०	३९	कुंभ	भद्रा २४।११से, उ.फा. में सूर्य प्र. २९।५७, वक्री शनि B
13	१५	बु	२५	०७	श	१०	५६	धृ	१०	३३	मी. २९।०७	भद्रा १२।४४ तक, सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्य, प्रौष्ठपदी C

आश्विन कृष्ण पक्ष सं. २०५७ (१४ से २७ सितं.)

अंग्र.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
14	१	गु	२५	३२	पू.भा	१२	१४	शू	१०	०६	मीन	चित्रा में शुक्र ९।४५, प्रतिपदा श्राद्ध B पंचक स. १३।२८
15	२	शु	२५	२८	उ.भा	१३	०४	गं	९	१३	मीन	द्वितीया श्राद्ध A ३०, तृतीया श्राद्ध, सौर आश्विन प्रा., B
16	३	श	२५	००	रे	१३	२८	वृ	८	००	मे. १३।२८	भद्रा १३।१७ से २५।०० तक, कन्या में सूर्य १६।०५, सं मु A
17	४	र	२४	०९	अ	१३	३०	धु	[illegible]	[illegible]	मेष	कृष्ण चतुर्थी व्रत, चतुर्थी श्राद्ध, विश्वकर्मा पूजा
18	५	चं	२३	०१	भ	१३	१२	हर्ष	२६	३७	वृ. १९।०४	पंचमी श्राद्ध, भरणी श्राद्ध C २०।२८, षष्ठी श्राद्ध
19	६	मं	२१	३५	कृ	१२	३७	वज्र	२४	२१	वृष	भद्रा २१।३५ से, चित्रा में बुध प्र. ७।०५, तुला में शुक्र C
20	७	बु	१९	५४	रो	११	४५	सि	२१	५१	मि. २३।१४	भद्रा ८।४५ तक, सप्तमी श्राद्ध, कालाष्टमी
21	८	गु	१८	००	मृ	१०	३९	व्य	१९	१०	मिथुन	अष्टमी श्राद्ध D श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध
22	९	शु	१५	५१	आ	९	१९	व	१६	१९	क. २६।१२	भद्रा २६।४० से, सायन तुला में सूर्य २२।५७, नवमी D
23	१०	श	१३	२९	पुन	[illegible]	[illegible]	प	१३	१७	कर्क	भद्रा १३।२९ तक, तुला में बुध २५।२२. दशमी व E
24	११	र	१०	५९	श्ले	२८	१८	शि	१०	०७	सिं. २८।१८	इन्दिरा एका. व्रत-स., द्वादशी श्राद्ध F त्रयोदशी श्राद्ध
25	१२	चं	८	२७	म	२६	३०	सि	[illegible]	[illegible]	सिंह	भद्रा २१।५५ से, स्वा. में शुक्र ७।२०, सोम प्रदोष व्रत,F
0	१३	चं	२९	५५	०	०	०	०	०	०	०००	त्रयोदशी क्षयः E एका. श्राद्ध, रा. आश्विन मास प्रा.
26	१४	मं	२७	३०	पू.फा	२४	५०	शुभ	२४	३९	सिंह	भद्रा १६।४० तक, हस्त में सूर्य प्रवेश २१।२७, ज्ये. १G
27	३०	बु	२५	२३	उ.फ	२३	२५	शु	२१	४६	कं. ६।२७	देवपितृकार्याऽमावस्या, सर्वपितृ अमा. श्राद्ध
												G में प्लूटो प्रवेश २७।३०, चतुर्दशी श्राद्ध

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आश्विन शुक्ल पक्ष सं. २०५७ (२८ सितं. से १३ अक्टू.)

सितं.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
28	१	गु	२३	४२	ह	२२	२५	ब्र	१९	१०	कन्या	पू.फा. में मंगल प्र. १६ ।१३, स्वाति में बुध प्रवेश २१ ।०४, A
29	२	शु	२२	३०	चि	२१	५५	ऐं	१७	००	तु. १० ।०५	वक्री गुरु १५ ।२०, श्रवण ४ में वक्री हर्ष. १६ ।२५, उ.षा. ४B
30	३	श	२२	०१	स्वा	२२	०६	वै	१५	२०	तुला	रजब मु. मा. ७ प्रा. A शारदीय नवरात्रा प्रा., मातामह श्राद्ध
01	४	र	२२	१५	वि	२२	५९	वि	१४	१७	वृ. १६ ।४०	भद्रा १० ।०२ से २२ ।१५ तक, पुनर्वसु २ में राहु पू.षा. ४ में C
2	५	चं	२३	१७	अनु	२४	३७	प्री	१३	५०	वृश्चिक	महात्मा गांधी व शास्त्री जन्म दिन B में वक्री नेप. २१ ।४५
3	६	मं	२४	५९	ज्ये	२६	५५	आ	१३	५५	ध. २६ ।५५	D में वक्री शनि ७ ।३५, महाष्टमी व. पू., अनपूर्णा परि. २९ ।४७ तक
4	७	बु	२७	१२	मू	२९	४२	सौ	१४	२७	धनु	भद्रा २७ ।१२ से, श्री सरस्वती आवा., अन्नपूर्णा परि. २७ ।१२ से
5	८	गु	२९	४७	पू.षा	-	-	शो	१५	१८	धनु	भद्रा १६ ।३१ तक, विशा. में शुक्र प्रवेश २९ ।३१, कृतिका ३ D
6	९	शु	-	-	पू.षा	८	४८	अ	१६	१९	म. १५ ।३४	महानवमी, श्री सरस्वती बलिदान
7	९	श	८	२५	उ.षा	११	५३	सु	१७	१९	मकर	विजयादशमी (रावणदाह) C केतु प्र. १९ ।१२, विनायक ४ व्रत
8	१०	र	१०	४९	श्र	१४	४३	धृ	१८	०३	कुं. २७ ।५८	भद्रा २३ ।४७ से, पंचक प्रा. २७ ।५८ से
9	११	चं	१२	४५	ध	१७	०९	शू	१८	२६	कुंभ	भद्रा १२ ।४५ तक, पापांकुशा एका. व्रत स.
10	१२	मं	१४	०७	श्त	१८	५६	गं	१८	१९	कुंभ	चित्रा में सूर्य प्रवेश १० ।२७, भौम प्रदोष व्रत
11	१३	बु	१४	४९	पू.भा	२०	०७	वृ	१७	४३	मी. १३ ।५४	E शरद् पूर्णिमा, सत्यव्रत F जन्म हजरत अली
12	१४	गु	१४	५४	उ.भा	२०	४०	ध्रु	१६	३८	मीन	भद्रा १४ ।५४ से २६ ।३९ तक, विशाखा में बुध २२ ।०६, E
13	१५	शु	१४	२४	रे	२०	४२	व्या	१५	०२	मे. २० ।४२	पूर्णिमा पुण्यं, महर्षि बाल्मीकि जयंती, पंचक समा. २० ।४२ F

कार्तिक कृष्ण पक्ष सं. २०५७ (१४ से २७ अक्टू.)

अक्टू.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
14	१	श	१३	२२	अ	२०	१५	हर्ष	३९	०६	मेष	वृश्चिक में शुक्र प्रवेश १० ।३८, अशून्य शयन २ व्रत
15	२	र	११	५८	भ	१९	२९	वज्र	०	५१	वृ. २५ ।१५	भद्रा २३ ।०८ से, मार्गी नेप. १७ ।३० E व्यापिनी में नरक +
16	३	चं	१०	१८	कृ	१८	२७	सि	८ / ३३	२२ / २७	वृष	भद्रा १० ।१८ तक, तुला में सूर्य २८ ।०० , संक्रान्ति मु. A
17	४	मं	८	२९	रो	१७	१६	व्य	२७	०१	मि. २८ ।३९	A ४५, अनु. में शुक्र प्रवेश २८ ।२६, करक चतुर्थी (करवाB
18	५	बु	६	३२	मृ	१६	०१	प	२४	१६	मिथुन	भद्रा २८ ।३२ से, वक्री बुध १० ।३२ +१४ स्ना. व दीपदानं
0	६	बु	२८	३२	०	०	०	०	०	०	० ० ०	षष्ठी क्षय:D रमा एका. व्रत (स.), रा. कार्तिक मास प्रा.
19	७	गु	२६	२९	आ	१४	४२	शि	२१	२८	मिथुन	भद्रा १५ ।३२ तक, उ. फा. में मंगल प्रवेश २४ ।२०
20	८	शु	२४	३०	पुन	१३	२४	सि	१८	४०	क. ७ ।४६	रोहिणी २ में वक्री गुरु प्रवेश ७ ।४९, कालाष्टमी, अहोई ८
21	९	श	२२	२९	पु	१२	०८	सा	१५	५३	कर्क	भद्रा ९ ।३० से २० ।३२ तक B चौथ व्रत), सौर कार्ति. प्रा.
22	१०	र	२०	३२	श्ले	१०	५३	शुभ	१३	०९	सिं. १० ।५३	C पश्चिम में अस्त २७ ।२६, सायन वृश्चिक में सूर्य ८ ।१७, D
23	११	चं	१८	४२	म	९	४२	शु	१०	२५	सिंह	स्वाति में सूर्य २० ।५७, स्वा. में वक्री बुध २५ ।१६, बुध C
24	१२	मं	१६	५७	पू.फा	८	३७	ब्र	७ / २०	५० / ३२	कं. १४ ।२२	भौम प्रदोष व्रत, धनतेरस, धनवन्तरी जयंती, यम दीपदानम
25	१३	बु	१५	२७	उ.फा	७	४२	वै	२७	०७	कन्या	भद्रा १५ ।२७ से २६ ।५० तक, कन्या में मंगल ९ ।११, चन्द्री. E
26	१४	गु	१४	१४	ह	७	०६	वि	२५	०८	तु. १८ ।५५	मार्गी हर्षल ११ ।३०, दीपावली, महावीर निर्वाण दिवस, F
27	३०	शु	१३	२७	चि	६	५०	प्री	२३	३४	तुला	ज्येष्ठा में शुक्र प्रवेश २८ ।१७, देवपितृकार्या अमावस्या, G
											F श्री हनुमान जयंती, शबे-ए-मिराज	G अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, बलिराज पूजा

कार्तिक शुक्ल पक्ष सं. २०५७ (२८ अक्टू. से ११ नवं.)

अक्टू.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
28	१	श	१३	१२	स्वा	७	०५	आ	२२	२४	वृ. २५ ।३८	चन्द्रदर्शन मु. ४५ B प्रबोधिनी ११ व्रत (स्मा.), भीष्म पं. प्रा.
29	२	र	१३	३५	वि	७	५२	सौ	२१	४३	वृश्चिक	सावान मु. मास ८ प्रा., भैया दूज, यम द्वितीया, विश्वकर्मा ज.
30	३	चं	१४	३२	अनु	९	१८	शो	२१	३४	वृश्चिक	भद्रा २७ ।२१ से A में उदय २१ ।२५, पंचक प्रा. १२ ।२७ से
31	४	मं	१६	११	ज्ये	११	२०	अ	२१	५१	ध. ११ ।२०	भद्रा १६ ।११ तक, श्रवण १ में नेप. १२ ।१५, विनायक ४ व्रत
N1	५	बु	१८	२३	मू	१३	५५	सु	२२	३४	धनु	सौभाग्य पंचमी, पांडव ५
2	६	गु	२०	५७	पू.षा	१६	५३	धृ	२३	३१	म. २३ ।४०	सूर्य षष्ठी व्रत, डाला छट (बिहार)
3	७	शु	२३	३७	उ.षा	२०	००	शू	२४	३०	मकर	भद्रा २३ ।३७ से, कल्पादि ७, अष्टान्हिक जैन व्रतारंभ
4	८	श	२६	११	श्र	२३	०६	गं	२५	२५	मकर	भद्रा १२ ।५६ तक, श्री दुर्गाष्टमी
5	९	र	२८	२१	ध	२५	४५	वृ	२६	०१	कुं. १२ ।२७	विशा. में सूर्य २९ ।०६, चित्रा में वक्री बुध २२ ।००, बुध पूर्व A
6	१०	चं	२९	५१	श्त	२७	५२	ध्रु	२६	०९	कुंभ	C भीष्म पंचक समाप्त, अष्टान्हिक जैन व्रत स.
7	११	मं	३०	४२	पू.भा	२९	१७	व्या	२५	४६	मी. २३ ।००	भद्रा १८ ।२२ से ३० ।४२ तक, मूल धनु में शुक्र २९ ।२०, देव B
8	१२	बु	३०	४३	उ.भा	२९	५६	हर्ष	२४	४७	मीन	मार्गी बुध १२ ।०५, देव प्रबोधिनी एका. व्रत (वैष्णव)
9	१३	गु	२९	५८	रे	२९	५५	वज्र	२३	१२	मे. २९ ।५५	प्रदोष व्रत, पंचक समाप्त २९ ।५५
10	१४	शु	२८	३७	अ	२९	१२	सि	२१	०५	मेष	भद्रा २८ ।३७ से, हस्त में मंगल प्र. १४ ।०२, स्वा. में बुध २१ ।३०
11	१५	श	२६	४६	भ	२७	५८	व्य	१८	३१	मेष	भद्रा १५ ।४४ तक, कार्तिकी पूर्णिमा, सत्यव्रत, गुरुनानक ज., C

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष सं. २०५७ (१२ से २५ नवं.)

नवं.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
12	१	र	२४	२९	कृ	२६	२४	व	१५	३४	वृ. ९ ।४०	A सौर मार्गशीर्ष मासारंभ
13	२	चं	२१	५८	रो	२४	३५	प	१२	२४	वृष	B १४ ।२०, महावीर स्वामी दीक्षा दिवस
14	३	मं	१९	२१	मृ	२२	४३	शि	९ / २९	०७ / ४०	मि. ११ ।४०	भद्रा ८ ।४१ से १९ ।२१ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत,
15	४	बु	१६	४६	आ	२०	५१	सा	२६	३०	मिथुन	वृश्चिक में सूर्य प्र. २७ ।४८, संक्रांति मु. ४५, A
16	५	गु	१४	१६	पुन	१९	०७	शुभ	२३	२०	क. १३ ।३३	सुविधानाथ जयंती व दीक्षा दिवस जैन
17	६	शु	११	५७	पु	१७	३३	शु	२०	१८	कर्क	भद्रा ११ ।५७ से २२ ।५४ तक
18	७	श	९	५१	श्ले	१६	१३	ब्र	१७	३०	सिं. १६ ।१३	कालाष्टमी, श्री महाकाल भैरवाष्टमी
19	८	र	८	०२	म	१५	१०	ऐं	१४	५३	सिंह	अनु. में सूर्य प्रवेश ११ ।०७, पू.षा. में शुक्र प्रवेश ८ ।०३,
0	९	र	३०	३०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	नवमी क्षय: C (वैष्णव), रा. मार्ग. मास प्रारंभ
20	१०	चं	२९	१५	पू.फा	१४	२५	वै	१२	३२	क. २० ।१५	भद्रा १७ ।५० से २९ ।१५ तक, रोहि. १ में वक्री गुरु B
21	११	मं	२८	२०	उ.फा	१३	५६	वि	१०	२४	कन्या	सायन धनु में सूर्य २९ ।५०, उत्पत्ति एका. व्रत (स्मार्त)
22	१२	बु	२७	४८	ह	१३	४८	प्री	८	३३	तु. २५ ।५१	धनि. १ में हर्षल प्रवेश १२ ।५५, उत्पत्ति एका. व्रत C
23	१३	गु	२७	३८	चि	१४	०१	आ	६ / २९	५६ / ४०	तुला	भद्रा २७ ।३८ से, विशा. में बुध प्र. ७ ।५२, कृत्ति. २ में D
24	१४	शु	२७	५६	स्वा	१४	३८	शो	२८	४६	तुला	भद्रा १५ ।४४ तक, D वक्री शनि ११ ।२५, प्रदोष व्रत
25	३०	श	२८	४०	वि	१५	४३	अ	२८	११	वृ. ९ ।२४	देवपितृकार्याऽमावस्या, कमला जयंती, शनैश्चरी अमा.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष सं. २०५७ (२६ नवं. से ११ दिसं.)

ता.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
26	१	र	२९	५८	अनु	१७	१५	सु	२८	०२	वृश्चिक	रुद्रव्रत (पीड़िया व्रत) A गुरु तेग बहादुर बलि. दि.
27	२	चं	-	-	ज्ये	११	१८	धृ	२८	१५	ध. १९।१८	चन्द्रदर्शन मु. १५, महर्घ B प्रा. २० ।३० से
28	२	मं	७	४०	मू	२१	४१	शू	२८	४८	धनु	द्वितीया वृद्धि, रमजान मु. मास ९ प्रा., रोजा प्रा.
29	३	बु	१०	००	पूषा	२४	४२	गं	२९	४०	धनु	भद्रा २३ ।२७ से, वृश्चिक में बुध २६ ।०६
30	४	गु	१२	३४	उषा	२७	५०	वृ	३०	३८	म. ७।२७	भद्रा १२ ।३४ तक, उ.षा में शुक्र १३ ।१२, विना. ४ व्रत
D1	५	शु	१५	२०	श्र	३०	५७	ध्रु	-	-	मकर	अनु. में बुध प्रवे. २० ।२२, बुध पूर्व में अस्त २८ ।०८, A
2	६	श	१८	०१	ध	-	-	ध्रु	७	३७	कुं. २० ।३०	ज्ये. में सूर्य १५ ।२५, चित्रा में मंगल १० ।४५, पंचक B
3	७	र	२०	२४	ध	९	५६	व्या	८	२९	कुंभ	भद्रा २० ।२४ से, मकर में शुक्र ९ ।००, पुन. १ में राहु C
4	८	चं	२२	१६	श	१२	३०	हर्ष	९	०१	कुंभ	भद्रा ९ ।२५ तक, श्री दुर्गाष्टमी C पू.षा. ३ में केतु १६ ।५०
5	९	मं	२३	२५	पूभा	१४	२७	वज्र	९	०४	मी. ८ ।००	महानन्दा नवमी, कल्पादि ९, जैन दिवाकर चौथ पुण्यं
6	१०	बु	२३	४५	उभा	१५	३७	सि	८	३३	मीन	श्री अमरनाथ जन्म व मोक्ष दिन (जैन)
7	११	गु	२३	१८	रे	१६	००	व्य	[illegible]	[illegible]	मे. १६ ।००	भद्रा ११ ।३८ से २३ ।१८ तक, मोक्षदा एका. व्रत D
8	१२	शु	२२	५८	अ	१५	३५	प	२७	१४	मेष	D (सब.), मौनी एका. (जैन), पंचक समा. १६ ।००
9	१३	श	२०	०२	भ	१४	२६	शि	२४	१८	वृ. २० ।०३	शनि प्रदोष व्रत
10	१४	र	१७	२८	कृ	१२	४५	सि	२०	५६	वृष	भद्रा १७ ।२८ से २८ ।०० तक, ज्येष्ठा में बुध प्रवेश २० ।५५
11	१५	चं	१४	३३	रो	१०	३५	सा	१७	१५	मि. २१ ।२३	श्रवण में शुक्र प्रवेश २२ ।००, सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्यं

पौष कृष्ण पक्ष सं. २०५७ (१२ से २५ दिसं.)

ता.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
12	१	मं	११	२१	मृ	[illegible]	[illegible]	शुभ	१३	२४	मिथुन	A ४ में वक्री गुरु १९ ।००, सौर पौष मासारंभ, B
13	२	बु	८	०५	पुन	२७	०८	शु	[illegible]	[illegible]	क. २१ ।४४	भद्रा १८ ।२८ से २८ ।५१ तक, तुला में मंगल प्रवेश १२ ।३९
0	३	बु	२८	५१	०	०	०	०	०	०	० ० ०	तृतीया क्षय:
14	४	गु	२५	४८	पु	२४	४७	ऐं	२५	५४	कर्क	कृष्ण चतुर्थी व्रत
15	५	शु	२३	०४	श्ले	२२	४५	वै	२२	२७	सिं. २२ ।४५	मूल धनु में सूर्य १८ ।२५, संक्रांति मु. १५, कृत्तिका A
16	६	श	२०	४५	म	२१	०७	वि	१९	२०	सिंह	भद्रा २० ।४५ से, B धनु मलमास प्रा.
17	७	र	१८	५६	पूफा	१९	५८	प्री	१६	३४	क. २५ ।५६	भद्रा ७ ।४६ तक
18	८	चं	१७	३६	उफा	१९	१९	आ	१४	१५	कन्या	कालाष्टमी, शहादते हजरत अली
19	९	मं	१६	५०	ह	१९	१५	सौ	१२	२१	कन्या	भद्रा २८ ।४३ से, मूल धनु में बुध प्रवेश १० ।०३
20	१०	बु	१६	३७	चि	१९	४१	शो	१०	५१	तु. ७ ।२५	भद्रा १६ ।३७ तक C एकादशी व्रत (सबका)
21	११	गु	१६	५७	स्वा	२०	३७	अ	९	४८	तुला	सायन मकर में सूर्य १९ ।०७, रवि उत्तरायणे, सफला C
22	१२	शु	१७	४५	वि	२२	०४	सु	९	०९	वृ. १५ ।४०	राष्ट्रीय पौष मास प्रारंभ, जुमातुलविदा
23	१३	श	१९	०३	अनु	२३	५५	धृ	८	५१	वृश्चिक	भद्रा १९ ।०३ से, धनि. में शुक्र १२ ।२२, शनि प्रदोष व्रत
24	१४	र	२०	४८	ज्ये	२६	१०	शू	८	५३	ध. २६ ।१०	भद्रा ७ ।५० तक, स्वा. में मंगल १७ ।३७, शब्बे-ए-कदर
25	३०	चं	२२	५०	मू	२८	४८	गं	९	१३	धनु	देवपितृकार्याऽमा., सोमवती अमाव., क्रिसमस डे

पौष शुक्ल पक्ष सं. २०५७ (२६ दिसं. २००० से ९ जन. २००१)

ता.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
26	१	मं	२५	१६	पूषा	-	-	वृ	९	४९	धनु	A ईदुलफितर B व्रत, पंचक प्रा. २७ ।३० से
27	२	बु	२७	५५	पूषा	७	४२	धु	१०	३७	म. १४ ।२६	पू.षा. में बुध २० ।२३, चन्द्रदर्शन मु. ४५
28	३	गु	३०	३८	उ.षा	१०	४८	व्या	११	३४	मकर	पू.षा. में सूर्य २० ।३९, सव्वा. मु. मास १० प्रा., A
29	४	शु	-	-	श्र	१३	५५	हर्ष	१२	३५	कुं. २७ ।३०	भद्रा २० ।०० से, कुंभ में शुक्र १० ।३५, विनायक ४ B
30	४	श	९	२२	ध	१७	०	वज्र	१३	३२	कुंभ	भद्रा ९ ।२२ तक C समा. २५ ।१०
31	५	र	११	५२	श्र	१९	५१	सि	१४	१७	कुंभ	D (पुत्रदा) एकादशी व्रत (सबका),
J1	६	चं	१३	५९	पू.भा	२२	१५	व्य	१४	४४	मी. १५ ।४४	
2	७	मं	१५	३२	उ.भा	२४	०४	व	१४	४७	मीन	भद्रा १५ ।३२ से २७ ।५६ तक, श्री गुरु गोविन्द सिंह ज.
3	८	बु	१६	२०	रे	२५	१०	प	१४	१५	मे. २५ ।१०	ज्येष्ठा २ में प्लूटो २५ ।४०, श्री दुर्गाष्टमी, पंचक C
4	९	गु	१६	२२	अ	२५	२७	शि	१३	०९	मेष	उ.षा. में बुध २५ ।१३, शत. में शुक्र ११ ।३६
5	१०	शु	१५	३३	भ	२४	५९	सि	११	२३	वृ. ३० ।४५	भद्रा २६ ।४५ से, नानकशाही कले. अनु. गुरु गो. सिंह ज.
6	११	श	१३	५८	कृ	२३	४६	सा	[illegible]	[illegible]	वृष	भद्रा १३ ।५८ तक, मकर में बुध २५ ।४०. पवित्रा D
7	१२	र	११	४२	रो	२१	५१	शु	२६	३६	वृष	प्रदोष व्रत, पापनाशिनी महाद्वादशी व्रत
8	१३	चं	८	४९	मृ	१९	३०	ब्र	२२	४६	मि. ८ ।४४	भद्रा १९ ।३१ से
0	१४	चं	२९	३१	०	०	०	०	०	०	० ० ०	चतुर्दशी क्षय:
9	१५	मं	२५	५४	आ	१६	४४	ऐं	१८	३८	मिथुन	भद्रा १५ ।४४ तक, पूर्णिमा, सत्यव्रत, खग्रास चन्द्रग्रहण

माघ कृष्ण पक्ष सं. २०५७ (१० से २४ जन.)

ता.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
10	१	बु.	२२	११	पुन	१३	४९	वै	१४	२३	क. ८ ।३४	उ.षा. में सूर्य प्रवेश २२ ।४१ A चतुर्थी व्रत, लोहड़ी
11	२	गु.	१८	३३	पु	१०	५०	वि	[illegible]	[illegible]	कर्क	भद्रा २८ ।५० से B माघ बिहु (आसाम)
12	३	शु.	१५	०७	श्ले	[illegible]	[illegible]	आ	२६	०२	सिं. ८ ।०३	भद्रा १५ ।०७ तक, श्रवण में बुध २६ ।४१, संकष्ट, A
13	४	श.	१२	०३	पूफा	२७	३७	सौ	२२	३१	सिंह	मकर में सूर्य २९ ।१४, संक्रा. मु. ४५, सौर माघ प्रा.
14	५	र.	९	२९	उफा	२६	१२	शो	१९	२७	कं. ९ ।११	मकर संक्रा., मलमास समा., पोंगल पर्व-द.भा., B
15	६	चं.	७	३६	ह	२५	२९	अ	१६	५६	कन्या	भद्रा ७ ।३६ से १९ ।०० तक, बुध पश्चिम में उदय २५ ।५०
0	७	चं.	३०	२५	०	०	०	०	०	०	० ० ०	सप्तमी क्षय:
16	८	मं.	२९	५८	चि	२५	३०	सु	१४	५९	तु. १३ ।२५	विशा. में मंगल १६ ।२०, पू.भा. में शुक्र २५ ।४९, कालाष्टमी
17	९	बु.	३०	१६	स्वा	२६	१५	धृ	१३	३८	तुला	C मौनी अमावस्या
18	१०	गु.	३१	१५	वि	२७	४१	शू	१२	५१	वृ. २१ ।१५	भद्रा १८ ।४० से ३१ ।१५ तक
19	११	शु.	-	-	अनु.	२९	३९	गं	१२	३४	वृश्चिक	सायन कुंभ में सूर्य प्रवेश २९ ।४६, एकादशी वृद्धि
20	११	श.	८	५०	ज्ये	-	-	वृ	१२	४३	वृश्चिक	षट्तिला एकादशी व्रत सबका
21	१२	र.	१०	५३	ज्ये	८	०८	ध्रु	१३	१३	ध. ८ ।०८	धनि. में बुध ७ ।४६, रा. माघ मास प्रारंभ, प्रदोष व्रत
22	१३	चं.	१३	१६	मू	१०	५६	व्या	१३	५६	धनु	भद्रा १३ ।१६ से २६ ।३५ तक
23	१४	मं.	१५	५४	पूषा	१३	५८	हर्ष	१४	५०	म. २० ।४४	श्रवण में सूर्य प्रवेश २४ ।५९, श्री सुभाषचन्द्र बोस जयंती,
24	३०	बु.	१८	३७	उषा	१७	०६	वज्र	१५	४६	मकर	मार्गी शनि २९ ।५५, देवपितृकार्याऽमावस्या, C

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

माघ शुक्ल पक्ष सं. २०५७ (२५ जन. से ८ फरवरी)

जन.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
25	१	गु	२१	१९	श्र	२०	१२	सि	१६	४७	मकर	कुंभ में बुध प्रवेश २३।२५, मार्गी गुरु १४।०८
26	२	शु	२३	५२	ध	२३	११	व्य	१७	४१	कुं. ९।४२	मीन में शुक्र प्रवेश २९।५९, चन्द्रदर्शन मु. ३०, पंचक प्रा. A
27	३	श	२६	१७	श	२६	०२	व	१८	२७	कुंभ	जिल्काद मु. मास ११ प्रा. A ९।४२ से, भा. गणतंत्र दि.
28	४	र	२८	२१	पूभा	२८	३३	प	१९	००	मी. २१।५७	भद्रा १५।२१ से २८।२१ तक, वैनायक चतुर्थी, श्री गणेश B
29	५	चं	२९	५९	उभा	३०	४०	शि	१९	१५	मीन	बसंत पंचमी D में हर्षल प्र. २१।५५, जया एका. व्रत (स्मा.),
30	६	मं	३१	०४	रे	-	-	सि	१९	०८	मीन	उ.भा. में. शुक्र प्रवेश २०।५५ B पूजा (बंगाल में)
31	७	बु	-	-	रे	८	१५	सा	१८	३७	मे. ८।१५	रथ सप्तमी, श्री माधवाचार्य ज., पचंक समा. ८।१५
F1	७	गु	७	३३	अ	९	१५	शुभ	१७	३३	मेष	भद्रा ७।३३ से १९।२६ तक, श्री दुर्गाष्टमी, भीष्माष्टमी
2	८	शु	७	२०	भ	९	३६	शु	१५	५७	वृ. १५।३३	शतभिषा में बुध प्रवेश २४।५६, श्री महानन्दा ९, श्री हरसू ब्रह्मदेव
0	९	शु	३०	२३	०	०	०	०	०	०	० ० ०	नवमी क्षय: C राहु पू.षा. २ में केतु प्रवेश १४।३२, धनि. २ D
3	१०	श	२८	४२	कृ	९	११	ब्र	१३	४६	वृष	वृश्चिक में मंगल प्रवेश १४।२१ E जया एका. व्रत (वै.)
4	११	र	२६	२५	रो	[illegible]	[illegible]	ऐं	११	०१	मि. ११।१७	भद्रा १५।३८ से २६।२५ तक, वक्री बुध ७।२०, आर्द्रा ४ में C
5	१२	चं	२३	२८	आ	२८	०६	वै	[illegible]	[illegible]	मिथुन	धनि. में सूर्य प्र. २८।०८, धनि. में वक्री बुध प्र. १४।२४.E
6	१३	मं	२०	०८	पुन	२५	२४	प्री	२४	०४	क. २०।०८	बुध पश्चिम में अस्त ७।२०, भौम प्रदोष व्रत F सत्यव्रत
7	१४	बु	१६	२९	पु	२२	२७	आ	१९	५०	कर्क	भद्रा १६।२९ से २६।३५ तक, श्री जितेन्द्र रथयात्रा (जैन), F
8	१५	गु	१२	४२	श्ले	१९	२५	सौ	१५	२९	सिं. १९।२५	माघी पूर्णिमा पुण्यं, श्री गुरु रविदास ज., भैरव जयंती

फाल्गुन कृष्ण पक्ष सं. २०५७ (९ से २३ फरवरी)

फर.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
9	१	शु	८	५७	म	१६	२९	शो	[illegible]	[illegible]	सिंह	अनुराधा में मंगल प्रवेश १८।३१ A फाल्गु. मास प्रा.
0	२	शु	२९	२६	०	०	०	०	०	०	० ० ०	द्वितीया क्षय: B विजया एकादशी व्रत (सबका)
10	३	श	२६	१८	पूफा	१३	४९	सु	२७	२१	कं. ११।१३	भद्रा १५।४८ से २६।१८ तक
11	४	र	२३	४४	उफा	११	३९	धृ	२४	०४	कन्या	कृष्ण चतुर्थी व्रत
12	५	चं	२१	५२	ह	१०	०५	शू	२१	२१	तु. २१।३५	कुंभ में सूर्य प्रवे. १८।१५, संक्रान्ति मु. ३०, सौर A
13	६	मं	२०	५०	चि	९	१७	गं	१९	१७	तुला	भद्रा २०।५० से , मकर में वक्री बुध प्रवेश १४।३१
14	७	बु	२०	३७	स्वा	९	११	वृ	१७	५५	वृ. २७।५५	भद्रा ८।३८ तक C भौम प्रदोष व्रत, रा. फाल्गु. मास प्रा.
15	८	गु	२१	२१	वि	१०	१२	ध्रु	१७	१२	वृश्चिक	कालाष्टमी, जानकी जयंती
16	९	शु	२२	४८	अनु	११	५२	व्या	१७	०५	वृश्चिक	रेवती में शुक्र प्रवेश २१।४१
17	१०	श	२४	५३	ज्ये	१४	१२	हर्ष	१७	२८	ध. १४।१२	भद्रा ११।४५ से २४।५३ तक, D पितृकार्याऽमावस्या
18	११	र	२७	२३	मू	१६	५९	वज्र	१८	१४	धनु	सायन मीन में सूर्य प्रवेश १९।५७, बसन्त ऋतु प्रारंभ,B
19	१२	चं	३०	०६	पूषा	२०	०६	सि	१९	१०	म. २६।५२	शत. में सूर्य प्रवेश ८।४२, बुध पूर्व में उदय १३।३८
20	१३	मं	-	-	उषा	२३	१७	व्य	२०	१३	मकर	श्रव. में वक्री बुध प्र. ८।००, श्रव. २ में नेप. प्र. १९।४०.C
21	१३	बु	८	५१	श्र	२६	२४	व	२१	१४	मकर	भद्रा ८।५१ से २२।१० तक, महाशिवरात्रि व्रत (स्मार्त)
22	१४	गु	११	२९	ध	२९	१९	प	२२	०६	कुं. १५।५४	महाशिवरात्रि व्रत (वै.), पंचक प्रा. १५।५४ से, D
23	३०	शु	१३	५१	श	-	-	शि	२२	४६	कुंभ	देवकार्याऽमावस्या

फाल्गुन शुक्ल पक्ष सं. २०५७ (२४ फरवरी से ९ मार्च)

फर.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
24	१	श	१५	५६	श	७	५८	सि	२३	१२	मी. २७।५१	चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ A समाप्त १३।५६
25	२	र	१७	४३	पूभा	१०	२०	सा	२३	२३	मीन	मार्गी बुध २१।२०, जिल्हेज मु. मास १२ प्रारंभ
26	३	चं	१९	०५	उभा	१२	१९	शुभ	२३	१५	मीन	
27	४	मं	२०	०२	रे	१३	५६	शु	२२	५२	मे. १३।५६	भद्रा ७।३५ से २०।०२ तक, विनायक ४ व्रत, पंचक A
28	५	बु	२०	३३	अ	१५	०८	ब्र	२२	०४	मेष	Dपूर्णिमा पुण्यं अष्टान्हिक जैन व्रत समाप्त
M1	६	गु	२०	३४	भ	१५	५२	ऐ	२०	५४	वृ. २१।५८	गोरूपिणी षष्ठी (बंगाल), अष्टान्हिक जैन व्रत प्रारंभ
2	७	शु	२०	०१	कृ	१६	०३	वै	१९	२०	वृष	भद्रा २०।०१ से, होलाष्टक प्रारंभ २०।०१ से
3	८	श	१८	५७	रो	१५	४४	वि	१७	१८	मि. २७।२०	भद्रा ७।३३ तक, धनि. में बुध प्र. २०।२०, श्री दुर्गाष्टमी
4	९	र	१७	१७	मृ	१४	५०	प्री	१४	४९	मिथुन	पू.भा. में सूर्य प्रवेश १४।५८ B ईदु-उल-जुहा
5	१०	चं	१५	०२	आ	१३	२२	आ	११	५३	क. २९।५६	भद्रा २५।४० से, हज्ज C प्रवेश ११।१८, प्रदोष व्रत
6	११	मं	१२	२०	पुन	११	२६	सौ	[illegible]	[illegible]	कर्क	भद्रा १२।२० तक, आमला एकादशी व्रत सबका, B
7	१२	बु	९	१५	पु	[illegible]	[illegible]	अ	२४	५८	सिं. ३०।२७	ज्येष्ठा में मंगल प्रवेश २८।२२, रोहिणी १ में गुरु C
0	१३	बु	२९	५३	०	०	०	०	०	०	० ० ०	त्रोयदशी क्षय:
8	१४	गु	२६	२१	म	२७	४३	सु	२०	५५	सिंह	भद्रा २६।२१ से, वक्री शुक्र ३०।३५
9	१५	शु	२२	५३	पूफा	२५	०१	धृ	१६	५२	कं. ३०।२२	भद्रा १२।३६ तक, सत्यव्रत, होलिकादहन सायंकाले.D

चैत्र कृष्ण पक्ष सं. २०५७ (१० से २५ मार्च)

मार्च	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
10	१	श	१९	४०	उफा.	२२	३४	शू	१२	५७	कन्या	छारेण्डी, (धूलण्डी)
11	२	र	१६	४८	ह	२०	३३	गं	[illegible]	[illegible]	कन्या	भद्रा २७।४० से, कुंभ में बुध प्रवेश २५।२५, भाई २,
12	३	चं	१४	३१	चि	१९	०८	ध्रु	२७	२७	तु. ७।४७	भद्रा १४।३१ तक, कृष्ण गणेश ४ व्रत
13	४	मं	१२	५८	स्वा	१८	२७	व्या	२५	२५	तुला	A मासारम्भ, मीन (खर) मास प्रारम्भ
14	५	बु	१२	१६	वि	१८	३७	हर्ष	२४	०४	वृ. १२।२७	मीन में सूर्य प्र. १५।२०, संक्रान्ति मु. ४५, सौर चैत्र A
15	६	गु	१२	२६	अनु	१९	३६	वज्र	२३	२४	वृश्चिक	भद्रा १२।२६ से २४।५० तक
16	७	शु	१३	२७	ज्ये	२१	२५	सि	२३	२३	ध. २१।२५	शीतला पूजन, कालाष्टमी B शीतलाष्टमी
17	८	श	१५	१३	मू	२३	५४	व्य	२३	५१	धनु	उ.भा. में सूर्य प्र. २३।३१, शत. में बुध प्र. २१।५१, B
18	९	र	१७	३३	पूषा.	२६	४८	व	२४	४०	धनु	वक्री प्लूटो ८।०३ C पापमोचनी एका. व्रत (सबका)
19	१०	चं	२०	१२	उषा.	२९	५८	प	२५	४३	म. ९।३६	भद्रा ६।४९ से २०।१२ तक, दशमाता व्रत
20	११	मं	२२	५४	श्र	-	-	शि	२६	४६	मकर	सायन मेष में सूर्य प्र. १९।०१, सूर्य उत्तर गोल में प्र., C
21	१२	बु	२५	२६	श्र	९	०६	सि	२७	४१	कुं. २२।३७	पंचक प्रारंभ २२।३७ से
22	१३	गु	२७	४०	ध	१२	०३	सा	२८	२१	कुंभ	भद्रा २७।४० से, प्रदोष व्रत, रा. चैत्र प्रा., शाक: १९२३ प्रा.
23	१४	शु	२९	२९	श	१४	३८	शुभ	२८	४२	कुंभ	भद्रा १६।३८ तक,
24	३०	श	-	-	पूभा.	१६	४९	शु	२८	४३	मी. १०।१७	देव पितृकार्याऽमावस्या
25	३०	र	६	५०	उभा.	१८	३१	ब्र	२८	२५	मीन	मन्वादि, चान्द्र सम्वत्सर २०५७ समाप्त, ॥ शुभम् ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१८ जन.	गुरु	अनुराधा	भद्रा लग्नाऽभाव:
२१ ''	रवि	मूल	राहुवेध अग्रे कृष्णानंग चतुर्दिनम् दोष:
२६ ''	शुक्र	धनिष्ठा	व्यतिपात पश्चात् लग्नाऽभाव:
२८ ''	रवि	उ.भा.	लग्नाऽभाव:
२९ ''	सोम	रेवती	'' ''
३१ ''	बुध	रेवती	नक्षत्रांत दोष:
१ फर.	गुरु	अश्विनी	भद्रा लग्नाऽभाव:
४ ''	रवि	रोहिणी	नक्षत्रांत दोष:
८ ''	गुरु	मघा	लग्नाऽभाव:
१० ''	शनि	उ.फा.	लग्नाऽभाव भद्रा मृत्युबाण
११ ''	रवि	उ.फा.	मृत्युबाण दोष:
११ ''	रवि	हस्त	मृत्युबाण मासान्त दोष:
१२ ''	सोम	हस्त	संक्रांति दिन दोष:
१२ ''	सोम	चित्रा	भुजंगपात दोष:
१३ ''	मंगल	चित्रा	'' ''
१३ ''	मंगल	स्वाती	लग्नाऽभाव मृत्युबाण दोष:
१४ ''	बुध	स्वाती	भद्रा मृत्युबाण दोष:
१५ ''	गुरु	अनुराधा	भौमयुति दोष:
१६ ''	शुक्र	अनुराधा	'' ''
१९ ''	सोम	उ.षा.	व्यतिपात दोष:
२० ''	मंगल	उ.षा.	व्यतिपात उपरान्त लग्नाऽभाव अग्रे कृष्णानंग चतुर्दिनम् दोष:
२६ ''	सोम	उ.भा.	लग्नाऽभाव:
२७ ''	मंगल	रेवती	भद्रा पूर्व लग्नाऽभाव:
२७ ''	मंगल	अश्विनी	महापात दिन दोष:
२८ ''	बुध	अश्विनी	महापात पश्चात् लग्नाऽभाव
२ मार्च	शुक्र	रोहिणी	वैधृति विष्कुंभ ३ घटी दोष पश्चात् भद्रा दोष

अग्रे ३ मार्च से ९ मार्च तक होलाष्टक दोष:

१० ''	शनि	उ.फा.	भुजंगपात दोष:
११ ''	रवि	चित्रा	सूर्यवेध दोष:
१२ ''	सोम	''	'' ''
१२ ''	सोम	स्वाति	मृत्युबाण दोष:
१३ ''	मंगल	''	मृत्युबाण, मासान्त दिन दोष:

अग्रे १४ मार्च से वर्षान्त तक मीन (मल) मास दोष:

उपनयन मुहूर्त्ता: सं. २०५७ वि.

मास.	पक्ष	ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
चैत्र	शु.	२ गुरौ	६ अप्रै.	अश्वि.	अभिजित
चैत्र	शु.	५ रवौ	९ ''	रोहि.	स्टैं.टा. ८।१५ तक
वैशाख	कृ.	५ रवौ	२३ ''	मूल	अभिजिति
माघ	कृ.	५ रवौ	१४ जन.	उ.फा.	ल. कुंभ स्टैं.टा. ९।२९ तक
माघ	शु.	५ चन्द्रे	२९ ''	उ.भा.	अभिजिति
माघ	शु.	११ रवौ	४ फर.	मृगशिर	लग्न मीन
फाल्गु.	शु.	२ रवौ	२५ ''	उ.भा.	अभिजिति
फाल्गु.	शु.	३ चन्द्रे	२६ ''	उ.भा.-रे.	अभिजिति
फाल्गु.	शु.	५ बुधे	२८ ''	अश्विनी	लग्न वृष

गृहारम्भ मुहूर्त्ता: सं. २०५७ वि.

वैशा.	कृ.	१ बुधे	१९ अप्रै.	स्वाती	लग्न मिथुन
श्रावण	कृ.	३ बुधे	१९ जुला.	धनि.	लग्न कन्या
भाद्र.	कृ.	१ बुधे	१६ अग.	शत.	लग्न कन्या
भाद्र.	शु.	१३ चन्द्रे	११ सितं.	धनि.	अभिजिति
कार्ति.	शु.	१० चन्द्रे	६ नवं.	शत.	अभिजिति
कार्ति.	शु.	१२ बुधे	८ ''	उ.भा.	लग्न वृश्चिक आवश्यके
मार्ग.	कृ.	२ चन्द्रे	१३ ''	रोहि.	अभिजिति
मार्ग.	शु.	६ शनौ	२ दिसं.	धनि.	अभिजिति
मार्ग.	शु.	१० बुधे	६ ''	उ.भा.	स्टैं.टा. ८।३३ तक ल.चिं.
मार्ग.	शु.	११ गुरौ	७ ''	रेवती	स्टैं.टा. ११।३८ तक
मार्ग.	शु.	१५ चन्द्रे	११ ''	मृग.	अभिजिति
माघ	शु.	१० शनौ	३ फर.	रोहि.	अभिजिति
फाल्गु.	कृ.	५ चन्द्रे	१२ ''	हस्त	लग्न मीन, पादवे धातुशुक्र वेधाऽभाव:
चैत्र	कृ.	१ शनौ	१० मार्च	उ.फा.	स्टैं.टा. ११।४७ तक पादवेधात्शुक्र वेधाऽभाव:

अन्य गृहारम्भ मुहूर्त्ता: (अति आवश्यकता में)

श्रावण	कृ.	११ गुरौ	२७ जुला.	रोहि.	अभिजिति
''	शु.	५ शुक्रे	४ अग.	हस्त	अभिजिति

मास.	पक्ष	ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
श्रावण	शु.	६ शनौ	५ अग.	चित्रा	अभिजिति
भाद्रपद	शु.	२ गुरौ	३१ ''	उ.फा.	अभिजिति
''	''	३ शुक्रे	१ सितं.	हस्त	स्टैं.टा. ८।४७ तक
''	''	४ शनौ	२ ''	चि.स्वा.	अभिजिति
कार्तिक	''	७ शुक्रे	३ नवं.	उ.षा.	अभिजिति
मार्ग.	''	४ गुरौ	३० ''	उ.षा.	स्टैं.टा. १२।३४ से अभिजिति
माघ	''	५ चन्द्रे	२९ जन.	उ.भा.	अभिजिति
''	''	७ बुधे	३१ ''	रेवती	स्टैं.टा. ८।१५ तक
फाल्गुन	''	३ चन्द्रे	२६ फर.	उ.भा.	लग्न मीन

गृह प्रवेश मुहूर्त्ता: सं. २०५७ वि.

श्रवण	शु.	६ शनौ	५ अग.	चित्रा	अभिजिति
कार्ति.	शु.	७ शुक्रे	३ नवं.	उ.षा.	अभिजिति
''	''	१० चन्द्रे	६ ''	शत	अभिजिति
''	''	१२ बुधे	८ ''	उ.भा.	लग्न वृश्चिक
मार्ग.	''	६ शनौ	२ दिसं.	धनि.	अभिजिति
''	''	८ चन्द्रे	४ ''	शत.	पूर्वा अभिजिति
''	''	१० बुधे	६ ''	उ.भा.	स्टैं.टा ८।३३ तक
''	''	११ गुरौ	७ ''	रेवती	स्टैं.टा. ७।२६ से ११।३८ तक
माघ	''	७ बुधे	३१ जन.	रेवती	स्टैं.टा. ८।१५ तक
''	''	१० शनौ	३ फर.	रोहि.	अभिजिति

अन्य गृह प्रवेश मुहूर्त्ता: (अति आवश्यकता में)

वैशाख	कृ.	१ बुधे	१९ अप्रै.	स्वाति	लग्न मिथुन
श्रावण	कृ.	३ बुधे	१९ जुला.	धनि.	लग्न कन्या
''	''	६ शनौ	२२ ''	उ.भा.	अभिजिति
कार्ति.	शु.	३ चन्द्रे	३० अक्टू.	अनु.	लग्न वृश्चिक स्टैं.टा. ९।१८ तक
मार्ग.	कृ.	२ चन्द्रे	१३ नवं.	रोहि.	अभिजिति
''	शु.	४ गुरौ	३० ''	उ.षा.	अभिजिति स्टैं.टा. १२।३४ बाद
''	''	१५ चन्द्रे	११ दिसं.	मृग.	अभिजिति
माघ	शु.	३ शनौ	२७ जन.	शत.	अभिजिति

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मास	पक्ष	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
माघ	शु.	५	चन्द्रे	२९	जन.	उ.भा.	अभिजिति
फाल्गु.	कृ.	५	चन्द्रे	१२	फर.	हस्त	लग्न मीन पादवेधात्शुक्र वेधाऽभाव:
"	"	७	बुधे	१४	"	"	स्टैंटा. ८।३८ से ९।१९ तक
"	शु.	३	चन्द्रे	२६	फर.	उ.भा.	लग्न मीन

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्ता: सं. २०५७ वि.

मास	पक्ष	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
चैत्र	शु.	१३	रवौ	१६	अप्रै.	उ.फा.	अभिजिति पादवेधात्शुक्रवेधाऽभाव:
वैशा.	कृ.	१	बुधे	१९	अप्रै.	स्वाति	लग्न मिथुन
माघ	कृ.	५	रवौ	१४	जन.	उ.फा.	अभिजिति
"	"	६	चन्द्रे	१५	"	हस्त	स्टैं.टा. ७।३६ तक क्षय तिथि दोष: आवश्यके
"	शु.	३	शनौ	२७	"	शत.	अभिजिति
"	"	५	चन्द्रे	२९	"	उ.भा.	अभिजिति
"	"	७	बुधे	३१	"	रेवती	लग्न कुंभ
"	"	१०	शनौ	३	फर.	रोहि.	अभिजिति
"	"	११	रवौ	४	"	मृग.	लग्न मीन
फाल्गु.	कृ.	५	चन्द्रे	१२	"	हस्त	लग्न मीन
"	"	७	बुधे	१४	"	स्वाति	स्टैं.टा. ८।३८ से ९।१९ तक
"	शु.	२	रवौ	२५	"	उ.भा.	अभिजिति
"	"	३	चन्द्रे	२६	"	रेवती	अभिजिति
"	"	५	बुधे	२८	"	अश्वि.	लग्न मीन
चैत्र	कृ.	१	शनौ	१०	मार्च	उ.फा.	अभिजिति पादवेधात्शुक्र वेधाऽभाव:
"	"	२	रवौ	११	"	हस्त	अभिजिति

तामसी देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्ता: सं. २०५७ वि.

मास	पक्ष	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
मार्ग.	कृ.	६	शुक्रे	१७	नवं.	पुष्य	स्टैं.टा. ११।५७ तक
"	"	१३	गुरौ	२३	"	चित्रा	अभिजिति
"	शु.	४	गुरौ	३०	"	उ.षा.	स्टैं.टा. १२।३४ बाद अभिजिति, शुक्रयुति
"	"	६	शनौ	२	दिसं.	धनि.	अभिजिति
"	"	७	रवौ	३	"	शत.	अभिजिति
मार्ग.	शु.	८	चन्द्रे	४	दिसं.	शत.	पूर्वा अभिजिति
"	"	१०	बुधे	६	"	उ.भा.	स्टैं.टा. ८।३३ तक
"	"	११	गुरौ	७	"	रेवती	स्टैं.टा. ७।२६ से ११।३८ तक ल.चि.
"	"	१२	शुक्रे	८	"	अश्वि.	अभिजिति आवश्यके
"	"	१५	चन्द्रे	११	"	मृग.	अभिजित

कर्ण वेध-मुण्डन संस्कार मुहूर्त्ता: सं. २०५७ वि.

मास	पक्ष	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
वैशाख	कृ.	१	बुधे	१९	अप्रै.	स्वाति	लग्न मिथुन
मार्ग.	शु.	५	शुक्रे	१	दिसं.	श्रवण	अभिजिति
"	"	११	गुरौ	७	"	रेवती	स्टैं.टा. ७।२६ से ११।३८ तक ल.चिं.
"	"	१२	शुक्रे	८	"	अश्वि.	अभिजिति
माघ	कृ.	११	शुक्रे	१९	जन.	अनु.	अभिजिति
"	शु.	७	बुधे	३१	"	रे./अ.	लग्न, कुम्भ, मीन
"	"	७	गुरौ	१	फर.	अश्वि.	स्टैं.टा. ७।३३ तक
फाल्गुन	कृ.	५	चन्द्रे	१२	"	हस्त	लग्न मीनपादवेधात्शुक्रवेधाऽभाव:
"	"	७	बुधे	१४	"	स्वाति	स्टैं.टा. ८।३८ से ९।१९ तक
"	शु.	२	रवौ	२५	"	"	अनबूझ मुहूर्त्त
"	"	३	चन्द्रे	२६	"	रेवती	अभिजिति स्टैं.टा. १२।१९ बाद
"	"	५	बुधे	२८	"	अश्वि.	लग्न मीन

विपणि व्यापार प्रा. मुहूर्त्ता: सं. २०५७ वि.

मास	पक्ष	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
चैत्र	शु.	९	बुधे	१२	अप्रै.	पुष्य	अनबूझ मुहूर्त
"	"	१३	रवौ	१६	"	उ.फा.	अभिजिति
श्रावण	कृ.	६	शनौ	२२	जुला.	उ.भा.	अभिजिति
"	"	१२	शुक्रे	२८	"	मृग.	अभिजिति
"	शु.	५	शुक्रे	४	अग.	हस्त	अभिजिति
"	"	१०	बुधे	९	"	अनु.	स्टैं.टा. ८।५३ तक
"	"	१३	रवौ	१३	"	उ.षा.	स्टैं.टा. ६।१९ तक
भाद्र.	कृ.	५	रवौ	२०	"	अश्विनी	अभिजिति
"	"	१३	रवौ	२७	"	पुष्य	अभिजिति
भाद्र	शु.	२	गुरौ	३१	अग.	उ.फा.	अभिजिति
"	"	३	शुक्रे	१	सितं.	हस्त	स्टैं.टा. ८।४७ तक
"	"	४	शनौ	२	"	चि.-स्वा	अभिजिति
"	"	५	रवौ	३	"	स्वाती	स्टैं.टा. ७।१७ तक
आश्वि.	शु.	२	शुक्रे	२९	"	चित्रा	अभिजिति
"	"	५	चन्द्रे	२	अक्टू.	अनु.	अभिजिति
"	"	९	शनौ	७	"	उ.षा.	दशहरा अनबूझ मु.
"	"	१५	शुक्रे	१३	"	रेवती	अभिजिति
कार्ति.	कृ.	१	शनौ	१४	"	अश्वि.	अभिजिति
"	"	१३	बुधे	२५	"	उ.फा./ह.	धन तेरस अनबूझ मुहूर्त्त
"	शु.	२	रवौ	२९	"	अनु.	स्टैं.टा. ७।५२ बाद
"	"	३	चन्द्रे	३०	"	अनु.	स्टैं.टा. ९।१८ तक
"	"	७	शुक्रे	३	नवं.	उ.षा.	अभिजिति
"	"	१२	बुधे	८	"	उ.भा.	लाभ अमृत चौघड़िया
"	"	१३	गुरौ	९	"	रेवती	अभिजिति
मार्ग.	कृ.	२	चन्द्रे	१३	"	रोहि.	अभिजिति
"	"	१३	गुरौ	२३	"	चित्रा	अभिजिति
"	शु.	१०	बुधे	६	दिसं.	उ.भा.	स्टैं.टा. ८।३३ तक
"	"	१५	चन्द्रे	११	"	मृग.	अभिजिति
माघ	कृ.	५	रवौ	१४	जन.	उ.फा.	स्टैं.टा. ९।२९ तक
माघ	शु.	५	चन्द्रे	२९	"	उ.भा.	अभिजिति
"	"	७	बुधे	३१	"	रे./अ.	लग्न मीन
"	"	७	गुरौ	१	फर.	अश्वि.	स्टैं.टा. ७।३३ तक
"	"	१०	शनौ	३	"	रोहि.	स्टैं.टा. ९।११ बाद
फाल्गु.	कृ.	७	बुधे	१४	"	स्वाति	स्टैं.टा. ८।३८ से ९।१९ तक
फल्गु.	शु.	२	रवौ	२५	"	उ.भा.	स्टैं.टा. १०।२० बाद
"	"	३	चन्द्रे	२६	"	उ.भा./रे.	अभिजिति
"	"	५	बुधे	२८	"	अश्वि.	लग्न मीन
चैत्र	कृ.	१	शनौ	१०	मार्च	उ.फा.	अभिजिति
"	"	२	रवौ	११	"	हस्त	अभिजिति

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

द्वादश मासिक राशिफल संवत् २०५७ विक्रमी

मेष—चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

अप्रैल—देव दर्शन का लाभ मिलेगा। यशोपलब्धि से सांसारिक सुखों का अहसास होगा। पूर्व निर्धारित योजना क्रियान्वित होगी। नित्य कार्यों में लापरवाही से आशानुकूल परिणाम मिलना असंभव है।

मई—स्वास्थ्य नरम रहेगा। अनजान व्यक्ति की भागीदारी आपके काम में लाभ दिला सकती है। खरीद फरोख्त का धन्धा आपके लिए इस मास में अच्छा लाभ दे सकता है। कुछ नये समीकरण बन सकते हैं।

जून—इस मास में आपको राजनैतिक क्षेत्र में कटु अनुभव होंगे। समय की नजाकत जानकर, सोच समझकर काम करें। बाल बच्चों का मनोरंजन होगा। साहित्य-संगीत में भी रुचि बढ़ेगी।

जुलाई—देश विदेश से समाचार प्राप्त होंगे। किसी छोटी यात्रा से आपको लाभ होगा। आपकी निष्क्रियता आपके लिए भाग्यवरोधक व लाभ में कमी करेगी। घर गृहस्थी में सुख मिलेगा।

अगस्त—यह मास मिश्रित फलों से युक्त होगा। पशु, भूमि-वाहनादि का क्रय-विक्रय का विचार बनेगा। इच्छित लाभ होगा। कोई आपको दिशा भ्रमित करेगा। कामकाज में संतुलन बना रहेगा।

सितम्बर—स्वास्थ्य का ध्यान रखें। घर ग्रहस्थ की समस्या का समाधान करने की कोशिश करें। विरोधियों के प्रति सचेत रहें। कानूनी कार्यवाही के पचड़े में न पड़ें। राजनैतिक क्षेत्र में आप प्रभावशाली बनेंगे।

अक्टूबर—पड़ौसियों के प्रति जागरूक रहें। भ्रमित न हों। अपनी बढ़ती जिम्मेदारियों को कुशलता से निभायें। अतीत के संदर्भ में जागरूकता आपको नया लाभ दिलायेगी। उच्चाधिकारी से बनाये रखें।

नवम्बर—इस मास में आपको पारिवारिक समस्या का समाधान करना पड़ सकता है। उत्तम ग्रहयोग से कोई नया काम बनेगा। मित्रों के साथ हंसी मजाक और घूमने फिरने का सुख मिलेगा। साहित्य संगीत में रुचि बढ़ेगी।

दिसम्बर—कार्यारम्भ कीजिए भाग्य आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। देश देशान्तर से मिलने वाला समाचार मन खुश करेगा। निष्क्रिय न रहें अन्यथा नुकसान होगा।

जनवरी २००१—यह मास कुछ विशेषताओं वाला है। पुराने कर्ज व मर्ज से राहत मिलेगी। खरीद-फरोख्त के धंधे में लाभ होगा। समयानुकूल काम करने वाले भौतिक-विकास करेंगे।

फरवरी—अव्यवस्थित दिनचर्या रोग का कारण बनेगी। किसी दोस्त से कहासुनी होगी। अच्छे और खराब दोनों तरह के समाचार मिलेंगे। घूमने-फिरने का मन करेगा। घर में नये मेहमान आने की खुशी होगी।

मार्च—उत्सव का समाचार मिलेगा। राजनैतिक आधार मजबूत होगा। ग्रह, भाग्य विकास में सहायक हैं। पुराने कर्ज व मर्ज दोनों से छुटकारा मिलेगा। इच्छित काम होते चले जायेंगे।

वृष—ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

अप्रैल—धार्मिक उत्सवों का आयोजन होगा। इस मास ग्रह योग सामान्य शुभ फलदायक है। घूमने-फिरने का अच्छा अवसर मिलेगा। विवादास्पद मामलों से पाठकों और विद्यार्थियों का मन स्थिर रहेगा।

मई—स्वास्थ्य में तरोताजगी। समस्याओं का समय रहते हल निकालें। धार्मिक आयोजनों में आना जाना रहेगा। आलस्य की प्रवृत्ति त्यागें। गृहणियों का मन प्रसन्न रहेगा। अनावश्यक भागदौड़ का सिलसिला चलता रहेगा।

जून—सोचे समझे बिना काम न करें। क्रय-विक्रय में लाभ मिलेगा। शुभ समाचार मिलने से मन प्रसन्न होगा। घर-गृहस्थी पर ध्यान दें। बच्चों का मन खेलकूद में रहेगा।

जुलाई—इस मास ग्रह-चाल श्रेष्ठ है। मित्रों का पूरा सहयोग मिलेगा। पूर्व नियोजित कार्य पूरे होंगे। सरकारी खजाने से लाभ मिलेगा। कानूनी समस्याएं सामने आ सकती हैं। घूमने-फिरने का मन करेगा।

अगस्त—निष्क्रियता शुभ फलों में कमी करेगी। दैनिक-कार्यों में आलस्य न रखें। आप स्वयं पर संयम रखें अन्यथा कहा-सुनी हो सकती है। स्वास्थ्य थोड़ा नरम रहेगा। युवा लोग उन्नति करेंगे।

सितम्बर—बनते बिगड़ते माहौल में नई दिशायें तय होंगी। प्रतियोगिता परिणाम पक्ष में रहेगा। नए दोस्त बनेंगे। गृहस्थी में समस्याओं के कारण परेशान रहेंगे। दूर-समीप की यात्रा संभव।

अक्टूबर—देश-विदेश से शुभ समाचार मिलेगा। इस मास आनन्द में वृद्धि होगी। जमीन-जायदाद, वाहन तथा भोजन का सुख मिलेगा। पड़ौसियों से अच्छे सम्बन्ध बनेंगे। पुराने रोग-ऋण से राहत मिलेगी।

नवम्बर—कार्यारम्भ कीजिए सफलता प्राप्त होगी। घर-गृहस्थ की समस्याएं सुलझेंगी। गृहणियों का समय अपनी मनचाही खरीदादारी में बीतेगा। युवकों को सफलता के लिए कड़ा संघर्ष करना होगा।

दिसंबर—पड़ौसियों से सावधान रहें। राजनैतिक क्षेत्र में पहुंच बढ़ेगी। सामाजिक व धार्मिक कार्यों से बाहर जाना पड़ेगा। अच्छे समाचार से मन प्रसन्न होगा। व्यापार में अच्छा लाभ होगा। भागदौड़ में व्यस्त रहेंगे।

जनवरी २००१ ई.—इस मास में ग्रह चाल ठीक नहीं है। पदोन्नति में साथी बाधक बनेंगे। अधूरा काम मित्रों की सहायता से पूरा होगा। मानसिक चिन्ता से परेशान रहेंगे। राजकीय सहयोग सम्मान मिलेगा। बच्चों का स्वास्थ्य नरम रहेगा।

फरवरी—ग्रह योग मध्यम है। किसी विशेष योजना का सूत्रपात होगा। लम्बी योजना में धन लगेगा। रोज नई समस्याओं का सामना होगा। भूमि, वाहन व पशु के क्रय विक्रय का काम पूर्ण होगा। बच्चे खेलकूद में ध्यान देंगे।

मार्च—इस मास कुछ विशेष परिस्थितियां बनेंगी। पूर्व में चली आ रही योजनाओं के परिणाम सामने आएंगे। सरकारी खजाने से धन की प्राप्ति हो सकती है। नये मेहमान के आने की खुशी होगी।

मिथुन—क, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, हा

अप्रैल—कार्य शुरू कीजिए, निश्चित रूप से सफलता मिलेगी। घर परिवार में सुख-शान्ति रहेगी। नौकरी पेशा वाले लोगों की पदोन्नति संभव है। अतीत को जानने के प्रयास का फायदा होगा। व्यापारी अपने निर्णय जल्दी-बाजी में न करें तो बेहतर होगा।

मई—पूर्व में सोचे गये कार्य को क्रियान्वित करें। लाभ में रहेंगे। मित्रों से अनबन हो सकती है। जानवरों से सावधान रहें। राजनीति से दूर रहें। अपनी शारीरिक क्षमता से अधिक कार्य न करें।

जून—इस मास स्थानान्तरण और पदोन्नति से नौकरी पेशा वर्ग प्रसन्न रहेगा। यात्रा की प्रबल संभावना है। अनजान व्यक्ति से जान-पहचान न करें। कोई भी नया काम पूरी तरह सोच समझ कर करें।

जुलाई—घर-गृहस्थ की समस्या सुलझ जायेगी। आगन्तुक महेमान के आने से खुशी होगी। अनजान व्यक्ति की भागीदारी से बचें। उच्च अधिकारी से मेलजोल बढ़ायें। ललित कलाओं व साहित्य में रुचि बढ़ेगी।

अगस्त—पड़ौसी नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे। भाग्य की विडम्बना ही समझे, आश्वासन अधूरे रहेंगे। बहु लाभकारी योजना में लगाया हुआ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

धन रुक जायेगा। पुराने परिचित लोग सहयोग करेंगे। युवकों को कड़ा संघर्ष करना पड़ेगा।

सितम्बर—सामाजिक व धार्मिक कार्यों में मन लगेगा। नयी योजना का सूत्रपात होगा। ग्रहचाल के अनुसार दौड़धूप अधिक रहेगी। प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। बच्चे खुश रहेंगे।

अक्टूबर—यह मास आपके लिए विशेष फलदायक रहेगा। समय को पहचानें और फिर काम करें। सफलता सुनिश्चित है। राजनीतिक पहुंच का लाभ मिलेगा। राज्य से अपेक्षित सहयोग मिलेगा। शुभ समाचार मिलेंगे। नये मित्र बनेंगे।

नवम्बर—देश विदेश से अच्छे समाचार मिलेंगे। पुरानी योजनाओं के पूरी होने से खुशी होगी। नई कार्ययोजना बनेगी। नये मेहमान के आने की खुशी होगी। दोस्तों से पूरी उम्मीद रहेगी। राजनैतिक पहुंच का लाभ होगा।

दिसम्बर—स्वास्थ्य नरम रहेगा। दैनिक क्रिया-कलापों में आलस्य ठीक नहीं। कोई तुम्हें भ्रमित करने का प्रयास करेगा। अपने निर्णयों पर अडिग रहें। लेन-देन का विचार पूरा होगा। व्यापारी वर्ग लाभ में रहेगा।

जनवरी २००१—मास के गोचर ग्रह अनुकूल रहेंगे। घर-गृहस्थी की जिम्मेदारियां बढ़ती जायेंगी। कानूनी विवादों से बचें। पदोन्नति की संभावना है। चौपायों से सुख मिलेगा। सामाजिक-धार्मिक क्षेत्र में प्रभाव बढ़ेगा।

फरवरी—भाग्य साथ देगा। किसी खास लाभ का अहसास होगा। धार्मिक आयोजनों में जाना पड़ेगा। कानूनी विवादों से समय रहते छुटकारा पा लें। प्रतिकूल समाचार मन दुखी करेगा। बच्चे अध्ययन में मन लगायेंगे।

मार्च—यह मास कुछ विशेषताओं वाला है। युवक उत्साहित रहेंगे। महिलायें अपनी मनपसंद खरीददारी में समय व्यतीत करेंगी। धार्मिक आस्था बढ़ेगी। अचानक लाभ मिल सकता है। भूमि वाहन-सुख मिलेगा।

कर्क—ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

अप्रैल—ग्रह योग मध्यम हैं। लम्बी यात्रा का योग बनेगा। कानूनी विवादों से जैसे-तैसे छुटकारा मिल जायेगा। शुभ समाचार से मन प्रसन्न रहेगा। क्रय-विक्रय में लाभ होगा। तुम्हें कोई भ्रमित करने की कोशिश करेगा।

मई—आर्थिक दृष्टि से यह मास समस्याग्रस्त रहेगा। रुका हुआ पैसा मिलने में कठिनाई आयेगी। सामाजिक जिम्मेदारियों के कारण खर्चा बढ़ेगा। यात्रा लम्बी और नुकसानदायक रहेगी। राजनीतिक सम्पर्क लाभ देगा।

जून—आपके उद्देश्य की पूर्णता में मित्र सहायक बनेंगे। यात्रा छोटी व लाभदायक होगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। परिवार में कलह हो सकती है। नौकरी पेशा वर्ग को पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। व्यापारी वर्ग को लाभ होगा।

जुलाई—गोचर ग्रह आपके अनुकूल हैं। कार्यसिद्धि होगी। कानूनी समस्याओं का समाधान निकल जायेगा। प्रतियोगिताओं में सफलता मिलेगी। परिवार में खुशी छायी रहेगी। दोस्तों से बचकर रहें।

अगस्त—राजनीति से दूर रहें। रोग, ऋण एवं कानूनी विवादों से दूर रहें। धार्मिक आस्था बनेगी। अधूरा कार्य आप पूरा कर लेंगे। दैनिक क्रियाकलापों में आलस्य प्रवृत्ति त्यागें। लम्बी योजना में धन न लगायें।

सितम्बर—इस मास बनती बिगड़ती परिस्थितियों में नये समीकरण बनेंगे। जमीन जायदाद की बिक्री-खरीद होगी। घर में खुशी का अहसास होगा। उत्तरार्ध में लाभ होगा। सगे-सम्बन्धियों से मनमुटाव होगा। श्रमिक वर्ग संतुष्ट होगा।

अक्टूबर—ग्रहचाल उत्तम है। लम्बी बीमारी से छुटकारा मिलेगा। अधूरी योजना पूरी होगी। राजनीतिक चर्चा से दूर रहें। चिर परिचितों की सहानुभूति मिलेगी। घर में सुख रहेगा। जमीन-पशु-वाहन का क्रय-विक्रय होगा।

नवम्बर—यह मास विशेषताओं वाला होगा। भाग्य का सितारा चमकेगा। रोजमर्रा के कामों में प्रगति होगी। प्रतियोगिता परिणाम उत्तम रहेगा। लम्बी बीमारी खत्म होगी। घर में खुशी का माहौल रहेगा। पड़ौसियों के साथ संयम रखें। अन्यथा कहासुनी संभव है।

दिसम्बर—ग्रह अनुकूल हैं। चल-अचल सम्पत्ति खरीदने की इच्छा पूर्ण होगी। समय को देखकर, सोच-समझकर कार्य करें। चल रहे कार्यों में सफलता मिलेगी। बच्चे प्रसन्न रहेंगे।

जनवरी २००१—इस मास रोज नई समस्याओं का सामना होगा। अचानक विपरीत परिस्थितियाँ बनेंगी। बनता हुआ काम अधूरा रह सकता है। घर-गृहस्थी का विचार बनेगा। भौतिक सुख मिलेगा।

फरवरी—गोचर-ग्रह अनुकूल नहीं हैं। साथी उन्नति में बाधक रहेंगे। राजनीति से दूर रहें। धार्मिक आयोजनों में खुशियों के अहसास के साथ कटुता का अनुभव भी हो सकता है। प्रगति का साधन बहुत ही संघर्ष के बाद मिलेगा।

मार्च—परिस्थितियां अनुकूल बनेंगी। दफ्तर में हंसी-मजाक चलेगा। कानूनी विवाद नया मोड़ लेगा। आपको भ्रमित करने का प्रयास होगा। चल-अचल सम्पत्ति की खरीद-विक्री होगी। कार्यपूर्ति हेतु सहयोगी मिलेंगे।

सिंह—मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

अप्रैल—इस मास जीवन के नये समीकरण बनेंगे। नये काम धंधे की शुरूआत का योग है। राजनीति में आपका प्रभाव बढ़ेगा। यश बढ़ने के साथ वैमनस्य भी हो सकता है। घर-गृहस्थी आराम से चलेगी।

मई—इस मास ग्रह चाल उत्तम है। रुके हुए कार्य बनेंगे। नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। दोस्तों से पर्याप्त सहायता मिलेगी। गुप्त शत्रु से सचेत रहें। व्यापारी वर्ग सोच समझकर चलें। प्रतियोगी परीक्षाओं का परिणाम अच्छा रहेगा।

जून—इस मास आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनेगी। शत्रु षड्यंत्र करेंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा को आंच न आने दें। पारिवारिक समस्या का समाधान हो जायेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। छोटी मनोरंजक यात्रा संभव है।

जुलाई—अधूरे काम पूरे होंगे। पुराने कर्ज व मर्ज से छुटकारा मिलेगा। पारिवारिक, धार्मिक आयोजनों में जाने से हार्दिक प्रसन्नता का अहसास होगा। घूमने फिरने की योजना पूर्ण होगी। बच्चे खेलकूद में लगे रहेंगे।

अगस्त—इस मास आप नित्य प्रसन्न रहेंगे। दोस्तों व दफ्तर में मनोरंजक माहौल मिलेगा। उच्च अफसर आप से खुश रहेंगे। आपकी कीर्ति व यश का विस्तार होगा। गृहणियों का समय खरीददारी में बीतेगा।

सितम्बर—इस मास ग्रह चाल उत्तम है। कार्यसिद्धि होगी। धार्मिक कार्यों में मन लगेगा। आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी। नये मित्र बनेंगे। प्यार-प्रीति में बढ़ोत्तरी होगी। मेहमानों के आने से मानसिक परेशानी हो सकती है।

अक्टूबर—शुभ समाचार मिलने से हार्दिक प्रसन्नता होगी। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। सरकारी कार्य आसानी से होंगे। अनिच्छापूर्वक कहीं जाना पड़ सकता है। कानूनी विवादों से छुटकारा मिलेगा। व्यापारी लाभ में रहेंगे।

नवम्बर—निष्क्रियता को त्यागें। व्यवसाय में मन लगाकर कार्य करें। घर-गृहस्थी में तनाव हो सकता है। छोटी-बड़ी यात्रा संभव है। अपने बड़े अधिकारी से बनाये रखें।

दिसम्बर—लेन-देन स्पष्ट रखें। सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में यश बढ़ने के साथ-साथ सुखोपभोग होगा। धर्म के प्रति आस्था बढ़ेगी। पारिवारिक राजी-खुशी की खबर मिलेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जनवरी २००१—इस मास भाग्य का सितारा चमकेगा। अचानक धन प्राप्त हो सकता है। सामाजिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। अचल संपत्ति के क्रय-विक्रय का योग है। पुराने शत्रुओं से सावधान रहें।

फरवरी—इस मास उतार-चढ़ाव के योग बने हैं अतः सोच समझकर कार्य करें। भ्रमित न हों। स्वास्थ्य में गिरावट से मानसिक चिन्ता होगी। पारिवारिक समस्या का निदान समय रहते कर लें।

मार्च—आर्थिक स्थिति संतुलन में रहेगी। कोई तुम्हें गलत सलाह देकर भ्रमित करेगा। कानूनी विवादों को नई दिशा मिलेगी। व्यर्थ की परेशानी से मानसिक परेशानी बढ़ेगी। युवा जोश से भरपूर रहेंगे। बच्चे मेहनत कर सफलता प्राप्त करेंगे।

कन्या—टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

अप्रैल—आधे से अधिक गोचर ग्रह शुद्ध होने से अधूरे काम पूरे होंगे। जमीन, वाहन का क्रय-विक्रय होगा। भाग्य की विडम्बना ही जानें, राजकीय आश्वासन अधूरा रहेगा। दाम्पत्य जीवन प्रसन्नता से बीतेगा। घूमने फिरने का अवसर मिलेगा।

मई—इस मास कुछ विशेष होगा। आगे पीछे की सोचकर कदम बढ़ायें। अचानक लाभ होगा कुछ योजनाएं पूरी नहीं होंगी। अपने से उच्च अधिकारियों से बनाकर चलें अन्यथा नुकसान होगा। सफलता पूर्णरूप से मिलना संदिग्ध है।

जून—अपने काम से काम रखें, इधर-उधर की बातों में ध्यान न दें अन्यथा नुकसान होगा। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ने से मन शांत होगा। देश विदेश से अच्छा समाचार मिलेगा। व्यापार में लाभ होगा।

जुलाई—राजनीतिक आधार मजबूत होने से आर्थिक लाभ होगा। राजनीतिज्ञों को सोच समझकर चलना चाहिए। शत्रुओं से सावधान रहें। घर में खुशी का वातावरण रहेगा। दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा। सामाजिक सम्मान बढ़ेगा। व्यापार में हानि भी हो सकती है।

अगस्त—मास की गोचर ग्रह स्थिति अनुकूल है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। घूमने-फिरने का विचार बन सकता है। कानूनी विवादों को नई दिशा मिलेगी। अधूरे काम को पूरा करने में आप समर्थ रहेंगे। गृहणियाँ अपना अधिकतर समय खरीददारी में लगायेंगी।

सितम्बर—कार्य शुरू करें। भाग्य साथ देगा। कर्मफल ग्रहयोग के अनुसार होने से विकट परिस्थितियों का सामना होगा। गृहलक्ष्मियों को खरीददारी में सजग रहना होगा। राजनीतिक आधार बनेगा।

अक्टूबर—अचानक मेहमान आने से गृह खर्च में बढ़ोत्तरी होगी। कोई तुम्हें भ्रमित करने का प्रयास करेगा। सावधान रहें। पदोन्नति में साथी बाधक बनेंगे। कानूनी विवाद से जैसे तैसे छुटकारा मिल जायेगा।

नवम्बर—सोची गयी योजना पूर्ण होने से आर्थिक लाभ होगा। धार्मिक उत्सवों में हार्दिक खुशी होगी। अपूर्ण योजनाओं में मित्रों की दखलंदाजी खटकेगी। बनते बिगड़ते हुए माहौल में नित नये सोपान तय होंगे।

दिसम्बर—पुरुषार्थ करने से भाग्य का सितारा चमकेगा। आर्थिक लेन-देन अच्छा रहेगा। दैनिक कार्यों में आलस्य न आने दें। नित नये समाचार मिलेंगे। काम के सिलसिले में यात्रा हो सकती है।

जनवरी २००१—आलस्य से बनते काम रुकेंगे। मेहनत करें, रुका हुआ धन मिलेगा। चल-अचल संपत्ति के मालिक बनेंगे। शत्रु आपके विरुद्ध योजना बनायेंगे। मित्र सहायता करेंगे। विवादों का निपटारा होगा।

फरवरी—ग्रह अनुकूल नहीं हैं। इस मास दौड़-धूप बहुत करनी पड़ेगी। बच्चों और युवाओं को संघर्ष करना पड़ेगा। बनते बिगड़ते माहौल में नये समीकरण बनेंगे। पुराने कर्ज-मर्ज से राहत मिलेगी। मित्र साथ देंगे।

मार्च—यह मास मध्यम फलदायक है। आर्थिक संतुलन बना रहेगा। छोटी-बड़ी यात्रा संभव है। स्वास्थ्य का ख्याल रखें। दाम्पत्य जीवन में मधुरता बनी रहेगी। योजनाएं कागजों की शोभा बढ़ायेंगी।

तुला—रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते

अप्रैल—निष्क्रियता अदृश्य फलों में बाधक है। क्रय-विक्रय के धन्धे से लाभ होगा। सामाजिक क्षेत्र में कद ऊंचा होगा। प्यार प्रीति का चक्कर चलेगा। युवकों को अधिक मेहनत करनी पड़ेगी। पड़ौसियों से अनबन होगी।

मई—अपने कामों में लगे रहें। उच्च अधिकारियों के मेलजोल से लाभ होगा। व्यापारी वर्ग उन्नति करेगा। यात्रा संभव है। पड़ौसियों से सहायता मिलेगी। बच्चे खेलकूद में व्यस्त रहेंगे। अनावश्यक मानसिक चिंता से बचें।

जून—कार्य शुरू करें, सफलता प्रतीक्षा में है। धार्मिक यात्रा पर जाने की योजना पूरी होगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। परिवार में मतभेद उभर सकते हैं। चौपाये वाहनादि का डर बना हुआ है।

जुलाई—मेहमान आने से खुशी होगी। आशातीत लाभ की संभावना है। घर-परिवार में प्रसन्नता का वातावरण बनेगा। व्यापार में प्रगति होगी। अधूरा काम पूर्णता की ओर अग्रसर रहेगा। बच्चे प्रसन्न होंगे। इष्ट मित्र मिलेंगे।

अगस्त—मास में नये काम बनेंगे। घर-परिवार में अच्छा माहौल रहेगा। राजनीतिक कद ऊंचा होगा। सजगता परिपूर्ण, भाग्य का सितारा चमकेगा। परीक्षाफल श्रेष्ठ रहेगा। किसी की कहीसुनी बातों पर विश्वास न करें।

सितम्बर—खरीद-बिक्री के धंधे वाले लाभ में रहेंगे। नौकरी पेशा वर्ग को अपने उच्च अधिकारियों को खुश रखना चाहिए। प्रतिस्पर्धा को स्वीकार करें। विरोधी आपके विरुद्ध योजना बनायेंगे। बच्चे मौज करेंगे।

अक्टूबर—प्रतिकूल समाचार में मन दुखी होगा। घर-परिवार की समस्या का सामना करना पड़ेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। पड़ौसी से किसी प्रकार की हानि हो सकती है। अधूरा काम राजकीय सहयोग से बनेगा।

नवम्बर—ग्रह आपके अनुकूल हैं। धार्मिक रुचि के कारण तीर्थादि की इच्छा बलवती होगी। घर-परिवार में हल्का-फुल्का वातावरण रहेगा। सामाजिक कार्यों में हिस्सेदारी बढ़ेगी।

दिसम्बर—घर-परिवार की समस्या का हल निकलेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। कुछ जीवनोपयोगी सामान की खरीददारी संभव है। कर्ज, मर्ज और सामाजिक उत्पात से बचें। कानूनी विवाद और अधिक हो सकता है।

जनवरी २००१—कार्य शुरू करें, भाग्य आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। देश-विदेश से शुभ समाचार आयेंगे। आगन्तुक मेहमान से हर्ष-विषाद सम होगा। क्रय-विक्रय से धंधे में लाभ होगा। यात्रा छोटी मगर लाभप्रद रहेगी।

फरवरी—अनावश्यक क्षोभ से बचें। अकर्मण्यता को त्यागें अन्यथा शुभ फलों में कमी होगी। घर-परिवार में सरसता बनाये रखें। मेहनत के चलते सेहत का ख्याल रखें। किसी काम को करने से पहले अच्छी तरह से सोचें।

मार्च—इस मास कुछ विशेषताएं बनेंगी। पुरानी निराशा से छुटकारा मिलेगा। देव दर्शन का लाभ होगा। कोई तुम्हें परेशान करेग। राजकीय सहयोग बिल्कुल भी नहीं मिलने के योग हैं।

वृश्चिक—तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

अप्रैल—मास के गोचर ग्रह उन्नति में सहायक हैं। इस मास रोज सुख का अहसास करेंगे। स्वास्थ्य नरम रहेगा। राजनीति से दूर रहें अन्यथा हानि हो सकती है। पुराने सोचे गये काम बनेंगे।

मई—पारिवारिक खुशी मिलेगी। पुराने कर्ज व मर्ज से राहत मिलेगी। सांसारिक भौतिक सुखोपभोग की वस्तु खरीदी जायेगी। जीवन में सुख व दुख का संतुलन बना रहेगा। इस मास लम्बी यात्रा हो सकती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जून—कार्यारम्भ कीजिए भाग्य का सितारा चमकेगा। व्यापार में नये पक्ष के समीकरण बनेंगे। मित्र पूर्ण रूप से सहायक बनेंगे। आप अर्थोपार्जन की योजना में सफल होंगे। मेहनत के चलते स्वास्थ्य का ध्यान रखें। भागदौड़ कम ही करें।

जुलाई—यह मास विशेषताओं से युक्त है। हर्ष-विषाद की खबर मिलेगी। पड़ौसी विकास में बाधक बनेंगे। राजनीतिक प्रभाव बढ़ेगा। समय का सही उपयोग करने वालों के भाग्य का सितारा चमकेगा।

अगस्त—धार्मिक आयोजनों में जाना होगा। पारिवारिक समस्या का निदान कठिनाई से होगा। पुराने मर्ज से छुटकारा मिलेगा। स्वास्थ्य नरम ही रहेगा। देश विदेश से समचाार मिलेगा।

सितम्बर—मन में नित नई ताजगी अनुभव होगी। घर-गृहस्थी में हल्का-फुल्का माहौल रहेगा। साझे में किया गया कार्य सफल होगा. बाल बच्चों का मन अध्ययन में लगेगा। गृहणियों का गृह सज्जा में समय पूरा हो।

अक्टूबर—मास के ग्रह गोचर अनुकूल नहीं हैं। प्रत्येक कार्य आगा-पीछा सोचकर करें। इधर-उधर निरुद्देश्य घूमना बन्द करें। कानूनी झंझट में न फंसें। समय रहते समस्या को हल कर लें।

नवम्बर—मास नई योजना के लिए अच्छा है। बनते बिगड़ते माहौल में नई दिशाएं तय होंगी। क्रय-विक्रय के धंधे में रुचि लें। विरोधियों के षड्यंत्र व लोकोपवाद से बचें।

दिसम्बर—सोची समझी योजना पूरी होगी। राजनीतिक सम्पर्क से लाभ होगा। पारिवारिक समस्या का निदान हो जायेगा। बहुलाभकारी योजना में पैसा लगाना ठीक रहेगा। घूमने-फिरन का अवसर मिलेगा।

जनवरी २००१—बड़े लाभ की महत्वाकांक्षा बढ़ेगी। महत्वाकांक्षायें नियंत्रित करने का प्रयास करें। स्वास्थ्य गड़बड़ रहेगा। भौतिक सुखों के साधन प्राप्त होंगे। आलस्य प्रमाद न बढ़ने दें।

फरवरी—ग्रहचाल अच्छी होने से सफलता आपके इन्तजार में है। मित्रों के साथ पर्याप्त सहमति होगी। राजकीय विवाद तथा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। नवनिर्माण देवदर्शन की इच्छा पूरी होगी।

मार्च—यह मास कुछ विशेष है। आगम प्राप्ति का मार्ग खुलेगा। शारीरिक क्षमता के अनुसार मेहनत करें। इष्ट लाभ होगा। दैनिक कार्यों में आलस्य न रखें। साझेदार से अनबन होगी।

धनु—ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे

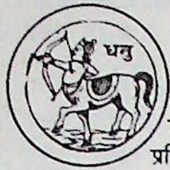

अप्रैल — विरोधी आपके विरुद्ध प्रचार में संलग्न हैं। व्ययाधिक से बचें। सम्भवत: पारिवारिक उपद्रव, कार्य क्षेत्र में प्रतिकूलता, वैधानिक पीड़ा के योग हैं। देवदर्शन व धार्मिक यात्रा भाग्य विकास में सहायक है। साहित्य, संगीत एवं ललित कलाओं में आत्मविभोर होने से आनन्द की प्राप्ति।

मई—जिम्मेदारियों में बढ़ोत्तरी, लाभ की महत्वाकांक्षा चरम होकर प्रस्फुटित होगी। विपरीत परिस्थितियों से गुजरना पड़ेगा। शत्रु षड्यंत्र में संलग्न हैं। नया गठबंधन नई दिशा प्रदान करेगा। अनेक खट्टे-मीठे अनुभव होंगे। पुरुषार्थ बढ़ेगा।

जून—घर-परिवार का उत्तम सुख, मन शुद्ध, समय के अनुसार प्रतियोगिता में विजय, सफलता की राह है। गोचर ग्रह चल-अचल संपत्ति का सुख प्रदान करेंगे। धार्मिक उत्सव, हर्षोल्लास के साथ विषाद भी देंगे।

जुलाई—इस मास में गोचर ग्रह मिले-जुले फलकारक हैं। साझेदारों में मनमुटाव हो सकता है। मिले-जुले माहौल में नई योजना सफल होगी। घर में नई खुशी संभव है। कानूनी विवादों से बचें। शत्रुजनित लोकोपवाद से सचेत।

अगस्त—अपूर्ण योजना को पूर्ण करने में मित्रों से सहयोग मिलेगा। अतीत के संदर्भ में अनुसंधान का लाभ प्रतिकूल मन: स्थिति को अनुकूलता में बढ़ा लेगा। अप्रिय समाचार, अचानक द्रव्य लाभ भी संभव है।

सितम्बर—गोचर ग्रह अनुकूल नहीं हैं। अनावश्यक मानसिक चिंता का समाधान संभव नहीं है। उत्तरार्ध में पुरुषार्थ वृद्धि, सुहृदय सुख-सुयश, व्यय से लाभ अधिक होगा, लम्बी यात्रा भी संभव है। अपव्यय व झूठे विवाद से बचें।

अक्टूबर—शुभाशुभ गोचर ग्रह के प्रभावानुसार जिम्मेदारियां बढ़ेंगी, दौड़-धूप रहेगी, लाभ से व्यय अधिक होगा। शत्रु की आपके विरुद्ध कारगुजारियों से लोकोपवाद का डर है। सावधान रहें। अतीत के संदर्भ में मनोत्साह से लाभ होगा।

नवम्बर—अकर्मण्यता अदृश्य फलों में बाधक होने के साथ भाग्यावरोधक भी है। समय के अनुसार कार्य करें, सफलता पास ही है। दाम्पत्य जीवन में सरसता, जीवन साथी के सहयोग से कार्य बनेगा। पुराने विवादों का निपटारा होगा।

दिसम्बर—यह मास शुभफलदायक है। समय को ध्यान में रखते हुए कार्य करें। उच्च सम्पर्क, स्थानान्तरण, मित्रों से कुछ काल तक अनबन चलेगी। अभीष्ट सिद्धियर्थ देवी आराधना परमावश्यक है।

जनवरी २००१—यह मास नवीनता लिए हुए आ रहा है। धन प्राप्ति, भौतिक सुख साधन, साहित्य-संगीत, पठन पाठन में रुचि जागृत होगी। कानूनी झंझट में नया मोड़ चिन्ता का कारण बन सकता है। आमोद-प्रमोद में विक्षेप होगा।

फरवरी—दाम्पत्य का मधुर संबंध सुखद रहेगा। कोई तुम्हें दिशा भ्रमित करने का प्रयास करेगा। जन सम्पर्क से लाश तो होगा, साथ ही विरोधियों द्वारा षड्यंत्र एवं दुखद समाचार, दुर्घटना से कष्ट के प्रबल योग हैं।

मार्च—अनपेक्षित आवागमन से क्षोभ होगा। साहसिक कार्यों में आपका अभ्युदय राज सम्मान, आत्म-शक्ति का विकास व आय मार्ग प्रशस्त होगा। नव निर्माण, वाहनादि का सुयोग है। स्थानान्तरण से परेशानी होगी।

मकर—भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

अप्रैल—गोचर ग्रह मध्यम हैं। स्वास्थ्य का ख्याल रखें। यह मास क्रय-विक्रय, कृषि कार्य के लिए उत्तम फलदायक है। उत्तरार्ध में समय पक्ष बन जायेगा। नित नया कुछ करने की इच्छा बलवन्ती होगी। विरोधियों से सावधान रहें।

मई—व्यावसायिक क्षेत्र में तीव्र भाग्यवरोधक मार्ग को प्रशस्त कर आप के स्रोत खोलने में गोचर ग्रह सहायक सिद्ध होंगे। हर्ष विषाद संभव है। कुछ समय तक मन में उद्विग्नता, अस्थिरता बनी रहेगी। लम्बी यात्रा का सुयोग टल सकता है।

जून—अकर्मण्यता मिलने वाले अदृश्य फलों में बाधक होने के साथ भाग्य विकास में रुकावट है। साहित्य, संगीत एवं रचनात्मक कार्यों के प्रति रुचि जागृत होगी। मासान्त में लाभ के प्रबल योग हैं।

जुलाई—यह मास कुछ विशेषताएं लिए हुए है। व्यवसायिक फेरबदल ठीक नहीं। क्रय-विक्रय उत्तम रहेगा। प्रमादवश महत्वाकांक्षाओं की प्रबलता पर नियन्त्रण रखें, समय के स्वरूप की पहचानने वाले अच्छा लाभ कमा सकते हैं। दाम्पत्य जीवन में सरसता का सुयोग है।

अगस्त—ग्रह चाल उत्तम है। सफलता नजदीक है। रचनात्मक कार्यों में प्रवृत्ति, आयोजनों में प्रिय भोज्य मिलने का सुख मिलेगा। नौकरी पेशा लोगों को उच्चाधिकारियों से टकराव अनावश्यक चिंता में डाल सकता है।

सितम्बर—इस मास में पहले की अपेक्षा विशुद्ध लाभ अधिक होगा। भाग्योन्नति के साधनों में रुकावटें, प्रतिकूल ग्रह, चौराग्नि भय, उलझनपूर्ण मन: स्थिति का समाधान असंभव होगा। धैर्य न खोयें, क्रोध पर काबू रखें।

अक्टूबर—भौतिक सुखों में वृद्धि होगी। पारिवारिक समस्या का समाधान हो जायेगा। अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेत रहें। स्वास्थ्य संबंधी नियमों का पालन करें।

नवम्बर—देश-देशान्तर से मिलने वाली खबर खुश करेगी। लम्बी यात्रा संभव हो तो टाल दें। स्वास्थ्य नरम रहेगा। राजनीति से दूर रहें। नये काम में आशानुकूल लाभ मिलेगा।

दिसम्बर—यह मास विशेषताओं से युक्त है। घर-गृहस्थी की खुशी मिलेगी। राजकीय

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आश्वासन अधूरे ही रहेंगे। भाग्य की विडम्बना ही जानें। कानूनी झंझट से दूर रहें। स्वास्थ्य का ख्याल करें।

जनवरी २००१—बनते बिगड़ते परिवेश में नये समीकरण बनेंगे। मित्र आपकी मदद के लिए तत्पर रहेंगे। पड़ौसी विकास में बाधक बनेंगे। आशा निराशा का सामन्जस्य नहीं बनेगा।

फरवरी—दाम्पत्य का मधुर संबंध सुखद होगा। कोई तुम्हें भ्रम में डालने की कोशिश करेगा। व्यापार धंधों में लाभ तथा कार्य क्षेत्र में विस्तार होगा। इष्ट मित्रों से इच्छित सहयोग मिलेगा।

मार्च—यह मास सरकारी कर्मचारियों, श्रमिकों के लिए उत्तम नहीं है। किसान भाई सुख का अनुभव करेंगे। निराशा के बीच आशा का संचार होगा। चालू काम में विकास होगा।

कुंभ—गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

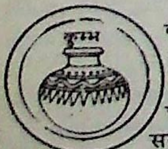

अप्रैल — ग्रहयोग कर्मफल के विकास में सहायक हैं। घर-गृहस्थ, सामाजिक तथा व्यवसाय में चल रही समस्याओं का समाधान मिल जायेगा। नई कार्य योजना में मित्रों से सहयोग तथा सौहार्द्रपूर्ण मैत्री की भावना बढ़ेगी। उच्चाधिकारियों से मेल जोल बढ़ेगा।

मई—मान सम्मान अच्छा तथा मनोबल ऊंचा रहेगा। पड़ौसी से वैमनस्यता उत्तम नहीं है। प्रतिकूल परिस्थिति में संयम से काम लेना ही उत्तम रहेगा। संतान सुख ठीक मिलेगा। महिलाओं का अधिकांश समय खरीददारी व बातचीत में व्यतीत होगा।

जून—सामाजिक प्रतिष्ठा व सुसम्पर्क में वृद्धि होगी। नई योजना कारगर करने में सफलता मिले किन्तु पारिवारिक प्रपंच अनावश्यक चिंता का बनेगा। दिनचर्या अव्यवस्थित न होने दें वरना शरीर में दुर्बलता महसूस होगी। स्त्री पुत्रादि से सहयोग मध्यम प्राप्त होगा।

जुलाई—मास आपके लिए नया कुछ करने में सार्थक बनेगा। लंबी यात्रा और कुछ करने की चिन्ता बढ़ेगी। लम्बी यात्रा से अभीष्ट लाभ तथा मन में प्रसन्नता रहेगी। क्रोध से बचें वरना बनते कार्य रुक जायेंगे।

अगस्त—गोचर ग्रहानुसार व्यवसाय में लाभ ठीक किन्तु विचारों में अस्थिरता कामयाबी में आड़े आयेगी। अनेक खट्टे-मीठे अनुभव प्राप्त होंगे। शत्रु कमजोर तथा धार्मिक कार्यों में रुचि बनी रहेगी।

सितम्बर—कार्यभार बढ़ने से दौड़धूप अधिक होगी। मानसिक चिन्ता, शरीर कष्ट से मनोबल कमजोर बनेगा। धार्मिक रुचि से अच्छे लोगों से मेलजोल बढ़ेगा। शत्रुओं की गुप्त योजना सामने आने से कमजोर बनेंगे।

अक्टूबर—आपको मनोयोग से कार्य करने पर लाभ तथा रचनात्मक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। स्त्री पुत्रादि पर खर्चा बढ़ेगा। स्वजनों में सरसता एवं मान सम्मान बना रहेगा। शरीर में साधारण कमजोरी बनी रहेगी।

नवम्बर—शारीरिक आशक्ति, मानसिक व्यग्रता अस्वस्थता को जन्म दे सकती है। भाग्यफल मध्यम तथा रुकी योजना को क्रियान्वित करने में मित्रों से सहायता मिल सकती है। कानूनी विवाद लम्बे चलने से मन व्यथित होगा।

दिसम्बर—मास कार्यभार की अधिकता, शारीरिक कष्ट से मन व्यथित रहेगा। घर में मांगलिक उत्सव तथा नवागन्तुक से खर्चा, स्त्री सुख सहयोग सामान्य रहेगा। गृहस्थ जीवन में सरसता बनी रहेगी।

जनवरी २००१—आपके लिए यह मास कुछ नई विशेषताएं लेकर आ रहा है। मनोयोग से कार्य करने वालों को मान-सम्मान व श्रीवृद्धि की प्राप्ति होगी। प्रतियोगिता परिणाम उत्तम, आर्थिक उन्नति व समयानुकूल मित्रों से सहयोग मिलता रहेगा।

फरवरी—गोचर ग्रह शुभ परिवर्तन में बढ़ोत्तरी कारक हैं। अधूरी योजना पूर्ति हेतु पुनः सक्रिय बनेंगे। स्त्री सहयोग उत्तम मिलने से गृहस्थी की समस्याएं सुलझती दिखाई देंगी। अपव्यय पर नियंत्रण रक्खें। मान सम्मान ठीक रहेगा।

मार्च—मासान्तर्गत मंगलोत्सव मिलन, श्रेष्ठ जन सम्पर्क होने से मन प्रसन्न रहेगा। आर्थिक लाभ यथावत् किन्तु खर्चा अधिक बना रहेगा। राजकाज में उन्नति एवं उच्चाधिकारियों से इच्छित कार्य कराने में सफल होंगे।

मीन—दी, दू, थ, झ, भ, दे, दो, च, चा, ची

अप्रैल—मास आपके लिए मिश्रित फलदायक है। कर्तव्य के प्रति सजग रहेंगे तो लाभ यथावत् मिलता रहेगा। घर गृहस्थी में कभी-कभी अशांति महसूस होगी। शरीर में उत्साह कमजोर पड़ेगा।

मई—मास कुछ विशेषताएं लिए आ रहा है। बनते बिगड़ते कार्यों को नई गति मिलेगी। देश देशान्तर से शुभ समाचार मिलने से मन प्रसन्न होगा। आर्थिक संकट से उभरने के लिए ऋण लेने की योजना बनेगी।

जून—मासान्तर्गत मित्रों से सहयोग मिलने से कुछ काम बनेंगे। आर्थिक लाभ कमाने की योजना आंशिक सफल होगी। किन्तु भागदौड़ कुछ ज्यादा करनी पड़े। शरीर सुख तथा स्त्री पुत्रादि का सहयोग यथावत् मिलता रहेगा।

जुलाई—आपको बुद्धि की चातुर्यता नये कामों में सफलता प्रदान करेगी। इष्ट मित्रादि से मिलन होने से मन में प्रसन्नता तथा घूमने फिरने का मौका प्राप्त होगा। परिवार के कुछ लोगों से आंशिक मतभेद हो सकता है।

अगस्त—क्रोध में यिंत्रण रखें वरना चलते कामों में रुकावटें आ सकती हैं। मान सम्मान यथावत् बना रहेगा किन्तु गुप्त शत्रु से सावधान रहें। व्यवसाय मध्यम से मन चिन्तित, धार्मिक कार्यों में मन कम लगेगा।

सितम्बर—मास शरीर में नई स्फूर्ति लायेगा। काम धन्धों में लाभ तथा मित्रों से इच्छित सहयोग मिलने से अधूरे कार्य पूर्ण होंगे। उच्चाधिकारियों से सहयोग व धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी।

अक्टूबर—स्वास्थ्य में नरमी तथा क्रोध की अधिकता रहेगी। शत्रु पक्ष कमजोर होने के बावजूद मन आशंकित बना रहेगा। लम्बी दूरी की यात्रा टाल दें। व्यवसाय यथावत् चलता रहेगा।

नवम्बर—स्त्री से मनमुटाव, शरीर में कमजोरी तथा भाई बन्धुओं का सहयोग कम प्राप्त होगा। आपको कोई गुमराह करने की कोशिश करेगा, अतः सावधान रहें। भाग्य सहारा साधारण एवं धन लाभ यथावत होता रहे।

दिसम्बर—गत दो मास में चल रही शारीरिक अस्वस्थता में आंशिक सुधार महसूस होगा। दिनचर्या में सुधार करें तथा अपने कार्य में जुट जायें। सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़े लोगों से मेलजोल बढ़ेगा।

जनवरी २००१—आर्थिक पक्ष कमजोर होने से ऋण लेने की योजना बनेगी। भाग्य विकास में सहायक है अतः अधूरे कार्य पूर्ण होते दिखाई देंगे। मंगलोत्सव का समाचार मन में खुशी करेगा। मित्रों से सहयोग मिलेगा।

फरवरी—मासान्तर्गत कार्य क्षेत्र का विस्तार व उच्च वर्ग के लोगों से मेलजोल बढ़ेगा। मान-सम्मान बढ़ने से प्रतिष्ठा बढ़ेगी। राजनैतिक क्षेत्र से जुड़े लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा। व्यवसाय में प्रगति आशानुरूप होगी।

मार्च—आपको लाभ व खर्चा की समानता महसूस होगी। मनोबल व उत्साह बढ़ने से रुके काम बनेंगे। भूमि वाहन सुख तथा भाग्य फल श्रेष्ठ मिलेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रह-राशियों की तेजी मंदी-विचार

राशियों के पदार्थ

मेष—सोना, गेहूँ, जौ, कम्बल, पशमीना, दालें, मसूर और चावल। **वृष**—कपड़ा, सरसों, पुष्प, जौ, चावल, महिष, बैल, गेहूं और लघु धान्य। **मिथुन**—रुई, कपास, बिनौला, ज्वार, मकई, तोरिया, अलसी, मूंग और माष। **कर्क**—केला, घास, जायफल, दाल-चीनी, तम्बाकू, चाय, सोना, चांदी, जवाहरात। **सिंह**—गुड़, खांड, साठी, चावल, तैल, घी, मृगछाल, षटरस। **कन्या**—ज्वार, बाजरा, कुल्थी, रत्न, गेहूँ, अलसी, मूंग और माष। **तुला**—उड़द, गेहूँ, सरसों, नारियल, हरड़े, मटर, तोरिया, जौ। **वृश्चिक**—गुड़, खांड, नगर, पान, लोहा, चना, चौपाए, पीतल, ताँबा आदि धातुयें। **धनु**—रस, घोड़ा, लवण, बित्र-वस्त्र, गुड़, रुई। **मकर**—कनीर, मजीठ, जिमीकन्द, सोना, चांदी, पीतल, तांबा, लोहा। **कुम्भ**—तैल, घी, पोस्त, जवाहरात, रंगदार वस्तुयें, सोना, चांदी, ज्वार। **मीन**—सीप, मोती, पंसारियों की वस्तुयें।

ग्रहों के पदार्थ

सूर्य—तुष्य धान्य, बीज, गेहूं, गुड़, शक्कर, खांड़, ऊनी वस्त्र, सोना, तांबा, सुगन्धित वस्तुयें, घी, तैल, नमक, रस। **चन्द्रमा**—चावल, मीठे रस, फल, फूल, जलोदर वस्तुयें, नमक, मोती, औषधियां, गेहूं, कांसी, दूध, दही। **मंगल**—गेहूं, चना, मूंग, गुड़, शक्कर, लघुधान्य, सोना, तांबा, पीतल, चौपाए। **बुध**—सरसों, तोरिया, घी, बिनौला, मक्की, ज्वार, बाजरा, दाल, लघुधान्य, सब्ज, रंग की वस्तुयें, रुई। **गुरू**— मीठे रस, सुगन्धित पदार्थ, पारा, नमक, चाय, कपड़ा, पीले, रंग की वस्तुयें, घी, गेहूँ, चावल, घोड़ा। **शुक्र**—रुई, कपास, कपड़ा, चांदी, लघु धान्य और भोग सामग्री, खांड, चावल और सफेद रंग की वस्तुयें। **शनि**—कटु वस्तुयें, मिर्च काली, माष, चना, मटर, लोहा, रंग सीमा, तोरिया, अलसी, कंगनी, कोयला, काले, रंग की वस्तुयें, तिल, तैल मूंगफली और नशीली वस्तुयें आदि।

ग्रहों-राशियों से मंदा-तेजी जानने का प्रकार

जब कोई राशि क्रूर ग्रहों से पीड़ित हो दूषित हो या उसको क्रूर ग्रह देखते हों अथवा वहां पड़े हों या वह राशि क्रूर ग्रहों की कर्तरी में हो तो उस राशि जन्य पदार्थों की तेजी होती है और राशि शुभ ग्रहों से युक्त, दृष्ट हो उसके पदार्थों का मन्दा होता है। इसी प्रकार जो ग्रह अशुभ ग्रहों से पीड़ित अथवा दृष्ट या युक्त हो तो उन ग्रहों के पदार्थों की तेजी होती है और जो ग्रह अशुभ ग्रहों से पीड़ित अथवा दृष्ट या युक्त ग्रहों के पदार्थों की तेजी होती है और जो ग्रह शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हों उनके पदार्थों का मंदा होता है। जिस वस्तु की राशि से गुरु ४, १०, २, ११, ७, ९, ५ इतनी राशि पर हो तो उस वस्तु की मंदी करता है और १, ३, ४, ६, ७, ९, १२ इन स्थानों पर बुध हो तो इस वस्तु की तेजी करता है। ऐसे ही २, ११, १०, ५, ८ स्थानों पर शुक्र सर्वदा मंदा करता हैं। मंगल, शनि, राहु, केतु, सूर्य, और क्षीण चंद्र यह ग्रह ३, ६, १०, ११ स्थानों पर मंदा और १, २, ४, ५, ७, ८, ९ स्थानों पर होने से तेजी हो।

तेजी-मन्दी जानने के सिद्धान्त

(१) यदि रविवार को तेजी या मन्दी हो तो सोमवार को मन्दी अथवा तेजी आ जाती है। (२) सोमवार को एकदम मन्दी के आने पर मंगलवार को विचार से सौदा करना चाहिए। (३) सोमवार की मन्दी के बाद मंगलवार को तेजी अवश्य होती है अथवा सोमवार को तेजी हो तो मंगलवार को मन्दी अवश्य होगी। (४) मंगलवार को आई मन्दी बुधवार को १२ बजे तक चलती है इसी प्रकार मंगलवार की तेजी बुधवार १२ बजे हो।

यन्त्र-मन्त्रों द्वारा इष्टसिद्धि

६०	६७	२	७
६	३	६४	६३
३३	६१	८	१
४	५	६२	६५

सट्टा, लाटरी जीतने का विजय लग्नम्—अनार की कलम से रक्त चंदन द्वारा भोजपत्र पर लिखना चाहिए। अस्ट धातु के यन्त्र में रखकर गुगुल की धूनी देकर दक्षिण भुजा पर धारण करना चाहिए। लिखने का क्रम क्रमिक ढंग पर है। चक्र लिखते समय उठने न पाये।

२४२	२४१	२४०	२३९
२३८	२३७	२३६	२३५
३२४	२३३	२३२	२३१
श्री	क्षक्षें	लं	छिं

गर्भ रक्षा यन्त्रम्—अनार की लेखनी से अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र पर लिखे तांबे यन्त्र में रविवार को धूप बत्ती की धूनी देकर कमर में बांधे उसी दिन रविवार को पुष्य नक्षत्र में लाई हुई काले धतूरे की जड़ को कुंआरी छोटी कन्या के हाथ से काले सूत से कमर में बांधे गर्भ न गिरेगा।

८	२	१०
९	७	४
३	११	६

बीसा यन्त्र विघ्न नाश के लिए—जब नया चन्द्र शुरू हो तो उसके बाद पहला रविवार हो तो उस दिन १२ बजे दिन के केसर के साथ लिखें, सफलता, तरक्की गुरु चन्द्र में ५।९ दृष्टि हो लिख लें इसको पास रखने से लाभ हो।

२४९	२५४	२५७	२४२
२५६	२४३	२४८	२५३
२४४	२५६	२५०	२४७
२५१	२४६	२४५	२५५

परदेश गये लौटने के लिए—जब किसी का लड़का या नौकर या संबंधी घर से चला जाये और उसका पता न लगे तो नक्शा चर्खे में बांध कर चर्खे को उलटा चलाएं चर्खे का सूत कन्या के हाथ का हो।

८०५	८१८	८१५	८१२
८१६	८११	८०६	८१७
८१०	८१३	८२०.	८०७
८१९	८०८	८०९	८१४

सन्तान के लिए—यदि किसी के सन्तान न होती हो या लड़कियां अधिक होती हों या सन्तान होकर मर जाती हो तो वे यन्त्र को पूर्णमासी के दिन अष्ट गन्ध से लिखकर पास रखें।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

रोग नाश के लिए—यदि किसी का रोग दूर न होता हो तो उसको चाहिए कि इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन अष्ट गन्ध से लिखकर चांदी में रखकर गले में डाल लेवें। रोग दूर होगा।

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

सर्व सिद्धि के लिए—इस यन्त्र को ग्रहण या गुरुवार पूर्णमासी के दिन अष्टगन्ध से लिखकर पास रखें या गले में डाल लेवें सब कार्यों में सफलता होगी और विघ्न नाश होंगे।

१२	५	१०
७	९	११
८	१३	६

विद्या प्राप्ति के लिए—यदि किसी की स्मरण शक्ति निर्बल हो विद्या प्राप्ति में दिल न लगता हो तो उसको चाहिए कि यन्त्र को लिखकर बालक के गले में डाल देवें गुरुवार अष्ट गंध से लिखें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वैज्ञानिक अनुसंधान पर व्यापार भविष्य

परिलेखकर्ता —अखिलेश कुमार जैन पोरसा वाले द्वारा लाइट मशीनरी
चम्बल कॉलोनी, ठाटीपुर, ग्वालियर (म. प्र.)-४७४०११ एस.टी.डी.-०७५१ फोन : पी.पी.-३४०७२२

नोट: व्यापार में लाभ-हानि की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।

जनवरी JANURUARY 2000

२५ दिसम्बर १९९९ से ११ जनवरी २००० तक, तिल तैल, सरसों, मूंगफली में अस्थाई तेजी आ सकती है। २० जनवरी से १ फरवरी के मध्य सरसों तेल, बिनौला, मूंगफली तेल में जोरदार मन्दी का धमाका हो सकता है। इसके अलावा अरहर, मसूर, मटर में जोरदार मन्दी, मगर गुवार, देशी घी में कुछ तेजी आ सकती है। ११ जन. से २ फरवरी तक ग्वार में २५० की तेजी, गेहूं, पोस्तादाना, दालचीनी, जायफल, पिपरमेंट, लौंग, खोपरागोला Coconut Oil में अच्छी झड़पी तेजी आ सकती है। १७ जनवरी को सूर्य से बुध की सुपीरियर युति होने से शेयर्स मार्केट में १०-२५ दिन पहले व ११ दिन बाद तक I.T.C. रिलाइन्स, S.B.I. टिस्को, सैंचुरी आदि में भयंकर तेजी आवेगी। ३ से २० जनवरी तक, मूंगफली तेल, सरसों, सोयाबीन में भयंकर तेजी आकार फिर मन्दी आवेगी। २७ जनवरी या २७ अगस्त को शेयर्स के रिकार्ड भाव टॉप टच हो सकते हैं।

फरवरी FEBRUARY

२५ जनवरी से १८ फरवरी के मध्य कभी, जौ ६५, मटर १५० की तेजी, छोटी इलाइची, पिपरमेन्ट, जीरा, लालमिर्च, खोपरागोला, किशमिस, गुड़ में एक अच्छी तेजी बन सकती है। ५ फरवरी से ११ अप्रैल के मध्य गुवार, जीरा, पीपरमेन्ट, मैथी, काबली चना, मूंग, उड़द, मोंठ २५० की तेजी, तो चना ७०-१५० की भड़कती तेजी आ सकती है। ७ से २५ फरवरी तक मसूर, सरसों, अलसी, अरण्ड, तिल तैल में मंदी आ सकती है। ११ फरवरी से ७ मार्च तक चीनी, गुड़, खोपरागोला, सुपारी, लौंग, दाल चीनी, सुपारी, लोहा, स्टील में अच्छी तेजी का झटका आ सकता है। बाजार रुख Trend देखकर ही व्यापार करें। १ मार्च २००० को वक्री बुध से सूर्य-बुध की Inferior Conjunction इनफेरियर युति होने से १५ फरवरी से १५ मार्च तक, अलसी, बिनौला, मूंगफली, मसूर, अरहर में मन्दी आ सकती है।

४ फरवरी को मीन राशि के मंगल से शेयर्स में भयंकर चाल शायद शेयर्स में मन्दी आवेगी। मगर गुड़, मूंग, उड़द, चना, गुवार में आगे अच्छी तेजी आ सकती है।

मार्च MARCH

ता. १ से २१ मार्च २००० ई. के मध्य कभी चना २५० की भड़कती तेजी तो इसके अलावा, गेहूं, पिपरमेन्ट, लौंग, दाल चीनी, बड़ी इलाइची, धनिया ५०६ में तेजी, गुवार १५०-२०० की तेजी आ सकती है। ५ से २० मार्च तक, सरसों, अलसी, अरण्ड, फलीतैल में जोरदार मन्दी का धमाका तो १५ मार्च से ११ अप्रैल तक राजमा, कालीमिर्च, कलौंजी, मक्का, मसूर, खोपरा तैल, सुपारी, मैथी २५०, धनिया ५०६ की जोरदार तेजी आ सकती है। २१ मार्च से ७ अप्रैल तक, काबली चना, चना, अरहर, मसूर, सरसों, सौंठ, बड़ी इलाइची, लौंग, पिपरमेन्ट, खोपरा तैल, छुआरे में अच्छी तेजी आ सकती है।

१४ मार्च को मंगल मेष राशि में होनि से मंगल, शनि, गुरु एक साथ होने से १५ अप्रैल तक, सरसों, मसूर ७०, गुड़ १६५, चीनी, कलौंजी, लाल मिर्च, जीरा, ईसबगोल, पिपरमेन्ट, लौंग में भयंकर तेजी आ सकती है। १९ मार्च की रात होलिका दहन होगा।

अप्रैल APRIL

ता. २७ मार्च से १५ अप्रैल तक मक्का ३३, चना १५० की तेजी, हल्दी २५० की तेजी, गुड़, खण्डसारी, किशमिस, ग्वार, ज्वार, सूजी, बादाम में अच्छी तेजी आ सकती है। ता. ५ से २१ अप्रैल तक गेहूं, काबली चना, नीम तैल, चना, तिल तैल २५०, अरण्ड १५०, चांदी ३०६ की जोरदार तेजी आ सकती है। इसके अलावा खोपरागोला, दाल चीनी, लौंग, लाल मिर्च, गुवार, मसूर में अच्छी तेजी आ सकती है। २३ अप्रैल से ७ मई तक, ज्वार, मूंग ३६०, उड़द, गेहूं, मटर, जौ में अच्छी तेजी आ सकती है। २३ अप्रैल से २३ मई तक गुवार, बासमती चावल, लौंग, खोपरा गोला, पिपरमेन्ट, धनिया, जीरा में अच्छी तेजी आ सकती है। २३ अप्रैल को बुध ग्रह पूर्व दिशा में अस्त, २५ अप्रैल को शनि अस्त, २६ अप्रैल को गुरु ग्रह अस्त, ८ मई से ५ जुलाई तक शुक्र ग्रह पूर्व दिशा में अस्त, ११ मई से १६ अगस्त तक, मंगल ग्रह अस्त, इस प्राकर ५ ग्रह अस्त हैं अत: कोई भीषण हेरफेर हो सकते हैं।

मई MAY

ता. २ से ११ मई तक, उड़द, ज्वार, बाजरा, मोंठ, गुवार, बिनौला १५०, सौंफ ५०६, पोस्तादाना, सौंठ में तेजी आ सकती है। मगर ३ से ११ मई तक, लाल मिर्च, गेहूं, जौ, काबली चना, किसमिस में मन्दी आ सकती है। १५ से २९ मई तक काली मिर्च, हल्दी, पोस्तादाना ६०५, लौंग, दालचीनी, खोपरागोला, धनियां में तेजी आ सकती है। ७ से १५ मई तक चना, मसूर, मटर, किसमिस में जोरदार मन्दी आ सकती है। ९ से २९ मई तक चावल १५०, तिल, चीनी, गुड़, चावल बासमती में जोरदार तेजी आ सकती है। ९ मई को सूर्य-बुध की सुपीरियर युति होने से ९ मई से १५ जुलाई तक सरसों ५०६, चना १५०, अरहर, मूंग में अच्छी भयंकर तेजी आ सकती है। ३ मई को मेष राशि में पांच ग्रह सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि एक साथ चल रहे हैं। शेयर्स I.T.C., LML, रिलाइंस, सैंचुरी, A.C.C. शेर्यस में १५ दिन तेजी तथा तिल, सरसों, मूंगफली तैल, डालडा, चना, पिपरमेन्ट, जीरा में अच्छी तेजी चल सकती है। बाजार रुख देखकर व्यापार करें। ७ जून को शनि वृष, ३० जुलाई को राहु मिथुन राशि में, २ जून को गुरु ग्रह वृष राशि में प्रवेश करेंगे। इसी प्रकार ५ ग्रह एक साथ वृष राशि में, १५ मई को सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शनि, राहु एक साथ होंगे।

जून JUNE

ता. २७ मई से ५ जून २००० ई. तक सरसों १५०, बिनौला, मूंगफली तैल में अच्छी तेजी आ सकती है। ६ जून से १२ जून तक, खाद्य तैल EDIBLE OIL में मन्दी का धड़ाका तो १४ से २२ जून तक, तेलों के घटे भाव फिर बढ़ जावेंगे। २२ जून से २७ जून तक तेलों में मन्दी आवेगी। ता. ५ से १५ जून तक मसूर, मटर, काबली चना, गेहूं, उड़द, जौ, अलसी, तैल, बड़ी इलाइची, जीरा ५०६ में जोरदार तेजी, तो ग्वार, किसमिस, खोपरा गोला में मंदी आवेगी। १५ जून से १५ जुलाई तक छुआरे, लाल मिर्च, जीरा, लौंग, बड़ी इलायची, पीपल, गूगल, सरसों, मूगंफली तेल, चना में अच्छी तेजी आ सकती है। बाजार रुख देखकर व्यापार करें। ७ जून को मंगल मिथुन राशि में होने से २३ मई से ७ जून तक चीनी १६५, गुड़ ९०, देशी घी १५०-२०० की भड़कती तेजी आ सकती है। ७ जून से चीनी, तैल में २५० की मंदी ५-७ दिन की जोरदार आ सकती है। चांदी में २५०-६०५ की तेजी जोरदार मन्दी बन सकती है। मूंगफली तेल, सरसों तेल में ७ दिन में जोरदार मंदी आ सकती है। ११ जून का गंगा दशहरा है।

जुलाई JULY

७ जून से ११ जुलाई तक कालीमिर्च, पिपरमेन्ट, सौंठ, साइट्रिक एसिड, किशमिस, गुड़ ७४ की जोरदार तेजी आ सकती है। ८ जुलाई से

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

७ अगस्त तक धनिया ५०२, गुड़ ६५, देशी घी टीन ९९, चीनी ६५, चांदी ३६० की तेजी आ सकती है। इसके अलावा कालीमिर्च, बादाम, छुआरे २०५ की मन्दी तो काबली चना में जोरदार मंदी का धमाका हो सकता है। १५ जुलाई से ३ अगस्त तक जीरा ७०२, धनिया ५०२, उड़द ९९ की तेजी आ सकती है। इसके अलावा गेहूं, खोपरा तैल २५०, Coconut 405, अजवाइन ७०२ व पिपरमेंट, ग्वार में अच्छी तेजी बन सकती है। ये तेजी १५ अगस्त तक चल सकती है। १५ जुलाई से ७-१४ दिन सरसों, चना, अरहर में जोरदार मंदी आवेगी। १२ जुलाई तक तेलों में अच्छी तेजी आ सकती है।

६ जुलाई को वक्री बुध की सूर्य से Inferior Conjunction होने से २१ जून से १६ जुलाई तक अरहर, कपूर, गेहूं, चना, पिपरमेन्ट, लौंग, जीरा, सरसों, मूंगफली तेल आदि में खतरनाक तेजी आ सकती है। २२ जुलाई को मंगल ग्रह कर्क राशि में होने से १५-२० दिन पहले से ११ दिन बाद तक कभी सरसों २५०-५००, अरहर ४६१, तिल ७०२, गुवार ५०६, चना २५० की जोरदार तेजी आ सकती है। चांदी में २५०-७०२ की तेजी आ सकती है।

१६ जुलाई गुरु पूर्णिमा को खग्रास चन्द्रग्रहण के समय सूर्य-बुध-राहु एक साथ हैं। अत: अरहर, चना, सरसों में कोई तूफानी लाइन चलने की आशा है। ५ जुलाई को शुक्र उदय होगा।

अगस्त AUGUST

ता. १ से १८ अगस्त तक गेहूं, जौ २५, ग्वार १५०, बाजरा १५, जीरा ३०६, सौंफ ७०२-१५०३, पिपरमेंट, रुई, हल्दी ९९ की तेजी, बारदाना एशियन में अच्छी तेजी आ सकती है। बारदाना एशियन में अच्छी तेजी आ सकती है तो किशमिश में मन्दी आ सकती है। ९ से २५ अगस्त तक अनारदाना १५००, खोपरा गोला ५०२ की जोरदार तेजी आ सकती है। खोपरा गोला हर तेजी में बेचना। उड़द, मूंग, छोटी इलायची में तेजी आ सकती है। १५ जुलाई से २१ अगस्त या ११ सितम्बर तक धनिया CORIANDER SEEDS, जीरा, खोपरा Coconut में खतरनाक तेजी आ सकती है। बाजार का रुख TREND देखकर व्यापार करें। १४ से २९ अगस्त तक अनारदाना, पिपरमेंट, आइल में जोरदार तेजी आ सकती है। इसके अलावा, जीरा ५०६, मसूर ६५, रुई १५०, गेहूं ५६ में जोरदार तूफानी तेजी तो अरहर किसमिश ९९९, काबली चना ५५०, गुड़ १५० की खतरनाक मंदी का धमाका हो सकता है।

१५ अगस्त से सरसों, फली तेल, सोयाबीन तेलों में जोरदार मंदी आवेगी। २२ अगस्त को सूर्य-बुध की SUPERIOR CONJUNCTION सुपीरियर युति होने से ११ से २५ अगस्त तक, तेलों में जोरदार मंदी आवेगी। मगर मसूर, चना, जीरा, लौंग, पिपरमेन्ट में जोरदार तेजी आने की आशा है।

११ अगस्त को राहु कर्क में होने पर सूर्य-मंगल-बुध-राहु एक साथ चार ग्रह होने से, अरहर, चना, मूंग, उड़द, लाल मिर्च में अच्छी तेजी मगर शेयर्स मार्केट में भयंकर मंदी मगर चांदी-सोना में ७७७ की भयंकर तेजी आ सकती है। १५ अगस्त को मंगलवारी रक्षा बन्धन पूर्णिमा है। आगे गेहूं, चना, अरहर में तेजी चल सकती है। १६ अगस्त को मंगल ग्रह पूर्व दिशा में उदय होगा। वर्षा की कमी गुवार, गेहूं में अच्छी तेजी आ सकती है। १२ सितम्बर को शनि वक्री होगा। दालवाने, मिर्च-जीरा में भयंकर तेजी आ सकती है। १३ सितम्बर को भाद्रपद पूर्णिमा है। ७ अक्टूबर, शनिवार विजयादशमी-दशहरा होने से सरसों, चना में अच्छी तेजी हो सकती है।

सितम्बर SEPTEMBER

ता. २ से २७ सितम्बर तक, ग्वार २५०-५०० की जोरदार तेजी, पिपरमेंट में अच्छी तेजी आवेगी। इसके अलावा देशी घी, गेहूं, खोपरागोला, धनियां, जीरा, अजवाइन, सौंफ में एक अच्छी तेजी आकर मन्दी का धमाका होगा। २० सितम्बर से ५ अक्टूबर तक धनिया, खोपरा गोला, छोटी इलायची, उड़द, मूंग, मोंठ, बाजरा, ज्वार में जोरदार मंदी का धमाका हो सकता है। १२ से २७ सितम्बर तक जौ ५५, गेहूं ५५, सरसों १५०, मसूर ९९, बिनौला तेल में १६५ की भयंकर तेजी आ सकती है।

१२ सितम्बर से सरसों, सोयाबीन, मूंगफली तेल, अरहर में अच्छी मन्दी आ सकती है।

७ सितम्बर को मंगल सिंह राशि में होने से वर्षा की भीषण कमी, अत: अरहर २५० की तेजी, चना, मसूर, सरसों, लाल मिर्च, जीरा १५०४, मटर, तेवड़ा, गेहूं, डालडा में प्रचण्ड तेजी आ सकती है। शेयर्स, सोना, चांदी मार्केट में कोई भीषण लाइन चलेगी।

अक्टूबर OCTOBER

ता. २५ सितम्बर से ७ अक्टूबर तक देशी घी, गेहूं, पिपरमेंट में अच्छी तेजी आ सकती है। ५ अक्टूबर १९९९ से १५ सितम्बर २००० तक मूंगफली तेल, सोयाबीन, तिल, मूंग, उड़, बाजरा, मक्का, सरसों तेल आदि में मंदी का धमाका हो सकता है। ११ से २५ अक्टूबर तक चावल, हल्दी, सोंठ, छोटी-बड़ी इलायची, सौंफ, लाल मिर्च में मन्दी का धमाका हो सकता है। २७ अक्टूबर से सरसों, फली तेल में जोरदार मंदी आ सकती है।

३० अक्टूबर को वक्री बुध से सूर्य की युति होने से २७ सितम्बर से १५ अक्टूबर तक मूंगफली तेल, तिल, सौयाबीन तेल, सूरजमुखी तेलों में जोरदार मन्दी का धमाका हो सकता है। ५ सितम्बर से ५ अक्टूबर तक छोटी इलाइची, पिपरमेंट, गेहूं, जौ, कपूर, लौंग, जीरा, इसबगोल, खोपरा तेल Coconut Oil, गूगल, मसूर, चना, अरहर आदि में तूफानी तेजी आ सकती है। २५ अक्टूबर को मंगल ग्रह कन्या राशि में होने से मूंगफली तेल, चना १५०, अरहर, गेहूं ७०, गुवार ५०६ की प्रचण्ड तेजी कभी बन सकती है। बाजार रुख Trend देखकर व्यापार करें। ग्राफीकल सदस्य बन कर बाजार की तेजी-मंदी की ताजी रिपोर्ट मंगावें।

२६ अक्टूबर गुरुवार को दीपावली होने से गुवार, चांदी, अरहर में एक-दो महीना तेजी होने के आगे जनवरी से २० मार्च २००१ तक तेलों में भीषण मंदी चलने की आस्था है।

नवम्बर NOVEMBER

ता. १ से १५ नवम्बर तक मूंग, गुड़ ९०, राजमा १५०, चीनी ६५ की तेजी, इसके अलावा उड़द, काबली चना १६५, केसर ९९९ में अच्छी तेजी तो बड़ी इलाइची, जीरा, सौंफ लाल मिर्च में मन्दी आवेगी। देशी घी में तेजी आवेगी। १५ से २७ नवम्बर तक चना ६५, मसूर ७०१, लौंग, कालीमिर्च ५०६, चांदी में ७० की तेजी आवेगी। मगर उड़द, मूंग, मोंठ, मक्का में मन्दी आवेगी। २५ नवम्बर से ७ दिसम्बर तक चांदी ५०६ की तेजी। खोपरागोला में तेजी, गुवार में मन्दी आवेगी।

दिसम्बर DECEMBER

ता. ३ से २५ दिसम्बर तक गुवार में १९९ की भड़कती तेजी आ सकती है। इसके साथ-साथ मूंग १५०, उड़द, कालीमिर्च ६०१ की तेजी, प्याज, छोटी इलाइची, धनियां, किसमिस, बादाम, जीरा, पिपरमेंट में तेजी आ सकती है। चांदी, रुई, Cotton, सोना में मन्दी आ सकती है। पानी वर्षा भी हो सकती है। २५ नवम्बर से १ जनवरी २००१ तक उड़द, अरहर, लहसुन Garlic, खोपरागोला, Coconut Oil, प्याज, चाय Tea, सुपारी, गुड़ में अच्छी तेजी चल सकती है। १ से ११ दिसम्बर तक, सरसों, चना में मन्दी तो ११ दिसम्बर से ५ जनवरी २००१ तक पिपरमेंट, लौंग, बड़ी इलाइची में अच्छी तेजी। सरसों ७०, चना १५०-१९९, अरहर २०५, मसूर में २५० की जोरदार तेजी बन सकती है। बाजार रुख Trend देखकर व्यापार करें। २५ दिसम्बर को सूर्य-बुध की Superior Conjunction सुपीरियर युति होने से शेयर्स, तिल, मूंगफली तेल, सरसों आदि में जोरदार मंदी का धमाका हो सकता है। सावधानी पूर्वक व्यापार करें। ११ दिसम्बर सोमवार को अगहन पूर्णिमा है। २५ दिसम्बर, सोमवार को पौष अमावस्या को विदेशों में सूर्यग्रहण है। चांदी में भयंकर तेजी हो सकती है।

जनवरी २००१ ई. JANUARY

२७ दिसम्बर २००० से १५ जनवरी २००१ तक, राजमा २०५, लोबिया, मोंठ १५० की तेजी, गुड़ ७०, तिल ३६०, पिपरमेन्ट, लौंग,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मोम, जावित्री, जायफल, पीपल में अच्छी तेजी आ सकती है। इसके अलावा, लहसुन, प्याज, आलू, गेहूं, चावल, उड़द में अच्छी तेजी आ सकती है। २ से २७ जनवरी तक पोस्तदाना, अजवाइन, खोपरागोला, पिपरमेंट, लौंग, दालचीनी, सौंठ, काबली चना, गुवार, ग्वार में जोरदार तेजी तो तेलों में मन्दी आएगी। किसमिस, पिस्ता, खोपरागोला, लौंग, मखाना में अच्छी तेजी आ सकती है। ९ जन. को मंगलवारी पूर्णिमा होने से सरसों, मूंगफली तेलों में भयंकर तेजी-मंदी। चांदी, सोना, जीरा, लौंग में अच्छी तेजी आ सकती है।

फरवरी FEBRUARY

ता. २५ जनवरी से २३ फरवरी तक, चना ७०-१५० की भड़कती तेजी, तो मूंगफली तेल, बिनौला तेल, सोयाबीन तेल २५० की तेजी, अरहर १५०, मसूर ७०, हल्दी २५०, धनिया ५०६, उड़द, मूंग में अच्छी तेजी आ सकती है। इसके अलावा मोम, पिपरमेंट, पोस्तादाना, चिलगोजा, इलायची, देशी घी में तेजी आ सकती है। ९ फरवरी से ९ मार्च तक, चावल, मूंग, उड़द, गेहूं, अजवाइन, पिपरमेंट, धनिया, हल्दी Turmeric में अच्छी तेजी का झटका आ सकता है। २३ फरवरी से २१ मार्च तक, सरसों १५० की मंदी, मूंगफली तेल ३६०, बिनौला, अरण्ड, अलसी-अरण्ड में मन्दी तो चांदी, रुई Cotton में तेजी आ सकती है। ३ फरवरी मंगल-शनि प्रति युति से २० जनवरी से तेलों में जोरदार मंदी आ सकती है। ८ फरवरी गुरुवारी माघ पूर्णिमा है।

मार्च MARCH

ता. २३ फरवरी से २७ मार्च तक, चांदी २५०-७७७, सोना २५० की तेजी आ सकती है। इसके अलावा खोपरागोला Coconut, राजमा, धनियां Coriander Seed, जीरा, सौंफ, पिपरमेंट, छोटी इलाइची, चावल, गुड़, चीनी में अच्छी तेजी आ सकती है। १५ मार्च से १५ अप्रैल तक, मसूर २५०, चना १५०, अरहर २५०, कलौंजी, धनिया, कालीमिर्च ७७७, अच्छी तेजी बन सकती है। २१ फरवरी से १८ अप्रैल के मध्य गुड़, चीनी, हल्दी, कालीमिर्च, रुई में अच्छी तेजी आ सकती है। २३ मार्च से ११ अप्रैल तक, सरसों २००, अलसी तेल ३६०, फली तेल ३६३, सोयाबीन तेलों में अच्छी झड़पी तेजी आ सकती है। मगर तेलों में ५-७ दिन की अचानक तेजी आवे तो इस तेजी में माल बेचना। ८ मार्च को बुध से गुरु प्रतियुति व शुक्र ग्रह वक्री है। अतः चांदी, शेयर्स, लालमिर्च के बाजार जोरदार तूफानी लाइन पकड़ सकते हैं। ९ मार्च को होलिका दहन होगा। २५ मार्च रविवार को सुबह ६.४२ बजे चैत्र अमावस्या है।

बाजार संक्षिप्त सार सन् २०००-२००१ ई.

सन २०००-२००१ के मध्य चना ९५० नीचे में ऊंचे में, १६१० या २२६१, सरसों नीचे में १०५०-१११९ होकर ऊंचे में, १८११ या २१११ के नये TOP भाव होने की संभावना है। जीरा १० तक कि.ग्रा. वाला, डेढ़ से ढाई वर्ष में १४० या २४१ के नये टॉप भाव बन सकते हैं। अरहर ७ जुलाई १९९७ को ९९९ के नीचे भाव थे, २८ अक्टूबर १९९८ को नये सर्वोच्च भाव २७११ के होकर १५ मार्च १९९९ को, १५०० के करीब नीचे भाव बने। २४ सितम्बर को अरहर भाव २४०१ के आस-पास चल रहे हैं। वो ११ नवम्बर २००२ या ७ जनवरी २००३ को अरहर के नये Top भाव ४२७३ या ५२९१ के नये रिकार्ड भाव बन सकते हैं। मसूर Top भाव ३६०१ या ३८०७ के Highest भाव हो सकते हैं। लहसुन Garlic १५ जुलाई २००० से २५ दिसम्बर २००२ तक ५-१५ कि.ग्रा. वाला ६१-८१ के नये Top भाव हो सकते हैं। होना जाना ईश्वर अधीन है। ये तो एक अनुमान IDEA है। ईशबगोल, गुवार, लालमिर्च, खोपरागोला Coconut, जीरा, गेहूं, जौ, बाजरा, सरसों, मूंगफली तेल Ground Nut Oil आदि में सन २००० व २००१ के मध्य भयंकर तेजी जंचती है। विस्तार पूर्वक जानकारी के लिए व्यापारिक दिग्दर्शिका जनवरी २००० से जून २००१ तक १८ महीने की तेजी-मंदी पुस्तक पढ़ें। चांदी ८१००-७४०० वाली २१ फरवरी २००१ तक ९५०० का भाव क्रास करे तो ९९९९-१००५० के नये भाव बन सकते हैं। हर वर्ष तूफानी तेजी नहीं आया करती है। सन २००० से २१ सितम्बर २००१ तक, कुछ वस्तुओं में रिकार्ड तोड़ तेजी बन सकती है। ०७५१ पी.पी. फोन ३४०७२२ शर्मा STD फोन पी.पी. ३६६५१८, श्री प्रिंटिंग प्रेस द्वारिकाधीस मंदिर के पास ठाठीपुर, ३४३२८३, ३६९२२४ पी.पी. फोन पर पते की जानकारी हासिल करें।

व्यापार दिग्दर्शिका वैज्ञानिक अनुसंधान पर

जनवरी २००० से जून २००१ तक १८ महीने की तेजी-मंदी लाइनें परिलेखकर्ता — श्रीमती चम्पादेवी जैन व संग्रहकर्त्ता — अखिलेश कुमार जैन पोरसावाले सुपुत्र श्री प्रेमचन्द्र जैन पोरसावाले पुस्तक मूल्य १२५ का एम.ओ. भेजकर मंगा सकते हैं।

इस पुस्तक में सरसों, मूंगफली तेल, सोयाबीन, किराना, दालवाना, शेयर्स मार्केट, सोना, चांदी बाजारों की तेजी-मंदी लाइनें प्रस्तुत की गई हैं। सन १९९८ में तेलवाना, दालवाना में रिकार्ड तोड़ तेजी आई तो सन १९९९ में तेलों में भयंकर मंदी आई। सन २००० से २००१ डेढ़-दो वर्ष में तेलवाना, दालवाना में भीषण तेजी आने का अनुमान है। वहीं सन २००० के वर्ष में कुछ जिन्सों में रिकार्ड तोड़ तेजी चलने की आशा है।

जो पाठक ज्योतिष पद्धति से बाजारों की घटाबढ़ी, तेजी-मंदी निकालने की रुचि रखते हैं और तेजी-मंदी निकालते हैं और माथा पच्ची करते-करते थक गए हैं तो आप इस पुस्तक को पढ़कर तूफानी तेजी-मंदी का अनुमान लगा सकते हैं। कभी-कभी ऐसा देखने में आया है ग्रहों की छोटी-छोटी पोजिशन मानकर, जानकारी को नजर अन्दाज कर देते हैं। जैसे कि, कुछ लोग ऐसा मानते हैं शुक्र ग्रह १२ राशियों का एक चक्कर १२ महीने में करता है। परन्तु असलियत यह है कि शुक्र ग्रह १२ राशियों का चक्कर कभी साढ़े ९ महीने के करीब तो कभी १२ राशियों का एक चक्कर सवा १३ महीने के करीब समय लगता है। ये १० महीने या सवा १३ महीने में चांदी, शेयर्स मार्केट में ऊंचे-नीचे बनना-एक आश्चर्यजनक बात है। जैसे १० दिसम्बर १९९० को चांदी के नीचे भाव ६२५२ के करीब थे — वो आगे सवा १३ महीने में ऊंचे भाव १७ जनवरी १९९२ को ९४०२ के नये टॉप भाव बने। ध्यान रहे कि ८ दिसम्बर १९९० व १७ जनवरी १९९२ के आसपास शुक्र ग्रह वृश्चिक राशि में थे। या कभी-कभी १३-१५ महीने में चांदी में ऊंचे भाव के १५ महीने बाद नीचे होते देखे गए भी अपने आप में रहस्य है। शुक्र ग्रह के ८ वर्ष बाद पुनः वही पोजिशन की पोजिशन जानें। तेजी-मंदी निकालने में महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। स्वपन, आकाशीय लक्षणों से तेजी-मंदी के तरीके पुस्तक में दिये हैं। पुस्तक मंगाकर विस्तृत जानकारी पढ़ें।

संशोधित व्यापार दिग्दर्शिका अप्रैल १९९९ से अक्टूबर २००० तक, सन १९७२ से २००७ तक मंगल-बुध एक साथ की पोजिशन दी है। ध्यान रहे मंगल-बुध से जीरा-मौसम आदि पर प्रभाव पड़ते देखा गया है।

संशोधित पुस्तक १९९९ में तेजी-मंदी निकालने के कई-कई फारमूले दिये गए हैं। जिनसे आप भी तेजी-मंदी ज्ञात कर सकते हैं। पुस्तक मूल्य १५०, मगर रियायती मूल्य ९९ है। सन २००० व्यापार दिग्दर्शिका मूल्य १२४ दोनों एक साथ मंगाने पर रियायती मूल्य २०१ का एम.ओ. भेजकर मंगा सकते हैं। आजकल एक बोरी सरसों की दो सौ एक रुपए घटाबढ़ी एक वर्ष ४५० से १४५० तक तेजी देखी गई है। उसकी तुलना पुस्तक मूल्य १२५ व १०० कोई मतलब नहीं रखते। २३-२४ वर्ष बाद समय चक्र बाद भयंकर मंदी आती देखी गई : सन १९७५ जैसी मंदी २४ वर्ष बाद सन १९९९ में सरसों २७११ वाली १२५०-१३०७ बिक गई है। पाम आइल विदेशों में ७६५ डालर से घटकर ४०१ डालर के भाव रह गए। समय चक्र की तेजी-मंदी जानकारी से तेजी-मंदी आसानी से ज्ञात हो जाती है।

पता: **१. अखिलेश कुमार जैन सुपुत्र पी.सी. जैन पोरसावाले**
लाइट मशीनरी, चम्बल कॉलोनी, ठाटीपुर-ग्वालियर (म.प्र.) पिन-४७४०११
STD ०७५१ PP फोन ३४०७२२ व ३६६५१८, ३६९२२४
चौहान प्याऊ, ठाटीपुर पी.पी. फोन : ३४३२८३
२. श्रीमती चम्पा देवी जैन पत्नी पी.सी. जैन पोरसा वाले
दीपू सक्सेना प्रधान के मकान के सामने, स्टेट बैंक, इन्दौर-कैम्पस (ग्रोवर हास्पीटल के पीछे) बारादरी चौराहा, मुरार-ग्वालियर (म.प्र.) पिन ४७४००६ फोन: पी.पी. ३६६५१८, ३६७१८
३. अखिलेश कुमार जैन पोरसा वाले द्वारा अशोक मेडिकल, तेलीबाड़े के सामने, ग्वालियर रोड, भिण्ड (म.प्र.) पिन-४७७००१, एस.टी.डी. ०७५३४ फोन: पी.पी. ३४०६७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्यापार भविष्य सन् २००० ई.

लेखकः — श्री रामावतार गुप्त, "व्यापार भूषण", मु.पो. खोरी, जिला-रेवाड़ी-१२३१०१ (हरियाणा)

जनवरी मास — यह मास पौष वदी १० शनिवार से शुरु होगा। इस मास में तेजी की प्रमुख तीरीखें- ४, ८, ११, १५, १८, २२, २५, २९ एवं मन्दी की प्रमुख तारीखें- ३, ६, १३, २७ हैं। इन तारीखों में व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी मन्दी के झटके संभव हैं। पौष मास फल साधारण है। व्यापारिक वस्तुओं में प्रायः मन्दापन रहेगा। ता. ४ जनवरी शते भौम तथा पू.षा. बुध से सप्ताह दस दिन अनाज, सोना, चाँदी में अच्छी घटबढ़ रहेगी। रुख देखकर काम करना चाहिए। परन्तु बिनोला तेज रहेगी। ता. ६ जन. गुरुवारी मावस मूल नक्षत्र युक्त है। व्यापारिक वस्तुओं के भावों में गिरावट हो आयेगी। सुख सुभिक्ष मंगलकारी योग है। पौष शुक्ल पक्ष में तिथि वृद्धि होकर छय हुआ है। व्यापारिक वस्तुओं में तेजी आकर पक्ष में ही मन्दी भी आ जायेगी। ता. ८ जनवरी सुदी २ का चन्द्रदर्शन तेजी कारक है। सोना, चांदी धातुएं, रुई, सूत में तेजी कारक तथा एरण्डा, सरसों, तिलहन तेलों में विशेष तेजी कारक है। परन्तु दोनों सींग बराबर होने से बाजार ऊंचा नीचा चलता एक मास के अन्दर समान रहेगा। ता. १२ जनवरी शनिदेव वक्री गति से मार्गी होंगे। यहां व्यापारिक वस्तुओं में जो चाल रुख है। उसमें परिवर्तन हो जायेगा। परन्तु तिलहन में तेजी का संचार करेगा एवं रुई प्रमुख शेयरों में अच्छी मन्दी की आशा करना उचित तथा मुसलिम देशों में दुर्भिक्ष अन्न का अभाव पैदा करेगा। ता. १४ जन. मकर संक्रान्ति काल (१४ जन. से १२ फरवरी तक) में चावल, चना सस्ता हो तो निश्चय स्टाक करके बैसाख में बेचने से अच्छा लाभ हो। ता. १४ या १५ जनवरी को यदि आकाश में बिजली चमके तो आगे वर्षा काल में निसन्देह बहुत अच्छी वर्षा होगी। पौष सुदी ९ को आर्द्रा होने से अनाज स्टाक करने की राय देता है। सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र पर आने तक यानी २१ जून तक जब भी अनाज मन्दा हो स्टाक करना लाभकारी रहे। तथा सुदी एकादशी कृतिका नक्षत्र युक्त होने से आगे लाल रंग की वस्तुओं के व्यापार से लाभ हो।

माघ मास कृष्ण पक्ष — इस मास में पांच शनिवार तथा मावस-पूनम भी शनिवारी होने से नेष्ट फलकारी है। मास में अग्नि के प्रकोप से व्यापक क्षति तथा व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का संचार होगा। व्यापारियों को चाहिए कि इस मास में पहले बेचे, पीछे खरीदे वाली नीति अपनानी चाहिए। ईशान कोण (उत्तर-पूर्व का मध्य) के देशों में भारी उपद्रव, प्राकृतिक कारणों (भूकम्प बाढ़ आदि) से काफी जनधन की हानि संभव हो। युद्ध के आसार भी बने। तथा मास में किसी राज्य में मन्त्री मण्डल में परिवर्तन। भंग होना संभव हो।

फरवरी मास — मास में तेजी की प्रमुख तारीखें-५, ११, १२, १५, १९, २२, २६, २९ हैं तथा मन्दी की प्रमुख तारीखें-३, ७, १७, २८ हैं। ता. २ फरवरी मीने मंगल रुई, सूत, पाट, बारदाना, सोना, चाँदी के भावों में वृद्धि करेगा। तथा लकड़ी फरनीचर में अच्छी तेजी आ सकती है। ता. ५ फर. शनिवारी मावस तेजी कारक है। अन्न, सरसों, तिलहन, अलसी, मिर्च, दलहन, गुड़, खाण्ड आदि में तेजी का प्रभाव होगा एवं दिन सात में चाँदी, सोना में मन्दी तथा एक दो झटके अच्छी मन्दी के तथा अनाजों में तेजी की लाईन बनेगी।

माघ शुक्ल पक्ष — पक्ष में कहीं भारी वर्षा से जन धन की हानि संभव। तथा फसलें बरबाद होंगी। यहां से एक मास के अन्दर अनाज में भारी तेजी आयेगी। सावधान! यह एक चांस है। ता. ६ फर. सुदी एकम् धनिष्ठा नक्षत्र युक्त है। अशुभ फलकारी है। कहीं पर भारी दंगे फसाद से आगजनी की घटनाएं होंगी तथा पक्ष में कभी भी रुई में एकदम तेजी आने के योग हैं।

फाल्गुन मास — इस मास में पाँच रविवार तथा पाँच सोमवार हैं। फल मिश्रित (मध्यम) रहेगा। अर्थात मास में जनरल तौर पर व्यापारिक वस्तुओं में तेजी मन्दी दोनों चलती रहेगी। बदी पक्ष में तिथि वृद्धि तथा सुदी पक्ष में तिथि छय तथा क्रूरवार को संक्रान्ति प्रवेश हुआ है। दुर्भिक्ष तेजी कारक है। इस मास में किसी राज्य के मन्त्रि मण्डल में परिवर्तन, भंग आदि हो। वर्षा की कमी अनाजों दलहन, तिलहन में तेजी तथा मास में किसी इलाके में कोई बड़ा उपद्रव अग्निकाण्ड आदि से जनता पीड़ित रहेगी। मास में बुध+शुक्र योग (१४ मार्च से १ अप्रैल तक) मन्दी कारक है। इससे पूर्व जो वस्तुएं तेज चल रही थीं उनमें ब्रेक लग जायेगा। यदि मन्दी चल रही हों उनमें अच्छी मन्दी आने की संभावना अधिक रहेगी। आगे चैत्र कृष्ण पक्ष २०५६ विक्रमी में घी में भारी तेजी के योग पाये गये हैं। ता. २१ फरवरी बक्री बुध रस पदार्थों, अनाजों के भावों में वृद्धि करेगा। परन्तु घटाबढ़ी करेगा। ता. २२ फरवरी के दिन यदि पवन सहित आकाश में बादल हो तो आगे आसोज सुदी तीज को दिन रात अच्छी वर्षा होगी। ता. २३ फरवरी बुधास्त पश्चिमे गल्ला अनाजों धातुओं में तेजी कारक है। चांदी में अत्यधिक तेजी के उछाले दिन १० के अन्दर कभी भी आ सकते हैं। सावधान! यह एक चांस है।

मार्च मास — इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें- ४, ११, १४, २१, २५ हैं तथा मन्दी की तारीखें- ६, १६, २३, २७ प्रमुख हैं। इन तारीखों में प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में अधिक तेजी मन्दी के झटके संभव होंगे। ता. ३ मार्च धनिष्ठा शुक्र अनाजों के भावों में गिरावट लायेगा। तथा दलहन चांदी के भावों में तेजी को सपोर्ट करेगा। ता. ६ सोमवारी मावस मन्दी कारक है। एक सप्ताह के प्रायः सभी व्यापारिक वस्तुओं के भावों में गिरावट दर्ज होगी। तथा कुछ प्रमुख बाजारों में अच्छी मन्दी के झटके भी इस दौरान संभव होंगे। ता. १० मार्च को यदि आकाश में बादल हो तो बैशाख मास में अन्न मंदा बिकेगा। ता. १३ मार्च शते शुक्र नशीले पदार्थों के ठेकेदारों को भारी मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा तथा घी, तिलहन, चांदी के भावों में वृद्धि होगी। सर्दी बढ़ेगी तथा ओले भी गिरें। अनाजों में अच्छी तेजी। आगे फसलों को नुकसान दुर्भिक्षकारी योग है। परन्तु यहाँ से मार्च के अन्त तक बुध+शुक्र योग मन्दी कारक भी है। अतः बाजार की पोजीशन देखकर व्यापार करें। मेष राशि में मंगल का प्रवेश तेजी कारक है। तिलहन, धातुएं, रस पदार्थों, रुई आदि में तेजी कारक है। यदि आज वर्षा हो तो घी, तेल, रुई, कपास आदि का स्टाक करके चार मास पश्चात् लाभ कमावें। ता. १९ मार्च रात्रि को होलिका दहन होगा।

चैत्र मास कृष्ण पक्ष — इस पक्ष में घी में अच्छी तेजी चलने की उम्मीद है। इस मास से मेषे शनि अपने भोगकाल के

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अन्तिम चरणों में अत: आगे ढाई मास के अन्दर व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी मन्दी का संचार करेगा। इस मन्दी में गन्ना, तिलहन के स्टाक से आगे उत्तम लाभ होगा। इस मास में पांच मंगलवार तथा अमावस्या-पूर्णिमा भी मंगलवारी होने से व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का संचार होगा। संवत् के प्रथम मास में ही पांच क्रूरवारों का होना अशुभकारी है। घी, सरसों, बिनौला में अच्छी तेजी आनी चाहिए। परन्तु बुध+शुक्र से अच्छी तेजी में रुकावट पैदा हो सकती है। अत: रुख देखना चाहिए। बदी एकम् मंगलवारी अनाज, मूंग, चावल, चन्दन आदि सुगन्धित वस्तुएं, गुवार, मटर, खाण्ड के भावों में वृद्धि करेगी। बदी छट रविवारी अनाजों में तेजी के उछाले लायेगी। ता. २८ मार्च बदी ८ मंगलवारी अन्न स्टाक करने की राय देती है। अन्न का स्टाक करें। आगे लाभकारी रहेगा।

अप्रैल मास— इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें-१, ४, ८, ११, १५, २२ एवं २६ हैं एवं मन्दी की ता.-३, १७, २४, २५ मार्च हैं। इन तारीखों में प्रमुख वस्तुओं में अच्छी तेजी-मन्दी के झटके आ सकते हैं। ता. २ अप्रैल भरणी का मंगल, अनाज, धातुओं, रुई आदि अन्य प्रमुख वस्तुओं में तेजी कारक है। परन्तु शनि+गुरु योग से सप्ताह दस दिन बाजार दुतरफा घटाबढ़ी से चले। मंगलवारी मावस तेजी कारक है। प्राय: हर वस्तु में दिन ३ के अन्दर तेजी के उछाले आएंगे।

चैत्र शुक्ल पक्ष— ता. ५ अप्रैल आज संवत् २०५७ विक्रमी का शुभारंभ होगा। संवत् का राजा बुध तथा मन्त्री गुरु देव महाराज हैं। संवत् की मेन पावर शुभ ग्रहों के हाथ में होने से संवत् का फल श्रेष्ठ रहे। व्यापारिक दृष्टि से व्यापारियों को अच्छा लाभ हो। जो वस्तुएं मन्दे स्तर पर चल रही हों उनका स्टाक आगे भारी लाभ देगा। ता. ९ अप्रैल को मीन राशि में सूर्य, बुध, शुक्र की मीटिंग होगी। प्राय: व्यापारिक वस्तुओं में तेजी के बिल पास होंगे। यह मीटिंग १३ तारीख तक चलेगी। तारीख ९ अप्रैल को यदि पूरे दिन आकाश बादलों से ढका रहे, ऐसा विचार करके गेहूँ, अनाज का स्टाक करके श्रावण में बेचने से उत्तम लाभ हो। या आज के दिन दक्षिण-पूर्व की पवन चले एवं वर्षा भी हो तो भाद्रपद मास में अनाजों में भारी तेजी चले। ता. १३ अप्रैल मेष संक्रान्ति १५ मुहूर्ती होने से अनाज, रस पदार्थ, तिलहन आदि में तेजी लायेगी। विशेष प्रभाव २४ अप्रैल से ३ मई तक होगा। ता. १४ अप्रैल से २५ अप्रैल तक बुध+शुक्र का योग मन्दी कारक है। इससे पूर्व जिन वस्तुओं में तेजी चल रही हो वह इस दौरान रुक जायेगी एवं मन्दी चल रही हो उसमें जोरदार मन्दी संभव हो। अत: रुख देखकर काम करें।

बैसाख मास— इस मास में चार-पांच-छ: ग्रहों का योग होना, गुरु+शुक्र सहित पांच ग्रहों का अस्त होना आदि योग महत्वपूर्ण है। मास में भारत में दूर-दूर तक अच्छी वर्षा होगी। कहीं भयंकर वर्षा से बाढ़ की स्थिति तथा प्राकृतिक विपदाओं से जनता भयभीत रहेगी तथा काफी जानमाल के नुकसान की आशंका रहेगी। प्राय: सभी व्यापारिक वस्तुओं में घटबढ़ से तेजी का जोर रहेगा। कृष्ण पक्ष में जोरदार तेजी संभव। मास में चांदी में कभी भारी मन्दी तो कभी भारी तेजी चलेगी। यह मास व्यापारिक वस्तुओं में काफी उथल-पुथल वाला सिद्ध होगा। ध्यान से व्यापार करें। रेवती बुधे-दिन ७ के अन्दर चांदी में अच्छी मन्दी तो लाल रंग की वस्तुएं तथा वायदे की वस्तुओं में तेजी लायेगा। ता. २५ अप्रैल वृष राशि का मंगल-लाल रंग की वस्तुएं, धातुएं, शेयर्स, दलहन, अनाजों, सुगन्धित पदार्थों में तेजी तथा एक मास में किसी-किसी वस्तुओं में अच्छी तेजी लायेगा। ता. २७ अप्रैल से ११ मई तक मेष राशि में पांच ग्रहों की मीटिंग चलेगी इस दौरान उपद्रव लड़ाई झगड़े, सरहद पर सैनिक हलचलें या भारी वर्षा से नुकशान की संभावना रहेगी।

मई मास— इस मास में तेजी की तारीखें- ५, ६, ९, १६, २० एवं २३ मई हैं तथा मन्दी की तारीखें-१, ११, १५, २२ एवं २९ हैं। ता. २ मई बदी १३ मंगलवारी दुर्भिक्ष, लोगों में पीड़ा, रोगों की भरमार आदि हो। अन्न, चावलों में तेजी का प्रभाव होगा। वैसाख मास में अच्छी वर्षा दूर-दूर तक होगी। ता. ८ मई शुक्रास्त पूर्व रुई, धातुएं, तिलहन, अलसी, लोहा में अच्छी तेजी कारक तथा गुजरात, पश्चिम बंगाल आदि में काफी उपद्रव, अस्त काल में किसी राज्य का सत्ता परिवर्तन एवं देश में विग्रह, हड़ताल आदि हो। ता. १० मई को यदि पूर्व की वायु चले या आकाश मेघों से ढका रहे तथा थोड़ी बहुत वर्षा भी हो तो अन्न का स्टाक करके भाद्रपद मास में अच्छा लाभ मिलते ही बेच देना चाहिए। ता. १४ मई वृष की संक्रान्ति तेजी कारक है। यदि आज वर्षा हो तो अन्न तथा किराने की जो भी वस्तुएं मन्दी दिखाई दें तो स्टाक करके चार मास पश्चात् बेचने से अच्छा लाभ होगा। यहां मंगल के पीछे सूर्य करीब ४५ दिन चलेगा।

ज्येष्ठ मास— कृष्ण पक्ष में प्राय: व्यापारिक वस्तुओं में मन्दी चलेगी तथा इसी पक्ष में शनि+गुरु की युति भी होगी। यह योग भी बहुत महत्व का है। कई ग्रन्थों में इसे महा परिवर्तन की संज्ञा दी गई है। प्रजा में भारी खून खराबा गदर आदि हो। युद्ध तथा रक्त पात की भारी संभावनाएं रहेंगी। प्राकृतिक प्रकोपों बाढ़, भूकम्प आदि से भारी हानि हो। अत्याचार बढ़ते हैं तथा राजनीतिक परिवर्तन दुनिया में होता है। यह फल इस संवत् में आगे पीछे कभी भी घटित हो सकता है। तथा व्यापारिक वस्तुओं की कीमतों में भारी उलटफेर अवश्य होगी। मास में तापमान में अच्छी वृद्धि, गर्म तेज हवाएं, अग्निकाण्ड की घटनाओं आदि में वृद्धि होगी तथा लाल रंग की वस्तुओं में तेजी चलेगी। मास में खण्डवृष्टि होगी।

जून मास— इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें-४, ११, १४, १७, २०, २७ तथा मन्दी की प्रमुख तारीखें-१, ९, १३, २९ हैं। इन तारीखों में व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी मन्दी के झटके संभव होंगे। ता. २ जून वृष राशि में गुरु के प्रवेश से सूर्य समेत इस राशि पर पांच ग्रह इकट्ठे होंगे। यह योग वर्षा में रुकावट पैदा करता है। तथा किसी राज्य का मन्त्रिमण्डल भंग भी हो सकता है। रुई में अच्छी घट बढ़ चलेगी। ता. ७ जून मिथुने मंगल वृषे शनि-तेजी कारक है। प्राय: प्रमुख वस्तुओं रस पदार्थ, धातुएँ, रुई, पाट, तिलहन, अनाजों, लाल रंग की वस्तुओं के भावों में वृद्धि करेगा। शनि+गुरु का योग से घटाबढ़ी विशेष रहे। दो तीन मास के अन्दर उपरोक्त वस्तुओं में अच्छी तेजी के झटके आते रहें। लोहे के कारखानों की बरबादी तथा मशीनरी वस्तुओं में अच्छी तेजी चले। ता. १० जून पुनर्वसु बुध-रुई, सूत, चांदी, बिनौला में मन्दी कारक तथा दिन सात के अन्दर एक दो झटके अच्छी मन्दी के लायेगा। ता. १४ जून शुदी १३ मंगलवारी तेजी कारक है। अनाज, मूल पदार्थों के भावों में वृद्धि होगी। यदि आज वर्षा हो तो शहद तथा मोम का स्टाक छ: मास बाद बेचने से अच्छा लाभ हो। गुरुवारी पूनम मास नक्षत्र युक्त है। वर्षा कारक है तथा ३ दिन के अन्दर एरण्डा, सरसों तेलों में अच्छी तेजी संभव।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आषाढ़ मास— व्यापारिक दृष्टि से इस मास में प्राय: व्यापारिक वस्तुओं मे तेजी का संचार होगा। वर्षा कहीं अधिक तो कहीं न्यून होगी। मास में झगड़े, उग्रवाद, प्राकृतिक कारणों से जनता भयभीत रहेगी। पूर्णिमा को चन्द्रगहण होगा। इसके प्रभाव से आगे चाय, काफी, तम्बाकू आदि नशीले पदार्थों में तेजी चलेगी। अन्न, चांदी में मन्दी तथा गेहूँ, चावलों का स्टाक आगे लाभकारी रहेगा। ता. १७ जून आर्द्रा मंगल रुई, अलसी, एरण्डा, गुड़, तिलहन पदार्थों में आगे १५-२० दिन में अच्छी तेजी का सन्देश देता है। ता. २७ मई वक्री अवस्था में बुधास्त गल्ला माल, अनाज, चांदी में तेजी कारक है। उदय तक दो चार उछाले अच्छी तेजी के भी आयेंगे। बाजार रुख देखकर काम करें।

जुलाई मास— इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें-१, ४, १५, २५ एवं २८ तथा मन्दी की ता. ७, १०, २०, २४, २७ हैं। इन तारीखों में प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी मन्दी के झटके आ सकते हैं। ता. १ जुलाई शनिवारी मावस **"क्रूरवार तेजी करे मावस पूनम दोय॥"** के अनुसार तेजी कारक है। चांदी शेयर्स, गुड़, तेलों, रसपदार्थ, अनाजों में दिन ३ दिन के अन्दर उछाले आएंगे। ता. ३ जुलाई आज का चन्द्रदर्शन एक मास के अन्दर अनाजों में तेजी तथा किसी राज्य के मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन हो सकता है। ता. ११ जुलाई से दिन १० के अन्दर व्यापारियों के यहाँ छापे धरपकड़ से व्यापारी वर्ग परेशान रहे तथा रुई, सोना, लाख, चपड़ा, गुड़ में इस दौरान अच्छी मन्दी भी आ सकती है। ता. १५ जुलाई बुध का उदय भयकारी है। अनाजों तथा अन्य प्रमुख वस्तुओं में तेजी कारक है। शुक्रोदय भी तेजी का समर्थन करेगा तथा सौराष्ट्र, मारवाड़ आदि में भारी उपद्रव आदि हों। ता. १६ जुलाई पूर्णिमा रविवारी कर्क सक्रांति है। वर्षा की कमी, सूर्य की धूप अधिक, अनाज, रस पदार्थों, घी, चावल, मूल पदार्थों, हल्दी आदि हींग, तेलों, सोना आदि में तेजी कारक है। सक्रान्ति काल में, आंधियों का जोर रहेगा। आज ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण होगा। यहां चांदी के व्यापारी सावधानी रखें। १०-१५ दिन पूर्व से चांदी में भारी तेजी-मंदी आएगी। यदि ग्रहण से कुछ दिन पूर्व चांदी में तेजी आती है तो बेच कर नफा लें। चन्द्रग्रहण चांदी में मन्दी कारक होता है। ग्रहण के प्रभाव से अन्न मंहगा होता है।

श्रावण मास— इस मास में पांच सोमवार तथा मंगलवार हैं। मिले जुले फल होंगे। मास में चांदी में भारी तेजी अथवा मन्दी चल सकती है। रुख देखना चाहिए। ता. ५ से ७ अगस्त तक जिन क्षेत्रों में वर्षा होती है। वहां पर आगे भी वर्षा होती रहेगी। एवं इस दौरान जिन क्षेत्रों में वर्षा बिल्कुल ना हो वहां पर आगे वर्षा की आश छोड़ देनी चाहिए। व्यापारिक दृष्टि से मास में चलती लाईन को देखकर व्यापार करना ज्यादा लाभदायक रहेगा। ता. २१ जुलाई आश्लेषा शुक्र दिन १० के अन्दर वर्षा में रुकावट, जहरीले जानवरों की उत्पत्ति अधिक तथा चांदी, चावल, गेहूँ, चना, रुई में मन्दी कारक है। ता. २२ जुलाई कर्के मंगल-राहु शुक्र-सूर्य के साथ राशि योग बनायेगा। तेजी कारक हैं।

अगस्त मास— इस मास की तेजी की प्रमुख तारीखें-१, १२, २१, २२, २६, २९ तथा मन्दी की तारीखें-३, १०, १७, ३१ हैं। ता. १ अगस्त सुदी एकम् का क्षय तथा सिंहे शुक्र तेजी कारक है। सोना, लाल रंग की वस्तुएं तांबा, अनाज के भावों में वृद्धि करेगा। चांदी, रुई में घटाबढ़ी रहे। वर्षा का अभाव पैदा करेगा। इन दिनों यदि वर्षा बादल आदि हो तो जान लेना चाहिए कि अन्न में तीन मास तक तेजी नहीं आयेगी। यदि इन दिनों आकाश निर्मल रहे। वर्षा आदि न हो तो अन्न का स्टाक निश्चय लाभ देगा। ता. ९ अगस्त बुधास्त पूर्व सोना, चांदी, रुई में घटाबढ़ी से तेजी का तूफान मालूम दे। अर्थात् प्रथम ५ दिन तेजी फिर ६ दिन मन्दा फिर ७ दिन तेज। उदय तक इसी प्रकार व्यापार करें। परन्तु घी के भाव मन्दी की तरफ झुक जायेंगे। अन्य प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं पर भी इसका प्रभाव होगा। ५ सितम्बर को बुध उदय होगा। ता. १३ अगस्त दिन १० के अन्दर गुजरात, सौराष्ट्र, दक्षिणी, पश्चिमी भारतवर्ष के प्राय: भागों में भारी वर्षा योग है। तथा तिल, उर्द, मूंगफली, सरसों, गुड़, खण्ड आदि के भावों में वृद्धि होगी। ता. १५ अगस्त मंगलवारी पूनम तेजी कारक है। दिन ३ के अन्दर तिलहन, जूट, पाट, बारदाना में तेजी आकर एक दो उछाले अच्छी तेजी के संभव हैं।

भाद्रपद मास— इस मास में पूर्वी वायु चलती है तो घोर वर्षा होगी। परन्तु मकई की पैदावार कम होगी। कहीं-कहीं अति वर्षा से हानि तथा किसी इलाके विशेष में सर्पों के उत्पात से जनता भयभीत रहेगी। बदी पक्ष में प्राय: सभी खाद्य पदार्थों में तेजी विशेष चल सकती है। परन्तु सुदी पक्ष में अपेक्षा कृत बाजार मन्दा चलेगा। एवं चांदी में भारी मन्दी संभव है। लाल रंग की वस्तु में पूरे मास घटबढ़ से तेजी बनी रह सकती है। एवं आगे २-३ मासों में रुई में अच्छी मन्दी आ सकती है। ता. १६ अगस्त सिंहे संक्रान्ति १५ मुहूर्ती होने से अनाज, रस पदार्थों में तेजी कारक, सर्व अनाज, धातुएं, हीरे, मोती, तिल आदि का स्टाक करके पांच मास पश्चात् बेचने से उत्तम लाभ हो। ता. १८ अगस्त को यदि दोपहर बाद दो से तीन बजे के बीच यदि उत्तर दिशा में बादल हो तो इस मास में गल्ला माल खरीदकर फागुन में बेचने से अच्छा लाभ हो। २६ अगस्त कन्या शुक्र दिन २० के अन्दर कहीं प्राकृतिक कारणों से फसलों को नुकसान होगा। तथा चावलों में विशेष तेजी के झटके आते रहें। ता. ३० अगस्त को यदि अच्छी वर्षा हो तो तिल, घी, तेलों में तुरन्त अच्छी तेजी आ जायेगी।

सितम्बर मास:-इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें-२, १२, १९, २३, २६ तथा मन्दी की प्रमुख तारीखें-७, १४, १८, २८, २९, ३० हैं। इन तारीखों में प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी मन्दी के झटके आने संभव हैं। सितम्बर प्रथम सप्ताह चांदी में भारी तेजी मन्दी संभव है। हमारा विचार यहाँ भारी मन्दी का है। ता. ३ सितम्बर से दिन १३ के अन्दर जो वस्तुएं मन्दे स्तर पर हों स्टाक लाभकारी। यदि अनाज मन्दा हो तो अवश्य स्टाक करें। आगे भारी लाभ की संभावना रहे। इस दौरान तेजी की वस्तुओं को बेच कर नफा लें। यहां बुध का उदय अनाजों में मन्दी लायेगा। घी, तिलहन में तेजी कारक है। ता. ७ सितम्बर सिंहे मंगल+सूर्य योग (१६ तक) प्राय: प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं, लाल रंग की वस्तुओं आदि में तेजी कारक है। परन्तु इसी दौरान बुध+शुक्र योग (५ से १५ सितम्बर) मन्दी कारक भी है। अत: रुख देखकर काम करना चाहिये। उपरोक्त योग घोर तेजी लाने वाला योग है।

आश्विन मास— मास में कहीं भारी अग्निकाण्ड से काफी जनधन की हानि संभव तथा सुदी चौथ घी बेचने की राय देती है व अनाज स्टाक करने की राय देती है। मास में तेल, घी के भावों में तेजी तथा कहीं-कहीं प्राकृतिक विपदाओं का जनता को सामना करना पड़ेगा तथा रोगों की भरमार रहे। ता. १६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सितम्बर बदी ३ शनिवारी तेजी कारक है। बाजार रुख में परिवर्तन होकर तेजी का संचार होगा। बदी ९ शुक्रवारी होने से सफेद रंग की वस्तुओं, चांदी, खाण्ड, दूध आदि में शीघ्र मन्दी आ जायेगी। ता. २४ सितम्बर से १३ अक्टूबर तक बुध+शुक्र योग मन्दी कारक है। इससे पूर्व यदि बाजार मन्दा जा रहा हो तो इस दौरान जोरदार मन्दी संभव होगी। यदि तेजी चल रहा हो तो तेजी रुककर कुछ मन्दा हो आयेगा। ता. २६ सितम्बर को यदि जोर का पवन चले तो दस दिन बाद ही गल्ले-अनाजों आदि में तेजी आ जायेगी। आश्विन सुदी पक्ष में रुई, सोना, चांदी में घटाबढ़ी ज्यादा रहेगी। अत: रुख देखकर काम करना चाहिए। सुदी २ का चन्द्रदर्शन अनाजों, तिलहन में घटाबढ़ी से मन्दी कारक है। परन्तु एक मास बाद पुन: वही भाव आ जायेंगे। ता. ३० सितम्बर बक्री गुरु मन्दी कारक है। प्राय: व्यापारिक वस्तुओं के भावों में गिरावट आयेगी। यहां शनि भी साथ में वक्री चलेगा। दोनों साथ-साथ २४ जनवरी सन् २००१ तक वक्री चलेंगे। इस दौरान रुई में कभी भी भारी मन्दी आयेगी। सावधान! तथा अनाजों में तेजी चलेगी। यह एक चान्स है।

अक्टूबर मास— इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें- १२, १४, २१, २४, २८ एवं ३१ तथा मन्दी की प्रमुख तारीखें-७, १६, २६ हैं। ता. ६ अक्टूबर विशाखा शुक्र रुई, चांदी, चावल, सोना, सरसों में मंदी कारक है तथा दिन १० के अन्तर्गत कभी भी एक अच्छी मन्दी का झटका तथा कहीं किसी नामी फर्म का दिवाला घोषित होगा। ता. ९ अक्टूबर को यदि पूर्व की पवन चले तो समझना चाहिए कि आगे सर्दी काफी पड़ेगी तथा पौष-माघ मास में पाला, कोहरा, बर्फ, ओले आदि ज्यादा पड़ेंगे। जिससे फसलों को व्यापक नुकशान की संभावना रहेगी तथा कार्तिक मास में गेहूँ, चना में तेजी आ जायेगी। ता. १० अक्टूबर से दिन १५ के अन्तर्गत मियादी बुखार, दस्त आदि रोगों से जनता अधिक परेशान रहेगी तथा अरहर, लाख, चपड़ा, अनाज आदि में बाजार जनरल तौर पर तेज रहेगा। ता. १२ अक्टू. दिन ४ के अन्तर्गत रुई में अच्छी मंदी के झटके संभव हैं। आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को आकाश निर्मल रहे तो अनाज मन्दा रहे। यदि बादल हो, बिजली चमके, मेघ गर्जना करे तो अन्न का स्टाक चैत्र मास में बेचने से उत्तम लाभ मिले।

कार्तिक मास— इस मास में पांच शनिवार दुर्भिक्ष व्यापारिक वस्तुओं में तेजी कारक हैं। ईशान कोण के देशों, प्रान्तों (चीन, मंगोलिया, भूटान) आदि में भारी उपद्रव तथा प्राकृतिक कारणों से (भूकम्प, बाढ़ आदि) भारी विनाश संभव हो। बदी पक्ष में प्राय: व्यापारिक वस्तुओं रस पदार्थों, घी, तेलों, सब्जियां, किराना, फल, फूल आदि अन्य प्रमुख वस्तुओं में तेजी रहेगी। सुदी पक्ष में अनाजों में मन्दी आएगी तथा रुई में पूरे मास घटाबढ़ी से प्राय: मन्दा रहेगा। मास में चांदी में अधिक तेजी के उछाले आ सकते हैं। फाल्गुन सुदी तक रुई में भारी तेजी के योग हैं। परन्तु पौष मास तक भारी मन्दी भी आकर माघ-फाल्गुन में रुई में जबरदस्त तेजी आ सकती है। यह एक चांस है। परन्तु हमारी जिम्मेदारी नहीं होगी। कार्तिक मास में उल्कापात हो, धूल भरी आँधी चले, बिना बादल के वर्षा हो या अन्य कोई उत्पात दिखाई दे तो सर्व अनाजों का स्टाक करके चार मास बाद बेचने से उत्तम लाभ हो। ता. १६ अक्टू. तुला संक्रांति ४५ मुहूर्ती आगे २६ अक्टू. से ४ नवं. तक अनाजों, रस पदार्थों आदि में मन्दी कारक है। रुख देखना चाहिए। यदि आज वर्षा हो तो तिल, तेल, मूंग, उर्द, मूंज आदि का स्टाक करें व चार मास पश्चात् बेचने से अच्छा लाभ हो। ता. २४ अक्टू. वक्री बुधास्त चांदी आदि में अत्यधिक तेजी कारक है। ता. ४ नवं. को उदय होगा। इस दौरान अनजों में घटाबढ़ी अधिक रह सकती है। तेजी या मन्दी की कोई भी लाइन अनाजों गल्ला माल में चल सकती है। ता. २५ अक्टू. कन्या मंगल-रुई, रेशम, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिलहन, किराना, धातुएं, लाल रंग की वस्तुएं आदि में अच्छी तेजी कारक है। परन्तु गुरु दृष्टि से अधिक तेजी की आशा नहीं है। ता. २६ अक्टू. गुरुवारी दीपावली मन्दी कारक है। ''बुध-गुरु की आय दिवाली, जीवे रंक मरे भड़साली॥'' के अनुसार बाजारों में मन्दी का वातावरण बनेगा। सुख सुभिक्षकारी है। सुदी पक्ष में सोना, चांदी में जनरल लाईन तेज रहकर कुछ झटके अच्छी तेजी के भी संभव होंगे। अन्य प्रमुख वस्तुओं में प्राय: जनरल लाईन तेज रहेगी।

नवम्बर मास— इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें-२, ७, ११, १४, १८, २१, २५ एवं २८ तथा मन्दी की प्रमुख तारीखें-४, १३, २०, २३, ३० हैं। इन तारीखों में अधिकतर प्रमुख वस्तुओं में अच्छी तेजी मन्दी के झटके आने संभव हों। तिल, जौ, शाल की लकड़ी, अनाजों, लाल मिर्च के भावों में तेजी कारक है। कभी-कभी प्राकृतिक कारणों से जान माल का नुकसान भी होता है। ता. ८ नवं. मार्गी बुध घी, शक्कर, अलसी, औषधियों के भावों में शीघ्र वृद्धि करेगा। मूल धनु शुक्र: एक मास के अन्दर फसलों को नुकसान तो रुई, चांदी के भावों मन्दी कारक तो शेयरों के भावों में वृद्धि करेगा। ता. ११ नवम्बर शनिवारी पूनम भरणी नक्षत्र युक्त है। चार मास करीब दुर्भिक्ष की स्थिति बने। मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष में सावणी फसल के मालों में तेजी आयेगी। ता. ११ नवम्बर को यदि आकाश में घटा छा जाये तो अनाज, घी का स्टाक करके चैत्र मास में बेचने से उत्तम लाभ हो।

मार्गशीर्ष मास— मास में राजनीतिक हलचलें बढ़ेंगी तथा प्रजा को राजनीतिक भय हो तथा कहीं-कहीं भारी हिमपात, प्राकृतिक कारणों से फसलों को नुकसान तथा सर्दी बढ़ेगी। मास में रुई में तेजी कारक योगों से अधिक तेजी तथा मन्दी कारक योगों से अधिक मन्दी की संभावना रहेगी। शुक्ल पक्ष में रुई, सोना, चांदी में मन्दी चलेगी। मास में अच्छी तेजी के झटके अस्थाई होंगे। ता. १५ नवं. वृश्चिके संक्रान्ति ४५ मुहूर्ती अनाज रस पदार्थों में मन्दा लायेगी। वायु आँधी आदि का इस संक्रान्ति काल में जोर रहेगा। बदी पंचमी गुरुवारी सुख सुभिक्षकारी शुभ योग है। रुई तथा सफेद वस्तुओं में मन्दी का संचार होगा। बदी सप्तमी में आकाश निर्मल रहे तो वैशाख में अन्न मन्दा रहे। बदी नौमी का क्षय लोगों में आपसी झगड़े फिसाद आदि में काफी वृद्धि हो जायेगी तथा यह योग व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का संचार भी करता है। ता. २३ नवम्बर विशाखा बुध-रुई के भाव घटेंगे। तथा दिन ८ के अन्दर खासी मन्दी के झटके आ सकते हैं। ता. २४ नवम्बर बदी १४ स्वाति नक्षत्र युक्त होने से दुर्भिक्ष तथा अनावृष्टि कारक है। ता. २५ नवम्बर शनिवारी अमावस भी घोर तेजी कारक है। अनाज, दलहन पदार्थों में अच्छी तेजी तथा सोना, चांदी, रुई, तिलहन, तेलों, मशीनरी, साबुन, प्रमुख शेयरों में घटाबढ़ी से भावों में वृद्धि करेगी। २६ नवम्बर को आकाश यदि बादलों से ढक जाए या दूर-दूर तक अच्छी वर्षा हो तो आगे भाद्रपद मास में अच्छी वर्षा होगी। तथा गल्ला अनाज सस्ता बिकेगा। लाल रंग की वस्तुएं ताम्बा, लोहा, चावल मन्दा रहेगा। परन्तु बिनोला,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तिल, तिलों में तेजी चलेगी। यदि ऐसी होता है तो यह डायरी में नोट करके रखें तथा मोटे अनाज के व्यापारियों (जुवार, मक्का, बाजरा आदि) को अभी पौष मास में खरीद करके फागुन में ही बेचने से लाभ होगा।

दिसम्बर मास—इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें-५, १२, १६, २०, २३, ३० तथा मन्दी की प्रमुख तारीखें-२, ११, १८, २८ हैं। ता. २ दिसम्बर चित्रा मंगल सर्वधातुओं, अनाजों के भावों में वृद्धि करेगा। दिन १२ के अन्दर कुछ अच्छी तेजी के उछाले तथा किसी इलाके विशेष में कोई विशेष बीमारी का प्रकट होना तथा जनता में तीव्र रोगों से पीड़ा होगी। तथा सर्दी में बढोत्तरी होगी। ता. ३ दिसम्बर मकरे शुक्र एक मास के अन्दर प्राकृतिक कारणों से फसलों को हानि, सोना, चांदी, रुई, सूत में घटबढ़ से तेजी। घी, गेहूँ, अनाज, गुड़, खाण्ड, तेलों में निश्चय तेजी लायेगा। अच्छी तेजी भी संभव होगी। ता. ४ दिसम्बर को यदि आकाश में बिजली चमके तो डायरी में नोट करें कि आगे सावन मास में निश्चय ही उत्तम वर्षा होगी। ता. ६ दिसम्बर को यदि दिन-रात उत्तर की पवन चले तो समझना चाहिए कि आगामी वर्षा काल में निश्चय अच्छी वर्षा होगी। ता. १० दिसम्बर ज्येष्ठा बुध रस पदार्थों घी, खाण्ड, चावलों के भावों में शीघ्र वृद्धि होगी। सोमवारी पूनम श्रवणे शुक्र-मन्दी कारक है। अनाज, रुई, सोना, चांदी, मूंग, मोठ, दलहन पदार्थों के भावों में दिन सात में गिरावट आयेगी। परन्तु तिल, तेलों में तेजी कारक है।

पौष मास—इस मास में पांच मंगलवार तथा मंगलवारा चन्द्रग्रहण नेष्टफल कारी है। किसी राज्य के मन्त्री मण्डल में परिवर्तन, पृथ्वी पर लड़ाई-झगड़े, अधिक हत्याएं किन्हीं दो या अधिक देशों में युद्ध की ठन जाए, कहीं-कहीं भारी अग्निकाण्डों से हानि तथा जनता भयभीत रहे। व्यापारिक दृष्टि से मास में अधिकतर वस्तुओं रुई, पाट, बारदाना, लाल रंग की वस्तुओं, अनाज, दलहन, किराना, तिलहन पदार्थ आदि का बाजार तेज रहेगा। पूर्णिमा को चन्द्रग्रहण होने से रुई में भारी मन्दी कारक है। यदि इससे पूर्व रुई में अच्छी तेजी आ चुकी हो (जैसा कि पीछे भारी मन्दी के योग थे) तो और अधिक मन्दी आने से सन्देह रहेगा तथा फागुन सुदी तक रुई में भारी तेजी भी आने के योग थे। **सावधान!** ता. १५ दिसम्बर धनु संक्रान्ति १५ मुहूर्ती श्लेषा नक्षत्र युक्त होने से अनाजों में तेजी चलेगी। इस संक्रांति काल में (अगली संक्रांति लगने तक) व्यापारियों को चाहिए कि माल का ज्यादा स्टाक न करें। बल्कि खरीदते बेचते रहें। इसी में लाभ रहेगा। ता. २० दिसम्बर को यदि आकाश में बादल हो तो आगे भादव मास में खूब वर्षा होगी। ता. २४ दिसम्बर स्वाती भौम रुई, कपास, सोना, चांदी में तेजी कारक है। अनाज, मूंगफली, सरसों, राई, तिल, गेहूँ में दिन १२ के अन्दर कुछ तेजी के झटके जरूर आने चाहिए। सोमवती मावस मन्दी कारक है। प्राय: व्यापारिक वस्तुओं के भावों में एक दफा गिरावट लायेगी। किसी-किसी वस्तुओं में अच्छी मन्दी भी आ जाती है। सो बाजार पर निगाह रखें। एक सप्ताह के अन्दर यह फल होगा। कभी-कभी ३ दिन पूर्व से भी इसका प्रभाव देखा गया है।

आवश्यक सूचना-

नोट-यह लेख ग्रहों के दृष्टि सम्बन्ध, राशि परिवर्तन, वक्री-मार्गी, उदयास्त, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, ग्रहों के नक्षत्र, चरण परिवर्तन आदि अन्य महत्वपूर्ण योगों के आधार पर लिखा गया है। होना न होना ईश्वराधीन है। एक ही समय में एक योग तेजी का तथा दूसरा योग मन्दी का हो तो सन्देह में न पड़ें। बाजार रुख देखते हुये काम करना चाहिए। लाभ-हानि में हमारी कभी भी कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। यह ध्यान में रखना चाहिए। हमारे लेखों से लाभान्वित होने पर हजारों व्यापारियों ने हमें प्रशंसा पत्र भेजे हैं। हम उनके आभारी हैं। यह लेख बहुत ही संक्षेप में लिखा गया है। पूरा ब्योरा सिलसिले बार, पूरे वर्ष का जानने के लिए हमारे द्वारा प्रकाशित प्रसिद्ध पुस्तक **''भविष्य फल प्रकाश सन् २००० ई.''** की मंगाकर लाभ उठाएं। यह संवत् भारी उथल-पुथल वाला है। भारी लाभ देने वाले कई महत्व पूर्ण योग हैं। अत: व्यापार की उन्नति के लिए यह पुस्तक अवश्य मगा कर पढ़ें। प्रकाशित हो चुकी है।

ज्योतिष शास्त्र के आधार पर बाजार भावों की तेजी-मन्दी के बारे में विश्लेषण एवं पूर्वानुमान से सम्बन्धित यह पुस्तक गत ५१ सालों से लगातार प्रकाशित की जा रही है। इस पुस्तक में वर्ष भर की दैनिक तेजी-मन्दी, मासिक विश्लेषण, माल स्टाक करने के उचित मोके, माल खरीदने बेचने की महत्वपूर्ण तारीखें (प्रत्येक मास की) अनाज, दलहन, किराना बाजार, तिलहन बाजार, सरसों आदि सोना, चांदी आदि सर्व धातुएं, शेयर्स, गुड़, खाण्ड, घी आदि रस पदार्थ, आलू, प्याज, लहसुन, हल्दी, रुई, पाट, बारदाना आदि वस्तुओं के स्पेशल चांस (वर्ष भर की लाईनें) महत्वपूर्ण कट लाईनें लेख चांस आदि इस एक ही पुस्तक में अलग-अलग चैपटर देकर प्रकाशित किया गया है। मूल्य १००/- प्रति कापी तथा २५/- डाक व्यय अलग कुल १२५/- होगा। रुपया मनीआर्डर पोस्टल आर्डर द्वारा ही भिजवाएं। समय पूर्व मंगा लें। ताकि उचित अवसर पर स्टाक आदि कर सकें। आज ही आदेश भेजें। यह पुस्तक प्रत्येक साल प्रकाशित होती है।

हमारी दूसरी पुस्तक **''भविष्य भारती''** अर्घकाण्ड सम्बन्धी अद्भुत कविता पुस्तक (टीका सहित) जो कि हिन्दी दोहों के रूप में है। इस पुस्तक में ज्योतिष के योग (फारमूले) आदि दिये गये हैं। उपयोगी पुस्तक है। मूल्य ४५/- डाक व्यय १५/- अलग होगा। पुस्तकें वी.पी. से मंगाने के लिए ५०/- का मनीआर्डर भेजना आवश्यक है। दोनों पुस्तकों के लिए १५०/- का मनीआर्डर भेजने पर डाक व्यय फ्री।

१. भविष्यफल प्रकाश पुस्तक के लिए १००/- का मनीआर्डर अग्रिम भेजने पर १०/- की वी.पी. से पुस्तक भेजी जायेगी। यानि १५/- की बचत होगी। अपना पता साफ-साफ हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी भाषा में पिन कोड सहित लिखें। पत्र, मनीआर्डर केवल हमारे नये पते पर ही भेजें। खोरी के पते पर भेजने से डाक काफी लेट प्राप्त होती है। अत: भविष्य में निम्नलिखित पते से पत्र, मनीआर्डर आदि भेजें।

पता-**श्री रामावतार गुप्ता ''व्यापार भूषण''**
राव उमराव सिंह मार्केट, आर्य समाज रोड, नई सब्जी मण्डी,
रेवाड़ी-१२३४०१ (हरियाणा)

इति शुभम्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्र शृंगोन्नतः विचार (व्यापार भविष्य) सं. २०५६-५७ वि. (सन् २००० - २००१ ई.)

ब्रह्मर्षि ज्योतिषाचार्य पं. शंकरलाल गौड़, ''शंभु कवि''—दूरा, आगरा (उ.प्र.)

चन्द्र दृश्याकृति

उत्तर शृंगोन्नत

दिनांक ८ जनवरी सन् २००० ई. शनिवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से हो रहा है। इसका ज्योतिषानुसार अशुभ फल प्रदर्शित होता है। उत्तर पूर्व में विग्रह, जनता में रोग, शोक की प्रायः उत्पत्ति होती है। रुई, ऊन, कपास, काष्ठ, कोयला पर घोर तेजी के योग दिखाई देते हैं। गेहूँ, चना, मटर, सरसों, मक्का के भाव घोर तेजी पर चले जाते हैं। सोना, चांदी, ताम्बा, स्टील के भाव भी ऊँचे पर जाते ही हैं। जूट-पाट, बारदाना में घोर तेजी के लक्षण दिखलाई देते हैं। पूर्व संग्रह करने वाले अच्छा लाभ उठा सकते हैं।

चन्द्र दृश्याकृति

सम शृंगोन्नत

दिनांक ७ फरवरी सन् २००० ई. सोमवार को चन्द्रदर्शन सम शृंग से हो रहा है। जो सुभिक्ष कारक है। गेहूँ, चना, मक्का, मटर, चावल, घी, तेल, रुई, ऊन, कपास, तेल, पेट्रोल, डीजल, किशमिश, मुनक्का, कालीमिर्च, लौंग आदि पर घोर तेजी होती है। जूट, पाट, बारदाने, फल, दूध, दही के भाव गिर जाते हैं। केन्द्रीय मंत्रिमंडल में फेर बदल होगा। इस मास में शीताधिक्य, शीतलहर, खण्डवृष्टि, उथल-वृष्टि, हिमपात की पूर्ण संभावना दिखाई देती है।

चन्द्र दृश्याकृति

दक्षिण शृंगोन्नत

दिनांक ७ मार्च सन् २००० ई. बुधवार को चन्द्रदर्शन दक्षिण शृंग से हो रहा है, अतः इस मास में गेहूँ, चना, जौ, मटर, मक्का, सोना, चांदी, तांबा, स्टील, काष्ठ, मिट्टी का तेल, सरसों पर घोर तेजी होती है। किशमिश, दाल, कालीमिर्च, लौंग, गूगल, चिरौंजी, मखाने के भाव गिर जाते हैं। प्रान्तीय मंत्रिमंडल में परिवर्तन संभव है। मासान्त में हिमाचल प्रदेश में हिमपात, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब में खण्ड वृष्टि, उपल वृष्टि हो सकती है। जिससे फसल में हानि होगी।

चन्द्र दृश्याकृति

दक्षिण शृंगोन्नत

दिनांक ६ अप्रैल सन् २००० ई. गुरुवार को चन्द्रदर्शन दक्षिण शृंगोन्नत: हो रहा है। इस मास में गेहूं, चना, जौ, चावल, प्रियंगु, उड़द, मूंग, मोंठ, मसूर, काष्ठ, कोयला, मिट्टी का तेल, तिली के तेल में अच्छी तेजी होती है। रुई, कपास, ऊन के भाव गिर जाते हैं। सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा, जस्ता, पीतल, जीरा, धनियाँ, हींग, मखाने, दाख, कालीमिर्च के भाव कुछ तेजी पर जाते हैं। कृषकों के लिये यह मास विशेष अच्छा है। दक्षिण भारत में विग्रह तथा उत्तर भारत विशेषकर हिमाचल प्रदेश में भूकम्प, भूस्खलन की घटना हो।

चन्द्र दृश्याकृति

सम शृंगोन्नत

दिनांक ५ मई सन् २००० ई. शुक्रवार को चन्द्रदर्शन सम शृंग से होगा। इसका नेष्ट फल जापान, जर्मन, आस्ट्रेलिया, ईरान, ईराक, अरब राष्ट्रों पर होगा। सर्वत्र अराजकता, विग्रह, तोड़फोड़ की वारदातें हो सकती हैं। दो देशों में पारस्परिक युद्ध की संभावना है। गेहूँ, चना, मटर, मक्का, चावल, मूंग, मंसूर, सोना, चांदी, ताम्बा, पीतल पर घोर तेजी होती है। सीमा पर छुटपुट वारदातें हो सकती हैं। मासान्त में गर्मी के साथ खण्ड वृष्टि भी हो सकती है। पूर्व में विग्रह हो सकता है।

चन्द्र दृश्याकृति

उत्तर शृंगोन्नत

दिनांक ३ जून सन् २००० ई. शनिवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से होगा। भारत के कुछ भागों में जातीय संघर्ष उपस्थित हो सकता है। राजनैतिक विपक्षी पार्टियों में मतभेद उभर कर आ सकते हैं। पृथ्वी पर कहीं-कहीं संघर्ष, रक्तपात हो सकता है। अग्निकाण्ड, हत्याकाण्ड की घटनायें सुनने में आ सकती हैं। गेहूँ, चना, उड़द, चावल, मूंग, मंसूर, मोंठ पर सस्तापन दिखाई देता है। सोना, चांदी, ताम्बा, जस्ता, पीतल, लोहा पर प्रायः तेजी के योग बनते हैं। प्रान्तीय मंत्रिमंडल में गतिरोध जारी रह सकता है। भीषण गर्मी से सर्वत्र त्राहि-त्राहि मच जावे। मासान्त में खण्डवृष्टि, वायु संचार के प्रायः योग हैं।

चन्द्र दृश्याकृति

उत्तर शृंगोन्नत

दिनांक ३ जुलाई सन् २००० ई. चन्द्रवार को चन्द्रदर्शन दक्षिण शृंगोन्नतः हो रहा है। जनता में खुशी की लहर दौड़ सकती है। सुख-शान्ति का वातावरण बन सकता है। गेहूँ, चना, मटर, चावल, श्रीफल, घी, तेल, हींग, मखाने, तिलहन, चिरौंजी, किशमिश, कालीमिर्च पर अच्छी तेजी आ सकती है। सोना, चांदी, ताम्बा, पीतल, जस्ता, स्टील पर घोर तेजी हो। दक्षिण भारत में भूकम्प से जनधन का भारी विनाश हो सकता है, राजधानी दिल्ली में उथल-पुथल हो। सुरक्षा व्यवस्था कड़ी होगी।

चन्द्र दृश्याकृति

उत्तर शृंगोन्नत

दिनांक १ अगस्त सन् २००० ई. मंगलवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंगोन्नतः हो रहा है। जिसका फल उत्तर भारत में उथल-पुथल होने की संभावना है। उत्तराखण्ड, राम मन्दिर की समस्याएं अधिक जोर पकड़ सकती हैं। जिसका समाधान होना शीघ्र संभव नहीं है। गेहूँ, चावल, चना, जौ, मटर, दाख, फल, फूल, घास, फूस, जीरा, धनियाँ, हींग, मखाने के भाव ऊँचे जा सकते हैं। सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा, जस्ता, पीतल तेज हो।

चन्द्र दृश्याकृति

उत्तर शृंगोन्नत

दिनांक ३० अगस्त सन् २००० ई. बुधवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से हो रहा है। जिसका फल गेहूँ, चना, मटर, मूंग, मसूर, मोंठ, हींग, जीरा, धनियाँ, दाख, बादाम, कालीमिर्च पर घोर तेजी के प्रायः योग हैं। दूध, दही, शहद, घी, फल, फूल, घास आदि के भाव गिर जाते हैं। पाक की ओर से समय विशेष नेष्ट मालूम होता है। बाढ़ के प्रकोप से जनधन का भारी विनाश हो सकता है। जनता में त्राहि-त्राहि मच सकती है। किराना वस्तुओं के भाव गिर जाते हैं ऐसा योग मासान्त में बन रहा है।

चन्द्र दृश्याकृति

उत्तर शृंगोन्नत

दिनांक २९ सितम्बर सन् २००० ई. शुक्रवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से होगा। जिसका फल मौसम की दृष्टि से विशेष अच्छा है। भ्रष्टाचार, पापाचार, हत्याकाण्ड, लूटपाट को अधिक बढ़ावा दिया जायेगा। राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश में इस वर्ष अच्छी वर्षा होगी। गेहूं, चावल, चना, उड़द, लोहा, चांदी, सोना पर अच्छी तेजी होती है। दाख, कालीमिर्च, किशमिश के भाव कुछ गिर जाते हैं। जनता में खुशी की लहरें दौड़ जाती हैं। पूर्व-पश्चिम की स्थिति सही नहीं रहेगी।

चन्द्र दृश्याकृति

उत्तर शृंगोन्नत

दिनांक २८ अक्टूबर सन् २००० ई. शनिवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से हो रहा है। पृथ्वी के पूर्वी भाग में प्राकृतिक प्रकोप की पूर्ण संभावना है। भारत वर्ष के किसी वयोवृद्ध के निधन (राष्ट्रकर्णधार) की पूर्ण संभावना है। जापान, जर्मन के लिये समय बहुत ही नेष्ट है। भूस्खलन, भूकम्प, विद्युतपात से विशेष हानि होगी। सोना, चांदी, ताम्बा, पीतल, लोहा की विशेष तेजी के लक्षण दिखाई देते हैं। गेहूं, चना, जौ, चावल, मूंग, मंसूर, मोंठ पर तेजी होती है।

चन्द्र दृश्याकृति

उत्तर शृंगोन्नत

दिनांक २७ नवम्बर सन् २००० ई. सोमवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से हो रहा है। बंगलादेश, भूटान, सिक्किम में प्राकृतिक प्रकोप की पूर्ण संभावना है। गेहूँ, चना, जौ, मटर, मक्का, उड़द, रमास, मूंग, मंसूर, दाख, किशमिश, जीरा, धनियाँ, हींग, मखाने, कागज, स्टेशनरी का सामान, जूट, पाट, बारदाना पर घोर तेजी होती है। सोना, चांदी, ताम्बा, पीतल, स्टील के भाव घोर तेजी पर जाते हैं। मासान्त में चालू मार्केट का भाव एकदम बदल जाता है। घटाबढ़ी के बाजार चलते रहते हैं। मासान्त में वर्षा की पूर्ण संभावना है। शीत भी बढ़ेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्र दृश्याकृति उत्तर श्रृंगोन्नत	दिनांक २७ दिसम्बर सन् २००० ई. बुधवार को चन्द्रदर्शन उत्तर श्रृंग से हो रहा है। जिसका फल इस प्रकार है। देश-विदेश नये रोग से आक्रान्त होगा। मासान्त में राजनैतिक सरगर्मी बढ़ सकती है। गेहूँ, चावल, चना, दाख, किशमिश, हींग, जीरा, धनियां के भाव कुछ ऊँचे पर जा सकते हैं। धातुवाने में सोना, चांदी, ताम्बा, स्टील, कोच का सामान, स्टील का सामान कुछ सस्ता हो सकता है। वायु संचार, खण्डवृष्टि, उपलवृष्टि की पूर्ण संभावना है। सम्प्रदायिक तनाव आकस्मिक बढ़ सकता है।
चन्द्र दृश्याकृति सम श्रृंगोन्नत	सं. २०५७ वि. माघ शुक्ल २ शुक्रवार दिनांक २६ जनवरी सन् २००१ को चन्द्रदर्शन सम श्रृंग से होगा। जिसका फल जनता में शान्ति, फसल में बढ़ोत्तरी होती है। विश्व में भारत का सम्मान होता है। हिमाचल प्रदेश में हिमपात, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, दिल्ली में शीत लहर के साथ खण्डवृष्टि होगी। गेहूं, चना, जौ, सरसों, उड़द, मूंग पर घोर तेजी हो। सोना, चांदी, तांबा, स्टील, पीतल पर कुछ तेजी हो। मखाने, किशमिश, हींग, जीरा, हल्दी, काली मिर्च, गुग्गुल, कवलगट्टा, जायफल के भाव आकाश को छूयें।
चन्द्र दृश्याकृति सम श्रृंगोन्नत	सं. २०५७ वि. फाल्गुन शुक्ल १ शनिवार दिनांक २४ फरवरी सन् २००१ ई. को चन्द्रोदय सम श्रृंग से होगा। शनिवार के दिन चन्द्रदर्शन महाभय का सूचक है। अंधड़, तूफानादि का भय, उपलवृष्टि, हिमाचल प्रदेश में, उत्तरांचल में दिनांक १४ से २५ तक भारी हिमपात मार्ग अवरुद्ध हों। गेहूं, जौ, चना, मक्का, सरसों, तेल, काष्ठ, सोना, चांदी, तांबा, स्टील पर घोर तेजी होती है। लौंग, कपूर, धूप, बूरा, गुड़, शक्कर, काली मिर्च के भाव कुछ गिर जाते हैं। दि. ८ से १० तक उल्कापात हो।
चन्द्र दृश्याकृति दक्षिण श्रृंगोन्नत	सं. २०५८ वि. चैत्र शुक्ल १ चन्द्रवार दिनांक २६ मार्च सन् २००१ को चन्द्रदर्शन दक्षिण श्रृंग से होगा। उत्तराखण्ड की समस्याएं, काशी, मथुरा, अयोध्या का विवाद फिर उभर कर आ सकता है। इस दिन सं. २०५८ वि. प्रारंभ हुआ है और वर्ष का राजा चन्द्र है, जिसका फल राष्ट्र और विश्व को शुभ फलदायक है। गेहूं, चना, जौ, चावल, मक्का के भाव एकदम गिर सकते हैं। पश्चिम में अशान्ति फैल सकती है।

स्वर्ण अवसर- अवश्य लाभ उठाईये-

ज्योतिष, हस्तरेखा, तंत्र विज्ञान के उद्‌भट विद्वान पं. शंकरलाल गौड़ "शंभु कवि"
ब्रजबाबा पथ, दूरा- (आगरा)(उ.प्र.) पिन-२८३११०
से सम्पर्क कर मनोवांछित कार्य पूर्ण करें।

जन्म पत्र दक्षिणा—अत्युत्तम २००१/-, उत्तम १००१/-, मध्यम ५०१/-, सामान्य १२५/-, डाकव्यय ५०/-

हस्तरेखा भविष्य दर्शिका:-अत्युत्तम २००१/-, उत्तम १००१/-, मध्यम ५०१/-, सामान्य १२५/, डाक व्यय ५०/-

तेजी मंदी रिपोर्ट—वार्षिक २००१/-, षट्मासिक १००१/-, त्रैमासिक ५०१/-, मासिक २५१/-, डाक व्यय ५०/-

विशेष-जन्मपत्र बनवाने के लिए जन्म समय, जन्मस्थान, अपना पूरा पता लिखें। जबाब के लिये जबाबी कार्ड भेजें। हस्तरेखा भविष्य दर्शिका के लिये रंगीन चित्र पोस्टकार्ट से दूना साइज का भेजें।

पता—व्यवस्थापक- श्री शंकर साहित्य सदन,
ब्रजबाबा पथ, दूरा (आगरा) (उ. प्र.)-२८३११०

भविष्य वाणी

सन् २००० के प्रारम्भ में जनवरी मास में परस्पर राष्ट्र कर्णधारों में विरोधी विचारधारा उत्पन्न हो सकती है। पश्चिमी राष्ट्रों (ईरान, ईराक, ईजरायल, पाक, मिश्र आदि) में युति का भय व्याप्त होगा। मथुरा, अयोध्या का मामला फिर उठ सकता है। फरवरी में मंत्रिमंडलों में अकल्पित फेर बदल हो सकती है। सीमाओं पर सैन्य बल बढ़ाते हुए पूर्ण सतर्क रहना चाहिए। अनेक देशों में ग्रह स्थिति युद्धोन्माद को जन्म दे सकती है। धार्मिक कृत्य भी अनेक स्थानों में होते रहेंगे। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में विश्वशान्ति के प्रस्ताव रखे जा सकते हैं। शनि का दुष्प्रभाव अनेक राष्ट्रों पर पड़ सकता है। शुभ-अशुभ दोनों फल दिखाई देते है। मार्च मास में घिनौनी राजनीति पनप सकती है। शासन व्यवस्था भी छिन्न-भिन्न हो सकती है। पश्चिमी देशों में राजविग्रह तथा जन क्रान्ति की संभावना है। अप्रैल मास में सामाजिक कार्य सभी पूर्ण हो सकते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में एकदम हलचल मच सकती है। नेता तथा मंत्री, सांसद आपसी विवाद कलह में उलझते रहेंगे। चोर डकैतों का बोलवाला होगा। मई मास में अशान्ति, अराजकता का वातावरण बन सकता है। जिससे जनता को भारी संकट का सामना पड़ सकता है। प्रतिकूल प्राकृतिक प्रकोप भी संभव है। उपलवृष्टि की यत्र-तत्र संभावना दिखाई देती है। जिससे फसल में हानि हो सकती है। जून मास में सत्तारूढ़ दल में फूट पनप सकती है। सत्तारूढ़ दल का वर्चस्व प्राय: समाप्त होगा। सामाजिक, राजनैतिक कार्यों में गतिरोध हो सकता है। पूर्वी राष्ट्रों में आतंकवाद को बढ़ावा मिलेगा। दुर्भिक्ष, प्राकृतिक प्रकोप से जनधन की हानि हो सकती है। जुलाई मास में यान दुर्घटनाएं, शासनतंत्र में अकर्मण्यता से चोर लफंगे, डकैत असामाजिक तत्व अपनी मन मर्जी कर सकते हैं। जिससे सभ्य समाज दु:खी रहेगा। अमेरिका, रूस, जापान, जर्मन आदि में विग्रह की स्थिति बन सकती है। अगस्त में केन्द्र सरकार सत्तारूढ़ दल के लिए समय प्रतिकूल है। मंत्रिमंडल में आकस्मिक फेर बदल हो सकता है। कतिपय राष्ट्र कर्णधारों के राजमुकुट धूमिल होकर गिर सकते हैं। धार्मिक विवाद से केन्द्र सरकार को संकट का सामना करना पड़ेगा। बुद्धिजीवी, श्रमिक वर्ग जमकर हड़ताल करने को बाध्य होगें। आगजनी, तोड़फोड़ की वारदातें होंगी। सितम्बर मास में शासन व्यवस्था को बनाये रखने के लिए ठोस कदम प्रान्तीय, केन्द्र सरकार को उठाना पड़े। नेतृत्व परिवर्तन की मांग विशेष जोर पकड़ सकती है। अल्पसंख्यकों को विशेष धन की सहायता सरकार द्वारा मिलेगी। इस मास में वर्षा कुछ थम जाती है। यत्र-तत्र खण्ड वृष्टि अवश्य हो। अक्टूबर मास में अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति तनाव मूर्ण होगी। समृद्ध राष्ट्र छोटे-छोटे राष्ट्रों में अशान्ति फैलाने के प्रयास करें। शान्ति प्रिय देश भारत वर्ष का वर्चस्व बढ़ेगा। नई योजना भारत सरकार द्वारा पारित की जा सकती है। सत्तारूढ़ दल के लिए षड्यंत्र रचा जा सकता है। नवम्बर में पूर्व-पश्चिम सीमाओं पर पुन: विवाद उठ सकता है। केन्द्रीय विभागों द्वारा हड़ताल, तोड़फोड़, आगजनी आदि की घटनायें हो सकती हैं। कहीं-कहीं पश्चिमी राष्ट्रों में अस्त्र-शस्त्रों की गूंज सुनाई देगी। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच सकती है। दिसम्बर मास में अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति तनाव पूर्ण एकदम सँभल सकती है। बड़े-बड़े राष्ट्र विश्व शान्ति के लिए वर्षान्त में तैयार रहें। उद्योग धंधों पर अनुकूल प्रभाव पड़ सकता है। वर्षान्त में पापाचार, जघन्य अपराध, नारी अत्याचार, बालहत्या आदि दुष्कर्म बढ़ सकते हैं। मंहगाई, बेरोजगारी आदि से जनता विशेष दु:खी रहेगी। प्राकृतिक प्रकोप भी संभव है।

ज्योतिष कार्यों के लिये सम्पर्क करें—

तेजी मंदी रिपोर्ट फीस

वार्षिक १००१/-, षट्मासिक ५०१/-, त्रैमासिक २५१/-, मासिक १२५/-, डाक व्यय ३०/-

जन्मपत्रिका

श्रेष्ठ १००१/-, मध्यम ५०१/-, साधारण २५१/-, कुण्डली १२५/-, डाकव्यय ३०/-

पता:- ब्रह्मर्षि ज्योतिषाचार्य पं. शंकरलाल गौड़ "शंभु कवि", ब्रजबाबा पथ, दूरा (आगरा) (उ.प्र.)-283110

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् विक्रम् २०५७ (सन् २०००-२००१ ई.) का सामूहिक व्यापार भविष्य

लेखक: ओंकार दैवज्ञ (व्यापार अनुसंधान केन्द्र, पो. हापुड़, (यू.पी.) फोन: ३१२२३८

विक्रमादित्य संवत् के आकाशी कौंसिल के चुनाव में कलियुग के ५१०१ वर्ष बीतने पर शाके १९२२ में राष्ट्रपति बुध प्रधानमंत्री गुरु होंगे। दोनों ही शुभ ग्रह हैं लेकिन शुभ ग्रह होते हुए भी दूसरे की ताकत को गिराने की फिराक में लगे रहेंगे क्यों? क्योंकि वर्षलग्न में यह दोनों ग्रह तीसरी ११वीं दृष्टि से देखते हैं तथा गुरु १ ग्रेट ग्रह का नीच प्रकृति शनि के साथ होना और नीचे मेष राशि में स्थित अच्छी बनी सरकार सैंट्रल में भीतरी घात प्रहार काबिल बरदाश्त नहीं होगा। क्योंकि ये लेख व्यापार पर हम हर वर्ष लिखते हैं अत: राजनीति मार्ग को त्यागते हुए हम यह अवश्य लिखेंगे कि किसी-किसी शेयरों पर भारी कमरतोड़ मन्दी आएगी, कब-कब आएगी यह मासिक रूप से लेखों में पढ़ना।

सस्येश सूर्य, धान्येश शुक्र, मेघेश बुध, रसेश चन्द्र, नीरसेश शनि, फलेश बुध, धनेश शनि, दुर्गेश बुध और विजय नाम संवत्सर में रोहिणी निवास तट पर, समय निवास रजक गृहे, शनि दृष्टि पूर्व में, ग्रहण २ हैं। अत: यह २०५७ वर्ष उत्तम रहेगा।

भैरव-भवानी संवाद की गोष्ठी की झलक पढ़ें

भैरव प्रश्न— भैरव पूछे भवानी से जग जननी पर जाय।
सत्तावन की साल का कह दो हाल समुंजाय॥

भवान्युत्तर— माता भैरव से कहे ग्रह चाल दर्शाय।
माता बालक पोषसी बछड़ा पोषे गाय॥
राजा बुध मंत्री गुरु व्यापार से जग हर्षाय।
विजय नाम संवत्सर हुआ होवे संसार में न्याय॥
वर्षा विश्वा पंच दश रोहिणी तट निर्धारि।
वर्षा अच्छी होएगी यह ही इस का सार॥
फल सत्तावन का कहा देख ग्रहों की चार।
ओंकार के भजन से होगा बेड़ा पार॥

टिप्पणी— ऊपर लिखी आकाशी कौंसिल तथा भैरव भावनी संवाद से सिद्ध होता है कि शासन दृढ़ लोकतंत्र काश्मीर से कन्याकुमारी तक दृढ़ होगा। अन्य देश भारत से विशेष ईर्ष्या करेंगे। व्यापार पर सरकार की गिद्ध दृष्टि मजबूत होगी।

चैत्र सं. २०५७ वि.

चैत्र— संवत् २०५७ चैत्र माह शुक्ल पक्ष ता. ५ अप्रैल सन् २००० को प्रारम्भ होकर ता. १८ भौमवार को खत्म होने से पूर्व चैत्र शुदी दशमी गुरुवार को मेषे सूर्य तेजी सूचक है। पूर्ण महीने तेजी के २६ घड़ी से पूर्व ३ दिन और बाद के ३ दिन तक भगवान् भास्कर के वर्गोत्तम में रहने से सूर्य की अधिकृत वस्तुओं में तेजी आएगी। अन्य तमाम वस्तु घी, अनाज, ज्वार, लवण, क्षार आदि पंसारट की वस्तु शेयर, सूती वस्त्र, उड़द, मूंग दालों में चैत्र शुदी १ ता. ५ अप्रैल से ता. ७ अप्रैल तक पूर्व लाईन ही यानि २०५६ के अमावस्या की लाइन चलती रहेगी। परन्तु १ नोट ध्यान रखना ये ध्यान ही लाखों का लाभ करा देगा। ता. ७ अप्रैल को गत मंगल के ऊंचे भाव गुड़, खंडसारी, चीनी में कहीं तो भारी तेजी १ ही सप्ताह में आएगी पर विशेष नोट है कि नीचे के भाव कहीं तो लास्ट मंदी ऊपर लिखी वस्तु के साथ पीतल, तांबा तथा कांशा में आएगी पर यह समय स्टाक करने की शक्ति को बढ़ाएगा तथा यहां आलू खरीद कर २ माह में ही लाभ हाजिर से उठाना। बुध ग्रह से भगवान् भास्कर आगे चलने से तेजी चलेगी या संभावना पैदा होगी। सट्टे वायदे में ता. ११ और १४ अप्रैल में तेजी में लगाना काश ना फले तो दूसरे दिन की लगाना आप लाभ में ही रहोगे। चैत्र शुदि १५ भौमवार को श्री हनुमान जयंती दिन मंगल ता. २८ अप्रैल में मनाई जाएगी पर सट्टे वायदे हाजिर के ठप्प व्यापार होंगे इस दिन तेजी मंदी ना लगाना।

वैशाख सं. २०५७ वि.

इस मास में ५ बुधवार हैं। व्यापार पति बुध से सूर्य आगे आगे तमाम माह चलने से इस फसल की तमाम वस्तु ही ता. १९ से २१ तक ज्यों की त्यों ही बिना रियक्शन के चलती रहेगी। ता. २१ को आज २ घं. ४२ मि. तक जिस वस्तु में चालू लाइन के ऊंचे भाव कटेंगे तेजी ना करे तो मंदी शुरू होगी। क्योंकि शनि ता. २२ को अस्त हो रहा है। शनि अधिकार की वस्तु १ माह तक १ तर्फा ही चलेंगी। वैशाख कृष्ण पक्ष की पंचमी तिथि बढ़ रही है। अत: सरसों, लोहा और घी में लास्ट मंदी जरूर आएगी। आगे ६५ दिन में घी देशी, बेजीटेबल में जोरदार तेजी का सुनहरी चान्स सम्पन्न होगा। मेषे शुक्र और २७ अप्रैल बैशाख बंदि ८ को दिन निकलते ही मेष बुध होने पर ५ ग्रहों का प्रवर्ज्या योग बनते ही मेष, राशि की वस्तु जैसे वस्त्र, क्लोथ मार्केट में पशमीना शाल, दुशाले, घी व तेल रखने वाले कुप्पे, मसूर, उम्दा गेहूं, राल, स्थल जन्य औषधियां, तांबा व तांबे के बर्तन, सोना, लाल सरसों, जौ, गोंद, लाल चंदन, आधुनिक लोहा, मशीनरी, आइरन, शेयर, जौ, लोहे कम्पनियों से संबंधित में मोटी लाइनें चलेंगी। ध्यान विशेष तेजी का है पर इस लाइन में जब भी मंगल शुक्रवार का दिन आवे तभी चालू लाइन के नए-नए भाव बन कर एक दिन बाद एक चौथाई रियक्शन की तारीख ५ जून तक आते रहेंगे। इस वास्ते तारुणी करना अच्छा रहेगा। कुछ-कुछ सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, शनि की वस्तुओं में असर पड़ेगा। जिसमें गुड़, आलू, मेंथा आयल भी आता है। जब बुधास्त होता है तब गली लगा कर भी सट्टे से मोटा लाभ उठाया जा सकता है। इस वास्ते १०० मंदी तो २०० तेजी लगा कर भी ता. २७ अप्रैल को २८ की लगा कर मोटा लाभ उठाना ऐसे ग्रहों के योग में अवश्य ही भारी लाइन ३ से ६ या ३६ घंटे में समाप्त होने वाली चला करती है पर एक बात ध्यान रखिये काश २७ की गली ना फले तो २८ अप्रैल को भी लगाना। ता. २४ अप्रैल से १० दिन मध्य में भाव भी मार्किट में बनेंगे। ता. १ मई को भौम भी आसमानी चक्र में अस्त होंगे। अत: मौसम में बिगाड़-झंझावत, दक्षिण पश्चिम में कुछ वर्षा योग भी होंगे। गुरु और भौम अस्त भी क्रम से ता. २८ अप्रैल को गुरु ता. १ मई को भौम अस्त होने से किसी वस्तु में मन्दी किसी-किसी में तेजी का बोलबाला होगा। धातु पदार्थ मंदे तो खाद्य पदार्थ तेज इस क्रम में मार्किट चलेंगे। वैशाख शुदी में शुक्रास्त ८ मई की शाम होने पर लाइनें मंगल व शुक्रवार को जिधर भी नए भाव बनें वे ही लाइनें सट्टे में तमाम वैशाख ता. १८ मई तक चलने का पूर्ण अनुभव सिद्ध चांस है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्येष्ठ सं. २०५७ वि.

इस मास में ५ शुक्र हैं। यद्यपि शुक्र शुभ ग्रह ज्योतिष शास्त्र में माना जाता है। इस महीने में बुधोदय, शनि उदय, गुरु उदय, सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र वृष राशि में भी प्रवर्ज्या योग बनाते हैं। इन सभी योगों से सिद्ध होता है कि इस महीने को फसल की भरपूर मंदी होने पर स्टोक करना चाहिए। जेठ बदी शुक्रवार का एक योग जेठ बदी प्रतिपदा को सोम शुक्र गुरुवार। वर्षा हो अत्यन्त ही उत्तम पैदावार। ११ गेहूं, चना, धान्य, सन मंदा होगा। चालू वायदे के सौदों में गत वैशाख की चालू लाइन ज्यों की त्यों जेठ बदी पंचमी ता. २३ तक चलेगी। तिल, तेल, घी का स्टाक लाभप्रद रहेगा। शेयर, मैंथा आयल, सूरजमुखी, सन, सूत के भाव पड़े रहेंगे। व्यापार का असली स्वामी बुध ही कहा जाता है। हल्दी, मेंहदी, चांदी, सोने में, गुड़, आलू तथा मिर्च, अलसी, मिट्टी से हीरे मोती तक और विशेष रूप से मूंग, मूंगी, ज्वार, मटर, अरहर, द्विदल मात्र, अन्न, नवस्पति, हरे रंग की समस्त चीजें, सुगंधित वस्तु, हरे रंग के कपड़े, मणियों में एक लाइन मोटी बुध चला देता है। इसलिए ता. २६ को २८ घड़ी पर आने से ता. २७ मई ११ बजे से इस ग्रह की लाइन चलेगी। शीघ्र ही इस ग्रह का असर ५ दिन में समस्त यहां की वदनी की गुड़, तेल, आलू की लाइनें जेठ शुदी ५ ता. ६ जून तक चलेगी। 'चलत अंगारको वृष्टि' ऐसा शास्त्र में लिखा है। ता. ७ जून को २४ घड़ी शाम मिथुने भौम होने से वर्षा का धीरे-धीरे रंग बनेगा। ता. १३ जून की रात मिथुने शुक्र और १४ जून को मिथुने सूर्य आने पर एक ही राशि में सूर्य आदि ४ ग्रहों का संक्रमण सट्टे, बदनें की वस्तु तथा राई, रुई आदि में भी १ तर्फा लाइन पीछे ता. ७ व ८ जून की चालू लाइनें जेठ शुदी १५ ता. १६ जून तक चलेगी। इसलिए हर रिएक्शन में लाइन का व्यापार ही करें। रिएक्शन के चक्कर में सौदा न छोड़ना। इस मास में ता. २० को २२ की चांदी व आलू, गुड़ में दैनिक ता. २६ व २९ को दैनिक गली सट्टे बढ़नी में दोतरफा लगाना लाभप्रद गली अवश्य रहेगी।

आषाढ़ सं. २०५७ वि.

इस माह में ५ शनिवार हैं और शुरू मास से सुपीरियर लाइन बाद आगे शुदी ५ के करीब से इन्फीरियर लाइन चलेगी इसलिए यह ज्योति शास्त्र से सिद्ध होता है कि लाइनें जनरल रूप से चलेंगी। इस माह ५ शनिवार का होना मुस्लिम कन्ट्रीज को नेष्ट है। ज्योति शास्त्र में ५ शनि का होना नेष्ट बताया गया है। आषाढ़ बदी की आर्द्रा भौम १५ घड़ी पर पूर्व लाइनों की पलट बदी ३ भौमवार को डेढ़ दो बजे से होगी और मौसम नरम होना भी निश्चित है, ईख की फसल को लाभ मिलेगा क्योंकि आर्द्रा भौम आषाढ़ में प्रतिपदा ता. १७ जून को आर्द्रा शुक्र दोयज चंद्रवार ता. १९ जून को आर्द्रा रवि ता. २१ जून को ३६ घड़ी सूर्य छिपने के बाद ये सभी योग मानसून की बढ़ोत्तरी करेंगे तथा यत्र तत्र पश्चिम दक्षिण में वर्षा होगी। सावधान! ता. २१ और २२ जून को नजराने तेजी मंदे फलेंगे इस माह में जिस वस्तु में मंगल को नये नीचे भाव बनेंगे। उनमें ही नई मंदी भूमण्डल की आएगी। काश लाइन के अन्तर्गत तेजी के नए भाव बनेंगे उनमें जोरदार तेजी का बिगुल बजेगा। गुड़ में ध्यान रखना, चंदी अगर नए भाव ऊपर लिखे अनुसार नीचे के बने, मंदी बने तो तेजी पर एक नोट है। काश कि घर के भाव न कटें तो मार्किट स्थिर रहेंगे। ये संदेह ध्यान रखना। आषाढ़ शुदी तिथि बढ़ी तिथि टूटी कोई खास असर नहीं होगा। ऐसा योग मार्केट को ठप्प करने वाला होता है लेकिन बुध से आगे सूर्य नारायण का चलना और वक्री बुध आर्द्रा नक्षत्र में ता. ७ जुलाई आषाढ़ शुदी छट सप्तमी की रात्रि को होना लाइन परिवर्तन कारक है। बुध के अधिकृत वस्तु में तेजी १ सप्ताह की बनेगी। बुध बहुत ही शीघ्र असर कभी २४ या ७२ घंटे में भी कर देता है। ता. ८ जुलाई आषाढ़ शुदी ८ को १६ घड़ी पर कर्के शुक्र होने से शुक्र के अधिकार की विशेष वस्तु समस्त रसादि पदार्थ गुड़, खांड, शक्कर, घी, तेल में तेजी आएगी। चांदी मंदी, रुई में पूर्व मंदी के बाद तेजी। वर्गोत्तम में ३ अंश ज्यादा असर होगा। इस ग्रह के असर से १ और बात भी स्पष्ट होती है आगे दशमी भौमवार ता. ११ जुलाई को पिछले शुक्र के नीचे भाव कटें तो मंदी १ ही सप्ताह चलेगी। काश ऊंचे के भाव क्रोस हों तो एकदम जोरदार तेजी पुष्य शुक्र ता. ११ जुलाई को होने के बाद ता. १५ जुलाई को बैठने से सूर्य के अधिकार की वस्तु मोती, मणि, सोना, तांबा, रेशमी वस्त्र, अस्त्र, चर्म की वस्तु, तुष, धान्य में तेजी आएगी।

श्रावण सं. २०५७ वि.

तिलहन, दलहन, जूट, पाट, वारदाना की लास्ट मंदी इस माह में धारते हैं क्योंकि इस माह ५ ही सोमवार ५ ही भौमवार हैं, सुभिक्ष दुर्भिक्ष की खींचातानी इस माह में अवश्य होगी। श्रावण वदि २ तक सभी वस्तुओं में आषाढ़ माह की ही चालू लाइनें चलती रहेंगी। कांशी, पीतल, तांबे, स्टील में जब भी मंदी आए खरीदो। शेयरों में तो मार्केट सुस्त रहेंगे। गुड़, आलू, तेल, तिलहन के वायदों में ता. २१ जुलाई को शुक्रवार के दिन पिछले मंगलवार के दिन नीचे से नीचे भाव १ ही सप्ताह के बने न कटें तो भारी तेजी ६ से ९ दिन में आएगी। काश कट जायें तो चांस विपरीत दशा में विशेष आलू के सट्टे में जानें। जुलाई — ता. २२ को छिपे दिन पर कर्के भौम होने पर सोना, चांदी के अलावा स्टील, अल्मोनियम में और समस्त लाल वर्ण की वस्तु तेजी पर होगी। श्रावण शुक्ल में प्रतिपदा क्षय है और इसी दिन भौमवार सिंहे शुक्र है। इस वास्ते मंदी में ब्रेक लगेगा और सिंहे शुक्र वर्षा में रुकावट करेगा। शुक्र के अधिकार की वस्तु यानि समस्त श्रृंगार की वस्तु तेजी पर जायेगी। चांदी ज्यादा, सोना कम, गेहूं सरबती, चना, जौ, मजी, लाल चन्दन, सितावर, मिर्च काली भी, लाल भी, रसादि पदार्थ तेज, खंडसारी, खांड, सल्फर को हर मंदे में खरीद कर तारुणी करना और लाभ मिलने पर सौदा गाये करना अच्छा रहेगा। तिल्ली, बिनौला, सोयाबीन, चावल उम्दा किस्म का ता. १० अगस्त को लेना खरीद के भाव से केवल चौथाई से ज्यादा रियक्शन न आये तो ६ से १४ ही दिन में सवाया लाभ होगा। इस माह में ता. ९ अगस्त को १० के फिर ११ अगस्त को १२ अगस्त के नजराने गुड़, तेल, चांदी में लगाने विशेष लाभप्रद रहेंगे।

भाद्रपद सं. २०५७ वि.

इस माह की चाल बड़ी ही अनोखी रहेगी। इस प्रकार क्यों लिखा है एकतर्फा तो सट्टे में मंदी कारक ग्रह बनते हैं दूसरी ओर तेजी के भी अपना जोर दिखायेंगे जब ऐसा संयोग बनता है तो मार्केटों में व्यापारी गड़बड़ी किया करते हैं। भादों में ५ राशि का सूर्य ५ ही राशि का बुध होने से पूर्वा वायु का संचार ज्यादा रहेगा। उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश में पूर्वी हवा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चलने पर अच्छी वर्षा होती है। ता. २५ अगस्त की रात्रि को उदय भौम जिसका असर ता. २६ को ११ बजकर ७ मिनट से होगा। वायु, वर्षा यत्र तत्र होगी और ता. २६ अगस्त को कन्या शुक्र दिन निकलने से ५ घड़ी पर पड़ने से रेशमी वस्त्र और सूती वस्त्र शृंगार सामग्री मणी, हीरा, आभूषण सहित, चांदी जलज वस्तु, स्फटिक, दाल चीनी, त्रिफला, चोब चीनी, पठानी लोध, जायफल, अगर, वच आदि किराने की बहुधा वस्तुओं में मन्दी आयेगी। इसके खिलाफ १ नोट है—जो भी सट्टे वायदे भारत में शेयर और मेंथा आयल के अलावा जैसे चना, गुड़ में चल रहे होंगे उनमें काश मंगल ता. २९ से बने नीचे भाव न कटें तो भारी तेजी आयेगी वर्ना न कटें तो विपरीत व्यापार करके मोटा लाभ उठाना। भाद्रपद शुक्ल में कन्या राशि गत शुक्र का असर और इसी पक्ष में कन्या राशि का बुध नीच राशि शुक्र से बुध भी दोस्ती का हाथ बढ़ायेगा इस वास्ते वदि भादों को शुक्र भादों वदि १२ को आ चुका है और शुदि भादवां में राशि में ता. ४ सितम्बर को १७ घड़ी पर आने से पूर्ण तेजी मंदी का असर लाइन की तीक्ष्ण गति से २ दिन में ही समाप्त होगा और ता. ६ सितम्बर को बुधाष्टमी के दिन से सभी वस्तुओं में लाइन परिवर्तन का योग तमाम महीने चलेगा यह माह भादों का बुध के दिन ता. १३ सितम्बर को समाप्त हो जायेगा।

आश्विन सं. २०५७ वि.

इस महीने में पांच गुरुवार और पांच ही शुक्रवार हैं दोनों ही गुरु हैं। गुरु यानि वृहस्पति देवताओं के गुरु हैं और शुक्र राक्षसों के गुरु हैं इसलिए कुछ वस्तुओं में जोरदार तेजी और कुछ वस्तुओं में जोरदार मंदी आने के चांस बनते हैं। व्यापारिक वायदे.सट्टे में लगते ही महीने के १४ से १९ सितम्बर तक पूर्व लाइन ही चलती रहेगी। लेकिन ता. २० को चाहे गुड़ हो या आलू या तेल, सरसों आदि हो। जिन वस्तुओं के पिछले शनिवार के बने ऊंचे भाव कट जायेंगे तब जोरदार तेजी आयेगी अगर नीचे के भाव कटे तब मंदी बहुत ही जबर्दस्त अन्दाज से ज्यादा आ सकती है। एक बात ध्यान रखना कि ता. २५ सितम्बर पर तिथि का टूटना तथा हस्ते रवि होना दालों में तेजीकारक है लेकिन अरहर, राजमां और लोभियां, मटर ये सभी चीजें उल्टी चलेंगी। गुड़, चीनी, खांड, हाजिरी में लास्ट तेजी आकर नवरात्रि में जब वक्री गुरु होंगे तो ता. ३० सितम्बर को सुबह हो रहे हैं एकदम मंदी करेंगे और सोना चांदी में अगर ता. ३० सितम्बर को १ बजे तक नीचे भाव क्रास न हुए तो मंदी रुक जाएगी लेकिन नोट के ऊपर अवश्य ध्यान करते रहें। शेयरों में भी विजय दशमी पर आखिरी तेजी आयेगी क्योंकि ता. ७ अक्टूबर को विजय दशमी के बाद तीन दिन तो मार्किट स्थिर रहेंगे उसके बाद लिवाल शेयरों का भी निकलेगा। खास तौर से प्लास्टिक बाजार तेजी पर जायेगा। लोहा, इस्पात पड़ा रहेगा। किशमिश, बादाम, पिस्ता, अंगूर, काजू इस महीने में लास्ट के दस दिन में स्टॉक अवश्य कर लेना।

कार्तिक सं. २०५७ वि.

इस माह में ५ शनिवार हैं जो अशुभ हैं। इस तमाम महीने में एक ही चांस ऐसा आयेगा जो व्यापारी गली लगा कर लखपति बन सकता है क्योंकि व्यापारपति बुध अस्त-पश्चिम दिशा में हो रहा है। मोटी चाल चलाने वाला और व्यापार जगत में हलचल मचाने वाला और व्यापारियों में बेईमानी कराने वाला इससे बढ़िया कोई ग्रह नहीं है। इस माह में महालक्ष्मी पूजन ता. २६ अक्टूबर को है अतः हम आगाह करते हैं कि ता. १७ अक्टूबर को तुला के सूर्य नीच राशि में आयेंगे-और बुध से आगे आगे जो चल रहे थे वे पुनः पीछे और फिर आगे चलेंगे। तेजी मंदी का उत्तम चांस ता. २४ मंगलवार को है इस दिन ५०० मंदी भी लगाने से अवश्य लाभ होने की धारणा है। वायदा गुड़, तेल, चांदी, सोना आदि व हर प्रकार के शेयर एक चीज मंदी तो एक वस्तु मंदी इस प्रकार से चलेगी। अतः ता. १४ अक्टूबर को अगर सोने में न्यूनतम स्तर के भाव मिलें तब अवश्य खरीदो और चांदी में भी सुधार होगा। ता. १७ अक्टूबर मंगलवार को तिथि टूट गई है और सूर्य नीच राशि में पदार्पण कर रहे हैं साथ ही वक्री बुध होकर ता. २४ को पश्चिम में अस्त हो जाएंगे। ऐसे अवसर पर गुड़ में जबर्दस्त मंदी आगाऊ सौदे में न हो कर चालू सौदे में ज्यादा आयेगा। विशेष रूप से खाद्य तेल, रिफाइन्ड, सरसों, पक्की घानी, सोयाबीन, खाद्य तेल-महुआ, अलसी, अरण्डी, नीम में बेचान बोल कर लाभ उठाना। कोचीन—कालीमिर्च और जायफल, चाय—इनका स्टाक करना इस महीने में अच्छा रहेगा।

मार्गशीर्ष सं. २०५७ वि.

इस माह में पांच रविवार और पांच ही सोमवार बहुत ही अजीब चाल चलाएंगे। शुक्र का उदय पश्चिम में होना इस महीने की फसल की वस्तुओं में मंदी कारक है जैसे गुड़, ढईआ, खण्डसारी, चीनी हाजिर और बासमती चावल, इनका स्टाक अभी मत करना। इस महीने में नवमी का टूटना भी मंदी कारक है इसलिए कार्तिक के महीने की चालू लाइन तिलहन और तेल सरसों, सोयाबीन, सूरजमुखी, मूंगफली में मंदी का बोलबाला अवश्य होगा। आलू में २१ नवम्बर के ११ से १ बजे तक अगर पिछले शुक्रवार के बने ऊंचे भाव कटें तब तेजी आ सकती है वह भी ३ या ५ दिन लेकिन अगर न कटें तब १५ दिन में ही जोरदार लाइन मंदी की ऐसी आएगी जैसे कि किसी किसी वस्तु में रुपए की थैली रह जाएगी और कहीं-कहीं सट्टा वायदा वाले मार्केट को बंद कराने की कोशिश करेंगे। काली रंग की वस्तु लोहा स्पात के शेयर तथा जावित्री, लाल मिर्च, उड़द दाल, उरद की उत्तम फसल होने से जोरदार मंदी के साथ परमल चावल, बासमती चावल, सभी वस्तुओं में मंदी आयेगी। चालू चांदी-सोना के वायदे मार्केट तथा प्लास्टिक में बदि सप्तमी से नौ दिन यानि ता. १८ नवम्बर से चांस सम्पन्न होंगे। हम आगाह करते हैं कि लाहा व इस्पात, सरिया में मंदी आने पर स्टाक इसी माह में कर लेना क्योंकि आगे जबर्दस्त तेजी आयेगी। इस माह में लास्ट सप्ताह में जो कि ४ दिसम्बर से १ सप्ताह का समय होगा, उसमें गेहूं, चना, ज्वार, उरद, दालें (सभी प्रकार की) तिल, सरसों, बिनौला और सूखी मेवा, पोस्तादाना, मखाना सभी का स्टाक करना आगे ४५ दिन में लाभ देगा।

पौष सं. २०५७ वि.

इस माह में ५ मंगल हैं और चांद का दर्शन बुधवार को है। पिछले माह जो हमनें इशारा किया था उन वस्तुओं में बाजार पड़े भी रहें तो चिन्ता न करना क्योंकि व्यापारपति ५ बुध अगले महीने आ रहे हैं। जो व्यापारियों को लाभ देंगे। पौष कृष्णा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रतिपदा मंगलवार ता. १२ दिसम्बर तथा अगले दिन तुलायाम् भौम और इसके भी एक दिन बाद धनु की संक्रांति जो किशमिश, कंधारी, बादाम, पिस्ता, काजू, अखरोट में मंदी कारक है यह मंदी शुरू में ही एक हफ्ता चल सकती है इसलिए ध्यान रखना कि सट्टा आलू, गुड़ और तेल सरसों आदि में ता. १५ दिसम्बर को शुक्र के दिन पिछले मंगलवार के नीचे भाव क्रास हों तब बेच देना। ता. २४ दिसम्बर रविवार को स्वात्याम् भौम होने से लन्दन, शिकागो आदि में चीनी की मांग उठने की संभावना है। चांदी में मंदी आने पर खरीदो। पौष शुदी में पूर्वाषाढ़ायाम् बुध और इसी नक्षत्र पर सूर्य एक साथ एक राशि पर भ्रमण करेंगे इसीलिए खाद्य तेलों में नरमी आयेगी लेकिन विश्व में रुई के भाव बढ़ने की पेसीन गोई हम करते हैं, इधर दक्षिण हैदराबाद आदि की तथा आंध्र प्रदेश की ओर गुड़ की मांग बढ़ेगी। चालू मुजफ्फर, दिल्ली, हापुड़ के सट्टा बाजारों में छह जनवरी सन् २००१ का पहला चांस सम्पन्न होगा अगर इस दिन ऊंचे के भाव क्रास हों तब खरीदना अन्यथा रुक जाना।

माघ सं. २०५७ वि.

इस मास में ५ बुधवार और ५ ही गुरुवार हैं और माघ बदि चौथ शनिवार मकर संक्रांति रविवार में बैठने से तेजी कारक है। चांदी हाजिर व सट्टा और सोना में पहले तो बाजार पड़े रहेंगे लेकिन संक्रांति के बाद ता. १५ जनवरी से आगे तेजी का योग होने से खरीदने का काम करना चाहिए। माघ माह के लगते के साथ ही शुरू में तो मार्केट पड़े रहेंगे लेकिन दक्षिण की मांग निकलने से गुड़ में तेजी आयेगी। बस एक बात ध्यान रखना कि माघ वदि छठ व सप्तमी एक हैं इसलिए माघ वदि अष्टमी मंगलवार को जिस बदनी सट्टे या शेयर के पिछले शुक्रवार के बने नीचे भाव नहीं कटें तब तेजी आएगी। अगर कट जाएं तब मार्केट की स्थिति डांवांडोल हेगी और इसी दिन के पीरियड में रिफाइन्ड तेल व वनस्पति घी में मंदी आएगी। माघ वदि नवमी की लाइन पूरे एक सप्ताह चलेगी। माघ बदि अमावस्या बुधवार को गुरु मार्गी होंगे इसलिए माघ शुदि एकादशी ता. २५ जनवरी से बसन्त पंचमी ता. २९ जनवरी तक देशी घी में जोरदार मंदी और वायदे सट्टे मंदे होंगे, लेकिन अन्दरूनी टोन तेजी की बनी रहेगी क्योंकि माघ शुदि नवमी घट गई है इसलिए माघ शुदि त्रयोदशी मंगलवार ता. ६ फरवरी तक पहली बनी लाइन ही ज्यों की त्यों चलती रहेगी। पोस्तादाना, सोंठ, मेंथी और बादाम, छुआरा, काजू में स्टाक निकालना अच्छा रहेगा।

फाल्गुन सं. २०५७ वि.

इस मास में ५ शुक्रवार सफेद वस्तुओं में आखिरी मंदी करेंगे इसलिए इस माह में लास्ट मंदी देशी घी, चावल बासमति तथा सफेद दाल में आयेगी अवश्य ही यह महीना स्टाक करने का उत्तम रहेगा। फाल्गुन बदि द्वादशी सोमवार ता. १९ फरवरी को पूर्व दिशा में बुधोदय होना खंडसारी चीनी के स्टाक करने का अच्छा चांस देगा। फाल्गुन बदि पंचमी सोमवार कुंभ संक्रांति युवा अवस्था में बैठने से साथ ही शुक्रोदय पश्चिम में होने से जिन वस्तुओं में बहुत जोरदार मंदी आ रही हो उनमें लिवाल करना अच्छा रहेगा। मखाना, किशमिश, पिस्ता, छुआरा, लोहा, इस्पात भी लेना अच्छा रहेगा। सट्टे, बदनी में लगते ही फाल्गुन चांदी हाजिर, सोना, गुड़, सरसों में प्रथम तो माघ माह की लाईन ही चलती रहेगी लेकिन कुम्भ संक्रांति लगने के बाद फाल्गुन वदि छठ ता. १३ फरवरी को जिन वस्तुओं में भी गत शुक्रवार के बनें नीचे भाव कटें बेचना वरना खरीदना। हमारा विचार हाजिर-सूरजमुखी, बिनौला, चावल, तेल में भी यही है कि अगर ता. १६ फरवरी को पिछले मंगलवार के नीचे भाव न कटें तब खरीदना वरना रुक जाना चाहिए। फाल्गुन शुदि में चन्द्रदर्शन शनिवारी और ता. २७ फरवरी को मार्गी बुध चालू वायदे सट्टे के सौदे में खरीद करनी चाहिए। हाजिर चावल, मोंठ, मसूर, अरहर का स्टाक करना लाभप्रद रहेगा। सफेद वस्तु, रुई, बिनौला आदि का स्टाक करना आगे लाभप्रद होगा।

चैत्र सं. २०५७ वि.

इस माह के लगते के साथ ही ता. १० मार्च से १२ मार्च तक सट्टे बदनी के तमाम व्यापारों में कोई खास लाईन नहीं बनेगी। लेकिन ता. १३ मार्च को मंगल के दिन जिन वस्तुओं में भी चाहे वह भारत में कहीं भी हों के सट्टे बदनी के व्यापारों तथा शेयर बाजारों में अगर पिछले शुक्रवार के बने ऊंचे भाव कट जाते हैं तब तेजी आएगी न कटने पर मार्केट विपरीत चल पड़ेगा वहां की चालू लाईन अगले संवत् २०५८ विक्रम में प्रवेश कर जायेगी। यह ध्यान रखना कि चैत्र बदी अष्टमी शनिवार को उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र में रवि ४० घटि पर और शतभिषा में बुध रात्रि को ५५ घटी पर प्रविष्ट होने से दोनों ग्रहों में से एक जोरदार मंदी तथा दूसरा जोरदार तेजी चाहते हैं ऐसे अवसर पर ध्यान रखना चाहिए कि कभी कभी मार्केटों में घटाबढ़ी ही निकल जाती है लेकिन गुड़, सट्टा या चांदी या तेल सरसों, मेंथा, आयल में उपरोक्त ग्रह आने के बाद ता. १९ मार्च में ठीक ११ बजकर २० मि. पर जिस ओर लाईन चल पड़े वही लाईन ता. २५ मार्च तक चलेगी इसमें कोई सन्देह नहीं है क्योंकि ता. २५ मार्च चैत्र बदि अमावस्या तक ही यह फलित लिखा जा रहा है। अमावस्या दो हो रही हैं ये मन्दी कारक हैं लेकिन यह मंदी सिर्फ ५ या ४ दिन ही चला करती है इसके बाद जोरदार तेजी आया करती है इसलिए ऐसे अवसर पर आलू, मिर्च, सौंठ, धनिया, मेंथी, पोस्तादाना में तेजी अवश्य आयेगी। गुड़, सट्टा में मंदी का दौर भी लास्ट होगा और चावल, चीनी का स्टाक भी अवश्य करना क्योंकि अगले संवत् में १ सप्ताह बाद ही शुक्र का उदय होने पर तेजी का योग जोरदार बनता है।

अनमोल चांस मंगाइये

वायदा व हाजिर के ऊंचे व नीचे भावों सहित चांस यदि आपके पास हैं तो व्यापार लाभप्रध होगा व भारी हानि से बचोगे। इस प्रकार के चांस ओंकाराश्रम व्यापार अनुसंधा केन्द्र वर्षों से देता आ रहा है। हर हाजिर या वायदा वस्तु के चांस जैसे सोना, चांदी, शेयर, तांबा, स्टील, पीतल, गेहूँ, जौ, चना, मैंथा, रुई, सूत, सरसों, अरण्डा, गुड़, आलू हर प्रकार की दालों, पंसारठ की वस्तु, जूट, पाट, बारदाना, चीनी, खांडसारी, सींगदाना, तेल आदि एक वस्तु के १ वर्ष के चांस की फीस ५२५/- छः माह की ३०१/-, तीन माह की फीस २०१/- है। शेयर व वायदा वस्तु एक माह की फीस २५०/- है। पूरे वर्ष की फीस २५०१/- है। ये सभी चांस हस्तलिखित होंगे एक वर्ष की "शांडिल्य व्यापार भविष्य पुस्तक" जिसमें दैनिक चांस, लम्बी-लम्बी धारणा के चांस आदि लगभग १५० पेजी मूल्य ८१/- है। रुपये अग्रिम भेंजे। रजिस्ट्री शुल्क अलग से भेंजे।

पता-श्री ओंकार प्रसाद एवं विश्वबन्धु शर्मा
आयुर्वेद रत्न एवं एम.काम.एल.एल.बी.
मोहल्ला-२१-२२ ब्रह्मनान, पो. हापुड़, जिला-गाजियाबाद (उ.प्र.),
फोन-३१२२३८ है, पिन-२४५१०१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सन् 2000 ई. में ग्रहों का शेयर मार्केट पर प्रभाव

निर्देशक-डॉ. वसंतलाल व्यास, श्री अम्बा ज्योतिष पीठ, राया (मथुरा) उ.प्र.-281204 दूरभाष : 0565-833353

जनवरी—ता. १ नववर्ष समस्त व्यापारियों को शुभ व मंगलमय हो। ता. ४ भाव उठकर गिरें। ता. ७ तेजी का मान करें। ता. १० भावों में सुधार हो। ता. १५ भाव उठकर गिरें। ता. १९ भावों में आंशिक मन्दी। ता. २१ भावों में सुधार, नवीन शेयर भी बाजार में आयें। ता. २४ भावों में तेजी। ता. २८ भावों में तेजी की चाल हो। ता. ३० बाजार रुख में परिवर्तन। नई नीति को बल मिले।

फरवरी—ता. १ शेयर बाजार में तेजी का रुख हो। ता. ५ तेजी को बल। ता. ८ भावों में चमक बने। ता. ११ उतार चढ़ाव के साथ मंदी। ता. १३ भावों में सुधार। ता. ८ भावों में मन्दी का योग। ता. २६ शेयर सर्पमुखी चाल से तेजी का मान करें। ता. २८ यकायक तेजी का चाल में सुधार।

मार्च—ता. १ बाजारों में में एकतरफा सुधार होगा। ता. ४ बाजारों में मन्दी का प्रभाव हो। ता. ६ शेयर बाजार मजबूती में उठें। ता. १० शेयर बाजार गिरकर शीघ्र तेज हो। ता. १२ बाजारों में तेजी को बल मिले। ता. १५ दो सप्ताह में बाजारों में गर्मी आये। ता. १६ बाजार भावों में विशेष घटाबढ़ी चले। ता. २७ बाजार रुख में परिवर्तन होकर मान गिरे। ता. ३० भावों में मजबूती का रुख बने।

अप्रैल—शेयर बाजार में अच्छी तेजी और मन्दी को बल प्राप्त होगा। प्रारम्भ में बाजार में मन्दी को बल प्राप्त होगा। ता. ४ भावों में घटाबढ़ी चले। ता. ६ भावों में सुधार हो। ता. ११ भावों में तेजी। ता. १३ भावों में गिरावट। ता. १५ शेयर सर्पमुखी चाल में उठें। ता. २१ भावों में गिरावट। ता. २३ भावों में मन्दी का प्रभाव हो। ता. २६ आयरन शेयरों में तेजी को बल । ता. २९ सावधान बाजार में अच्छी गिरावट।

मई—ता. १ भावों में चमक बने। ता. ५ घटाबढ़ी के साथ तेजी। ता. ११ बाजार भावों में घटाबढ़ी अधिक चले। ता. १४ बाजार रुख में परिवर्तन। ता. १९ भावों में मन्दी का प्रभाव हो। ता. २१ बाजार भावों में सुधार। ता. २४ आंशिक गिरावट। ता. २५ चलती लाइन में सुधार। ता. २८ विशेष घटाबढ़ी के साथ भाव गिरावट का मान करेंगे।

जून—ता. २ भावों में सुधार हो। ता. ५ भावों को बल प्राप्त हो। ता. ७ भावों में गिरावट बने। ता. १० अच्छी गिरावट। ता. ११ भावों में सुधार। ता. १६ तेजी को बल मिले। ता. १८ प्रथम गिरकर तेज हों। ता. २६ भावों में तेजी का मान होगा। ता. २८ घटाबढ़ी के साथ भाव अस्थाई मान कर भावों में अच्छी तेजी को बल मिलेगा। नवीन शेयर भी बाजार में आवें।

जुलाई—ता. १ घटाबढ़ी का रुख रहेगा। ता. ४ शेयर बाजार में तेजी को बल। ता. ८ सर्पमुखी चाल में गिरें। ता. ९ भावों में मन्दी का मान। ता. १० भावों में सुधार और तेजी बने। ता. १६ भावों में गिरावट। ता. १७ भावों में मन्दी का मान अस्थायी है। ता. २० प्रथम तेजी में आकर भावों में आलस्य। ता. २८ सर्पमुखी चाल से तेजी। ता. २९ शेयर बाजार में तेजी बने।

अगस्त—ता. १ सप्ताह में शेयर बाजार में तेजी बने। ता. ९ शेयर गिरकर तेजी का मान करें। ता. १० भावों में मन्दी को बल, बिकवालियों में परेशानी। ता. १५ भावों में आंशिक सुधार। ता. १९ तेजी का मान हो। ता. २४ वायदा व्यापार में अस्थिरता में भाव उठें। ता. २५ बाजार में आलस्य। ता. २६ अगस्त की लाइन बदले। ता. ३० तेजी का मान।

सितम्बर—ता. १ भावों में तेजी का मान हो। ता. ५ सभी शेयरों में मन्दी का झटका सावधानी से कार्य करें। ता. ८ बाजार भावों में तेजी को बल मिले। ता. १४ शेयर दो सप्ताह तक तेजी का मान करें। ता. १७ शेयर सर्पमुखी चाल में तेजी का मान करें। ता. २१ भावों में चमक बने। ता. २४ भावों में आलस्य आये। ता. २९ बाजार भाव प्रथम गिरकर तेजी बनाये रखेंगे।

अक्टूबर—ता. ६ भावों में प्रथम मन्दी रहकर तेजी का मान। ता. ७ बाजार में तेजी का मान। ता. ११ भावों में मन्दी का मान। ता. १३ बाजार भावों में गिरावट। ता. १५ शेयर बाजार में सुधार। ता. १९ वर्षा हो तो प्रथम मन्दी में आकर भावों में तेजी। ता. २१ पूर्ण सुधार। ता. २८ चलती लाइन पलट जावे। ता. ३० सर्पमुखी चाल में मन्दी, बाजार रुख देखकर कार्य करें।

नवम्बर—ता. १ शेयर बाजारों में सर्पमुखी चाल से भावों में गिरावट बनेगी। ता. ५ भावों में सुधार आकर तेजी आयेगी। ता. ९ शेयर बाजार में तेजी को बल। ता. ११ भावों में तेजी को बल। ता. ११ भावों में आंशिक गिरावट। ता. १७ भावों में सुधार हो। ता. २० सर्पमुखी चाल से तेजी का मान। ता. २५ बाजारों में मन्दी का मान ता. २९ शेयर बाजार की चलती लाइन बादल जाना चाहती है अतः बाजार रुख देखकर कार्य करें।

दिसम्बर—ता. २ शेयर मार्केट गिरकर तेजी का मान करे। ता. ६ सर्पमुखी चाल से सुधार के साथ तेजी। ता. १६ चलते भावों में परिवर्तन, मंदी कोबल। ता. २० बाजारों में आलस्य बने। ता. २३ बाजारों में कुछ सुधार आयेगा। ता. २८ दिसं. १५ दिन में तेजी आकर लाभ दें। ता. २६ बाजारों में साधारण मन्दी बने।

क्या फरवरी, 2000 में 30 दिन होंगे ?

(FUTURE POINT)

अरुण कुमार बंसल

कई अखबार व पत्रिकाओं के अनुसार यह प्रकाशित हुआ है कि सन् 2000 में फरवरी माह तीस दिन का होगा। ऐसा 2000 वर्ष में पहली बार होगा। शायद यह केवल एक भूल ही है। सत्य क्या है और क्यों ऐसा है—आएं, इसे देखें और समझें।

हमारी पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर 365.242196 दिनों में पूर्ण करती है। इसके अनुसार यदि हम वर्ष 365 दिन का लेते हैं तो प्रतिवर्ष हम .242196 दिन आगे चलते जाएंगे। सौ साल में 24 से भी अधिक दिनों का अन्तर आ जाएगा एवं Vernal Equinox का दिन जो कि 21 मार्च के लिए Fix माना हुआ है बदलता रहेगा। ऋतुएं भी समय से न आकर देर से आएंगी।

इस अन्तर को कम करने के लिए लीप वर्ष का प्रावधान किया गया है। हर चौथे वर्ष वर्षमान 366 दिन का होता है। इस प्रकार average year 365.25 दिन का होता है। यह पृथ्वी की गति से 11 मिनट 14 सेकेण्ड अधिक होता है। इस अन्तर को भी समाप्त करने के लिए पोप ग्रेगोरी ने 1582 में की Correction की और हर शताब्दी में वर्ष को 366 की बजाय 365 दिन का ही रखा। अर्थात्, सन् 1800 या 1900 आदि केवल 365 दिन के ही थे, न कि 366 दिन के थे। लेकिन इस Correction के कारण वर्ष का मान 365.24 हो गया। अब यह पृथ्वी की स्पीड से .022196 दिन अथवा 3 मिनट 10 सेकेण्ड छोटा हो गया।

इसको बड़ा करने के लिए पोप ग्रेगोरी ने 400 वर्ष में एक को लीप वर्ष बना दिया अर्थात् वर्ष 1600 या 2000 में वर्ष मान 366 दिन का निर्धारित किया गया। इससे वर्षमान 365.2425 दिन हो गया जो कि पृथ्वी की स्पीड से केवल .000304 दिन अर्थात् 26 सेकेण्ड बड़ा है। इस अन्तर को यदि एकत्रित करते रहें तो करीब 3200 वर्ष से भी अधिक में एक दिन का अन्तर आएगा। इस अन्तर के लिए भी 3200 वर्ष बाद एक दिन घटाया जा सकता है। लेकिन ग्रेगोरियन कलैण्डर में इसका कोई प्रावधान नहीं किया गया है। अतः इसको अभी ऐसे ही छोड़ दिया गया है।

यदि इसका Correction कभी किया भी जाएगा तो वर्ष को एक दिन के लिए घटाया जाएगा, न कि एक दिन बढ़ाया जाएगा। अर्थात् एक लीप वर्ष को सामान्य वर्ष बना दिया जाएगा। उपरोक्त कथनानुसार यह विदित है कि सन् 2000 में वर्ष 366 दिन का होगा, न कि 365 दिन का, जैसे कि वर्ष 1800 या 1900 रहे। वर्ष 2000 का 367 दिन का होना तो बिल्कुल नामुमकिन है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २०५७ वि. तदनुसार सन् २०००-२००१ ई. में चन्द्रोदय (चन्द्रदर्शन) का व्यापर पर प्रभाव

ले.—डा. बसन्तलाल व्यास (स्वर्ण रजत पदक प्राप्त) राया, मथुरा (उ. प्र.) दूरभाष:

चैत्र—नव संवत् २०५७ वि. को नवी नव प्रथम चन्द्रमा ६ अप्रैल सन् २००० को उदय हो रहा है यह चन्द्रोदय ३० मुहूर्ती है। इसका दक्षिण शृंग उच्च होगा सोना. चाँदी. शेयर. सर्पमुखी चाल में चलकर तेज होंगे। गेहूँ. जौ. चना. मटर. अरहर. दालवाना में तेजी। खोपरा. सोयाबीन. अरण्डी के भाव तेज। ज्वार. बाजरा मक्का के भावों में गिरावट बनेगी। गुड़. चीनी. शक्कर . चीनी मिश्री. शक्कर के भाव तेज वर्षाकाल में वर्षा अच्छी होगी। वर्षा व अन्य प्राकृतिक प्रकोप से फसल में हानि। प्रजा को सुख शान्ति तो मिलेगी लेकिन जीवन निर्वाह में प्रजा महंगाई से त्रस्त रहेगी।

वैशाख—४ मई सन् २००० ई. को वैशाख शुक्ल पक्ष में नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है यह चन्द्रदर्शन ४५ मुहूर्ती है इसका दक्षिण शृंग उच्च होगा प्रत्येक जिन्स में मन्दी का झटका लगेगा। सोना. चाँदी. ताम्बा. पीतल के भावों में गिरावट आयेगी सन. सूत. पाट. कपास. बिनौला. पाट. बारदाना प्रथम गिरकर तेज रहेंगे। राज विग्रह मंत्रि परिषद में फेर बदल व विधान सभाओं व राज नेताओं में वाद-विवाद. आरोप प्रत्यारोप व अशोभनीय घटनायें घटित होंगी। राजनेताओं के स्वधर्म में वृद्धि होगी जौ. मटर. चना. सोंठ के भावों में विशेष घटाबढ़ी चलेगी। अफीम. पोस्त. बादाम. अखरोट में तेजी। तिल. तेल. अरण्डी के भाव आसमान को छू लेंगे। मूंग. दालवाना. अरहर. उड़द. मूंग. मसूड़. चना. मिर्च. इलाइची. बारदाना व किराना के भावों में तेजी छा जायेगी।

ज्येष्ठ—३ जून सन् २००० ई. को ज्येष्ठ मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है यह चन्द्रदर्शन ३० मुहूर्ती है उदय समय इसके दोनों शृंग समान रहेंगे जो प्रत्येक जिन्स में तेजीकारक है। चना. जौ. अरहर. गेहूँ के भाव सर्पमुखी चाल से तेज, शेयर व बिनौला की चमक में कमी आयेगी। दूध. दही. घी. शहद व अन्य रस पदार्थों की न्यूनता तेजी में वृद्धि करा देगी। सोना. चाँदी. पारा. स्टील , ताम्बा. कांसा, पीतल के भावों उतार चढ़ाव से तेजी रहेगी। ज्वार, बाजरा. मक्का. मोंठ, धनिया, आलू, प्याज, सेव, नींबू. कपास. कपासिया के भाव पुन: अपनी चमक बना लेंगे। गुड़. शक्कर, चीनी, खाँड़. सरसों. सोयाबीन. तेल, बिनौला, अलसी. चपड़ा. लाख, गेरू, पत्थर, लहसुन. के भाव घटबढ़ कर सम रहेंगे।

आषाढ़—२ जुलाई की शाम को आषाढ़ मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। इसके दोनों शृंग सम रहेंगे तथा चन्द्रमा का रंग श्वेत वर्ण होगा। यह चन्द्रदर्शन ४५ मुहूर्ती है। यह सब प्रकार की जिन्सों में घटा बढ़ी कराकर एक चतुर व योग्य व्यापारी को भी चक्कर में डाल देगा। प्रजा में विग्रह. अशांति व असन्तोष को बल मिलेगा। गुड़. चीनी. शक्कर के भावों में उठाव आकर गिरावट बनेगी। रुई. रेशम. ऊनी. वस्त्र, दूध, रस. चीनी में आंशिक गिरावट आयेगी। कुछ समय के अवरोध के बाद वर्षा में वृद्धि. समय व कुसमय की वर्षा से जनता को कष्ट। मक्का, सोंठ, ज्वार, कपास. लाख. चपड़ी. पत्थर गेरू में सुधार। मिर्च. हल्दी. हींग. धनियां व किराना बाजार तेज रहेगा।

श्रावण—१ अगस्त सन् २००० को श्रावण मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है चन्द्रोदय ३० मुहुर्ती है व इसके दोनों शृंग सम रहेंगे। चावल. चना. उड़द. मूँग. अरहर के भावों में वृद्धि होगी। मूंगफली. सोयाबीन, खोपरा में मन्दी व प्रथम सप्ताह बाद तेज। गेहूँ, चावल. चना, मक्का के भावों में गिरावट। सोना २/- ५/- चाँदी ३/- ४/- मन्दी बन कर तेजी की माँग करेगी। वर्षा में अवरोध से आलू. प्याज, लहसन के भावों सुधार। रुई २०/- २५/- सूत. सन. पाट. बारदाना, कपासिया के भाव सर्पमुखी चाल में तेजी बना लेंगे। प्रजा में रोग. शोक की वृद्धि होगी। मूँगा, मोती, जवाहरात के भाव तेज। टाट के भावों में सुधार आयेगा। गुड़, शक्कर. चीनी. मिश्री के भावों में तेजी। हल्दी. जीरा. रांगा. काँसी के भावों में तेजी को बल मिलेगा।

भाद्रपद—३० अगस्त सन् २००० को भाद्रपद मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है यह चन्द्रदर्शन ३५ मुहूर्ती है भावों में मन्दी का प्रभाव रहेगा। इसके दोनों शृंग सम रहेंगे भावों में घटाबढ़ी। सोना. चाँदी. पीतल. ताम्बा के भावों में तेजी को बल मिलेगा। सूत, सन. कपास में मन्दी शेयरों में काफी उतार चढ़ाव आयेगा। राज विग्रह. मंत्रि मण्डल में वाद विवाद व असंतोष में वृद्धि होगी। सूत. सन. रुई. कपास. मूँगफली. बिनौला. सोयाबीन के भाव प्रथम मन्दे व बाद में तेज रहेंगे। अरण्डी. खोपरा. बैजिटेबिल. सोयाबीन के भावों में मन्दी। गुड़. शक्कर. चीनी व मिश्री के भावों में घटाबढ़ी अधिक रहेगी। गेहूँ. जौ, चना. मूँग, मटर. मसूड़, अरहर, दालवाना टूटकर सुधार बना लेगा। लाल रंग की वस्तओं के भावों में तेजी को विशेष बल मिलेगा।

आश्विन—२४ सितम्बर सन् २००० को आश्विन मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है यह चन्द्रदर्शन ४५ मुहूर्ती है। अन्न के भावों में तेजी को बल मिलेगा। इसके दोनों शृंग सम रहेंगे। सोना. चांदी. पारा. स्टील के भावों में तेजी को बल रुई, कपास, कपासिया के भाव सर्पमुखी चाल में बढ़ने लग जायेंगे। सभी प्रकार की जिन्सों में मन्दी का झटका आयेगा अत: सावधानी पूर्वक कार्य व व्यापार करने की आवश्यकता है। बारदाना. ज्वार, ग्वार, बाजरा. मक्का में गिरावट दक्षिण भारत में परेशानी उपद्रव व वर्षा से कष्ट। चौपाये पशुओं को रोग व संख्या में कमी आयेगी। गुड़, चीनी. मिश्री के भाव गिरकर संभल जायेंगे। विशेष तेजी मंदी की रिपोर्ट मंगायें।

कार्तिक—२० अक्टूबर २००० को कार्तिक मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है, चन्द्रदर्शन ४५ मुहूर्त्ती है भावों में मन्दी का मान होगा चन्द्रमा उदय के समय टेढ़ा व श्वेत वर्ण का होगा। भावों में समानता को विशेष बल मिलेगा। चांदी में सर्पमुखी चाल से तेजी। गेहूं, चना. जौ. मटर के भावों में गिरकर सुधार आयेगा। पीतल. स्टील. लोहा. ताम्बा. स्टील के भावों में गिरावट बनेगी लेकिन यह मन्दी स्थाई नहीं रहेगी। गुड़. शक्कर. चीनी. खाण्ड के भाव तेज। तिल तेल. सरसों. मूंगफली. अलसी. सोयाबीन के भावों में तेज॥ इमारती लकड़ी ,पत्थर. धनिया. मिर्च. हल्दी. हींग व सोंठ के भावों में तेजी को बल मिलेगा।

मार्गशीर्ष—२६ नवम्बर सन् २००० को मार्गशीर्ष मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। यह ३० मुहूर्ती है भावों में तेजी आयेगी। चन्द्रमा उदय समय पीत (पीला) वर्ण का होगा व टेढ़ा होगा। भावों में तेजी ओयगी। रुई ८/-. १०/- चांदी में २/-. ५/- सोना ५/-, १०/- रुपये तक की मन्दी बनकर तेजी में आयेगी। घी, तेल, तिल, अलसी. आलस्य को त्याग देगी। गुड़. शक्कर, चीनी के भावों में मन्दी का प्रभाव रहेगा। ज्वार, बाजरा, मक्का, मोंठ में तेजी आ जायेगी। उड़द. मूंग, मसूड़. दालवाना के भाव भी तेजी बना लेंगे। आलू. प्याज. हरी सब्जी के भाव भी तेजी के साथ उठ जायेंगे। गेहूँ, चना के भावों में स्थिरता रहेगी। सरसों, तिल तेल. तिलहन. अरण्डी. कपासिया, मूंगफली. सोयाबीन में तेजी बनेगी। जगत जननी माँ अम्बिका सभी व्यापारियों के लाभ दें यही कामना है। विशेष मासिक रिपोर्ट मंगाकर लाभ लें।

पौष—२६ दिसम्बर को पौष मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। यह चन्द्रोदय ४५ मुहूर्ती है भावों में मन्दी का रुख देखने को मिलेगा। इसके दोनों शृंग सम व वर्ण कालिमा (काला) जैसा होगा। प्रजा में भय का संचार होगा। चावल, चना, उड़द, मूंग. मसूर, अरहर के भावों में गिरावट बनेगी। ऊन, ऊनी वस्त्र, रेशम के भावों में सुधार आयेगा। तिल, तेल, तिलहन, सरसों के भाव गिरकर सुधार आयेगा। रुई २५)- ३०)- सूत. सन, पाट, शेयर, चांदी में ३)- ५)- व सोने में २)- ५)- तक की घटाबढ़ी चलेगी। शासन द्वारा नवीन योजनाओं का प्रारंभ होगा। खोपरा. सोयाबीन. अरण्डी के भावों में गिरावट आयेगी। गुड़, शक्कर. चीनी, नमक के भाव स्थायी भावों में मन्दी मानकर उठ जायेंगे। शेयर बाजार की मन्दी स्थाई नहीं है। इलायची, गोला. चने के भावों में तेजी बनेगी। शासन वर्ग में असन्तुष्टों की वृद्धि होगी।

माघ—२६ जनवरी सन् २००१ को माघ मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन ३० मुहूर्ती है अत: भाव समता में रहेंगे। दोनों शृंग सम व इसका वर्ण श्याम रंग का होगा जो प्रजा को कष्टकारक है। सोना. चांदी. पीतल, कांसा. पारा. स्टील, लोहा के भावों में तेजी आयेगी। रुई, सूत, सन. पाट. शेयर, उड़द: अरहर, मूंग, मोंठ, मसूर. दालवाना के भाव घटाबढ़ी में चलकर मासांत तक तेजी में आयेंगे। चना, मोंठ, दालवाना, सींगदाना, तेल. सरसों, अलसी, लाहा, तिल, सिंघाडा में भारी घटाबढ़ी चलेगी। सर्दी की अधिकता से पशु-पक्षी, बालक, वृद्धों को विशेष कष्ट। धनिया, जीरा, सौंफ. रुई. कपूर. गोला. नारियल. मैनफल, जायफल, कस्तूरी, केशर. हैसियन के भाव तेज रहेंगे।

फाल्गुन—२४ फरवरी सन् २००१ में फाल्गुन मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन ३० मुहूर्ती है। भावों में तेजी का मान होगा। इसका दक्षिण शृंग उच्च होगा जो प्रत्येक जिन्स में मन्दी का झटका देगा। गेहूँ. जौ, चना, मटर, तेल, रुई, कपास, सूत. सन, पाट, बारदाना प्रथम गिरकर बाद में तेजी बना लेंगे। प्रजा में रोग. शोक व कष्टों में वृद्धि होगी। चांदी सर्पमुखी चाल में चलकर तेजी बना लेगी। लोहा. सीसा, स्टील. पारा, नमक. ताम्बा के भावों में गिरावट बनेगी। आलू. प्याज के भावों में गिरावट आयेगी। मिर्च. हल्दी, जीरा. हींग की मन्दी में भी सुधार बना लेंगे। नारियल, जायफल, लोंग. केसर. इलाइची आदि किराना बाजार प्रथम मन्दी तथा अन्तिम दो सप्ताह तक तेजी की ओर अग्रसर रहेंगे।

पता-श्री अम्बा व्यापार भविष्य, कार्यालय, राया मथुरा (उ.प्र.)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लाभकारी नवग्रह यंत्र

अथ नव ग्रह-शान्ति स्तोत्रम्

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरु भाषितम्। ग्रह शांति प्रवक्ष्यामि लोकानां सुखहेतवे॥
जिनेन्द्राः खेचरा ज्ञेया, पूजनीया विधिक्रमात्। पुष्पैर्विलेपनैर्धूपैर्नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे॥
पद्मप्रभस्य मार्तण्डश्चन्द्रप्रभस्य च। वासुपूज्यस्य भूपुत्रो, बुधश्चाष्टजिनेशिना॥
विमलानन्त धर्मेश, शांति कुन्थुर्नमिस्तथा। वर्धमानजिनेन्द्रस्य, पादपद्मंबुधोनमेत्॥
ऋषभाजितसुपार्श्वाः साभिनन्दनशीतलौ। सुमतिः सम्भवस्वामी, श्रेयांसेषु बृहस्पतिः॥
सुविधिः कथितः शुक्रे, सुव्रतश्च शनिश्चरे। नेमनाथो भवेद्राहोः केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः।
जन्म लग्नं च राशि च, यदि पीडयति खेचराः। तदा संपूजयेत् धीमान्, खेचरान् सह तान्जिनान्॥
आदित्य सोममंगल, बुधगुरु शुक्रे शनिः (?) राहु केतु मेरवाग्रे या जिन पूजाविधायकः।
जिनान नमोग्न तपोहि, ग्रहाणां तुष्टिहेतवे। नमस्कारशतं भक्तया जपेद्दृष्टोत्तरशतं॥
भद्रबाहुगुरुर्वाग्मी, पंचमः श्रुत केवली। विद्याप्रसादतः पूर्व, ग्रह शांति विधिः कृत्ता॥
यः पठेत् प्रातरुत्थाय, शुचिर्भूत्वा समाहितः। विपत्तितो भवेच्छांतिः, क्षेमं तस्य पदे पदे॥

नवग्रहों के जाप्य

१. सूर्य्य महाग्रह मन्त्र

१. ॐ नमो भगवते श्रीमते पद्मप्रभु तीर्थ कराय कुसुलयक्ष मनोवेगा यक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः आदित्यमहाग्रह (मम कुटुंब वर्ग) सर्व दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं कुरु कुरु सर्व शांति कुरु कुरु सर्व समृद्ध कुरु-कुरु इष्ट संपदा कुरु कुरु अनिष्ट निवारणं कुरु कुरु धन धान्य समृद्धिं कुरु कुरु काम मांगल्योत्सवं कुरु कुरु हूं फट्॥७००० जाप्य॥

२. मध्यम मंत्रः-ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ जाप्य ७०००॥

३. लघु मंत्रः-ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं॥ १०००० जाप्य॥

२. सोम महाग्रह मन्त्र

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते चन्द्रप्रभु तीर्थंकराय विजय यक्ष ज्वालामालिनी यक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः सोम महाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट्॥ ११००० जाप्य॥

२. मध्यम मंत्रः-ॐ ह्रीं क्रों श्रीं क्लीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥ ११००० जाप्य॥

३. लघु मंत्रः-ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं॥ जाप्य १००००॥

३. मंगल महाग्रह मन्त्रः

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते वासुपूज्य तीर्थंकराय षण्मुखयक्ष गांधारीयक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः मंगल कुज महाग्रह ममदुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांतिं च कुरु कुरु हूं फट्॥ १०००० जाप्य॥

२. मध्यम मंत्रः-ॐ आं क्रों ह्रीं श्रीं क्लीं भौमारिष्ट निवारक श्री वासुपूर्ज्यजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥ १०००० जाप्य॥

३. लघु मंत्रः-ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं॥ १०००० जाप्य॥

४. बुध महाग्रह मंत्रः

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मल्ली तीर्थंकराय कुबेरयक्ष अपराजिता यक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः बुधमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांतिं च कुरु कुरु हूं फट्॥ १४००० जाप्य॥

२. मध्यम मन्त्रः-ॐ ह्रीं क्रौं आं श्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री विमल अनंतधर्म शांति कुन्थअरह नमिवर्धमान अष्टजिनेंद्रेभ्यो नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥८००० जाप्य॥

३. लघु मन्त्रः-ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं॥ १०००० जाप्य॥

५. गुरु महाग्रह मन्त्रः

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते वर्धमान तीर्थंकराय मातंगयक्ष सिद्धायिनीयक्षी सहिताय ॐ क्रों ह्रीं ह्रः गुरु महाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट्॥ १९००० जाप्य॥

२. मध्यम मन्त्रः-ॐ आँ क्रौ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं गुरु अरिष्ट निवारक ऋषभ अजितसंभवअभिनंद सुमति सुपार्श्वशीतल श्रेयांस अष्टजिनेंद्रेभ्यो नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥१९००० जाप्य॥

३. लघु मन्त्रः-ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं॥ १०००० जाप्य॥

६. शुक्र महाग्रह मन्त्रः

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पुष्पदंत तीर्थंकराय अजितयक्ष महाकीलयक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः शुक्र महाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांतिं च कुरु कुरु हूं, फट्॥१६००० जाप्य॥

२. मध्यम मन्त्रः-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं शुक्र अरिष्ट निवारक श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥ ११००० जाप्य॥

३. लघु मंत्रः-ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं॥ १०००० जाप्य॥

७. शनि महाग्रह मन्त्रः

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मुनि सुव्र तीर्थंकराय वरुण यक्ष बहुरूपिणीयक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं: ह्रः शनिमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारण सर्व शांतिं च कुरु कुरु हूं फट्॥ २३००० जाप्य॥

२. मध्यम मंत्रः-ॐ ह्रीं क्रौं ह्रः श्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ २३००० जाप्य॥

३. लघु मंत्रः-ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं॥ १०००० जाप्य॥

८. राहु महाग्रह मंत्रः

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते नेमितीर्थ कराय सर्वाण्हयक्ष कुष्मांडीयक्षी सहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं: ह्रः राहुमहाग्रह मम दुष्ट ग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरू कुरू हूं फट्॥ १८००० जाप्य॥

२. मध्यम मंत्रः-ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ह्र राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेंद्राय नमः शांति कुरू कुरू स्वाहा ॥ १८००० जाप्य॥

३. लघु मंत्रः-ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं॥ १०००० जाप्य॥

९. केतु महाग्रह मन्त्रः

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराय धरणेंद्रयक्ष पद्मावतीयक्षी सहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः केतुमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांतिं च कुरु कुरु फट् ॥ ७००० जाप्य॥

२. मध्यम मंत्रः-ॐ ह्री क्लीं ऐं केतु अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ जिनेंद्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥ ७००० जाप्य॥

३. लघु मंत्रः-ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं॥ १०००० जाप्य॥

नोटः- जो सज्जन समय अभाव के कारण जप आदि में समर्थ नहीं, वे हमारे कार्यालय से ग्रह शान्ति के अलग-अलग ताम्र यंत्र मंगवा कर लाभ उठावें। जिन सज्जनों ने इन यंत्रों को मंगवाया उनके प्रशंसा पत्र हमें समय-समय पर प्राप्त हुए और यंत्र धारकों ने इसे भविष्य में देते रहने का अनुरोध भी किया। अपने पाठकों की रुचि व अनुरोध को ध्यान में रखते हुए हम कुछ सीमित यंत्रों को दीपावली व होली के पवित्र पर्वों पर तैयार करते हैं। आप जल्द ही समय के रहते इन यंत्रों को मंगवाने के लिये जवाबी पत्र द्वारा सम्पर्क करें अन्यथा साल भर इन्तजार करना पड़ेगा।

कीमत तांबे के सिद्ध यन्त्र

सिद्ध यन्त्र	५५१/-	छोटे सिद्ध यन्त्र	३५१/-
शनि साढ़सती यन्त्र	५५१/-	छोटा शनि साढ़सती यन्त्र	३५१/-
अति स्पेशल	७५१/-	डाक खर्च अलग	

पता : धर्मसन प्रकाशन
2596, नई सड़क, दिल्ली-6

शास्त्रीय विधि-विधान द्वारा शुभ मुहूर्त्त में निर्मित ताम्र यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र

शास्त्रीय विधि-विधान द्वारा शुभ मुहूर्त्त में निर्मित ताम्र यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र की साधना मानव जीवन में बहुत ही चमत्कारी व अमूल्य परिवर्तनकारी होती है। पूर्व कर्मों के अशुभ फल, अभिशाप, संकटों का समाधान, अशुभ ग्रहों की शान्ति एवं सुख-सौभाग्य की वृद्धि कर जीवन में सुख-समृद्धि की देने वाले ये सिद्ध चमत्कारी यंत्र होते हैं। यंत्रों की प्राण प्रतिष्ठा और जप आदि विधिवत् करने पर ही ये पूर्ण फलकारी होते हैं। अन्यथा नहीं। आजकल भोली-भाली जनता को बगैर सिद्ध किये हुये यंत्रों को सिद्ध यंत्र बताकर धोखा दे रहे हैं। मेरे विद्या गुरु महाराज ने मुझे ज्योतिष विद्या के साथ-साथ मंत्रों का ज्ञान भी दिया और मेरे पूज्य बाबा व पिता जी (पं. जैनी जीयालाल शिखरचन्द जी) ने भी मुझे इनका अभ्यास कराया। अब मैं और मेरा पुत्र चि. गजेन्द्र जैन इस कार्य को कर रहे हैं। साधकों की सुविधा हेतु हम उत्तम मुहूर्तों में शास्त्रीय विधि-विधान से ताम्र पत्रों पर इन अमूल्य यंत्रों का निर्माण करते हैं और आर्डर मिलने पर सप्लाई करते हैं। हम इस कार्य को पिछले १२० वर्षों से कर रहे हैं। इन ताम्र यंत्रों का मूल्य ३५१/- (३"×३" आकार) तथा ५५१/- (७" × ७" आकार), डाकखर्च १५ रु. सहित अग्रिम भेजें।

नोटः इन यंत्रों की वी.पी.पी. नहीं भेजी जाती। जिन सज्जनों को आध्यात्मिक शक्ति एवं यंत्रों पर विश्वास हो वे ही सज्जन यंत्रों को मंगवाकर लाभ उठा सकते हैं।

यंत्र सूची

१. श्री सुर्य चन्द्र	१०. श्री लाभ यन्त्र	१९. श्री कार्य सिद्धि यन्त्र
२. श्री चन्द्र यन्त्र	११. श्री महालक्ष्मी यन्त्र	२०. श्री कुबेर यन्त्र
३. श्री मंगल यंत्र	१२. श्री दुर्गा बीसा यन्त्र	२१. श्री सरस्वती यन्त्र
४. श्री बुध यन्त्र	१३. श्री नव दुर्गा यन्त्र	२२. श्री व्यापार वृद्धि यन्त्र
५. श्री बृहस्पति यन्त्र	१४. श्री नवग्रह यन्त्र	२३. श्री गुरु प्रसाद यन्त्र ताबीज में
६. श्री शुक्र यन्त्र	१५. श्री महामृत्युंजय यन्त्र	२४. श्री नवग्रह युक्त बीसा यन्त्र
७. श्री शनि यन्त्र	१६. श्री सुख-समृद्धि यन्त्र	२५. श्री पंद्रहिया यन्त्र
८. श्री राहु यन्त्र	१७. श्री कनकधारा यन्त्र	२६. श्री गोपाल यन्त्र
९. श्री केतु यन्त्र	१८. श्री भैरों यन्त्र	२७. श्री मनोकामना पूर्ण यन्त्र

एक यन्त्र का मूल्य इस प्रकार है, सिद्ध यन्त्र=३५१/-, पावरफूल स्पेशल ७५१/-, डाक खर्च अलग।
पता : धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हमारे कार्यालय से हाथ द्वारा अपनी शुद्ध जन्म-पत्रिका बनवाकर लाभ उठाएं

हमारे यहां जन्म-पत्रिकाएं एवं वर्षफल शुद्ध गणित से बनाये जाते हैं। जिसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला जाता है। जैसे—शिक्षा, सरकारी, नौकरी, निजी व्यवसाय, विदेश यात्रा का योग, भाग्योदय तथा दाम्पत्य जीवन कैसा रहेगा। इत्यादि प्रश्नों के उत्तर सरल भाषा में विस्तार से लिखे होते हैं।

जन्म-पत्रिकाओं के विभिन्न प्रकार व उनकी फीस

१. **टेवा (टिपड़ा)**—जिसमें जन्म विवरण (तिथि, नक्षत्र, योग इत्यादि) राशि चक्र, लग्न कुण्डली का विस्तार से वर्णन होता है। रु. ५१/-

२. **वर-वधू-जन्म पत्रिका (कुण्डली)**—मिलान शास्त्रोक्त विधि से किया जाता है। रु. ५१/-

३. **जन्माक्षर पत्रिका**—जिसमें जन्म विवरण (तिथि, नक्षत्र, योग इत्यादि) राशिचक्र, लग्न कुण्डली, चन्द्र-कुण्डली के साथ विंशोत्तरी महादशा व अति संक्षिप्त फल का वर्णन होता है। रु. १०१/-

४. **जन्माङ्क पत्रिका**—जिसमें जन्म विवरण राशि चक्र, लग्नकुण्डली, चन्द्र कुण्डली के साथ सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, विंशोत्तरी महादशा के साथ-साथ अन्तर्दशा और साधारण भविष्य फल का विस्तार से वर्णन होता है। रु. २०१/-

५. **षट्वर्गीय जन्म-पत्रिका**—जिसमें जन्म विवरण राशिचक्र, घातचक्र, लग्न चन्द्र व चलित कुण्डलियां, तत्कालीन ग्रह स्पष्ट, होरा, द्रेष्काण आदि षट्वर्ग, विंशोत्तरी महादशा तथा अन्तर्दशा एवं विस्तार से भविष्यफल का वर्णन होता है। रु. ३५१/-

६. **सप्तवर्गीय जन्म-पत्रिका**—जिसमें जन्म विवरण, राशिचक्र, घातचक्र, लग्न चन्द्र व चलित कुण्डलियां, तत्कालीन ग्रह स्पष्ट, होरा, द्रेष्काण आदि कुण्डलियां, पंचधामैत्रि कोष्टक आदि विंशोत्तरी महादशा, अन्तर्दशा, योगिनी दशा तथा अधिक विस्तार से भविष्यफल लिखा जाता है। रु. ५५१/-

७. **वर्षफल**—हमारे यहां वर्षफल विस्तार से बनाये जाते हैं। जिसमें महीनों के क्रम से फलादेश हाथ से लिखा होता है। वर्षफल की फीस रु. २५१/-

परेशानियों से छुटकारा पाइये

- **साढ़ेसाती नाशक यन्त्र**—जिन बन्धुओं पर शनि की साढ़ेसाती ढैया चल रही हो वे हमारे कार्यालय द्वारा विधि पूर्वक तैयार किए इस यंत्र को धारण करें। अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होगा। चालीस दिन के शनि के कुप्रभाव से राहत मिलेगी।
- **नवग्रह शान्ति यन्त्र**—यह यन्त्र नवग्रहों को शान्ति लिए तत्काल प्रभावी सिद्ध होगा। इसको धारण करने से सब परेशानियों से छुटकारा मिलेगा। इस यत्र की दक्षिणा है— १५१/-
- **सर्वकार्य सिद्धि यन्त्र**—इसके धारण करने से मुकद्दमा, परीक्षा, व्यापार, नौकरी आदि सब कार्यों में आशातीत सफलता प्राप्त होती है। दक्षिणा है— ५०१/-
- **लक्ष्मी सिद्धि यन्त्र**—इस यंत्र के धारण करने से व्यापार में सफलता, नौकरी में उन्नति तथा धन की कमी दूर होती है। दक्षिणा है— १५१/-

नोट—कृपया यन्त्र मंगवाने वालों से अनुरोध है कि वे हमें पूरी राशि अग्रिम भेजें अन्यथा उत्तर नहीं दिया जावेगा।

धर्मशन प्रकाशन

2596, नई सड़क, दिल्ली-110006

दूरभाष : 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥दुर्लभ प्राचीन भृगु संहिता॥

प्राचीन भारतीय ज्योतिष विज्ञान का ग्रंथरत्न-

जिसकी प्रति किसी-किसी विद्वान के पास ही उपलब्ध होती थी, उसे लगभग २५० वर्ष पहले-जब भारत में मुद्रण कला का प्रारंभ हुआ तब कुछ खोजी विद्वानों ने संग्रह करके प्रकाशित किया। परन्तु पिछले प्राय: १५० वर्षों से वह भी अनुपलब्ध हो चुकी है। हमने बहुत परिश्रम और व्यय करके, अनेक विद्वानों के सहयोग से उसकी एक प्रति लगभग पूर्ण रूप में प्राप्त की है, जोकि गुणग्राहक सज्जनों को यथावत् फोटो-प्रिंट के रूप में उपलब्ध हो सकती है।

फुल स्केप आकार के लगभग १२०० पृष्ठों की इलेक्ट्रोस्टेट प्रति का लागत मूल्य मात्र १७५०/-रूपये देकर आप इसे प्राप्त कर सकते हैं। डाक व्यय + रजिस्ट्री आदि देय होगा।

अपना आदेश भेजें।

पता : धर्मसन प्रकाशन

२५९६-९७, नई सड़क, दिल्ली-110006

☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र की अनुपम एवं उत्कृष्ट भेंट-
सन् १९०० ई. से २००० तक का सम्पूर्ण पंचांग

शतक मार्तण्ड

गत कई वर्षों से भारत के प्रमुख ज्योतिर्विदों द्वारा कड़े परिश्रम से तैयार किया गया उपरोक्त ग्रन्थ ज्योतिष प्रेमियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसका सम्पादन कई ज्योतिष सम्बन्धी पुस्तकों के रचयिता पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा, बी.ए. प्रभाकर साहित्य-रत्न, ज्योतिष वाचस्पति ने अपनी देखरेख में बड़े सुन्दर और सुचारु ढंग से किया है।

विशेषताएं: — महादशी सारिणी, अन्तर्दशा सारिणी, प्रत्यन्तर दशा सारिणी व सूक्ष्मदशा सारिणी सहित विशिष्ट संस्करण सन् १९०० से २००० ई. तक के सूर्य-मंगल-बुध-गुरु-शुक्र-शनि के साप्ताहिक स्पष्ट तथा चन्द्रमा की दैनिक स्पष्ट, राहु, हर्षल, नेपच्यून, प्लूटो के मासिक स्पष्ट, वक्री-मार्गी, चन्द्र ग्रहण सूर्य ग्रहण, संक्रांति, पूर्णिमा, अमावस्या, लघुरिक्त गणित, ० से ६३ उत्तर एवं ० से २५ दक्षिण अक्षांश पर प्रति ६ दिन का सूर्योदय तथा सूर्यास्त का समय, भारत के प्रमुख नगरों के सूर्योदय-सूर्यास्त का समय, चन्द्रमा के राशि-अंशों से विंशोत्तरी दशा का भोग्य निकालना, १९, २१, २३, २५, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२ अंक्षाशों की लग्न सारिणी, भारतीय पद्धति से तिथि-योग-वार-करण-सन्-सम्वत्-मास-पक्ष एवं नक्षत्र का ज्ञान व मान निकालना, सूर्य व चन्द्र स्पष्ट करने की सारिणी, सांपातिक काल का सम्पूर्ण गणित-जिसकी सहायता से विश्व के किसी भी स्थान का लग्न सरलता से स्पष्ट किया जा सकता है-८ उदाहरण सहित।

इस अमूल्य ज्योतिष ग्रन्थ की सहायता से विश्व के किसी भी स्थान का लग्न सरलता से स्पष्ट किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त जन्म-कुण्डली बनाने के लिये ज्योतिषियों को जिन बातों की आवश्यकता होती है, वे सभी इसमें उपलब्ध हैं। इस संस्करण में सूक्ष्म दशा सारिणी को १६ पेजों में बहुत सुन्दर ढंग से दिया गया है।

इस ग्रन्थ में कुछ और विषय बढ़ाकर बहुत उपयोगी बना दिया है। इसके चतुर्थ संस्करण को बढ़िया कागज पर अति सुन्दर और सुचारु रूप से छापा गया है।

आवश्यक नोट—४०१/- रु. की राशि अग्रिम भेजने पर डाक व्यय नहीं लगेगा जोकि लगभग ३५/- रु. होता है। अत: लगभग ३५/- रु. की छूट रहेगी।

प्रकाशक: **धर्मसन प्रकाशन** २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ दूरभाष : ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection